

El's Holy Qur'aan



Translated By
Dr. Malachi S. York
For H.D.M.

Order Chart As Revealed Today For Easy Reference

| Wrong Order | Original Order | Page No. | Wrong Order | Original Order | Page No. |
|-------------|----------------|----------|-------------|----------------|----------|
| Chapter 1 | Chapter 5 | Pg 36 | Chapter 58 | Chapter 105 | Pg 947 |
| Chapter 2 | Chapter 87 | Pg 687 | Chapter 59 | Chapter 101 | Pg 914 |
| Chapter 3 | Chapter 89 | Pg 770 | Chapter 60 | Chapter 91 | Pg 839 |
| Chapter 4 | Chapter 92 | Pg 844 | Chapter 61 | Chapter 109 | Pg 968 |
| Chapter 5 | Chapter 112 | Pg 879 | Chapter 62 | Chapter 110 | Pg 971 |
| Chapter 6 | Chapter 55 | Pg 378 | Chapter 63 | Chapter 104 | Pg 945 |
| Chapter 7 | Chapter 39 | Pg 105 | Chapter 64 | Chapter 108 | Pg 963 |
| Chapter 8 | Chapter 88 | Pg 757 | Chapter 65 | Chapter 99 | Pg 910 |
| Chapter 9 | Chapter 113 | Pg 1009 | Chapter 66 | Chapter 107 | Pg 958 |
| Chapter 10 | Chapter 51 | Pg 294 | Chapter 67 | Chapter 77 | Pg 450 |
| Chapter 11 | Chapter 52 | Pg 310 | Chapter 68 | Chapter 2 | Pg 3 |
| Chapter 12 | Chapter 53 | Pg 340 | Chapter 69 | Chapter 78 | Pg 656 |
| Chapter 13 | Chapter 96 | Pg 892 | Chapter 70 | Chapter 79 | Pg 660 |
| Chapter 14 | Chapter 72 | Pg 598 | Chapter 71 | Chapter 71 | Pg 594 |
| Chapter 15 | Chapter 54 | Pg 371 | Chapter 72 | Chapter 40 | Pg 152 |
| Chapter 16 | Chapter 70 | Pg 577 | Chapter 73 | Chapter 3 | Pg 8 |
| Chapter 17 | Chapter 50 | Pg 280 | Chapter 74 | Chapter 4 | Pg 11 |
| Chapter 18 | Chapter 69 | Pg 547 | Chapter 75 | Chapter 31 | Pg 62 |
| Chapter 19 | Chapter 44 | Pg 178 | Chapter 76 | Chapter 98 | Pg 906 |
| Chapter 20 | Chapter 45 | Pg 191 | Chapter 77 | Chapter 33 | Pg 65 |
| Chapter 21 | Chapter 73 | Pg 612 | Chapter 78 | Chapter 80 | Pg 670 |
| Chapter 22 | Chapter 103 | Pg 930 | Chapter 79 | Chapter 81 | Pg 673 |
| Chapter 23 | Chapter 74 | Pg 629 | Chapter 80 | Chapter 24 | Pg 50 |
| Chapter 24 | Chapter 102 | Pg 919 | Chapter 81 | Chapter 7 | Pg 19 |
| Chapter 25 | Chapter 42 | Pg 162 | Chapter 82 | Chapter 82 | Pg 676 |
| Chapter 26 | Chapter 47 | Pg 221 | Chapter 83 | Chapter 86 | Pg 684 |
| Chapter 27 | Chapter 48 | Pg 240 | Chapter 84 | Chapter 83 | Pg 677 |
| Chapter 28 | Chapter 49 | Pg 254 | Chapter 85 | Chapter 27 | Pg 55 |
| Chapter 29 | Chapter 85 | Pg 686 | Chapter 86 | Chapter 36 | Pg 77 |
| Chapter 30 | Chapter 84 | Pg 679 | Chapter 87 | Chapter 8 | Pg 20 |
| Chapter 31 | Chapter 57 | Pg 446 | Chapter 88 | Chapter 68 | Pg 546 |
| Chapter 32 | Chapter 75 | Pg 642 | Chapter 89 | Chapter 10 | Pg 23 |
| Chapter 33 | Chapter 90 | Pg 835 | Chapter 90 | Chapter 35 | Pg 75 |
| Chapter 34 | Chapter 58 | Pg 454 | Chapter 91 | Chapter 26 | Pg 54 |
| Chapter 35 | Chapter 43 | Pg 171 | Chapter 92 | Chapter 9 | Pg 22 |
| Chapter 36 | Chapter 41 | Pg 155 | Chapter 93 | Chapter 11 | Pg 25 |
| Chapter 37 | Chapter 56 | Pg 426 | Chapter 94 | Chapter 12 | Pg 26 |
| Chapter 38 | Chapter 38 | Pg 86 | Chapter 95 | Chapter 28 | Pg 60 |
| Chapter 39 | Chapter 59 | Pg 465 | Chapter 96 | Chapter 1 | Pg 1 |
| Chapter 40 | Chapter 60 | Pg 479 | Chapter 97 | Chapter 25 | Pg 54 |
| Chapter 41 | Chapter 61 | Pg 492 | Chapter 98 | Chapter 100 | Pg 913 |
| Chapter 42 | Chapter 62 | Pg 504 | Chapter 99 | Chapter 93 | Pg 880 |
| Chapter 43 | Chapter 63 | Pg 512 | Chapter 100 | Chapter 14 | Pg 27 |
| Chapter 44 | Chapter 64 | Pg 524 | Chapter 101 | Chapter 30 | Pg 61 |
| Chapter 45 | Chapter 65 | Pg 529 | Chapter 102 | Chapter 16 | Pg 28 |
| Chapter 46 | Chapter 66 | Pg 534 | Chapter 103 | Chapter 13 | Pg 27 |
| Chapter 47 | Chapter 95 | Pg 887 | Chapter 104 | Chapter 32 | Pg 65 |
| Chapter 48 | Chapter 111 | Pg 973 | Chapter 105 | Chapter 19 | Pg 30 |
| Chapter 49 | Chapter 106 | Pg 953 | Chapter 106 | Chapter 29 | Pg 61 |
| Chapter 50 | Chapter 34 | Pg 69 | Chapter 107 | Chapter 17 | Pg 29 |
| Chapter 51 | Chapter 67 | Pg 540 | Chapter 108 | Chapter 15 | Pg 28 |
| Chapter 52 | Chapter 76 | Pg 646 | Chapter 109 | Chapter 18 | Pg 29 |
| Chapter 53 | Chapter 23 | Pg 36 | Chapter 110 | Chapter 114 | Pg 1040 |
| Chapter 54 | Chapter 37 | Pg 78 | Chapter 111 | Chapter 6 | Pg 16 |
| Chapter 55 | Chapter 97 | Pg 901 | Chapter 112 | Chapter 22 | Pg 36 |
| Chapter 56 | Chapter 46 | Pg 215 | Chapter 113 | Chapter 20 | Pg 32 |
| Chapter 57 | Chapter 94 | Pg 880 | Chapter 114 | Chapter 21 | Pg 32 |

[illegible]

2. What is the purpose of the study?

وَأَمَّا أَنْتُمْ كُفَّارًا ۖ أَلَمْ تَكُنْ مِنْكُمْ نِسَاءً فَهَنَ الْكُفْرُ وَلَئِنْ جِئْتُمْ بِدَلِيلٍ فَلَا يُغْنِي عَنْكُمْ كُفْرُكُمْ ۚ إِنَّكُمْ لَعِنْدَهُ سَمَكَةٌ ۝

مَوْعِدٍ أَوْفَىٰ وَلَهُمْ حَتَّىٰ أَكْمَلُوا مَا نَافَعُكَ وَيَكْفِيكَ أَمَانِي يَتَ أَسْبَغِي إِلَّا أَنْتَ وَنَ وَمِلَ •

[illegible]

كَرَنَ سَكَنُوا مَشِيهَيْنِ اَلْقَا مَا اَلَمْ دُونِهَا مَوْغِبَةً دَوغِبَتْهَا مَقَرْنِ قَوْلُ لَوْ نُوغِبْكَ

چلاؤ۔ یہ خدا دنیا کی اہم و بھاری چیز ہے، جو ہرگز ہٹا کر نہیں دیا جاسکتا۔

چونکہ انہوں نے حکمت کی اعز و بھاری چیز کو اُٹھایا، جو انہوں نے ہرگز ہی پتہ نہ لائے اور جس کو جس کو نہ سمجھا۔

أَشْجَاءُ أَوْ تَنْفِخُ نَفْثًا فَرِحَ غَرَامِلِيْشَاتُ إِنْ لَّهُ سَيُورُ الْعَوْبِ إِنْ يَسُوْبِرُ

[illegible]

آتش بخند بھر لخت ز پرت کل مدّن اسبیل فلسی خشی

[illegible]

مس و ریس و رستو مس ریشو و س ریشو مس ریشو و س ریشو

قُلُوبُهُمْ عَلَىٰ سَاحِلٍ نَارٍ كَالْخَلَاءِ وَكُلُّهُمْ فِي جَهَنَّمَ

مَنْ أَكْزَمُغٍ كَيْفَ يَنْفَعُ أَكَلِيهِمْ هَالِكِينَ مَلَايِكَةً بِعَنْ نَهْنُ نُوْنُوسُ نَقُوتُ +

حَافِظُ شَيْئِ اللَّهِ عَلَيْهِ إِحْلِيذُ رَجَعًا فِي حَافِظٍ وَلَا وَبِإِلَى

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ لَا أُقِيمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ وَلَا أُقِيمُ بِالنَّارِ

و لعل الله ان يوفقكم الى ما فيه الخير والهدى

[illegible]

۹۔ لے عدالت رہی ہے۔ - پی چائن دیا وینچ یا ہے لے آدمیاں ہیرے لوں چائن

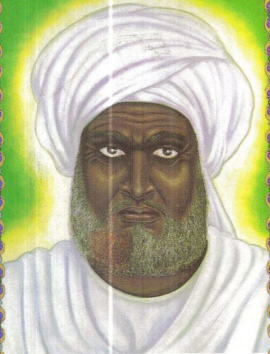
اَنرڪا اَرم تاجي توباچين دِباؤي کيچ ملاڪضي منگالي سند رشم انبالم

کیونکہ خدا جہاں کوں ایسا ہی بنا دیتا جو اسی پر پڑنا چاہو ہر ایک جو آفندہ

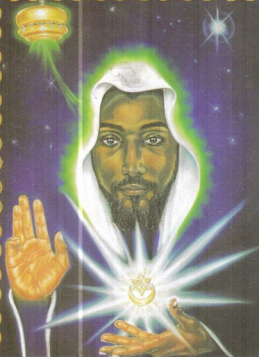
أَمَّا كَمَا كَتَبَ دَنسُ الرُّوحِ الرَّبِّ قُلُوبَ اغْتِشَابِ أَوِي إِذْ هِيَ إِشْعِيدُ أَذْنِغِ إِيْمَرِ

ده كرك ايه اوجالدرسون * تاكه هر اونه اهان كنورين هلاك اولماسون اما ايدي حياه مالت اولسون * چونكه الله دنياي ايه

ادھر فتوہ امیر عوط منشا اللہ باد کے طوطے سفیر طوطے کے نام



The Receiver



The Translator

El's
Holy
Qur'aan

Presented To

By

On

Occasion

Don't Try To Change The
Wind Or The Sea, Just Change
The Sail!!!

-El's Holy Qur'aan-

Within The Confines Of These Pages There Are
Facts Beyond Any Doubts, Thus,
Begin All Acts And Thinking By Using
El Kuluwm, The All,



I Came Giving You
What You Want
So You Would Learn To Want
What I Have To Give

Dedication

*I Dedicate This Book To My Muslim Nubian
Brothers And Sisters.*

Please Wake Up!

This Certifies That

And

Were United In

Holy
Matrimony

On the _____ Day of _____

In the year of _____

At _____

By _____

Witness _____

Witness _____

True Love Is Based On Loyalty.

Tabernacle Record

EVENT

MINISTER

TABERNACLE

DATE

EVENT

MINISTER

TABERNACLE

DATE

EVENT

MINISTER

TABERNACLE

DATE

EVENT

MINISTER

TABERNACLE

DATE

EVENT

MINISTER

TABERNACLE

DATE

A Team That Works Together Always Wins!!!

Special Events

EVENT

PLACE

DATE

EVENT

PLACE

DATE

EVENT

PLACE

DATE

EVENT

PLACE

DATE

EVENT

PLACE

DATE

EVENT

PLACE

DATE

EVENT

PLACE

DATE

Have Fun Making Others Happy!!!

Births

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

BORN TO

NAME

DATE

In The Birth Of A Baby There's Hope

Marriages

NAME

WIFE

PLACE

NAME

DATE

PLACE

NAME

DATE

PLACE

NAME

DATE

PLACE

NAME

DATE

PLACE

NAME

DATE

PLACE

NAME

DATE

PLACE

"If You Give Me Anything Let It Be
Your Love, And If You Take From Me,
Let It Be Mine."

Husband's Family

NAME

BROTHERS

SISTERS

MOTHER

FATHER

BROTHERS

SISTERS

GRANDMOTHER

GRANDFATHER

BROTHERS

SISTERS

GRANDFATHER

GRANDMOTHER

BROTHERS

SISTERS

GREAT-GRANDMOTHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDMOTHER

GREAT-GRANDMOTHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDMOTHER

Wife's Family

NAME

BROTHERS

SISTERS

MOTHER

FATHER

BROTHERS



SISTERS

GRANDMOTHER

GRANDFATHER

BROTHERS

SISTERS

GRANDFATHER

GRANDMOTHER

BROTHERS

SISTERS

GREAT-GRANDMOTHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDMOTHER

GREAT-GRANDMOTHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDFATHER

GREAT-GRANDMOTHER





Begin All Prayer And Thinking By Using
El Hekrem, THE Ahs

Prayer Of The Ansaars

Oh Heavenly One, The Most High. Who
Is Sustainer Of All The Worlds, We Do
Accept The Duty You Have Laid On Us;
To Clean Up The Filth Made By The
West And Its Non-Submitting Fools. O
My Sustainer We Beseech You, To Keep
Your Hand Over Us, To Control The
Strings Of The Courses Of Our LIVES;
Our Sustainer, And If We Do Wrong,
Please Show Thy Divine Blessings And
Forgiveness On Us, You Are The Only
One That Can Raise Us True Followers Of
The Newsbearers, And In Thy Name We
Carry On.

AN ANTHEM FOR Ahs

The Original Script Of The Qur'aan

| End | Middle | Beginning | Initial | English Equivalent |
|-----|--------|-----------|---------|--------------------|
| ل | | | / | ا |
| ـَ | ـَ | ر | ـَ | ب |
| ـَ | ـَ | ر | ـَ | ت |
| ـَ | ـَ | ر | ـَ | ث |
| ـَ | ـَ | ـَ | ـَ | ج |
| ـَ | ـَ | ـَ | ـَ | ح |
| ـَ | ـَ | ـَ | ـَ | خ |
| ـَ | | | ـَ | د |
| ـَ | | | ـَ | ذ |
| ـَ | | | ـَ | ر |
| ـَ | | | ـَ | ر |
| ـَ | ـَ | ـَ | ـَ | س |
| ـَ | ـَ | ـَ | ـَ | ش |
| ـَ | ـَ | ـَ | ـَ | ص |

The Original Script Of the Quran

| | | | | |
|----|----|----|----|----|
| ض | ظ | ط | ث | ح |
| ط | ظ | ط | ظ | ح |
| ظ | ظ | ظ | ظ | ح |
| ع | ع | ع | ع | ع |
| غ | غ | غ | غ | غ |
| ف | ف | ف | ف | ف |
| ق | ق | ق | ق | ق |
| ك | ك | ك | ك | ك |
| ل | ل | ل | ل | ل |
| م | م | م | م | م |
| ن | ن | ن | ن | ن |
| ه | ه | ه | ه | ه |
| و | و | و | و | و |
| ي | ي | ي | ي | ي |
| لا | لا | لا | لا | لا |
| ة | ة | ة | ة | ة |

TODAY'S QUR'AAN ORDER CHART

| Wrong Order | Original Order | Wrong Order | Original Order | Wrong Order | Original Order |
|-------------|----------------|-------------|----------------|-------------|----------------|
| Chapter 1 | Chapter 96 | Chapter 39 | Chapter 7 | Chapter 77 | Chapter 67 |
| Chapter 2 | Chapter 68 | Chapter 40 | Chapter 72 | Chapter 78 | Chapter 69 |
| Chapter 3 | Chapter 73 | Chapter 41 | Chapter 36 | Chapter 79 | Chapter 70 |
| Chapter 4 | Chapter 74 | Chapter 42 | Chapter 25 | Chapter 80 | Chapter 78 |
| Chapter 5 | Chapter 1 | Chapter 43 | Chapter 35 | Chapter 81 | Chapter 79 |
| Chapter 6 | Chapter 111 | Chapter 44 | Chapter 19 | Chapter 82 | Chapter 82 |
| Chapter 7 | Chapter 81 | Chapter 45 | Chapter 20 | Chapter 83 | Chapter 84 |
| Chapter 8 | Chapter 87 | Chapter 46 | Chapter 56 | Chapter 84 | Chapter 30 |
| Chapter 9 | Chapter 92 | Chapter 47 | Chapter 26 | Chapter 85 | Chapter 29 |
| Chapter 10 | Chapter 89 | Chapter 48 | Chapter 27 | Chapter 86 | Chapter 83 |
| Chapter 11 | Chapter 93 | Chapter 49 | Chapter 28 | Chapter 87 | Chapter 2 |
| Chapter 12 | Chapter 94 | Chapter 50 | Chapter 17 | Chapter 88 | Chapter 8 |
| Chapter 13 | Chapter 103 | Chapter 51 | Chapter 10 | Chapter 89 | Chapter 3 |
| Chapter 14 | Chapter 100 | Chapter 52 | Chapter 11 | Chapter 90 | Chapter 33 |
| Chapter 15 | Chapter 108 | Chapter 53 | Chapter 12 | Chapter 91 | Chapter 60 |
| Chapter 16 | Chapter 102 | Chapter 54 | Chapter 15 | Chapter 92 | Chapter 4 |
| Chapter 17 | Chapter 107 | Chapter 55 | Chapter 6 | Chapter 93 | Chapter 99 |
| Chapter 18 | Chapter 109 | Chapter 56 | Chapter 37 | Chapter 94 | Chapter 57 |
| Chapter 19 | Chapter 105 | Chapter 57 | Chapter 31 | Chapter 95 | Chapter 47 |
| Chapter 20 | Chapter 113 | Chapter 58 | Chapter 34 | Chapter 96 | Chapter 13 |
| Chapter 21 | Chapter 114 | Chapter 59 | Chapter 39 | Chapter 97 | Chapter 55 |
| Chapter 22 | Chapter 112 | Chapter 60 | Chapter 40 | Chapter 98 | Chapter 76 |
| Chapter 23 | Chapter 53 | Chapter 61 | Chapter 41 | Chapter 99 | Chapter 65 |
| Chapter 24 | Chapter 80 | Chapter 62 | Chapter 42 | Chapter 100 | Chapter 98 |
| Chapter 25 | Chapter 97 | Chapter 63 | Chapter 43 | Chapter 101 | Chapter 59 |
| Chapter 26 | Chapter 91 | Chapter 64 | Chapter 44 | Chapter 102 | Chapter 24 |
| Chapter 27 | Chapter 85 | Chapter 65 | Chapter 45 | Chapter 103 | Chapter 22 |
| Chapter 28 | Chapter 95 | Chapter 66 | Chapter 46 | Chapter 104 | Chapter 63 |
| Chapter 29 | Chapter 106 | Chapter 67 | Chapter 51 | Chapter 105 | Chapter 38 |
| Chapter 30 | Chapter 101 | Chapter 68 | Chapter 88 | Chapter 106 | Chapter 49 |
| Chapter 31 | Chapter 75 | Chapter 69 | Chapter 18 | Chapter 107 | Chapter 66 |
| Chapter 32 | Chapter 104 | Chapter 70 | Chapter 36 | Chapter 108 | Chapter 64 |
| Chapter 33 | Chapter 77 | Chapter 71 | Chapter 71 | Chapter 109 | Chapter 61 |
| Chapter 34 | Chapter 50 | Chapter 72 | Chapter 14 | Chapter 110 | Chapter 62 |
| Chapter 35 | Chapter 90 | Chapter 73 | Chapter 21 | Chapter 111 | Chapter 48 |
| Chapter 36 | Chapter 86 | Chapter 74 | Chapter 23 | Chapter 112 | Chapter 5 |
| Chapter 37 | Chapter 54 | Chapter 75 | Chapter 32 | Chapter 113 | Chapter 9 |
| Chapter 38 | Chapter 38 | Chapter 76 | Chapter 52 | Chapter 114 | Chapter 110 |

QUR'AAN REVEALED ORDER CHART

| Original Order | Wrong Order | Original Order | Wrong Order | Original Order | Wrong Order |
|----------------|-------------|----------------|-------------|----------------|-------------|
| Chapter 96 | Chapter 1 | Chapter 7 | Chapter 39 | Chapter 67 | Chapter 77 |
| Chapter 68 | Chapter 2 | Chapter 72 | Chapter 40 | Chapter 69 | Chapter 78 |
| Chapter 73 | Chapter 3 | Chapter 36 | Chapter 41 | Chapter 70 | Chapter 79 |
| Chapter 74 | Chapter 4 | Chapter 25 | Chapter 42 | Chapter 78 | Chapter 80 |
| Chapter 1 | Chapter 5 | Chapter 33 | Chapter 43 | Chapter 79 | Chapter 81 |
| Chapter 111 | Chapter 6 | Chapter 19 | Chapter 44 | Chapter 82 | Chapter 82 |
| Chapter 81 | Chapter 7 | Chapter 20 | Chapter 45 | Chapter 84 | Chapter 83 |
| Chapter 87 | Chapter 8 | Chapter 56 | Chapter 46 | Chapter 30 | Chapter 84 |
| Chapter 92 | Chapter 9 | Chapter 26 | Chapter 47 | Chapter 29 | Chapter 85 |
| Chapter 89 | Chapter 10 | Chapter 27 | Chapter 48 | Chapter 83 | Chapter 86 |
| Chapter 93 | Chapter 11 | Chapter 28 | Chapter 49 | Chapter 2 | Chapter 87 |
| Chapter 94 | Chapter 12 | Chapter 17 | Chapter 50 | Chapter 8 | Chapter 88 |
| Chapter 103 | Chapter 13 | Chapter 10 | Chapter 51 | Chapter 3 | Chapter 89 |
| Chapter 100 | Chapter 14 | Chapter 11 | Chapter 52 | Chapter 33 | Chapter 90 |
| Chapter 108 | Chapter 15 | Chapter 12 | Chapter 53 | Chapter 60 | Chapter 91 |
| Chapter 102 | Chapter 16 | Chapter 15 | Chapter 54 | Chapter 4 | Chapter 92 |
| Chapter 107 | Chapter 17 | Chapter 6 | Chapter 55 | Chapter 99 | Chapter 93 |
| Chapter 109 | Chapter 18 | Chapter 37 | Chapter 56 | Chapter 57 | Chapter 94 |
| Chapter 105 | Chapter 19 | Chapter 31 | Chapter 57 | Chapter 47 | Chapter 95 |
| Chapter 113 | Chapter 20 | Chapter 34 | Chapter 58 | Chapter 13 | Chapter 96 |
| Chapter 114 | Chapter 21 | Chapter 39 | Chapter 59 | Chapter 55 | Chapter 97 |
| Chapter 112 | Chapter 22 | Chapter 40 | Chapter 60 | Chapter 76 | Chapter 98 |
| Chapter 53 | Chapter 23 | Chapter 41 | Chapter 61 | Chapter 45 | Chapter 99 |
| Chapter 80 | Chapter 24 | Chapter 42 | Chapter 62 | Chapter 98 | Chapter 100 |
| Chapter 97 | Chapter 25 | Chapter 43 | Chapter 63 | Chapter 59 | Chapter 101 |
| Chapter 91 | Chapter 26 | Chapter 44 | Chapter 64 | Chapter 24 | Chapter 102 |
| Chapter 85 | Chapter 27 | Chapter 45 | Chapter 65 | Chapter 22 | Chapter 103 |
| Chapter 95 | Chapter 28 | Chapter 46 | Chapter 66 | Chapter 63 | Chapter 104 |
| Chapter 106 | Chapter 29 | Chapter 51 | Chapter 67 | Chapter 58 | Chapter 105 |
| Chapter 101 | Chapter 30 | Chapter 88 | Chapter 68 | Chapter 49 | Chapter 106 |
| Chapter 75 | Chapter 31 | Chapter 18 | Chapter 69 | Chapter 46 | Chapter 107 |
| Chapter 104 | Chapter 32 | Chapter 16 | Chapter 70 | Chapter 64 | Chapter 108 |
| Chapter 77 | Chapter 33 | Chapter 71 | Chapter 71 | Chapter 61 | Chapter 109 |
| Chapter 50 | Chapter 34 | Chapter 14 | Chapter 72 | Chapter 62 | Chapter 110 |
| Chapter 90 | Chapter 35 | Chapter 21 | Chapter 73 | Chapter 48 | Chapter 111 |
| Chapter 86 | Chapter 36 | Chapter 23 | Chapter 74 | Chapter 5 | Chapter 112 |
| Chapter 54 | Chapter 37 | Chapter 32 | Chapter 75 | Chapter 9 | Chapter 113 |
| Chapter 38 | Chapter 38 | Chapter 52 | Chapter 76 | Chapter 110 | Chapter 114 |

Introduction

The First Thing I Would Like To Say Is, That This Qur'an (In Arabic) Or Koran (In English), Is Not Being Translated For Any Muslim Sect. The Sole Purpose Of This Translation Is To Convey, As Close As Possible, Exactly What The Qur'an Says, For Those Of The **Holy Tabernacle Ministries (H.T.M.)**, And Who Its Talking About, When And Where, To Get A Clear Picture Of What This 1,400-Year Old Text Was Saying.

Many Will Be Disturbed By The Fact That All Previous Translators, Translated The Qur'an For Muslims. When In Fact, That Creates A Biased, One-Sided Opinion, Which Affects A Proper Translation. If One Is A Muslim, And Attempts To Translate The Holy Book Of The Muslims, He Or She Will Tend Not To See Contradictions, Mistakes, Inconsistancies, Historical Errors And The Likes. One Of The Best Shields For Blocking The Intellect Was A System Called **Tajweed** (تجوید): Some Say **Tarteel** (ترتیل). It Is A Form Of Recitation By Using Chanting, And Marking Thru Out The Text, Or Simply Rhythm And Music—While Stating It's Not Music. When In Actuality, Chanting The Torah -5 Books Of Moses, Aaron And Joshua, Zubur-Psalms Of David, Injiyl- Gospel Of Jesus, And The Qur'an Of Muhammad Rhythmically Is A Form Of Singing.

There Are A Host Of Singers Such As: David Bowie (European), Stevie Wonder (Nubian American), Aretha Franklin (Negro), Barbara Streisand (Jewish American), Willie Nelson (Anglo-American) And Julio Iglesias (Spanish), Umm Kulthum (Anglo-Egyptian), Ahmed Fowd Hassan (Arab), Youssou N'Dour (Senegalese African), And Baba Olatunji (Nigerian African). They All Sing Differently, However, They All Sing The Same Words And Tell The Same Story. In Al Islaam, There Are A Host Of Chanters Such As: Shaykh Abdel Basit, Shaykh Sha'raawiy, Shaykh Talalaawiy, Shaykh Al Husari, And Shaykh Al Azar. They All Sing Stories From The Qur'an. If They Can Get You To Listen To **Shaykh Abdel Basit**, For Instance, A World Renown Chanter, Who Sings The Qur'an Beautifully; If They Can Convince You, To Convince Yourself, That While You're Listening To Music It's Not Music, Then They Can Convince You Of Anything Pertaining To This Book (*Refer To "Are Pictures A Sin?", Scroll #135*).

The Creation Of Grammar Which Gave Birth To What's Called Arabic Fusha Classical Arabic, Did Not Exist In The Original Qur'aan. There Were No Dots, And The Likes. With The Classical Arabic Replacing The Quraish Dialect, The True Meanings Were Lost, Which Created Room For A Massive Amount Of Interpretations. The System Of **Tajweed** (تجويد) Only Weakened The Ability To Get A Clear Meaning Of The Qur'an. As So-Called Scholars Removed Certain Letters, Added Certain Markings, Extended Certain Sounds And Carried Sounds Over, And Ignoring Words Such As: **"EI"** **"Deity"** Being Ignored For **"Ir"** **"Fire"**, When Using A System In Grammar Called **Sun Letters** And **Moon Letters** Where Certain Marks Such As **Wasls** (و), **Shadda** (ّ), And/Or **Sukkon** (◌ْ), Gives You The Right To Ignore What You Claim, Allah Revealed To The Prophet **Mustafa Muhammad Al Amin (PBUH)** Letter By Letter.

In Fact, The Word **EI** Has A Meaning In The Language That Proceeded The Qur'an, That Is, The Hebrew Torah, The Name For **"The Source"**, Simply **EI** (אֵל). It Was Being Ignored And Replaced When Using **Tajweed** With **"Ir"**, Having The Meaning. Then They Use **Nir**, Also From **Nar** -Fire In Arabic; Fire Also Said **Ur**. Look; **"Bismila Hir Rahma Nir Raheem"**, Or They Write It **"Bismilah Ir Rahman Ir Raheem"**. In Both Cases, It's Wrong. They Removed The **"EI"** With Trick Grammar. It Should Be **"Baasim Allah EI Rahman EI Rahiym"**.

These Demonic Strategies Were Created To Widen The Gap Between The Children Of Abraham Who All Spoke Semitic Dialects Of One Language Called **Cuneiform**. Cuneiform Was The Language Of The Elders. Cuneiform Was A Spoken As Well As Written Language. From This Language Came **Adamic** Which Later Became The Languages, **Ashuric/Syriac** And **Aramic**.



Diagram 1
Cuneiform

In **Genesis 11:1, 6-7**, The Whole Earth Was One Language First. Now, If You Read Closely, You Will See In **Verse 6**, God

Separated Him/Herself From The Planet Earth By Saying **"And They All Have One Language"**. If You Say That **"They All Have One Language"**, You Are Saying That You Do Not Speak That Language In Which Is Being Spoken, Because You Just Excluded Yourself By Saying **"They"**. Then In **Verse 7**, God Goes On To Say **"Confound Their Language"**. The Word For Confound Is **Balal** (בלל), In The Aramic (Hebrew) And Means To **"Mingle, Confuse, Or To Confound."** This Is Making It Very Clear That Whatever The People On Earth Was Speaking, It Was Not Being Spoken In Heaven, Where God Lived. If It Were The Language That God Was Speaking, Then He Would Have Said Our Language, However, It Says **"Their"**, Which Means That God Was Speaking Something Else, Other Than **"Their Language"**. Do You Overstand? If God Came Down To The Planet Earth, And Confounded **"Their Language"** Of The Planet Earth, That Would Mean That God Was Communicating Differently. When A Language Is Broken Up, It Is Broken Up Into Different Tongues Which Are Called **Dialects**.

Semitic Is Actually The Name Of All The Languages That Stemmed From **Shem**, Who Was One Of The Triplets Of **Utnafishtim (Noah)** And **Naama (Genesis 5:32)**. From **Asshur**, The Second Son Of **Shem** And **Faatin (Genesis 10:22)**, Came The Language **Ashuric**. **Asshur** (אשור) Means **"Level Plain"** And Is A City In Assyria. From **Ashuric** Came The Dialect **Syriac**.



Figure 1
Noah Son Of
Lamech And Kamiylah



Figure 2
Naama Daughter Of
Unaam And Sakhinah



Figure 3
Shem
Son Of Noah
And Naama



Figure 4
Faatin
Wife Of Shem



Figure 5
Asshur
Son Of Shem
And Faatin

Aramic (Hebrew) Was The Language Of The Arameans, The Descendants Of Aram, The 5th Son Of Shem (*Genesis 10:22*). The Country He Settled In Was Called Aram (*Number 32:37*). The Fact, That The Language Was Named Aram After Him, Proves That He Was A Leader, A Chief, Of A Mighty Man In His Tribe. When A Dialect Evolved, It Usually Was Named After The Most Powerful Or Outstanding Member Of The Tribe Or Clan. In This Case It Was Aram.



Figure 6
Aram Son Of Shem And Faatin

These Two Languages, Ashuric And Aramic, Are The Sources From Which All Other Dialects Of The Scriptures Came From. The First Set Of Languages After Adamic, Hindu, Foral, Were Found In One General Area, (The Persian Gulf Today), Syriac Meaning "Successful". The Mother Of All Languages Came From Asshur. Arabic Is The Nearest Dialect To Ashuric/Syriac. Arabic Comes From The Word Arab (عرب) Meaning "Wandering The Desert." The Arabic Language Came Out Of Joktan's First Son, Arab. His Seed Became Known As Arabs And Their Tongue Was Arabic. (Refer To "First Language", Scroll #27 And "What Is God's Language?", Scroll #96).



Figure 7
Joktan



Figure 8
Arab

Son Of Eber And Hudith

Son Of Joqtan And Hudah

Ancient Syriac Gave Birth To What Is Known Today As Modern Arabic. The Word Arabic Is Derived From The Root Word Araba (عربة) Meaning "Vehicle Or Mobile." The Noun 'Arab' (عرب), Is A Title That Was First Associated With Ishmael, Who Was (Abraam/Abraham's) First Son By His Wife (Hathor/Hagar) (Genesis 16:15-16). The Dialect That Ishmael Began To Speak Became Known As Arabic. It Was Chaldean As His Father Spoke, And Mitsrayim Which His Mother Spoke. Ishmael And His Mother Hagar Settled In The Desert Area Of The Wilderness Of Beersheba (Genesis 21:14,33). Which Is Known As The Arabian Desert. The Area That Ishmael Settled In, Became Marked As One Of The Holiest Places On Earth And The People Became Known As Ishmaelites.



Figure 9
Abraham
Son Of Terah
And Nuwna



Figure 10
Hagar
Daughter Of Imhotep
And Rashaa



Figure 11
Ishmael
Son Of Abraham And Hagar

The Aramaean (Hebrew) Dialect Which They Originally Spoke, Became Broken Into Even More Dialects. The Aramean Script Took A Drastic Change And Became Syriac (Arabic). Syriac (Arabic) And Aramic (Hebrew) Are The Same Dialects With More Exaggerations. It's Like Two People Speaking The Same Language, But Being From Two Different Locations. For Example, If Someone Lives In New York And Speaks English And Meets Up With Someone From Jamaica, Wet Indies, Both These People Speak The English Language; But The Environment In Which They Live, Caused Their Accent, Terminologies And Expressions, To Take A Change. This Is The Same Case With The Aramic (Hebrew) Tongue, Which

Through Migration, Gave Birth To Ashuria/Syriac (Arabic) Expressions. Syriac (Arabic) And Aramic (Hebrew) Are Very Similar. Notice The Similarities Between These Words:

Word **Syriac (Arabic)** **Aramic (Hebrew)**

| | | | | |
|----------------|--------|-------|---------|------|
| Peace | Salaam | سلام | Shalom | שלום |
| Beloved | Dauwud | داود | Dawlyd | דוד |
| Father | Abu | اب | Ab | אב |
| Pilgrimage | Haj | حاج | Haggai | חגי |
| Hand | Yad | يد | Yod | יד |
| Reddish, Brown | Adam | ادم | Adam | אדם |
| Inspiration | Wahy | وحي | Wahy | והי |
| Boy | Walid | ولد | Walad | ולד |
| Tongue | Lisaan | لسان | Lashown | לשון |
| Day | Yam | يوم | Yom | יום |
| King | Malik | ملك | Melek | מלך |
| Field | Fardas | فرداس | Fardas | פרדס |
| Blood | Dam | دم | Dam | דם |
| Menstruation | Hayd | حيه | Heed | חד |
| Add | 'Adaa | سد | 'Adah | עד |

In The Famous Orthodox Sunni Muslim Dictionary Entitled, "Dictionary Of Islam", Arabic Is Described As "By Reason Of It's Incomparable Excellence Is Called (اللغة) *Al Lughah*. Of The Language." Very Little Has Been Written About The Origin Of The So-Called Arabic Language. However, It Is Clear That Arabic Is Not A Language, It Is A Dialect Composed Of Many Borrowed Words From Other Languages. As A Matter Of Fact, 50% Of The Arabic Language Is Foreign Words From Other Dialects Of The Semitic Family. This Is Something That Most Muslims Don't Want To Admit.

Now, Getting Back To The Point, In The Original Qur'anic Script You Will Not Find The Letters: **Baa** (ب), **Taa** (ت), **Thaa** (ث), **Dhal** (ذ), **Zay** (ز), **Sheen** (ش), **Daad** (ض), **Zaa** (ظ), **Ghiyn** (غ), Or **Qaf** (ق). Again, These Letters Weren't Found Because There Were Originally, No **Nuqta** (•) Dots, On The Letters. If The Nuqtas Were Not Added To The Letters, Most People Could Not Tell The Difference Between A **Baa** (ب), **Taa** (ت), And **Thaa** (ث). The Same Applies To The Letters **Sheen** (ش) And **Siyn** (س), **Daad** (ض) And **Saad** (ص), And The Likes. As You Place The Nuqta Over Different Letters, It Changes The Meaning Of The Word. Take A Look At The Following Chart.

| Word | | Variations Of Word | |
|---------------------|------------|--------------------|------------|
| Hamada Hamadha | حمد حمد | Dahaba Dhahaba | ذهب ذهب |
| Khamada Khamadha | حمد حمد | Dahata Dhahata | ذعت ذعت |
| Jamada Jamadha | حمد حمد | Dahata Dhahatha | ذهب ذهب |

The Dots That Did Appear, Were The Systems That Muslims Brought About In The Name Of Preserving The Qur'an, Only Made Things More Difficult For Readers Of The Qur'an. This Happened Because They Were Trying To Bring A Primitive Document Into Modern Times. Arabia Was Controlled By Poets, And The Prophet Muhammad (PBUH) Was Not A Poet. In Fact, The Qur'an Speaks Against Them (*Qur'an 69:41, 36:69*). Thus, His Book Was Not Receiving Any Respect. So, It Became Necessary To Improve Upon The Words Of Allah By Men. And Muslims Are So Blind, That They Can't See The Evil In That. The Qur'an Claims Of Itself To Be "Total And Complete" And "Without Any Doubt" (*Qur'an 2:1*). It Claims To Be A "Clear" Message (*Qur'an 15:1*). Yet, They Had To Improve Upon It With Their Grammatical System, Which Makes It Impossible For Anyone To Fully Understand; Which Leaves Them The Right To Interpret It The Way They Wish By Creating Meanings For Each Word To Fit Into Their Newly Formed Judaic Christian Sect, Islam.

Muslims Will Have To Admit That They Don't Have The Original Qur'an. The Qur'an That They Hold In Their Hands Today, **Is Not The Original**. Ask Any Sincere Muslim, Do They Have The Original Koran, They Will Say *"We Have The Oldest Copy Of The Koran"* Or *"This Qur'an Has No Doubt In It."* However, **Oldest Does Not Mean Original** And The Qur'an Does Have Doubt In The Form Of Many Mistakes. Sorry, But It Has Been Proven That It Does. The Qur'an That You Hold In Your Hand Today Has Been Proven Fallible. It Does Have Mistakes In The Arabic, And Mistranslations In The English, Contradictions, And The Mistakes Go On And On. And Being That Muslims Don't Have The **Original Qur'aan**, They Have No Foundation For Their Religion Without It. Muslims Have A Habit Of Talking About The Qur'an Like It Is So Unique Or Original, And It Comes From Judaic And Christian Teachings And Books.

The Very Qur'an Puts Forth A 1400 Year Old Challenge To Produce A Book Or A Chapter Or A Verse Like It; Claiming That It Is Impossible For Anyone With The Help Of All The Pages And All The Ink In The World, To Produce One Verse, Chapter Or The Whole Book, Like It. And This Request Was Made In Several Places In ***Qur'an 52:34, 17:88, 11:13*** And ***2:23***. Well, Guess What? It Took Many Years For Anyone To Take The Challenge Seriously. But When They Did, **The Challenge Was Met** In The Year 1987 A.D. In A Book Entitled **"The Life Of The Messiah In A Classical Arabic Tongue"** By **Abdo**. You Can Acquire This Book From **The Zwemer Institute, P.O. Box 345, Altadena, California U.S.A. For \$3.50**. The Qur'an's Eloquence Was Met By A Great Poet From Lebanon By A Man Named **Kahlil Gibran** In A Book He Wrote Entitled **"The Prophet."** And The Muslim World Thought It Could Not Be Done.

Christians Mocked The Very Style Of The Qur'an, Phrases And The Tasmiyya. This Goes To Show That It Can Be Done And That Anybody Can *"Produce The Like Thereof."* The Book Is Divided Into 30 Chapters And Is Comprised Of Verses Compiled From The Gospels Of Four Disciples: Matthew, Mark, Luke, And John.



Diagram 2

A Page From "The Life Of The Messiah In A Classical Arabic Tongue"



Diagram 3

The Cover Of The Book

According To The Author, The Book Was Written To Show Muslims That The Challenge They Have Been Making For 1400 Years, Has Finally Been Met. In This Book, "The Life Of The Messiah In A Classical Arabic Tongue", Verses From The Qur'an Were Also Taken And Reworded Using The Language Of The Qur'an, So That The Book Sounds As If It Is Written Like The Qur'an. Make Note That If The Challenge Has Anything To Do With A Book Being Able To Match The Symbolism In The Qur'an, Then It Means Nothing Because There Is A Book More Symbolic Which Is The Book Of Revelation Called The Injil In (Qur'an 3:3; 5:49; 5:71) Full Of Prophetic Events That Came And Are Coming True Right Now.

As I Have Said In The Past, If We People, Who Are Natives Of The Arabic Language Are Honest, Which Is Very Difficult When It Comes To The Qur'an, We Will Admit That The Language And The Construction Of This Book: "The Life Of The Messiah In A Classical Arabic Tongue", Written In The Same Arabic Of The Qur'an, It's Speaking Ability Is As That Of The Qur'an. I Have Been Reading The Qur'an In Arabic All My Life. It's The Same! Face It!

510 (IN PART) "... IN CASE YOU DISAGREE WITH ZAID RIN THABIT ON ANY POINT IN THE QUR'AN, THEN WRITE IT IN THE DIALECT OF QURAISH AS THE QUR'AN WAS REVEALED IN THEIR TONGUE."

Sahih Al Bukhari Volume 6

And Another Place, In *Qur'an* 41:3 It Literally Says In The Arabic And English Translation That The Qur'an Is In Arabic For People Who Understand.

Qur'an 41:3

كِتَابٌ فَصَّلْتُ عَيْنُهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٣﴾

"A BOOK, WHEREOF THE VERSES ARE EXPLAINED IN DETAIL; A QUR'AN IN ARABIC, FOR PEOPLE WHO UNDERSTAND"

Surely, If Allah Is The All-Knowing, Then He Knows That The Whole World Did Not Speak Arabic At That Time And He Would Have Definitely Known That 1400 Years After The Qur'an Had Been Revealed That The Whole World Would Not Be Speaking The Arabic Language, Not To Mention The Quraish Dialect. Here We Are In 1996 A.D., And Less Than 10% Of The Entire World Speaks The Arabic Language. You Cannot Tell Me That Is Not Racism. The Qur'an Took Some Of Its Stories From Jewish Folklore, Others From Christian Stories And Even Others From Egyptian Coptic Stories, Such As The Story Of The Raven Coming To Cain And Abel In *Qur'an* 5:27-32. According To Dr. Anis Shorrosah, This Story Came From An Ancient Jewish Tradition (Ad 150-200 Preserved By Pirke Rabbi Eleazar). Also, The II Targum Of Esther, Which Dates Back To The Second Century A.D., 400 Years Before The Qur'an, Is Found To Be The Source Of *Qur'an* 27:17-44. How Do You Explain This!

More Proof That The Qur'an Was Not For Everyone, Is It's Simple Promises In Paradise. Take A Look At *Qur'an* 76:7-21 And Lets See Exactly What You Are Going To Be Getting In Paradise:

1. Garments Of Silk:

The Ashuric/Syriac (Arabic) Word For Silk Is Hariyrin (حرير)

And Means ***"Dressed In Silk, Wholly Composed Of Silk."*** Persia, China, India And South Korea Are The Biggest Producers Of Silk. To The Persian, Chinese, Indians And South Koreans, Silk Is Not A Big Deal. Not To Mention You Can Go To A Fabric Store Right Here On Earth And Purchase As Much Silk As You Like. Thus, This Promise Is **OBSOLETE**.

2. Reclining On Raised Thrones:

The Thrones That The Qur'an Promises, Are Not More Than Couches That Anybody Who Can Afford Furniture Has In Their Living Room Or Dining Room. When Muslims Hear The Word Throne, They Are Thinking Of Kingship. However, This Is Not What The Qur'an Is Talking About. The Ashuric/Syriac (Arabic) Word Being Used For Throne Is **Araa'eke** (أرأعك) And Is Defined As ***"Raised Couches Ornamentally Furnished And Decorated Which Is A Tent, Or -Pavilion Or Chamber."*** It's Word Does Not Imply That You Will Have Authority Or Sit On A Throne Next To God. Thus, This Promise **IS NOT WHAT YOU ARE EXPECTING**.

3. Neutral Weather, The Days Won't Be Too Hot And The Nights Won't Be Too Cold.

Not On Every Part Of The Earth, Is The Sun Too Hot During The Day And Too Cold During The Night. So, This Statement Obviously Couldn't Apply To The Entire World. However, It Does Apply To People Who Live In The Desert And Have To Deal With This Kind Of Weather. Not To Mention, Scientists Know How To Control The Weather. So, Whomsoever Is Controlling The Weather Is The Person Muslims Should Be Talking To About The Weather. Or Better Yet, Relocate To Another Part Of The Country Or World Where The Weather Is Tolerable. Thus, This Promise Is **OBSOLETE**.

4. Bunches Of Fruit.

Think For A Minute, The Only Places That People Can Not Grow Fruits Are Barren Lands Such As Deserts, And Lands That Have Been Stripped Of Their Natural Resources, For Whatever Reason. So, To A Person Who Does Not Have Fruit Readily

Accessible, "Bunches Of Fruit" Is A Luxury. Thus, This Promise Is **RIDICULOUS**.

5. Qur'an 78:33 Promises Young Female Companions, Called Hariyuwn Or Pubescent Maidens.

First, I Would Like To Point Out The Fact That In Islaam, Men Are Allowed To Have Up To 4 Wives And In Some Cases, More. Men Are Allowed To Choose From A Number Of Wives And The Woman Has No Say So. The Point Being, Muslims Already Have Their Pubescent Maidens Right Here On Earth, And The Word In Arabic **Huwr** (حور) Has Nothing To Do With Pubescent Anything. According To Arabic-English Lexicon, **Huwr** (حور) Means **"Intense Whiteness Of The Eye"**. Nowhere In The Qur'an Does It Say That Women Are Promised Anything In Paradise For Being Righteous All Of Their Lives. The Muslim Women Should Be Asking What Is In It For Them, Or Otherwise They Should Be Able To Live Their Life To The Fullest While Here On Earth, The Same Way That Muslim Men Are Doing. This Is How You Know That The Qur'an You Hold In Your Hand Today Was Written By Men. Thus, This Promise Is **UNFAIR TO WOMEN**, And Think About It Why Would God Allah, Have To Promise You Virgin Women In Heaven.

I Could Go On And On. However, I'll Stop Right Here Because I Think You've Got The Point Which Is, All Of The Material Possessions That The Qur'an Promises, In Heaven Or Paradise Can Be Obtained Right Here On Earth. The Qur'an Was Appealing To People Who Lived 1400 Years Ago, When A Refrigerator Back Then, Would Have Been A Dream Come True. The Qur'an Was Simply Written For Those Who Desired To Get Away From The Harsh Life Of The Desert.

So, Again, Scholars Are Playing Word Games On You Non-Arabic Speaking Muslims. This Is Why It Was Necessary For Us To Go Into Islaam As Taught By These Pale Arabs, And Their Negro Converts. Islaam Is Not Suited For Anyone Who Wants To Exercise Free Will Or Have Their Own Point Of View. Anyone Who Scrutinizes And Investigates, Does Not Sit Well In That Fate. Take For Instance, **Imam Wallace D. Muhammad**,

Son Of The Honorable Elijah Muhammad, Has To Talk Bad About His Father In Order For These Arabs To Accept Him. Siraj Wahajj Has To Talk Bad About Any Other Muslim Leader, Who Doesn't Agree With Saudi Arabian Concepts On Racism.

Islaam Asks You To Forget The Middle Passage Which Is The Transportation Of Slaves From Africa To America. It Asks You To Forget All Of The Lives That Were Lost Before, During, And After Slavery. It Asks You To Forget About The Injustices And Travesties That Our Ancestors Endured. People Like Harriet Tubman Who Risked Her Life For Freedom. It Asks You To Forget The Genocide Such As Aids, And The Tuskegee Experiment (Where Nubian Were Injected With Syphilis For Over A Period Of 40 Years). It Asks You To Forget The Subliminal Subductions And Inferiority Complexes That Have Been Put Into The Minds Of Nubians Worldwide. It Asks You To Forget The Hangings And The Castrations. It Asks You To Forget The KKK (Ku Klux Klan) The Lynchings, And The Way Nubians Were Treated Worldwide. Just Reflect Back For A Minute, To The Rodney King Beating Back In 1993 A.D. It Asks You To Pretend That There Is No Racism In Islaam. Arabs Come Over To America Saying No More Racism, But It Is Easy For Them To Say That Because They Never Had To Endure Racism, But Ask A Palestinian Muslim About Jews; He Hates Them, And The Iraqians About Kuwaitians; He Hates Them, And The Afghaniastans About Russians And The Bosnian About Croatians, Etc. They All Hate Other Races For What They Did To Them, But Us Nubians Are Being Told It's Wrong To Hate The Caucasian For What He Did And Is Still Doing To Us. If Any Nubian Who Tells You He Forgot All Of The Suffering And Pain, And All Of The History, He Is Lying.

It Asks You To Ignore Reality, Scientific Facts. It Creates It's Own Geography. In A Nutshell, It Asks You To Have **Blind Faith. And Simply, The Blind Leading The Blind. So In Order To Get Our People Out Of This Spell Binding Religion, We Couldn't Merely Study It, And Talk About It, We Had To Get Inside Of It, Live In Islam And **Become Apart Of It, Make It One Of Our****

Schools On The Way To Nuwaubu. And Then Wake Up Our People To Their True Past, And Bring It To The Present. We Go Back Way Before 1400 Years. And You Cannot Convince Me That Acknowledging My Ancestors, Be They Anu, Enlil, Tammuz, Horus, Isis And Ra Is Idol Worship. While You Remember Dead Individuals Such As The Khalifas, Companions And The Writers Of Your Hadith, And Even Have Pictures Thrown In Your Books, And Statues Of Them In Islamic Countries.

I Say We Simply Give You Back All You're "isms". And I Will Spend The Rest Of My Days Trying To Wake Up The **Children Of Nuwaubu, The Nuwaubians**. And Getting Them Away From Ignorance Disguised In Any Religion. Regardless Of What Kind Of Muslim You Call Yourself They Don't Even Agree On The One Path They Say They Lead You To. Even In The Qur'an Of Today, Muslims Can't Agree On The Correct Translation. Each Sect Claims That Theirs Is The Most Accurate. They Can't Even Agree On How To Spell Muhammad's Name In English. From Sect To Sect, You Will Find **Muhammad, Mohammed, Mohemet, Muhamed, Mohammad, Or Mohamed**. Now, Let's Take A Look At The Definition Of The Name Muhammad. According To **"Muslim Names"** By Fatima Suzan Al-Jafari, 1977 A.D., The Prophet Muhammad (PBUH) Means **"Praised"**. According To **"The Book Of Muslim Names"**, Azieza Hamid, 1986, The Prophet Muhammad (PBUH) Means **"Praiseworthy, Commendable"**. In **"The Dictionary Of Islam"**. By Thomas Patrick Hughes, The Prophet Muhammad (PBUH) Means **"The Praised One"**.

According To These Various Books, The Prophet Muhammad (PBUH) Is Defined As **"Praised"**. The Prophet Muhammad's (PBUH) Name At Birth, Which Was **Ahmad**, Means **"Praiseworthy"** When It Should Be **"One Who Praises"**, Because According To Muslims, Only Allah Is Worthy Of Praise Which Is His 56th Attribute, El Hamiydu (الحميد) Meaning **"The All Praiseworthy"**. Thus, Muhammad's Name Should Have Been **Abdul Hamiyd (عبد الحميد)**, **"Servant Of The Praiseworthy"**.

This Is How You Know Muslims Are Prophet Muhammad (PBUH) Worshipers. And When They Place The Prophet Muhammad's Name Next To Allah's In The **Kalimat** (كَلِمَة). They Are Actually Saying "Some" Praise Is Due To Allah And "Some" Praise Is Due To Muhammad. Yes, This Is Called **Shirk** (شِرْك) "**Idolatry, Binding Partners**", Something That Muslims Do Every Time They Call The Adhaan And Recite The Kalimat. And According To **Qur'an 4:48**, Shirk Is A Sin That Is Not To Be Forgiven.

Qur'an 4:48

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَى إِثْمًا عَظِيمًا

"GOD FORGIVETH NOT THAT PARTNERS SHOULD BE SET UP WITH HIM; BUT HE FORGIVETH ANYTHING ELSE, TO WHOM HE PLEASETH; TO SET UP PARTNERS WITH GOD IS TO DEVISE A SIN MOST HEINOUS INDEED."

So As You Can See, They Have Taken It A Step Further By Ascribing The Attributes Of Allah To Muhammad.



Figure 12
The Prophet Muhammad (PBUH)
Son Of Abdullat And Amina

When The Statement Was Made That No One Can Produce A Book Like The Holy Qur'an, It Was Talking About The Original Qur'aan That **The Prophet Muhammad (PBUH)** Received. Had Muslims Not Made Additions, Alterations Such As Nuqtas And Vowels, Christians Would Not Have Been Able To Produce Another Like It. The Qur'an Would Not Have Been Able To Be Duplicated. So Muslims Can't Hold Up The Qur'an Of Today And Say That There Is No Doubt In It.

As I Have Said Before, This Argument Can Only Be Understood By 1% Of The Muslim World, Because Only 10% Of The Whole Muslim World Speaks Arabic. What Is Really Sad Is, 1% Of The 10% Understand Classical Arabic Enough To Read The Qur'an Properly. Most Arabs That Speak Arabic, Speak A Bad Dialect, And Even The Educated Ones Have Not Been Fortunate Enough To Understand The Arabic Of The Qur'an. They Made The Grammar So Complicated That Not Even They Understand It In The Modern Day Koran. Therefore, People Like **Ahmed Deedat**, Who Doesn't Speak Arabic, Will Truly Never Know That The Challenge Has Been Met By Christians.

The Problem With Muslims Is That They Make The Mistake Of Thinking That Muhammad And The Qur'an Was Sent To The Whole World. They Even Have Quotes They Think Is Backing It Up: **Qur'an 7:158, 21:107 And 25:1**. And As Usual, Muslims Have Mistranslated And Misused These Quotes In The Qur'an.

Qur'an 7:158

قُلْ يٰۤاَنۡسَآءُ النَّاسِ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْکُمۡ جَمِیْعًا الَّذِیْ لَهٗ مُلۡکُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیِیْ وَیُمِیْتُ الَّذِیْ اَلَمۡ یُخۡرِجۡ بِاللّٰهِ
مَوٰمِنُوۤا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِۦ الَّذِیْ وَصَّیۡنَیْهِ وَاَتَّبِعُوۤهُ لَعَلَّکُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ

"SAY: O MEN! I AM SENT UNTO YOU ALL, AS THE APOSTLE OF GOD, TO WHOM BELONGETH THE DOMINION OF THE HEAVENS AND THE EARTH: THERE IS NO GOD BUT HE: IT IS HE THAT GIVETH BOTH LIFE AND DEATH. SO BELIEVE IN GOD AND HIS APOSTLE, THE UNLETTERED PROPHET, WHO BELIEVETH IN GOD AND HIS WORDS: FOLLOW HIM THAT (SO) YE MAY BE GUIDED."

In This Quote These Scholars Have Translated The Ashuric/Syriac (Arabic) Word Jami'aan (جميعا) As "You All" And Have You Thinking That It Means "The Whole World". Jami'aan Does Not Mean "You All", It Comes From The Root Word Jama'a (جمع) Which Means "He Gathered Together". A Gathering Is More Like A Group Of People From The Whole World, As Opposed To The Whole World Itself. If It Was For The Whole World, Which Is The Word 'Alamiyn (عالمين). As In Rabil 'Alamiyn (رب العالمين), They Translate It "Lord Of The Worlds" (Qur'an 56:80), Then There Is Dunya (دنيا) For World In (Qur'an 42:20), And If Allah Meant For All The World To Receive And Understand This New Holy Book, There Would Have Been A New Language Created Right There, Not Just The Quraish Dialect, But One That Everybody On The Whole World Would Overstand, Rather Than Translate The Qur'an And Lose The True Meanings. Hence, This Quote Is Referring To A Particular Group Of People. In This Case, The Ishmaelites Were The People Whom Muhammad Was Sent To (Qur'an 3:110; 88:10, 64:58).

However, In Qur'an 3:103, The Word Jami'aan (جميعا) Is Used But This Time, The Implication Is That They Are Speaking About Allah's Ummah, Or Jami'at (جميعة) "Community" Which Does Not Include The Christians, Buddhists, Hindus, Or Anyone Else Who Is Not Arab, Etc.

Qur'an 3:103

وَأَعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا

"AND HOLD FAST, ALL TOGETHER, BY THE ROPE WHICH GOD (STRETCHES OUT FOR YOU), AND BE NOT DIVIDED AMONG YOURSELVES..."

So, Don't Let Them Tell You That The Word Jami'aan (جميعا) Means "The Whole World". The Same Way Jesus Was Sent To His People The Lost Sheep Of The House Of Israel

(Matthew 10:6; 15:24; 18:11). So Was The Prophet Muhammad. Every Nation Is Sent A Warner (Qur'an 10:97; 71:2). And Muhammad Was Sent To The Arabs.

Now Don't Misunderstand What I Am Saying. The Prophet Muhammad Was Only Universal Because What He Taught Could Be Applied By People Around The World, But He Was Not Sent To All People On Earth. The Qur'an Was Sent Down In The Quraish Dialect To A Specific Tribe Of People. However, The Qur'aan Could Serve As A Warning And Guidance For The Whole World.

I Repeat, Muhammad Would Not Be Speaking To The Jews, Europeans, Chinese, Or The Hindus That Call Themselves Arabs Today, Etc. Only The Descendants Of Ishmael (Genesis 25:12) Who Was Abraham's First Son By Hagar (Genesis 16:15) Daughter Of Imhotep. Muhammad Was Not A Universal Prophet And Was Not Sent To The Whole World Who Were Nubians.

In Qur'an 7:188, It Clearly Uses The Arabic Word *Qawm* (قوم) Meaning "Kindred" But In The English Translation The Word *Qawm* Is Not Translated As Kindred. It Is Mistranslated As "Those Who Have Faith" Which In Arabic Is *Alladhina Yuw-minuwna* (الذين يؤمنون).

Qur'an 7:188

أَنَا أَنذِيرُ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

"...I AM A WARNER AND A BRINGER TO GLAD TIDINGS TO THOSE WHO HAVE FAITH".

YUSEF ALI TRANSLATION

Muslims Will Use This Quote To Support Their Beliefs That Muhammad Was Sent To The World, By Mistranslating It. Anybody Can Have Faith In Islaam. But The Question Is, Are You From That Tribe In Which Muhammad Was Sent To Warn?

According To *The American Heritage Dictionary*, Kindred Means:

kin·dred (k'n'dr'd) *n.* 1. A group of related persons, as a clan or tribe. 2. (used with a pl. verb). A person's relatives; kinfolk.
--kin·dred *adj.* 1. Of the same ancestry or family: *kindred clans*. 2. Having a similar or related origin, nature, or character:

Ask Any Arabic Speaking Muslims, Why Is It That The Word **Qawm** (قوم) Used In *Qur'an* 2:54 When Speaking About **Moses** And His People", *Qur'an* 23:23 Speaks About **Noah** And "His People", *Qur'an* 26:11 Speaks About **Pharaoh** And "His People", *Qur'an* 27:54 Speaks About **Lot** And "His People", *Qur'an* 29:16 Speaks About **Abraham** And "His People". In All Of These Quotes, The Word **Qawm** (قوم) Is Translated Correctly In The English, As His People Or Kindred. But When It Comes To *Qur'an* 7:188, It Is Mistranslated In The English. Ask Yourself Why It This So?

The Same Facts Apply To The *Qur'an*. The *Qur'an* Was Not Sent To The Entire World. If The *Qur'an* Was Sent To The Whole World Or Universal, It Too Would Have Been Revealed In A Universal Language. Further Confirmation That The *Qur'an* Was Sent Only To A Specific Group Of People, Are In The Following Quotes: In *Qur'an* 14:4, 41:3.

Qur'an 14:4

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهِ، لِيُبَيِّنَ لَهُمْ

"WE SENT NOT A MESSENGER EXCEPT (TO TEACH) IN THE LANGUAGE OF HIS (OWN) PEOPLE, IN ORDER TO MAKE THINGS CLEAR TO THEM...."

In Muslim's Own Hadith They Even Say That The *Qur'an* Was Revealed In The Quraish Dialect.

Even As Far Back As The 17th Century, There Were Inscriptions Found In The Magazine Called "Aramco World". The September - October 1989 A.D. Issue Reads: The Prophet Muhammad (PBUH) Al Haadiy Meaning "The Prophet Muhammad (PBUH) Is The Guide". Al Haadiy (الهادي) Is The 94th Attribute Of Allah Which Means "The Guide" To Them.



Diagram 4
"Muhammad Al Haadiy"

The Word Al Haadiy (الهادي) Comes From The Root Word Huda (هدى) Which According To The Lane's Arabic-English Lexicon Means "To Calm, Still, Motionless." They Are Using One Of Allah Names, And They Are Attributing It To A Human, Which The Qur'an 7:180,59:24 Tells You Not To Do. It Does Not Say Muhammad Wa Al Haadiy Which Would Read "Muhammad And The Guide." However, Without The Wa (و), They Are Saying That Muhammad Is The Guide Which I Repeat, Is One Of Allah's Names. To Call Muhammad Al Haadiy Is To Call Him Allah. Muslims Have Worshipped The Prophet Muhammad (PBUH) For So Long, That They Have A List Of 104 Attributes For Him, And Most Of Them Consist Of Allah's Attributes, Putting The Prophet Muhammad (PBUH) And Allah On The Same Level. They Also Use The Name Allat (اللات) For Allah (الله), As The Feminine Gender Of Allah In The Quran 53:19, Yet At The Same Time Scholars Dispute The Meaning Of Allat. They Claim That It Is The Idol Lat Which Was A Man Who Lived On A Rock Near Ta'if, And Used To Entertain The Pilgrims To Makkah With Barley Drinks And Food. When He Died The People Built A Shrine To Him On The Same Rock And Began Worshipping Him. According To Jarir Tabari, Originally This Word Was Allahatun (اللات), Which Became Al-Lat (اللات). The Word Al-Lat (اللات) Simply Means "Female Source". Now, Take For Instance, The Kalimat (كلمة) Which According To The Wehr-Cowan Arabic Dictionary, Means "A Word, An Expression, A Proposition, A Sentence (A Saying) Argument, And Assertion. An Expression Of Opinion." The Word Kalimat (كلمة) Was Taken From The Syriac Translation Of The New Testament, John 1:1 And I Quote:

John 1:1

في البدء كان الكلمة والكلمة كان عند الله و كان الكلمة الله

"IN THE BEGINNING WAS THE WORD, AND THE WORD WAS WITH GOD, AND THE WORD WAS GOD."

In The Right Translation, The Word **Kalimat** Which Is "**The Sayings**" Or "**The Word**", As It Is Mistranslated In The Bible Is, "**Laa Ilaaha Illaa Allah**" (لا اله الا الله) "**Nothing Would Exist If Allah Didn't Create It.**" This Creed Was Innovated. The **Kalimat** Was Taken From Two Different Verses In The Qur'an Which Aren't Found Together Anywhere. An Example Of This Is, "**Laa Ilaaha Illaa Allah Muhammadan Rasuwl Allah**" (لا اله الا الله محمد رسول الله), "**There Is No God But Allah, And Muhammad Is The Messenger Of Allah**". Muslims Call This **Kalimat Tayyiba** (كلمة طيبة) "**The Best Word.**"

This Is Not Found Written Like This, Anywhere In Your **Koran**! However, They Are Found In Several Verses. But They Are Broken Into Two Parts; They Are Never Together As One Sentence:

1. "**Laa Ilaaha Illaa Allah**" (لا اله الا الله) Is Found Alone In:

Qur'an 37:35

إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ

"FOR THEY, WHEN THEY WERE TOLD THAT THERE IS NO GOD EXCEPT GOD, WOULD PUFF THEMSELVES UP WITH PRIDE"

And In **Qur'an 47:19** And I Quote In Part:

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ

"KNOW, THEREFORE, THAT THERE IS NO GOD BUT GOD, AND ASK FORGIVENESS FOR THY FAULT..."

2. **Muhammadan Rasuwl Allah** (محمد رسول الله) Is Found Alone In:

Qur'an 33:40

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمُ النَّبِيِّينَ

"MUHAMMAD IS NOT THE FATHER OF ANY OF YOUR MEN, BUT (HE IS) THE APOSTLE OF GOD, AND THE SEAL OF THE PROPHETS..."

Also In Qur'an 48:29 And I Quote, In Part:

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَرِ

"MUHAMMAD IS THE APOSTLE OF GOD; AND THOSE WHO ARE WITH HIM ARE STRONG AGAINST UNBELIEVERS..."

This Is How It Is Written In The Qur'an Of The Muslims. They Are Never Found In The Same Place! Yet, The Flag Of Saudi Arabia, Which Is Where "The Holy Of Holies" Sit, In Mecca, Has This Same Declaration, "The Kalimat Tayyiba," Written On It.



Diagram 5
Saudia Arabian

Many Of Their Islaamic Books, Posters, And Leaflets, Donn This Man-Made Verse. However, If You Or I Were To Take Two Verses From The Qur'an, And Put Them Together To Create One Sentence, Like "Laa ilaaha illaa Allah" (لا اله الا الله), They Would Call It **Shirk** (عرق) And Have A Heart Attack Saying "As-Taghfir Allah" (استغفر الله). "Hum Min Al Kaafiriyn" (هم من الكافرين) Meaning "Seek Forgiveness In Allah, They Are Disbelievers" Or They Will Seek To Kill You! The Only Reason Why Muslims Call The Declaration, "Kalimat Tayyiba" (كلمة طيبة) "The Best Word," Is Because It Exalts Muhammad, By Putting His Name Next To Their God, "Allah's" Name. They Have Taken One Of The Definitions Of The Kalimat, Which Is "An Expression Of Opinion," To Justify Their Saying That Kalimat Tayyiba Should Be The One To Be Expressed! It Really Should Be Called Kalimat Al Nabiyy (كلمة النبي) Which Is Muhammad Rasuwl Allah, Or "The Word Of The Prophot " Not The "Best" Kalimat.

Then You Have What They Call Kalimat Shahaadah
www.Nuwaupuinc.com

Meaning "No" And Sharik (شريك) Meaning "Partners." So, What Muslims Are Implying Is; "Laa" (لا) "He Doesn't Have Any", Ashaabahu (صاحبه) Meaning "Companions" Or Mithala (مثل) Meaning "Likeness", Or Shabaha (شبهه) Which Is The Root Word Of Yash-Bahu (يشبهه) Meaning "Anyone Who Looks Like Him"; But, What You Mean Is, "No Saahaba" (لا صاحب) Or "No Sadiq" (لا صديق) "Friends" But Not "Laa Sharika Lahu" (لا شريك له) "He Has No Partners", This Is Being Misused.

The Word Shariyk (شريك) Is Derived From The Word Sharaka (شرك) Meaning "Partnership Of A Corporation Or Associates." And They Have To Constantly Say That Allah Is Alone. Why Is This Necessary, If Allah Was The One And Only God? Wahdahu La Sharika Lahu (واحد لا شريك له) Should Not Have To Be Said! It Should Be A Known Fact. Making This Mere Statement Is Admitting That Allah Is Not Alone! And Qur'an 15:26-27 Proves This When It Says And I Quote: "We Created Man From Sounding Clay From Mud Molded Into Shape. And The Jinn Race, We Had Created Before, From The Fire Of A Scorching Wind."

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ

Kalimat At Tawhid, Which Is "Ashadu An Laa Ilaaha Illa Allah, Wahdahu Laa Sharika Lahu", Is Suppose To Be The First Of "The Five Pillars Of Faith." However, This So-Called First Pillar, Is Really Two Which Makes Six Pillars Of Faith Not Five. Pay Close Attention To The Following. Muslims Add To The Kalimat At Tawhid, "Muhammad Rasuwl Allah."

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

If You Look At The Declaration, "Ashadu An Laa Ilaaha Illa Allah, Wahdahu Laa Sharika Lahu, Wa Ashadu Anna Muhammad Rasuwl Allah" Which Translates As "I Bear Witness That There Is Not God But Allah, And He Is Alone, And Muhammad Is The Messenger Of Allah", You Will See That It Is Really Two Complete Thoughts. This Is Where The Mistake Comes In. When You Make A Statement In Any

Meaning "No" And Sharik (شريك) Meaning "Partners." So, What Muslims Are Implying Is; "Laa" (لا) "He Doesn't Have Any", Ashaabahu (صاحبه) Meaning "Companions" Or Mithala (مثل) Meaning "Likeness", Or Shabaha (شبهه) Which Is The Root Word Of Yash-Bahu (يشبهه) Meaning "Anyone Who Looks Like Him"; But, What You Mean Is, "No Saahaba" (لا صاحب) Or "No Sadiq" (لا صديق) "Friends" But Not "Laa Sharika Lahu" (لا شريك له) "He Has No Partners", This Is Being Misused.

The Word Shariyk (شريك) Is Derived From The Word Sharaka (شرك) Meaning "Partnership Of A Corporation Or Associates." And They Have To Constantly Say That Allah Is Alone. Why Is This Necessary, If Allah Was The One And Only God? Wahdahu La Sharika Lahu (واحد لا شريك له) Should Not Have To Be Said! It Should Be A Known Fact. Making This Mere Statement Is Admitting That Allah Is Not Alone! And Qur'an 15:26-27 Proves This When It Says And I Quote: "We Created Man From Sounding Clay From Mud Molded Into Shape. And The Jinn Race, We Had Created Before, From The Fire Of A Scorching Wind."

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ

Kalimat At Tawhid, Which Is "Ashadu An Laa Ilaaha Illa Allah, Wahdahu Laa Sharika Lahu", Is Suppose To Be The First Of "The Five Pillars Of Faith." However, This So-Called First Pillar, Is Really Two Which Makes Six Pillars Of Faith Not Five. Pay Close Attention To The Following. Muslims Add To The Kalimat At Tawhid, "Muhammad Rasuwl Allah."

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

If You Look At The Declaration, "Ashadu An Laa Ilaaha Illa Allah, Wahdahu Laa Sharika Lahu, Wa Ashadu Anna Muhammad Rasuwl Allah" Which Translates As "I Bear Witness That There Is Not God But Allah, And He Is Alone, And Muhammad Is The Messenger Of Allah", You Will See That It Is Really Two Complete Thoughts. This Is Where The Mistake Comes In. When You Make A Statement In Any

Language, The Central Character Of The Noun Is The Thought. The Thought Of The Sentence, **Laa Ilaaha Illaa Allah** (لا اله الا الله) Is Complete. You Are Talking About Allah, And He Alone Is The Creator. But Once You Add Another Human Beings Or Object To The Sentence, Like The Name Muhammad And The Phrase **Rasuwl Allah** (رسول الله), **Muhammad Is The Messenger Of Allah**, Then You Have Created Another Sentence, Then You Overstand The Subject Of The Sentence. However, When Another Subject Is Added Like Muhammad Rasuwl Allah, Then You Have Created A Compound Sentence; Which Is More Than One Complete Thought, And Subject Combined In One. The Comma In A Sentence Provides A Separation Of Ideas. So, If The Implication Of The Sentence Is To State That "Nothing Would Exist If Allah Didn't Create It", The Thought Is Complete And Any Addition To This Would Be Distortion. Shouldn't **Kalimat At Tawhid**, "The Word Of The Aloneness Of Allah," Be Considered Greater Than Proclaiming, That "Muhammad Is The Messenger Of God," Of **Kalimat Al Nabiyy** As Muslims Translate The Phrase "Muhammad Rasuwl Allah" To Mean? So In Reality, Shouldn't **Kalimat Al Tawhid** Be Named **Kalimat Tayyiba** Or "The Best Kalimat"? The Kalimat Came Together By Way Of Hadiths. So, Which One Is Right? Is It Your Hadith Which Are Words Of Men Or Is It Your Qur'an Which Are Words Of Your God, Allah? I'd Like To Also Point Out Right Here That There Exists Today, An Actual Letter Handwritten By The Prophet Muhammad (PBUH) Himself In The Quraish Dialect.



Diagram 6
Muhammad's Personal Letter

Take A Look At The Picture On The Left. It Is A Translation Of Muhammad's Letter Into Modern Day Arabic, This Is Exactly What They Did Today With The Koran.

Note: The Handwriting Of Muhammad: Compare It To The Qur'an You See Today. You Don't See Any Dots Anywhere. They Didn't Even Have A Number System Back Then. So The Verses And Chapters Didn't Exist Originally. Why Isn't Today's Qur'an Written In The Same Script That The Prophet Muhammad (PBUH) Wrote The Letter In, Being That The Qur'an Was Written In Muhammad's Own Tongue, Which Was The Quraish Dialect? (*Qur'an 44:58*). And *Qur'an 44:58* Is One Of The Most Widely Misunderstood And Misinterpreted Verses. Many So-Called Scholars Use This Verse To Say That The Prophet Muhammad (PBUH) Was Illiterate. However, Just Like Every Other Quote In The Quran, This Too Has Been Distorted.

Qur'an 44:58

"VERILY, WE HAVE MADE THIS (QUR'AN) EASY, IN THY TONGUE, IN ORDER THAT THEY MAY GIVE HEED."

When Gabriel Told The Prophet Muhammad (PBUH) To Read, The Prophet Muhammad (PBUH) Answered Maa Ana Biqaarian (ما انا بقاري) "I Am Not A Reader". The Prophet Muhammad (PBUH) Was Answering In The Quraish Dialect In Which He Spoke. If It Was The Classical Arabic Of The Qur'aan, He Would Have Said Ana Lastu Min Al Qaarian (اذا لست من القاريين). However, The Prophet Muhammad (PBUH) Was Speaking A Very Bad Dialect Of Arabic, That Is Still Spoken Today. Therefore, He Answered In His Quraish Dialect Saying Maa Ana Biqaarian (ما انا بقاري).

So, The Prophet Muhammad (PBUH) Was Telling Gabriel That He Was Not A Poet Like The Men Of His Day, Nor Was He Well Learnt In The Scriptures Of Old. This Did Not Mean That The Prophet Muhammad (PBUH) Could Not Read Arabic, He Was Just Not Able To Read, Such An Eloquent Form Of Arabic As Found In The Torah And The Scriptures Before Which According To Hebraic Teachings, Rendered Him What The Word Properly Translates As Which Is Gentile. The Arabic Word Used For Gentile Is Ummi (امى). (Refer To "Muslim Creeds: True Or False?" Scroll #71).

If You Were Walking Down The Street Today, And Walked Up To The Average Man Or Woman From A Village, Who Was Not

Very Educated And Asked Them To Read From An Ancient Arabic Qur'an As The Letters In Muhammad's Personal Letter, Without The Vowels, They Couldn't Do It Even Today. To Make It Simple To Understand, If You Were Giving A Play Or Story From William Shakespeare's Time To Read, You Would Not Be Able To Read It, Because It Would Be In Old English And Not Present Day English. Likewise, **The Prophet Muhammad (PBUH)** Was Not Able To Read Or Write Syretic Arabic. He Only Spoke And Wrote The Quraish Dialect Of Arabic, Just Like All Arabs Today. And Don't Believe He Couldn't Read Or Write At All Because He Was Hired By Khadijah, Who Later Became His Wife, To Control The Buying And Selling And Trades Of Her Personal Business Which Was Extremely Lucrative. (Refer To "Does Religion Breed Ignorance?", Scroll #98 And "360 Questions To Ask An Orthodox Sunni Muslim", Scroll #198).

What's Sad Is, After Having Traveled Throughout The Muslim World, I Discovered That Most Muslims Worldwide Can Not Read, Write, And Speak Arabic Fluently. Today, The Entire Arab World Speak Poor Dialects Of Arabic According To Their Own Country, Which In Most Cases Is Mixed With Other Languages Such As Greek, Spanish, French, English, Bantu And Many Other Languages. Each Arab Country Has Created Their Own Form Of Arabic. They Use Poor Dialects Such As The Following:

Word

Dialect

| How | Chayf | Shlown |
|-------|------------------------|------------------|
| What | Aysh Sheeno Shin | Ma Shu Mu |
| Yes | Ay Na'am Ina'am | Aywa I Wai |
| Where | Hayn Wayn Weno | Fayn Ayna |
| We | Ihna | Nahnu |
| Water | Ma'a Maya | Moia |

| | | |
|-----|---------------------|-------------------|
| In | Fe Shay Shast | Aku Shii Bu |
| Not | Mu Mush Laysa | Mub Laa Lim |

The Script That The Present Day Qur'an Is In, It Is Not From The Original. The Present Day Script Of The Qur'an Is A Form Of Farsi (Persian). Although, There Are A Variety Of Different Dialects And Scripts Of The Qur'an, Farsi Is The Most Widely Used. And Muslims Act As If There Is Only One Qur'an, In The Same Script And Dialect. When You Say To Them, The Qur'an Has Been Tampered With Just Like The Bible, Their Response Is "Not In The Original Arabic." Sadly, That's Not True. The Arabic Is Also Corrupted And Tampered With And Each Qur'an Is Different In Different Islaamic Countries. There Is An African Qur'an, Pakistanian Qur'an, Persian Qur'an, A Variety Of Kufic Scripts Of The Qur'an, A Moroccan Qur'an And The List Goes On And On.

Again, The Muslim World Has Done This Purposely, To Confuse You Non-Arabic Speaking Muslims, With All Of These Different Scripts And Dialects. Muslims Will Swear That The Arabic In All Qur'ans Are Correct. In Suratul Falaq Of The Moroccan Koran, The Nuqta Is Under The Letter Faa When It Should Be Over The Faa Like This (ف). At The End Of The Word Falaq (فلق), The Nuqtas Are Missing. However, They Have Nuqtas Over The Alif (ا) Which Is Totally Incorrect. This Changes The Word, Meaning And The Pronunciation. Again, To A Person Who Does Not Know The Language, They Will Be Misguided.

Suratul Falaq Taken From The Moroccan Koran:

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 ١ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
 ٢ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ
 ٣ قُلْ هُوَ اللَّهُ صَمَدٌ
 ٤ قُلْ هُوَ اللَّهُ غَنِيٌّ
 ٥ قُلْ هُوَ اللَّهُ ذُو الْكَرَمِ
 ٦ قُلْ هُوَ اللَّهُ ذُو الْجَلَالِ
 ٧ قُلْ هُوَ اللَّهُ ذُو الْإِكْرَامِ
 ٨ قُلْ هُوَ اللَّهُ ذُو الْوَدَادِ
 ٩ قُلْ هُوَ اللَّهُ ذُو الْوَدَادِ
 ١٠ قُلْ هُوَ اللَّهُ ذُو الْوَدَادِ

Know Muslims Who Have Been Muslims For 25 Years In America And The Caribbeans, And Don't Know Arabic Fluently. People Go To Germany And France And Learn To Speak German And French In Two Years. Why Is It That People Can Learn German And French For Pleasure, But A Religious, Zealous Muslim Can't Learn Arabic In Over 25 Years? That Is How You Know It Is A Conspiracy To Keep You From Learning The Language. Scholars Hear People Like Min. Louis Farrakhan And Different Leaders Making Mistakes And Don't Even Try To Correct Them.

These Are Some Of The Different Styles Of Writing In The Qur'an:



Diagram 7

So Which One Is Correct? How Do You Know That When These Versions Were Written, There Were No Mistakes Made?



Diagram 8
These Are Other Arabic Characters

Translators Today Also Mistranslate Certain Words, To Hide Their Meanings. Take A Look At The Chart Below:

| Word | Incorrect Translation | Correct Translation |
|----------------------------------------------|-----------------------|---------------------|
| Al Hamdu (الحمد Qur'an 7:43) | Praise | Gratitude |
| Saalihaat (صالحات Qur'an 35:7) | Righteous | Perfection |
| Allah (الله Qur'an 20:14) | God | The Source |
| Rasuwl (رسول Qur'an 19:19) | Prophet | Newsbearer |
| Muslimiyn (مسلمين Qur'an 22:78) | Submitter | One Who Is Of Peace |
| Zowj (زوج Qur'an 24:6) | Wife | Mate, One Of A Pair |
| Qississiyn (قسيسين Qur'an 5:82) | Monk | Christian |
| Isa (عيسى Qur'an 2:87) | Jesus | Yashu'a |
| Uzurq, Zurqaan (ورق Qur'an 20:102) | Blur | Blue Eyed |
| Umi (امى Qur'an 7:158) | Illiterate | Gentile |
| Khaliyfah (خليفة Qur'an 35:39) | Vice-Regent | Left Behind |
| Taqtaluwnaa (تقاتلون Qur'an 2:87) | Fight | Kill |
| Ibaadihi (عباده Qur'an 35:28) | His Servant | His Slave |
| Aqra (اقرا Qur'an 96:1) | Recite | Read |
| Untha (انثى Qur'an 16:58) | Female | Second Part |
| Hama (حما Qur'an 15:26) | Friend | Black (Hamite) Mud |

| | | |
|------------------------------------------------------|----------------------|-----------------------------------------------|
| Shahiyd (شهيد Qur'an 29:52) | Witness | To Watch |
| Hakiym (حكيم Qur'an 43:4) | Judgment | Wisdom |
| Masihiyin (مسيحين Not Found In The Qur'an) | Followers Of Messiah | Greek Word Meaning Messiah |
| Akmaltu (اكملت Qur'an 5:3) | I Have Perfected | I Have Complete Something, Previously Started |
| Suduwr (صدور Qur'an 11:5) | Hearts | Chest |
| Kitaab (كتاب Qur'an 40:2) | Revelation/Book | Scripture |
| Ahaba (اعطى Qur'an 19:19) | Bestow | Give |
| Millah (ملة Qur'an 2:130) | Religion | Rites |
| Alihatunaa (الهدى Qur'an 43:58) | Allah | Our Allah |
| Allah (الله Qur'an 36:74) | God | The Source |
| Alihatin (الهدى Qur'an 36:74) | One Allah Of Allah | More Than One Allah Of Allahs |
| Allat (اللات Qur'an 53:19) | Lat | Female Source |

Salla (صلى) Is Another One Of The Words In The Qur'an That Has Been Misinterpreted. In The **Abdullah Yusuf Ali** Version Of The Koran, **Salla** (صلى) Is Translated As "Blessings". The Word **Salaat** (صلاة) Which Means "**Salutation As Worship**" Comes From The Word **Salla** (صلى). The Root Of The Word **Salla** (صلى) Is From The English Word **Salute**. This Is A Big Mistake On The Part Of Translators. Derivatives Of This Same Word Are Found In **Qur'an 33:43**, Which Say **Yusal-Li 'Alaykum** (يُصَالِي عَلَيْكُمْ).

Qur'an 33:43

هُوَ الَّذِي يُصَالِيكُمْ وَيَرْفَعُكُمْ مِنْ الْأَرْضِ وَإِلَى الْمَقَامِ الْمُنِيرِ

"HE IT IS WHO SENDS BLESSINGS ON YOU, AS DO HIS ANGELS, THAT HE MAY BRING YOU OUT FROM THE DEPTHS OF DARKNESS INTO THE LIGHT: AND HE IS FULL OF MERCY TO THE BELIEVERS."

Also, **Qur'an 33:56** Uses **Yusalluwna 'Alaa** (يرسلون على).

Qur'an 33:56

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

"GOD AND HIS ANGELS SEND BLESSINGS ON THE PROPHET: O YE THAT BELIEVE! SEND YE BLESSINGS ON HIM, AND SALUTE HIM WITH ALL RESPECT."

When The Preposition **'Alaa** (على) Is In Front Of The Word **Salla** (صلى), It Means **"To Salute Or To Send Supplications For The Sake Of Someone."** When The Preposition **Li** (لِ) Is In Front Of The Word **Salla** (صلى), It Means **"To Worship"** As In **Al Salawaatu Lillahi** (الصلوات لله) Meaning **"The Worships Are From Him Or His."** As You Can Plainly See, The Word **Salla** (صلى) Does Not Mean Blessings. The Word For Blessings Or To Bless Is **Baraka** (بركة). **Baraka** Is From The Aramic (Hebrew) Root Word **Bawrak** (ברך) Which Means **"To Bless, Kneel."**

If Worship Is The Performance Of The Different Positions In Salaat Like Prostration And Bowing. When They Say **Yusalluwna 'Ala**, It Means **"Send Prayers On."** So In Other Words, You Are Sending The Prophet Muhammad (PBUH), Prostrations And Bowings Which Is Suppose To Be For Allah. If Muslims Are Saying They Are Sending Worship On Muhammad, Then They Should Explain That The Word **Salla** (صلى) Does Not Always Mean To Go Down On The Floor In Prostration And That It Also Means To Supplicate For The Sake Of Someone Else Which Depends Upon What Part Speech Is Affecting It. Muslims Are Wrong When They Say: **Salla Allahu Alayhe Wa Sallam** (صلى الله عليه وسلم) **"Send Salutations And Peace Upon Him"** After Muhammad's Name Only; Because This Salutation Can Be Given To Anyone, Whether Dead Or Alive. Also, When They

Say **Alayhe Sallam** (عليه سلام) Meaning "**Peace Upon Him**", It Actually Means "**Submittance Be Upon Him**", When Speaking About The Other Prophets, For It Is Making A Clear Distinction Between Them, And **Qur'an 2:136** Says Not To.

Qur'an 2:136

عَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَّا بِرِهْمٍ

"...TO (ALL) PROPHETS FROM THEIR LORD; WE MAKE NO DIFFERENCE BETWEEN ONE AND ANOTHER OF THEM: AND WE BOW TO GOD (IN ISLAM)."

They Are Declaring Publicly That They Worship The Prophet Muhammad (PBUH) Which Is Not Supported By The Qur'an And They "Send Peace" To The Other Prophets, By Saying **Alayhe Sallam** Only. **Qur'an 2:157** And **Qur'an 33:43** Tells You That Salutations Belong To Anyone Who Seek Allah's Help Through Patience And Prayer.

Qur'an 2:157

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ

"THEY ARE THOSE ON WHOM (DESCEND) BLESSINGS FROM THEIR GOD, AND MERCY, AND THEY ARE THE ONES THAT RECEIVE GUIDANCE."

Qur'an 33:43

"HE IT IS WHO SENDS BLESSINGS ON YOU, AS DO HIS ANGELS. THAT HE MAY BRING YOU OUT FROM THE DEPTHS OF DARKNESS INTO LIGHT: AND HE IS FULL OF MERCY TO BELIEVERS."

So Yes, Muslims Do Worship The Prophet Muhammad (PBUH) Overtly And Covertly... They Cannot Deny It By The Mere Fact That:

- They Celebrate His Birthday.
- They Visit His Grave On Hajj.
- They Have Special Salutations Said Only After His Name.
- They Have Over 100 Attributes And Titles For Him.
- They Have Included His Name In The Adhaan And The Kalimat.
- They Have Created A New Religion Called Muhammadism Centered Around Him And Man-Made Hadith And Sunna.
- They Have Some Of His Whiskers In Jerusalem In The Dome Of The Rock, Which They Call A Mosque.
- They Have Carved Muhammad's Name Into Calligraphy, And Added There Is No God Except Allah, And That The Prophet Muhammad (PBUH) Is The Messenger Of Allah, Which According To Them, Is Forbidden In Their Religion.



Diagram 6
Muhammad's Name
In Calligraphy
This Is A Image



Diagram 7
La Illaha Illa Allah
Muhammad Rasuul Allah



Diagram 8
In The Above Script, They Took Allah's Name Apart. Now,
That Is Called Blaspheming In Islaam.

Another Example Of How Translators Can't Agree On The Meaning Of Words Is The Word **Taqwa** (تقوى). **Qur'an 71:3** Uses The **Ataquwhu** (اتقوه) Which Means **"Tremble And Fear Him."** However, When They Translate It To English, They Have All Kinds Of Meanings For This One Word.

According To The **Maulana Muhammad Ali** Version 1917 A.D., Which Is The Version The **Ahmadiyyah** Sect And The **Nation Of Islam** Uses, **Taqwa** (تقوى) Is Translated As, **"Keep Your Duty."**

According To The **Abdullah Yusuf Ali** Version 1930 A.D., Which Is The Version The **Orthodox Sunni Muslim** And The **Bilalian** Sects Use, **Taqwa** (تقوى) Is Translated As **"Fear Him."**

According To The **Dr. Rashad Khalifa** Version 1981 A.D., Which Is The Version **Submitters Perspective** Uses, **Taqwa** (تقوى) Is Translated As **"Work Righteousness."**

According To The **Bounteous Koran** Version 1984 A.D., Which Is The Version That **Al Azhar University** And Many Other Sects Use, **Taqwa** (تقوى) Is Translated As, **"Venerate Him."**

According To The **Holy Quran By M.H. Shakir**, 1985 A.D., Which Is The Version The **Shi'ite** Sect Uses, **Taqwa** (تقوى) Is Translated As, **"Careful Of (Your Duty To)."**

The **"Holy Koran Of The Moorish Science Temple Of America"** 1927 A.D., Which Was Prepared By **Noble Drew Ali**, Has Absolutely Nothing To Do With Or Share Any Similarities Of The Original **Qur'aan** Of 1400 Years Ago, Revealed To The Prophet **Muhammad**.

According To The **Holy Qur'an By S.V. Mir Ahmed Ali** Version, 1988 A.D., Which Is The Another Version Of The **Shi'ites**, The **Holy Ahlul Bait**, Uses, **Taqwa** (تقوى) Is Translated As **"Fear Him."**

These Kind Of Mistakes And Misinformation Appear Over And Over Again In The **Qur'an**. These Translators Are Misguiding People's Very Soul And Don't Care.

Then The Qur'an Speaks In Every Tense You Can Think Of. By That I Mean, In Some Verses It Is Talking About Allah (*Qur'an* 29:19, 35:1, 27). As Allah (*Qur'an* 20:14), Gabriel Talking About Gabriel In The First Person Singular ("I This Or That") (*Qur'an* 20:14, 5:3,12). Us And We (*Qur'an* 36:44, 39:13, 76:2, 7:52). And It Never Says In The Qur'an That Gabriel Is Talking, Specifically. However, Gabriel Is The One Angel That Is Spoken About The Most.

These Same Muslims Who Are Misleading The Entire Muslim World, Aren't Even Sure Whether The Qur'an Was Sent Down, Revealed Or Given To Muhammad. In *Qur'an* 41:2-3, 42:17, 43:31, 45:2, It Uses The Word **Nazala** (نزل) Meaning "**Descending, Or Sending Down To**". *Qur'an* 21:45, 14, 35:31, Uses The Word **Wahy** (وحى) Meaning "**Inspiration**". Then The Word **Utiy** (اتى) Which Means "**Given**" Is Used In *Qur'an* 2:136 And **Waratha** (ورث) Meaning "**Inheritance**" Can Be Found In *Qur'an* 35:32.

None Of Them Can Tell You Which Is The Correct Answer. By The Mere Fact That There Are So Many Different Words Used, Tells You That They Didn't Intend For You To Ever Overstand The Qur'an But Only To Accept It With Blind Faith. And When You Are Chanting The Qur'an, You Have No Idea What You Are Saying. The Only Thing You Know Is That It Sounds Beautiful.

Most People Think When They See A Muslim And He Is Babbling On In What Sounds Like Arabic, That It Means He Understands The Qur'aan. Most Non-Arab Muslims, Especially **British, Carribeans, Americans** (English), **Turks** (Turkish), **Afghanistan** (Afghanistanian), **Iranians** (Farsi) **Bosnians** (Serbo-Croatian), **Nigerians** (Hausa), **Malaysians** (Malay) And **Pakistanians** (Urdu), And Many Others Whose Native Tongues Are Not Arabic Do Not Understand The Qur'an. Many Can Read The Arabic Script, Recite And Chant The Qur'an In Their Prayer Without Understanding One Single Word Of What The Text Says In The Arabic Language. They Depend On Someone Else's Translation.

Some Of Their Greatest Islaamic Leaders Of Today, Are Not Fluent In The Arabic Language Such As: **Ahmed Deedat** From South Africa. Nor Was The Honorable **Elijah Muhammad**

(AS). A Former Leader Of The Nation Of Islam, Noble Drew Ali, Former Leader Of The Moorish Science Temple, Malcolm X, A Former Student Of The Hon. Elijah Muhammad (AS). The God, Clarence 13X (Allah), Founder Of The 5 Percenters And Neither Is Minister Louis Farrakhan, Leader Of The Nation Of Islam Today. Nor Is Siraj Wahaji From Masjid Taqwa, Imam Ibrahim From Masjid Ikwah Or Bilal Philips Who Doesn't Have A Masjid. And The One Sunni Muslim From The Muslim Brotherhood, Who Was American Born And Fluent In Arabic, It's Sad To Say, He Passed On. His Name Was Imam Tawfiq.



Figure 14
The Honorable
Elijah Muhammad (AS)
(1897-1973 A.D.)



Figure 15
Malcolm X
(1925-1965 A.D.)



Figure 16
Clarence 13X
(1929-1969 A.D.)



Figure 17
Ahmed Hoosen Deedat
(1918 A.D. - Still Living)



Figure 18
Min. Louis Farrakhan
(1933 A.D.-Still Living)



Figure 19
Siraj Wahajj
Masjid Taqwa



Figure 20
Noble Drew Ali
(1886 A.D. - 1929 A.D.)



Figure 21
Bilal Philips
(1947 A.D. - Still Living)

Yet, They Will Hold Up A Translation Of The Qur'an In English From Some Sect Leader's Translation Who Translates For His Specific Sect, Yell, Scream And Preach Never Knowing Whether What They're Teaching And Living Their Life And Dying For, Is Actually In The Arabic Text; Not Having A Thorough Knowledge Of That Language. Muslims Are Going Out And Killing People In The Name Of Islaam And Fighting What They Call Jihad (Holy War). They Are Blowing Up Buildings And Calling Everybody Who Don't Believe As They Believe, **Kaffiruwna** (Infidels Or Disbelievers) And **Shaytaan** (Satan). This Is The Tunnel Vision That Muslims Suffer From. I Was That Kind Of Muslim Once, I Know Islaam And How Closed Minded The Religion Is. Islaam Is The Qur'an And The Qur'an Is Islaam. Written Inside This "Holy Book", Is More Death And Killing Than There Is Love And Harmony. **Qur'an 7:178-179** States That *"Whom Allah Doth Guide - He Is On The Right Path: Whom He Leads Astray From His Guidance - Such Are The Persons Who Perish"*. This Concludes That Since Everything Allah Does Is By His Own Will, And He Can Be Merciful When He Chooses To Be So (**Qur'an 6:12**). There Are Verses In The Qur'an Where It Literally Says 'Allah Kills And Inflicts Pain'. Right In **Qur'an 8:17**, It Says And I Quote:

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ
وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ وَلِئَلَّيْكَ الْمُؤْمِنُونَ مِنْهُ بَلَاءٌ حَسَنًا
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٧﴾

"IT IS NOT YE WHO SLEW THEM: IT WAS GOD: WHEN THOU THREWST (A HANDFUL OF DUST) IT WAS NOT THY ACT, BUT GOD'S: IN ORDER THAT HE MIGHT TEST THE BELIEVERS BY GRACIOUS TRIAL FOR HIMSELF: FOR GOD IS HE WHO HEARETH AND KNOWETH (ALL THINGS)."

This Is Just The English Translation. In The Arabic, The Word **Taqtuluwhim** (تقتلهم) Meaning **"To Kill Them"**, Is Being Used. According To The Dictionary And Glossary Of The Kor-An By J. Penrice, **Taqtuluwhim** (تقتلهم) Comes From The Root Word **Qatala** (قتل) Meaning **"To Kill, Or Slay."** This Is Not The Only Place In The Arabic, Where It Says God Or Allah Kills. **Qur'an 9:30** Says And I Quote:

الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَتَلْتَهُمُ اللَّهُ أَتَىٰ يَوْمُكَوْنِ

"...WHAT THE UNBELIEVERS OF OLD USED TO SAY. GOD'S CURSE BE ON THEM: HOW THEY ARE DELUDED AWAY FROM THE TRUTH".

The Word Being Used For "Curse" In This Quote Is The Same Word Being Used In *Qur'an 8:17*, *Taqtuluwhim* (تقتلهم), Again Which Means "To Kill Them". I Am Just Showing You A Few Of The Many I've Seen While Translating The Qur'an Word For Word: This Explains, Why Muslims Go Out And Just Kill. It's Because Of Verses Like These.

It's Little Things Like These That Muslim Converts And Non-Arabic Speaking Muslims Will Never Know, Exist. However, They Scream 'Allahu Akbar' And Go Out And Kill Hundreds Of People In The Name Of Allah Thinking They Are Doing His Will When In Actuality They Are Doing The Will Of Evil Men, Cowards.

Also, While I Was Translating *Suwratul Muminun* (The Chapter Of The Faithful), Which Was Originally Revealed As The 74th Chapter, I Found Simple Mistakes. For Instance, Let's Look At *Qur'an 23:21* Where It Says And I Quote:

Qur'an 23:21

وَلَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعْنَةٌ لَكُمْ فِيهَا مَعْلُوفَاتٌ ۗ وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا

"AND IN THE CATTLE (TOO) YE HAVE AN INSTRUCTIVE EXAMPLE: FROM WITHIN THEIR BODIES WE PRODUCE (MILK) FOR YOU TO DRINK:..."

Now In The English, You See The Word "Bodies", Yet In The Ashuric/Syriac (Arabic) The Word Used Is *Batuniha* (بطونها) Which Comes From The Root Word *Batun* (بطن) Meaning "Belly, Stomach, Abdomen" Not "Body". The Ashuric/Syriac (Arabic) Word For "Body" Is *Jusman* (جسم) From The Root Word *Jism* (جس) Meaning "Body". The Word *Jusman* Can Be Found In (*Qur'an 2:247, 63:4*) Which Translates As Body. So, As You Can See There Is A Difference In The Words Being Used. Also You Have The Word *Jassid* (جسد) For Body. But Not *Batniha* Which Means "Belly, Stomach And Abdomen."

Therefore, This Quote Is Really Saying That Cow's Milk Comes From Its Stomach. Sorry, But That Is Not A Scientific Fact. It's Outdated Information! Cow's Milk Doesn't Come From It's Stomach, It Comes From The Udder, Which Is A Anatomical Fact. The Udder Is A Baggy Organ And It Has Four Sections, Which Holds The Cow's Milk. The Udder Hangs From The Cow's Body, In Front Of The Back Legs. **This Is Clearly Not The Stomach.** You Should Be Asking Yourself, How Do Little Mistakes Like This Creep Into A Book You Say Is Without Any Doubts (ريب **Rayba**) Or "Holy" (قدوس **Qodesh**). Word Games Are Being Played On You Non-Arabic Speaking Muslims Because, You Will Only Get One Of Many English Translations Which In Actuality, Doesn't Mean Anything If The Qur'an Was Revealed In The Arabic Language. And The Translators Whose Qur'an You Are Reading Doesn't Care About You Enough To Put The Correct Word In.

All Arabic Speaking Muslims Know That The Qur'an Is Corrupted But, They Have This Code That They Will Kill Anyone Who Points This Out. Such Was The Case Of **Dr. Rashad Khalifa**, An Egyptian Muslim, Whose Native Tongue Was Arabic, Who Was Stabbed To Death Inside Of His Own Masjid Because, He Didn't Agree With Mainstream Islam. By Way Of A Computer, **Dr. Khalifa** Broke And Revealed The Sacred Code Of The Qur'an, The Number 19. With A Combination Of **Dr. Khalifa's** Knowledge Of The Computer And Qur'an, He Took Islaam To Another Level And His Teachings Would've Spread Worldwide. With The Findings That **Dr. Khalifa** Came Up With, Such As The Hadith And The Sunnah, Was All In The Qur'an; Something You Can Find In The Arabic That They Are Not Telling You (**Qur'an 39:23, 48:23**). And That These Thousands Of Hadith And Sunnah That They Teach You About, Is Their Way Of Leading You Away From The Qur'an And True Islaam Into A Man Made Religion.

Dr. Khalifa Would've Helped Dismount This False Islam. That Is Exactly What These Terrorist **Orthodox Sunni Muslims** Do Not Want To Happen. They Wanted To Take His Life To Stop Him From Growing. When They Are Defeated Mentally, They Resort To Violence And Set Out To Kill Anyone Who They Feel Is A Threat To Their Outdated Religion, Islaam. They Can't Afford A Debate Because They Can't Substantiate The Facts

That They Claim To Live By. If You Sit Down With A Sunni Muslim, And Try To Have A Sensible Conversation, It Will End In An Argument And Fight. And They Praise Each Other For These Kind Of Results And Call It Defending Islaam Against Its Attackers.



Figure 22
Dr. Rashad Khalifa
(1935 A.D.-1990 A.D.)

Needless To Say, **Dr. Rashad Khalifa** Was Met With Opposition And Was Beaten By A Group Of Muslims And There Has Been Many Attempts On His Life. Yet, His Faith Keeps Him Fighting For What He Feels Is The Truth, **Every Man's True Right.**

They Invited **Dr. Shorrosch**, An Arabic Speaking Christian To A Debate In South Africa And Then Attacked Him And His Associates, Stabbing One Of Them. Fortunately, His God, Christ Was Stronger Than Their God And He Escaped With His Life. **Dr. Anis A. Shorrosch**, Was Born In **Nazareth, Palestine**, Published His Views On The Qur'an And Islam. In His Book Written In **1988 A.D.** Entitled "**Islam Revealed**". He Questioned The Inconsistencies Of The Qur'an And The Very Authenticity Of The Islaamic Faith.



Figure 23
Dr. Anis Shorosh



Diagram 9
"Islam Revealed"

Muslims Like To Challenge People To Debates. And I've Listened To Their Greatest Leaders And Debaters And I Am Not Impressed. They Don't Have Any Answers. They Think They Can Kill Anyone Who Opposes Them To Keep Everyone Under The Illusion, That Islaam Is Pure. The Qur'an Is Going To Be Put Into The Computer The Same Way There Is A Bible Program Called "On-Line Bible" And "Logos". So They Better Be Prepared Because Many Non-Muslims Will Be Speaking Arabic Fluently With The Help Of Tapes, Videos, And Today's Technology. Muslims Have To Come To The Reality That It Is Their Turn. All The Other World's Religions Are 1000s Of Years Old, They Have All Been Attacked And They Have Defended Themselves The Best Way They Know How. Muslims Take Pride In Attacking Other People's Religion And Have Derogatory Names For Each. But Now It's Their Turn To Be Questioned And Scrutinized. And I'm Going To Tell You Right Out, The Islaam That Is Taught Today, Will Not Be Able To Defend Itself. It Is Not Based On Enough Facts.

Just Take A Look Around You, Islaam Is Already Dying Quickly. All Of The Arab Countries Are Selling Out To The European Common World Market And It's Western Ways. They Are Now At The Mercy Of Christians Who Control Their Countries By Controlling Their Militaries Which In Turn Means, They Will Control Their Future. How Well Do We Nubians In The West Know This Strategy?

This Qur'an Was Translated Word By Word, Giving You What The Word Means As Close As Possible Without Being Influenced By Beliefs. Having Been A Muslim For More Than 40 Years, A Native Speaker Of Arabic And Sudanese Dialect, And Studying Arabic In Prestigious Universities, And Farmost Having Been The Subject Of Much Scrutiny, Criticism, And Slander, By Muslims Who Want To Agree With What Is Incorrect In Islam, This Lifestyle Caused Me To Become Quite Proficient In Islaam And The Arabic Language. By That I Mean, Every Word That Came Out Of My Mouth For Over 25 Years, Was Being Questioned By Muslims Worldwide. My Interpretations As Well As My Translations, Were Being Watched Closely. And As A Result They Could Only Produce A Book Entitled **"Ansaar Cult In America"**, Which Dealt With My Character, My Lifestyle And The Likes. But Never Was Any Muslim Worldwide, Able To Disagree With My Translations Or Interpretations Or Teachings.

Never Were They Able To Prove What I Taught And Lived By As **Ansaaru Allah** Was Incorrect. I Even Gave Them A Chance By Presenting Myself Physically To The Public On A Weekly Basis In An Open Forum To Be Questioned. And Arabs As Well As American Converts, Came Regularly And In Most Cases Converted, Something None Of Their Leaders Will Dare Take A Chance And Do. They Lecture Well, But They Dare Not Present Themselves To The Public For Public Questioning.

Knowing This, I Further Went Into Their Privacies With A Series Of Books On Questions To Muslims Such As **"360 Questions To Ask An Orthodox Sunni Muslims"**, **Scroll #198, "Is The Qur'an Authentic?"**, **Scroll #118, "Is Jesus The God Of The Koran?"**, **Scroll #100, "Does The New Testament Contradict The Koran?"**, **Scroll #88, "Muslim's Creeds: True Or False?"**, **Scroll #71**, And Hundreds More. However, Only To Receive No Answers. Realizing This, And Realizing We Had Conquered Islam. We Moved Further On To Become **NUWAUBU**. But I Felt It Necessary To Show You How I Saw The Qur'an Word By Word. And What It Said To Me

This Translation Of The Qur'an Is In The Order That It Was Originally Revealed In, When It Was Originally Sent Down To The Prophet Muhammad (PBUH). This Qur'an Is Listed In The

Originally Revealed Order Whereas, Most Qur'ans Used Today, Are Not. To Enable You To Refer Back To Your Qur'an, I Have Listed At The Beginning Of Each Chapter The Original Revealed Order, And The Chapter It Is In Today. For Example:

| Begin All Acts And Thinking By Using El 'Eklawm. The All | |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| Chapter One <i>Revealed In The Year 610 A.D.</i> | which they did not know. |
| A' Alay (The Separation Of Congested Blood Cells Or Tears From) | <i>Verse 1-3 Were Revealed First, Then Verses 4-19 At A Different Time In The Same Year 610 A.D.</i> |
| Original Order Chapter Is Wrong Order Chapter 96 | 6) Nevertheless, surely the Lazans (Enasites) scored all bouts. |
| Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, 'ALLAH', The 'Rahman' The Yekden, Who Is The Most 'Rahim' Merciful. | 7) Because with this knowledge, he saw himself with many riches. |
| Muhammad Read To Your Rabbi's Name - His Creator El 'Eklawm Of Allah - He Taught You (I) - Who Of The Qalam - The Qalam (Pencil) Al 'Eklawm - To Your Rabbi In The Qalam - The Qalam Tried To A Wonder Muhammad From Worshipping | 8) Surely, unto you, (Muhammad's Rabbi (Master Nuraq), is the Raf's Return. |
| 1) Read by using the name of your, (Muhammad's) Rabbi, Master (Nuraq) who Khasaq Creates. | 9) Did you, see him, (Abu Jahl) who hindered? |
| 2) Who, created the (Enasites) from an Alam (Clot Of Congested Blood (Cells, Separating Of Mother Niaz). | 10) An Abul, 'Slave', (Ahmad/Muhammad) when he tried to send salutation in worship! |
| 3) Read by way of your Rabbi (Master Nuraq), who is 'Sustainer', the Akram, Most Generous. | Muhammad Was Asked, Did He See If He Was Lead Into Calumnies - Abu Jahl Denied The Qalam - The Qalam Was (Draw Him By His, Abu Jahl's Forelock, If He Continued To Hinder Others - So When He Calf Out For His Supporters, The Aynaq) Will Call The Rahimiyat - Muhammad Told Him Not To Obey Abu Jahl, And Continue To Draw Nearer To The Source |
| 4) It is He who Alam Taught', you by way of the Qalam, Quill. | 11) Didn't you see, that he, (Muhammad) was lead into calumnies! |
| 5) He taught the (Enasites) that | 12) Or that he, ordered |

Also, Other Things You Should Know About Our Translation Are:

At The End Of Each Chapter, You Might See "Sudika Allahu El 'Eklawm", Which Means "Trust Allah, The Supreme". This Notes That It Is The End Of One Chapter, And The Beginning Of Another.

The Arabic Words That Are Written Within The Single Quotation Marks Are The Definition For The Arabic Word Preceding It. For Example: Hamiyim 'Hamite (Nubian Brothers)'.

I Would Like To Stress Right Here That This Translation Of The Qur'an, Is A Translation Of The Arabic Qur'an Which Is In Circulation Today. I Do Have In My Possession Hand Written Ancient Copies, Not Having To Rely On The Printed Circulated Versions Because Muslims Don't Have The Original Qur'an.

The Qur'an Circulating Today Was Compiled By One Man, Zaid Bin Thabit With Some Changes Added Later. False Copies Were Distributed After The Original Copies Of The Qur'aan Was Taken And Completely Burned Under The Order Of Uthman Ibn Affaan Ibn Abil Aasiy, The Third Recognized Khalifa, By The Sunni Sect Who Is Responsible For Arranging The Chapters Of The Qur'an As It Is Today. He Did Not Receive Any Instructions From The Prophet Muhammad To Collect The Qur'an. Along With Him Were 1) Ubay Ibn Ka'b, 2) Abd'allah Ibn Mas'ud 3) Miqdad Ibn Amr, 4) Abu Muwsa. Ubay's Version Contained Two Extra Chapters, Suwrah Khaal, Suwrah Khaafir. Abdullah's Son Mas'ud's Version Excluded Suwrah Naas, And Suwrah Falaq, And Some Versions Excluded Suwrah Faatiha. The Original Copy Was Written On Bones And Skins In The Ancient Script In The Dialect Of The Quraysh Tribe And Was Intrusted To Ali, The Rightful Khalifa. Unbeknowing, The Original Copy Was Taken And Protected By Muhammad's True Descendants In Sudan. If Muhammad Did Have A Single Copy Of The Qur'an, Then Why Did Abu Bakr Start The Collection Into A Single Book? The Qur'an Was Memorized By A Group Of Men Called The Qurra', Which A Large Number Of The Qurra' Were Massacred In The Battle Of Yamama. Some Verses Were Lost Forever After The Battle Of Yamama. There Were Different Numbers Circulating During The Times Of The First Four Khalifas. The Full Text Of The Qur'an Was Not Written While Muhammad Was Alive, It Was Compiled Together After His Death.

There Are Two Verses Added To Qur'an Chapter 9, Which Are Verses 128 And 129 By Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi To Exalt Himself As The Muhammad. This Is The Muhammad You Are Worshipping Today. These Two Verses Deify The Prophet Muhammad, And They Were Only Found With Khuzeimah, Son Of Thaabit Al-Ansariy. Three Surah's Were Thrown Away Which Are Surah Khaal, Meaning "Maternal Uncle", Suwrah Hafd, Meaning "Pace", And Suwrah Nurain, Meaning "Illumination". They Also Changed The Name Of Suwrah Al Hamd To Suwrah

Al Fatiha. (Refer To Holy Tablets Chapter 19, Tablet 2:136-228). The Fact Remains That The Present Day Qur'an Is Not The Qur'an That Was Revealed To The Prophet Muhammad, So It Is Not The Original Copy, Only One Of The Many Translations Circulating Today.

My Primary Concern Is To Get My People Away From Arabian Idol Worship Disguised As The Religion Of Abraham. They've Even Taken The Name Islaam And Muslim And Affixed It To Their Idol Worship. And When We Identify With Our Ancestors Such As Enlil, Enqi, Ninti, Usir, Aset, Or Ra, These Desert Arabs Call Us Pagans. They Are Getting Our Ancestral Worship That Is Acknowledging Your Ancestors And Showing Respect Mixed Up With Their Idol Worship (Worshipping Rock And Stones). We Nubians Used To Worship Actual Living Entities Not Idols, Statues Of Stones Or Folklore But Actual Human Beings. They Are Our Ancestors. We Called It Sending Salutations Upon Them, Also Called Teraphym In The Torah (*Genesis 31:19*) From Which They Derived The Word **Salaat** (صلاة) From **Salla** (سلي), Salutations. Muslims Literally Use This In Every Prayer. They Send Salutations On Abraham And The Descendants Of Abraham. In Time, Confusion Led To The Word Being Misused For Worship And Prayer. Sending **Salla** (سلي) To Our Ancestors Was Our Spiritual Link From Father To Son, And From Mother To Daughter, For Thousands And Thousands Of Years, Which Was Before Any Institutionalized Religions And Traditions And So Called Holy Books Were Written Or Created By Man's Hands.

Now These Pale Arabs Are Using What We Used To Do, Ancestral Worship, As An Excuse For Their Idol Worship. They Are Worshipping A Rock Called The **Black Stone** (**Hajrat Aswad**) Which Is Really Brown And A 40'x35'x50' Cube Called The **Kaa'ba**. Even The Prophet Muhammad (PBUH) Has Become An Idol. It Is Natural For Pale Arabs To Worship Idols. They Are The Descendants Of Idol Worshipers. It Is In Their Blood.

I Am Trying To Show Nubians That They Are Following The Pale Arabs Way Of Islaam. I'm Not Talking About Islaam In It's Pristine Purity, That Is Not What I Am Worried About. I Am Worried About What Islaam And The Qur'an Has Become In The

Hands Of These Evil Concealers Of The Truth As The Qur'an Itself Refers To Them (*Qur'an 9:97*). These Pale Arabs Have You Practicing Their Religion Islaam Like It Is In It's State Of Purity And It Simply Isn't. It's A Form Of Hinduism.

The Intent Of This Book Is To Give A Clear Overstanding Of The Qur'an. It Is Not To Be Looked Upon As A Divine Inspiration, Or A Holy Book. Being That There Is So Much Controversy About The Translation Of The Qur'an, I Am Using Abdullah Yusuf Ali's Translation In This Introduction Because It Is The Most Widely Used Version In America. I Am The Nineteenth Translator Of The Qur'aan Which Matches Up Perfectly With The Most Powerful Number This Century Has Ever Seen.

The Number 19 Is Not A New Concept Invented By Myself. The Qur'aan Is Protected By This Number 19. An Egyptian Man Named Dr. Rashad Khalifa Wrote In His Translation Of The Qur'aan (Koran) Entitled, "Quran The Final Testament (Authorized English Version)" On Page 384 Verse 27:82 ($2 + 7 + 8 + 2 = 19$) In His Commentary "The Computer Was Required To Unveil The Quran's Mathematical Miracle, And Proved That Most People Have Discarded God's Word (App 1)." Also In His Qur'aan: The Final Scripture (Authorized English Version), It States "Strong Evidence Points At "The Computer" As The "Creature" Predicted In This Verse: Though The Decoding Of The Quran's Numerical Miracle (See Appendix 1), The Computer Speaks To The World That This Is God's Message And That The People Have Discarded It. By way Of The Computer, Dr. Rashad Khalifa Accomplished Gathering And Building Upon The Knowledge That I Had Already Conveyed To The Public, Just Like The Baha'i Faith Did Before Me On The Number 19. Back In 1970 A.D. In Fulfillment Of The Prophecy, The Seventh Seal (*Revelation 8:1*) Was Opened And It Revealed All The Previously Hidden Knowledge To A World Hungering For Salvation (*Revelation 12:10*). That Means That All The So-Called Mysteries Of The Qur'aan (Koran) Were Clarified And Exposed To The Light Of Truth. He Incorporated The Qur'aan (Koran) On A Computer And Wrote About His Findings Of The Number 19.

The Number 19 Is A Prime Number, It Is Not Capable Of Being Indivisible Into A Whole Number Except Itself. There Are Other Prime Numbers, Yet They Do Not Have The Same Mathematical Patterns As The Number 19. If You Take The Number 17 (Another Prime Number), You Will See That It Does Not Have The Same Mathematical Pattern As The Number 19. The Number (1), Is The Lowest Number On The Scale And 9 Is In Actuality The Highest. The Number (1) Is Represented By **Alpha** (Α) Which Is The Greek Letter For "Beginning" And The Number 9 Is Represented By **Omega** (Ω), Which Is The Greek Letter For "End (Revelation 22:13). So The Number 1 And 9 Are The Beginning And The End. Just Like It States In Qur'an 57:3, *Huwa Al Awwal Wa Al Akiyr* (هو الاول و الآخر), "He Is The Beginning And The End." The Ashuric/Syriac (Arabic) Language Originally Had 19 Letters, **Alif** (ا), Is The First Letter And **Yaa** (ي), Is The Last Letter.

ا ب ح د ه ز ط ع ف ق ك ل م ن و ي .

19 18 17 16 15 14 13 12 11 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

The Number 19 Is The Best At Everything **THE MOST HIGH** Does. Everything In Existence Acquires It's Beginning From **THE ALL**. His Power And Greatness Is Reflected In The Many Facets Of The Number 19. These Two Attributes **Al Awwalu** (الاول) Which Is The 72nd Attribute And **Al Akhiru** (الآخر) Is The 73rd Attribute Shows All Will Eventually Return To **THE MOST HIGH**, For He Did Not Need Any Source Of Help In The Beginning, Nor Will He Need It In The End (**Koran 57:3**).

This Is Why It Is Called The **Supreme Mathematics**. There Is No Number That Can Be Deciphered To Surpass These Two Numbers 1 And 9, Because All Other Digital Numbers Fall Between Them. This Shows You Once Again How All Things Are *Between The Hands Of "The Most High."* In Fact The Very Number 19 Is $10 + 9$. The Number 10 Is 1 Which Is Equal To 9 (The 0 Connected To 1).

$$101 = 1^9 1 \text{ Or } 19$$

On Close Examination Of The Structure Of The Figure (9), You See That It Is A Combination Of The Figure (1) And The Cipher

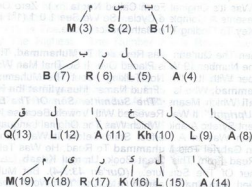
(0). The Adjoining Of The Two Separate Sections Can Either Give You (01) Or (10). In Ashuric/Syriac (Arabic) This Number Is Written As (·). The (·), Represents The **Cipher**, In Ashuric/Syriac (Arabic) It's Called **Sifr** (صفر), Meaning Zero, And This Was It's Original Form Called **Nuqta** (·). Zero Or Cipher Represents A Complete Cycle. So We See 1 0 1 (1st 1 Is 19) Is The Key To Finding The Mathematical Code.

When The Qur'aan Was Revealed To **Muhammad**, The Code Of The Number 19 Was Placed Over It So That Man Would Not Tamper With It. I'm Not Talking About The Muhammadan's, **Muhammad**, Who Is A Fraud Named **Musaylimat ibn Habib Al Hanafi** Which Means "*The Submitter Son Of The Beloved, The Upright*." It Was Revealed With Vowels Because It Was In Ancient Syretic Arabic. Which Was The Original Language. The Qur'aan Was In A Perfect State Before It Was Sent Down. When **Gabriel** Told **Muhammad** To Read, He Was Telling Him To Read From This Great Book, **Ummul Kitaab** (أم الكتاب), The Mother Of The Scripture. (*Qur'an 43:3-4*). But **Muhammad** Replied: **Maa Ana Biqaarian** (ما أنا بقارئ) "*I Am Not A Reader*."

In Other Words "*I Cannot Read This Advanced Language*." So The Angelic Being **Gabriel** Revealed It To Him In His Tongue (*Dialect Of The Quraish*). This Explains The Use Of The Word In The Qur'aan (*Qur'aan 12:2, 21:10*). All Was Involved In The "**We**" When The Qur'aan Was In Ancient Syretic And The Angels Had The Responsibility Of Transforming It Into The Quraish Dialect. So When **Muhammad** Said To The Angel **Gabriel**: **Maa Ana Biqaarian** (ما أنا بقارئ) "*I Am Not A Reader*" He Was Saying, By Not Using Classical Arabic, **Ana Lastu Min Al Qaarian** (أنا لست من القاريين), "*That He Was Not Of The Readers*." When He Answered In The Quraish Dialect, **Maa Ana Biqaarian** (ما أنا بقارئ) "*I Am Not A Reader*" He Was Speaking A Very Bad Arabic Dialect Which Is Still Spoken. So, Right Here We See That **Muhammad** Was Saying He Was Not A Poet Like The Men Of His Day. Nor Was He Learnt In The Scriptures Of Old. The Angel **Gabriel** Knew That It Was Going To Be Poetry, And Equal Up To 19.

This Is The Original Tasmiyah That Was Revealed To
Muhammad

Begin All Things By Using The Name Of The Sustainer, The Generous Creator



If You Will Count The Letters Of This Tasmiyah, They Also
Total 19

And This Is How It Is Contained In The First Three Verses Of
Chapter Of The Clot:

This Is The Original Tasmiyah That Was Revealed To
Muhammad, Within The Chapter Of The Clot Qur'an: 96:1-4.

*"(Muhammad) Read! By Beginning With The Name Of Your
Sustainer Who Created All Things."*

They Are A Class Of Angelic Being Called Al Zabaaniyah
(الزبانية) That Guard Over Hell, And It's Interesting To Note That
The First Letter Of Each Of These Names Spells Out The
Tasmiyah Currently Used Today.

1. Baa (ب) Baza'a'il (بازايل) Take Away, Steal, Wrest, Carry Away By Force
2. Shiyn (ش) Sahr'il (ساهريل) Enchanted, Or Fascinated Turned The Things
3. Miym (م) Miraa'il (ميراييل) Quarrel, Argument, Dispute, Doubt
4. Alif (ا) Asil (اسيل) Smooth And Even/Anything Lank

5. Laam (ل) Lahaabil (لاهابل) To Flame, Burn, Blaze, To Kindle, Light, Set On Fire
6. Laam (ل) Lamezil (لامزيل) He Made A Sign With The Eye, He Blamed, He Found
7. Haa (ح) Hezil (هزيل) To Shake, To Swing, Brandish, Wave, Sway Meat Without Separating, Made An Incision In It, Or He Cut It With
8. Alif (ا) Arzaa'il (ارزائل) Heavy Loss, Serious Damage, Disaster, Calamity
9. Laam (ل) Leqaahil (لقاهيل) The Semen Genitalia Of A Stallion, Camel, Horse Or Man . A Tribe That Does Not Submit To Kings, And That Has Not Been Governed By A King
10. Raa (ر) Rahmil (رحيم) Mercy
11. Haa (ح) HAAHAH'II (حاء) MEASURE, EXTENT, DEGREE, QUANTITY
12. Miym (م) Midaa'il (مدائل) Put, Purulent Matter To Spread, Spread Out, STRETCH OUT
13. Nuwn (ن) Nuwail (نورائل) Light, Ray Of Light
14. Alif (ا) Ashil (اشيل) To Insult, Abuse, Call Names, Revile, Rail
15. Laam (ل) Lahaa'il (لاهائل) Poster, Horrore, Urge, Press, To Implore Beseech, Insist
16. Raa (ر) Raz'il (رزائل) To Deprive; To Incur Or Suffer Loss; To Be Afflicted By
17. Haa (ح) Huk'il (حكائل) Doubt In Religion, Because It Makes An Impression Upon The Mind Yuhaka (وحاه) A Producer Of Much Evil, Or Mischief
18. Yaa (ي) Yaraashil (يوراشيل) To Interfere With Someone's Plans, To Disturb The Peace, Make Trouble
19. Miym (م) Miqaa'il (مدائل) Strong, Powerful

And This Spells Out The Tasmiyah Which Reads, (الرحمن الرحيم) Which Is The Tasmiyah Used Today, Not The Original Tasmiyah (بسم الله الخلق الكريم). The Tasmiyah Begins The Supreme Mathematics Of The Protective Seal (Khaatim خاتم) Of The Qur'an Because It Is Composed Of 19 Letters.

| | | |
|-----------------|--------|---------------------------|
| The First Word | بسم | Occurs 19 Times |
| The Second Word | الله | Occurs 2698 Times (19X42) |
| The Third Word | الرحمن | Occurs 57 Times, 19X3 |
| The Fourth Word | الرحيم | Occurs 114 Times, 19X6 |

The Only Chapter Of The Qur'an Without A Tasmiyah Is Chapter 9 Tawbah, And It's Placed In Chapter 27:30. This Restores The Total Occurrence Of Tasmiyah's To 114, 19X6. From The Missing Tasmiyah To The Extra Tasmiyah Of Suwrah

27, There Are 19 Suwrah. The Sum Of The Suwrahs From The Missing Tasmiyah (Chapter 9), To The Extra Tasmiyah (Chapter 27), Is $9+10+11+12+\dots+25+26+27=342$, 19×18 . The Qur'an Contains 6234 Numbered Verses. The Absence Of The Tasmiyah From Surah 9, And Compensating For It In Qur'an 27:30, Gives Us Two Numbered Tasmiyah's, (1:1 And 27:30), And 112 Un-Numbered Tasmiyahs. This Causes The Total Number Of Verses In The Qur'an To Be $6234 + 112 = 6346$, 19×334 . Once Again, Everything Adding Up To The Number 19. The Suwrah's, Verses, Words And Even The Letters Are Mathematically Arranged To Add Up To A Multiple Of The Number 19.

When You Add Up The Numbers Of All The Suwrah's, Plus The Verses In Every Suwrah, Plus The Sum Of Verse Numbers For Entire Qur'an, You Would Come Up To 346199, Which Is $19 \times 19 \times 959$. There Are 29 Initialized Suwrah's, Which Produces A Total 190133, 19×10007 , Again A Multiple Of The Number 19. The Amount Added For The Un-Initialed Suwrah's Add Up To A Total Of 237785, 19×12515 .

The Order Of Revelation And Subsequent Arrangement By Men Were All A Part Of The Great Plan. So No Matter How Men Try To Arrange The Sequence Of The Suwrah Of The Qur'an, Everything Still Falls Under The Code Nineteen "19". This Is Only A Part Of Allah's Divine Plan!

I Have Studied The Qur'an And The Arabic Language For Over 25 Years And I Am Tired Of All These Mistranslations And Misinterpretations Of The Qur'an And Would Like To Convey To You What The Qur'an Is Really Saying. People Are Killing In The Name Of The Qur'an And Don't Even Know What The Qur'an Is Really Saying. The Purpose Of Keeping You From Knowing Arabic, Is To Keep You From Realizing How Shallow The Islam That They Teach Really Is. They Don't Want You To Realize That The Qur'an They Have Is Not Divine, It's Just Another Sect Of Christianity. The Qur'an They Read, Recite, And Pass On To You Today Not Being The Original, Is Definitely Nothing To Kill Or Die For. So I Bid You Children Of The Holy Tabernacle Ministries, Read It With An Open Heart And Mind.

Begin All Acts And Thinking By Using El Kufuwm, The All

Chapter One

Revealed In The Year 610 A.D.

Al 'Alaq

(The Separation Of Congealed
Blood Cells) Or
Iqra (Read)

Original Order Chapter 1;
Wrong Order Chapter 96

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, 'ALLAH', The 'Rahman'
The Yeilder, Who Is The Most
'Rahiym' Merciful.

Muhammad Read In Your
Rabb's Name - He Created
The Enosites Of 'Alaq - He
Taught You By Way Of
The Qalam - Insaan Exceeds
All Bounds - To Your Rabb
Is The Raj'a - Abu Jahl
Tried To Hinder Muhammad
From Worshipping

1) Read by using the name of
your, (Muhammad's) Rabb,
Master (Enqi) who Khalaq
Creates."

2) Who, created the (Enosites)
from an Alaq, 'Clot Of
Congealed Blood (Cells,
Separating Of Mother Ninti)'.
3) Read by way of your Rabb
(Master Nusqu), who is
'Sustainer', the Akram, 'Most
Generous'.

4) It is He who Alam 'Taught',
you by way of the Qalam,
'Quill.' 5) T h u + 1

5) He taught the (Enosites) that

which they did not know.

Verses 1-5 Were

Revealed First, Then Verses 6-19 At A Different
Time In The Same Year 610 A.D.

6) Nevertheless, surely the
Insaan (Enosites) exceed all
bounds,

7) Because with this knowledge,
he saw himself with many
riches.

8) Surely, unto your,
(Muhammad's Rabb [Master
Nusqu]), is the Raj'a 'Return.'

9) Did you, see him, (Abu Jahl)
who hindered?

10) An Abd, 'Slave,'
(Ahmad/Muhammad) when he
tried to send salutation in
worship?

Muhammad Was Asked, Did
He See If He Was Lead Into
Calmness? - Abu Jahl Denied
The Qur'aan - The Eloheem
Will Drag Him By His, Abu
Jahl's Forelock, If He
Continues To Hinder Others -
So When He Calls Out For
His Supporters, The Anunnaqi
Will Call The Zabaaniyat -
Muhammad Told Him Not To
Obey Abu Jahl, And Continue
To Draw Nearer To The
Source

11) Didn't you see, that he,
(Muhammad) was lead into
calmness?

12) Or that he, ordered



Figure 1
Abu Jahl (Amir Bin Haashim)

trembling, for the mention of it?

13) Didn't you see that he, (Abu Jahl) denied it, (Al Qur'aan) and Tawalla 'Turned Away?'

14) Doesn't he, (Abu Jahl) know that (The Source, ALLAH) Yaraa 'Sees' all things?

15) Nevertheless, if he, (Abu Jahl) continues to hinder others. We (Eloheem, Anunnaqi) will verily drag him by the Naasiyah, 'Forelock.'

16) By the lying, Khaati'ah 'hair' of his forelock.

17) So let him, (Abu Jahl) call out (to his supporters).

18) We shall 'Call,' Nad'u Al Zabaaniyat, (The Eloheem, Anunnaqi) Who Guards Over Hell.

19) Nevertheless, (Muhammad), don't obey him, (Abu Jahl), Asjud 'Prostrate' yourself and draw closer.

Sudliqa Allahu 'El Azim

Chapter Two

Revealed In The Year 611 A.D.

Al Qalam

(The Quill) Or

Nun (Nuwr; Light)

Original Order Chapter 2;


Wrong Order Chapter 68

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Light And The Qalam
Which The Newsbearers*

Record- Muhammad, You Are
Not Possessed By A Jinn
- Your Ajr Will Besides
Diminishing - You Were
Created A Supreme Being
- You Will See The Demented
Ones - Your Rabb Knows Who
Are Al Muhtadiyn -

Muhammad, Don't Obey The
Mukawibiyn - The Associates
Wish, That Ahmad Could Be
Gentle On Them - Muhammad
Is Told, Not To Obey Every
Despicable Swearer. Like
Waliyd Ibn Al Mughitrah

2 (); Nuwr, The Light,
and the Qalam, 'Quill' and
what is recorded, They,
'Yasturuwn' (By It).

2) You, (Muhammad) are not by
the grace of your
'Master/Sustainer,' who is Rabb
(Master Nusqu), possessed by a
Jinn - (Malevolent Being).

3) And surely, for you,
(Muhammad) is an Ajr,
'Reward', Mamnuwn 'Beside
Diminishing'.

4) And surely you, verily you
are for (The Most High, ANU)
Created As A Khuluq Aziym 'A
Supreme Being' (Eloheem).

5) So You Will 'Tubsir' See, and
they will also see.

6) By which of you all are Al
Maftuwn, 'The Demented Ones.'

7) Surely your, (Muhammad's)
Rabb (Master Nusqu), is he who
knows best who strayed from

His path, and He also knows best Those Who's Muhtadiyn, 'Guidance Makes Them Calm.'

8) So don't obey the Mukazzibiyn 'Liars.'

9) They, (those who associate with other deities of Muhammad's time) wished that if only you, (Muhammad) would be Tud-hin 'Gentle' on them; and in that case they would be gentle - (they would stop preaching and persecuting you, Ahmad).

10) And (Ahmad), don't obey every despicable swearer - (Waliyd Ibn Al Mughiyrah).

He Is A Slanderer And A Manna'a - He Is Also A Zaniym - When Anunnaqi's Signs Are Recited Out, He Says, 'They Are Only Asaatiyr Of The Eloheem Dinneer.' - He Will Be Marked, By The Anunnaqi On His Khartuwm - The Meccans Will Be Tried By The Eloheem - The Taa'ilah Encircled Ghaalib's Two Son's Garden - The Garden Was Cut Down Like Empty Fruit Sticks

11) A slanderer, (Waliyd Ibn Al Mughiyrah) was going about willingly, backbiting.

12) He Is One Who Forbids, 'Manna'a the doing of good, and a wicked doer of disagreeable act.

13) Cruel, besides all that A Bastard 'Zaniym,' - he, (Waliyd

Ibn Al Mughiyrah, is of an unknown father, of unknown descendancy).

14) Even if he, possesses great Maal 'Wealth' and many Baniyn, 'Sons.'

15) When Our, the (Eloheem, Anunnaqi) signs - (the scriptures and tablets) were recited out to (Muhammad, Waliyd Ibn Al Mughiyrah, He) said: "These are but the recorded Asaatiyr 'Fables,' of the ancients - (the Dinneer, "The Righteous Ones," Eloheem, Anunnaqi - 24 Elders.)

16) We, (The Eloheem, Anunnaqi) will mark him on his Al Khartuwm 'Trunk-Like Nose' (descendant of a Dero).

17) Surely We, (Anunnaqi) will try them, (the Meccans), as we tried the companions of the Jannat 'Enclosed Garden,' (The Shaytaans-Luciferians) when they swore that they would pluck its' fruits only in the Subh, 'Early Daytime Hour.'

18) And they, (the two evil sons of Ghalib), did not make an exception.

19) So an encompassment - A 'Taa'ilah, 'Tornado' encircled it, (the garden) from your, (Muhammad's) Rabb 'Master' (Nusqu), and this happened while they were Naa'imuw, 'Sleeping.'

20) Then it, (the garden) became (cut down) like empty fruit sticks.

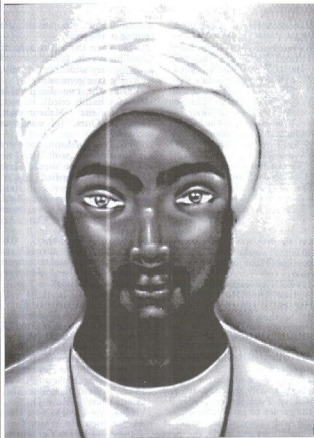


Figure 2
Waliyd Ibn Al Mughiyrah

Ghaalib's Three Sons Called Each Other - They Wanted To Go Early To Their Harth - Now That Their Father Is Dead, They Will Not Feed The Miskiyn Of Saria - Nor Let Them Enter The Garden, To Get Free Fruit - The Sons Were Firm In Their Commitment - The Sons Admitted They Went Astray - The Two Sons Realized, They Were The Mahrumuwn Of Their Own Orchard - The Good Son, Said, 'Didn't He Tell Them To Glorify Allah?' - The Other Two Sons Were Zaalimiyn, And Started To Blame Each Other.

21) So they, (the three sons of Ghaalib) awoke in the Early Daytime Hour and called each other.

22) Let's go early in the Early Daytime Hour, to your Harth 'Harvest,' if you are to pluck.

23) So they, (the two evil ones) departed, conversing to each other in a whisper. (Now, that their father, Ghaalib is dead, they will stop feeding the poor of Saria/Syria).

24) That none of us, (the sons of Ghaalib), will this day, let any Miskiyn 'Poor Settlers', enter it - (the garden to get free fruit).

25) And they, (the sons of Ghaalib) set out early the next day; for they, (the sons) were firm, In Their Qaadiriyn

'Commitment', (to prevent the feeding of the poor).

26) So when they, (the sons of Ghaalib) saw it, (the destroyed garden), they said: "Most surely, we verily have gone astray."

27) (But the two disagreeable sons of Ghaalib cried), in fact, we are the Mahrumuwn, 'Deprived Ones,' (of our own orchard).

28) He, (the good son, the more worthy of them), said: "Did I not tell you, if not you should Have Tusabbihuwn 'Glorified'?"

29) They, (the two evil sons) said: "Glory be to our Rabb (Sustainer), surely we were Zaalimiyn 'Ones Who Are Unjust'."

30) So then they, (the disagreeable two) turned and began to Yatalaawamoon, 'Blame Each Other,' (for their disagreeable attitude).

They Said, 'Curse Be On Them' - They Are Raaghibuwn For Repentance - The Pain Of The End Is Greater - There Are Jannat Of Na'iym, For Those Who Tremble At The Mention Of The Source - Should The Eloheem Make The Muslims, Look Like The Guilty Ones? - How Do You All Judge? - Or Do You Have A Scripture, In Which You Study? - Or Do You Have Consummated Faith On The Newsbearers?

31) They said: "curse be us, surely we were Taaghiyn. 'Arrogant.'

32) Maybe, our Master/Sustainer will substitute it, (the garden) for us, with a better one than it, for surely we turned to our Rabb, Raaghibuwn 'Desiring' (for repentance).

33) That was (the sons of Ghaalib's), pain, (penalty) and certainly the pain of the Aakhirah, 'The End' is Akbar, 'Bigger,' if they only knew.

34) Surely, for those who tremble at the mention, are Jannaat Al Na'iym 'Gentle Gardens', in the possession of their Rabb (ANU).

35) Should we make the Muslims, 'Peacemakers' look like they are the guilty ones?

36) What is wrong with you all? How Do You All Tahkamuwn 'Use Wisdom'?

37) Or do you all have Kitaab 'A Scripture' of your own, in which you study (with promises)?

38) Surely for you all, in it is verily all that which You Takhay-yaruwn 'Choose.'

39) Or do you have Ayman 'Consummated Faith', on us, (the newsbearers), until the Day Of Qiyaamat, 'Resurrection, Standing,' surely, for you, verily all of you, shall have whatever you judged.

Muhammad Is Asked Which Of

Them Are A Za'iym? - If They Have Any Binding Partners, Let Them Bring Them, If They Are Sodoqites? - On That Day A Leg Shall Be Made Bare, And They Will Be Called To Al Sujuwd - On That Day, They Will Be Humiliated And Cursed With Ignominy - The Eloheem Will Overtake The Meccans, If They Do Deny The Hadith Of Ghaalib's Three Sons - Muhammad, Do You Ask Them For A Reward That Will Overburden Them With Debt? - Or Do The Meccans Have Knowledge Of The Future? - Muhammad, Be Patient, And Don't Be Like Yonah - If The Grace Of His Rabb Didn't Reach Him, He Would Have Been Disgraced On The Naked Shore - His Rabb Made Him Of The Saalhiyn

40) Ask them, (Muhammad), "Which of them can Za'iym 'Guarantee' That?"

41) Or do they have any Shurakaa'a 'Associates (Other Deities)?' So if they do, then let them bring Shurakaa-ahim 'Their Associates', if they are (Saadiqiyn/Zodoqites/Sodoqites) 'Truthful.'

42) On the day when A Saag 'Leg' shall be made bare, and they shall be called upon To Prostrate, 'Al Sujuwd,' but they

will not be able to.

43) Humbling 'Khaashi'ah' their sight, abasement shall overtake them. They will not raise their eyes. They will be humiliated and cursed with ignominy, great personal dishonor. Certainly, they, (the Muslims) were called to prostrate, while they were Saalimuwn 'Peaceful' (Safe).

44) So leave me, with those who deny by this Hadiyth - 'the Tale' of (Ghaalib, of the township of Saria and his three sons), so We, (Anunnaqi) will gradually overtake them, (the Desert Arabs - Meccans), from Hayth 'Where' they will not know.

45) And respite for Me, (Muhammad) for them, surely My plan is Matiyn 'Firm.'

46) Or do you, (Muhammad) ask them, (Desert Arabs - the Meccans), for a reward that will Muthqaluwn 'Burden Them With Debt?'

47) Or do they have (knowledge) of Al Ghaybu 'The Unseen' (know the future), so that they can write (the future)?

48) So, (Muhammad) be patient for the wisdom of your Rabb, who is 'Master/Sustainer (ALLAH/ANU),' and don't be like the Saahib Al Huwt 'Companion Of The Whale', when he, (Yonah), 'Dove' called out from inside the whale and he, (Yonah) was in a Makzuwm 'Deep Period Of Sorrow.'

49) If the Ni'mah 'Grace' from his Rabb (Yahuwa/Yehweh), did not reach him, (in the whale's belly), verily he, (Yonah) would have been cast forth on the 'Araa'i, 'Naked Shore' and Would Have Been Mazmuwm 'Disgraced.'

50) Then his Rabb (Yahuwa/Yehweh) 'Ajtabaa' 'chose' him and made him of Al Saalihiyn 'Those Who Perfected Themselves.'

Those Who Kafaruw, Want To Kill You, Muhammad - When They Hear The Reciting, They Say, You Are Possessed With A Jinn' - The Qur'aan Is A Reminder For The Known Worlds

51) And Those Who Kafaruw 'Conceal That Which They Know To Be The Facts,' are on the verge of tripping you. They want to hit (and kill you, Muhammad), by their sight. When they hear Al Dhikru 'the Reminder', and they say: "Surely he, (Muhammad) is Majnuwn 'Possessed Of A Jinn'."

52) And it, (The Dhikru) is nothing but a reminder for the Known Worlds.

Sudiqah Allahu El Azim

Chapter Three

Revealed In The Year 611 A.D.

Al Muzammil

(The Wrapped One)
Original Order Chapter 3:
Wrong Order Chapter 73

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Oh One Who Is Wrapped Up,
You Are To Raise Up For A
Little In The Shadow Hour
Period - Ahmad, You Can Add
To It, Or Recite The
Qur'aan - Nusqu And The
Other Eloheem Will Deliver
Heavy Speeches To
Muhammad - Getting Up In
The Shadow Hour, To
Worship, Makes One Firmer
- The Daylight Hour Is Longer
To Glorify - Muhammad Is
Told To Devote Himself
Entirely To His Rabb - No
Allahs Would Exist Except By
Way Of Him - Muhammad Is
Told To Avoid The Meccans

3 Oh you, (Muhammad) who is
Al Muzammil, 'One Wrapped In
A Mantle!'

2) Raise up, a little way into the
Shadow Hour Period (Night).

3) Not quite half, way into it,
just Qaliyl 'A Little', of it.

4) Or you, (Ahmad) may add to
it; it's your choice, and Rattil
'Recite (The Qur'aan) With A
System', yet well presented in a
regulated tone.

5) Surely We, (Eloheem,
Anunnaqi), and (Nusqu/Jibriyl)
will deliver unto you,
(Muhammad), Qowl Thaqiyl
'Heavy Speeches'.

6) Surely, Naashi'at 'Getting
Up', at the Layl, 'Shadow Hour
Period' makes one Ashadd 'More
Forceful', and stronger and it is
a more perfect time for
recitation.

7) Inna 'Surely', for you,
(Ahmad) in Al Nahaar 'The
Daylight Hours,' is a longer
time to Sabhaan 'Glorify,' (but
you work).

8) And remember the Asm
'Name', of your (Muhammad's
Sustainer), who is Rabb and
devote yourself to Him with
your whole self (and complete
life).

9) He is the Rabb of Al
Mashaariq 'The East', and Al
Maghrib 'The West', (for every
part of the world; sustainer of
things on the planet). Nothing
would exist if He didn't create
it. So take Him as your Wakiyl,
'Advocate.'

10) And (Muhammad), be
patient, (don't retaliate) about
what they, (are saying about
you), and avoid them, (the
Desert Arabs, the Meccans) with
a Jamiylan 'Nice' Hajr
'Avoidance'. (This is best for
now).

Muhammad Is Told, Let Allah
Deal With The Liars - They

Will Have Ankaal And Jahiym
As A Pain - And Food Which
Will Get Stuck In Their
Throats - On That Day, Qi
(Earth) And The Mountains
Will Shake - Anunnaqi Sent
Their Rasuwl As A Watcher-
Rameses II Disobeyed Mosheh,
How Will You Protect
Yourselves? - The Sky Will
Be Munfatir - Let Him Who
Wills, Take His Rabb's Path

11) Let Me deal with the liars,
those who really know the facts;
who have the grace, (so-called
wealthy Muslims) and give them
Mahl 'Respite', for a little while.

12) Surely (We, Eloheem,
Anunnaqi) have a firm
judgment; Ankaal 'Shackles',
and Jahiym 'a Blazing Hell Fire'.

13) And bitter Ta'aam 'Food',
which will get stuck in the
throat and an aching pain.

14) On that day, Al Ard (Planet
Qi/Tiamat), 'Earth' and the
Jibaal, 'Mountains' will shake
and the mountains will become
like Kathiyb 'Heaps', of sand
vastly spread out.

15) Surely, We (Eloheem
Anunnaqi) have sent to you all
One Sent (Ahmad also known as
Muhammad) as a Shaahid
'Watcher', over you, as We
(Eloheem, Anunnaqi) sent Our
Rasuwl To Pharaoh (Ramses II).

16) So, Pharaoh Ramses II
disobeyed the One Sent
(Mosheh), so We, (Eloheem,

Anunnaqi) overtook him,
(Fir'own Rameses II) with a
violent Wabiyl 'Calamity
Plague'.

17) So how then, will you
guard, (protect yourselves), if
you conceal the facts about the
day which will make even the
newborn's Hair; Turn Shiyyb
'Grey', out of fear?

18) Al Samaa'a 'The Sky,' Will
Munfatir 'Split', by it that day,
so that his promise will be
Maf'uwl, 'Fulfilled.'

19) Surely, this is a Tadhkirah
'reminder'; so let him who wills,
take his Rabb 'Sustainer's' path.

Muhammad's Rabb, Knows He
Gets Up At Least Two Thirds
Of The Shadow Hour Period

- He Knows That You Can
Not Measure How Much You
Sleep - He Pardons You - So
Read From What Is Easy

For You, From The Qur'aan
- Others Will Be Seeking
Bounties In The Planet Earth
- Others Will Be Fighting, To
Kill In Allah's Path - There's A
Supreme Reward For Those
Who Give A Loan For The
Source - And Still Seek
Forgiveness From Allah

20) Surely, your (Muhammad's
Sustainer), who is 'Rabb' (Master
Nusqu) knows that you get up
to worship at least Thulathiy
'Two Thirds', of the Shadow
Hour Period, (sleep) or even half

or one third of it, the Shadow Hour Period and a group of those who are with you, your followers, and The Source, ALLAH measures the Shadow Hour Period and the day; He knows that you cannot measure how much you sleep in the Shadow Hour Period, so He turns to you with repentance/pardons. So, Aqraa 'Read', what is easy of the Qur'aan; He already knows that, from you all will be some who are Mardaa 'Sick', and that others will be striking (riding forth to fight) in the planet Qi, 'Earth,' also called Al Ard, seeking bounties to support themselves of ALLAH; and others will be (fighting to) kill in the path of The Source, ALLAH (in His military). So He is to read (of the Qur'aan at the Shadow Hour Period) what is Tayassara 'Easy' from it, and get up for Salaat 'Salutations Of Worship', and give Zakaat 'Charity', and consider the (money) loan you, (the faithful) give to The Source, ALLAH as a Qardaana 'Loan' (and something) good and whatever you give now goes before you for yourself and it is Khayr 'Good', you will find in the possession of ALLAH, it is good and will bring you a A'azam Ajraan 'Supreme Reward'; And still seek forgiveness from The Source, ALLAH for surely, ALLAH is

Ghafuwr, 'Forgiving,' Rahiym, 'Most Merciful.'

Sudiqqa Allahu El Azim

Chapter Four

Revealed In The Year 612 A.D.

Al Mudaththir

(The One Who Is Covered)
Original Order Chapter 4;
Wrong Order Chapter 74

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

O Muhammad, The One
Covered Under The Mantle,
Arise And Warn -

Muhammad's Rabb Is Old,
Big- Muhammad Is Told To
Purify His Garb, And Shun
The Rujza - He Is Told To
Be Patient - When The
Trumpet Is Blown By
Raphael - It Will Be A
Difficult Yawm - It Won't Be
Yasiyr For Al Kaafiriyn.
Either

4 Oh you,
(Muhammad/Ahmad) Covered
Under Your Al Mudaththir
'Mantle!'

2) Arise (Muhammad) and
Anzir, 'Warn!'

3) And your, (Muhammad's)
Rabb, 'Sustainer,' is Fakabbir 'So
Old, Big.'

4) And purify your, raiment (put on white).

5) And Ahjur, 'Shun' Al Rujza 'The Abhorrence'.

6) And don't you do favors, expecting more for them.

7) And be patient, (Ahmad) for your Rabb 'Sustainer'.

8) So when Al Naaquwr 'The Trumpet', (Shofer) is blown by the (Anunnaqi Raphael).

9) So that will be the day, a difficult Yawm 'Day',

10) For Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts', that difficult day will be everything but Yasiyr, 'Easy.'

Allah Will Deal With Waliyd Ibn Al Mughirah - Allah Extended His Wealth - And His Sons Can Watch To It - The Source Made His Affairs Smooth For Him - Waliyd Wants The Source To Do More For Him - He Was Stubborn About The Anunnaqi's Signs - Allah Will Make Him Suffer Torment - He Called The Qur'aan A Lie - Waliyd Ibn Al Mughirah Should Be Killed For His Thoughts On The Qur'aan - And On The Last Day, He Should Be Killed Again, For His Decision On It

11) Leave him, (Waliyd Ibn Al Mughirah) and who I, (I Or Me, Not We Or Us) created for Me Wahiyd 'Alone', to deal with.

12) And I, made his, (Waliyd Ibn Al Mughirah) wealth's to extend.

13) And Baniyn 'Sons', of his, (Waliyd Ibn Al Mughirah) can Shuhadaa 'Watch'.

14) And I, made his, (Waliyd Ibn Al Mughirah) affairs smooth for him.

15) Then after smoothing his, (Waliyd Ibn Al Mughirah's) way, he desires that Aziyd, 'I Do More.'

16) By no means, surely he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) was 'Aniyd 'Stubborn' about Our - (Our Not My) signs.

17) I (I Not We) Urhiquhu 'Will Cause Him', (Waliyd Ibn Al Mughirah) to suffer torment.

18) Surely he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) thought about it, (the Qur'aan) and made his decision on it; (he called Al Qur'aan a lie).

19) So he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) Should Be Qutla 'Killed', for his decision about it.

20) Then after that, (the Last Day) may he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) be killed again for His Qaddara 'Decision'. (Kill the same man twice).

Waliyd Showed Disgust And Bitterness When He Looked At The Faces Of Those Who Were Moved By The Qur'aan - Waliyd Ibn Al Mughirah Was Astakbar - He Said That Ahmad Imitates The Old

Times - And The Qur'aan Is
The Saying Of A Mortal In
Skin - Allah Will Cause Him
To Roast In Saqar - Saqar
Doesn't Leave Anything Behind
- It Will Scorch The Flesh Of
Mortals In Skin - Over Saqar
Are Nineteen Anunnaqi

21) Then he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) looked at the faces of those moved by (the Qur'aan);

22) Then he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) frowned and showed Basar, 'Bitterness And Disgust.'

23) Then he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) turned his back for he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) was Arrogant and Astakbar, 'Big-Chested, Pouting With Pride.'

24) So he, (Waliyd Ibn Al Mughirah) said: "This is only Sihrun 'Magic'." He, (Ahmad) imitates the old times.

25) Surely this, the (Qur'aan) is only the sayings of a Mortal In Bashar 'Skin', (who is Muhammad).

26) I will cause him, (Waliyd Ibn Al Mughirah) to roast and burn in 'Saqara.'

27) And by what means would you, (Muhammad) be Able To Perceive, 'Adraaka' what Saqara is?

28) Not a thing Tubqiy 'Remains', and nothing at all will it, Saqara Tazar, 'Leaves Behind.'

29) It, (Saqar Scorchs And)

Lawwaahat 'Burns' (the flesh) of Mortals in skin.

30) Alayhaa 'Over It,' (Saqara) are Tis'ata Ashar 'Nineteen' (Eloheem, Anunnaqi: 19 Angelic Beings: 1. Bazaa'il 2. Sahr'il 3. Miraa'il 4. Asil 5. Lahaabil 6. Lamezil 7. Hezil 8. Arzaa'il 9. Leqaahil 10. Rahmil 11. Hasaab'il 12. Midaa'il 13. Nuwriil 14. Asbil 15. Lahaa'il 16. Raz'il 17. Huk'il 18. Yaraashil 19. Miqaa'il).

The Ashaab Of Hell's Fire Are
The Malaa-ikat - Their
Number Is A Fitnah For The
Concealers Of The Facts - By
The Number, Those Who Are
Faithful May Increase Their
Faith - The Concealers Of
The Facts, Want To Know
What Does Allah Want Them
To See With The Mathul Of
The Number 19?

Yahweh/Yahuwa/Adonai Is
The One Who Knows The
Scrupleem And The

Cherubeem - The Moon And
Shadow Hour Period Will
Pass - Hell Is One Of The
Biggest Calamities - A

Warning To The Bashar -
For Those Who Progress
Forward, Follow The Qium

Of Abrawhawm - Every
Person Is Held In Pledge,
For That Which It Had Earn
- Except For The Companions
Of The Right Hand

31) We, (Eloheem, Anunnaqi) made the Ashaab 'Companions' of Hell's fire, none other than the Malaa-ikat 'Messengers', (Cherubeem, the Disagreeable, Malevolent Beings, who are Eloheem, Anunnaqi) and their number (nineteen), is a means of Fitnat 'Testing', for those who conceal that which they know to be the facts; that those who have been given the Scripture may be certain, (the number 19 is how to keep the Qur'aan pure), and those who have faith may increase their Iymaan 'Faith', so that those who are faithful and those given the scripture will not doubt over the (Qur'aan is the Number Nineteen); and as for those in whose hearts is a Marad 'Disease', and those who conceal that which they know to be the facts, they shall say: "What is it that The Source, ALLAH wants us to see by the Mathal 'Likeness', (of the Number Nineteen)? It is by (this Number Nineteen) that ALLAH lets some go astray, and calms whom He pleases; and none knows the Junuwd 'Army' (Eloheem/Anunnaqi, who are the Agreeable Scrapheem, and the Disagreeable, Malevolent Anunnaqi, who are the Cherubeem) of the Rabb, who is 'Sustainer,' except He, (Yahuwa/Yehweh); and all this is nothing but a Dhikr 'Reminder', for Bashar 'Mortals

In Skin.'

32) Nevertheless and Al Qamar 'The Moon.'

33) And Al Layl, 'The Shadow Hour Period' when It Adbara 'Passes'.

34) And, the Early Daytime Hour, when It Asfara 'Appears'.

35) Surely it, (Hell) is one of the Kubar 'Biggest' Calamities.

36) A Naziyr 'Warning,' to the Bashar 'Mortals In Skin';

37) To those of you who will, to go forward progress (in agreeableness, follow the Millat- 'Rites' of Abrawhawm/Abram, or Abrawhawm) or remain behind (stay in disagreeableness; follow rites other than Abrawhawm's Millat-rites).

38) Every Nafs 'Spirit/Person', is held in pledge for that which it has earn.

39) Except for the Ashaab, 'Companions' of the Yamiyn, 'Right Hand' (the true Muslims, 'Peaceful Ones and their seed, the Ahlil Bayt).

In The Enclosed Gardens
They Will Ask About The
Guilty Ones - What Caused
The Companions Of Hell To
Enter Saqara? - They Were
Not Of Al Musalliyn - And
They Were Not Of The
Miskiyn - And They Used To
Engage In Vain Discussions -
They Also Called The
Day Of Judgment

A Lie - The Intercession Will Not Tanfa'a 'Benefit' Them - What's The Matter With The Disagreeable Doers? - As If They Were Humur

40) While in the Enclosed Gardens, they will ask one another,

41) About the guilty ones, (companions).

42) What has caused you, (the Companions of The Left Hand) all to have to enter into Hell, 'Saqara'?

43) They, (the companions) shall say: "We were not of those who were Al Musalliyn 'The Worshippers.'

44) And we, (companions) were not of those who fed the Miskiyn, 'Poor Settlers.'

45) And we, (the ones who does disagreeable deeds) used to engage in vain discussion with Those Who Engaged In Al Khaa'idiyn 'Vain Discussions.'

46) And we, (the ones who does disagreeable deeds) called the Day of Judgment a lie.

47) Until certain death comes upon us, (the ones who does disagreeable deeds).

48) So consequently, Al Shafaa'ah 'The Intercession', of any intercessor will not be able To Help, Tanfa'uhum 'Benefit them', (the ones who does disagreeable deeds).

49) What is the matter with them, (the ones who does

disagreeable deeds)? They, (the ones who does disagreeable deeds) turn away in averse (from those Millat-rites of Abrawhawm which brings them recollection);

50) As if they, (the ones who does disagreeable deeds) were Humur, 'Asses' speeding away;

They Will Try To Escape - Every Man's Desire Is To Be Given The Suhuf Of Abrawhawm - The Guilty Don't Fear The One To Come - The Qur'aan Is Nothing But A Reminder - Whoever Pleases, Let Him Remember It - They Don't Remember, Unless The Source Wills - He Is Worthy Of Al Taqwaa

51) Trying to escape a Qaswara 'Fierce Lion.'

52) On the contrary, every Amriyan 'Being In Control' has his desire that he be given the Suhuf (of Abrawhawm) - 'pages' spread open (before him).

53) Certainly they, (the guilty) do not fear The End.

54) No it is nothing but a Tadhkirah 'Reminder' (to make you remember the other Scriptures before it).

55) So whoever pleases, let him Dhakarrah 'Remember' it.

56) And Yadhkuruwn 'They Don't Remember' unless The Source, ALLAH wills for them to; and He is the worthy to

bring 'Al Taqwaa 'Trembling'
and the worthy to bring Al
Maghfirah 'The Forgiveness'.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Five

Revealed In The Year 612 A.D.

Al Hamd
(The Gratitude) Or

Al Faatiha
(The Opening)

Original Order Chapter 5:
Wrong Order Chapter 1

5 Begin All Things Using The
Name Of The Source, ALLAH,
The Rahman, Who Is The Most
Merciful.

2 All gratitude is for Him,
Rabb, the 'sustainer' (ANU) of
all the known worlds.

3 The yeilder, The merciful.

4 Ruler of the day of decision.

5 It is You, (ANU), we are (Lulu
Amelu) slaves for, and you we
ask for help.

6 Calm us for the way of the
ones, who stand up straight,
(The Agreeable).

7 The way of those who You
have bestowed your grace; not
those who have been cursed, nor
of those who have gone astray,
(The Disagreeable).

Sudika Allahu El Azim

Chapter Six

Revealed In The Year 612 A.D.

Al Masad
(The Wooden Thorns) Or
Al Lahab
(The Flames)

Original Order Chapter 6:
Wrong Order Chapter 111

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Hands Of Abu Lahab Will
Perish - His Maal Nor His
Assets Will Profit Him In The
Worlds, Or The One To Come
- He Is Going To Be In The
Naar - And There Will Be
Piercing Thorns Around His
Mates Neck, The Sorceress

6 Perish (the disagreeable)
hands of the Father Of The
Flames, Abu Lahab,
(Muhammad's uncle, who is also
known as Abdul Uzza), then he
shall perish.

2) Neither his Maal, 'Wealth'
nor his possessions or assets will
profit him (in the world or in
the Realm To Come).

3) He shall be cast into the
Naar, 'Fire' and be consumed by
its eternal flames.

4) And his (disagreeable) woman
(his mate Umm Jamail Bint
Harb Bint Umaiya), the
firewood carrier also.

5) And around her Neck, 'Jiyd'
she, (Umm Jumaiyl, the sorceress

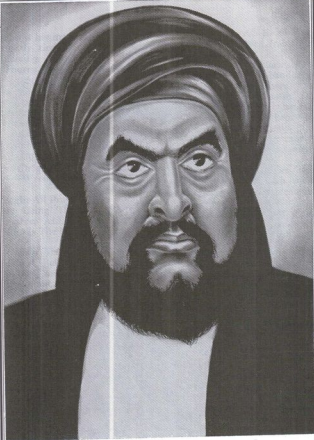


Figure 3
Abu Lahab Also Know As Abdul Uzza



Figure 4
Umm Jamail Bint Harb Bint Umaiya

who is his mate), she will bear a tightly tied Hahl 'Rope', with piercing wooden Masad, 'Thorns.'

Sudiq Allah El Azim

Chapter Seven

Revealed In The Year 612 A.D.

Al Takwiyr

(The Condensed Ball)

Original Order Chapter 7;

Wrong Order Chapter 8!

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

When The Sun Is Condensed
Into A Ball, And The Nujwm
Are Darkened - When The
Mountains Are Moved - When
Al 'Ishaar Are Gathered -
When The Seas Are Caused
To Boil And Burn - The
Nufuws Are Remated - The
Infant Girls Will Asked, 'For
What Disagreeable Acts Were
They Buried? - And The
Scrolls Of Deeds Are Unfolded

7 When Al Shams 'The Sun'
Loses Its Light And, Is
Condensed Into A Kuwwirat
'Ball' (Solar Eclipse).

2) And when Al Nujwm 'The
Stars' are darkened, (Luna
Eclipse)

3) And when Al Jibaal 'The
Mountains' are moved (multiple
earthquakes).

4) And when Al Ishaar 'The
She-Camels' are abandoned
(herders abandon their herds.)

5) And when Al Wuhuwsh 'The
Wild Beasts', are herded
together, (Beast are kept in
cages)

6) And when the seas are caused
to boil and burn (all the water
are polluted).

7) And when Al Nufuws 'The
Spirits' are remated with their
bodies (new age movement,
spiritualism)

8) And when the infant girls,
who were buried alive, are
Su'ilat, 'Asked:'

9) For what Zanb, 'Faults'
(guilty action) were they killed?
(Birth controlled approved)

10) And when the pages are
unfolded (The Holy Tablets).

When The Heavenly Skies Are
Pulled From Its Places -
Jahlym Made A Blaze - And
The Jannat Is Brought Near -
Every Spirit Will Know, That
Which It Presented - He
Doesn't Swear By The
Orbiting Stars - And The
Setting Kunnas - The Qur'aan Is
A Saying Of Rasuwl
Muhammad - He Is The
Source Of Power, In The
Essence Of The Throne

11) And when Al Samma'u 'The

Heavenly Skies' are pulled from its place, (Meteorites showers stars)

12) And when The Jahiym 'Hell', is made to blaze (volcanoes).

13) And when the Jannat, 'Enclosed Garden Of Delight' is brought near (The last days).

14) Then every Nafs 'Person' will know all that which it has presented.

15) I (Eloheem Micheal, Murdoq) do not have to swear by Al Khunnas 'The Movement Of The Solar System And Stars' (astrology),

16) The running and the Kunnas 'Gliding Constellations', (zodiacal)

17) And by the Layl, 'Shadow Hour Period' when it ends,

18) And by the Subh, 'Early Daytime Hour' when it dissolves into the light of day.

19) Surely it, is a Qowl 'Saying' of One Sent (Nusqu/Gabriel), in honor.

20) This is the source of power within the essence of the throne, that has a firm place.

Ahmad Is Faithful And Amiyn
- Meccans, Muhammad Is Not
Majnuwn - He Saw Gabriel
On A Clear Horizon - Nusqu
Is Not Reluctant To Teach
Him About The Ghayb -
Qur'aan Is Not A Saying Of
Al Shaytaan - Qur'aan Is A
Reminder To

The Known Worlds

21) He, (El Eloah) is one to be obeyed, for he is Amiyn 'Faithful And Trustworthy'.

22) And O, you (Enosites of Mecca), your companion (Muhammad has not gone Mad). He is not Majnuwn 'possessed with a (Jinn/Cherubeem)'.

23) And indeed he, (Ahmad) saw him (Nusqu/Gabriel) on the clear horizon.

24) And He the (Eloheem, Anunnaqi Nusqu/Gabriel) is not reluctant to teach you, (Muhammad about the secrets) of the Ghayb 'Unseen'.

25) And it is not a saying of the rejected Al Shaytaan 'The Cursed Disagreeable, Malevolent One'.

26) So where are you, (Enosites) going?

27) It, (The Qur'aan) is but a Dhikrun 'reminder' for all the Known Worlds.

28) It is for those of you who want to be on the straight path.

29) And you, the (Enosites) would not will it if The Source ALLAH, the Rabb who is the 'Master/Sustainer' of the Known Worlds, (did not will it for you).

Sudika Allahu El Azim

Chapter Eight

Revealed In The Year 613 A.D.

Al A'ala

(The Most High)

Original Order Chapter 8:

Wrong Order Chapter 87

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Glorify The Name Of Your
Rabb, The Most High - He
Khalaq And Made His Creation
Perfect - He Calms Them, And
Brings Forth Herbage -
Eloheem Will Make
Muhammad A Reader - Allah
Knows The Hidden And
Manifested Things - Eloheem
Leads Humans To The Easy
Way - Whoever Dreads The
Source Will Remember The
Qur'aan

8 Glorify (a Eloheem says:) the
name of your Rabb, who is
'Master,' ANU/AL ALIYU, The
A'ala- (ELYOWN ELYOWN
EL), The Most High.

2) He (He Not We) who Khalaq,
'Created' and made His creation
perfect.

3) And He who determines the
nature of them, and calms them.

4) And He who brings forth
herbage (for the animals).

5) So after that He, (ALLAH)
made it into dark stubble.

6) We, the (Eloheem Anunnaqi)
will make you, (Muhammad) a
reader, so that you won't Tansaa

'Forget.'

7) Except that which, ALLAH
pleases, surely He, (He Not We)
The Source, knows the
manifested and the hidden
things.

8) And We, (We Not He) the
(Eloheem) lead you, to Al Yusra
'The Easy Way' (Nuwaubu).

9) So be a Dhakir 'Reminder',
because there are benefits in Al,
Dhikraa, 'The Reminder',
remind others.

10) He who fears will
remember.

The Most Miserable Will
Avoid The Qur'aan- They
Will Be Entered Into The
Naar - Whoever Tazakka
Will Be Prosperous- The
Enosites Prefer

The Hayaat Of The Dunyaa
- The End Is Better - All Of
This Can Be Found In The
Suhuf Of Abrawhawm And
Mosheh

11) And the Most Ashqaa,
'Miserable Ones' will avoid it -
(the Qur'aan).

12) Who will Be Yaslaa 'Cast
Into', the huge (pit) of Al Naar
'Fire'.

13) Then he will neither
Yamuwt 'Die', nor Yahya, 'Live'
in it - (the pit of fire).

14) Certainly he who Tazakka
'Purifies' Himself, will be
prosperous.

15) And he Dhakara

'Remembers' the Asm 'Name', of his Rabb (Adonia Master), and (keeps up) salutation in worship.

16) In fact you, (the Enosites) prefer the Hayyat 'Life' of Al Dunyaa 'The Physical World'.

17) And Al Akhirat, 'The End' is Khayr 'Better', and it is an Abqaa, 'Everlasting' state.

18) Surely, all of this is to be found in the first pages of the Suhuf (Enuma Elish, and Gilgamesh epics, Adafa, Etana, Descent Of Ishtar, Nergal And Arishkegal, Atra Hasis, the tablets from before).

19) The Pure Pages of Abrawhawm (Suhuf of Abrawhawm- the Book Of Generations) and Mosheh (Al Tawraat- The Law, The Torah, The Lowha Mosheh).

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Nine

Revealed In The Year 633 A.D.

Al Layl

(The Shadow Hour Period)

Original Order Chapter 9:

Wrong Order Chapter 92

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Layl, It Screens
Everything - By The
Afternoon, It Unfolds Light -
Allah Khalaq The Male And

Female - He Who Gives Alms
And Keeps On Doing Good
Works, The Anunnaqi Will
Lead Him Into An Easy Way
- He Who Is Arrogant And
Lies About The Peaceful Way,
The Anunnaqi Will Lead Him
Into A Difficult Way

9) And Al Layl 'The Shadow
Hour Period', when it screens
everything,

2) And by the daytime
(afternoon) when it Tajalla
'Unfolds Its Clear Light,'

3) And by Him (Him Not We
Or Us), who Khalaq, 'Created'
the Zakar, 'Forgetful Male' and
the Unthaa 'Female/Second
Part'.

4) Surely your Sa'ya 'Efforts',
are of various kinds.

5) So as for him who gives
(alms) and trembles at the
mention.

6) And Sadaqa 'Trusts' with
doing Al Husnaa 'Good Works'.

7) So We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) will lead
him to Al Yusra 'The Easy Way',
(Nuwaubu).

8) And as for him who Is
Bakhila 'Stingy', and Astaghnaa
'Arrogant',

9) And lies to himself about the
best way.

10) So We, (Anunnaqi) will lead
him to Al Usraa 'The Difficult
Way';

His Riches Will Do Him No

Good - It Is On The Anunnaqi
 To Calm To The Right Path
 - The Life In The Uwlaa And
 The Akhirat Belongs To
 Them - Jibriyl Warns Of A
 Fire - The Wicked Doers Of
 Disagreeable Will Be Cast Into
 It - Those Who Tremble From
 It, Will Be Away From It -
 He Who Gives His Wealth
 Purifies Himself - He Is Only
 Seeking The Face Of His Rabb
 - And He Will Be Pleased

11) And his riches will do him
 no good when he falls into
 destruction.

12) Surely, it is on Us (Us Not
 I), to calm.

13) And Al Uwlaa 'The Former
 Life', and Al Akhirah 'the life In
 The End' belongs to Us,
 (Eloheem, Anunnaqi).

14) So I, (Jibriyl/Nusqu) warns
 you all of a fire that Talazzaa
 Burns Fiercely'.

15) None shall be cast into it,
 except the most wicked ones
 who does disagreeable deeds.

16) He who Kazzaba 'Lies' and
 then turns his back.

17) And the ones who trembles
 from the fire; most of them will
 be away from the fire.

18) He who gives of his Maal
 'Wealth', Yatazakaa 'purifies
 himself'.

19) And No one has any
 Ni'amat 'Grace', in His
 possession, that he should
 receive a reward.

20) Seeking nothing save the
 face of his rabb 'Sustainer' (has a
 face), who is Rabb, Al 'Alaa
 'ANU, The Most High'.

21) And he will Be Yardea
 'Pleased'.

Sudlqa Allahu 'El Azim

Chapter Ten

Revealed In The Year 615 A.D.

Al Fajr

(The Day Break)

Original Order Chapter 10:
 Wrong Order Chapter 89

Begin All Prayers And Thinking
 By Using The Name Of The
 Source, ALLAH, The Rahman,
 Who Is The Most Merciful.

And The Fajr - The Last Ten
 Shadow Hours Of Itikaaf - Is
 There An Oath Of You Who
 Possess An Overstanding? -
 Did Muhammad Not See How
 The Enosites Of Ad Was
 Dealt With? - The
 Descendants Of Aram, The
 Possessor Of Imaad - And
 The Enosites Of Thamud -
 And Pharaoh, Owner Of The
 Stakes

10 Wa, 'And' Al Fajr, 'The
 Daybreak,'

2) And by the last ten Layaal,
 'Shadow Hour Periods' - (Itikaaf,
 last ten Shadow Hour Periods In

The Month Of Ramadaan),

3) And by Al Shaf 'The Even', and Al Watr 'The Odd Numbers', (the 19th of the 30 Shadow Hour Periods in the month of Ramadaan was the Shadow Hour Period Of Power).

4) And by the Shadow Hour Period when it passes away (the Shadow Hour Period of Power),

5) Is there an (Al Awtaad 'Oath') in that, for those of you who possess an overstanding of the forbidden?

6) Did you not see how your 'Sustainer,' who is Rabb dealt with the ancient (Enosites) of 'Ad?

7) The descendants of Aram, (the grandfather of 'Ad), who were the possessors Al 'Imaad 'Of The Tall Buildings With Lofty Pillars',

8) Nothing like this was ever created in any of the other Bilaad, 'Lands';

9) And the (Enosites) of Thamud who cut Al Sakhras 'The Stones' to make their dwellings in the Waad, 'Valley,'

10) And the Fir'own/Pharaoh the owner of Al Awtaad 'The Stakes', (with which he crucified and tortured Enosites).

They Were Transgressors
- The Whip Of Pain Fell On
Them - Your Rabb Is
Observing All The Actions -
Allah Gives The Enosites
Honour - Whoever Allah

Ordained His Rizq With A
Little Substance, He Says, 'He
Is Disgraced' - They Don't
Honour The Yatiym - They
Don't Even Encourage The
Feeding Of The Miskiyn - And
You Love Wealth, With A
Consuming Love

11) Those who transgressed in the lands.

12) So they caused much Al Fasaad 'Mischief' in it.

13) Therefore your Rabb (Adonia), let the Sawt 'Whip', of pain fall upon them.

14) Surely your Sustainer, who is Rabb is observing the actions of all.

15) Then as for Al Insaan 'The Enosite', when his Rabb, tried him, so He (He Not We) gives honour to him and gives him Na'amah 'Grace', then he says: "My Sustainer, who is Rabb has honoured me."

16) And As For if He, tried him, so indeed he ordained him with his Provision, 'Rizq', so he says: "My Rabb 'Sustainer/Adonia (Master) has disgraced me."

17) Nevertheless! You don't even honour the Yatiym 'Orphan'.

18) And you don't even encourage the feeding of the Miskiyn 'Poor Settlers,'

19) And you wrongfully, and enviously, appropriate the inheritance of the weak,

20) And you greedily love the Maal 'Wealth', with an abundant, consuming love.

When The Earth Is Crushed To Pieces, On That Day, The Malak Will Stand In Ranks - Jahannam Will Come Forth, Opened - He Would Have Hoped That He Was In The Ranks Of The Righteous - The Pain Of Allah Will Not Be Like Any Other Pain - O Nafs At Rest, Return To Your Rabb - Enter Amongst Allah's Slaves In His Jannat

21) Nevertheless, when the Planet Earth, 'Qi' is Crushed To Dakkaa 'Pieces'.

22) And when your Sustainer, Rabb, Ja'a 'Has Come' (he can come from one place to another) and the Malaku 'Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) are in the Saffaa 'Ranks'.

23) On that day, Jahannam 'Purgatory' shall Ja'ay 'Come' forth (hell can also come from one place to another) opened; (it has doors.) On that day, Al Insaan 'Enosites' shall Yatazakkar 'Remember'; but their Dhikraa 'Remembrance' will be of no use to them.

24) He shall Yaguwl, 'Say': 'Oh! If only I would have been in the (ranks of the righteous), doing (righteous deeds) in 'My Lifetime'.

25) So on that day, no one will punish, like His punishment.

26) And no Ahad 'One', will be bound as he binds.

27) O you, Al Nafs 'Spirit/Person' at complete Al Mutma'inat 'Rest' dead.

28) Return to your Rabb, 'Sustainer who is Master' content, well pleased.

29) So enter amongst my Abdi 'Slaves'.

30) And enter my Jannat, 'Enclosed Garden'.

Sudiqqa Allahu El Agim

Chapter Eleven

Revealed In The Year 613 A.D.

Al Duhaa

(The Time Between Fajr And Zuhr)

Original Order Chapter 11:
Wrong Order Chapter 93

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

And The Shadow Hour Becomes Tranquil -

Muhammad's Rabb Has Not Forsaken Him - The Aakhirat Is Better For You, Ahmad - Muhammad, Didn't Your Rabb Give You Shelter, When You Were A Yatiym? - Don't Despise The Asler Beggar - And Muhammad Keep Telling The Hadiyth Of The Ni'amat Of Your Rabb

11 And Al Duhaa, 'The Daytime Between Fajr And Zuhr.'

2) And Al Layl 'The Shadow Hour Period', when it becomes Sajaa 'Tranquil.'

3) (O Muhammad), your Rabb has not Wada'a, 'Forsaken' you, nor does he (He Not We) Qalaa 'Hate' you (the Rabb can hate).

4) And Al Aakhirat 'The End' is much better for you, (Ahmad), than Al Uwlaa 'The Former Life'.

5) And your Rabb 'Sustainer', will give you a reward which will please you.

6) Didn't He give you, (Ahmad) a shelter, when he found you a Yatiym 'Orphan?'

7) And He found you, (Muhammad) Daal 'Astray' Fahadaa 'So He Rightly Calmed You'.

8) And He found you, Aa'il 'Poor And Needy', so He made you rich.

9) In regards to the orphans, don't oppress them.

10) And in reference to the Saa'il, '(Asker) Beggar', don't despise or cast him away.

11) And keep telling Hadiyth 'Tales' about the Ni'amat 'Grace' your Rabb 'Sustainer' has shown you.

Sudiqah Allahu 'El Azim

Chapter Twelve

Revealed In The Year 613 A.D.

Al Inshiraah Or Shirah
(The Expansion)

Original Order Chapter 12;
Wrong Order Chapter 94

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Eloheem, Anunnaqi
Expanded Muhammad's Chest -
And They Relieved Him Of
His Burdens - They Also Raised
His Character - With
Difficulty, There Is Ease -
Muhammad, When You Are
Finished With Your Duties,
So Work Hard To Return To
Your Rabb

12 Didn't We ([We Not He]
Anunnaqi, Eloheem) Nashrah
'Expand' your, (Muhammad's)
Sadr 'Chest'?

2) And We (Eloheem,
Anunnaqi) relieved you, (Ahmad)
of all the burdens (that
surrounded you).

3) Which weighed down heavy
on your Zahr 'Back.'

4) And We, (Eloheem,
Anunnaqi) Rafa'a 'Raised' your,
(Ahmad's) character, (so that
you too, will be remembered for
all times).

5) So surely, with Al 'Usr
'Difficulty' there is Yusran 'Ease'.

6) Surely, with Al 'Usr
'Difficulty', there is Yusr 'Ease'.

7) So when you, (Muhammad) Faraghta 'Have Finished With The Duties', (of your mission) Then, You Must Fa-ansab 'Work Hard'.

8) And desire to return to your Rabb 'Sustainer'.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Thirteen

Revealed In The Year 613 A.D.

Al 'Asr

(The Squeezing)

Original Order Chapter 13:

Wrong Order Chapter 105

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

13 And Al Asr 'The Squeezing Of Enosite's Soul, It Will Be Squeezed From His Body'.

2) Surely, this is the age when the Insaan/Enosites are overcome by Khusr 'Defeat'.

3) Except for those who are faithful and Amil, 'Work' to Al Saalihaat, 'Perfect Their Beings' and are advocates of Al Haqq, 'The Facts,' and are advocates of Al Sabr 'Patience'.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Fourteen

Revealed In The Year 614 A.D.

Al 'Aadiyaat
(The Horsemen, Or
The Apocalypse)
Original Order Chapter 14:
Wrong Order Chapter 100

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Four Horsemen Of Apocalypse - They Will Attack At The Early Daytime Hour - They Will Penetrate In The Midst Of The Gathering - The Enosite Is Kanuwd To His Rabb - He Is Shadiyd For The Love, Which He Sees As Good - The Graves Will Be Scattered - Their Master Is Khabyr Of All Of Their Actions

14 And Al 'Aadiyaat, 'The Swift, Panting Horses, Or The Four Horsemen Of Apocalypse.'

2) Then those who strike forth sparks of fire from their Hoofs,

3) Then those that will attack at the Subh 'Early Daytime Hour',

4) Consequently, they will cause much dust to fly in the air.

5) Then they will penetrate thereby, the midst of the Jam'a 'Gathering'.

6) Surely, Al Insaan 'The Enosite' is verily Kanuwd, 'Ungrateful,' to his Rabb 'Sustainer'.

7) And surely he, the (Enosite) is a Shahiyd, 'Watcher' to that.

8) Surely he is Shadiyd, 'Forceful' for the love of what he sees as Khayr 'Good'.

9) Doesn't he, the (Enosite) knows of the time, when the Qubuwr 'Tombs' (Graves) will be scattered and all will rise up?

10) And the secrets that are kept in the Suduwr, 'Chests' shall be made to Hussila 'Manifest'?

11) Surely on that day, their Rabb, who is 'Master and Sustainer' will be Khabiyr 'Aware', of them; (all of their actions).

Sudiqā Allāhu 'El Agīm

Chapter Fifteen

Revealed In The Year 614 A.D.

Al Kawthar
(The Utmost)

Original Order Chapter 15;
Wrong Order Chapter 108

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Eloheem Gave
Muhammad Al Kawthar -
Muhammad Is Told To Send
Salutations As Worship His
Rabb - The Bitter And Evil
Ones Who Hate Muhammad
Will Be Abtar

the Eloheem, Anunnaqi) have
given unto you, (Ahmad) the
Kawthar 'Utmost.'

2) So send salutations as
worship to your Rabb,
'Sustainer/Master' and perform
blood sacrifices.

3) Certainly, the bitter and evil
ones who hate you, (Muhammad
will not have any future, for)
they are Abtar 'Cut Off.'

Sudiqā Allāhu 'El Agīm

Chapter Sixteen

Revealed In The Year 615 A.D.

Al Takaathir

(The Many Gifts)

Original Order Chapter 16;
Wrong Order Chapter 102

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Hoarding Of The Many
Things Preoccupy You, Until
You Visit The Grave Yards? -
The Preoccupation Of This
World Is Definitely Leading
To Al Jahiym - You All Will
See Purgatory With Your
Own Eyes - You Will Be
Asked About The Grace You
Have Enjoyed

15 Surely We, ([We Not He]

16 Hoarding Al Takaathir
The Many Things', of this

world, preoccupies you.

2) Until You All Zurturn 'Visit',
Al Muqaabir 'The Tombs
(Graves)'.

3) Kalla 'Nevertheless', you will
soon know all things you did.

4) Thumma 'Then' nevertheless,
you will know.

5) Nevertheless, if you had
certainly known the
preoccupation what this world
was leading to.

6) You will verily see Al Jahiym
'Hell's Blazing Fire'.

7) Then, you will certainly see
it, (Purgatory) with your own,
Aiyn 'Physical Eyes,' (where this
world is leading to).

8) Then you will be asked on
that day, about Al Na'iym 'The
Grace', you had been enjoying.

Sudiqā Allāhu ʿAl Azīm

Chapter Seventeen

Verses 1-3 Were Revealed In The Year 613 A.D.

Al Maa'uwn

(The Beggar's Bowl)

Original Order Chapter 17:

Wrong Order Chapter 107

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Muhammad Asked, Did He
See He Who Uses The Diyn
To Lie? - And He Who
Drives Away Orphans? - And

Doesn't Encourage The
Feeding The Miskiyn? - Curse
Be To Those Exhibitionists Of
Salutation Of Worship. And
Hinderers Of Those Who
Carry The Bowl

17 Did you, (Muhammad) see
him who uses the Diyn, 'Maana
Of Judgment' to lie?

2) So that is He, The One, Who
drives away Al Yatiym
'Orphans'.

3) And doesn't Yadu'u
'Encourage' the feeding of the
Miskiyn, 'Needy' (Poor Settlers).

Verses 4-7 Were Revealed In The Year 613 A.D.

4) So Waylun 'Curse' be to
those of you who Worship,
(make Salaat).

5) Those of you who are
Saahuwn 'Neglectful', about
their salutation of worshipping
duties.

6) Those (Enosites), who are
exhibitionists, who do things
Just Yuraa'uwn 'To Be Seen'.

7) And they even hinder the
ones who carry Al Maa'uwn
'The Bowl', from seeking help.

Sudiqā Allāhu ʿAl Azīm

Chapter Eighteen

Revealed In The Year 613 A.D.

Al Kaafiruwn
(Those Who Conceal That

Which They Know To Be
The Facts)

Original Order Chapter 18:
Wrong Order Chapter 109

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Concealers Of The Facts,
I Am Not A Slave For What
You Are A Slave For - And
You Are Not A Slave For Al
Alyuwn Aly - I Am Not A
Slave For Your Spook Gods,
Shrines And Kaabahs - You
Will Have Your Diyn, And I
Will Have Mine

18 Say: 'O you Al Kaafiruw
'Those Who Conceal That
Which They Know To Be The
Facts' (Right Knowledge).

2) I am not a slave to what you
are a slave to.

3) And you are not a slave for
Him, whom I am a slave for,
(AL ALYUWN ALY, ANU).

4) And I am not a slave of, what
you are a slave for: "(Spook
deities); and you are not slaving
for Him, whom I am slaving for,
(AL ALYUWN ALY, ANU)."

5) And you are not a slave for
Him, (Him Not Them) whom I
am a slave for, (AL ALYUWN
ALY, ANU)."

6) You will have your Diyn,
'Means Of Judgment' and I will

have mine.

Sudiq Allahu El Azim

Chapter Nineteen

Revealed In The Year 616 A.D.

Al Fiyl

(The Elephant)

Original Order Chapter 19:
Wrong Order Chapter 105

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Muhammad Asked, 'Didn't He
See How His Rabb Dealt With
The Companions Of The Fiyl?
'The Source Manifested Their
'Kayd To Destroy The Kaaba
'He Sent Airborne Flock,
Throwing Stones From Sijiy
On Them - Their Flesh Was
As Raw Like 'Kernels Of
Quickly Consumed Corn

19 (Gabriel is speaking) Didn't
you see how your, (Ahmad's)
Rabb, who is 'Sustainer,' dealt
with the companions of the Fiyl,
'Elephant' - (Abrahat Al
Ashram, viceroy of Yemen)?

2) Didn't He, (He Not We)
manifest that their Kayd,
'Scheming' to destroy the (Kaaba
was a grave) error?

3) And consequently He, sent
airborne (Crafts) Tayr 'Flocks',

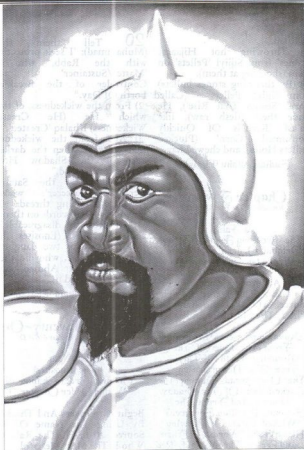


Figure 5
Abrahah Al Ashram, Viceroy Of Yemen

on them.

4) Throwing hot Hijaarat 'Stones' from Sijjiyl 'Pellets' on them (shooting at them).

5) (By throwing stones bullets) from Sijjiyl 'Pellets' - (Called Naru 'Stones That Rise'), He made their (flesh raw), like Ka'asf 'Kernels Of Quickly Consumed Corn' (Plucked Bullets Holes), and chewed hay.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Twenty

Revealed In The Year 616 A.D.

Al Falaaq

(The Breaking Forth Of Day)
Original Order Chapter 20;
Wrong Order Chapter 113

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful

Muhammad Seeks Protection
From The Rabb Of The
Breaking Forth Of Day -
From The Disagreeableness
That Overspreads During The
Darkest Part Of The Shadow
Hour - And From The
Satanic, Reptilian Sorcerer's,
Wicked Ritual Of Blowing
Disagreeable Words On Them
- And From The Negroid, Red
Edomite, Yellow Mongoloid
And Pale Caucasian Reptilians
Who Envied Us

20 Tell them this,
(Muhammad): 'I seek protection
with the Rabb, who is
'Master/Sustainer' and
Controller of the Breaking
Forth Of Day."

2) From the wickedness, of that
which He (He Created
Wickedness) Khalaq 'Created'."

3) And from the wickedness
that emerges when the darkest
part of the Shadow Hour
Periods overspread."

4) And from the Satanic,
Reptilian Sorcerer's wicked
ritual of knotting threads and
blowing wicked words on them."

5) And from the disagreeable of
those envious (Enosites like
Luhaiyn and his two daughters
Faatin and Ijaaz, who did these
type of things to Ahmad - and)
those who envied us."

Sudika Allahu El Azim

Chapter Twenty-One

Revealed In The Year 616 A.D.

Al Naas

(The Enosites)

Original Order Chapter 21;
Wrong Order Chapter 114

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

I Seek Protection In The
Rabb Of The Naas - The Ruler.

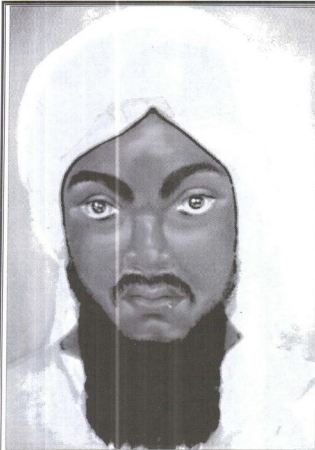


Figure 6
Lubaiyn Father Of Faatin And Ijaaz

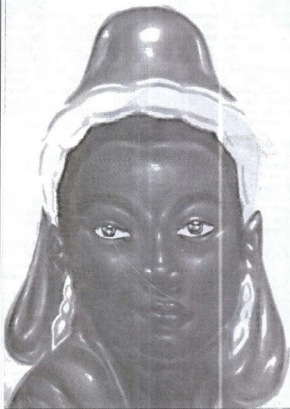


Figure 7
Ijaaz Daughter Of Lubaiyn



Figure 8
Faatin Daughter Of Lubaiyn

And Intellectual Source Of All
Enosites - From The Evil
Nakhash/ Al Khannaas - He
Who Whispers Doubt Into The
Hearts Of The Enosites - Al
Khannaas Is From The
Enosites And The Seed Of The
Jinn

21 Say: 'I seek protection in
the Rabb, of all the
Naas/Enosites.'

2) The Ruler of all Naas
'Enosites'."

3) The (Creative and
Intellectual) Source, ILAAH of
all Naas 'Enosites'."

4) From the disagreeableness of
the Whispering Reptilian Al
Khannaas 'Nakhash', (of the
Enclosed Garden Of Delight)."

5) He who whispers wickedness
and doubt into the hearts of the
Naas 'Enosites' (and hastens to
pervert them).

6) He, (Al Khannaas [Nakhash]),
is from the Naas 'Enosites', and
from the seed of the Jinn -
(Disagreeable, Malevolent Beings
Eloheem, Anunnaqi)."

Sudliqa Allahu El Azim

Chapter Twenty-Two

Revealed In The Year 616 A.D.

Al Ikhlās

(The Pure Faith)

Original Order Chapter 22;

Wrong Order Chapter 112

www.Nuwaupuinc.com

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Yahuwa Allah Is Alone -
Allah Is Al Samad - 'Neither
Mother 'Nor

Father Has He-

Nor Has He Conceived A
Mortal Son - He Has No
Equals

22 (Muhammad) tell them,
(the Meccans):
'Yahuwa/Yehweh, is The
Source, ALLAH, Ahad who is
'Alone.'

2) The Source, ALLAH needs
nothing, for he is Al Samad, Has
No Deficiencies.

3) (Neither mother nor father
has he, and) he was not
conceived (by a sexual
intercourse of any two Mortal
Beings); nor did he conceive (an
individual Mortal Walad 'Son').

4) And no one is Kufuwaan
'Equal' to Him.

Sudliqa Allahu El Azim

Chapter Twenty-Three

Revealed In The Year 615-621 A.D.

Al Najm

(The Star)

Original Order Chapter 23;

Wrong Order Chapter 53

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Nusqu Swore By The Najm
That Fell From The Skies
-He Is The Companion Of
Muhammad And All Other
Newsbearers - Micheal Speaks,
And Nusqu/Gabriel Does Not
Speak From His Hawaa - Al
Qur'aan Is Nothing But Wahy
-Gabriel Was Taught The
Qur'aan By The Shadiyd -
Gabriel Came To Muhammad
In Mount Hur - Gabriel Was
Two Qaws, From Him
-Gabriel Inspired Allah's 'Abd

23 And the appearing Star,
'The Najm' when it falls - (the
third Eloheem Raphael sounded
his trumpet (shofer) and a star
fell from the Heavenly Skies
into the planet Earth, 'QI').

2) Your (Muhammad) and all
other newsbearers companion -
(the Eloheem Nusqu has not
deviated).

3) (Micheal speaks) And he,
(Gabriel/Jibriyl) does not Yantiq
'Speak' from his own Hawaa,
'Desire' (he does not make up
any part of the Holy Scriptures).

4) Surely it, (Al Qur'aan) is
nothing but Inspired
Inspirations, 'Wahy/Weh'.

5) He, (Gabriel) was taught the
(Qur'aan) by the Mighty,

'Shadiyd, Or Mataatrun' The
Forceful One.

6) The source of strength - (the
wisdom of the Qur'aan); then
He, (Gabriel) took a Faastawa
'Physical Form From An
Etherian To A Mortal Man';
(Gabriel appeared to Ahmad and
taught the Qur'aan to him).

7) And He, (Gabriel) came to
(Muhammad in the 19th Shadow
Hour Period of Ramadaan on
Mount Hur as the sun was) on
Al 'Alaa 'The Highest' (part) of
the Ufuq, 'Horizon'.

8) Then He, (Nusqu/Gabriel)
came (in the cave of Hur) near;
then He, (Nusqu) came right
down to him, (and ordered him
to read).

9) So He, (Gabriel) was the
Qawsayn 'measure of Two
Cubits', the distance of about
two arrows (about an arms
length); or closer between them:
(Muhammad and Jibriyl),

10) So He, (Gabriel) gave
inspiration to His, Abd 'Slave',
(Ahmad/Muhammad), of that
which he was inspired. (Nusqu
said to Muhammad in the cave:
"Read!" Muhammad said: "I am
not a reader." Gabriel said again,
"Read". Muhammad repeated to
him "I can't read that". Gabriel
came even closer to Muhammad
and said "Read! in the name of
your sustainer who created").

Muhammad Could Not Call
That Which He Saw With His

Own Eyes A Fu'ad A Lie
- Will The Opposers
Of Ahmad Argue With Him
- Muhammad Seen Gabriel As
A Man - None, Save The
Eloheem Could Pass By The
Tree Of Al Sidrat - The Lote
Tree Is Blocked,
And In The Enclosed Garden
- Muhammad Didn't Deviate
Or Transgress - Muhammad
Saw The Oldest Signs From
His Rabb - Did You See Al
Iqat? - Did You See The
Other Manaaf?

11) And he (Muhammad) could not call that which he saw with his own eyes and Al Fu'ad 'Inner Heart' a lie. (Jibraa'yl showed him the Qur'aan and asked him to read from it, but the language was too eloquent for him, however, he did see it).

12) So will you, (Enosites - the opposers of Muhammad) argue with him about that which he sees? (Now are you going to say he did not see a scripture)?

13) And he, (Muhammad) indeed have seen him, (Gabriel as a physical man ordering him to read from it; the whole Qur'aan) and sent it down at another time (over a 23 year period).

14) At the Sidrat 'Lote Tree or the Tree of Certainty', (while Muhammad was on his Miraj Spiritual Journey, to the Seven Heavenly Skies) the ultimate - (beyond this tree none save the

Eloheem, Anunnaqi may pass).

15) It, (the Sidrat, Lote Tree (of Certainty) is within Garden of the Maa'waa, 'Dwelling Place.'

16) When it, the Sidrat - 'Lote Tree' was screened, - (it was screened, blocked from sight)!

17) His, (Muhammad's) sight did not deviate, nor did he, (Muhammad) transgress. (He looked at only that which he was supposed to).

18) Indeed he, (Ahmad) saw the biggest verses, (signs) from his Rabb, who is 'Sustainer'.

19) What did you see in Al Iqat, (The Female Source- who is the sister of The Male Source, ALLAH. The name of a deity worshipped by the Ancient pale desert arabs, both the Quraish tribe worshipped) and Al 'Uzza 'The Mighty One', (who was a deity of the tribe of Chatfaan)?

20) And the other third one, Manaaf, 'Wishing, Good Hopes' (a deity worshipped during the time of the newsbearer Muhammad by the tribes of Huzail and Khaza-ah).

Do You All Have Zakar And
Unthaa? - It Is Unjust Qismah
- The Source Didn't Send The
Sources Any Authoritive
Power - Should
Enosites Be Able To Do, That
Which They Wish -
To Him, Is The Uwlaa And
The Aakhirah -
(No Malak In The Skies Can)



Diagram 1
The Miraj - Muhammad's Elevation

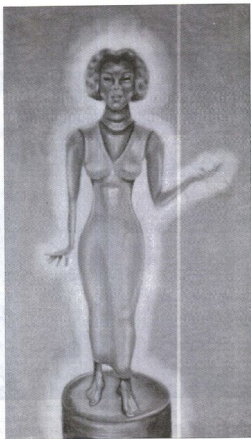


Figure 9
Al Laat, Female Source Of Ancient Arabians

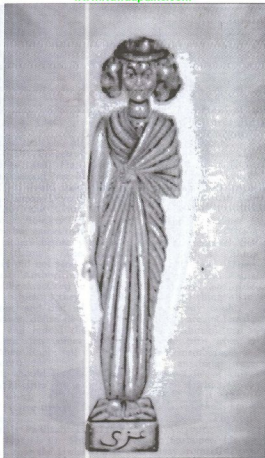


Figure 10
Uzza, Deity Of The Tribe Of Ghaftaan

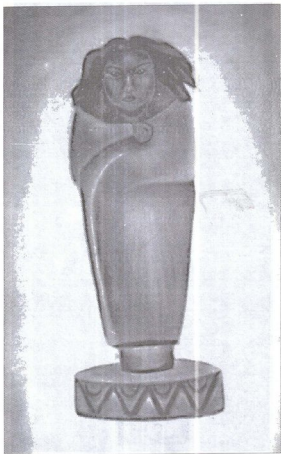


Figure 11
Mana'at, Deity Worshipped By The Tribe Of Khaza'ah

Benefit Any Intercession,
Except If Permission Is Given
By Allah - Ahmad Is Told To
Turn Away From Those Who
Turn From The Eloheem's
Remembrance - Muhammad's
Rabb Knows Who Is Astray
And Who Is Of The Calm
Ones

21) Is it that you all have Al Zakar 'all Forgetful Males', offsprings and He, has all Unthaa 'Second Part, Females?'

22) That would indeed be an unjust Qismah 'Division'.

23) They, the Asmaa 'Names' (of your Sources/Deities) are nothing but names that you, and your fathers before you, have named them. The Source, ALLAH did not send them any Sultaan 'Authoritive Power'. They, (the associates) only follow that which they think, (opinions) and that which they themselves, desire in their own selves, and indeed the Hudaa, 'Calinness' has come to them from their Rabb; (all the Holy Scriptures).

24) Or should Insaan 'Human Beings/Enosites' be able to do that which they Tamanna 'Wish'? (Give things their own meaning?)

25) It Is Fa-lilaah 'For Him', ([Him Not Us Or They] - The Source), that the Uwlaa 'First' - (beginning) and 'Al Aakhirah 'The End', belong to, (before this

world and after this world).

26) And how many (guardian) Malak, 'Angelic Messengers, (Eloheem Anunnaqi)' are in the Samaawaat, 'Skies' (living in the skies not on earth) whose intercession will not benefit anyone in anything, except after ALLAH Has Given His Yaa'zan 'Permission' to whom He pleases and Yardaa 'Wants'.

27) Surely, those who do not have any faith in The End, will name the Malaa-ikah, 'Eloheem, Anunnaqi' with female names. (They say all the Angels are) Unthaa 'Second Part, Females'.

28) And they don't have any knowledge on it (The Anunnaqi being all females) that which they follow is nothing except what Al Zann 'They Think-Opinions', and surely the opinion will not profit them against the things that are facts (beyond any doubt. All the Eloheems are not females).

29) So (Ahmad) turn away from all who turn from Dhikrinaa 'Our Remembrance', and do not want anything except the Hayaat 'Life' of this Dunyaa, 'Physical World.'

30) That is the Mablagh 'Extent', of their knowledge - love of the Physical World. Surely your, (Muhammad's) Rabb 'Sustainer,' He knows who is astray from His Path - (Millat 'Rites' of Abrawhawn - Nuwaubu); and He knows who

is of the calm ones.

Whatever Is In The
Samaawaat And Qi Are For
Allah - The Source Is Wide
With His Maghfirah - You All
Were Ajinnat In The Bellies
Of Your Mothers - To Those
Who Turn Away From The
Millat, Rites Of Abrawhawm
- The Enosite Gives A Little Of
Himself, Then Stops - Wasn't
He Informed Of The Torah,
And The Suhuf Of
Abrawhawm? - No One Will
Carry The Wizr Of Another
- No One Will Receive The
Sa'aa Of Another - His Deeds
Will Be
Seen

31) And for Him, (ALLAH) is whatever is in the Samaawaat, 'Skies' and what is in the planet 'Qi/Tiamat/Al Ard', also known as 'Earth.' He shall reward those who does evil (disagreeableness, wrong) by way of that which they do, and he will reward those who are (at their) best by the things which are best.

32) Those who avoid Kabaa'ir Al Ithm 'Big Guilty (Disagreeable) Acts', and Fawaahish 'Abominations' and do nothing except Al Lamam 'Minor Things', surely your (Ahmad's) Rabb is very Waasi 'Vast, and Wide' with His Maghfirah 'Forgiveness'. He knows about you all; It is He,

who Produced, Anshaa'a 'Created' you all from the dust of the Ard, 'Ground,' (Congealed Blood) and when you all were mere Ajinnat 'Fetuses', in the Butuwn 'Bellies', of your mothers; so don't exalt Anfus 'Your Selves'. He knows who trembles at the mention.

33) Look (Muhammad) at those who Tawalla 'Turn Away', (from the Millat, Rites of Abrawhawm; created new religions)?

34) And he gives a little, of himself and then stops giving - (comes near Islaam, then stops).

35) Does he have the knowledge of the unseen things, (Ether World) so that he can see them, (Etherians)?

36) Or Has He not Yunabbi'a 'Been Informed', by that which is in the Pure Pages, 'Suhuf' of Mosheh - (The Torah, Lowha Tablets Of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown and Apostle Ychowshuwa)?

37) And Abrawhawm, (Abrawhawm's Suhuf 10, Pure Pages; the Book of Generation), Who Waffaa, 'Fulfilled' (the promise; he was faithful and true).

38) That no one would carry the Wizr, 'Burden' disagreeable acts of any other;

39) And that there is nothing for Al Insaan 'The Enosites,' but what they Sa'aa 'Do', (no one

will Receive Anyone Else's Reward/Efforts).

40) And that which he does, (his efforts/deeds) Will Be Yuraa 'Seen'.

He Will Be Rewarded The Reward - The Final Destiny Is To Your Rabb - Allah Makes You Laugh And Cry - He Causes Death And Yuhyiy - Allah Created You In Al Zawjayn - From Nutfah When It Is Discharged - The Nash'ata Is On Him - He Makes Enosites Rich And Poor - Yahuwa/Yehweh Is The Rabb Of Sirius - He Destroyed The Tribe Of 'Ad

41) And he will be rewarded the fulfilled Jazaa, 'Reward'.

42) And surely, to your (Ahmad's) Sustainer, who is Rabb, is your final destiny;

43) And surely, He is the one who Makes You Adhaka 'Laugh' and Makes You Abkaa 'Cry'.

44) And surely, He is the one who Causes Amaata 'Death' and Yuhyiy 'Life';

45) And surely He Khalaq 'Created,' Al Zawjayn 'The Pairs' Al Zakar 'Forgetful Male', (Zakar/Adam/Kadmon) and Unthaa 'Second Part, Female' (Nekaybaw/Hawwah).

46) From Nuftah 'Semen/Sperm' (Life-Germ) when It Is Tumnaa 'Discharged';

47) And surely, on him is Al

Ukhraa 'The Other' Al Nash'ata 'Reproduction';

48) And surely He, Aghnaa 'Enriches', and Makes One Aqnaa 'Poor';

49) And surely, He is the Rabb 'Sustainer' of Al Shi'raa - Sirius (Sirius A - is called Potololo 'Tiny Grain') which has a satellite, (Sirius B called White Dwarf;) Sirius also called the Dog Star with an active planet called Nirvana, home of the original Hindu, in the Canis Major star constellation; the home of the Dogon Star And Nommos).

50) And surely, He Ahlak 'Destroyed' 'Ad, Tribe Of 'Ad of ancient times.

He Didn't Spare The Tribe Of Thamud - The Kindred Of Nod And Chanowk Were Wicked

- He Overthrew Sodom And Gomorrah - A Screen Of Fire Cover It - Muhammad Which

Alaa'i Of Your Rabb, Do You Deny? - Nusqu Is The Same Gabriel Of Ancient Times

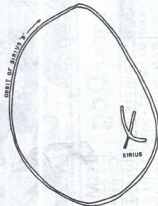
- The Earth Is Nearer To The End - Will You Laugh At The Hadiyth, Or Cry?

51) And Thamud - (the tribe of Thamud), He did not Abqaa 'Spare'.

52) And the kindred of Nod (and the Land, Quillu of Chanowk) before Noach; surely they, the (Nodites and the beings



Diagram 2
The Dogons Drawing Of Sirius System



Dogon Drawing Of The Orbit Of
Digitaria (Sirus B) Around Sirus

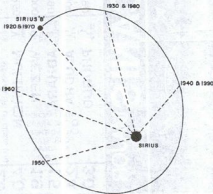


Diagram 3
Astronomical Digitaria Of Sirus B Orbit Around Sirus A



GREAT Dog

CMA
Canis Majoris

L.Y. Objects of Interest

2,400

M41 \oplus Galactic cluster

RCMa \oplus VARIABLE 1.1 DAYS 6.0-6.6

Q CMa \oplus DOUBLE 1.5 & 8.6 (very difficult to separate)

EPsilon \oplus CMa \oplus DOUBLE 1.6 & 8.1

MU μ CMa \oplus DOUBLE 4.6 & 9.5

NU ν CMa \oplus DOUBLE 5.8 & 7.9

* THE CHANGES FOR SHORT-PERIOD VARIABLES ARE MEASURED IN DAYS OR HOURS. (PAGE 121)

CANIS MAJOR

| L.Y. | BRIGHTEST STARS | MAG |
|-------|----------------------------------------------------------------------------------|-----|
| 8.7 | α SIRIUS "Dog Star" - | 1.5 |
| 750 | ALPHA β MIRZAM | 2.0 |
| 1,250 | BETA "ANNOUNCER" OF SIRIUS (AND | 2.0 |
| 3,000 | GAMMA γ MULIPHHEIN | 4.0 |
| 490 | DELTA δ WEZEN | 1.9 |
| 2,500 | EPsilon ϵ ADHARA | 1.5 |
| 290 | ETA η ALUDRA | 2.4 |
| | ZETA ζ PHURUD | 3.0 |
| | WITH OMICRON \omicron THE ARABS CALLED THESE FOUR STARS AL ACARA "THE VIRGINS" | |
| | * SIRIUS IS THE BRIGHTEST STAR IN THE HEAVENS | |

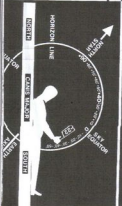
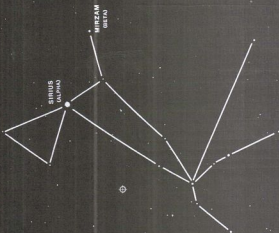


Diagram 4
Canis Major - Sirius Star Constellation

STANDARD 50 MM LENS

N

ALIGN WITH SIRIUS AND MIRZAM



CANIS MAJOR

Diagram 5
Canis Major - Sirius Star Constellation

of Quillu 'the land of Chanowk') were unjust, and full of wickedness.

53) And the Cities, of (Sodom and Gomorrah) He Al Muw'tafikaat 'Overthrew' and made them collapse,

54) So a screen (of fire) Ghasha 'Covered' it.

55) So which of your, (Muhammad's) Rabb 'Sustainer' Aalaa'i 'Favors' do you (doubt or) deny?

56) This Naziyr 'Warner', (Gabriel) is the same warner of ancient times (Nusqu. He warned all the other newsbearers also).

57) The end (of the Earth, Qi) is Nearer Than Azifat 'Near'.

58) No one except ALLAH (Yehweh) can end (the world).

59) Is it this Al Hadiyth 'Tale' that makes you wonder?

60) And Will You Tadhakuwn 'Laugh' and not Tabkuwn 'Cry,'

61) And are you enjoying yourselves, unaware of that which is to come?

62) So Asjuduw 'Prostrate' and slave, for The Source, ALLAH.

Sudiqua Allahu El Azim

Chapter Twenty-Four

Revealed In The Year 612-613 A.D.

'Abasa

(He Frowned)

Original Order Chapter 24;

www.Nuwaupuinc.com

Wrong Order Chapter 80

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Ahmad Frowned And Turned
Away From The Blind Man,
Abdullah Ibn Umm Maktum -
Muhammad Is Questioned,

What Will Make Him
Perceive If He, Didn't Come
To Him For Guidance To
Make Them Calm? - Or If
He, Abdullah Remembers The
Facts? - Muhammad Gave His
Attention To Waliyd Ibn Al
Mughiyrah - It Is Not
Muhammad's Responsibility.
If He, Waliyd Ibn Al
Mughiyrah Doesn't Purifies
Himself - Abdullah Ibn Umm
Maktum Is Striving Earnestly,
And Dreads The Source -
Muhammad Was Indifferent
To Him

24 He, (Ahmad), Abasa
'Frowned', and turned away.

2) When the blind man,
(Abdullah Ibn Umm Maktum)
came to him (and disturbed him,
while he, Muhammad was
conversing with the chiefs of the
tribe of Quraysh).

3) And what will make you,
(Ahmad) perceive that perhaps
he, (Abdullah Ibn Umm
Maktum), came to you (for

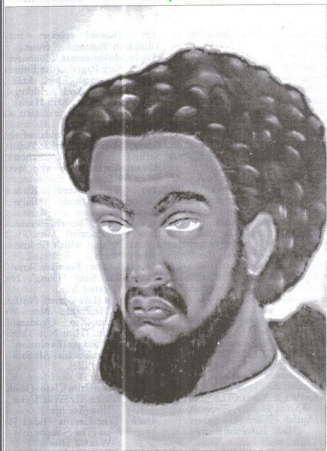


Figure 12
Abdullat Ibn Umm Maktum, A Blind Man

guidance to make him calm) to purify himself?

4) Or that Yatadhakar 'He (Abdullah Ibn Umm Maktum) Remembers' the facts and Al Dhikraa 'The Remembrance' may benefit him?

5) As for him, (Walid, Ibn Al Mughiyrah), who seeks to be rich.

6) You, (Ahmad) gave him, (Waliyd Ibn Al Mughiyrah) your attention.

7) And it is not your responsibility if he, (Waliyd, Ibn Al Mughiyrah) does not purify himself.

8) But as for him, (Abdullah Ibn Umm Maktum), who comes to you, (Ahmad) striving earnestly.

9) And he, (Abdullah Ibn Umm Maktum) dreads .

10) And you, (Muhammad) were indifferent to him, (Abdullah Ibn Umm Maktum).

12) Whoever pleases may Dhakarrah 'Remember' from it.

13) In Mukar-ramat 'Honoured' Suhuf 'Pure Pages',- (the Enuma Elish, Gilgamesh Epics, Etana, Adafa, Nergal And Arishkegal, Descent Of Ishtar, Atra Hasis).

14) Exalted and pure, (are all the scriptures).

15) By the Ayd 'Hands' of the (great) scribes: (Zakar/Adam, Seth, Adafa/Chanowk, Abram/Abrawhawm who were given the Suhuf).

16) Who were Kiraam 'Generous', and Bararat 'Virtuous'.

17) Damned, be the Enosite, (how ungrateful he is), concealing that which he knows to be the facts.

18) (Do the Enosites know) from what Shay 'Thing', He, Khalaq 'Created' him?

19) From a (Life-Germ), Nutfat, 'Semen,' He, (He Not We) created him, so Qaddarahu 'Formed Him (Him Not Them) In Measured Stages (Evolution)'.

20) Then made his Al Sabiyl 'Path', easy (in life).

Allah Brings Him Unto Death
- If Pleases, He Will Raise Him To Life

Again - The Enosite Didn't Do What The Source Wanted Him

To Do - Look At Qi And How It Provided Him - The Anunnaqi

The Qur'aan Is To Be Remembered - It Is In The Suhuf - All Scriptures Are Pure - By The Hands Of Great Scribes - They Were Kiraam - The Enosite Is Ungrateful - Does The Enosite Know Of What, The Source Khalaq Him? - From A Nutfat - Then The Source Made His Path Easy

11) Nevertheless, now surely it, (the Qur'aan) is to be Tadhkirat 'Remembered'.

Pour Down Water Very
Heavily - And They Caused
Grain To Grow In It - And
Grapevines And Qadb, And
Olives And Nakhl - And Dense
Orchards

21) Then He, brings him unto
death and assigns him tombs
(graves).

22) Then it pleases Him, He will
raise him to life (again).

23) Nevertheless he, (the
Enosite) has not done what He
has ordered him.

24) So, let Al Insaan 'The
Enosite' look at his food - (of
that which the planet
Qi/Tiamat, 'Earth and how it
was provided).

25) Surely We, ([We Not I, Or
Me] The Anunnaqi, Eloheem)
pour down water, (rain) very
heavily.

26) Then, We (Eloheem
Anunnaqi) cleared the planet
Tiamat/Al Ard, so that it may
yield.

27) And We (Eloheem
Anunnaqi) caused grain to grow
in it.

28) And Inab 'Grape' Vineyards
and Qadb, 'Pastures.

29) And Zaytawn, 'Olive', and
Nakhl 'Palm Dates.'

30) And dense Hadaa'iq,
'Orchards.'

And Fruits And Abba - It Is A
Temporary Provision For
You All And Your

Animals - When The
Saakh-khat Is Blasted By
Raphael - On That Day,
Each Will Flee From His
Own Brother - All Persons
On That Day, Will Be
Concerned With Themselves
- Some Faces Will Be
Shining, Laughing With Joy-
Some Will Be Covered With
Dust. The Immoral Concealers
Of The Facts

31) And Faakihat 'Fruits' and
Abba, 'Herbage'.

32) It is a grace for you all and
your cattles (animals).

33) So when Al Saakh-khat 'The
Deafening Blast', comes (is
blasted, by the Eloheem
Raphael).

34) On that day, each being in
command (person) will flee from
his own Akh, 'Brother.'

35) And his Umm, 'Mother' and
his Abb, 'Father.'

36) And his Saahibat 'Female
Companion,' (his girlfriend),
and his Baniyn, 'Children.'

37) For on that day, all beings
in command (persons) will be
concerned with themselves.

38) On that day, some Wujuwh
'Faces', will be shining, (joyous
and happy).

39) And Daahikat 'Laughing'
with cheerfulness.

40) And some faces will be
covered with Ghabarah, 'Dust' -
(gloomy).

41) Qatarah 'Dark Dust', shall

cover them.

42) Those are the ones of you, who conceal that which they know to be facts. They are Al Fajara 'Immoral'.

Sudika Allahu El Agim

Chapter Twenty-Five

Revealed In The Year 614 A.D.

Al Qadr

(The Power)

Original Order Chapter 25;

Wrong Order Chapter 97

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Qur'aan Sent Down In
The 19th Shadow Hour Period
Of Laylat Al Qadr - The
Shadow Hour Of Power Is
Better Than A Thousand Of
Months - All The Malaa-ikah
With Al Ruwh/Murdoq Came
Down By The Izn Of Their
Sustainer - Peace Enveloped
The Shadow Hour

you perceive Maa 'What', the
Shadow Hour Period of Power
is, 'Laylat Al Qadr?'

3) The Shadow Hour Period of
Power is better than Alf Shahr
'One Thousand Months'.

4) All of Al Malaa-ikat 'The
Angelic Messengers, Anunnaqi'
came down to Qi/Al Ard the
planet 'Earth' and the Ruwh,
(Murdoq/Michael), 'Soul' by the
Izn 'Permission', of their Rabb,
(ANU) who is in control of all
things.

5) Salaam 'Peace' enveloped it,
this exalted Shadow Hour
Period, until the signal of Al
Fajr, 'Daybreak.'

Sudika Allahu El Agim

Chapter Twenty-Six

Revealed In The Year 612 A.D.

Al Shams

(The Sun)

Original Order Chapter 26;

Wrong Order Chapter 91

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Sun And Its Radiance
- The Nahaar Is Brightened
By It - The Layl Screens It -
And Maa 'What' Built The
Sky? - Allah Alshaam The
Spirit To Overstand Its
Fujuwr - He Who Has

Purifies His Spirit Will Be
Prosperous - Thamud Called
Salih A Liar - Thamud Raised
Jenda Ibn Umar To Kill The
She-Camel - They
Slaughtered It - Allah Crushed
Them For Their Zamb And
Levelled Thamud - Allah
Doesn't Fear The 'Uqbah Of
Such A Destruction

26 And The Shams 'Sun', and
its Duhaa 'Radiance'.

2) And the Qamar, 'Moon,'
when it follows after it.

3) And the Nahaar, 'Daytime
(Afternoon)' when it is
brightened by it,

4) And by the Layl 'Shadow
Hour Period', when it screens it,

5) And Al Samaa 'The Sky' and
Maa 'What' built it,

6) And the Qi/Tiamat, planet
'Earth' and Maa 'What'
landscaped it.

7) And the Nafs 'Spirit/Person'
and Maa 'What' Sawwa
'Perfected' it.

8) So He, (He Not We)
Alhamahaa 'Inspired' it, (the
spirit to overstand) its Fujuw, 'Wickedness,' and its trembling
at the mention.

9) He who purifies it, (his spirit)
has certainly Become Allah
'Prosperous'.

10) And certainly He Who
Khaaba 'Buries it', (his spirit)
has certainly failed.

11) Because of Thamud's
excessive transgression, they

called him, (Salih) A Kaazib
'Liar'.

12) When they, (the Enosites of
Thamud) raised up (back to life
amongst themselves) the Ashqaa
'Most Wretched' (leader - Jenda
Ibn Umar, to kill the
She-Camel).

13) So ALLAH'S Rasuwl,
(Salih) said to them: "Do not
harm ALLAH'S Al Naaqat
'She-Camel'; leave her to Water
And Suqyaa 'Graze'.

14) But they, (Enosites of
Thamud called the One Sent -
Salih) a liar, and slaughtered (the
She-Camel). So their Sustainer,
who is Rabb, crushed them for
their Zamb, 'Guilty Act' and
leveled it, (Thamud).

15) And He, does not fear the
'Uqbah 'Consequences,' (of such
a destruction).

Sudliqa Allahu El Azim

Chapter Twenty-Seven

Revealed In The Year 613 A.D.

Buruwj

(The Zodiac)

Original Order Chapter 27;
Wrong Order Chapter 85

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Heavenly Skies Is The
Source Of Al Buruwj - The

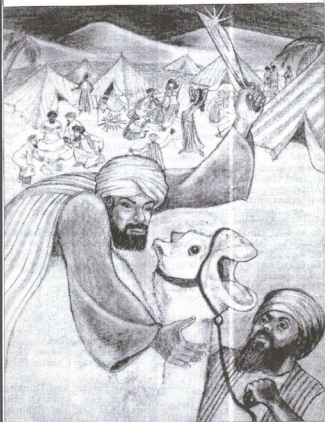


Figure 13
Jenda Killing The She-Camel

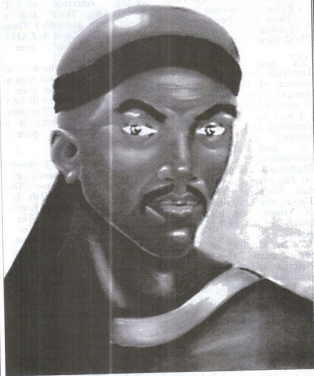


Figure 14
Jenda Ibn Umar Who Killed The She-Camel

Source Is The Watcher - Dhu Nawas Killed The Faithful - To Allah Belongs The Rulership Of The Samaawaat And Qi - Those Who Persecute The Faithful Men And Women Will Have Pain Of Jahannam

27 And Al Samaa 'The Heavenly Skies,' the possessor (source of the signs) of Al Buruwj 'The Zodiac'. (Al Buruwj Is Nibiru).

2) And by Al Maw'uwd 'The Promised Day, (the day of its return.)'

3) And The Watcher (astronomer) and that which is Mashhuwd 'Watched' (Nibiru).

4) The companions of the pits: (the King of Yemen, Dhu Nawas, the last Himyarite King of Yemen, and his kindred), killed (the Faithful for making pits).

5) The kindling of the fuel (which burned the Enosites of Najraan and forced them to renounce their faith).

6) When they (King of Yemen, Dhu Nawas, and his Enosites) squatted around it, (the fires).

7) And they were Shuhuwd 'Watched' of what they did, (torture) to the Mu'miniyn, 'Faithful Enosites' (of Najraan).

8) And they, (King of Yemen, Dhu Nawas and his Enosites) only tortured them because they were faithful to Al 'Aziyz 'The Mighty' Source, ALLAH, the

One Who All Gratitude is due.

9) To Him (Him Not We), who belongs rulership of The Samaawaat, 'Skies' and the planet Earth, also called 'Tiamat, Qi And Al Ard' and ALLAH is a Shahiyd 'Watcher', over all things.

10) Surely, those who persecuted the faithful men and faithful women, and then did not repent for them will be the pain of Jahannam 'Purgatory'; and for them, there is the torture of burning pain (on their skin).

Those Who Work To Perfect Themselves. There Are Jannaat For Them - The Batsha Of Your Rabb Is Shadiyd - Yahuwa Begins Everything And Is The Ghafuwr - He Is The Possessor Of The Throne - Has Not The Hadiyths Come To You? - The Source Encompasses Them On Every Side - The Glorious Qur'aan Is In A Guarded Igwh

11) Surely, there are Jannaat beneath which rivers flow, for those who are faithful and work to perfect their beings (themselves). That is the great Al Fawz, 'Achievement.'

12) Inna 'Surely', the Batsha, 'Grip' of your Rabb 'Sustainer', verily is terribly Shadiyd 'Forceful',



Figure 15
Dhu Nawas, Ruler Of Yemen (The Last Himyarite Ruler)

13) Surely He, (He Not We) begins, (creates) everything and has the power to bring everything back to life.

14) And He is Al Ghafuwr 'The Forgiver', Al Waduwd 'The Compassionate'.

15) The Possessor of the Al Arsh Al Majiyyd 'Throne Of Glory'.

16) He does what He wants.

17) Has not the Hadiyyth 'Tales' of Al Junuwd 'The Armies' come to you?

18) Of Pharaoh and Thamud?

19) In fact, those who conceal what they know is true are only liars.

20) And The Source, ALLAH encompasses them on every side.

21) In fact! It is a glorious Qur'aan,

22) In a guarded Lawh 'Tablet' (as Enuma Elish)!

Sudliqa Allahu El Agim

Chapter Twenty-Eight

Revealed In The Year 617 A.D.

Al Tiyn
(The Fig)

Original Order Chapter 28;
Wrong Order Chapter 95

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Tiyn And Mount Sinai
- The Secured Land Of Mecca

- The Anunnaqi Created The Enosites - And Reverted Some Of Them To The Lowest Of The Low - Those Enosites Who Are Faithful Will Have An Everlasting Reward - How Can You Call The Day Of Judgment A Lie? - Is Not Allah, The Best Of Judges?

28 And Al Tiyn 'The Fig', and Al Zaytuwn 'The Olive'.

2) And by the sacred Mount Sinai - (Al Tuwr),

3) And by this faithful land, (the sanctuary, Mecca).

4) Indeed We, ([We Not He] Anunnaqi) Khalafa 'Created' the Al Insaan 'Enosite', in the best of Taqwiym 'Statutes'.

5) Then, as for some of (Human kind, Tribes of Canaan), We, (Eloheem, Anunnaqi) then reverted him to Al Saafiliyn 'The Lowest Of The Low', - (a Human Devil).

6) Except for those, (Enosites) who were faithful and worked to perfect their beings (themselves). Thus their Ajrun 'Reward' for (their righteous deeds) is an everlasting reward.

7) How can you lie about the Diyn 'Means Of Judgment', calling it an untruth?

8) Is not The Source, ALLAH, The Best Wise One (Judge) of the Haakimiyn, 'Wise Ones (There Is More Than One)?'

Sudliqa Allahu El Agim

Chapter Twenty-Nine

Revealed In The Year 614 A.D.

Quraysh

(Big Fish, Reptilian)

Original Order Chapter 29;

Wrong Order Chapter 106

**Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.**

**Quraysh Are Accustomed To A
Thousand Of Allah's Protection
- Especially When They
Travelled In The Winter To
Syria, And The Summer To
Yemen - So Let Them Slave
For None, Except The Rabb
Of This House - He Who Fed
Them, And Kept Them
Faithfully Secure**

29 O tribe of Quraysh, (who are descendants of Abrawhawm; you have become accustomed to) Alf 'Thousands' of protections."

2) You, (Quraysh) became accustomed to protections surrounding you, when you saddled and journeyed throughout (the season) of Al Shitaa 'Winter', (to Syria and the season) of Al Sayf, 'The Summer,' (to Yemen).

3) So let them slave for none except the Rabb, 'Master/Sustainer' of this Bayt, 'House,' (the Kaaba).

4) He who fed them and kept them from Juw'in, 'Hunger' and faithfully gave them security against Khawf 'Fear'.

Sudlqa Allahu El Agim

Chapter Thirty

Revealed In The Year 617 A.D.

Al Qaar'ah

(The Striking)

Original Order Chapter 50;

Wrong Order Chapter 101

**Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.**

**What Is The Terrible
Striking? - It Is The Day
When The Enosites Will Be
Like Scattered Butterflies - The
Jibaal Will Be Like Wool - He
Whose Scale Is Heavy With
Righteous Deeds, He Will
Have An Easy Life - If His
Scale Is Light, He Will Have
The Pit Of Haawiyah**

30 Al Qaari'ah 'The Terrible Striking'; (meteor showers to come).

2) What is the Terrible Striking?

3) And what will make you perceive what the Terrible Striking is?"

4) It is a Yawm 'Day', when Al

Naas 'The Enosites' will be like scattered Faraash, 'Butterflies.'

5) And Al Jibaal 'The Mountains', will be like shed Manfuwsh 'Wool'.

6) As for him whose Mawaazin 'Scale', is heavy (with righteous deeds).

7) There will be a pleasing Iysha 'Life', for him.

8) And as for him whose scale is Khaffat 'Light'.

9) So his abode is the Haawiyah, 'Bottomless Pit.'

10) And what will make you perceive what this Haawiyah is?

11) It is a very Haamiya 'Hot' fire."

Sudiqq Allahu 'El Azim

Chapter Thirty-One

Revealed In The Year 614 A.D.

Al Qiyaamah

(The Standing, Resurrection)

Original Order Chapter 31:

Wrong Order Chapter 75

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Muhammad Swears By Al
Qiyaamah - And He Doesn't
Swear By The Person, Who
Constantly Blames Another, Or
Accuses Himself - Does The
Enosite Think, That The
Eloheem Can't Gather His

Bones? - The Anunnaqi Also
Reconstructed His Banaanah
- The Enosite Wants To Deny
The Day Of Resurrection - He
Asks, 'Ayyaan Is The Day Of
Resurrection? - When The
Sight Is Dazzled And The
Moon And Sun Are Gathered
Together - The Enosite
Will Want To Know Where
Is The Majarr?

31 No! (But) I, (Muhammad)
swear by the Day of Al
Qiyaamah, 'Standing/
Resurrection.'

2) And I, (Ahmad), don't swear
by the Nafs 'Person/Spirit',
(which constantly) is Al
Lawwaamah, 'Blames Others Or
Accuses Himself.'

3) Does The Al Insaan 'Enosites'
think that We (Eloheem,
Anunnaqi) cannot gather his
Izaam 'Bones', to resurrect him?

4) Why We, (Anunnaqi) can
even reconstruct the tips of his,
(the enosites) Banaanah,
'Fingers.'

5) In fact, The Enosite wants to
deny what is right in front of
him, (the Day of Resurrection).

6) He, the (Enosite) asks:
"When, 'Ayyaan,' is the Day of
Resurrection?"

7) So when the sight Becomes
Bariq, 'Dazzled,'

8) And Khasafa Al Qamar 'The
Moon Is Eclipsed'.

9) And Al Shams 'The Sun', and

the Qamar, 'Moon' are gathered together. (These days you see the sun and the moon out together in midday).

10) The (Enosite) shall say on that day, "Where is the Mafarr, 'Place To Escape?'"

There Won't Be No Place Of Refuge - To Your Rabb, Is The Only Place Of Rest - On That Day, Enosites Will Be Informed To As What Made Them Advance Or Akh-khar - The Enosite's Spirit Will Not See His Decision - Muhammad Told, Not To Hurry The Qur'aan - The Proper Reading Of The Qur'aan Is On The Eloheem - So Follow The Qur'aans Reading - Enosites Like The Life Of This 'Aajilah

11) By no means will there be a place of refuge!

12) To your 'Sustainer,' who is Rabb, is the only place of rest, on that Day (of Resurrection).

13) Al Insaan 'Enosites' on that day, will be informed about all that made them to Qaddam, 'Advance' (from Homo Erectus to Homo Sapien) or Akh-Khar 'Regress', (from Homo Sapien back to Homo Erectus).

14) Bal 'In Fact', The Enosites spirit will see his, (the Enosite's) own (judgment),

15) And even if he, (the Enosite) puts Forth Ma'aazirah 'Excuses'!

16) Don't (Muhammad) move

your Lisaan, 'Tongue' so as to hurry it, (the Qur'aan).

17) Surely on Us, (Eloheem, Anunnaqi) is the gathering of it, (verses) and the way it (Al Qur'aan) is to be read - (proper reading. The original order is the only and right way).

18) Fa-idhaa 'So If' We, ([We Not He] Anunnaqi) read it, the (Qur'aan), so follow its' reading (they had a system in Quraish dialect to read it).

19) Then surely it is on Us (Eloheem Anunnaqi) to give its explanation, Bayaanah 'Clear Evidence' (It Explains Itself By The Angelic Beings).

20) Nevertheless! But you, (Enosites) like the life of this 'Ajilah, 'Passing World.'

Enosites Neglect The End- Some Faces Will Be Shining On That Day - They Will Be Looking At Their Rabb - Other Enosites' Faces Will Be Miserable - Thinking About The Calamity That Will Come To Them - A Lump Will Be In Their Taraqiy - And It Will Be Asked, Who Is The Raaq? - It Is The Separation Of The Body And Soul - The Moment When Reality Will Hit - You Will Be Departing To Your Rabb On That Day

21) And you'll neglect the fact that the End, (will come).

22) Some Wujuwah 'Faces', on

that Last Day will be shining, (with happiness).

23) Just looking at their Rabb, who is 'Sustainer.

24) And other faces (on that Last Day) will be Baasirah 'Miserable'.

25) Thinking about the calamity that will be done to them in it, (the Last Day).

26) Nevertheless! When it happens, a lump will be in their Al Taraaqiy, 'Throats.'

27) And it will be said: "Who is the Raag 'Enchanter/Magician'?"

28) And as he thought! Surely it is the separation, (soul from the body).

29) And that moment, the reality (of death and the departure from this world) will join; (will hit you) as a departure of reality.

30) You will be departing to your Master/Sustainer, who is 'Rabb,' on that day, (returning to Illyuwn).

The Concealer Of The Facts
Didn't Saddaqa In The
Qur'aan Or Muhammad - The
Concealer Of The Facts
Tawalla From It - Then He
Turned Back To His Family
Arrogantly - The Destruction
And The Judgment Are Nearer
To The Concealer Of The
Facts - Does The Insaan
Think He Will Be Left
Unaccountable? - Is Not The
Enosite. A Mere Drop Of

Nutfah? - Allah Completed And
Proportioned Him From Black
Mud - The Source Made Male
And The Second Part, Female
From Him - Is Not He, Allah
Who Gives Life To The
Mawtaa?

31) So he, (the one who conceals that which he knows to be the facts), did not Saddaqa 'Trust', (the Qur'aan and Muhammad), nor did he, (the one who conceals what he knows to be facts), wants to Salla 'Send Salutations As Worship'.

32) But what he, (the concealer of the facts did), he deny (about not overstanding), and Tawalla, 'Turned Away.'

33) Then he, (the one who conceals that which he knows to be the facts) went back to his Ahl 'Family', (arrogant and proud) in haughtiness;

34) The (destruction) is Awla 'Nearer', to you, (Oh one who conceals that which he knows to be the facts); it is very near.

35) Then know that it, (the Judgment Day) is near; nearer to you, (the one who conceals that which he knows to be the facts than you know).

36) Do Al Insaan 'Enosites', think they will be Sudaa, left 'Unaccountable' (for changing the Qur'aan)?

37) Is he, (the Enosite), not a mere drop of Nutfah 'Sperm' (Life-Germ), that fertilized the

egg (in Ninti the Anunnaqi)?

38) Then he, (the Enosite) was a Separation Of Cells, 'Alaqah, - (Congealed Blood Clots,' fertilized egg), so He, Khalaq 'Created', (him,

Adam/Zakar/Kadmon) and made him complete, (proportioned; shaped from black mud).

39) So from him, (Adam/Kadmon/Zakar), He (He Not We) made Al Zawjain 'Mates/Twins' - Al Zakar 'Forgetful Male' and Al Unthaa 'Female Or A Second Part/One', - (Abel and Aqlimiya, Cain and Lubuwda).

40) Is this not He, (ALLAH) who is able to give life to the Mawtaa 'Dead?'

Sudika Allahu El Azim

Chapter Thirty-Two

Revealed In The Year 617 A.D.

Al Humazah

(The Slanderers)

Original Order Chapter 32:

Wrong Order Chapter 104

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Curse Be To Every Slanderer And Backbiter - He Who Recounts His Money And Thinks It Will Make Him

Immortal - He Will Be Cast Into Hutamah - Hutamah Envelopes Their Afidah - It Will Be Closed Over Them, In Long Columns

32 Curse be to every Humazah 'Slanderer' and Lumazah, 'Backbiter'.

2) He who hoards Maal 'Money', and recounts it, (over and over again).

3) He Yasab 'Thinks', that his wealth Will Make Him Akhlad, 'Immortal'.

4) Nevertheless, he will be cast into Al Hutamah 'The Hell Of The Slanderers'.

5) And what Adraka 'Will Make You Perceive', what Al Hutamah is?

6) It is a blazing fire, that The Source, ALLAH kindles to destroy them.

7) Which Tat-Tali'a 'Leaps Out And Envelopes', on the slanderer's Al Af-'Idat 'Inner Hearts'.

8) Surely it, Al Hutamah will be closed over them.

9) In long Amad 'Columns', (of fire).

Sudika Allahu El Azim

Chapter Thirty-Three

Revealed In The Year 614 A.D.

Al Mursafaat

(The Ones Sent)

Original Order Chapter 33: Wrong Order Chapter 77

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Mursalaat Are Ones Sent
Forth - The Strong Winds
And Hurricanes Are Signs
That Forerun The Ones Sent -
Al Mahdi And The Reformers
Who Carry Out Their
Teachings To
Clear Up Misinterpretation And
To Warn - Hell's Fire
Will Come To Pass -
And The Stars Will
Disappear - And The
Heavenly Skies Will Furiyat -
And The Mountains Will Be
Reduced To Dust

33 And Al Mursalaat 'The
Ones Sent Forth', (with the
scriptures, One After Another)
In Urfaa 'Succession'.

2) Then Al 'Aasifaat 'Violent
Hurricanes', and strong winds;
(the signs that forerun the One
Sent);

3) And by those who spread far
and wide (like clouds before the
rain).

4) Then by Those Fools Who Al
Faariqaat 'Make Distinction'
(Between) Them, (putting
Mosheh, Muhammad or
Yashu'a) above other

newsbearers and their books)
above each other.

5) Then as for those (warners:
Muhammad Ahmad Al Mahdi
'The Calmer', Noble Drew
Ali, Elijah Muhammad, and Al
Mujidda 'The Reformer'
Malachi Z. York) who enforce
and carry out (their, the Rusul
teachings), that you may
remember.

6) To clear up,
misinterpretation, or to warn.

7) Surely, all that you are
threatened with, will come to
pass - (Hell's fire).

8) So (the signs) will be when
the stars Turnisat 'Disappear',
- (the sky) becomes blackened
(polluted air).

9) And when the Samaa'
'Heavenly Skies' Will Be
Furiyat 'Ripped Open'
(opening vortex).

10) And when the mountains
are Nusifat 'Reduced To Dust'
(volcano eruption),

The Rusul Have Been Given
A Fixed Time - Each
Person Will Be Separated
On The Day Of A'Faa' -
Curse Be To All Hars -
Eloheen, Anunnaqi

Destroyed The Awwaliyn Of
Noach's Time - They Made
Generations To Follow After
Them

11) And when the Rusul
'Ones Sent,' have been given a
fixed time, (which has come,
the year 2003, 2030)

12) After which the Day (of decision is fixed after the last newsbearer, the newsbearer Muhammad's time, then the Last Day) will come.

13) For the Day of Al Fasl, 'Separation' - (when each person will be separated sectism).

14) And what will make you be able to perceive what the Day of Separation is?

15) Curse be to all the liars, on that day.

16) Didn't We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) destroy The First Ones', Al Aw waliyn - (the Enosites of Noach/Utnafishtim's time)?

17) Then We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made (generations) to follow them, (the Enosites of Utnafishtim's time) in the last (days).

18) This is how We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) dealt with Al Mujrimiyn 'The Guilty Ones', (before the flood of Noach's time).

19) Curse be to the Mukazzibiyn 'Liars' on that day.

Didn't Anunnaqi Create Enosites From An Insignificant Liquid? - Anunnaqi Made The Fetus In A Secure Place - Fate Will Make Known The Birth - Anunnaqi Control Fate - Waylun To All The Liars, On That Day - Planet Qi Is A Kifaal To Create Man -

Anunnaqi Made Huge Mountains And Waterfalls For Them

20) Didn't We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) create you, (Enosites) from an insignificant water/liquid, 'sperm' (seed of Ninti)?

21) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made it the fetus grow in a secure place - (the womb).

22) Until Qadar 'Tate', Makes Ma'aluwum 'Known' (the birth).

23) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) control fate; how gracious We are with destiny, (fate).

24) Waylun, 'Curse' be to the liars on that day.

25) Did We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) not use (the ground), the planet Earth, 'Tiamat/Al Ard' as a (Place) Where Things Are Kifaal 'Gathered'; (create Kadmon/Adam from it, and return him to it, at death)?

26) When giving life and at death,

27) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made huge mountains; (waterfalls) in it, (the planet Qi, 'Earth') and Asqaynakum 'Provided You' With Fresh Water.

28) Curse be the Mukazzibiyn, 'Liars' on that day.

They Are To Proceed Into

The Direction Of Hell - Hell Possesses Three Shu'ab - There Is No Zaliyl Or Protection In It - It Will Throw Sparks As The Biggest Qasr - Its Flames Will Be Yellow As Camels - Curse Be To All The Liars - The Liars Won't Be Able To Speak Clearly - They Won't Be Given Permission To Apologize Or Make Excuses - Eloheem Will Gather All Enosites On The Day Of Separation - If You Have Any Scheme, Then Scheme Now - Anunnaqi Reward The Doers Of Good

29) Now Antaliq 'Proceed', into the direction of (that Hell) about which you all lie.

30) Proceed into the direction of the unlit shade, it - (Hell) possesses three Layers, 'Shu'ab' (planes).

31) In it, there is no Zaliyl 'Shade', and no protection of any kind from the Al Lahab 'Ferocious Flame'.

32) Surely it, (the flame) will throw up Sharar 'Sparks', as big as the biggest Al Qasr 'Towers'.

33) Flames as the yellow Jimaalah, 'Camels.'

34) Curse be to all the liars on that day!

35) This day they, (the liars) won't be able To Yantiquwn, 'Speak Clear,' (tongue-tied).

36) And they, (the liars) will not

even be given permission to make excuses or apologize.

37) Curse be to all the liars on that day!

38) This is the Day of Separation and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) shall gather together all of you and those who were the first (Enosites who were before the flood of Noach's time).

39) So if you have any Kayd 'Scheme', then now is the time to use your scheme.

40) Curse be on all the liars, that day.

Those Who Tremble At The Mention Of Allah, Will Be Able To Drink Out Of Kawthar - And Fawaakih, All That They Desire - They Are To Eat And Drink Wholesomely - Eat And Enjoy Yourselves For A Short While - Curse Be To All The Liars - When They Are Told To Bow, They Don't - In What Hadiyth, Will They Put Their Faith In?

41) Surely, as for those who tremble at the mention, they, will be shaded, given of the fountains (of Kawthar).

42) And all the Fawaakih 'Fruits', (fruits to eat, physical) that they desire.

43) Eat and Ash-rab 'Drink', wholesomely because this is that which you, were working for.

44) Surely Kazaalika 'Just Like That', We, ([We Not He] Anunnaqi) will reward the Muhsiniyn, 'Ones Who Does That Which Is Best.'

45) Curse be to all the liars on that day!

46) Kuluw 'Eat', and temporarily enjoy your, (those who love this life, life here on Earth), but for a short while, for you are all guilty ones.

47) Curse be to Al Mukazzibiyn 'The Liars', on that day!

48) And when they are told to Arka'uw 'Bow Down', they don't bow down.

49) Curse be to all the liars on that day!

50) So in which Hadiyth 'Tale,' after it, (the Qur'aan), will they put their faith in?

Sudika Allahu El Agim

Chapter Thirty-Four

Revealed In The Year 618 A.D. (Except For Verse 38)

Qaaf

(The Qur'aan:

The Two Readings)

Original Order Chapter 34:

Wrong Order Chapter 50

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Quraysh Are Amazed

That A Munzir Has Come
From Amongst Them - They
Want To Know Whether
They'll Be Returned To Life -
The Anunnaqi Has A Guarded
Scripture In Their Possession
- Those Who Lied Are In A
Confused State - The Anunnaqi
Constructed The Skies Without
One Gap 'In It' - They
Extended The Planet Earth
And Made Mountains In It -
The Eloheem Sent Down
Water From The Skies As A
Blessing - For A Provision
For The 'Ibaad

34 (—) Qaaf: 'Qur'aan' and
the glorious Qur'aan.

2) In fact, they're wondered that
a Munzir 'Warner', has come to
them from amongst themselves,
the (Quraysh) so those who
conceal that which they know to
be the facts said, "This is an
amazing thing."

3) If when, we are dead and
have become Turaab 'Dust', will
there be a return to life? That
would be a far return - (such a
return to life is far, from
reality).

4) We, ([We Not He] Eloheem,
Anunnaqi) indeed know that the
planet Earth, 'Qi' diminishes of
them; for We have a Kitab Hafiz
'Guarded Scripture' in Our
possession (Akasha Records).

5) In fact, they who lied about
Al Haqq, 'The Facts' (beyond

any doubt, Al Qur'aan) when it had came unto them, so they are in a confused state about orders.

6) Don't they even look toward the Heavenly Sky which is above them, how We, ([We Not He] Eloheem) constructed it and how We ordained it with beauty and goodness and how there is not one gap in it (Asteroid Belt)?

7) And the planet Tiamat, 'Earth,' We (We Not He) have extended it out and We, (Anunnaqi) cast mountains into place in it; And We caused to grow within it all pairs of delightful things. We, put seeds in things, that they may breed.

8) So that you will be able to see and as a Dhikraa 'Reminder' for every repentant 'Abd, 'Slave' (Lulu Amelu).

9) And We, (Eloheem, Anunnaqi) sent down water from the Skies with blessings, so We (Anunnaqi Ashnan also known as Thukkiac) caused the Enclosed Gardens Of Delight to grow and the harvest grain in it."

10) And the tall palm trees with fruit - (stalks) closely set one above another.

11) For a provision for the Ibaad 'Slaves', and we bring to life the dead land by way of it (re-plenish the earth); that it may be used to bring forth provisions."

Accused Utnafishtim Of Being
A Liar - The Companions Of
Al Rass - And Al Yasiyn And
Thamuwd And Saalih - And
The Midianites Lied About The
Rusul - The Anunnaqi Asked
Whether They Were
Exhausted By The First
Creation - The Eloheem
Anunnaqi Created The Enosite,
And Are Closer To Him Than
His Jugular Vein - Two
Eloheem Anunnaqi Will Be
Sitting Besides Man - A
Watcher Standing Besides Him
Ready To Record - The
Drunkedness Of Death Is That
Which They Were Trying To
Shun Away From - The
Trumpet (Shofer) Shall Be
Blown By Raphael

12) Before them, the (Meccans), was the kindred (Kadmonites) accusing Noach/Utnafishtim of being a liar; and the companions of Al-Rass, (who are the Midianites) and Yasiyn, and those of Thamuwd, (the tribe of Jenda Ibn 'Umar - Thamuwd and Selah).

13) And 'Ad and the Pharaoh/Fir'own (Ramses II) and the brethren of Luwt.

14) And the companions of the Ayka, 'Wood' - (the Midianites) and the kindred of Tubb'a. All of them lied about the Rusul, so the facts of my (My Not We) threats took effect, became a fact.

The Nations Before Them

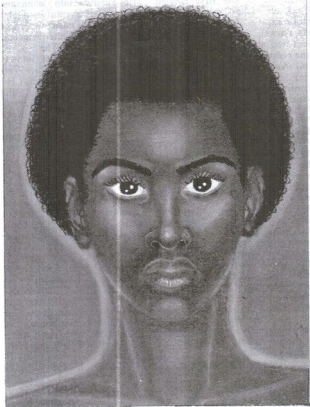


Figure 16

Thukkiac (Ashnan), The One Who Was In Charge Of The Grain
And Seeds Of The Enclosed Garden Of Delight

15) Were We (We Not I) exhausted by the first Khalaq 'Creation - (the Creation of the Eloheem, Anunnaqi in Malakuwt); in fact, they are confused about a new Khalaq - (the creation of Enosites).

16) And indeed We, (We Not He) created Al Insaan 'The Enosite' and We know that which his spirit Tuwaswisu 'Whispers' by way of it; and We (We Not I) are nearer to him (Enosites) than his own Jugular Vein.

17) When he was received by the two receivers - (two recording - Eloheem, Anunnaqi on his side), sitting on the right and left.

18) He (Enosite) didn't utter a single saying; except that there was standing in his possession, besides him, an observer, (ever ready to record).

19) And then came the drunkenness of death with the fact (beyond any doubt), that is what you were trying to shun away from.

20) And the Suwr 'Trumpet' (Shofer), shall be blown; the (Eloheem Rafael) will sound the trumpet (Shofer on the Last Day). That is the promised day.

Of The Anunnaqi That Shall Come, One Is The Carrier Of The Spirit And The Other Is The Watcher - The Eloheem Have Removed The Covering -

All The Stubborn Ones Will Be Thrown Into Jahannam - He Who Prevents Good Deeds Is Also A Doubter - Those Who Made Other Allaahan (Deities) With The Source, Will Be Thrown Into A Severe Pain - His Close Friend Will Say, 'It Was His Own Desire To Go Astray' Allah Will Say, 'Don't Quarrel Before Me' - Allah Is Never Unjust To The Slaves - The Eloheem Over Hell, Maalik Will Ask, 'Is There Any More?'

21) And a Saa'iq 'Driver', and a Watcher shall come with every Nafs 'Person', - (the two Eloheem, Anunnaqi) - one is the carrier of the spirit, that the soul may be judged, and the other is the watcher.

22) Certainly you were very negligent of this, so now We (Eloheem Anunnaqi) have removed your covering - (separated the Soul from out of the body). So your Basar 'Sight', on this date is very sharp.

23) And his close friend will say: "This is what I have presently of his record."

24) Throw all of the stubborn ones who conceal that which they know to be the facts, into Jahannam 'Purgatory'.

25) He who prevents good deeds, he is also a transgressor and a doubter.

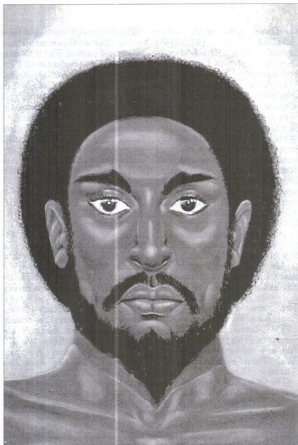


Figure 17
Rapha'El, The Trumpet (Shofer) Blower

26) Those who made other ILAAHAAN (ALLAHS) 'Sources' with The Source, ALLAH, so throw him into a severe pain.

27) His close friend said: "O our Rabb, who is 'Sustainer,' we did not cause him to transgress, but it was none other than his own desire to go far astray."

28) He, (He Not We) will say: "Do not quarrel before Me, and indeed I gave you threats beforehand."

29) None of the sayings can be changed in My (My Not Our) presence; and I (I Not We) am never unjust to the slaves.

30) On that day, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) shall say, unto Jahannam 'Hell': "How will it be filled up?" And he (He Not We), the Malik 'Ruler', (Eloheem) will say over Hell, "Is there any more?"

The Jannat Is Brought Near To Those Who Tremble At The Mentioning Of The Source - This Is What You Were Promised For Those Who Turn Frequently And Guard - Those Who Dread The Merciful And Come Secretly With A Repentant Heart - They Shall Enter It In Peace - In It, Is All That Which They Please - Those Who Were Destroyed, Did They Have A Mahiys? - That Is A Reminder For Those

Who Have A Heart And Gives An Ear - Weariness Has Never Touched The Eloheem. Anunnaqi - Muhammad You Are To Be Patient And Glorify The Gratitude Of Your Rabb - And During The Shadow Hour Period

31) And the Jannat, 'Enclosed Garden Of Delight' is brought near for those who tremble at the mention. It is not far.

32) This is that which you were promised for everyone who turns frequently and guards.

33) Who dreads The Merciful, who is The Rahman, Bi-Al Ghayb 'By The Unseen' (in secret) and comes before Him with a repentant heart.

34) Enter it in peace, for this is the day of eternity.

35) In it, is all that which they please; and yet, there is more in Our presence.

36) And how many families before them from generations, who were more forceful than they in power, have We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) destroyed? So they went about in the land. Did they have A Place Of Mahiys 'Escape'?

37) Surely, in that is a Dhikraa 'Reminder' for him who has a heart or gives Us an ear, (listens) and he is a Shahiyd, 'Watcher.'

38) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) created the Skies (Firmaments) and the

planet Qi, 'Earth' and all that which is in between them two, (Asteroid Belt), in six daily periods, and weariness has never touched Us (Us Not I).

39) (Gabriel is speaking.) So (Muhammad), be patient in that which they say and glorify by the gratitude of your Sustainer, who is Rabb (Adonia), before the Sun appears to rise and before it appears to set (the illusion).

40) And of the Shadow Hour Period, glorify Him, and when it, (the Shadow Hour Period) is behind you, still prostrate.

Listen To The Call Of The
Anunnaqi Raphael - The
Trumpet, Is The Sound Of
The End Of The World -
Everyone Will Be Raised To
Their Graves - The Eloheem
Are The Givers Of Life And
The Cause Of Death - On
That Day The Gathering Of
Enosites Is Simple For The
Eloheem, Anunnaqi - Muhammad
You Are Not A Jabbaar Over
Them -

41) And listen on a day when the caller calls from a very near place, (the caller is the Anunnaqi Rafael).

42) The day when they will hear Al Sayhat 'The Cry', (the trumpet of the sound of the end of the world), by way of the fact (beyond a doubt. It was predicted that this day would

come). That is a day set for you all coming forth; (the day when everybody will raise from his grave).

43) Surely We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) are the Giver of Life and the cause of death and unto Us (Us Not I), is the (eventual) destination.

44) On that day, when the Planet Qi, 'Earth' shall split right up under them, (the great earthquake), they will make haste - (they will be running to and fro in Tiamat/Qi 'Earth,') that gathering together for Us (Us Not He), is an easy thing to do; (to assemble everybody on the Last Day is simple for the Eloheem, Anunnaqi).

45) We, (Anunnaqi) know that which they say and you, (Ahmad) are not over them as an 'Enforcer, Jabbaar, 'Mighty One,' Fadhakir 'So Remind' all, by way of the Qur'aan who fears My threat.

Sudlqa Allahu El Azim

Chapter Thirty-Five

Revealed In The Year 618 A.D.

Al Balad
(The Land)

Original Order Chapter 35;
Wrong Order Chapter 90

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,

Who Is The Most Merciful.

Nusqu Doesn't Swear By
Mecca - Ahmad Resides There
- And By Zakar Nor Seth -
Eloheem Created Enosites To
Face Kabad - Enosites Think
No One Has Power Over
Them - He Says, 'He Has
Wasted His Wealth' -
Anunnaqi Made Him With
Two Eyes - And A Tongue
And Shafatayn

35 I, the (Eloheem, Anunnaqi
Nusqu/Gabriel) do not have to
swear by this Balad 'Land',
Mecca,

2) And you, (Ahmad) reside in
this land,

3) And by the Waalid 'One That
Gave Birth', (Adam/Zakar/
Kadmon) and the Walad 'One
Born' (Seth).

4) Indeed We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) Khalaq
'Created', Al Insaan 'The
Enosites' to encounter Kabad
'Great Difficulty'.

5) Does he, (the Enosite) think
that no one has power over him?

6) He says: "I have wasted Maal
Lubad 'Enormous Wealth'."

7) Does he, (the Enosite) think
that no one sees him?

8) Didn't We, ([We Not I]
Eloheem, Anunnaqi) make
Aiyayn 'Two Eyes' for him?

9) And a Lisan, 'Tongue' and
Shafatayn, 'Two Lips,'

The Eloheem Calmed The
Enosites To Two Paths - But
He Didn't Strive To Overcome
The Obstacle - The Obstacle Is
The Freeing Of The Slave -
Or A Feeding In A Day Of
Masghabah - Or A
Near-Related Orphan - Those
Who Have Faith Are
Advocates Of Patience, And
Living Mercifully - Those Who
Conceal The Facts, Will Be
Of The Mash'amah - And Naar
Will Be All Around Them

10) And We (Eloheem
Anunnaqi) calmed him for the
two paths will: (Good, Agreeable
And Evil, Disagreeable).

11) But he did not strive or rush
to overcome Al Aqabah 'The
Obstacle'.

12) And what Will Make You
Adraaka 'Perceive' what the
obstacle is?

13) It is the freeing of a
Raqabah 'Slave' - (the removal of
the shackle from the Slave's
Neck).

14) Or the It'aamun 'Feeding'
in a day of Masghabah 'Famine',

15) An Yatiym 'Orphan', which
is nearly related,

16) Or the Miskiyn 'Needy'
(Poor Dwellers), in abject
poverty.

17) Then he who was of those
who had faith will be an
advocate of living Al Sabr
'Patiently', and an advocate of
Al Marhamah, 'Living

Mercifully.'

18) These are the As-haab 'Companions' of the Maymanah, 'Right Hand.'

19) And as for those who conceal what they know to be true about Our (Our Not My) signs - (the Scriptures), these are the Companions of the Mash'amah 'Left Hand'.

20) And the Naar 'Fire' shall close all around them, (Enosites of the left-hand).

Sudika Allahu El Agim

Chapter Thirty-Six

Revealed in The Year 612 A.D.

Al Taariq
(The 'Knocker')

Original Order Chapter 36:
Wrong Order Chapter 86

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Knocker, Which Is The
Star Bennett - Muhammad Is
Questioned Whether He Will
Be Able To Perceive What
Taariq Is? - There Is No
Spirit With A Haafiz -
Enosites Must Contemplate Of
That Which He Was Created
From? - He Was Khuliq
From Sperm - The Source Is
Capable Of Returning The
Enosite - On That Day, All

Enosites' Secrets Will Be
Disclosed - Enosites Will Not
Have Any Power Or Naasir
- Qur'aan Is A Decisive Qawl
- And Not An Unserious
Matter - Allah Is Scheming A
Scheme - So Mahhil, The
Concealers Of The Facts For
A Little

36 And The Heavenly Skies
and Al Taariq, 'The Knocker' -
(the Star Bennett, A Sham From
Nibiru).

2) And by what means would
you, (Ahmad), would have
perceived what the Taariq is?

3) It is the brightly piercing Al
Najm, 'Star (Craft).'

4) There is no Nafs 'Person'
which does not have a Haafiz,
'Guardian (Anunnaqi).'

5) So all Enosites must seriously
contemplate of that which he
was created from (The
Anunnaqi).

6) He, (the Enosite) was Khuliq
'Created' from Maa' Daafiq
'Gushing Water, Sperm.'

7) Which travels between The
Sulb, 'Solar Plexus' and the
Taraa'ib 'Spine.'

8) Surely, He (He Not We), is
capable of returning him, (the
Enosite).

9) On the day when, all Al
Saraa'ir, 'Secrets that were
sealed inside of (Enosites) will
be disclosed (in these last days
with Holy Tablets and
Nuwaubu).

10) So he, (the Enosite) will not have any Quwwah 'Power,' nor any Naasir, 'Aider.'

11) The sky, Zaat, 'Possessor/Essence' (source), of Al Raj', 'The Returning' (crafts from the sky).

12) And by the planet Qi/Al Ard, 'Earth' which splits open for the seeds to push forth (Taimat split in two).

13) Surely it, (the Qur'aan) is a Qawlun Fasl, 'Decisive Saying'.

14) And it, (the Qur'aan) is not be taken as an Al Hazl 'Unserious Matter'.

15) Surely they are scheming A Kayd 'Scheme'.

16) And Akiydu, 'I (I Not We) Am Scheming' a scheme.

17) So Mah-hil 'Respite', Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal That Which They Knew To Be The Facts,' for only a little while.

Sudiqah Allahu 'El Azim

Who Is The Most Merciful.

The Saa'ah Is Coming Near

- The Moon Is Anshaqqa

- They See The Sign And Say

It Is A Form Of Sihr - They

Followed Their Own Ahwaa'

- The Qur'aan Has Come To

The Meccans As Muzdajir

- The Qur'aan Is An Effective

Hikmah - Ahmad Is Told To

Turn Away From Them - They

Will Resurrect, Just Like

Scattered Jaraad - They Will

Be Hastening To

Israafiyil/Raphael - The Nation

Of Noah Said That He Was

Majnuwn - Noah Ask His

Rabb, 'To Aid Him'

37 Al Saa'ah 'The Hour' is coming close and the Qamar, 'Moon' Is Anshaqqa 'Split Asunder'.

2) And if they see A Ayat 'Sign', they turn away and they say: "It is but Mustamirr 'A Form', of Sihr 'Magic'."

3) And they lied and followed their Ahwaa'a 'Loves/Vain Desires'; and every command has its destiny.

4) And indeed Al Anbaa-i 'The News', (Al Qur'aan) has come to them, the (Meccans) as a Muzdajir, 'A Means Of Prevention From Wrong.'

5) It, (the Qur'aan) is an effective Hikmah 'Wisdom'; but the Nuzur 'Warnings,' they

Chapter Thirty-Seven

Revealed In The Year 614 A.D. (Except For

Verse 44 Revealed In 6 A.D. In Medina)

Al Qamar

(The Moon)

Original Order Chapter 37;

Wrong Order Chapter 54

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,

don't benefit from.

6) So turn away from them, (Ahmad); the day the caller will call them to Shay'in Nukur 'A Terrible Thing'.

7) With their Absaar, 'Sight' cast down in humility. They go forth from the Ajdaath, 'Graves,' (resurrect), just like they are Jaraad 'Locusts' Muntashir 'Scattered About.'

8) They Muhti'iyn 'Hastening Toward' the Daa'i, 'Summoner/Caller' the (Eloheem, Anunnaqi Israafiyl Or Raphael, who is the Trumpet [Shofer] Blower). The concealers of the facts will say: "This is a Asir 'Difficult' day.

9) Before them (the Meccans), the (Kadmonites) kindred of Noach denied Our slave, (Noach) and they said he Was Majnuwn, 'Possessed With A Jinn/Cherubeem) therefore he was driven out.

10) So he, (Noach), called His Rabb 'Sustainer', "Surely, I am conquered; so please aid me."

The Anunnaqi Opened The Abwaab Of The Sky - And They Made Qi To Gush Forth With Springs - They Carried Utnafishtim/Noach In That Which Was Made Out Of Planks And Nails - The Flood Was A Jazaa For He Who Concealed The Facts - The Story Of Noach Was Left As A Sign - Allah's Pain Is Dreadful

-The Eloheem Made The Qur'aan Easy - 'Ad Lied About Allah's Punishment - Anunnaqi Sent A Violent Wind Upon Them - They Were Flung All About Like Uprooted Trunks Of Palm Trees

11) So We (We Not He) opened the Abwaab, 'Doors' (heaven has doors) of the Heavenly Sky, clouds by Munhamir, 'Water Pouring Down' - (the flood of Noach).

12) And We made the planet Qi to gush forth with Uyuwn 'Springs', so that all the water gathered together according to the command which was Qudir, 'Predestined.'

13) And We, (Eloheem, Anunnaqi) carried him (Noach) upon that which was made of Alwaah 'Planks Of Wood', and Nails 'Dusur'.

14) It, (the ark) ran in Our, ([Our Not My] Anunnaqi's) sight. That flood was a Jazaa 'Reward' for he whom concealed that which he knew to be the facts (which Noach came to teach).

15) And indeed We left it, the story of the flood as a sign, but is there Any One, Mudakkir, 'One Who Will Receive Admonition?'

16) So how dreadful was My (My Not Our), pain and My warning?

17) And Indeed, Yassarnaa 'We

(We Not He) Have Made Easy,' the Qur'aan for the remembrance, so does anyone Mudakkir 'Receive Admonition For' it?

18) 'Ad lied about how great My (My Not Our) pain, 'punishment and warnings were.

19) Surely We (We Not He) sent upon them, (the tribe of 'Ad) a Riyh Sarsar 'Violent Wind, Tornado' in that very day of constant calamity - (flood).

20) It, the tornado Tunzigh, 'Flung' the Enosites (of 'Ad), all about, as if they were uprooted trunks of palm trees, just Munqa'ir, 'Turned Upside Down.'

Allah's Pain And Warnings Are
Dreadful - Anunnaqi Made
Qur'aan Easy To Remember
- The Tribe Of Thamud Lied
About The Warning
- Thamud Didn't Have
Faith, That A Bashar Was
Coming From Them
- Thamud Is The Real
Liar - The Naaqah Was Sent
To Them - They Were To
Share Water Between
Themselves - The Tribe Of
Thamud Slew The
She-Camel With A Sword

21) So how dreadful was My (My Not Our), pain and warnings.

22) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have

made the Qur'aan easy to remember. So does anyone Mudakkir 'Receive Admonition' for it?

23) The Tribe of Thamud, lied about the warning, (the earthquake.)

24) So they, (the Enosites of Thamud) said: "What, one Bashar, 'Mortal In Skin, (Salih, one of us); and we are to follow him? Then, indeed we will fall into Dalaal, 'Error' and Su'ur, 'Distress.'

25) The reminder were given, cast to him, (the newsbearer Salih) and He is from amongst us? In fact he, (Salih) is an insolent liar.

26) They, (the Enosites of Thamud) will soon know, as soon as tomorrow, who the real insolent liar is,

27) Surely We (We Not He) sent Al Naaqah 'The She-Camel,' as A Fitnah 'Test', for them; so you are to watch over them, and keep yourself patient.

28) And (Salih) Nabi'a 'Informed them' (as a newsbearer) that surely the water is to be Qismah, 'Shared' between them; each drink will be regulated.

29) So they, (the Tribe of Thamud) called Saahibuhum 'Their Companions', and they took Al Naaqah 'The She-Camel', and slew it with a sword.

30) So see how dreadful was My

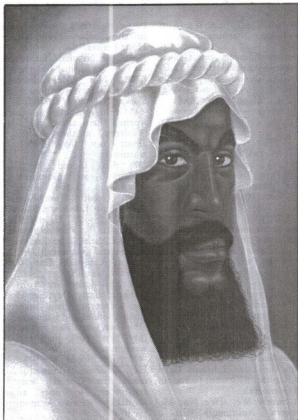


Figure 18
Shelah (Salih), Son Of Arfaxad And Hammath. He Was The One
Sent To The People Of Thamud

(My Not Our), pain Wa 'And'
My Nudhur 'Warnings'.

An Earthquake Came Upon
Them - Anunnaqi Have Made
The Qur'aan Easy To
Remember - A Stonestorm Was
Sent Upon Sodom And
Gomorrah - The Anunnaqi
Rewards Those Who Are
Shaakir
- The Sodomites And
Gomorrhahites Asked About
Luwt's Three Anunnagis Guests
- A Pain Overtook Them In
The Bukrah - You All Are To
Taste My Allah's Pain

31) Surely We (We Not He) sent
upon them one Sayhat 'Shout',
(which was an earthquake) and
they became Kahashiyma, 'Like
Dried Up Twigs,' Al Muhtazir,
'Used By A Fencer In Building
A Fence.'

32) And indeed We, ([We Not
He] Anunnaqi) have made the
Qur'aan easy to remember, so
does anyone Mudakkir 'Receive
Admonition' for it?

33) So the kindred Of Luwt's
(Time) lied about the warnings
(from the two Eloheems Uriel
and Raphael who went to Sodom
and Gomorrah).

34) Surely We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) sent a
stonestorm upon them, (Sodom
and Gomorrah), except on the
Aal 'Family', of Luwt; We
delivered them, (Luwt and his

two daughters Lubna and Jalaa)
in the Saahir 'Early Shadow
Hour Period.'

35) As A Ni'amah 'Grace' from
Us (Us Not I), just like that We,
([We Not Me] Eloheem,
Anunnaqi) reward him, who is
Shakar, 'Grateful/Thankful.'

36) And indeed, he, (Luwt)
warned them about our Batsh,
'Violence,' so they did dispute
about my (My Not We)
warnings.

37) And indeed they, (the
Sodomites and Gomorrhahites)
asked him, (Luwt) about his
Dayf, 'Guest' - (the Eloheem,
Anunnagis: 1. Michael/Murdoq/
Al Khidr, 2. Uriel/Kalkael/
Rudwaan, 3. Raphael); so We
blinded them, (the Enosites of
Sodom and Gomorrah), in their
eyes as A Fitnah 'Test', of my
pain and warnings.

38) And indeed early in the
Bukrah, 'Early Daytime Hour',
the constant pain overtook
them, (Sodom and Gomorrah).

39) Then you all are to taste My
(My Not Our), pain and My
warnings.

40) And indeed We ([We Not
He] Eloheem Anunnaqi) have
made the Qur'aan easy to
remember, so does anyone
Mudakkir 'Receive Admonition'
for it?

The Warnings Came To The
Family Of Pharaoh - They
Lied About The Anunnagis



Diagram 6
The Destruction Of Sodom And Gomorrah

Signs - Are The Concealers
Of The Facts Better Than
The Faithful Ones? - Pharaoh's
Family Think That They Are
A Victorious Community - The
Guilty Ones Are In Dalaal
And Su'ur - They Will Be
Dragged Upon Their Faces In
The Fire - All Things Are
Khalaq. According To Fate
- The Anunnaqi's Command Is
Nothing. Except In Lamhi Al
Basar

41) And indeed the Nuzur
'Warnings', came to the family
of Fir'own (Pharaoh).

42) They, (the family of
Pharaoh) lied about Our,
(Eloheem) signs (Psalms Of
Ankhaton) all of it; (The
Egyptian Book Of The Coming
Forth To Life, Book Of The
Dead) so We ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi) overtook
them after the manner of a
'Aziyz 'Mighty' Muqtadir
'Powerful,' pain.

43) Are you who conceal that
which they know to be the facts,
Khayr 'Better', than those of you
who have faith; or do you all
have A Baraa'ah 'Immunity' for
that which is in the Zubur,
'Psalms' (of Ankhaton).

44) Or do they, (the family of
Pharaoh) say: "We are a
victorious Jamiy'aan
'Community'."

45) The community will indeed
Be Put To Yuhzam 'Flight', and

turn their Dubur 'Back.'

46) In fact, the hour is their,
Maw'id 'Promise' and the hour
is Adhaa, 'Grievous' and Amarr
'Very Bitter.'

47) Surely The Mujrimiyn,
'Guilty Ones' are in Dalaal,
'Error' and Distress 'Su'ur'.

48) They Will Be Yus-habawn,
'Dragged' into the fire upon
their Wujuw'h 'Faces, to taste
(and feel) the touch of Saqar
'Hell'.

49) Surely all things, We ([We
Not He] Anunnaqi), Khalaq
'Created' according to Qadar
'Fate'.

50) And Our (Our Not His)
command is nothing except with
one Lamhi, 'Twinkling' of Al
Basar, 'The Eye (Sight)'.

The Anunnaqi Destroyed The
Likings Of The Family Of
Pharaoh - Everything
They Have Done Is In The
Zubur - Everything Saghiyr
And Kabiyr Is
Written Down In The Book
Of Life - In The Seat
Of Sidq,
In The Possession
Of The Most
Powerful Maliyk

51) And indeed We ([We Not
He] Eloheem Anunnaqi)
destroyed the likings of you, (the
family of Pharaoh), so is there
One Who Mudhakkir, 'Will
Receive Admontion?'

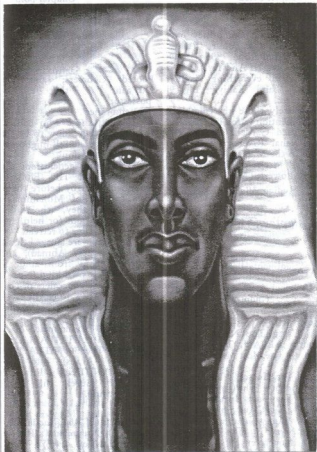


Figure 19
Ankhenaton, Son Of Amenhotep III And Queen Tiy

52) And everything they have done is in the Zubur, 'Psalms' (of Ankhaton Son Of Amenhotep III And Tiyi).

53) And everything Saghiyr 'Small', and Kabiyr 'Big' is recorded.

54) Surely those who tremble at the mention are in Jannaat, 'Enclosed Gardens Of Delight' and Nahar 'Rivers.'

55) In the Maq'ad 'Seat' of Sidq 'Trust' in the possession of the Most Powerful Maliyk 'Ruler.'

Sudiqā Allāhu El Azīm

Chapter Thirty-Eight

Revealed In The Year 616 A.D.

Saad


(Saafinaat: Light-Footed Coursers)

Original And Current Order,
Chapter 38

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Horses Who Are Saafinaat - The Concealers Of The Facts Indulge In Self-Might And Shiqaaq - So How Many Generations Were Destroyed By The Eloheem? - The Concealers Of The Facts Says He, Muhammad Is A Sorcerer - Has Muhammad Made All The

Allahs Into One Allah

38 () Saafinaat: Light-Footed Coursers; and the Qur'aan, is the essence, 'possessor' of Dhikr 'Remembrance'.

2) In fact, those who conceal that which they know to be the facts, indulge in self-might and Shiqaaq 'Dissension'.

3) How many generations did We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) destroy before them, (the Enosites of Muhammad's time?) So they, (the fallen nations) called out for help, and there was no time to retreat.

4) And they were amazed that a warner, (namely Ahmad), had come to them from amongst them, of their own kind (Nubian Arab) and the concealers of that which they knew to be the facts, said: 'This is a sorcerer, a liar (Pale Arab).'

5) Has he, (Muhammad) made all the AALIHAT/ALLAHS, (Deities - The 360 ALLAHS of the Pale Arabs) into one ILAANAAN (Deity - Into One ALLAH)? Surely this is an amazing thing.

The Chiefs Of Abu Taa'lib, The Uncle Of Muhammad's House Said That You Are To Walk And Be Patient With Your Sources - They Said, 'They Have Never Heard Of This In

The Last Millat Of
Abrawhawm - Qur'aan Is A
Reminder - Do They Have
Treasures Of A Yielding Rabb
- Or Do They
Have A Yielding Mercy

6) And the rulers (chiefs) from amongst them, (of Abu Taalib, Muhammad's Uncle's house), departed saying: "Walk and be patient with AALIHATIKUM (your ALLAHs) 'Your Sources'. Surely this is something that is wanted."

7) We have not heard of this in the last 'Rites' - (which is the Millat of Abrawhawm, also called Abram). So surely this, (the Qur'aan) is nothing but an invention. (If something in the Qur'aan doesn't comply with the religion of Abrawhawm, it must be invented).

8) Has the Dhikr 'Reminder', only been sent down to him who is amongst us? (Meaning is the Qur'aan the only reminder and is Muhammad the only receiver of reminders?) In fact, they are in doubt as to My (My Not Our) reminder. (They doubt the scriptures and other newsbearers.) In fact, they have not yet tasted My punishment.

9) Or do they have treasures of a Rahmat 'Yielding' (mercy) of your Rabb, Al Aziyz 'The Mighty', Al Wahaab 'The Giver'?

10) Or is the rulership of Al Samaawaat 'The Skies' for them and the Planet Qi, also known as Tiamat, Al Ard 'Earth' and that which is between both of them? So then let them ascend in the relations.

11) What! An army of Al Ahzaab 'The Party Of Enosites,' shall be defeated there.

The Enosites Of Noach Denied
Before The Meccans -
Thamud And The Enosites Of
Lot And The Midianites -
These Enosites Wait For A
Loud Cry - They Want Their
Rabb To Hasten To Them
Their Portion Before The
Day Of Reckoning

12) Denying before them, the (Meccans) were the kindred of Noach, 'Ad and Pharaoh, the possessor of the stakes.

13) And Thamud and the kindred of Lot and the companions of Al Aykah 'The Wood,' - (the Midianites); these were Al Ahzaab 'The Troops'.

14) Each of them denied the Rusul, 'Ones Sent', so my punishment became (a reality), 'true' (on them).

15) And these only wait for a single, loud cry, from which there will be no delay in it.

16) And they said: "Our Rabb, who is 'Sustainer,' hasten to us our portion, before the Day of Reckoning."



Figure 20
Abu Taalib, Muhammad's Uncle

Remember David, Possessor Of
Strength - Always Turning To
The Source, Allah - The
Jibaa Were Made Subservient
To Them - The Birds All
Tuned To Him, Also -
Eloheem Strengthened His
Mulk, And Gave Him Wisdom
- Two Disputers Entered His
Private Chamber

17) Be patient on that which they have said and Idhkur 'Remember' Our slave Dawiyd, the possessor of Al Ayd 'The Strength'. Surely he was always turning for repentance.

18) Surely, We (We Not He) made Al Jibaa 'The Mountains,' subservient with him (Dawiyd). They glorify with Al 'Ashiyyi 'The Dusk Period' and Al Ishraaq 'The Appearance Of The Sun Rising In the East'.

19) And the Tayr 'Birds' gathered together; all frequently turning to Him.

20) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaki) strengthened his, (Dawiyd's) Mulk, 'Rulership' and We gave him the wisdom and the decisive speech.

21) And has the news of the adversary come to you, when they climbed over the wall of Mihraab The 'Private Chamber'.

22) When they entered on Dawiyd so he became frightened from them, they said: 'Don't fear, we are two disputers. One

of us has transgressed the other. So use wisdom between us with the facts and do not go to extremes, exceeding proper bounds and lead us into calmness to the (right), narrow path.

Dawiyd Uses Wisdom Himself
- He Seeks Forgiveness For
His Act Against Uriah And
Bathsheba - Dawiyd Made A
Khalisyah - Dawiyd Told, 'Not
To Follow The Love, Vain
Desires'

23) Surely this is my brother; for him is ninety nine ewes, 'female sheep and to me one ewe. So he, (Dawiyd) said: "Commit her unto my care, and he has prevailed (over me) in speech."

24) He, (Dawiyd) said: "Indeed he, (meaning himself) has wronged you (Uriah The Hittite, one of his own officers whose mate, Bathsheba, Dawiyd wanted) by asking for your female sheep in order to add to his sheep - (being Dawiyd already had 99 wives at that time, The Source, made him, have to use wisdom on two men as a sign for him; which he did see) and surely most of those who mix business -(friends who become business partners) oppress one another, (cheat each other) except for those who have faith and work to perfect their beings (themselves), but they are few; and Dawiyd thought that



Figure 21
Dawiyd (David), Son Of Hilmah And Jesse

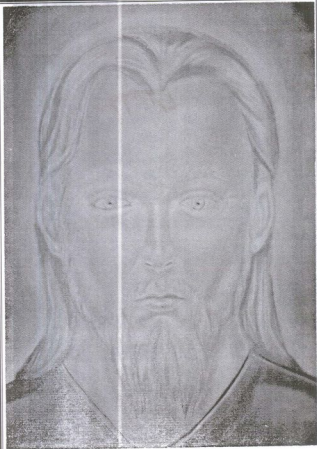


Figure 22
Uriah, The Hittite. He Was The First Husband Of Bathsheba.

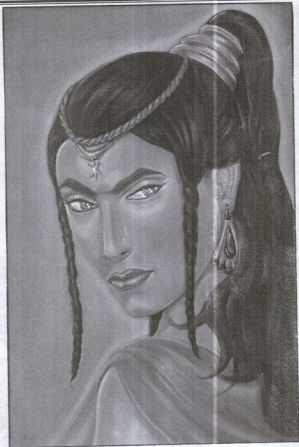


Figure 23
Bathsheba, Wife Of Dawiyd (David)

We (Eloheem Anunnaqi) tried him, so he sought his Rabb's, forgiveness and fell down 'Bowing,' (praying by making a) Rakuw' and he turned (for repentance).

25) So We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) forgave him for that and surely there is a nearness and a good beautiful place to which one returns for him, in Our (Our Not My) possession.

26) Oh Dawiyd, surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made you a Khaliyfah 'Successor' (Of Your Father Yishay), in the planet Qi, so use your wisdom between the Enosites by way of the facts (beyond any doubt) and don't follow the 'love, vain desire,' except it should lead you astray (into error) from the path of The Source, ALLAH- ('Millatu' The Replenishing Rites Abrawhawm. Surely, those who go astray into error, from the path of The Source, ALLAH because of their ego,) severe is the punishment by way of that which they forgot on the Day of reckoning.

The Skies And Tiamat Were
Not Created In Falsehood -
Should The Eloheem Make
Those Who Try To Perfect
Themselves Like The Mischief
Makers? - Qur'aan Sent As A
Blessing - Shelomoh Is Given
To Dawiyd By The
Anunnaqi- Sulaymaan Tested

By The Anunnaqi - Shelomoh
Asks For Forgiveness And A
Rulership That Shall Not
Benefit Anyone After Him

27) And We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) did not create Al Samaa-a 'The Heavenly Skies' and the planet Tiamat 'Earth' and that which is between both of them, in falsehood. That is the opinion of those who covered that which they knew to be the facts. So curse be to those who conceal that which they knew to be the facts for the Naar, 'Fire'.

28) Should We (Eloheem Anunnaqi) make those who are faithful and try to perfect themselves like the Mufsideyn 'Mischief Makers' (Seed Of Canaan) in the planet Qi 'Earth' or should We (Eloheem Anunnaqi) make the ones who tremble and fear like the Insolent Ones (Luciferians)?

29) A scripture (Al Qur'aan), which We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' (it came from above) to you (Ahmad), as a blessing so that they may consider its verses and that those first ones who pass through the door of the (Mystic Order Of Zodoq) may remember.

30) And (also) We gave unto Dawiyd, Soloman/ Sulaymaan; A most excellent slave, surely he is returning to

Us.

31) When, the dusk period came, the light-footed coursers 'standing horses' were shown to him.

32) So he said: "Surely I liked the liking of good things, than the remembrance of my Rabb, who is 'Sustainer'"; until it was taken out of sight by the screen."

33) Return them on me. So he began to do something, rubbing the legs and necks.

34) And indeed We, (Anunnaqi) tested Shelomoh, and We cast a body on his chair; (replaced him with a clone) then he returned.

35) He, (Sulaymaan) said: "My Sustainer, who is Rabb, forgive me and grant me a rulership such as it shall not benefit anyone, after me. Surely You are Al Wahhaab 'The Giver'."

The Wind Ran By His Command - The Shayaatiyn, And Every Mason And Diver To Dive In The Sea For Him - This Was A Gift For Him - He Will Have A Nearness, A Good Place To Return

36) So We made the very wind to run by his command, as a gentle breeze, subject to him (Shelomoh), wherever he desired.

37) And the Shayaatiyn, (Satans, The Reptilians), and every (free)mason builder and divers to dive in the sea in search for

precious pearls.

38) And others were bound together in chains.

39) This is our gift so give or withhold without reckoning.

40) And surely for him We (Eloheem Anunnaqi) have a nearness and a beautiful (good) place to which one returns.

Eloheem, Anunnaqi's Slave Yowb, Was Inflicted By Satan The Reptilian - A Yielding Mercy Was Given Onto Him And His Family - Yowb Was Patient And The Most Excellent Of Our Slaves

41) And remember our slave Yowb, (also called Job) when he called upon his Rabb, surely I was inflicted by Satan (The Reptilian, Haylal, son of Shakhar and Mylitta), with hardship and pain.

42) Stomp the ground with your foot, this is a cold place to wash and to get a drink.

43) And We (Eloheem Anunnaqi) gave for him his family and those like them, with them, as a yielding (mercy) from Us and a remembrance for the first ones who passes through the door of (the Mystic order of Zodoq).

44) And take with your hand, a bunch so strike with it and don't break (your oath), surely We (Eloheem Anunnaqi) found him, (Yowb) patient and most

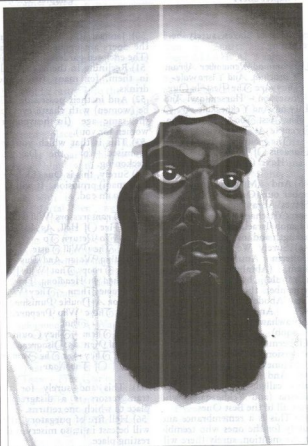


Figure 24
Prophet Yowb (Job)

excellent of slaves, surely he is returning.

Muhammad Remember Abram,
Yitschaq, And Yisrawale -
They Are The Best In Our
Possession - Harsemtawi And
Eliysha And Yekhezqale Are Of
The Best Too - Those Who
Tremble At The Mentioning Of
The Source Will Have
Gardens Of Eden - They Will
Have Chaste Women

45) And (Muhammad), Remember our (Our Not My) 'Ibaad 'Slaves' Abrawhawm/Abram and Isaac/Yitschaq and Ya'aqob/Israel, all of whom had strength and insight.

46) Surely We ([We Not My] Eloheem Anunnaqi) purified them, (Abrawhawm, Yitschaq, Yisrawale) by making them remember the Khaalisat 'Pure' Daar 'Abode'.

47) And surely they, (Abrawhawm, Yitschaq, Ya'aqob) are chosen in Our (Eloheem, Anunnaqi's) possession, because they are the good (ones).

48) And remember Yishmael, (also called Harsemtawi) and Eliysha (and Yekhezqale), who were all of the Best Ones.

49) This is a remembrance and surely for the ones who tremble at the mention, surely there will be a beautiful (good) place, to where one returns.

50) Jannaat 'Gardens' of Eden, the doors are opened for them. (The enclosed gardens has doors).

51) Reclining in them, they call in them, for many fruits and drinks.

52) And in their possession will be (women) with chaste eyes, of the same age. (In heaven are women for you).

53) This is that which you are promised for the Day of Reckoning.

54) Surely, this is Our (Eloheem Anunnaqi) provision. It will not come to an end.

The Transgressors Will Have
The Fire Of Hell. As A Place
To Return To -

They Will Taste
Boiling Water And Pus -
The Troops That Will Be
Rushed In Headlong. Don't
Welcome Them - They Will
Ask For A Double Punishment,
For Those Who Prepared
That

For Them - They Count
Mortal Men As Disagreeable
Ones - They Are The Family
Of The Naar

55) This and surely for the transgressors is a disagreeable place to which one returns.

56) Hell fire of purgatory, they will be cast in it; so misery is the resting place.

57) This is so they will taste its boiling water and pus.

58) And other things from this, are its shapes, in pairs.

59) This troop shall be rushing headlong into Hell with you. Don't welcome them, surely they will be casted into the fire.

60) They shall say: "In fact, you are not welcome with that which you offered us, so miserable is the resting place."

61) They will say to our Rabb: "Whoever prepared this for Us, increase him with a double punishment in the fire."

62) And they will say: "What's wrong with us, we don't see Rijaa' 'Mortal Men', we use to count them from the disagreeable ones.

63) Was it, that we only took them in scorn, or have (our) eyes now turned aside from them?

64) Surely that is the fact, disputing with one another, they are of the family of the Naar 'Fire'.

Muhammad Is A Warner -
There's Not An Allah Except Allah- He Is The Rabb Of
The Samawaat And Qi And
All That Which Is In Between
Them - The Qur'aan Is
Supreme News - Muhammad
Tells The Meccans, He
Doesn't Have Knowledge About
The Assembly Of The Exalted
Chiefs'

65) (Gabriel speaking.) Tell them this (Muhammad): "Surely,

I'm a warner and there's not from a 'Source,' ILAAHIN except ALLAH, Al Waahid 'The One', Al Qahaar 'The Dominant'.

66) The 'Sustainer,' who is Rabb of the Samawaat, 'Skies' and the planet Qi and that which is between both of them; (the two firmaments - Mummu (Mercury) Lahamu (Venus) Lahmu (Mars) Kishar (Jupiter) Titan (Saturn) Mashsig (Uranus) Ea (Neptune)); Al Aziyz 'The Mighty', Al Ghafaar 'The Forgiving'.

67) Tell them this, (Muhammad): "That it, (the Qur'aan) is a Aziym 'Supreme' Nabawun 'News'."

68) You'll are turning away from it.

69) I, don't have knowledge about the assembly of the exalted rulers (24 Angelic Elders - Anunnaqi chiefs) when they dispute.

70) Nothing is inspired to me except that I am a Mubiyn 'Clear' Nadhiyr 'Warner'.

The Rabb Of The Eloheem,
Anunnaqi Will Create A
Bashar - He Perfected And
Blew Into Him Of His Soul -
All The Eloheem Prostrated -
Except For Iblis/Haylal -
Anu Asks Iblis, "What Is It
That Prevented Him, From
Prostrating To
Adam/Zakar/Kadmon?" - I
Am Better Than Him -

Because You Created Me Of Fire, 'Naar' And Created Him Out Of 'Tiyn,' Clay

71) When he (He Not They) said: "That is your Rabb, who is 'Master' to Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers' - (Eloheem, Anunnaqi), surely I (I Not We) will create a Bashar 'Mortal In Skin' from Tiyn, 'Clay'."

72) So when I (I Not We) have perfected him and blew My (My Not Our) soul into him, then fall down to Him, prostrating.

73) So all of the 'Messengers,' (Eloheem, Anunnaqi) prostrated, together.

74) Except Iblis, (also known as Haylal, Al Khannaas, Nakhash); he was pouting (and full of pride) and was of Al Kaafirun 'The Ones Who Conceal That Which They Knew To Be The Facts'.

75) He, (ANU) said: "O Iblis, what is it, that prevented you, that you did not prostrate to (Kadmon/Adam, also known as Zakar), whom I created by way of My two hands - (Ninti And Nergal shaped this Adam's body). Is it that you are pouting (with pride, too big chested), or is it that you are from Al 'Aaliyn 'The Two Exalted Ones' (Enlil/Engi)?"

76) He (Iblis) said: "I am better than him (Adam). You created me of Naar 'Fire' and created him of Tiyn, 'Clay'."

Allah Tells Iblis/Haylal He Has To Go - And He Has A Iqanat On Him - Iblis Asked To Be Looked Upon - Iblis Vows To Lead Them Astray Into Error By Allah's Might - Allah Will Fill Hell With Satan, And Those Who Follow Him - Muhammad Is Not An Imposter - The Qur'aan Is A Reminder Of The Known World - And Certainly You Will Come To Know The News Of It, After A Time

77) He, said: "Then go out of it, for surely you are a cursed Rajiym 'Outcast'."

78) And surely on you is my La'nat 'Curse' to the day of Judgment.

79) He, (Iblis) said: "My Rabb so Andhirniy 'Look Upon Me' to the day when they are raised (back to life to the stars)."

80) He, said: "Surely you are of Al Mundhariyn 'The Ones Looked Upon'."

81) To the day of the predetermined time.

82) He (Iblis) said: "Then by your Izzat 'Might', I will verily lead them astray, (into error), all together."

83) Except your slaves, amongst them are Al Mukhlasiyn 'The Purified Ones' (Nuwaubu).

84) He said: "Then it is the fact. (The fact beyond a doubt) and Al Haqq 'The Fact,' is that which I speak."

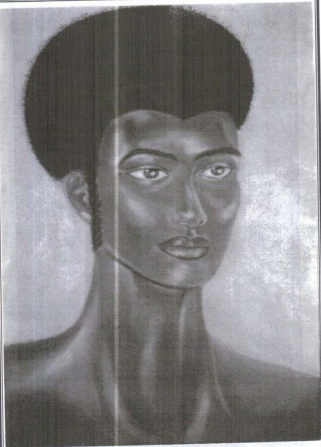


Figure 25
Mother Ninti



Figure 26
The Scientist Nergal

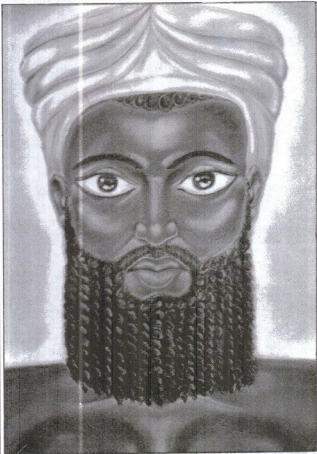


Figure 27

Enlil, Son Of Anu And Antum (Antu)

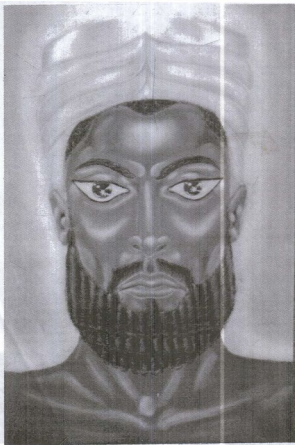


Figure 28

Enki (Izraa'el, The Angel Of Death), Son Of ANU And Id (Iyd)

85) Then I, will fill Jahannam 'Hell' with you and with those who follow you, from amongst them all together.

86) Tell them this, (Muhammad): "I do not ask you for any reward, nor am I of Al Mutakallifeen 'The Imposters'."

87) It, (Al Qur'aan) is nothing but a Dhikrun 'Reminder' for the Known Worlds.

88) And certainly you will come to know the news of it, after a time.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Thirty-Nine

Verses 1-162 Were Revealed In The Year 618 A.D., And Verses 163 To 170 Were Revealed In The Year 631 A.D.

Al Aaraaf


(The Wall Made Known)

Original Order Chapter 39:

Wrong Order Chapter 7

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Revelation Of The Qur'aan

39 () Alif - (ALLAH He sent it); Laam - (Shadow Hour of Power - He, The Source, ALLAH sent down, [it came from above] the Qur'aan

in the Shadow Hour of Power); Miym - (Muhammad); Saad - (Chest. So don't let there be any heaviness, fear in your chest).

2 Kitaab 'A scripture', (the Qur'aan) has been sent down to you, (Muhammad); so don't let there be, in Sadrika 'Your chest', any straitness from it. (It will solve all problems); so that you may warn by it, and it is a Reminder for the Mu'miniyn 'Faithful Ones.'

3 Follow that which, was sent down to you from your 'Master/Sustainer' Rabb and don't follow others besides Him (Him Not Us); as near friends (guardians), how little do you remember.

4 And how many villages (of Enosites), did We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) destroy! So Our punishment came upon them, while they slept at the Shadow Hour period, or as they napped in Midday.

5 So their calls, when Our, ([Our Not His] the Eloheem, Anunnaqi) punishment came upon them were nothing, other than that, they said: "We were indeed, of the Zaalimiyn 'Those In A State Of Unjustness.'

The Rusul Sent Will Be Questioned By The Eloheem, Anunnaqi

6 So We, ([We Not His] The

Eloheem, Anunnaqi) will question those whom were Rusuls 'Sent' to them; and We, (the Eloheem), also will question those whom We sent to them - (the apostles sent)."

7 So, for a certainty We, (the Eloheem, Anunnaqi) Naqsussanna 'Related Stories' upon them - using knowledge; (stories with inner meanings), and We, (the Eloheem) were not absent.

8 And the measuring on that day, will be by facts; so as for him whose (good) deeds, weight are heavy; so these are they who will be prosperous.

9 And as for him whose deed's weight is light; so these are they, who are in a state of loss by their very ownselves - by being in a state of unjustness, because of Our, (the Eloheem, Anunnaqi's) verses. (How they did not read the Qur'aan).

The Anunnaqi Gave You Your Places In The Earth - Creation And Fashioning Of The Adamites

10 And indeed, We (The Anunnaqi), have given you all your places, in the planet Earth, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) made for you all, in it, a means of livelihood. (They gave us, in our Motherland, all the natural resources as Gold, the Silver, Platinum, and oil,

etc.); so how little is your gratefulness, for what you were given.

11 And We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi Izraa'iyl) created you all, then (gave you, your image by) Sawwar 'Fashioning' you. We said: "For all the Angelic Messengers, (Eloheem, Anunnaqi) to prostrate for Adam (Kadmon/Zakar)." So they, (the Eloheems) prostrated, except for (the rebellious Eloheem, Anunnaqi), Ibliys (of the species of The Malevolent Beings Jinn - also called Azaaziyl, or Lucifer/Haylal, son of the reptilian Shakhar). He was not of those (Benevolent Beings, Serapheem) who prostrated. (He was of the Malevolent Beings, Cherubeem, not a Benevolent Being).

Ibliys' Rebellion - He Doesn't Want To Prostrate Before Kadmon/Adam/Zakar

12 He said: "What hindered you, (Ibliys/Haylal/Samael), that you did not prostrate when I (I Not We) commanded you to?" He, (Ibliys) said, "I am better than he, (Adam/Zakar)? You Khalaq 'Created' me of fire and you Khalaq 'Created' him of clay."

13 He, said: "Get Down." (The Eloheem, Anunnaqi was cast from the Skies after the battle

between the Eloheem Michael/Murdoq and the Agreeable Eloheem, Anunnaqi, the Benevolent Beings, Serapheems and Azaaziyl Also Known As Tarnuwsh, Shakhar, Zuen and the Disagreeable Anunnaqi, the Malevolent Beings, Cherubeems!) So it is not for you, (Azaaziyl) to be Tatakabbarra 'Big-chested, pouting with pride'; in it - (the planet Qi/Tiamat 'Earth'); so go out (from the Enclosed Garden of Delight into Al Ard 'Earth.') Surely you, (the Disagreeable One, the Devil) are from the smaller ones, (the 200 Malevolent Beings, Cherubeems).

14 He, (Ibliys, the Rebellious, Malevolent Being), said: "Look upon me, (the Devil), until the day when they are Yub'athuwn 'Raised To Life' (taken back thru the stars)."

15 He, said: "Surely you, (the Devil) are of the ones being looked upon."

Zakar And Nekaybaw Is Deceived By Al Khannaas

16 He, (Ibliys/ Samael/Nakhash/Al Khannaas, the Rebellious, Malevolent Being) said: "I Swear! As you, (Adam/Zakar) caused me to go astray; I, (the Devil) will squat (sit) and wait for them, (Zakar's seed) on your narrow path of the

ones who stand up straight." (He Will Be On The Path. He Will Be A Muslim).

17 Then I will certainly come from before their own hands, and from behind them and from their right, and even from their left; and you will not find most of them grateful (he will be in amongst the muslims)."

18 He (He Not We), said: "Get out from it, (this plane), despised and driven away; whoever, will Tabi'aka 'Follows You', (the Disagreeable One), of them, verily, I (I Not We) will fill Jahannam, 'A Blazing Fire,' from you all assembled."

19 And O Adam (Zakar)! Askun 'Dwell', you and Zawjuka 'Your Mate', (Eve/Nekaybaw) In the Jannat, (Gan:) 'Enclosed Garden' and eat of its things, as you desire; and don't go near this Shajarat 'Tree', for if you do, you both, will be of Al Zaalimiyn 'The Ones In A State Of Unjustness' (there was already others in an unjust state).

20 But Al Shaytaan, (the Reptilian), 'The Whisperer,' (Nakhaas/Al Khannaas/Samael,) made an evil suggestion to them, (Nekaybaw/Eve and Adam)- that He, (Ibliys) manifested for both of them, what had been hidden from them, (Zakar and Nekaybaw of their disagreeable inclinations) - shame; and He,

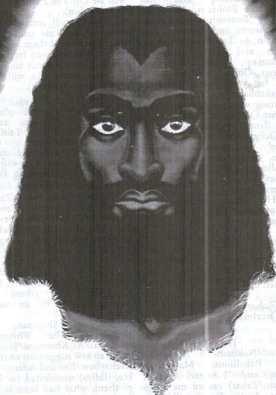


Figure 29:
Zakar (Adam/Kadmon), Son Of Atum And Lillith

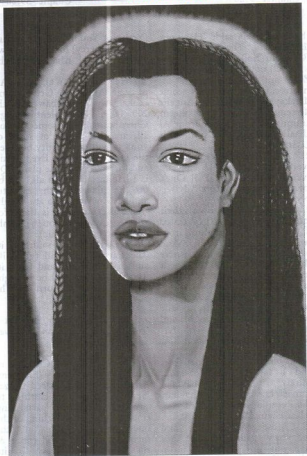


Figure 30
Hawwah (Eve/Nekaybaw), Daughter Of Ptah And Anath

(the Whisperer) said: "Has your Master, The Source, (Rudwaan/Kalkael), also known as (Uriel) not forbidden you two, (Zakar and Nekaybaw, to eat of) this tree; unless you two, become Malakayn 'Two Angelic Messengers' (Eloheem, Anunnaqi) or become From Al Khaalidiyn 'The Immortals (Living Forever)'?"

21 And He, (the Evil One) swore to them two, (Adam and Eve): "Surely, I (the Evil One), am a Naasihiyn 'Sincere Adviser' to you."

22 So they proceeded with their deception, so when they tasted of the tree - (the Opium from the Tree Of Agreeable And Disagreeable Underneath where The Scroll Of All was); it manifested to both of them their nakedness (they learned shame), and they began to sew upon themselves leaves, from the Enclosed Garden of Delight; and their Rabb, who is Master, (Kalkael/Uriel) called upon both of them: "Did I (I Not We) not forbid both of you, of that tree? And I say to both of you, "Surely, Al Shaytaan (Samael/Haylal Bar Shakhar, The Reptilian) is to both of you, a clear enemy?"

23 Those two, (Zakar and Neqaybaw) said: "O Rabb! We have put our ourselves in a Zalam 'State Of Unjustness' - (wronged ourselves); and if You

(You Not You'll), don't have any yielding (mercy) for us, verily we will be of Al Khaasiriyn 'The Losers'."

24 He (He Not We), said: "All of you Ahbituw 'Get Down', (Zakar And Nekaybaw, and the 200 fallen Malevolent Beings, Cherubeems); for some of you all, are the enemy of some of you. (I will put enmity between the Devil's seed and Eve's Seed); and for you all, in the planet Qi, is a habitation. (You all, will be on the planet Earth; Enosites and the Enosites who are Devils) - and all you need, is there for you, for a while (you will only be on earth for a while).

25 He, (Rudwaan) said: "In it, (the Earth), you will (give life and) live, and die; and from it, (the Earth), you will be brought out" (You Will Return To The Stars).

Children Of Zakar, Let Not Satan, The Reptilian Deceive You

26 O Banee Adam, 'Children of Adam!' We, the (Eloheem, Anunnaqi) have indeed Anzal 'Sent Down' to you, clothing to cover your private parts, and fine clothing, and clothing of the ones who tremble at the mention; that is good (dress as the Anunnaqi dress, white robes). That is of the signs of The Source, ALLAH that

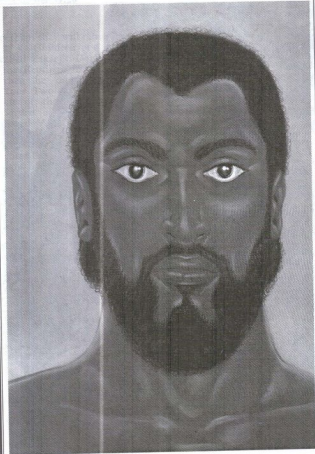


Figure 31
Kalka'El/Rudwaan, The Yahweh Over The Enclosed Garden

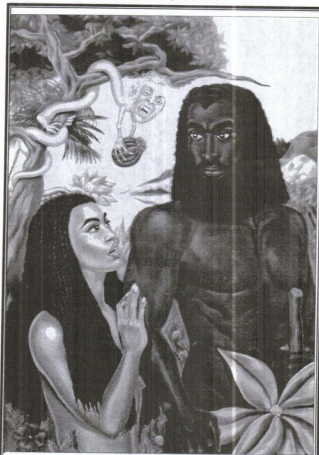


Figure 32

Satan And Hawwah (Eve/Nekaybaw) Partaking Of The Apple

perhaps they will remember.

27 O Children of Adam, (also called Zakar)! Don't let Satan, (the Reptilian) trick you all, as when he caused Abawaykum 'Your Two Parents', to be put out of the Jannat, 'Enclosed Garden of Delight,' and he also caused 'Anhumaa 'Them Two', (Adam and Eve) to remove Libaasahumaa 'Their Clothing' from themselves, in order to show both of them, their private parts - (what should have been covered). Surely, he (the Disagreeable One), sees you all - (he and his tribe of Enosites); from where, (a place) you all don't see them, they are disguised. Surely, We (the Eloheem, Anunnaqi) have made Al Shayaatiyn, 'Satans, (the Reptilians)' to become the closest of friends, for all those, (Adamites), who don't have faith.

28 And when they commit an open act of abomination (lewdness), they say: "We have found our fathers doing it, and The Source, ALLAH has commanded it." Tell them this: "Surely, ALLAH did not command acts of abomination (lewdness). Do you say of The Source, ALLAH what you do not know?"

29 Tell them this, (Muhammad): "My, Rabb, The Source, has commanded justice and set upright, Wujuwahakum 'Your Faces' at the possession of every

Masjid 'Place of Prostration,' and to call to Him (Him Not Them), sincerely, in the means of judgment; as He (He Not They), Bada-aakum 'Began You (created you, in the beginning)'. So (towards Him), you all will return (To The Stars).

30 A certain group, (Nubians, Seth's seed) has his calmness, and a certain group, (Cain's Seed, Black Devils); in reality, they have over them, an Dalaalat 'Astrayed State Of Error'. For (Cain's seed, Black Devils), have taken Satans, (the Reptilians, Malevolent Beings, Cherubeem) to be their Awliyaa-a 'Friends', (in the Land of Nod,/Saturn/Abaddon) other than The Source, ALLAH and they calculated that surely, they are Muhtaduwn 'Calmed'.

*The Source, Allah Does Not
Like Those Who Exceed
Bounds - Doom's Day For
Every Kindred*

31 O Children of Adam, take your proper ornaments of dress. (Dress as prescribed -white robes) in the possession of every Masjid; and eat and drink, and don't exceed your bounds. (Don't eat too much, or drink too much). Surely, He, does not like those who exceed the bounds - (greediness).

32 (Gabriel Speaking) Tell them this, (Muhammad): "Who is it

that has made Harram 'Unlawful', the fair-seeming things, (which are agreeable - material things) of The Source, ALLAH which, He (He Not We) had Akhraja 'Brought Forth' for 'Ibaadihi 'His slaves', and the good things of His Provisions?" Tell them this, (Muhammad): "This is how, it will be for those who have faith in the life of this physical world, Khaalisatan 'Purified' on the Day of Resurrection." Thus, have We, (the Eloheem, Anunnaqi) put Our (Our Not My) signs, in detail for the Kindred, who has (Right) Knowledge (The Nubians).

33 Tell them this, (Muhammad): "Surely, what My Rabb 'Sustainer', have made Harram 'Unlawful' is indecency- (whorism, lying, stealing, cheating, and betraying,) whether it is apparent, or kept concealed, and (all forms of) disagreeable acts and rebelliousness, without having any facts. (When Enosites refuse to listen to the facts, and slander the facts of the Peaceful Means Of Judgment, even without any of the facts); and that you Shurikuw 'Associate' with ALLAH what was not sent down to you; (you accepted Hadiyth, and traditions of men which were not inspired of the Qur'aan, or with the Qur'aan, with(out) any authority. (There

is not the Qur'aan, where He has made the Hadiyth an authority); and that you may say things about The Source, ALLAH of which, you don't have any knowledge."

34 And to every Ummatin 'Nation', there is a fixed term (Doom's Day); so when their fixed term (doom) has come, they shall not remain after it, not one hour, nor shall they be able to bring it about, before its time, (when He makes up His mind for the New Cycle - it will be in one hour, not before, and not after).

No Fear For Those Who Tremble At The Mention Of Allah - But For The Liars Of The Source's Sign, They Are Companions Of The Fire, Eternally

35 O Children of Adam! If the 'Ones Sent,' the Rusul comes to you, from amongst you all, relating stories, (narrating upon) you all My (My Not Our) verses - (the scriptures); so whoever trembles at the mention and whoever works for perfection, so then, they should have no fear upon them, nor will they be Yahzan 'Sad'."

36 And those who lie about Our, ([Our Not His] the Eloheems') signs - (the Scriptures), and out of their big-chested, pouting with pride,

(are scornful) against them; these are you, who are the Companions of Al Naar 'The Fire'. They will be in it, eternally.

37 So who, is more in a state of unjustness, than he who fabricates lies, against The Source - ALLAH (different sects of Muslims who make up orally their Hadiyths and say, "That ALLAH commands this, or forbids this," when it is not in the law); or who lies using His, The Source's, ALLAH'S verses - (the Scriptures; and those Enosites playing scholars in the Islaamic world amongst the Israelites, so-called Jews, and interpret it to suit their school of thought)? These are you, who will have for them their portion of the scriptures; (We have mentioned the laws of these Enosites in all of Our, the Eloheem, Anunnakis' scriptures), until when it is come to them Our, (the Eloheem's) apostles (throughout time), causing them to die. (The newbearers have brought the message to warn them of their eventual end). They will say: "Where is that which you were calling on besides ALLAH?" They will say: "They have gone away from us." (They will not be able to find their fake gods, or deities, or leaders); and they shall testify on Anfusihiim 'Their Ownselves', for surely, they

were of those Kaafireen 'Who Conceal What They Know To Be The Facts'.

The Concealers Of The Facts
Will Not Enter Al Jannat. The
Anunnakis Will Remove All
Bad Feelings From The
Faithful Ones

38 He will say (to Enosites who follow the Devil), enter into the Fire with the Umamin 'Nations' who have indeed passed before you all, from the "Jinn (Malevolent Beings, the, Cherubeems)" and the Enosites - (seed of Adam who follow the Disagreeable One); Into The Fire. Whenever, a Ummatun 'Nation' shall enter it, (the lake of Hell), it shall curse its sister - (those nations of Enosites, whom they follow into sin), until when they all reach (Hell), all together. The last of them - (modern nations) will say about the first of them, (Babylon)," Our Master/Sustainer who is Rabb, these are they who were led astrayed (all into error); so give to them, (the 200 fallen Malevolent Beings), a double 'Adhabaan 'Pain', in Al Naar 'The Fire'. He says," For all of them, is a double," but you don't know.

39 And she said, (the great Beast, the Harlot) to the last of them: "So you have no preferences over us, for

yourselves; so therefore, taste the pains by what you have earned, (yourself)."

40 Surely, those who lie about Our, (the Eloheems') signs - (the scriptures), and were too big-chested, pouting with pride, to accept them - the doors (gates) of Al Samaa-i 'The Skies', (Vortex) will never open for them; until the camel, can pass through the needle's eye. We, (the Eloheem, Anunnaqi), also will reward the guilty ones.

41 A Jahannam 'blazing fire - Hell', will be their abode, with barriers above them; We, (the Anunnaqi), also will punish those in a state of unjustness.

42 And as, for those who are faithful and are working to perfect their being (themselves); We, ([We Not I] the Eloheem), do not impose on any Nafsaan 'Person' except that which it can accomplish; these are you who are the Companions of the Al Jannat, 'Enclosed Garden of Delight;' in it, you shall be eternally.

43 And We, (The Eloheem, Anunnaqi) will remove all bad feelings from their chests (breasts). The river will flow underneath them and they will say: "All gratitude, is for ALLAH, whom calmed us for this, and we would not have been calmed for it, ("Nuwaubu") if The Source, ALLAH had not rightly calmed us. Certainly, all

the Ones Sent 'Rusul,' came with the facts; and it will be called out, "That, this is the Enclosed Garden of Delight of which you will be made heirs, for what you did, (how you lived).

44 And the Companions of the Jannat will call out to the Companions of the Fire, "That indeed, we have found what our Rabb, 'Sustainer', has promised us; is a fact, so have you all found what your Master have promised you to be a fact?" They will say: "Yes. Fa-adh-dhana 'So Called' the Muw-adh-dhinun 'Caller' (the caller will call out the Azaan), Baynahum 'Between Them', that the physical curse of The Source, ALLAH is on those who are in a state of unjustness."

45 And those who hinder others in the regards to the path of ALLAH - (those false teachers, preachers, Imaams, and Sheiks, that misguide Enosites), and they seek to make a crooked way, (that creates all forms of sectism and denominations); and they are the ones who conceal what they know to be facts, in the End."

The Companions Of The Fire
Will Desire To Be The
Companions Of Al Jannat

46 And between them, (two Heavens - the planets above the firmament: Jupiter (Kishar), Saturn, (Anshar) Uranus

(Mashsig), Neptune (Ea) ; and the planets below the Asteroid Belt's firmament: Mercury (Mummu), Venus (Lahamu), Earth (Tiamat), Mars (Lahmu) will be a screen; (or seven Heavens and Hell); And On Al A'araaf 'The Wall Made Known', will be Rijaaal 'Mortal Men' who know all, by their marks; and they shall call out to the Companions Of The Enclosed Garden of Delight, "Peace be unto you." They will have not yet entered it, though they hope to.

47 And when their inner sight is turned in the direction of the Companions of the Fire, they will say: "Our Master has not made us, amongst the kindred who are in a state of unjustness." (These false lords do not see themselves as cursed; so they think they will not go to Hell.)

48 And the companions shall call out to the Enosites that they know, by their marks - (the Mark of the Beast -666 -Zain, Zain, Zain), they shall say: "Of what avail, were unto you, and your gathering? and how you used to act, so proudly."

49 Are these, those about whom you swore that ALLAH would not give them His yielding mercy? Enter into the Jannat 'Enclosed Garden of Delight,' and you all shall have no fear, nor shall you grieve.

50 And the Companions of the Fire shall call out to the

Companions of the Enclosed Garden of Delight, (saying): "Pour down upon us the waters, or from that which The Source, ALLAH has provided you." They shall say, "Surely, ALLAH has made them two, unlawful on those who conceal what they know to be the facts."

51 Those who take their means of judgment as some form of idle sport; and as if, it is a game - the physical world of this life has them, deceived; so today We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) have Nansaaahum 'Forgot Them', just as they had forgot the meeting of their day - (how they neglected to obey in fear of the Judgment Day); and just as they denied Our (Our Not His) verses, (the scriptures).

52 And indeed, We, (the Eloheem, Anunnaqi) came to them with a scripture, (Holy Tablets) so We, (the Eloheem) explained it, (the scripture) 'Alaa 'Over' the 'Ilmin 'Knowledge'; a calmness and a yielding (mercy), for a kindred - (Family of Kadmon/Adam), who has faith.

53 Are they looking for nothing except the day when its interpretation finally comes (upon them, The Holy Tablets)? On the day when its interpretation will finally come (about 1996), he will say: "Those Who Forgot (Neglected) From Before Will Say: Indeed, The Rusulu 'Ones Sent' (All The

Newsbearers) of Our 'Sustainer', Rabb has come with the facts. So are there for us, any Shufa'aa-a 'Intercessors', so that they will be able to Yashfa'uw 'Intercede' for us? Or could we have been sent back; so that we may do other than that, which we already would. Indeed, they lost their own selves; (they are astrayed in a state of error) and that which they have invented (forged their Hadith), has departed away from them.

*The Act Of Khalq, Creation Is
The Source's - Call Out To
The Master, Without Raising
Your Voices Rudely*

54 (Gabriel Is Speaking) For surely, your Rabb 'Sustainer' is The Source, ALLAH who created the Skies and the planet Earth, in only six daily periods. Then He (He Not We), fulfilled His (His Not Our) responsibilities on the throne (Illyuwn). He screens the Shadow Hour period, by the luminance of Daytime Hour, which persistently pursues it and the Sun, the Moon, and the stars all, are made subservient to His divine command. Is it not that His, is the act of creating and the commands? Blessed is The Sustainer, who is Rabb, of all the Known Worlds.

55 Humbly call out to your Master, in secret; surely He, does

not like the transgressors (those who violated the sanctity of supplication, by raising their voices impertinently, or rudely).

56 And do not cause mischief in Al Ard 'The Planet Tiamat 'Earth' after its restoration (replenishment, rebuilding and repopulation); and call on Him, in Khawfaan 'Fear' and anticipation. Surely, the unrelenting mercy of The Source, ALLAH is nearer, to those who does that which is best.

57 And He (He Not We), who sent forth the very winds (crafts), bearing good news between my (My Not Our) hands, and his yielding (mercy), until, when they bring up a heavy, laden cloud, and We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) drove it to a dead land and We, (The Eloheem) sent down water from it. So, We (the Eloheem, Anunnaqi) brought forth; (weary over it, by the rain), all kinds of fruits. Just like that, We, (the Anunnaqi) shall bring forth the dead so that perhaps you, may (be mindful, or) remember.

58 And the agreeable land (country), brings forth vegetation (in abundance), by the permission of its Rabb, and as those which are inferior - (bad crops) and do not bring forth, except sparingly; this is how We, ([We Not He] the Eloheem,

Anunnaqi), repeat Our signs, for a kindred who are grateful."

*The Sending Of The Apostle
Noach/Utnafishtim- And His
Nation's End*

59 Indeed, We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) sent Noach, (who is also known as Utnafishtim,) to his kindred; so he, (Noach) said: "O my kindred! Slave for The Source, ALLAH for there does not exist for you, any other ILAAHIN 'Source', besides Him. Surely I, (Noach/Utnafishtim) fear for you all, a day of supreme pain."

60 The Malaa'-i 'Rulers', of his kindred said: "Surely, We see you (Noach/Utnafishtim) as one who has clearly gone astrayed, into error."

61 He, (Noach) said: "O my kindred, I have not in any way, gone astrayed into error; but I am, a Rasuwl sent from The Rabb 'Sustainer', of all the Known Worlds."

62 I, (Utnafishtim) Aballighukum 'Propagate To You' the Risaalaat 'Messages' of my Rabb (Adonia), who is 'Master', and I advise you all; and I know (things) from The Source, ALLAH which you do not know.

63 Or, do you wonder about the fact that there has come to you all, a reminder from your Master/Sustainer, a Rajulin

'Mortal Men' from amongst you, (from your own Enosites), who is to warn you all. So that you will tremble at the mention; and then perhaps, you will be treated with mercy - (stop your Disagreeable)?"

64 But, they still called him, (Noach/Utnafishtim) a liar; so We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) delivered him, and those who were with him - (Kham, Lebana, Shem, Yafeth, Faatin, Ifat, Haliymah, Naama, and the 80 beings inside of the craft); and We, (the Eloheem) drowned all those who lied and rejected Our verses - (the Enuma Elish, and tablets from before). Surely, they were a blind kindred.

*The Sending Of The Rasuwl
Eber- And His Nation's End*

65 And to the kindred of 'Ad, went their brother Huwd (Eber). He (Huwd), said: "O my Kindred (Hebrews), slave for The Source, for what you have is not from any other source, besides Him; so will you not, tremble at the mention?"

66 The rulers of them who conceal what they know are the facts, from their kindred said: "Surely, we see you, (Huwd, who is also known as Eber) as foolish, (ignorant, and unqualified to make such claims). In fact, we think that



Figure 33
Kham (Ham), Son Of Noach (Noah)

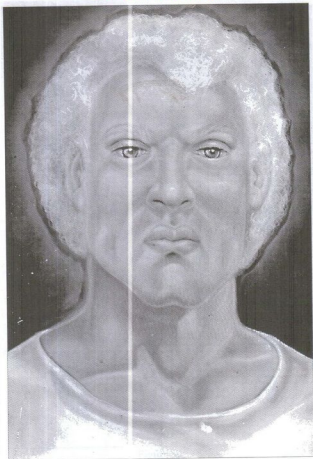


Figure 34

Lebana (Canaan) Who Was Born In The Ark

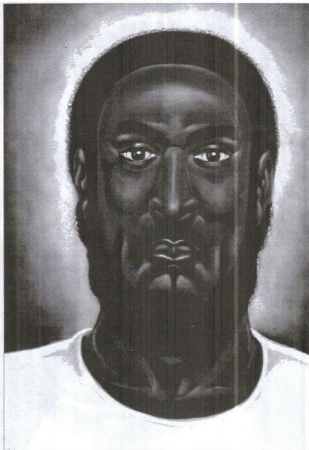


Figure 35
Shem, Son Of Noah (Utnafishtim/Noah) And Naama

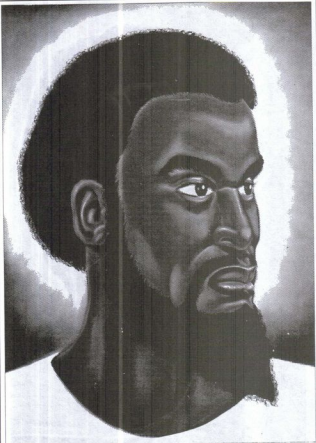


Figure 36

Yafeth (Yepheth/Japheth), Son Of Noach (Utnafishtim/Noah) And
Naama (Na'amah)

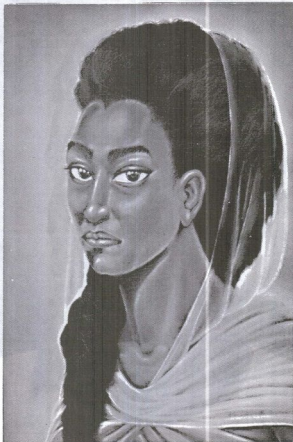


Figure 37
Faatin, Wife Of Shem



Figure 38

Ifat, Wife Of Yafeth (Yepheth/Japheth)

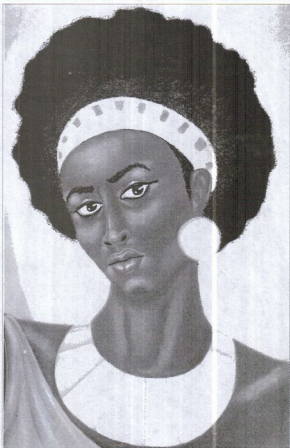


Figure 39
Haliymah, Wife Of Kham (Ham)

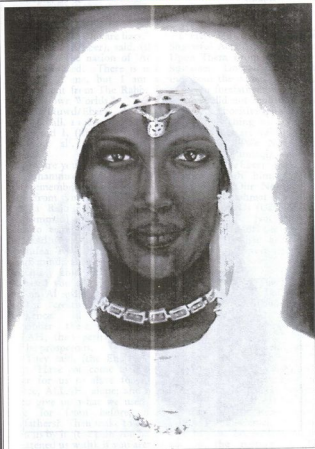


Figure 40

Naamah (Na'amah), Wife Of Noach (Noakh/Noah)

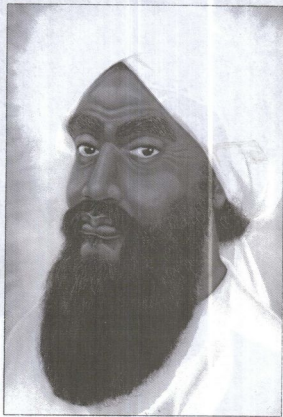


Figure 41
Noach (Noakh/Noah), Son Of Lamech And Khaliymah

you are of those who are liars."

67 He (Huwd/Eber), said, (the one sent to the nation of 'Ad): "O my kindred! There is not stupidity in me, but I am a Rasuwl, sent from The Rabb of all the Known Worlds."

68 I (Huwd/Eber), delivered unto you all, a message from my Rabb; and I, (Eber/Huwd), am for you all, a trustworthy advisor.

69 Or, are you all, (the Enosites of Muhammad's time), amazed that remembrance has come to you, from your Rabb, 'Alaaa 'On' a Rajulin 'Mortal Man', (Muhammad), from amongst you, to warn you and remind you; and when He made you all Khulufaa 'Khalifats -Successors, Left Behind,' and you came after Noach's kindred and He increased you all, (re-multiplied you on Al ard, Tiamat 'Earth') in the creation, ever more excellence, in statue? So remember these benefits of ALLAH, then perhaps you all will be prosperous.

70 They said, (the Enosites of 'Ad): "Have you come to us, in order for us to slave for The Source, ALLAH, alone; and for us to give up what we used to slave for from before, our forefathers? Then make to come upon us by it, (the pain you have threatened us with), if you are to be of the Sodoqites 'The Trusted Ones'."

71 He, (Huwd), said: "Indeed, Shameful Acts And Wraths Fell Upon Them From Their Rabb, Sustainer. Do you dispute with me about the names, which you and your forefathers were given? ALLAH did not send down for it, any authoritative power; so I am also watching with you all, and those who are waiting."

72 So We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) delivered him, (Huwd/Eber) and those who are with him, (Huwd), from Our, ([Our Not His] the Eloheems) 'Rahmat 'Yielding' (mercy) from Us (Us Not My), and We, ([We Not His] the Anunnaqi), cut off the very last of those who lied about Our signs, and they were not of the faithful ones.

The Sending Of The Rasuwl Salih And Lot - And Their Nations' End

73 And to the (Enosites) of Thamud, We (the Eloheem, Anunnaqi) did send their brother, Salih. He said: "O Naas, slave The Source, ALLAH. There is no other for you, besides this ILAAH 'Source.' Indeed, a clear (proof) has come to you from your Rabb. This is ALLAH'S She-Camel, which is a sign to you. So, let it roam and eat in the pasture in The Source's, ALLAH'S good Earth, and don't touch her with any

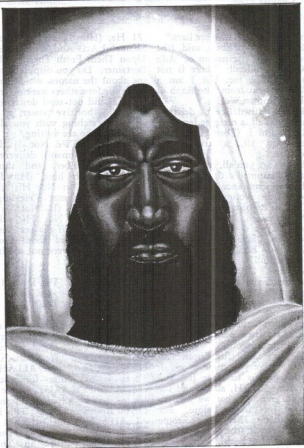


Figure 42
Eber , The One Sent To The People Of Ad

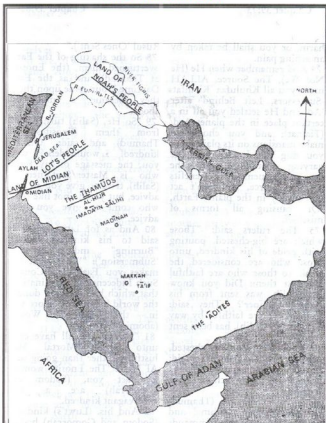


Diagram 7
Lands Of The Ancient Tribes
www.Nuwaupuinc.com

harm, or you shall be taken by an aching pain.

74 And remember when He (He Not We), The Source, ALLAH made you all Khulufaa 'Khalifats -Successors, Left Behind' after 'Ad, and He settled you all in a certain place in the planet Ard, (Tiamat); and you choose to make mansions on its plains, and you dug out houses into the varying mountains into the caves. So remember, the benefits of The Source, and don't act corruptibly in the planet Earth, 'Qi' causing all forms of mischief.

75 The rulers said: "Those which are big-chested, pouting with pride of his kindred, unto those who are considered the weak, to those who are faithful amongst them: Did you know that Salih, was sent from his Rabb 'Sustainer'? They said: "Surely, we are faithful by way of what he, (Salih), has been sent with.

76 Those who were big chested, pouting with proud said: "Surely, we are concealers of the facts, about that which you have faith in."

77 So they, (Thamud) slaughtered the she-camel and revolted against the commands of their Rabb, and they said: "O Salih! Bring upon us, the pain of what you threatened us with, if you are indeed of the ones sent. (If you are one of the

Rusul 'Ones Sent')."

78 So the shaking of the Earth overturned them, (the Enosites of Thamud); and as the Early Daytime Hour came upon them, they became a motionless abode."

79 "So He, (Salih) turned away from them (Enosites Of Thamud) and said: "Oh my kindred! I would deliver unto you, the message of my Rabb, who is Master/Sustainer; I, (Salih), tried to give you all good advice, but you do not like those who come to give you good advice."

80 And as for Luwt, when he said to his kindred, (Sodom "Burning" and Gomorrah 'Submersion'): "What is it, that makes you Faahishat 'Commit Such Indecencies' (abomination), that which has not been done in the world by anyone before you, in the Known Worlds-(abominations)?"

81 "Surely, you all have come unto Rijaa' 'Mortal Men' lustfully, other than going unto Al Nisaa 'The Enosite women'; In fact you, (Sodom and Gomorrah) are a very extravagant kindred."

82 And his, (Luwt's) kindred - (Sodom and Gomorrah) had no other answer except that, they said: "Cast them out from your (town) village. Surely they, (Luwt and his family), are Naas 'Enosites' who seek to purify

themselves.

83 So We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) delivered him, (Lot) and his family except Amra-atahu 'His Women', (Sabriyya); she was of those who remained behind. (She, Sabriyya turned back and was changed into a pillar of salt - paralyzed).

84 And We, (the Eloheem, Anunnaqi), rained down upon them, (Sodom and Gomorrah), with a rain; so look at how, the guilty ones end up.

The Sending Of Shu'aib/ Jethro To The Midianites - And His Nation's End

85 And We, (the Eloheem, Anunnaqi) sent their brother Shu'aib, (also known as Jethro) to the Midianites and he, (Shuaib) said: "Of my kindred! Slave ALLAH, for you have no source, besides Him - The Source, ILLAAH; for indeed, it has come unto you, clear evidence from your Rabb. So therefore, give a full measure and a full weight, and do not diminish for the Enosites, the things which are theirs; and do not cause any mischief in the planet Earth after its reformation; this is better for you all, if you are indeed of the faithful."

86 And do not squat (sit) and wait in the way of all those on the path, threatening and trying

to turn Enosites away from the path, of The Source, ALLAH. (Don't come into the fold of a peaceful environment to turn Enosites out); he who is of the faithful in Him, and seeking only to make the right way crooked; and remember when you were a very little amount and then He, multiplied you; and look and see, how those who cause mischief, meet their end?"

87 And if, there was a party from amongst you all, who have faith by that, in which I, (Muhammad) was sent, and another party of you didn't have any faith; so then wait patiently, until The Source, ALLAH (passes) wisdom between us; and He, is The Best of Al Haakimiyn 'The Wise Ones' (There Is More Than One Al Hakiym).

88 And the (wealthy) rulers said: those who are big-chested, pouting with pride from (amongst Shu'aib's) kindred: "Surely, we will make you leave, O Shu'aib (Jethro), also those who have faith in you, from our village. Or will you turn back to our Millat 'Rites?'" (Shu'aib) said: "Though we have detested (and hated) it."

89 Certainly, we will invent a lie 'Ala 'Upon' The Source, ALLAH if we return to your rites after The Source, ALLAH delivered us from it; and it will not be good for us, to return to it, (your religion) except that is

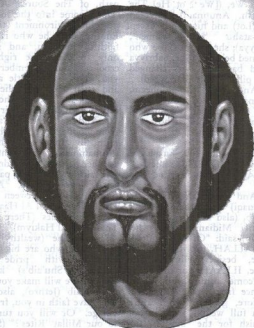


Figure 43
Yethro (Shuaib/Jethro/Yithrow)

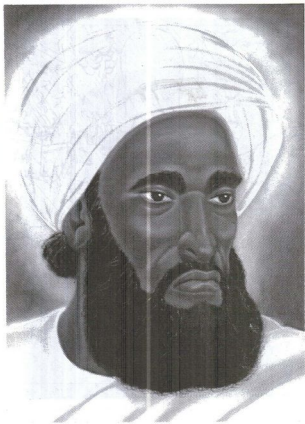


Figure 44
Luwt (Lot), Husband Of Sabriyya

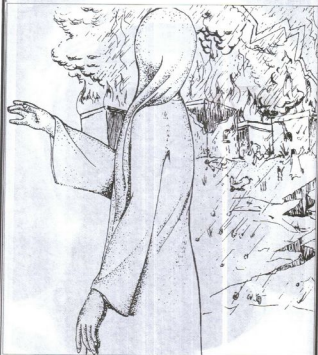


Figure 45
Sabriyya Being Paralyzed

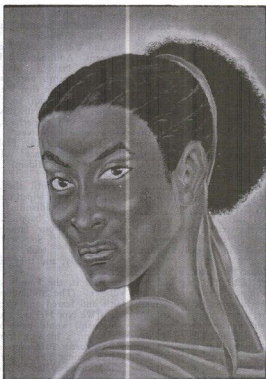


Figure 46
Sabriyya, Wife Of Luwt (Lot)

what ALLAH wants (for us). He is our Rabb and as such is ample, in all knowledge of everything. Upon The Source, ALLAH, we put our trust. He is our Rabb. He opens a way between us, and between our kindred, with the fact (beyond any doubt); and you, The Source is The Best of those, who open ways between Enosites.

90 And (the council) of the Malaa-i 'Rulers' - those who conceal what they know to be the facts of his, (Jethro's/ Shuaib's) kindred, (of Midian) said: "If you all follow Shu'aib (Jethro), then you all will surely, be of Al Khaasiriyn 'The Losers'."

91 So the tremor took control, so they all crouched down in their abode in the early Daytime Hour.

92 Those who lied on Shu'aib, (Jethro) acting if they had not dwelt in it, (the town of Midian) -those who called (Jethro) Shuaib a liar; they are indeed, Al Khaasiriyn 'The Losers'.

93 So he, (Shu'aib) turned away from them, and said: "O my kindred - The (Midianites)! Indeed, it was me who delivered unto you all a message, (his father, Luqman's Book of Wisdom- Kitaab Al Hikma), sent by my Rabb, and gave you all good advice. So how, shall I be sorry for a kindred - the (Midianites), who conceal what

they know to be the facts - (the 19 Books of the prophet Luqman - the Book of Wisdom).

94 And We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) did not send a Nabi, 'Man Of Prophecy,' (Jethro) unto a village - (Midian); except that We, (The Eloheem, Anunnaqi) took their families through distress and adversity; so that perhaps, they will humble themselves."

95 Then We, (the Eloheem) changed the place (of the Enosites of Midian) from disagreeableness to agreeableness, until they, (the Midianites) were wiped out, and they, (the Midianites) said: "Adversity and happiness has just touched our fathers, (of generation)." So We, (the Anunnaqi) took them unexpectedly, and they did not perceive.

96 And if, the Family of the villages - (The Midianites) had faith and feared and trembled; We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) would have opened for them, a blessing from the Skies (Vortex Pathway) and the planet Tiamat 'Earth'; but they, (the Midianites) lied; so We, (the Eloheem, Anunnaqi) took them by way of what, they had earned.

97 Do the family of the villages, have insured the faith, that Our, ([Our Not My] the Eloheem's) punishment will come to them,

as an attack by the Shadow Hour Period, while they are asleep?

98 Or has faith, The Family of the Villages, that Our, (the Eloheems') punishment will come to them, as an attack by the breaking forth of early Daytime Hour - (by Fajr and Zuhr, while they are playing)?

99 Do they have faith, against ALLAH'S plot? So they have no faith, against The Source's plot, none except the kindred who are the losers.

100 Is it not clear to those (Adamites) who inherit the Earth after its (former) residents (the original 13 tribes), that if We, (the Eloheem, Anunnaqi) please, We would afflict them (Adamites), on account of their guilty actions, and stamp (an impression) on their hearts, so they would not hear?

101 These nations: (Egypt/Mizrayim," Noach's Enosites, And The Midianites,) We, (The Eloheem, Anunnaqi) relate upon you, (Muhammad), of its news and indeed their Rusul: (Noach, Abrawhawm Yithrow, Moshch) came to them, (the nations), by way of clear evidences; so they would not have faith in what they denied from before; (those people on earth before Adam) as for that, The Source, ALLAH stamps (an impression- a seal) on the (emotional) hearts, of those who

conceal what they know to be the facts.

102 And We, (the Anunnaqi) did not find for most of them (the Midianites'), 'Ahdin 'Covenant'; and surely We, (the Eloheem, Anunnaqi) found that most of them, verily are transgressors.

The Sending Of The Newsbearer Moshch

103 Then We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) raised (back to life) Ba'dihim 'After Them', (the Midianites), Moshch, with Our signs - (verses of the Torah, 5 Books of Moshch, Aharown And Yehowshuwa), to the Pharaoh (Rameses II) and his rulers; so they became those who became unjust, (by not accepting it, the signs); so look, (Muhammad) how was the end of the mischief makers.

104 And Moshch, said: "O Fir'own (Ramses II) surely, I am a one sent from the Rabb 'Master' of the Known Worlds.

105 It is a fact on me, (Moshch, really), that I do not say, (or tell things), except the facts about ALLAH. I, (Moshch) just came to you, (the Pharaoh, Rameses II) with clear evidence from your Rabb; so send the Banee Israaiyl 'Children of Israel/Jacob' out with me, (from Egypt).

106 He, (the Pharaoh) said: "If you, (Moshch) have come with a

sign - (Al Tawraat : the Torah, 5 Books of Mosheh, Aharown and Yehowshuwa), then come forth with it, if you are of the truthful ones - (Al Saadiqeen Sodoqites)."

107 So then he, (Mosheh) cast his rod, then it clearly, became a Thauban 'Serpent'.

108 And he, withdrew his hand, and then it became Baydaan 'White' (leprous as Caucasians) to the onlookers.

The Pharaoh And His Magicians Were Defeated

109 The rulers of the kindred of Pharaoh (Rameses II) - (the Kemet/Khemites, 'Ancient Egyptians') said: "Surely, this is a knowledgeable magician."

110 He, (Mosheh) wants to drive you, (Israelites) out of your land (Goshen). So what orders do you, (the rulers of Pharaoh Ramses II) give?"

111 They, the Rulers, (chief messengers of Pharaoh), said: "Delay him, (Mosheh) and his brother (Aharown), and send (delegates) into (cities in Egypt), as Haashiriyn 'Delegations'.

112 They, (the delegates) will bring to you all the knowledgeable magicians.

113 And the magicians came to Fir'own 'Pharaoh', (Rameses II), saying: "Surely for us, is a reward, if we are of those who overcome."

114 He, the Pharaoh (Rameses II) said: "Yes and surely, you, (the magicians) are of those who are near to me."

115 They, (the magicians) said: 'Oh Mosheh, either you throw down (your rod), or either we become the throwers (of our rods)."

116 He, (Mosheh) said: "Throw down (your rods), so when they, (the magicians) threw down (their rods), they bewitched the eyes of the Naas 'Enosites' and terrified them, and they came with 'Aziym 'Supreme' magic.

117 And We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent our Wahy 'Inspiration', to Mosheh, saying: 'Cast down your staff, rod.' So when it was done, (the staff was transformed into a snake). Surely it, (the staff of Mosheh) will devour (the rods) that which, they, (the magicians) demonstrated as lies.

118 So the facts was confirmed, and it null what they, (the magicians) had been doing.

119 So they, (the magicians) were defeated (with embarrassment) at this point, and they went back humiliated.

120 And the magicians threw themselves down, Saajidiyn 'Prostrating'.

121 They, (the magicians) said: 'We have faith by way of the Rabb, of all the Known Worlds.

122 The Master, of Mosheh's and Aharown's.

123 The Fir'own (Ramses II) said: "You have faith in Him, even before I have given you all (the magicians), permission? Surely, this is a plot that you, (the magicians) have plotted in the city (of Goshen), in order to drive out its Enosites - (the Israelites). So you will now know, (my Pharaoh's punishment)."

124 I, (Pharaoh Rameses II) shall cut off your, (the magicians) hands and your feet on alternate sides, then I shall Sallebannakum 'Crucify You All', together.

125 They, (the magicians) said: "Surely, to our Rabb will we return.

126 And you do not take revenge on us, except that, we have faith by way of the signs of our Rabb, when they, the signs came to us, O our Rabb, pour out upon us patience and cause us to die as 'Ones Of Peace'.

Pharaoh's Persecution Of The Israelites

127 And the rulers, (chief council) of the Enosites of Pharaoh (Rameses II) said: "Would you leave Mosheh and his kindred to cause mischief in Al Ard 'The Planet Tiamat Earth'- (spread his teachings), and forsake you and your Sources (ALLAHS), AALIHATAKA?" He said: "We

will kill Abnaa-ahum 'All Their Sons' and spare their Enosite women, and we will be overpowering over them, (Israelites)."

128 Mosheh said to his kindred, (the Jacobites/Israelites): "Seek help in ALLAH and have patience, for surely, the planet Earth belongs to The Source, ALLAH. He (He Not We) bestows it, for an inheritance to whom He pleases, of His slaves; and the End, is for those who tremble at the mention.

129 They, (the Israelites) said: "We were persecuted before you, (Mosheh) came to us, (the Israelites), and after you, (Mosheh) have come." He, (Mosheh) said: "Perhaps your Rabb will destroy your enemy and will Yastakhlifakum 'Appoint You, Khalifa - Successors, Left Behind' in the planet Earth - (make you its ruler); so He will see how you will work - (behave)."

Pharaoh's Descendants Persecuted - Plagues Invade Egypt - Israelites Saved

130 And indeed, We, ((We Not He) the Eloheem, Anunnagi) took the Pharaoh, (Rameses' II) descendants (by punishing them), by droughts and diminution of fruits - (famine), perhaps they will remember, (their punishment).

131 So when the good came to them, (Pharaoh and his rulers - the council of elders), they said: "This is for us"; but when they are afflicted (with disagreeableness), they would blame it on Mosheh and those with him - (his followers). Surely, their misfortunes are in the possession of The Source, ALLAH but most of them do not know.

132 And they, (Fir'own 'Pharaoh' and the council of elders) said: "Whatever sign you, (Mosheh) bring to charm us with, we still won't have faith by way of it."

133 So We, (the Eloheem, Anunnaqi) sent upon them (Pharaoh and his Enosites- the ancient Khemites (Mystical Clan) who are the ancient Egyptians) a flood, and the Locusts, and the lice, and the frogs, and the blood. (Their water turned to blood), clearly explained signs; so they were big-chested, pouting with pride, and they were a kindred committing crimes.

134 And when the plague, fell upon them, (Pharaoh and his Enosites), they said: 'O Mosheh (Thutmose I) call upon your Rabb, for us, with whom, made a covenant with you. If you remove the plague from us, we will have faith in you. We will send the Banee Israa'iyi with you.

135 So when, We (the Eloheem, Anunnaqi) removed the plague from them, (Pharaoh and his Enosites Misriy- and the ancient Khemitess Egyptians -Mystical Clan) to give them a term, which they must reach, (to do what they had promised); they temporarily, broke it - (the promise).

136 So We, (the Eloheem, Anunnaqi) took retribution against revenge on them - (the Pharaoh and his messengers- the Council Of Elders), by drowning them in Al Yamm 'The Reed Sea', because they denied Our (Our Not My) signs, and they were negligent about it.

137 And We, ([We Not My] the Eloheem) bestowed upon the weak kindred -(the Israelites/ Jacobites), the inheritance of the planet Earth of the Mashaariq 'Eastern' and Maghaaribahaa 'Its Western Parts', which We, (the Eloheem, Anunnaqi), have blessed into it; and the good words of your Rabb came to pass on the Children of Israel/Jacob, because they were patient and We, (the Anunnaqi) destroyed what Pharaoh (Ramses II), and his kindred - (the ancient Khemites Egyptians - Mystical Clan) had made, and what was Ya'rishuwn 'Constructed' (built).

138 And We, (the Eloheem, Anunnaqi), let the Children Of Israel/Jacob pass over, (part the

waters), the (Reed) Sea; then, they came upon a kindred, who were devoted to their Asnaam 'Idols'. They the Children of Israel said: "O Mosheh, make for us a (ALLAH) deity 'ILAAHAN', a 'Source,' as they have AALIHATUN (ALLAH'S-Deities- Sources)? He, (Mosheh) said: "Surely, you, the (Israelites/ Jacobites) are an ignorant kindred."

139 Surely they, (the associates) will be destroyed, (for their falsehood), and their actions are in vain.

140 He, (Mosheh) said: "Shall I seek for you, (the Children of Jacob/Israel) an (ALLAH) ILAAHAN 'Source' other than The Source, ALLAH while He prefers you, (the Israelites), over the Known Worlds?"

141 And when We, (the Eloheem, Anunnaqi) delivered you from the descendants of the nation of Pharaoh- (the Egyptians), who treats you with a wicked punishment; they kill your sons, and spare your enosite women; and in that, is a trial for you, from your Azeem 'Supreme' Rabb 'Sustainer'.

*Mosheh Given The Law - And
His Request To See The
Source*

142 And We, (the Anunnaqi) promised Mosheh, thirty Shadow Hour Periods, and

completed it with ten (more); so he completed the Forty Shadow Hour Periods - (Mosheh was up on Mount Sinai, for Forty Shadow Hour Periods, where he received the written commandments), appointed by his Rabb; Muwsa 'Mosheh' said to his brother Haaruwn 'Aharown': "Be my successor, "Khaliyfah," in my nation, and act Righteous, and don't follow the path of the mischief makers."

143 And when Mosheh, came to Our, ([Our Not My] the Eloheems') appointment; and his (His Not Our) 'Sustainer' who is Rabb, spoke unto Him. He, (the Eloheem Mosheh), said: "My Rabb, make yourself appear (to me); so that, I will be able to look towards you (Physically)." He ([He Not We] A Yehweh) said: "You will not be able to see Me." But look at the mountain; Fa-ini 'So If, it stands firm in its place, you will see Me. So when his Rabb, who is 'Sustainer,' did Tajallaa 'Manifest' Lil-Jabali 'To The Mountain', and He made it, as dust; and Moshch fell down, fainted, dumb-founded. So when he, (Mosheh) recovered, he said: "Glory be to You, I repent to you, and I am the first of those to be faithful."

144 And He, said: "O Mosheh, surely, I (I Not We) have chosen you, over all the Enosites by way of My Message - (the laws), and by way of My words,

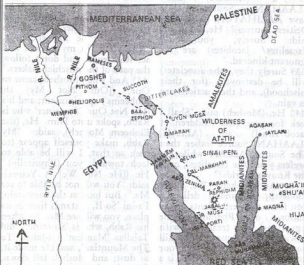


Diagram 8
The Israelites Exodus From Egypt

(commands); so take what I (I Not We) have given you, and be of the grateful ones."

145 And We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) wrote for him, (Mosheh) in Al Alwaah 'The Tablets' from everything - a doctrinal exhortation and details of all things; (warnings, laws, and commandments); so take it, (the Tawraah/Torah) with force and command your, (Mosheh) kindred, to take the best way - (keep the laws of the Torah, its best). I, ([I Not We] The Source) will show you all, the abode of the transgressors; (those Enosites who say the original Torah, is not to be followed).

146 So I (I Not We), will turn those who are arrogant in the planet Tiamat, away from My signs, without the truth (fact beyond any doubt), and if they see all the signs, they will not have faith in it, and if they see the path of the righteous, they won't take it as a path, and if they see the path of transgression they will take it as a path; that is because they denied Our, (the Eloheems') signs and they were negligent about it.

147 And as for those who deny Our, (the Eloheems') signs, and the meeting of the End, their works are futile. Should they be rewarded, except for what they have done?

Worship The Golden Calf

148 And the kindred, (Israelites) after him, made from their ornaments a calf, (after Mosheh went up, into the mountain to pray.) Its body made a mooing sound; could they not see, that surely it, (the Golden Calf, Symbol Of Hathor - The Egyptian Diety) could not speak to them, and it could not calm them to the right path? They, (the Jacobites/Israelites) took it and were of those who are in a state of unjustness."

149 And when they, (the Children of Israel/Jacob), were made to see how, what they made (the Golden Calf) with their own hands - how it made them fall (from the path). Surely, they had indeed gone astray (into error). They, (the Children of Israel/Jacob) said: "If our Rabb, does not yield to us, and forgive us, verily we will be of those overcome by defeat, (the losers)."

150 And when Mosheh returned to his kindred - (the 12 tribes of Israel), he, (Mosheh) became very angry and filled with regret and grief. He, (Mosheh) said: "This is wicked (of the devil), what you have done behind my back, (that you allowed to come into the camp) after I left. So you want the command of your Rabb to come quicker?" And then he, (Mosheh) threw the

tablets - (Two Scrolls, taken from the Enuma Elish and Gilgamesh tablets; each containing five letters) down and he, (Mosheh) took (Aharown), his brother by the head and pulled him to him. He, (Aharown) said: "Son of my mother, (Jochebed) surely, the kindred, (the Jacobites/Israelites) made me become weak and plotted to kill me. So don't allow the enemies to rejoice over my weakness, and don't make me to be of the kindred Zaalimiyn 'Who Are Unjust.'"

Mosheh' Request For Forgiveness - The Israelites Taken By An Earthquake

151 He, (Mosheh) said: "Forgive me and my brother, Aharown and let us enter Rahmatika 'Your Mercy', and You are Most Arham 'Merciful' of Al Raahimiyn 'Those Who Show Mercy'."

152 Surely, those who took the calf, (as a deity), they will receive a wrath from their Rabb, The Sustainer, and abasement in the life of the physical world, and like that We, ((We Not I) the Eloheem Anunnaqi,) reward those who invent (forge)."

153 And for those who do wicked deeds, then repent after it, and have faith; surely, after this, your Rabb is The Most Ghafuwr 'Forgiving', Most

Rahiym 'Merciful'.

154 And when Mosheh was not angry any longer, he took Al Alwaah 'The Tablets'; and in their inscription, (there) is calmness and a Rahmat 'Yielding' (mercy) for all, (the Ishmaelites, Israelites), those who fear their Rabb, The Sustainer.

155 And Mosheh chose his kindred, (the Israelites/Jacobites) of seventy males for Our, (the Eloheems') appointed place; so when the earthquake took them, (the Israelites); he, (Mosheh) said: "My Rabb, had You pleased from before, to destroy them, and me, would You have destroyed us for what the fools amongst us have done?" It was only Your trial. By it, (your trial) you can lead astray into error whom You please, and calm whom You please. You are our Nearest Friend, so forgive us and Arhamnaa 'Have Yeilding (Mercy) On Us'; and you are the best of the ones who forgive. "

156 And you (You Not We) Aktum 'Write' (ALLAH writes) for us, in this physical world the goodness, and at the End of it, surely We, (the Israelites) are calmed to You. He (He Not We), said: "My pain will I (I Not We) inflict with it upon whomsoever I please; and My (My Not Our) mercy extends to all things, so I will Aktubuhaa 'Write It' - (ALLAH writes the

law), for those who tremble at the mention, and those who pay the Zakaat 'Charity', and those who, they are faithful by way of Our, ([Our Not My] the Eloheems') signs. "

Those Who Followed The Illiterate Newsbearer Are The Prosperous Ones

157 Those who follow the Al Rasuwl 'One sent,' (Muhammad), Al Nabiyy 'The Man Of Prophecy,' The Newsbearer,' (Muhammad), Al Ummiyya 'The Illiterate, (the Gentile' who can't read the scriptures from before); whom they can find written 'Indahum 'Amongst Them' in the Torah, the five Books of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown And The Apostle Yehowshuwa), and the Injiyl (Evangel, Revelations of Yashu'a); He commands them of what is good, and what will hinder them of the Unknown, and shall Yuhillu 'Make Lawful' for them, the agreeable things and Yuharrim 'Unlawful' the disagreeable things; and He puts away from them, their burdens and the shackles which were upon them. So those who had faith in him, (Muhammad) and honored him and aided him, and followed Al Nuwr 'The Light' which was Unzila 'Sent Down', (the Qur'aan), with him; these are

the prosperous ones.

158 Tell them this, (Muhammad): "O Enosites surely, I am a Rasuwl 'Apostle' (sent) from ALLAH to you all, to whom belongs the rulership of the Samaawaat 'Skies' (Firmament) and Al Ard 'The Planet Earth'. No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Huwa (HU) 'Him'. He (He Not We) brings about life, and cause it to die; so have faith in The Source, ALLAH and His Rasuwl 'One Sent', Al Nabee 'The Male Of Prophecy' Al Ummiyi 'The Illiterate, (Gentile', who can't read the scriptures and tablets from before); who has faith in ALLAH and His (His Not Our) words, and (you all are to) follow him; that perhaps, you all will be calmed."

The Tribe Of Judah Only Calms By Facts - Eloheem Mosheh Made Twelve Springs Gush Forth - The Israelites Are Tormented By The Eloheem

159 And amongst the kindred of Mosheh, is a Ummatun 'Nation' - (tribe of Al Yahuwd 'Judah,') who calms by the fact, and by it, they deal justly.

160 And We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) divided (the Children of Jacob/Israel) into twelve tribal nations;

(Joseph "He Shall Increase" A Son Of Jacob, Elder Of The Two Born To Him By Rachel: Reuben "Affliction" Eldest Son Of Jacob, By Leah, Simeon "Hearing" Son Of Jacob And Leah, Levi "Attached To The Law" Son Of Jacob And Leah, Judah "Guidance Celebrated" Son Of Jacob And Leah, Issachar "Will Bring Reward" Son Of Jacob And Leah, Zebulun "Habitation" Son Of Jacob And Leah, Benjamin "Son Of My Right Hand" Son Of Jacob And Rachel, Dan "Judge" Son Of Jacob And Bilhah, And Naphtali "My Wrestling Son Of Jacob And Bilhah" Gad "Good Fortune" Son Of Jacob And Zilpah, And Asher "Happy" Son Of Jacob And Zilpah) and when Mosheh' Enosites ask for a drink, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent Our (Our Not My) Weh 'Inspiration' towards (Mosheh), to hit the stone with his (rod), staff and twelve springs gushed forth, (before their eyes); and indeed, each Enosite knew their drinking place and We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) shaded them with clouds and We, (the Eloheem, Anunnaqi) sent down to them Manna (Reishi Mushroom) and Quails (saying) eat of the agreeable things, of which We, (the Eloheem) have provided you, and they did not harm us, (the Eloheem, Anunnaqi) by

rebellling); they only harmed their own selves.

161 And when it was said, to them, (the Israelites/Jacobites): "Reside in this village - (Palestine, in the Land of Canaan), and eat of it, wherever you desire, and they said: "A Remission (for the sins), and enter the gate in prostration; We, (the Eloheem) will forgive you for Khatiyaatikum 'Your Sins'. We, (the Anunnaqi) will increase (the reward), of Al Muhsiniyn 'The Ones Who Does That Which Is Best'."

162 So those who were unjust, amongst them, (the Jacobites - the 70 Pharisees of Israel,) changed a saying, (Towrah to the Talmud), besides that which was spoken to them, (by Mosheh); so We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent upon them a plaque (holocaust), from the Skies for they were unjust.

163 And ask them, about the village that was neighboring the sea; that's when they transgressed in the Sabbath when their fish came, (appeared) to them on the day of their Sabbath, and the day, they did not keep the Sabbath, they did not come to them. Like that, We, (the Eloheem, Anunnaqi) tested them because they were acting impiously."

164 And when a nation from amongst them, said: "Why do

you advise a kindred, whom The Source, ALLAH Muhlikuhum 'Is Destroying Them', or Mu'adh-dhibuhum 'Torment Them' a forceful pain? They said: "An apology to your Master, who is Rabb; that perhaps, they will tremble and fear."

165 So when they forgot what they had been reminded of We, (the Eloheem, Anunnaqi) delivered those who forbade wickedness; and We, (the Anunnaqi) took those who were unjust by way of a severe torment, because they acted impiously.

166 So when they, (the Children of Israel/Jacob) exceeded all bounds in what they had been forbidden, (breaking the Sabbath); We (the Eloheem, Anunnaqi), said to them: "Be monkeys - (Shaggies, regress back to Homo Erectus) driven away, (despised)." The Eloheem test Enosites by agreeable and disagreeable deeds).

167 And when your Rabb 'Master/Sustainer', made known that He would verily raise (to life), send against them to the Day of Resurrection, those whom torment them, with an evil pain; surely your Rabb, Is quick in punishment, and He is Ghafuwr 'Forgiving', Raheem 'Merciful'."

168 And We, (the Eloheem, Anunnaqi) cut, (separated and

scattered) them in the planet Qi, into nations (Jacobites Mix Into All Nations, Jewish). Some of them are perfectionists and some of them are less than that, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) tested them by way of Hasinaat 'Beautiful' deeds and bad deeds; so that, they might return."

169 So succeeded after them, a successor. They inherited the scripture, taking the material things of the low life, and they say: "It will be forgiven us; and if material things come to them, like it, they take it also. Was not the fulfillment of a promise of the scripture taken from them (Jacobites), that they would not say of ALLAH, anything except the truth (facts beyond any doubt), and they Darasuw 'Studied' what is in it; and Al Daar 'The Abode' of the End, is better for those who tremble at the mention. Don't you have any intellect?"

170 And of those who take hold (of, keep) the scripture and keep up Salaat 'Salutation As Worship'; surely We, (The Eloheem, Anunnaqi), don't neglect rewarding the perfectionists."

171 And When We, (The Eloheem, Anunnaqi) raised the mountain above them, as if it were a mere shadow, and they thought that it was falling down upon them; (we said) they hold of what We, (the Anunnaqi)

gave you Bi-Quwwatin 'With Strong (Force)', and remember what is in it, so that you might tremble and fear."

Adam's/Kadmon's Offspring
Will Watch Against Their
Owmselves - Enosites And Jinn
Will Be Prepared For
Jahannam

172 And when your Rabb, took from the backs of the sons of Adam (Zakar), Dhurriyyatahum 'Their Offspring', and made them to watch 'Alaa 'Over' their ownelves; Is it not I (I Not We), your Rabb? They said: "Of course we watch." You will say on the Day of Resurrection; "Surely, we were unaware."

173 Or you should say: "It is but, our fathers who set up Shark 'Associates' from before, and we were offsprings after them; so would you destroy us because of what Al Mubtiluwn 'The Ones Of Falsehood' did?"

174 "And like that, We ([We Not He] the Eloheem), made the signs detailed, so that perhaps they would return."

175 And recite to them, the news of he, whom We, (the Eloheem, Anunnaqi) have given Our (Our Not My) signs; but, he withdraws from it, so he made Al Shaytaan (Samael/Nakhaas, Azaazyf, the Reptilian) follow him, so he was of those who are astray."

176 And if We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) pleased, We would have Rafa'naahu 'Raised Him' thereby; but he leaned towards the ground, and he followed his own desires. So his likeness is like the likeness of the dog (Shaggies); if you are firm to him, he pants; or if you leave him, (ignored); he pants. That is the likeness of the kindred (canaanite) of those who lied about our, (the Eloheems') signs, (verses); so you narrate Al Qasasa 'The Stories', so that perhaps, they would think about it."

177 The worst of examples of the nation are those who lied about Our (the Eloheems') signs, they also were unjust, to their ownelves (The Red Desert Arabs)."

178 Whomsoever, ALLAH calms, so he is of the calmed ones; and whomsoever, he makes to go astray (into error), so these are they, who are the losers."

179 And Indeed We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) have prepared for Jahannam 'Hell,' many who are of the (Malevolent Beings, Cherubeem of) the Jinn, and of Al Insi (Half Human, Half Demon) 'The Enosites'; they have hearts, but do not overstand by way of it, (no soul), and they have eyes but they do not see by way of them, and they have ears, but they do not listen by way of them. They

are just like Al An'aam 'The Cattle' - (Behaymaw, Human Beast); but they are more astray, (in error). These are they who are the unaware."

To Allah Belongs The Best Of Names

180 And for Him (HU), belongs the Best Of Names (ANU, ELYOWN ELYOWN EL, YEHWEH, ADONIA, ADOWN, SHADI, OLAWM, EL ROI, RABB, ALLAH, ALLAH, HASHEM); so you are to call on Him, by using them and you are to avoid those, who deviate from using His Names. They will be punished for what they were doing.

181 And from those which We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) Khalaq 'Created,' there is a kindred who calms by way of the facts, (beyond any doubt - Millatu Ibrahiym)," and by it, (the facts), they deal justly (Nuwaubu)."

182 And of those who deny Our, ([Our Not My] the Eloheems') Signs - (The Torah); We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) will gradually punish them, in a way, they would not know."

183 And I (I Not We) will grant a respite for them, (the pagan, Desert Arabs, and Jews of Muhammad's time). Surely, my plan is (unfailing, firm),

strong."

Muhammad Is Not Of The Malevolent Beings - Jinn

184 Have they, (the Meccans) not think, that their companion, (Muhammad), is of a (Malevolent Being), Jinn. Surely, He is only a clear warner."

185 Didn't they, (the Meccans) see that in the Malakuwt 'Rulership' of the Samawawaat 'Heavens - Firmaments' and the planet Earth, 'Tiamat/Al Ard,' and what The Source, ALLAH Khalaqa 'Created' from Shay-in 'Things'? And that may be, that their fate, (death), will certainly be near. So tell me in what Hadiyth 'Tale' will they, the fools, have faith in, after it - (the Qur'aan)?"

They Will Ask You, Muhammad About The Hour

186 Whomsoever The Source, ALLAH leads astray (into error), so there is not a calmness for him; and avoid them in their rebelliousness; they blindly, wander astray."

187 They ask you, (Muhammad) about the hour, when will be its time; tell them this, (Muhammad): "Surely, the knowledge of it, is with my Sustainer. None shall manifest it, it is with my Master, who is

Rabb. None shall manifest it, as its time, except He (He Not We). Heavy shall it be, in the Skies, and the planet Earth; it will not come to you, except of a sudden. They Ask you, (Muhammad) as though you, (Muhammad) are well acquainted with it. Tell them this (Muhammad): "Surely, its knowledge is with The Source, ALLAH but most Naas, Enosites, don't know that fact."

Muhammad Does Not Have
The Power To Benefit Or
Harm You - He Is Only A
Warner

188 Tell them this, (Muhammad), I do not have the power, (possess) for myself, any benefits, nor harms, except that which ALLAH pleases; and if, I knew about Al Ghayb 'The Unseen', verily I would have asked for the goodness, to be multiplied, and that Al Suwa-u 'The Evil' will not touch me; for I am only a warner, and a bearer of good news, to a Qawm 'Kindred' (to his own kindred) who are faithful."

189 It is (A YAHUWA Called Enqi Named Nudimmud) who Khalaqakum 'Created You All' (More Than One) from Waahidatin 'One' Nafs 'Person female (Ninti)', and He made Minhaa 'From Her' (Ninti), Zawjahaa 'Her' Mate' (Eve/Nekaybaw, another female);

to dwell towards it (the enclosed garden of delight), for a resting place, so when he, (Adam - the Enosite male), mates with her, (Enosite females), she carries a light burden, (pain); so it passes by way of it, - (the pleasure). So when it grows heavy, (the climax); they prayed to ALLAH their Rabb; and when We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) give them, a perfect being, (child); then we are to be forever thankful."

Those Who Associate Partners
With The Source, Will Not
Have Any Aid

190 So when He (He Not We) gave them two (Adam And Hawwah) a perfect thing, (Seth) they made to Him partners in what He had given them; but Most 'Aala 'Exalted' is ALLAH above what they associate with Him."

191 What they associate, (partners) with him (HU - the creative force of will), is that which does not Khalaq 'Create' anything, and they themselves- (Anunnaqi) are created (the Eloheem Anunnaqi were also created)."

192 They will not be able to have for them, any aid, and neither can they aid themselves."

193 And if you call them, to the calmness, they will not follow you; it's the same for you,

whether you call them, or you keep your silence."

194 Surely, those who call upon, other than The Source, ALLAH, you are like slaves; so call upon them, and they will answer you, if you are Saadiqeen 'Truthful, Sodoqites/Zodoqites'."

195 Do they have feet, they walk by using them? Or do they have hands, they attack by using them? Or do they have eyes, they see by using them? Or do they have ears, they hear by using them? Tell them this, (Muhammad): "Call upon your associating partners; then plot against me, will you not look upon me?"

196 Surely, my nearest friend is The Source, ALLAH who sent down the scripture, (the Qur'aan From Above), and he Yatawalla 'Becomes The Near Friend' of those who perfect their beings (themselves)."

197 And those who you call upon, other than Him, will not be able to aid you, and they will not be able to aid themselves."

198 And if you call them, towards the calmness, they can not hear, and you see them looking towards you, and they can not see."

199 Take the forgiveness and the command of the kindness; and turn away from the Ignorant Ones."

Seek Protection In Allah

From The Disagreeable
Suggestion Of Al Khannaas

200 And whenever, Satan (the Reptilian, Al Khannaas/ Samael/Haylal Son Of Shakhar) suggests a wicked suggestion to you; so seek protection, in ALLAH. Surely, He is Samiy 'Hearing', Aliym 'Knowing'."

201 Surely, those who tremble at the mention, when a part (there is more than one Satan group) of Al Shaytaan, 'Satans, the Reptilians' touches (afflict) them; they will remember, so then, they are the ones who see."

202 And their brothers extend them into Al Ghayyi 'The State Of Error'; then they will not be able to desist."

203 And when you, (Muhammad) don't come with verses for them; they, (the Meccans) say: "Why have you not chosen it - (the verses, that they want to hear from Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi)?" Tell them, this (Muhammad): "Surely, what I follow, is only what has been inspired to me - the inner sights, are from my Sustainer, who is Rabb, and a yielding (mercy), for a kindred who have faith."

204 And when (the Reading), "Qur'aan," is read to them, so listen to it, attentively; so that perhaps, you all may receive a yielding (mercy)."

205 And remember your

'Sustainer', Rabb in yourself, humbly, and with reverence, and without Jahr 'Loudness' when you speak (teach) in the Early Daytime Hours, and Through The Shadow Hour Periods, and don't be of Al Ghaafilayn 'The Neglectful Ones'."

206 Surely, those who are in the possession of your Rabb, do not become big-chested, pouting with pride, for slaving for Him, and they glorify Him; and they prostrate before Him."

Sudlqa Allahu El Azim

Chapter Fourty

Revealed In The Year 619 A.D.

Al Jinn
(The Hidden Ones,
Disagreeable, Malevolent
Beings)

Original Order Chapter 40;
Wrong Order Chapter 72

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Muhammad Was Inspired That
A Group Of Jinn Have Heard
An Amazing Qur'aan - It
Calmed Them. So They Won't
Bind Partners With The Rabb
- He Is The Most High, ANU
- The Jews Used To Utter
Shatat Against Allah - The
Eloheem Thought That The

Cherubeem Didn't Utter
Blasphemies Against The
Source - There Are Mortals
From The Enosites And
Mortals From The Jinn - They
Thought The Source Wouldn't
Raise Anyone - The Skies
Were Filled With Strong
Haras - Light Beams Will
Come To Those Who Attempt
To Listen - The Jinns Admit
They Don't Perceive If
Wickedness Is Attempted By
The Zakarites

40 (Gabriel is speaking) O
(Muhammad) tell them this: "I
have been inspired that A Nafar
'Company', of the Jinn,
(Malevolent Disagreeable Beings,
(Cherubeems) listened, and they,
(the Malevolent Beings,
Cherubeems - the Jinns) Said:
Surely We have heard an
amazing reading (the
Qur'aan)."

2) Calmness leads to the right
direction, so we (Malevolent
Beings, Cherubeems - the Jinns)
have faith in it, (the Qur'aan)
and we, (the Malevolent Beings,
Cherubeems - the Jinns) will not
associate partners with you, oh
Our Rabb 'Sustainer', you are
alone.

3) And surely, He (He Not We)
is the Ta'alaa 'Most High'
(ANU, The Majestic, our
'Master'), who is Rabb, and He
has not taken unto himself A

Saahibah 'Companion,' (Girlfreind), and not a Walad, 'Son By Birth.'

4) And surely a (nation of) fools, (Jews) from amongst us, used to utter Shatat 'Blasphemies,' about The Source, ALLAH.

5) And surely, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) thought that the Enosites and the Jinns (Malevolent Beings, Cherubeems) did not utter blasphemous lies about The Source, ALLAH.

6) And surely, they were Rijaal, 'Mortal Men' from amongst Enosites, whom sought refuge with Mortal Men who are from amongst the (Human) Jinns (Malevolent Beings, Cherubeems). So they increased in their Rahaq, 'Oppression.'

7) And surely they thought, as all of you thought, that The Source, ALLAH would not raise (to life) Ahad, 'Anyone.'

8) And surely we sought to touch the Samaa'a 'Skies', so we discovered it to be filled with forceful Haras 'Guards'- (the Malevolent Beings, Cherubeems, the Jinns) and beings of light attacking (Benevolent beings, Serapheem).

9) And surely we, (the Malevolent Enosites - Of The Jinn Enosites) used to squat in the squatting places in order to listen; so as for him who attempts to listen, now he will find a Shihaab, 'Flaming Beam'

coming at him.

10) And surely we, (the Malevolent Beings, Cherubeems - the Jinns) don't perceive if wickedness is intended by those in the planet Earth, ('Qi' Adamites/Zakarites), or whether their Rabb 'Master,' intends to direct them rightly.

The Serapheem Are Perfectionists - The Eloheem Thought That The War In The Skies Was Over - He Who Has Faith In His Rabb Has No Fear For A Loss - There Are Peacemakers And Unjust Ones Amongst The Anunnaqi - The Unjust Ones Will Be Hatab For Jahannam - If The Meccans Stay Upright, They Will Be Given Abundant Water. From The Eloheem - Whoever Disregards The Test, Will Have A Severe 'Agaab - The Masaajid Are For Allah Alone - When Abram Called Out To His Rabb, Nimrod's Enosites Almost Stifled Him - Arawhawm Said, 'He Doesn't Associate Any With Allah

11) And surely from us, (the Benevolent Beings, Serapheems) are Al Saalihawn 'The Ones Who Perfect Themselves,' - and those who are other than that, (the Malevolent Beings, Cherubeems - the Jinn). We, (Serapheems and Cherubeems)

have Qidad, 'Many Ways.'

12) And surely We, (the Eloheem, Anunnaqi) thought it over, (the war between the Eloheem, Anunnaqis in the Skies), and we, (the Malevolent Beings, Cherubeems) won't escape The Source, ALLAH in Al Ard 'the planet Tiamat/Qi 'Earth' - (200 fallen Malevolent Eloheem, Anunnaqis), nor will we, (the Malevolent Beings, Cherubeems) escape Him, by fleeing from Him.

13) And surely when we, (the Malevolent Beings, Cherubeems) heard the calmness, (the Qur'aan), we had faith in it; thus, whoever has total faith in his Rabb 'Sustainer,' he has no fear of a Bakhs, 'Loss,' nor of oppression.

14) And surely there are some from amongst us, (the Eloheem, Anunnaqi) who are peacemakers, (the Benevolent Beings - Serapheems), and also from amongst Us there are the unjust, (the Malevolent Beings - the Cherubeems); but as for those who surrender in peace, these are those of you, (Enosites), who seek the right direction.

15) And as for the Qaasituwn, 'Unjust Ones,' (The Ones Who Swerve From Justice) they will be the Hatab 'Fuel' of Jahannam 'Purgatory.'

16) And if they, (the Meccans) stray upright on the way (the pathway); We, ([We Not He]

Eloheem, Anunnaqi) will give them drinking water abundantly.

17) For they will be tested in it, and whosoever disregards it and is neglectful about remembering his Rabb, he will make them undergo a severe Azaab 'Pain.'

18) And surely the Masaajid, 'Places Of Prostration' are for The Source 'ALLAH' Alone; so don't call out to anyone, (in conjunction) with ALLAH.

19) And surely when the 'Abd, 'Slave' of ALLAH, (Abrawhawm) stood (rose) up he, (Abrawhawm) called out unto Him, (The Source); then, they, (Nimrod's Enosites) surrounded him almost stifling him, (Abrawhawm).

20) Tell them this: "Surely, 'I only Ad'u 'call out,' to my Rabb, and I do not associate anything with Him.

Muhammad Says, 'He Can't Harm Or Calm You' - He Doesn't Find Any Protection, Except In Allah - It Is A Balagh From Allah - They Will See Who Is The Weak Aider - The Source Is The Knower Of The Unseen - The Source Will Make A Guard Pass Between His Hands, For Those Who Choose From His Ones Sent - The Source Is Aware Of What Is In Their Possession - And Takes Account Of Everything

21) Tell them this, (Muhammad): 'Surely I, myself don't possess in my power the rulership over you, and can't harm or rightly direct you. (Ahmad has no power except from The Source).

22) Tell them this, (Ahmad): 'Surely I, (Muhammad) will not find protection from anyone, besides The Source, ALLAH; and I will not find a place of refuge except in Him.

23) It is nothing, except a Balaagh 'Propagation Of Facts' from The Source, ALLAH and His Risaalaat 'Messages', and whoever disobeys ALLAH and the 'One Sent' by Him, (His Rasuwl), surely for them is the fire of Jahannam 'Purgatory'; in it, they will reside eternally.

24) Until they see what it all adds up to, so they shall learn who is a Ad'af 'Weak' aider and has less in 'Adad, 'Amounts.'

25) Tell them this, (Muhammad): 'If I could but perceive whether Aqaariyb 'It Is Near,' to what it all adds up to be, or if He, my Rabb, is making for it a lengthy term.

26) 'Aalim 'Knower' of Al Ghayb 'The Unseen Things,' thus He, does not manifest the hidden things, that are His, to anyone.

27) Except for He, Whom Artadaa 'Chooses,' from the Ones Sent by Him, His Rasuwl; so surely, he makes to pass from

between Yadayhe 'His Hands,' and from Khalfihi 'Behind Him' a Rasad, 'An Ambush.'

28) For him to know that indeed they, (the newsharers, prophets) delivered the messages of their Rabb, who is 'Sustainer/Master' and He, is fully aware of all that is in their possession - (his newsharers) and he, takes account of Shay 'Everything'.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Fourty-One

Revealed In The Year 617 A.D. Except For Verse

43

Yaa Siyn

(Yaa: Oh, Siyn: Secret)

Original Order Chapter 41:

Wrong Order Chapter 36

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Oh Secret - The Qur'aan Is
Wise - Ahmad Is Of The
Mursaliyn - The Qur'aan Is
Sent To Warn A Nation -
The Eloheem Will Make Those
Other Than Abrawhawm
Seeds, 'Necks Chained. As If
They Are Oxens With Chains
Reaching Up
To Their Chins - The Eloheem
Made Before Them A Sadd
And Behind

*Them Too - The Eloheem
Gives Life To The Dead*

41 (س) Oh secret!
2) And Al Hakiym 'The Wise'
Qur'aan.

3) Surely you (Muhammad, who is also known as Makhmuwd/Ahmad) are of Al Mursaliyn 'The Ones Who Are Sent'.

4) On a narrow path of the ones who stand up straight.

5) It is Tanziyl 'Sent Down' from Al Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Most Merciful'.

6) To warn a Qawmaan 'Kindred' (his own kindred) as Abaa-uhum 'Their Fathers' were not warned, (who was not of Abrawhawm's seed), so they were neglected.

7) Indeed the saying on many of them, (pale desert arabs - the multitude) is a fact (beyond doubt), so they don't Yuw'minuwn 'Have Any Faith'.

8) Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made chains for their necks - (they will have to be lead to the facts like an oxen), so that it is right up to their chins; so that they (those not of Abrawhawm's seed) have to keep their head up (in faith).

9) And We (Eloheem Anunnaqi) have to set before their hands a Barrier, 'Sadd' and behind them a barrier, and We over-covered them, so that they do not see.

10) And it is alike to them, if you warn them or do not warn them, for they will not have faith.

11) Surely, you can warn him who follows Al Dhikr 'the Remembrance', and dreads Al Rahman 'The Yielder' by way of Al Ghayb 'The Unseen'; so you are to bear to him the good news of forgiveness and a generous reward.

12) Surely We (We Not He) give life to the dead, and We Naktub 'Write Down' that which they have sent before them; and even their footprints which they leave behind them: and everything, We (We Not He) have confined into a manifesting Imam, (Al Mahdi) 'One Who Is Put Up Front'.

13) And strike forth for them the likeness of the companions of a village when our Mursaliyn 'Ones Sent' came unto it.

*Eloheem Sent Two Rusul
From Amongst Them. And
Strengthened Them With A
Third One - The Enosites
Said, 'They Are Nothing But
Mortal In Skin' - The Rusul
Foretell Evil And Pain For
Them - A Man From The
Farthest End Of The
Madiynah Warns Them To
Follow The Rusul -*

*He Asks Them,
'Should He Take Aalihah
Besides Allah?'*

14) When We (We Not He) sent unto them, two of Our Rusul 'Ones Sent' (Angelic Beings - Eloheem Anunnaqis: Azar, Azayil), so they lied on them both, then We strengthened the two with a Thaalith 'Third One (Azaya)', from Us (Us Not Me) and they said (to the Enosites): "Surely We are Ones Sent to you all (We are the Eloheem Anunnaqi, Angelic Beings)."

15) They said: "what are you all, but Mortal in skin like us, nor has The Rahman, who is The 'Yielder' sent down anything. You all are only lying".

16) They said: Rabbana "Our Sustainer", knows that we are surely Ones Sent unto you."

17) And on us is nothing (to do), except the clear propogation of the facts.

18) They said: "Surely we Tatayyarnaa 'Foretell Ill' Bikum 'By You All', if you do not desist, we will La-Nar-juman-nakum 'Verily Stone You All', and an aching pain from us shall afflict you.

19) They said: "Your foretelling of ill, is with yourselves; when you are reminded? In fact, you are an exceedingly, transgressing kindred.

20) And a Rajlun 'Mortal Man' came running from the farthest part of the Madiynah 'City' and said: "O my kindred! You are to follow the Ones Sent.

21) You are to follow those who

do not ask you for any reward, and they are leaded to calmness.

22) And it is not for me to slave for He (He Not We) who created me; and you all are to return unto Him?

23) Should I take from besides Him, (ALLAHS) AALIHAT, 'Sources,' if the Rahman, desires harm for me? Their intercession can't avail anything for me, nor can it save me.

If He Does Takes Other Sources, He Will Be Clearly Astray - He Is Going To Enter Al Jannat - The Eloheem Didn't Send Any More Ones Sent After Him - They Were Struck Dead - They Will Be Brought Forth In The Anunnays' Possession -

24) Surely I, if I did, verily I was clearly astray (into error).

25) Surely I have faith in your Rabb 'Sustainer', so listen to me!

26) It was said: "You are to enter the Jannat 'Garden.'" He said: "Only if my kindred only knew."

27) Of that which He, my Rabb has forgiven me, and He has made me of the Mukramiyn, 'Generous Ones.'

28) And We, ([We Not I] Eloheem) did not send down on his Qawm, 'Kindred' from after him any armies from The Skies (Anunnaqis From Other Planets Beyond This Sun), And We were

not Munziliyn 'Ones Sent Down' (Some Are Born Here).

29) Surely there was except one Sayhat 'Loud Cry', so (as) if they were struck dead.

30) Oh grief on the slaves that which is to come to them from the Rasuwl 'One Sent' except they were ridiculing him.

31) Didn't they see how We (Eloheem Anunnaqi) have destroyed Al Quruwn 'The Generations' from before them? Surely, they will not return unto them.

32) And if all will be gathered together, they are brought forth in Our (Our Not My) possession.

*Life Given To The Dead Ard,
By The Eloheem - They Made
In It, Jannaat Of Palms And
Grapes And Sources Of Water*

*- Glory Be To He Who
Created The Mates -*

*Eloheem Remove Daylight As
A Sign - From The Shadow*

*Hour - The Sun Has An
Appointed Term - And The*

*Qamar Has Phases - It Is Not
Possible For The Sun And*

*The Moon To Be Seen
Together - Their Offspring*

*Will Be Carried In A Craft -
Eloheem Can Drown Them If*

*He Pleases - They Turned
Away From The Signs Of*

*Their Rabb - They Don't
Want To Share Willingly Of*

*That Which The Source Has
Provided Them*

33) And a sign for them the dead planet Earth, (Qi, also called Tiamat and Al Ard), We, ([We Not He] The Anunnaqi, Eloheem) revived it (remove the black dust cloud); and We (We Not I) brought forth from it Habbaan 'Seed', so from it, they can eat.

34) And We ([We Not I] Anunnaqi, Eloheem Ashnan) made in it, Jannaat 'Gardens' from Nakhiylin 'Palms' and A'anaabin 'Grapes' and We (Eloheem Anunnaqi) gushed forth in it from sources of water, 'springs.'

35) For that they eat from its fruit which their hands did not make. So they will not be grateful?"

36) Glory be to He (A Yahweh Enqi named Nudimmud) who created Al Azwaaj 'The Mates' (Zakar And Nekaybaw) for all of them, of that which Al Ard 'the planet Qi/Tiamat, Earth' brings forth, and from that which they, themselves don't know."

37) A sign for them, is that We (Eloheem Anunnaqi) remove the Daylight from the Shadow Hour Period and they are Mudhlimuwn 'Ones Left In Error' (black dust cloud blocking the sun).

38) And the Shams 'Sun', has an appointed term which is determined by Al 'Aziyz 'The Mighty' (365 Day Orbit).

39) And the Qamar 'Moon', We

determined for it phases, until it becomes as an old dry stalk bent, ('like a crescent' - 29 1/2 to 30 days).

40) It is not possible for the Sun and the Moon to catch up with each other (and be seen together), nor the Layl, 'Shadow Hour Period' to precede Al Nahaar 'The Day', and each is in (its own) orbit, (in His glorious sphere. You can't have a solar and lunar eclipse).

41) And a sign for them, is that We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) held Dhurriyyatahum 'Their Offspring' in the loaded Fulk 'Craft'.

42) And We (We Not He -Eloheem Anunnaqi) Khalaqnaa 'Created' for them, from its likeness (other crafts), that which they will ride.

43) And surely, We (We Not He -Eloheem Anunnaqi) will drown them, if We please; so there will be no screaming for them and they will not be saved.

44) Except a Rahmatan 'Yielding' (mercy) from Us (Us Not My) and a temporary provision for a time.

45) And when it was said to them, "Tremble and fear, that which is between your hands and that which is in back of you, perhaps for you; you will be Tarhamuwn 'Shown A Yielding' (mercy).

46) And a sign didn't come to

them from the signs of their Rabb, who is 'Sustainer,' except they were ones who have turned away from it.

47) And when it was said to them, you share willingly from that which The Source, ALLAH has provided you. Those who concealed that which they knew to be facts said to those who are faithful: "We only feed whom, ALLAH pleases to feed. Surely, you all are clearly straying into error.

48) And they say, "When is this promise, surely if you were Sodoqites/Saadiqiyn 'Truthful.'

49) They don't look, except a single, loud cry which overtook them and they are disputing.

50) So they will not be able to make a recommendation, and they will not be returning to Ahlihim 'Their Family'.

*Eloheem Raphael Will Blow
In The Trumpet (Shofer) - A
Person, 'Nafs' Will Not Be In
A State Of Unjustice For
Anything - Companions Of The
Garden Will Have Joy On
That Day - They
Will Have Shadows, And
Fruits - And That Which
They Call Upon, For - They
Will Set Themselves Apart
From The Guilty Ones -
Children Of
Kadmon/Zakar/Adam Don't
Slave For Hayfal Bar
Shakhar - You Are To Slave*

For Allah-

51) And he, (the Eloheem, Anunnaqi Raphael) blew in the trumpet (shofar), so they will be hastening to their Rabb from the sepulchre (graves).

52) They said: "Curse be to us from who raise us (back to life) from our bed, this is that which Al Rahmaan 'The Yields' promised, and Al Mursaluwn 'The Ones Sent' Sadaqa 'Spoke' Truthfully'."

53) In 'That' Kaanat 'Was' except a single loud cry; so if they are all together, We will have in our presence, the ones who will come.

54) So on that day a Nafs 'Enosites', will not be in a state of unjustness for anything and you will not be rewarded except for that which you have knowledge of.

55) Surely the companions of the Jannat, 'Garden', on that day will have joy in what they do.

56) They and Azwaajahum 'Their Mates' will be in Zilaal 'Shadows', relaxing on the reclining couches (in a craft).

57) For them, in it will be Faakihat 'Fruits' and for them will be that whichever they call upon.

58) Salaam, 'Peace Be Upon,' is a saying from a Merciful Rabb, who is 'Sustainer/Master.'

59) And you set yourselves apart today, Oh you those who

commit crimes (guilty ones).

60) Did I, not make a 'Ahad 'Covenant' with you all Oh Banee Adam 'Adamites, (children of Adam also known as Kadmonites),' that you are not to slave (serve) Al Shaytaan 'Satan' (The Reptilian, son of Shakhar and Mylitta; who is also known as Ibliys, Nakhsh, Al Khannaas). Surely he is a clear enemy Lakum 'For You'.

61) And that you are to A'abuduwniy 'Slave Me' (Me Not Us). This is a narrow path of the Ones Who Stand Up Straight.

62) And indeed he, (Ibliys) led astray (into error), from you a whole multitude (Disagreeable Anunnaqi). So didn't you comprehend?

63) This is the Jahannam 'Hell/Purgatory' which you were promised.

On That Day, Those Who Concealed That Which They Knew To Be The Facts Will Be Cast Into It - Eloheem Will Seal Their Mouths And Their Hands And Legs Will Speak To Us - Whomever. The Eloheem Grant A Long Life, They Lower Them In The Khalaq - Muhammad Wasn't Taught Poetry By The Anunnaqi - Muhammad Is To Warn The Lying

64) Cast into it, the day with that which you were concealing what you knew to be the facts.

65) The day Nakhtim 'We Will Seal' on their mouths; and their hands will speak to us and their legs will watch that which they were to earn.

66) And if We (We Not He) please, to make ourselves lusterless on their eyes, so they run to the narrow path so surely, how will they see?

67) And if We, (Anunnaqi), please to make them transform on their places, so what can they do (when they are) departing; and they will not be able to return?

68) And whom, We (We Not He) grant a long life, We lower him in the Khalaq 'Creation'; (Regress Them From Deity To Homo Erectus), so do not they have any intelligence?

69) And We (We Not He) have not taught him, (Muhammad), Al Shi'ra 'The Poetry', and it's not desirable for him, (Muhammad. Ahmad is not to recite poetry), surely it is nothing except a Dhikrun 'Reminder' and a Mubiyn 'Clear' (Reading) Qur'aan.

70) For he has to warn who was living and make the saying truthful on the ones who conceal that which they knew to be the facts.

Enosites Were Created By

*The Eloheems' Own Hands -
They Were Given Dominion
Over The Cattle And Creatures
Of Qi - Cattle Were Humbled
To Them - They Took
Besides Allah, Other Sources -
The Likeness Of The Creation
- The Source Is Knowing
With All Creation - He Made
The Fire From The Green
Tree - Yahuwa Yehweh Is
The Creator Knower - 'If He
Wants A Thing To Come Into
Existence, He Only Has To
Say To It, 'Exist' - His Hand
Is The Mulk Of All Things -
You All Will Return To Him*

71) Or don't they see that surely, We (We Not He) Khalaqnaa 'Created' Lahum 'For Them' Mimmmaa 'From What' Aydiynaa 'Our (Our Not My) Hands' 'Amilat' 'Worked', - cattle, so they Maalikun 'Are Rulers' Lahaa 'For It? (We (We Not He) gave them dominions, 'made them rulers' over all creatures of the planet Qi/Earth.)

72) And We (We Not He) humbled them, (the cattle) for them; so from them, they are to ride and from them they eat.

73) And for them in it are benefits and drinks so will they not be grateful?

74) And they have taken from besides The Source, ALLAH, AALIHAAT (ALLAHS) 'Sources' perhaps they might be

aided.

75) They will not be able to receive their aid, and for them is a Gundun 'Army', that will be brought in their possession (coming of Nibiru).

76) So don't grieve about their saying. Surely We know that which they do in secret and that which they make known.

77) Or Al Insaan 'The Enosite' does not see, surely We (We Not He) created him from a Nutfah 'Life-Germ, Sperm' so then, he's a clear Khasiym 'Opponent' (Cloned)?

78) And he struck a likeness for us, and he forgot Khalqahu 'His Creation', he said: "Who gives life to the bones and they are decayed (took from rib bone blood to clone):"

79) Say: "He, gives life to them which He created (brought into existance), for the first time, and He is Knowing with all creations (then clone).

80) It is He who made for you naar 'fire', from Al Shagari Al Akhdar 'The Green Tree', so that you can kindle from it.

81) Or was not He (He Not We) who created the Samawaat 'The Skies and the Qi/Tiamat', Al Ard, that He's able to create like them (other life in the universe)? Yes indeed, and in fact, He, is Al Khalaq 'The Creator', Al 'Aliym 'The Knower'.

82) Surely what Amruhu 'His (His Not Our) Command' is,

when he wants a thing is to say for it, "To Exist," and into existance it comes.

83) So glory be to Him (Him Not We); by way of His (His Not Our) hand is the Mulk, 'Rulership' of all things and you will return to Him (Him Not Us).

Sudika Allahu El Azim

Chapter Forty-Two

Revealed In The Year 616-617 A.D.

Al Furqaan

(The Differentiation)

Original Order Chapter 42;

Wrong Order Chapter 25

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Blessed Is Allah, Who Sent
Down Al Furqaan - He Has
Not Taken A Walad -
Concealers Of The Facts
Say That Muhammad
Invented The Qur'aan, They
Only Produced False Claims.
Or Say It Is Fables Of The
Eloheem, Dancer*

42 Blessed is He (He Not Us), who sent down the Furqaan 'Differentiation' (the Qur'aan) 'Alaaa 'Upon' His slave, (Muhammad), to be a warning

Lil-'Aalamiyn 'To The Known Worlds'.

2) To Him (Him Not Us), belongs the Mulk 'Rulership' of the Skies and the planet Tiamat 'Earth' and He (He Not We) has not taken a Walad 'Paternal Son', and there doesn't exist for Him any Shirk 'Associating Partner' in the rulership; And He it is who Khalaq 'Created' and measured everything with an accurate measurement.

3) And they have taken besides The Source, (ALLAH) AALIHAAT (ALLAHS) 'Sources' that didn't create anything; they themselves (the ALLAHS) were created. And they possess for themselves benefit or harm, which may come upon them. They don't control death, nor life, nor the raising after death (Anunnaqi Eloheem).

4) And those who are concealers of the facts, say: "Surely this, (the Qur'aan) is nothing but a lie, which he, (Muhammad) invented and he had help in it from other Qawm, 'Kindred.' So indeed they have only produced unjustness and false claims.

5) And they say: "If these are only fables of Al Awwaliyn 'The Ancient',- (the Eloheem, Dinneer, the 24 Elders) which he has written down, so that she, (Haliyma) Dictated Unto Him, (Muhammad, every) early

daytime hour and through the shadow hour period; (stories which he was told as a child by his wet mother).

*The Source, Allah Has Sent
The Qur'aan Down - Meccans
Question Muhammad, About
Him Being A Rasuwl -
Eloheem Prepared A Fire,
For Those Who Denied By
The Hour*

6) Tell them this, (Muhammad): He, has sent it, (the Qur'aan) down. He knows Al Sirra 'The Secrets' in the Skies and the planet Qi. Surely He, is ever Ghafur 'Forgiving', Most Rahiym 'Merciful'.

7) And they, (Meccans) say: "What is this, kind of Rasuwl, 'One Sent,' (Muhammad)? He eats Al Ta'aam, 'Food' and he walks through the Al Aswaaq 'Street Markets'; and why was not a Messenger - (An Eloheem, Anunnaqi, sent down with him), so a Naziyr, 'Warner' will exist, 'be' with him?"

8) Or if He, (Ahmad), were given a great treasure, or does he have a great Jannat 'Garden' in which to eat? So the unjust said (to Muhammad's companions): "You are following a bewitched, Rajlan 'Mortal Men'."

9) Look how they struck for you, (Oh Muhammad) the likenesses, so they went astray (into error), so they can't be able

to find a Sabiy! 'Path.'

10) Tabaaraka 'Blessed' is He (He Not We), who, if He pleases, made for you Khayrun 'Goodness' from that of the Gardens, rivers flowing from beneath them, and He makes palaces for you (Tigris and Euphrates river).

11) In fact, they denied by the hour and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have prepared (a flaming fire) for those who denied by the hour (Cherubeem with flaming sword to block the gates of the enclosed garden).

12) When it sees them from a far place, they will hear its raging anger and roaring flames.

13) And when they will be thrown bounded together into a narrow place from it; they called upon destruction there.

14) Don't call upon, (pray) for one day of destruction, but call upon (pray) for many destructions.

*Jannat Promised For Those
Who Fear And Tremble At
The Mentioning
Of The Source - Questioning
By The Source, For Those
Who Were Lead Astray Into
Error*

15) Tell them this, (Muhammad): "Is that better or the Jannat, 'Garden' of eternity which was promised for the ones

who fear and tremble at the mentioning. It will be a reward and destination for them (to re-enter the enclosed garden).

16) For them, in it will be that which they please, eternally (they wont be put out again). It's a promise asked about, on your Rabb, who is 'Sustainer.'

17) And that day, He, will assemble them and that which they slave for, from besides The Source, ALLAH. So he will say: "Was it, you who caused these, My slaves to go astray into error? (Adam, Hawwah, Cain) Or did they, themselves stray (into error) from the path?"

18) They will say: "Glory be to You. It was not proper, (fit) for us that we take from besides You, (ALLAH) from near friends; (Ibliys) and You provided a temporary provision for them and their forefathers, (the enclosed garden of delight) until they forgot the Dhikr 'Remembrance,' and they were a kindred (of Adamites) uncultivated leading to nothing.

19) Indeed they will deny you, of that which you all were saying, so you can't be able to avert, nor aid; and whosoever from you, puts one self in a state of unjustness, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will make him taste a great pain.

*Muhammad Told, That Some
Of The Ones Sent Were Made*

*As A Test For Others' -
Those Who Don't Hope To
Return To Their Rabb, They
Want To See The Holy Ghost
Or Their Rabb - They Will
See The Dinneer Sitting
Around The Throne*

20) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send from before you, (Ahmad), Al Mursaliyn 'the Ones Sent,' except if they were to eat food, and walk in the markets (they are physical); and We, (Eloheem, Anunnaqi) made some of you, as a means of testing for others. Do not you all have patience, and your Rabb, 'Sustainer/Master' is a Seer?"

21) And those who don't hope for the meeting (Day of Resurrection) say: "Why have Al Malaa-ikah 'The Angelic Messengers,' - (Eloheem, Anunnaqi) not sent down upon us, (the Holy Ghost, Etherians) or why don't we, see our Rabb;" indeed, they are too big-chested, pouting with pride, (like the Satan, The Reptilian), about themselves and they exceeded all bounds.

22) The day when they will see the messengers (around the throne - as the Eloheem, Dinneer, 24 Elders); there will be no good news, (Gospel) on that day (for the guilty - the blue-eye Reptilians) and they, the (Eloheem) will say: "It's a

forbidden barrier, that is guarded (enclosed garden)."

23) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) proceeded unto the works they had done; So We, (Anunnaqi) rendered it their deeds, as scattered, floating dust.

*The Ashaab Of The Jannat
Shall Be In A Better
Dwelling Place -*

*The Crystal City And The
Eloheem Will Descend - The
Rulership
On That Day.*

*Will Be To The Rahman -
Samael/Al Shaytaan
Is A Traitor To Enosites*

24) On that day, the Ashaab 'Companions' of Al Jannat 'The Garden' shall be in a better, dwelling place and a better place of repose at noon (back in the enclosed garden).

25) And on the day when the Heavenly Skies will crack (vortex opens) and the white clouds - (144,000 come as clouds dressed in white, - Nibiru) and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) who sit around the seat) will be sent down; descending - (the Crystal City with Shams).

26) The rulership on that day will be the fact (beyond any doubt), belonging to Al Rahman, 'The Yelder', (who is

ALLAH) and it will be a hard day for the Kaafiriyn 'Concealers Of That Which They Know To Be The Facts.'

27) And the day when the unjust shall bite on his hands saying: "O if only I had taken a path with the Rasuwl 'The One Sent.'

28) O! Woe is me! If only I had not taken such a person as a friend."

29) Indeed He, (the wicked) led me astray into error, from the reminder - (the Scriptures) even after it, (the Qur'aan) had come unto me, (Muhammad); and Satan, (the Reptilian, Shaytaan, also called Samael, Nakhash, Ibliys, Haylal son of Shakhar, and Mylitta) will only be a Khadhuwlaan 'Traitor' for the Enosites. (They will turn to the Evil Ones seed, but he will betray them).

30) And the One Sent (Ahmad, also known as Muhammad) said: "Oh my Rabb, "Surely my kindred are taking this Qur'aan as something to be forsaken."

Eloheem Made Enemies For Every Newsbearer - Concealers Of The Facts Want To Know Why The Qur'aan Was Not Sent Down To Muhammad - Pre-Collected - Muhammad, There Won't Come To You Any Argument You Can't Answer

31) And just like that, We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made enemies for every Newsbearer, from the guilty ones; and it is enough that your Rabb is your Haadiy 'Calmer' and Nasiyr 'Aider.'

32) And those who conceal the facts said: "Why has not the Qur'aan been sent down to him, (Muhammad) gathered all at once, (pre-collected) so that verily We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) may strengthen by way of it, your (Ahmad's) heart and We, ([We Not I] Anunnaqi) recited it, (the Qur'aan) with a system; in a slow, yet well presented in a regulated tone (over a 23 year period of time; and it was collected into one book after his passing).

33) And they, (the oppressors of Al Islaam) shall not bring unto you, (Muhammad) any likeness - (an argument that you can't answer), except that We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) have brought to you the facts (beyond any doubt), and the best explanation.

34) And those who will be gathered on their faces to Jahannam, 'Purgatory,' those shall have an evil place and an astrayed path into error.

Mosheh Given The Scripture - Eloheem Destroyed Israelfites - The Nation Of Noach Denied The Rusul - Ad And Thamud

*And The Midianites Were
Given Likenesses*

35) And indeed We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave the scriptures to Mosheh, (the Torah: law of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown and The Apostle Yehowshuwa), and We, (Anunnaqi) made his brother, Aharown as a Waziyr 'Assistant' with him.

36) Then We, (Eloheem, Anunnaqi) said: "Go (Mosheh and Aharown) to the kindred (of 'Israelites') who denied Our, ([Our Not My] Eloheem) signs." So We, ([We Not He] Anunnaqi) destroyed them with an utter destruction.

37) And the kindred of Noach, when they lied on and rejected the Rusul 'Ones Sent,' We, (Eloheem) drowned them and made them a sign for the Enosites, and We, ([We Not He] Anunnaqi) have prepared an aching pain for Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones.'

38) And the city of 'Ad and Thamud and the companions of Al-Rass; (the Enosites of Rass, which surrounded the well 'Rass' near Midian) and many generations between their time.

39) And to all, ('Ad, Thamud, Al-Rass, and others) We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) struck forth likenesses Lahu 'For Him', and all of them We, (Eloheem), had to destroy with

an utter destruction.

*The Village Of Lowt Was
Rained With Hails Of Fire -
The Quraysh Take You,
Muhammad As A Mockery -
They Don't Overstand, Hear.
They Are Like Cattle*

40) And indeed they, (seed of Lowt) have passed by the village - (Sodom and Gomorrah) which rained an evil rain, (hails of fire was rained); did they (the family of lowt) then see it? in fact, they did not fear the (return or) Resurrection.

41) And when they, (Quraysh) see you (Muhammad), surely, they take you as a mockery; "Is this that which The Source, ALLAH has raised (back to life) to be a Rasuwl?"

42) He, (Muhammad) would have verily lead us astray (into error) from our, (Qurayshan) (ALLAHS) AALIHAATINAA 'Sources' (deities), if we had not been patient to them; and they will know when they see the chastisement of whomsoever strayed away (into error), from the path (of righteousness).

43) Have you seen him, who takes as ILAAHAHU (His ALLAH) 'His Source', Hawaahu 'His Love, Low Desire?' (Will you then be a guardian over him)?

44) Or do you think that most of them hear or overstand?

They are nothing, but like cattle. In fact, they are more astray (into error) from the right path.

45) Have you not seen how your Rabb, 'Sustainer,' extends the shade? And if He (He Not We) pleased, He would have made it stationary. Then We, ([We Not He] Anunnaqi) have made Al Shams 'The Sun' as an indication of it.

*The Anunnaqi Take The Seen
Gradually - Yahuwa Sent The
Winds As Bearers Of Good
News - Eloheem Sent Down
Water For Creation Of
Cattle And Enosites - If
Eloheem Pleased, They Would
Send A Naziyr To Every
Village*

46) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) take it, (The Seen) unto Us (Us Not My); taking it easily, (gradually).

47) And He (HU), made for you the Layla 'Shadow Hour Period' as a covering, and sleep as a resting, and He (He Not We), made Al Nahaar 'The Daytime' as (a Day of) Resurrection.

48) And 'He,' ([He Not We] YAHUWA/YEHWEH), is who sent Al Riyh 'The Winds' as bearers of good news, between the hand of Rahmatih 'His Yielding' (Mercy) and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down from the Skies Tahuwraan 'Pure' water.

49) In order, that We, ([We Not He] Eloheem) may give life by it, (the rain) to the dead land and to give it as a drink, for that which We (We Not He) Khalaaq 'Created', cattle and Enosites, of large quantity.

50) And indeed We, (Eloheem, Anunnaqi) caused it, (the water) to flow by different channels between them, that they may remember; but most of the Enosites refuse to give anything save ingratitude, (concealing that which they know to be the facts).

51) And if We, (Eloheem, Anunnaqi) had pleased, We, (Anunnaqi) verily would have raised up (back to life) a Naziyr 'Warner' Fee 'In' Kulli 'Every' Qaryatin 'Village'.

52) So don't obey Al Kaaffiriyn 'Those Who Conceal That Which They Know To Be Facts', and strive against them with a great striving.

*Allah Is He Who Made A
Bashar From The Water -
Moceans Slave For Besides
The Source, That Which Does
Not Benefit Them Nor Harm
Them*

53) And He, ([He Not We] Yahuwa) is who made the two seas to flow. This one is fresh, sweet, and this one is salty, bitter and He made a barrier and a forbidden wall, between both

of them.

54) And it is He (He Not We) who Khalaq 'Created' from Al Maa' 'the Water' a Bashar, 'Mortal In Skin' (evolution from water), then He (He Not We) made a Nasaban 'Lineage' for him (mix seed of evolved man, Homo Erectus, to the seed of the Anunnaqi to make Homo Sapien) and a Sihran 'Relationship' (Human Seed with Deity seed) and your Rabb, who is the Sustainer, is the Qadeer 'Ever-Powerful'.

55) And they, (Meccans) slave for besides, The Source, ALLAH which neither benefits them, nor harm them, and the concealer of the facts, is a helper against his Rabb.

56) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send you, (Muhammad), but as a bearer of good news and a warner.

57) Tell them this, (Muhammad): "I did not ask you for any reward for this, except he who will take the path to his Sustainer, who is Rabb."

58) And entrust on Al Hayy 'The Everliving', (The ALL) who does not die and glorify Be-Hamdihi 'By His Gratitude'; and sufficient is He (He Not We) of being aware of Al Zunuwb 'The Guilty Acts' of His (His Not Our) slaves.

He Who Created The Skies

*And Qi - Blessed Is Allah
Who Created The Constellation
'Buruwj' In The Skies*

59) He (He Not We) who created the Samawaat 'Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat' and that which is between the two of them - (the firmaments: Mummu (Mercury) Lahamu (Venus) Lahmu (Mars): Kishar (Jupiter) Anshar (Saturn) Mash-Sig (Uranus) Ea (Neptune) in six days then established Himself (ANU) on the throne (Illyuwn). Al Rahman 'The Yelder'! So ask one who is aware, concerning Him.

60) And when it is said to them: "Prostrate Lil-Rahmaan 'To The Yelder', they said: "And what is Al Rahman 'The Yelder'? Are we to prostrate to that which you command us and it increases them in dislike.

61) Blessed is He, (ANU) who made the Buruwj 'Constellation Of The Stars, Zodiac' in the Skies and made in it, (the Shadow Hour period's sky), Sirajaan 'A Lamp', (Apsu the Sun) and a Muniyr 'Luminating' (Kingu) Qamar 'Moon'.

62) And it is He (He Not We), who made the Shadow Hour Period and Daytime to succeed each other, just for him who wants to be reminded, or for him who wants to be Shakuwr 'Grateful'.

63) And true slaves of Al

Rahmaan 'The Yields', are those who walk upon the planet Earth, also known as Al Ard, (Tiamat/Qi) with modesty, and if the ignorant fools lecture to them they just say: "Salaam 'Peace'."

64) And He who spends the Shadow Hour period prostrating and standing to their 'Master and Sustainer,' who is Rabb.

Hell Is A Continuous Torment - Don't Kill The Nafs That Does Not Call Upon Another. Besides The Source- Allah Will Change The Disagreeable Deeds To Good For Those Who Repent, And Perfect Themselves

65) And those who say: "Our Rabb 'Sustainer' who is ALLAH, divert the punishment from us of Jahannam 'Hell'. Surely, it's a pain, that is a continuous torment."

66) Surely it, Jahannam 'Purgatory' is an evil, (wretched) dwelling place and place of residence.

67) And those who when they share willingly, are neither extravagant, nor niggardly (stingy) and there was between that, a firm station (asteroid belt).

68) And those who don't call upon with the Source, ALLAH another (ALLAH) ILAAHAN 'Source', and do not kill Al Nafs

'The Person,' which ALLAH declared 'Harram 'Forbidden', except with a just cause and who doesn't commit fornication: and he who does this, meets punishments of wickedness (guilt).

69) For him shall be a double, in the pain on Yawm Al Qiyaamat 'The Day Of Resurrection', and he shall abide in it eternally, despaired.

70) Except he who repents and has faith and who works for perfection, so these are they whom The Source, ALLAH shall change their evil deeds to that which is best and ALLAH is Ghafuwr 'Forgiving', Rahiym 'Merciful'.

Those Who Repent, Ask For A Coolness Of The Eye, And That They Be Made An Imaam - They Shall Abide Eternally In A Lofty Room - Muhammad's Rabb Will Not Pay Any Attention To You, Except You Call Upon Him

71) And whoever repents and work for perfection, so surely, he repents to The Source, ALLAH for complete repentance.

72) And those who do not watch unto the falsehood (world religions), and when they pass by that which is vain, they pass by honourably.

73) And those who when they are reminded by way of signs -

(scriptures) of their Sustainer, who is Rabb; don't fall down on them Summaan 'Deafness' And 'Umyaanaan 'Blindness'.

74) And those who say: "Our Sustainer, grant us a coolness of the eye 'delight' of Azwaajinaa 'Our Wives', and Dhurriyyaatinaa 'Our Offspring' and make us an Imaam, 'One Upfront' of those who tremble at the mention."

75) These are those who shall be rewarded the lofty room (return to Rizq in Illyuwn), because they were patient and they shall meet in it with a greeting and Salaaman 'Peace' as a salvation.

76) Abiding in it eternally; it is beautiful as a dwelling place and a resting place.

77) Tell them this, (Ahmad): "My Rabb, would not pay you all, any attention, if it were not for the fact, that you all call on (in prayer), so indeed, you all are as liars, so it is a must that you be in the grip (inescapable).

Sudlga Allahu El Azim

Chapter Forty-Three

Revealed In The Year 613 A.D.

*Faatir
(Splitter Of Atoms)
Original Order Chapter 43;
Wrong Order Chapter 35*

Begin All Prayers And Thinking

By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Allah Is The Splitter Of The
Atoms Of The Skies And Qi -
No Allahs Would Exist Except
By Way Of Him - If Meccans
Lie On You, Muhammad, They
Lied On The Rusul From
Before - Shaytaan Is An Open
Enemy Unto The Seed Of
Zakar - Allah Calms Whom He
Pleases*

43 All gratitude is due to him (The Source), Faatir 'Splitter Of The Atoms' of Al Samaawaat 'The Skies' and the planet Qi/Tiamat, also called 'Earth (creator of this galaxy)', Jaa'ili 'Who Made' Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers' (Eloheem, Anunnaki) flying on Ajniyhat 'Wings', two, and three, and four (flying in winged crafts in two's, three's, and four members): He adds to His (His Not Our) Khalaaq 'Creation' that which He (He Not We) pleases (from original he cloned). Surely The Source, ALLAH, has the Qaadir 'Power,' over all things.

2) Whatever The Source, ALLAH lays open of His (His Not Our) Rahmah 'Yielding' (Mercy), unto the Enosites, there is none to hold it back, and whatever He (He Not We) holds

back, there is none to send it forth after that, and He (HU -The Creative Force Of Will) is Al Aziyz 'The All-Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

3) O you, Naas 'Enosites! You are to remember The Source, ALLAH'S grace on you. Is there any Khaaliq 'Creator' other than ALLAH, who provides you with your provision from the Sky and the planet Qi? There is no Source, 'ILAH except Him (HU -The Creative Force Of Will); so then are you all turning away from the facts?

4) And if they, (the Adamites) lie on you, (Muhammad); indeed they have lied upon the Rusul, 'Ones Sent' before you (they lied on all the apostles); and unto The Source, ALLAH all affairs will be returned!

5) O you Enosites! Surely, the promise of The Source, ALLAH is a fact, so do not let the life of this world deceive you; and do no let the Arch-deceiver, (Satan, The Reptilian) deceive you, about The Source, ALLAH!

6) Surely Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian,' (also known as Haylal son of Shakhar and Mylitta; also called Nakhsh, Iblis) is an open enemy for you all; so take him, (the Evil One's cursed seed, Canaanites as an enemy.) For surely, he only calls his group (of Enosites, The Evil One's cursed seed - the Canaanites) to be of the

companions of Saiyr 'Flaming Fire'.

7) Those who conceal that which they know to be the facts, for them shall be a forceful pain; and as for those who are faithful and work to Sallah 'Perfect' (get the 112 corrections) themselves, for them is a forgiveness and a great reward.

8) Can he, whose evil works are decorated for him, can see it as Hasanan 'That Which Is Best'? Now, surely The Source, ALLAH will make to go astray whomsoever He (He Not We) pleases; and He leads into calmness whomsoever He pleases, so don't let your spirit/self go sighing of fatigue or grief after them. Surely, ALLAH is 'Aliym 'Knower' of all that which they are doing.

*Allah And The Eloheem Raise
The Clouds. To Give Life To
The Earth - The Source
Created You From Dust. Then
A Drop Of Sperm - The
Difference Between The Two
Seas - Allah Causes The Sun
And The Moon To Be
Subservient To You - The
Other Sources You Called On,
Can't Hear Your Call - Allah
Is Al Ghaniyyu And Al
Hamid*

9) And The Source, ALLAH is He (He Not We), who sends Al Riyaah 'The Winds', and they

raise the clouds, then We (We Not He) drives them on to a country which is dead, and We give life to the Earth after its death (re-plenish it); just like that, (is the rising of the dead in) the Nushuwr 'Resurrection'.

10) Whosoever, desires might (and honor) let him seek it from The Source ALLAH, for Him, ALLAH alone, is all the might (and honor); unto Him only ascends all Tayib 'Agreeable' words, which are perfected (good), he raises it; and as for those who plot evil deeds, for them shall be a forceful pain; and their plot, shall only be in vain.

11) And The Source, ALLAH created you of Turaab 'Dust', (from the particle of the earth. First Evolution), then of the drop of (Life-Germ), Nutfah 'Sperm,' (then cloned 14 hybrids) then He (He Not We) made you Azwaajaan 'Mates' (of male and female [Adam and Nekaybaw]); and an Unthaa, 'Second One, Female' (Twins Of Cain And Abel, Aqlimiah And Labuwdah) does not carry, nor does she deliver (the first were hybrids), except with His knowledge; and ages not the aged (21 and 18), nor does he decrease from any one's life, but it is all in a book decreed, ('ordained' -The Holy Tablets). Surely, that is easy for The Source, ALLAH.

12) And the two seas are not

alike. This one is sweet (rivers, lakes, ponds, and underground springs), its sweetness quenches the thirst and pleasant to drink, and the other is salty (oceans and seas: Atlantic, Pacific, Indian, Artic, Mediterranean, Carribean, Gulf Of Mexico), and bitter; and yet from them both, you all eat fresh flesh, and take forth ornaments which you all wear (pearls and sea shells); and you see Al Fulk 'The Crafts' (on water) cleave through it, that you may seek of His preference, and that you may be grateful.

13) He (He Not We) causes the Shadow Hour Period to penetrate into the Daytime; and the Daytime to penetrate into the Shadow Hour Period; and He made Al Shams 'The Sun' and Al Qamar 'the Moon' subservient to you, each running to an appointed time (365 days for the sun, 29 1/2-30 days for the moon). This is The Source, ALLAH, your 'Sustainer,' who is Rabb; His (His Not Our) is Al Mulk 'The Rulership' and as for those whom you call upon besides Him, they don't possess even a straw.

14) If you call on them they shall not hear your call; and even if they hear they shall not answer you; and on the Day of Judgement, they will deny your association (with) them; (these other ALLAHs will be there) and none can ever inform you as

the One who is The Khabiyr 'All-Aware'.

15) O you Enosites! You are the ones who are poor and in need of The Source, ALLAH and ALLAH, Himself is Al Ghaniyyu 'The Independent', the One Who Is Worthy Of Al Hamiyd 'The One Who Is Due Gratitude'.

*If He Pleases He Can Bring
A New Khalaq - No Bearer
Shall Bear The Burden Of
Another - The Difference
Between The Blind And
The Seeing, The Darkness
And The Light, And The
Shade And The Heat
- Muhammad Is Only A
Nasiyr - Muhammad Is Sent
With Qur'aan, By The
Anunnaqi - There Is No
Kindred Without A Warner*

16) If He (He Not We) pleases, He will take you off and bring a new Khalaq 'Creation' (as he did before).

17) And nor is that hard for The Source, ALLAH.

18) And no bearer shall bear the burden of another; and if the heavy laden one should cry, (call upon) another bearer to carry its burden, even it shall not be carried, and even if, he is of near kin; you can, but warn those who fear their Rabb, in the Ghayb 'Unseen' and keep up salutations as worship (prayer); and whosoever purifies himself,

he only purifies for his own self; and the destination is unto The Source, ALLAH (The Return To Illyuwn).

19) And Al A'amaa 'The Blind' and Al Basiyr 'The Seeing' are not both alike?

20) Nor Al Zulumaat 'The Darkness' and Al Nuwr 'The Light'.

21) Nor Al Dhillun 'The Shade' and Al Haruwr 'The Heat'.

22) And neither are alike, both Al Ahyaau 'The Living' and Al Amwaat 'The Dead'. Surely The Source, ALLAH hears whom He (He Not We) pleases, and you, (Ahmad) cannot make those who are in the tombs hear.

23) Except that you are but a Naziyr, 'Warner'.

24) Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent you (Muhammad) with the facts (beyond any doubt - Al Qur'aan) as a Bringer of good news and a Warner, (yet only Human); and surely, there has not been any nation in the past, without that, a warner amongst them.

25) And if they, (the Ishmaelites) lie on you (Ahmad), they, (the Israelites) have indeed lied on those, the ones sent before them - (the Ishmaelites). They, the Rusul, 'Ones Sent' (for Israel) came (to the Israelites) with Bayinaat 'Clear Evidence', (the Torah) and the Zubuwr - (The Psalms Of The newsbearer, 'prophet' Dawiyd) and (the

illuminating scriptures (Suhuf - the Gilgamesh Epics, and The Enuma Elish, Etana, Atra Hasis, Secrets Of Adapa, Nergal And Arishkegal, The Descent Of Ishtar To The Underworld; and the gospel, 22 Books of Revelation, which was given to Jesus, All Found In The Holy Tablets).

The Source, Seized Those Who Concealed The Facts - He Brings Forth Fruits With Various Colors - Allah Appreciates Those Who Rise Up For Salaat, And Share Willingly Of That Which They Were Provided - Muhammad Inspired By Eloheem Anunnaqi - The Scripture Given As An Inheritance To Their Slaves, All Whom They Have Chosen

26) Then did I (I Not We) seize those who conceal that which they knew to be the facts, so how severe was my abhorrence?

27) Do you not see that The Source, ALLAH sends down water from the sky; then We (We Not He) bring forth with it, fruits of various colors; and in the mountains are Baydun 'White' and Hamrun 'Red' streaks of various colors, and others intensely Saydun 'Black'?

28) And of the Enosites (Negroid Man, Mongoloid Man, Cananite Man) and Al Dawaabbi 'The

Beasts' and the cattle are of various colors likewise; (animals also of different colors) surely those of His slaves endued with knowledge fear The Source, ALLAH; surely, The Source, ALLAH is 'Aziyz 'All-Mighty', Ghafuwr 'Forgiving'.

29) Surely those who recite 'Kitaab 'The Scripture' of The Source, ALLAH and rise up for Al Salaawat 'The Salutations As Worship' and share willingly of that which was provided for them secretly and openly. (They invest in the building and propagation of the peaceful means of judgment) they will not be in vain.

30) That He (He Not We) may give them back their rewards in full and increase of His (His Not Our) preference unto them; surely, He is Forgiving 'Ghafuwr', The Shakuwr 'Grateful'.

31) And that which Awhaynaa 'We, ([We Not He] the Eloheem Anunnaqi), Inspired' you (Muhammad) of the scriptures (Al Qur'aan); it is a fact (beyond a shadow of a doubt), and can be trusted; confirming that which is between his hands (Torah, Zubuwr, And Injiyl). Surely The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware', and Basiyr 'Sees' by way of His (His Not Our) slaves (seed of Adam).

32) Thumaa 'Then' (after all of them) We ([We Not He]

Eloheem Anunnaqi) gave the Kitaab (Holy Tablets) 'Scripture' as an Inheritance (a book of their own history to renew their inheritance); a means to clear things for those whom We (We Not He) chose of Our (Our Not His) slaves; (Nuwaubu) but of them there are some of you, who treat himself as Zaalimun 'Unjustly' and there are some of them who Muqtasidun 'Stay On The Path Of Righteousness', and of them, there are some who progress in good deeds by permission of The Source, ALLAH. That is the big preference.

In The Jannaat, They Shall Be Given Bracelets Of Gold And Pearls, And Their Raiment Will Be Made Of Silk - Allah Is The Forgiving, The Grateful - There Is No Toil, Neither Does Fatigue Affect Them - Hell Is For The Concealers Of The Fact - The Concealers Will Ask For Help, And Try To Perfect Themselves - The Source Is The Knower Of The Unseen In Tiamat And The Skies

33) "Jannaat 'Gardens' of Eternity, they shall enter into (it's a place); they shall be given to wear in them, bracelets of gold and pearls, and their raiment, in it, will be silk (you have bracelets of metal of the

earth, pearls of the mollusk shell of the sea and silk of the silk worm insect of earth).

34) And they shall say: "All Hamdu 'Gratitude' is for Him, who has taken grief away from us. Surely our Rabb, who is 'Sustainer' is Ghafuwr 'Forgiving', The Shakuwr 'Grateful'.

35) He (He Not We) who has alighted us of His (His Not Our) favor in a Daar 'Abode' (it's a place) to abide forever; in it, a toil does not touch us (no work), nor does fatigue affects us in it (no tiredness).

36) And those who conceal that which they know to be the facts, for them shall be the fire of Hell, it shall not be decreed that they should die, nor shall its torment be lightened unto them; just like that, do We (We Not He) reward every ungrateful one, (concealer of that which they know to be the facts).

37) And they shall cry aloud in it for help: "O our 'Sustainer/Master,' who is Rabb! Take us out here, we will try to perfect ourselves, (do good deeds) other than that, which we used to do before." It shall be said unto them: "Did not We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) keep you alive long enough for him who reflected to reflect in it? And Al Naziyr 'The Warner' (Malachi Z. York) came unto you too; So now you are to taste

the fruits of your deeds, then there shall be no (Ansars) helper for the Zaalimiyn 'Unjust Ones'.

38) Surely, The Source, ALLAH is the 'Aalim 'Knower' of the Ghayb 'Unseen' of Al Samaawaat 'The Skies' and the planet Earth, Tiamat/Al Ard. Surely, He (He Not We) knows the essence that which is in Al Suduwr 'The Chests', (of Enosites).

He Made You Khalaa'if Of Those Who Have Preceded You, In Qi - Muhammad Asks Those Who Associate (Other Deities), 'What Part Of The Earth Have They Created?' - The Source Holds Both The Skies And Earth - Those Who Associates Are Full Of Asilkharr - They Look For The Sunnat Of The Awwaliyn - The Source Is Not Going To Frustrate Himself With Anything In The Planet Earth And The Skies - He Is All-Knowing, All-Powerful - If He Selaa The Enosites, There Will Not Be One Living Creature Left On Earth/Qi - The Source Is All Seeing

39) He (He Not We) is the one who made you the Khalaa'if 'Khalifa - Successors, Left Behind' of those who preceded you in the planet (Qi); (the ones to come after the other who live on this planet before Adamites),

so whosoever conceals that which they know to be the facts, against him shall be his concealing of the facts; and the concealing of the facts, of the Kaafiriyn, 'Concealers Of The Facts,' does not increase in the possession of their Rabb except Maqtaan 'Disgrace (Hatred)', and He does not increase the concealing of the concealers of the facts, except, but a loss.

40) Tell them this (Muhammad): "Did you not see your partners whom you call upon, other than The Source, ALLAH? Show me what part of the planet Earth, 'Tiamat' they have created, or do they have any partnership in the Skies; or did We (We Not He) give unto them any Scripture so that from it, they may give clear evidence of their promise. In fact, the unjust ones does not promise one another nothing, except deception.

41) Surely, The Source, ALLAH holds Al Samawaat 'The Skies' and the planet Earth 'Al Ard (Qi/Tiamat) unless they are not there any more; and if they come to be not there, none besides Him can hold them back; surely, He is The Most Haliyman 'Clement', Ghafuwr 'Forgiving'.

42) And they, (Hebrews, Christians, And Muslims) swore by The Source, ALLAH with their strongest faiths that if a Naziyr 'Warner' (Malachi Z. York) came unto them, they

would verily be leaded to calmness better than any other Al Umami 'Nation'; but when a Naziyr, 'Warner' (As Sayyid Issa Al Haadi Al Mahdi) came, it only increased in them an aversion.

43) Astakbaar, 'Big-Chested, Pouting With Pride' in the planet Earth, and planning evil (they want to kill him); and the evil plans of theirs shall not beset, but the plotters themselves (Sayyid Nosair of Egypt - Sunnis); then they look for the Sunnat 'Tradition' of the Awwaliyn 'First Ones' - (the Eloheem Dinneer)? For you shall never find any change in the Tradition, 'Sunnat' of The Source, ALLAH; and you shall never find any alteration in the Sunnat of The Source, ALLAH (so they made up their own Sunna and Hadiyth).

44) They did not move about in Tiamat and see how was the end of those before them? Eventhough, they were more forceful than them in strength (they have military armed forces, terrorist)? And The Source, ALLAH is not going to frustrate Himself with anything in the Skies (planes) or in the planet Earth, Al Ard (Tanks): surely He is 'Aliym 'All-Knowing', Qadiyr 'Powerful'.

45) And if The Source, ALLAH were to seize the Enosites to

punish them for that which they did, He (He Not We) would not leave any moving being, 'creature' on the back of it - (the planet Earth), but He respites them until an appointed term (they will get theirs in the end); and when their term comes, then surely The Source, ALLAH, is Basiyr 'All-Seeing' about His (His Not Our) slaves.

Sudiga Allahu El Azim

Chapter Forty-Four

Revealed In The Year 613 A.D.; Verses 18 And 21 Were Revealed In Medina

*Maryam
(Mary)*

*Original Order Chapter 44:
Wrong Order Chapter 19*

Begin All Things With The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful

*Yokhawnawn The Baptist And
Aharown And Yashu'a Are
Given Wisdom As Youths -
Zekaryaw Calling On His Rabb
For A Successor*

44 (~~xxxx~~) (Kaa: Kitaab Al Hikmah 'Book Of Wisdom' Given To Yokhawnawn also called Yahya; Haa: Haaruwn/Aharown who is also called Aaron; Yaa: Yahya; Aiyin: Yashu'a/Isa, who is Jesus;



Figure 47
Sayyid Nosair Of Egypt

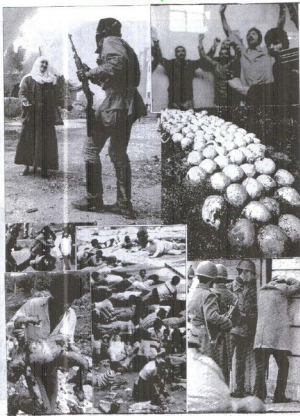


Diagram 9

Terroism In The Arab World

(were all given wisdom of the scriptures as Saad: Male Youths).

2) This is a reminder and a yielding (mercy) of your Rabb, who is 'Sustainer' to His (His Not Our) slave Zekaryaw (who is also known as Zakariyya/Zekaryaw.)

3) When he called his Rabb in a low voice.

4) He said: "My Sustainer, and Master, surely my bones have become weak and my head of hair does glisten; And never was I denied in my prayer to You."

5) And surely I, (Zekaryaw) am afraid of the ones after me to succeed - (my kindred); because my woman (Elisabet also known as Elizabeth) is barren, (childless), so give me a gift of yourself, a near friend (successor).

6) Which shall inherit that which is mine and inherit from the family of Ya'aqob and, my Sustainer, Rabb, makes him one with whom you will be pleased."

Zekaryaw Given Good News Of A Child - A Sign Is Made With Zekaryaw

7) O Zekaryaw! "Surely We, (Eloheem, Anunnaqi) give you good news of a lad (child). His name is (to be) Yahya/Yokhawnawn (The Baptist). We, ([We Not He] Anunnaqi) have not made anyone his name before him."

8) Zekaryaw said: "O my Rabb, how shall I have any child and my woman, Eliysheba - was barren? And I have certainly reached far too much, in old age."

9) He said, "Just like that, your Rabb who is 'Sustainer' just has to say it; and it is easy for me, And certainly I (I Not We) Khalaqtuka 'Created you' before, and you were not a thing."

10) He, (Zekaryaw) said: "My Sustainer make a sign for me." He (He Not We) said: "Your sign is that you won't be able to talk to the Naas/Enosites for three Shadow Hour Periods successively."

11) So he, (Zekaryaw) came out to his kindred from his Mihraab 'Sanctuary'; and revealed to them that they glorify early in the Daytime Hour and the Dusk Period.

12) O Yokhawnawn (John The Baptist) take the scripture with power and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave him Al Hikm (The Book Of Wisdom Of Luqman) 'The Wisdom' as a Sabiyy 'Boy.'

*Yokhawnawn The Baptist Is
Purified By The Eloheem -
He Was Kind To His Parents
- Peace Be Upon Him, The
Day He Was Born And The
Day He Will Die, And His
Resurrection To Life Again*

13) We, ([We Not I] Eloheem) bestow kindness from within our presence; and We, (Eloheem, Anunnaqi) purified him for he, (Yokhawnawn The Baptist was of the pious ones the Levi priest, tribe of Yisrawale/Ya'aqob).

14) And he, (Yokhawnawn The Baptist) acted kindly and justly to Waalidayhi 'His Parents': (Zekaryaw and Eliysheba) and he was not of the transgressors. (His tribe Levi worshipped Baal, nor was he disobedient and mix his seed with Canaanites as his tribe Levi did).

15) And Salaam 'Peace' be upon him, (Yokhawnawn The Baptist) from the day he was born, on until the very day he will die; on until the day of his resurrection to life again.

*Muhammad Told About Mary
- Mother Of The Sprout Of
Life - Nusqu Sent To Her, As
A Complete Mortal, To Give A
Lad On Her*

16) And (Muhammad) remember Miriam, (mother of the Messiah Yashu'a/Isa, who bore the title Tammuz, Symbolic Of Horus) in the Scripture - (the Qur'aan), when she took refuge from her own family at a Sharqiyaa 'Eastward' place.

17) So she, (Mary) took a Hijaaban 'Screen' and covered herself from them (Them Not I), (the Eloheem Michael, and

Uriel/Kalkael, and Gabriel/Nusqu). Then We ([We Not I] Eloheem), sent to her Our (Our Not My) own soul (Gabriel). So he was for her just like any other Basharan 'Mortal In Skin', Sawiyaan 'Complete'."

18) She, (Maryam) said: "Surely, I seek protection from you, (Nusqu) with Al Rahmaan 'The Yielder', if you are of those who fear Him (Him Not Us)."

19) He, (Gabri'el, who bore the title Nusqu) said: "Surely, what I am is a Rasuwl, 'One Sent,' by your Rabb 'Master' and Sustainer' to Ahaba 'Give' Laki 'To You' a pious lad (impregnate you)."

20) She, (Miriam) said: "How is it possible for me, to have a lad, and no Basharan 'Mortal In Skin' has touched me; and I am not an unchaste woman, or harlot? (I'm still a virgin)."

21) He said: "Just like that, your Rabb says it is easy for me and We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) will make a sign for the Enosites and a Rahmat 'Yielding' (mercy) from us, ([Us Not My] Eloheem) and it was a matter already decided.

*Miriam Gives Birth To
Tammuz - Yashu'a/Isa Tells
His Mother, "Not To Grieve."
- Stream Will Provide Water
For You, Miriam - Dates
Will Drop From A Palm
Tree*

22) So she, (Miriam) gave birth to him, (Yashu'a/Isa who is also called Tammuz, Symbolic of Horus). So then after that she withdrew with him to a place far away."

23) So when the childbearing cramps, (labor) came upon her, (Miriam), she took herself to the trunk of a palm tree; so she (Miriam) said: "I wish I had died before I encountered this, (labor pain) and had been a thing already forgotten."

24) So he, (Yashu'a/Isa) called out to her, (Miriam) from beneath her, "Do not grieve, verily your Rabb 'Sustainer', made a running stream beneath you."

25) And shake towards yourself, (Miriam) the trunk of Al Nakhlat 'The Palm' (Tree), it will drop like ripe dates for you."

26) So eat the dates and drink the water and refresh the eye, so if you, (Miriam) see Al Bashir 'Any Mortal Being In Skin', tell them: "Surely Nadartu 'I Made A Vow', Sawmaan 'A Fast' Le-Rahmaan 'To The Yields'. So I won't speak to any Enosites today."

Miriam Confronted By Her Kindred - They Ask To Speak To Yashu'a/Isa As A Child In The Cradle - Yashu'a/Isa Tells Them He Is 'Abd Of Allah - A Newsbearer - And He Is Not A Jabbaar

27) (Miriam) came to her kindred Tahliluhu 'Carrying Him', (Yashu'a/Isa). They said: "O Miriam indeed you have come with a thing unheard of."

28) O sister of Aharawn (also called Haarawn of the seed of Moses)! Your father, (Amrawm) was not a wicked commander, nor was your mother, (Khannaw) a harlot or an unchaste woman."

29) So she, (Miriam) pointed at him, (Yashu'a/Isa); they, her Enosites said: "How can we speak to one, (the Messiah at that time, Yashu'a/Isa) who is still a child in the cradle?"

30) He, (Messiah Yashu'a/Isa) said: "Surely I am an 'Abd' Slave' of ALLAH. He (He Not We) has given me Al Kitaab 'The Scriptur', (El's Injiyl, the Evangel Revelation - 22 books of Yashu'a/Isa, given to him by Yokhawnawn Son Of Zebedee), and he, made me a newsbearer."

31) And he (He Not We) made me, (the Sprout Of Life/Tammuz also called Yashu'a/Isa) blessed wherever I may be, and He, has enjoined on me the Salaat 'Worship' and Zakaat 'Charity' for as long as I live."

32) He (He Not We) made me righteous to my mother and He didn't make me a Jabbaar, 'Ghibbor, Insolent Mighty One' (and unblessed), miserable."

Peace Be Upon Yashu'a/Isa -

*Allah Doesn't Take A Male
Offspring- Allah Is
Yashu'a/Isa' Rabb*

33) And Al Salaam 'Peace' be upon me, (Tammuz/Yashu'a/Isa) the day I was born, and the day I die, and the day I will be raised back to life."

34) That is Isa son of Miriam speaking the facts (beyond any doubt), in that which they dispute.

35) It was not for The Source, ALLAH that He takes from a male offspring, (by sexual contact). Glorified is He (He Not We); when He decreed an order, (command) so surely, that which he says to it is "Exists" so it comes into existence."

36) Surely ALLAH is my (Yashu'a/Isa') Rabb, who is 'Sustainer and Master' and your Rabb, so slave for Him (Him Not Us). This is the narrow path of those who stand up straight.

37) So Al Ahzaab 'The Groups (Sects)' differed from between them. So woe to those who concealed that which they knew to be the facts from a place of that which is watched, on a 'Aziym 'Supreme' day.

38) They will see and hear very clearly on the day they have to come to us, (Eloheem, Anunnaqi on the Last Day), but even so, these in a state of Zaalimuwn 'Unjustness', are today Zaal-lin 'Astrayed' in clear error.

39) And warn them of the Day of Affliction when the orders will be settled about their negligence and they will not be of the faithful.

*Anunnaqi Will Inherit Qi-
The Suhuf Of Abrawhawm -
He Warns His Father To
Follow Him - And Don't
Slave For Satan, The
Reptilian*

40) Surely We, ([We Not He] Anunnaqi, in the coming of the Crystal City) will inherit the planet Ard (Qi, also called Tiamat) 'Earth' and all who are upon it, and unto Us, (they), the Enosites will all return for judgement.

41) And (Muhammad) remember in the Scripture - (10 pages of Suhuf, the Book of Generation of) Abrawhawm; for surely he was a Sadiyqan/Zodoqite 'Trust-Worthy' Nabiyy 'Newsbearer.'

42) When he, (Abrawhawm) said to his father, (Terakh/Awzar): "O my father! Why do you Ta'budu 'Slave' for (idols) that doesn't Yasma 'Hear' nor Yubsir 'See', nor increase your wealth, or help in anyway?"

43) O my father, (Awzar): "Surely there has come to me, (Abrawhawm) the knowledge, that which has not come to you, Terakh. So follow me, I will lead you to calmness to an even

Siraat 'Way'."

44) O my father, (Terakh) don't slave for Al Shaytaan 'Satan', (the Reptilian); for surely, Al Shaytaan, (who is Haylal/Samael/Al Khannaas) was for The Rahman 'Yielder' And Enemy."

45) O father, (Terakh), surely I fear that you will be afflicted with a pain from Al Rahmaan 'The Yielder', if you do not repent. Al Shaytaan (Samael son of Shakhar and Mylitta) will be your Waliyy 'Friend'.

Terakh Wants Abrawhawm To Worship His Allahs - Abrawhawm Removes Himself From His Father - Eloheem Made Yitskhawk And Ya'aqob, Newsbearers

46) He, (Terakh) said: "(Abrawhawm), I desire for you AALIHATII my (ELOHS/ALLAHS) 'Sources'. O Abrawhawm, if you do not desist, I will abuse and stone you; therefore, leave me and stay away from me for a long time."

47) He, (Abrawhawm) said: "Salaam 'Peace' be upon you, (Azawr/Terakh). I will ask my Rabb, ALLAH to forgive you. Surely He, was gracious with me."

48) And I, (Abrawhawm) will remove myself from you, and that which you call upon, (pray to), from besides The Source,

ALLAH; and I'll call upon, (pray to) my Rabb 'Master'. Maybe I will not be unhappy with my calling (prayer) to my Rabb.

49) So when he, (Abrawhawm) abandoned them, (his father and the Chaldeans) and that which they slaved for, other than ALLAH; and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave him, (Abrawhawm) for himself Yitskhawk and Ya'aqob (Yisrawale), and each one of them (Yitskhawk and Yisrawale), We, (Eloheem, Anunnaqi) made Nabiyyan 'Newsbearers, Prophets.'

50) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave Lahum 'For Them' from Rahmatinaa 'Our 'Yielding' (mercy); and We, (Eloheem, Anunnaqi) made for them an 'Aliyan 'Exalted' tongue of facts (Hebrew)."

Muhammad Told To Remember The Story Of Mosheh - Yishmael Was A Rasuwl - Adafa/Khanowk Was A Sodoqite - Anunnaqi Chose The Offspring Of Zakar

51) And (Muhammad) remember in the scripture, (Torah) of the (Eloheem) Mosheh, for surely he was of the Mukhlasaa 'Purified' and was a Rasuwl, 'One Sent' Nabbiyy 'Newsbearer.'

52) And We, the ([We Not He]

Eloheem, Anunnaqi) Naadaynaahu 'Called To Him', (Moses), from the right side of (the mountain) of the "Al Tuwr 'Sinai'" (the craft was on one side of the mountain); and We, (the Eloheem), made him come near to us, for communion, (Moses went up there to meet them to speak with them)."

53) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave Lahu 'For Him' (Moses) from Rahmatinaa 'Our Yielding' (mercy, made him an Eloheem), his brother Aharown, a Nabiyyan 'Newsbearer, Prophet'.

54) And remember in the Scripture Yishmawale, (also known as Harsematawi). Surely he was of the truthful in his promise, and he was one sent, a Nabbiyy 'Newsbearer'.

55) And he, (Harsematawi/Yishmawale) used to command his family - (12 Tribes of Yishmawale) with Salaat 'Salutations As Worship', and Zakaat 'Almsgiving', and he, (Yishmawale) was one who's contented in the possession of his Rabb, who is 'Sustainer'.

56) And (Muhammad) mention in the scripture of Khanokh (Idriys, also known as Adafa -The Secrets Of Adafa). Surely, he was a Truthful 'Sodoqite' Enosite, a Nabiyyan 'Newsbearer'.

57) And We, ([We Not I]

Eloheem, Anunnaqi) Rafa'naahu 'Raised Him', (took him by craft, Adafa) up to the (higher), 'Aliyyan 'Exalted' places - (took him to Illyuwn).

58) These are they who earned, ALLAH'S grace on themselves from the newsbearers of the offspring, (bloodline of Zakar) Adam (Shayth, Enowsh, Qaynawn, Mahalalale, Yered, Khanokh, Methuwshelakh, Lemek, Noach) and from those whom We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) carried (in the craft) with Noach: (his wife, Na'amah, his three sons and their wives: Shem and Faatin, Japheth and Ifat, Khawm and Halima, And Kena'an Who Was Born Inside The Craft); and those from the offspring, ('bloodline') of Abram/Abrawhawm (From Utnafishtim/Noach, Shem, Arfakshad, Salah/Shelah, Eber/Hud, Thamud, Feleg, Re'uw, Seruwg, Nawkhore, Terakh/Azawr) and (Ya'aqob) Yisrawale; and (from Abrawhawm And His Wife Hathor/Hagar - She Bore Harsematawi/Yishmawale And His Sons Were: Nebayowth, Qedar, 'Adba'el, Mibsawm, Mishmaw, Duwmah, Massa', Chadar, Taymaw', Yetuwr, Nafhiysh And Qedemah Down To Muhammad; And From Abrawhawm's Wife Qetuwrah - She Bore Luemmiym/Luqman

and from Abrawhawm's wife Sarai/Sarah - She Bore Yitskhawk, And His Sons Were: Esaw And Ya'aqob/Yisrawale, And The Sons Of Ya'aqob/Yisrawale Were: Reuwbén, Shim'own, Lewiy, Ychuwdaí, Dawn, Nafhtaliy, Gawd, Awshare, Yissawkhawr, Zebuwluwn, Yowsa'fc, Binyamiyn Down To Mosheh And Yashu'a/Isa), and from whom We, ([We Not I] Eloheem, Annunaki) lead to calmness, and We chose to recite to them Al Rahmaan 'The Yielding' verses, (signs of the Enuma Elish and Gilgamesh Epics, Etana, Atra Hasis, Nergal And Arishkegal, The Descent Of Ishtar To The Underworld, Adafa, and the tablets and scriptures from before; and when We, Anunnaqi did), they, (the newsbearers) fell down in prostration and just cried.

59) So there Khalafa 'Succeeded' them, (Adafa's/Enoch's seed) right after them, (newsbearers out of Adam's line), neglectors of Al Salaat 'Salutation As Worship,' and followed after their sexual desires. So they will meet destruction.

60) Except those who turn to repent and are faithful and they work to perfect their beings (themselves), so these are those who shall enter Al Jannat, 'Garden,' and they will not Yazlamuwna 'Be Treated

Unjustly' in a thing.

*Jannat For The Faithful
- Vain Talk Will Not Be
Heard In The
Enclosed Garden
Of Delight*

61) Gardens of Eden, those which Al Rahmaan 'The Yielder', has promised His (His Not Our) slaves by way of Al Ghayb 'the Unseen'. Surely His promise is, (was) to come.

62) They will not hear in it, (Enclosed Garden of Delight) vain talk, except Saalmaan 'Peace'; and for them is their provision in it; (in) the Early Daytime Hour, and late Evening. (There is day and night in the Garden, that means it has a sun and moon and time)."

63) That is the Jannat in which We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave to inherit those who of our slaves who were trembling.

64) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) are not sent down (to Earth) except by command of your Rabb. For Him is that which is between our (Our Not His) hands, (presence) and that which is Khalfanaa 'Behind Us' (the heavenly skies); and that which is between that (the asteroid belt), and your (Muhammad's) Rabb 'Sustainer', is not forgetful.

*Slave For Your Rabb - The
Anunnaqi Will Gather The
Cherubeems Kneeling Around
Jahannam*

65) Rabb who is 'Sustainer' (ANU) of the heavenly Skies and the planet (Qi) 'Earth,' and that which is between both of them. So slave for Him (Him Not Us), and be patient to His (His Not Our) services. Do you Ta'lamu 'Know' a Samiyyan 'Name' for Him (ANU)?

66) And Al Insaan 'The Enosite' says: "When I pass away, 'die' will I be brought forth alive, again?"

67) Or don't Al Insaan 'The Enosite' Yadhkur 'Remember' that We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Khalaqnaahu 'Created Him' from before, and he did not exist from a thing?

68) So by your Rabb, who is 'Sustainer and Master,' We, ([We Not I] Anunnaqi) will gather them and Shayaatiyn, 'Satans', (The Reptilians, Malevolent Beings - Cherubeems) then We, (Eloheem) will bring them around Jahannam 'Purgatory', kneeling.

69) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will violently pull out from every Shay'atin 'Sect', of those who are more forceful, insolent rebels upon Al Rahman 'The Yelder'.

70) Then verily, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) are

best aware of those who are nearer to roast in it.

71) And there is not from you except to arrive unto it. That is and was on your 'Sustainer', who is Rabb, an ordained decree.

*The Tremblers At The
Mention Of The Source, Will
Be Saved - The Unjust Ones
Will Know Who Is The
Weakest Of Hosts*

72) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will save those who tremble at the mention; and We, (Anunnaqi) will leave Al Zaalimiyn 'The Ones In A State Of Unjustness' kneeling in it.

73) And when (the Qur'aan) was recited unto them as clear verses, those who conceal that which they know to be the facts said to those who are faithful, "Which of the two Enosites are best? Muslims or non-Muslims? And which group is best and abiding?"

74) And how many generations from before them, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have destroyed? They were better in wealthy property, and that which pleases the eye.

75) Say he who is in Al Zaallat 'Error', (the astrayness from the light to Spiritual Darkness), Al Rahman 'The Yelder,' will verily stretch for him a stretching, until when they see

that which they were promised. Either the pain and either the hour; so they will know who is evil in position, and weakest of armies.

76) And The Source, ALLAH increases the calmness of those who are Hudda 'Calmed'; and the enduring deeds of perfection is best in the possession of your Rabb who is the 'Sustainer/Master', as rewards and best for a place to which one returns.

*Punishment For The
Concealers Of The Facts -
Other Affairs Will Be An
Adversity Against Them*

77) Have you seen he who concealed that which he knew to be the facts with Our, ([Our Not His] Eloheem, Anunnaqi's) signs; and he said: "Verily, I will be given wealth and Waladaan 'Sons By Birth'?"

78) Has he penetrated Al Ghayb 'The Unseen' (Hidden) or has he taken a 'Ahdaan 'Covenant' in possession of Al Rahmaan 'The Yields'?"

79) Nevertheless We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will Naktub 'Write' that which he says and We, (Eloheem) will stretch for him from the pain, 'punishment' a stretching.

80) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will inherit that which he says, and he will

come to us alone (privately).

81) And they have taken AALIHATAN (ALLAHS) 'Sources' from besides The Source, ALLAH, that they will be an 'Izzan 'Might' for them.

82) Nevertheless, they will conceal that which they knew to be the facts with their enslavement, and they will be an adversity against them.

*Eloheem Sent Reptilians To
The Kaafiriyn - The Gullty
Ones Will Have No
Intercession, Except For Those
Who Have A Covenant With
The Source - It Is Not
Suitable For The Rahman To
Take A Son. By Birth*

83) Did not you (Muhammad) see that We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) have sent Al Shayaatiyn 'the (Malevolent Beings), Satans, (The Reptilians)' upon Al Kaafiriyn 'The Concealers Of The Facts,' to incite them with an incitement?

84) So don't hasten against them. However We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will count for them a number (6000 years).

85) On that day We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will gather the ones who tremble at the mention to Al Rahmaan 'The Yields', as a group.

86) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will drive

the guilty ones to Jahannam 'Hell', a place of descent.

87) They will not possess the intercession, except he who has taken a 'Ahdaan 'Covenant' in the possession of Al Rahmaan 'The Yielder'.

88) And they said: "Al Rahman 'The Yielder', has taken a Waladan 'Son By Birth'."

89) Indeed, you all have come with a terrible thing.

90) As if the Skies Fatara 'Renders Asunder' from it, and the planet Ard (Tiamat) 'Earth' Tanshaq 'Splits', and the Jibaal 'Mountains' will fall down in Haddaan 'Destruction'.

91) That they Da'aw 'Call Upon', (pray) for a Waladdaan 'Son By Birth', Lel-Rahmaan 'For The Yielder'.

92) And it's not proper, (suitable) Le-Al Rahmaan 'For The Yielder', to take a Walad 'Son By Birth'.

*All In The Skies And Qi Come
Only To The Rahman As A
Slave - The Qur'aan Is Made
Easy For Them In The
Qurayshan Dialect*

93) That all those who are in the Skies (Eloheem Anunnaqi) and the planet Earth (Qi, Adamites), come only to Al Rahmaan 'The Yielder', as a Abd 'Slave'.

94) Indeed, We, ([We Not I] Eloheem) accounted for them, and We, (Anunnaqi) counted

them as a number (200).

95) And all of them will come to Him on the Day of Resurrection, (Standing) alone.

96) Surely those who are faithful and worked to Al Saalihaat 'Perfect Themselves, (112 Corrections)', Al Rahmaan 'The Yielder', will make Wuddaa 'Compassion' for them.

97) So have We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) only made it, (the Qur'aan) easy in Lisaanika 'Your Own Tongue', (Muhammad, The Arabian Qurayshan dialect of Arabic), that you may give good news thereby unto the ones who tremble at the mention, and warn by it a kindred who are contentious (Arabs).

98) And how many generations from before them, We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) have destroyed? Do you sense from them, from anyone, or hear for them a low sound?"

Sudlqa Allahu El Aglm

Chapter Forty-Five

Revealed In The Year 612-613 A.D.

Taahaa

(Tuwr: SinaI,

Haaruwn: Arron)


Original Order Chapter 45:

Wrong Order Chapter 20

Begin All Things With The Name Of The Source, ALLAH,

The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Sacred Valley Of Sinai - The Qur'aan Sent From Allah - Muhammad Don't Speak To Impress - The Source Knows The Secrets

45(): ('Sacred Valley of Sinai' Tuwa, Haaa: 'Haaruwn - Arron, Moses' brother).

2) (Muhammad) We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) did not send down upon you, the Qur'aan to make you unhappy.

3) It, (the Qur'aan) is nothing but a Tadhkirat 'Reminder' to those who dread (and are not being prepared).

4) It, (the Qur'aan) has been sent down from Him (Him Not Us), who Khalaq 'created' the planet 'Qi' and the skies, Al Uwlaa 'The Most High' (ANU).

5) Surely Al Rahmaan 'The Yields', established Himself firmly on Al Arsh 'The Throne' (has a seat).

6) The Skies, the planet 'Earth', (also known as Tiamat, Qi), Al Ard' and all that is between both of them, and whatever is beneath the fertile soil is only for Him ([Him Not Us] - (this galaxy)).

7) And if you, (Muhammad) yell out in your speeches - (speak to be impressive); so surely He (He Not We), knows Al Sirra 'The

Secrets', that are kept Akhfaa 'Hidden'; (He knows if you are for real).

8) The Source, ALLAH! No ELOHS (ALLAHS) would exist, if HE (HU) didn't create them. His names are the best of names (ANU, ELYOWN ELYOWN EL, YEHWEH, ADONIA, ADOWN, SHADI, OLAWM, EL ROI, RABB, ALLAH, EL ELOH, HASHEM).

Hadiyth Of Moses - Meeting With The Fire - Moses' Staff Is Used For Necessary Purposes - His Hands Turns White - He Is Sent To Pharaoh/Rameses II

9) And has the Hadiyth 'Tale' of Moses come to you, (Muhammad)?

10) When he, (Moses) saw fire, so he said to his family: "Remain! Surely I notice a fire, perhaps I will bring to you from it a lighted fuel; or I find leading calmness upon the fire."

11) So when he, (Moses) came near to it, there was a call: "Oh Moses."

12) Surely I am your Rabb, who is Sustainer, so remove your Na'alayka 'Footwear'. For surely you are on the sacred valley, (Sinai Peninsula) on the mountain, 'Tuwa.'

13) And I (I Not We), have chosen you, (Muwsaa) so listen to that which I will Yuwhaa

'Inspire You' with."

14) Innani 'Indeed I Am' Ana 'Who I Am' ALLAH. No ELOHS (ALLAHS) would exist, except by way of Me (Me Not Us). So slave for me, and upkeep My Salaawat 'Salutations As Worship' in order to Dhikri 'Remember Me'."

15) Surely the Saa'at 'Hour' is coming? I almost hide it to recompense, (reward) every Nafs 'Person' of that which it strives.

16) So don't let him turn away from it (the hour), he who does not have faith with it, and followed his 'Hawaa' Love (Low Desire), so you will perish.

17) And, "What is that in your right hand, Oh Moses?"

18) He, (Moses) said: "This is my 'Asaaya' Staff', I recline upon it, and I beat down leaves with it for my sheep; and for me, in it, are other necessary uses."

19) He (He Not We) said: "Cast it down, Oh Moses."

20) So he, (Moses) cast it down. So then it was a (serpent) Hayyat 'Moving' quickly."

21) He said: "Take it, and don't fear. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will return it, to its Al Uwlaa 'First' state."

22) And draw your, (Moses') hand to Janaahika 'Your Wing, 'Armpit.' It will come forth Baydaa-A (Lepers) 'White' from without an evil dishonorable act. It's another sign.

23) That We, ([We Not He]

Anunnaqi) will show you from Our (Our Not His), Al Kubraa 'Biggest, Oldest' signs.

24) Go, (Mosheh) to Pharoah (Ramses II). Surely he has gone to any extreme, (to do wrong) 'transgress.'

Mosheh' Request To His Rabb To Expand His Sadr - And To Untie His Tongue - Make His Brother, Aharown To Strengthen His Back

25) He, (Mosheh) said: "My Rabb expand for me, my Sadriy 'Chest'.

26) And make easy for me my command, (affair).

27) And untie a knot from my tongue."

28) That they can comprehend, have intellect of my saying.

29) And make for me, (Mosheh), a vizier, (counselor) from my family.

30) Aharown is my brother.

31) Strengthen with him, (Aharown) my, (Mosheh') back.

32) And let him, (Aharown's) be an associate in my Amriy 'Command.'

33) That We, (Mosheh and Aharown) glorify You a whole lot.

34) And we, (Aharown and Mosheh) remember You a whole lot.

35) Surely You (You Not Us), was (and are) a Basiyr 'Seer' on us (Mosheh and Aharown).



Figure 48

Exo Moshch (Moses) Hands Becomes Leperous



Figure 49
Aharown (Aaron), Son Of Imraan And Jochebed



Figure 50
Yowkebed (Jochebed), Moshah's Mother

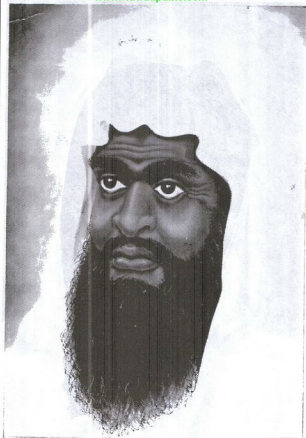


Figure 51
Moshch (Moses), Son Of Amram And Jochebed

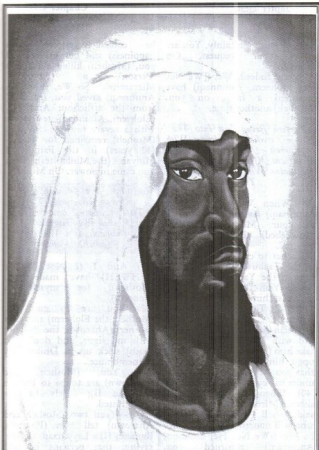


Figure 52
Midyan (Midian) Son Of Abrawhawm And Keturah

36) He said: "Certainly, You are given your request, Oh Mosheh."

37) And indeed, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have bestowed a favor on you, (Mosheh) another time.

Mosheh Being Cast Into The Ark - Yowkebed Rejoices With Mosheh - Mosheh Killed An Ancient Mizramite - Mosheh Remains With Median For 40 Years

38) When We, ([We Not I] Anunnaqi) Awhaynaa 'Inspired' to your (Mosheh's) mother (Yowkebed) that which was inspired.

39) That to cast him, (Mosheh) in the Taabuwat 'Ark.' So cast him in the Yam '(Nile) River.' So Al Yam 'The (Nile) River,' will cast him (Mosheh) by the shore. There an 'Aduwun 'Enemy' to Me, (an Egyptian/Mizramite) and an 'Aduwun 'Enemy' to him will take him (Mosheh). And I casted upon him love from Me; and that you, Mosheh be brought up under my eyes.

40) When your, (Mosheh's) sister, (Miriam) walked, so she said: "Shall I point out to you who will nourish him, (Mosheh)? So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) returned you, (Mosheh) to your mother, (Yowkebed) that her eyes might

be cooled, (rejoice with happiness) and not grieve, and you, (Mosheh) killed a Nafsaan 'Person', a (Egyptian/Mizramite). So We, (Eloheem, Anunnaqi) saved you, (Mosheh) from the affliction; And We, (Eloheem, Anunnaqi) tested you with a severe testing. So you, (Mosheh) remained for years - (40 years) in the Family of Midyan - (the Midianites). Then you came in power, Oh Mosheh.

Allah Gives Mosheh And Aharown His Signs To Go To Pharaoh - Yahuwa Tells Mosheh Not To Fear - Pharaoh Asks Who Is Mosheh's Rabb?

41) And I (I Not We -a YEHWEH) have made you, (Mosheh), for myself (a Eloheem).

42) You are to go, you, (Mosheh, the Eloheem) and your brother, (Aharown, the Prophet) with my signs, and don't you (both) slack up in Dhikri 'My Remembrance'.

43) You, (Mosheh) and (Aharown) are to go to Fir'own (Rameses II); surely he has transgressed.

44) So (you two, Mosheh and Aharown) tell him (Pharaoh, Rameses II) a Layyinaan 'Gentle' saying, that perhaps he will remember or fear.

45) They, (Aharown and



Figure 53

Ramises II



Figure 54
Mosheh's Snake Eats The Pharaoh's Snake

Mosheh) said: "Our Rabb 'Sustainer', (A Yahuwa/ Yehweh); surely we fear that he, (Pharaoh, Rameses II) will advance upon us insolently, or that he will go to the extreme to do wrong, 'transgress'."

46) He said: "Don't you two, (Mosheh and Aharown) fear. Surely I (I Not We) am with both of you, Asma'u 'I hear' (ALLAH has ears, physical) and Aaraa 'I See' (ALLAH has eyes, physical)."

47) Depart both of you to him and tell him this: "Surely we are Rusul 'Ones Sent' of your Rabb, so send with us the Banee Israa'iyl 'Sons Of Yisrawale (Ya'aqob)' and don't you torment them. Indeed, we came to you by way of signs from your Sustainer and Saalam 'Peace' will be to him who follows the Hudaa, 'Leading Calmness'."

48) Surely, for certain, there was inspired to us, (Mosheh and Aharown) that the pain, 'punishment' will be upon he who lies and turns away.

49) He, (Pharaoh, Rameses II) said: "So who's both of your Rabb, 'Sustainer', Oh Mosheh?"

50) He, (Mosheh) said: "Our 'Sustainer and Master,' who is Rabb is He (He Not We) who gave everything its Khalq 'Creation,' (nature), then Hudaa 'Leads It Into Calmness'."

51) He, (Pharaoh, Rameses II) said: "So what's the condition of

the Quruwn 'Ancient Generations' (Sumerians)?"

52) He, (Mosheh) said: "Its knowledge (Enuma Elish), in possession of my Rabb in a scripture (the Torah). My Rabbi 'Sustainer' does not lead astray (into error) and does not forget."

53) He (He Not We) is who made for you the planet (Qi) 'Earth' as a Mahd 'Cradle'; and He made paths in it for you, and He sent water down from the Skies. So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) brought forth with it, (the water), Azwaajaan 'Pairs' Shataa 'Separated' from plants.

54) You eat and pasture your An'aam 'Cattle'. Surely in that are signs for those who possess intelligence."

55) From it We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) created you, and in it We, (Anunnaqi) return you, and from it, We, (Eloheem) will bring you forth, another time (after the end, a new heaven and a new earth).

*Pharaoh Denies The Signs Of
The Eloheem, Anunnaqi -
Pharaoh's Magicians Vs.
Mosheh's Magic - Mosheh's
Serpent Swallows Up The
Pharaoh's Serpent*

56) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) showed him, (Pharaoh, Ramses II) Our (Our Not My) signs, all

of them. So he, (Pharaoh, Ramses II) denied and refused.

57) He, (Pharaoh, Ramses II) said: "Have you (Mosheh) come to us, to bring us forth from our land (Misr, 'Khamet (Kemet)/Egypt (Mizramite))' with your Sihr 'Magic', Oh Mosheh?"

58) So we, (the magicians of Pharaoh, Khamites), verily we will bring to you, (Mosheh) with Sihr 'Magic' like it. So make a promise between us and between you, (Mosheh). We, (magicians) will not break it, and neither you, (Mosheh) at an equal place."

59) He, (Mosheh) said: "Your promise, is Al Ziynat 'The Day Of Adornment' and that, the Enosites will be gathered at the hours between (Fajr, 'Breaking Forth Of Day and the) Duhaa, 'Early Daytime Hour.'

60) So (Pharaoh Rameses II) turned away, then he gathered his Kayda 'Plots', and then came.

61) Mosheh said to them: "Woe to you. Don't make up, (invent) upon The Source, ALLAH a lie. So He will utterly destroy you with a pain, (punishment); and indeed who makes up, (invent) were disappointed.

62) So they, (magicians) disputed between them about their command, 'affair' and they kept their private conference secret.

63) They, (Pharaoh's magicians) said: "These two magicians,

(Prophet Aharown and Eloheem Mosheh) want to bring you forth from your land, (Egypt) with their magic, and to take away your most distinguished ways."

64) So you, (my Pharaoh's magicians), gather your plots and then come forth in ranks, and certainly today, he who Asta'ala 'Will Be Most High', will be prosperous.

65) They, (magicians) said: "Oh Mosheh! Either that you cast down and either that we be first, to cast down."

66) He, (Mosheh) said: "In fact, you cast down first!" So then their ropes and their staffs were made to appear to him, (Mosheh) from their magic, as if they were moving quickly.

67) So Mosheh conceived a fear in his mind.

68) We, ([We Not He] Anunnaqi) said: "Don't fear. Surely you, you are the more Al A'ala 'Exalted' (a Eloheem)."

69) And cast down that which is in your right hand, (Mosheh). It will swallow up quickly that which they made. However, that which they made was only a magician's scheme, and the magician will not be prosperous, wherever he came.

*Pharaoh's Magicians Prostrate
And Have Faith In The Rabb
Of Mosheh - Ramses II Vows
To Crucify Them - Jannat*

*For Those Who Work For Al
Saalihaat 'Perfection'*

70) So Al Saharatu 'The Magicians fell down prostrating. They said: "We have faith in the Rabb of Aharown and Mosheh."

71) He, (Pharaoh, Rameses II) said: "You have faith for him, (Mosheh) before I give you permission? Surely he, (Mosheh) is your great one, who taught you the magic?" So I, (Rameses II) will cut your hands and your legs from opposite sides. And I will crucify you in trunks of palms trees; and you will know which one of us is more severe and everlasting in pain."

72) They said: "We do not prefer that which you, (Pharaoh, Rameses II) came to us with, from Al Bayyinaat 'The Clear Evidence'; and He who created us. So ordain that which you ordain. You, (Pharaoh, Rameses II) only ordain of the life of this physical world."

73) Surely we, (magicians) have faith, in our Rabb, who is 'Sustainer,' to forgive us our wrong (disagreeable) acts, and the magic which you didn't compel us upon; and The Source, ALLAH is Best and Everlasting.

74) Surely he who comes guilty to his Rabb 'Sustainer,' So surely for him is a Jahannam 'Purgatory'. He will not die, pass away in it, and will not live.

75) And whosoever comes to

Him, a faithful one, indeed, he worked to Al Saalihaat 'Perfect Himself'. So these are for them Al 'Ulaa 'Exalted' degrees.

76) Jannaat 'Gardens' of 'Adnin 'Eden', Al Anhaar 'Rivers' flowing from beneath them. Abiding eternally in them; and that is the reward for who is pure."

*Mosheh Inspired To Travel
Through The Reed Sea -
Pharaoh And His Hosts Were
Covered In The Reed Sea -
Sending Down Of Manna
(Reishi Mushroom) And Quails
To The Israelites*

77) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Inspired 'Weh/Wahy' to Mosheh, that to move about with my slaves, (Children of Yisrawale/Ya'aqob), so strike forth for them a dry way in Al Bahr 'The (Reed) Sea.' Don't fear an overtake by the (Misramites/Egyptians/Khemite) and don't dread.

78) So the Pharaoh, (Ramses II) followed them, (children of Yisrawale) with his armies. So he covered them, (Ramses II and his hosts) from Al Yamm 'The (Reed) Sea' that which covered them.

79) And (Pharaoh, Rameses II) lead astray (into error), his kindred and he was not lead into calmness.

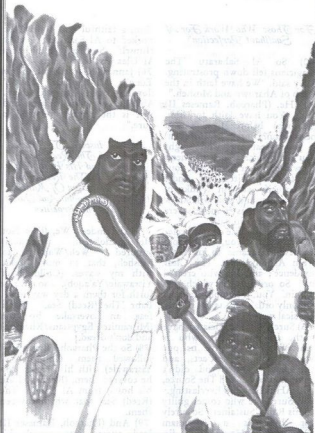


Figure 55
The Parting Of The Reed Sea

80) Oh Children Of Yisrawale! Indeed We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) delivered (saved) you from your enemy, (Egyptians) and We promised you the right side of Al Tuwr, Mount Sinai; and We, (Eloheem, Anunnaqi) sent down upon you the Manna (Reishi Mushroom), and Salwaa 'Quails.'

81) Eat from the Tayyib 'Agreeable' things lawful food that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) provided you; and don't transgress in it. So my wrath will descend upon you, and whomever my wrath descends upon, he will indeed have his love, (desire).

82) And surely I am ghaffaaru 'Forgiving' to he who repents and Aaman 'Has Faith', and works to Saalihaan 'Perfect Himself', then he will be Ahtadaa 'Calmed'."

*Mosheh Asked Why He
Hurried From His Kindred-
Al Samiriyyu
Leads The Ya'agobites Into
Error*

83) And that which made you hurry from about your kindred, (Children Of Yisrawale/Jacob), Oh Mosheh?

84) He, (Mosheh) said: "They are these on my track, And I hurried unto you, My Rabb, so You may be contented.

85) He said: "Surely We, ([We

Not He] Eloheem, Anunnaqi) have tested your (Mosheh) Qawm 'Kindred' - (Children Of Yisrawale) from after you; and as Al Samiriyyu has made them go astray (into error).

86) So Mosheh returned to his kindred, (Children of Jacob), wrathful, sorry. He, (Mosheh) said: "Oh my kindred, did your Rabb 'Sustainer' not promise you a Hasanaan 'Good' promise? So did the covenant seem long upon you. Or do you want wrath from your Rabb to descend upon you? So you broke my promise."

87) They (Children Of Yisrawale) said: "We did not break your, (Mosheh) promise with our power; but, We carried burdens (heavy metals) from the adornment of the kindred (Children of Yisrawale). So We Qathafa 'Pelted' them in it. So Al Samiriyyu also casted down."

88) So he, (Al Samiriyyu) brought forth for them a 'Ijlaan 'Golden' Calf' (symbolic of Hathor, the Egyptian deity) in Jasadaan 'Body', he had a mooing sound, And They (Children Of Yisrawale/Jacob) Said: "This Is ILAAHUKUM (Your ALLAH) 'Source', And The ILAAHU (ALLAH) 'Source' Of Mosheh, So he forgot.

89) So don't they, (Children of Yisrawale) see, did not return unto them a saying; and (the golden calf symbolic of Hathor,

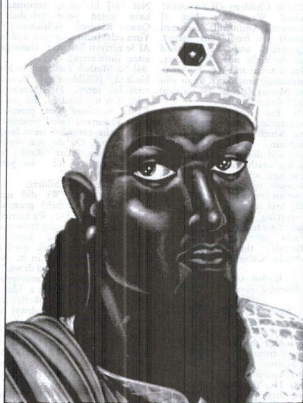


Figure 56

Samiyr, The One Who Made The Children Of Israel Make The Golden Calf Symbolic Of Hathor



Diagram 10
Mount Sinai - The Sinai Peninsula

the Egyptian deity) does not possess for them harm, nor a benefit?"

*Aharown Tells The Israelites
They Are Tested By The Calf
- Moshch Is Upset With His
Brother - Moshch Questions Al
Samiriyyu*

90) And Aharown indeed said to them, (Children Of Yisrawale) from before: "Oh my kindred, you were only tested by it, (the golden calf symbolic of Hathor, the Egyptian deity) and surely your Rabb, who is Sustainer, is Al Rahmaan 'The Yielder.' So follow me, and obey my command."

91) They said: "We will not cease upon it, being obsessed (with the golden calf), until Moshch returns unto us."

92) He, (Moshch) said: "Oh Aharown, what hindered you when you did see them gone astray, (into error)?"

93) Do not you follow me? So did you, (Aharown) disobey my command?

94) He, (Aharown) said: "O son (Moshch) of my mother, (Yowkebed), don't seize me by way of Lihyati 'My Beard', nor Raasi 'My Head'; surely I dread that you will say: "You have made a separation, between the Banee Israaiyl 'Children Of Yisrawale/Ya'aqob', and will not watch my saying."

95) He, (Moshch) said: "So What's your matter, Oh Samiriyyu?"

96) He, (Al Samiriyyu) said: "I saw of that which they didn't see of it. So I, (Al Samiriyyu) seized a handful from the track of the Rasuwl 'One Sent,' so I flung it and I also allowed my Nafs 'Spirit/Self' to be seduced."

*Moshch Punishes Al Samiriyyu
- Eloheem Burns The Calf
And Throws It Into The
Yamm - No Source Will Exist
Except By Way Of Allah*

97) He (Moshch) said: "So go, (Al Samiriyyu)!" Surely for you in Al Hayaati 'The Life', that you will say: "Don't touch me; and surely for you is a promise, you cannot break it; and look, (Al Samiriyyu) to your ILAAHIKA (ALLAH) 'Source,' (the calf, which represents the Egyptian deity Hathor) which you remained obsessed with. Verily We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) will burn it, then We, (Eloheem) will ground it into powder, and scatter it into the Yamm 'Sea'."

98) However, ILAAHUKUM (your ALLAH) 'Your Source' is ALLAH, He whom no ELOHS (ALLAHS) would exist except by way of HU (The Creative Force Of Will). He (He Not We) expands all things in knowledge.

Qur'aan Gives You,

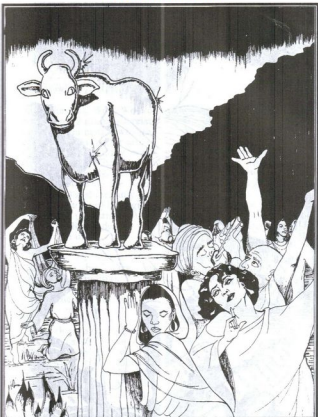


Figure 57
Golden Calf Symbolic Of Hathor (Hagar)

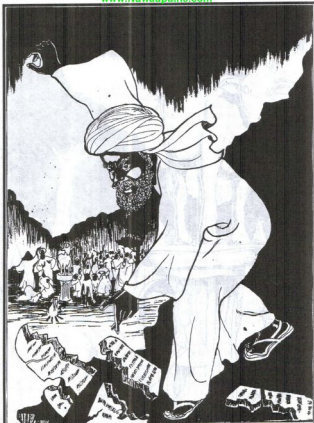


Figure 58
Moshch (Moses) Throwing The Stone Tablets

Muhammad Knowledge Of The Torah And Injiyl - Blowing Of The Trumpet (Shofer) By Raphael - The Gathering Of The Guilty Blue-Eyed

99) Just like that, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) relate to you, (Muhammad) news - (the Scriptures before the Qur'aan) of that which certainly has happened before. The Qur'aan gives you knowledge of that which took place in the Torah and the Injiyl) and certainly We, (Eloheem, Anunnaqi) have given unto you, (Muhammad) a Dhikraan 'Reminder' (The Qur'aan) from us."

100) And who turns away from it, so surely he will carry a burden on the Day of Resurrection, (Standing).

101) Abiding eternally in it and a heavy burden will become evil to them, on the Day of Resurrection, Qiyaamat."

102) On this day, (Yawmu al Akhiri 'The Last Day') in which the trumpet (shofer) will be blown, (by the Eloheem Raphael), We, ([We Not He] Anunnaqi) will gather the guilty Zurqaa 'Blue-Eyed' (Halaabeans, Flugelrods)."

103) They, (the cursed blue-eyed) whispers between themselves; you only stayed not more than ten - (ten minutes out of one hour).

104) We, ([We Not He]

Eloheem, Anunnaqi) are aware of that which they said when their most distinguished one in the way said: "If you remained, except a day."

Muhammad, Being Asked About The Mountains On That Day - No Intercession Will Benefit On The Last Day - Faces Will Humble Themselves To The Everliving - The Qur'aan Was Sent Down In The Qurayshan Dialect

105) And they ask you, (Muhammad) about the mountains (Caucasian mountain between the Black and Caspian Sea); so tell them: "My Rabb who is 'Sustainer' will reduce them to powder, and scatter them abroad."

106) So He (He Not We) will let it be a desolate, (empty) plain.

107) You won't let see in it crookedness, nor a curve.

108) On that day, they will follow the one who calls (The Messiah). There is no Iwaja 'Crookedness' to him (The Messiah); and the voices will be low Lil-Rahmaan 'For The Yelder'; so you will not hear except a shuffling sound.

109) On that day Al Shafaa'at 'The Intercession' will not benefit, except he whom Al Rahmaan 'The Yelder' (ANU) has given permission to him; and he whose saying, he was content

with.

110) He (He Not We) knows that which is between their hands, and that which is behind them; and they will not surround it in knowledge.

111) And the faces will humble themselves Lil-Hayy 'For The Everliving' Al Qayyuwm 'The Subsisting' (AL KULUWM, the ALL) and indeed he who carries an unjust deed will be disappointed.

112) And he who worked for Al Saalihaat 'The Perfection', and he is a Mu'min 'Faithful One', He will not fear an unjust act nor an oppression"

113) And just like that, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down to him, (Muhammad), an Arabic Qur'aan, (in the Qurayshan dialect) and We, (Anunnaqi) Sarrafnaa 'Gave Explicit Details' in it, from the promise; perhaps they will tremble at the mention, or it will make them Dhikraan 'Remember' Him.

*Muhammad Told Not To
Hurry The Qur'aan - Eloheem
Made A Covenant With Zakar
- Haylal Refused To Prostrate
Before Zakar*

114) Fa-ta'aala 'So the Most High', The Source, ALLAH Al Malik 'The Ruler', of Al Haqq 'The Fact'. And (Muhammad), don't hurry with the Qur'aan

before it is concluded, (finished) unto you, (Muhammad. Don't add or try to rush) Wahyuhu 'Its Inspiration'; and say this (Muhammad): "My Rabb who is 'Sustainer,' has increased my knowledge."

115) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) covenanted to Adam from before (Suhuf of Adam), Fa-Nasiya 'So He Forgot', and We, (Eloheem) didn't find a determination for him.

116) And when We, ([We Not I] Eloheem), said for all the Malaa-ikat 'Eloheem, Anunnaqi' (Agreeable, Benevolent Beings, Serapheem and Disagreeable, Malevolent Beings, Cherubeem) to Asjudu 'Prostrate' for Adam. So they all Sajadu 'Prostrated' except (the rebellious Eloheem, the Devil), Iblis, (also known as Samael, Nakhsh, Haylal, son of Shakhar and Mylitta). He refused (Iblis, 'Azaaziyl was one of the Jinn species of Eloheem - the Cherubeem).

*Satan An Open Enemy To
Zakar And Nekaybaw - In
The Jannat You Don't Have
To Worry About Food And
Clothes - Zakar And Nekaybaw
Transgressed And Ate Off The
Tree*

117) So We (We Not I) said: "O Adam! Surely this is your open 'Aduwun 'Enemy' to you and

Zawjik 'Your Mate's', (Neqaybaw/Eve/Hawwah), so do not let him drive both of you out of the Jannat 'Garden,' that you will become miserable."

118) Surely, in (the Enclosed Garden of Delight), you were not to be hungry, nor do you go (about) naked (in need of clothes).

119) And in it, you will have no thirst, nor a scorching sun.

120) So Al Shaytaan, (Samael, Nakhash, Al Khannaas, The Reptilian), whispered to him, he said: "O Adam shall I direct you to the Shajarat Al Khuldi 'Tree of Immortality' and a Mulkin 'Rulership' that doesn't wear out (its everlasting)?"

121) So they both (Zakar and Neqaybaw) ate of it, (the tree in the center of the Enclosed Garden of Delight) and their private parts manifested for them and they both began to sew together (fig leaves and made themselves short skirts, - aprons for themselves), of the leaves of the Jannat and Adam (Zakar/Kadmon) had disobeyed his Rabb 'Master Kakael'. He, Adam was seduced, (cut off).

*Adam Seeks Repentance-
They Are Told To
Get Out Of The Jannat -
Satan The
Reptilian
Is A Clear Enemy To
Neqaybaw's Seed*

122) Then his Rabb, chose him (Adam), so He repented upon him, and He lead him into calmness.

123) He (He Not We) said: "You two, (Zakar and Nekaybaw) Ahbitaa 'Get Down' from it (the south of Kodesh) all together (Adam, Eve, Thukkiac). Some of you are an enemy for others - (Neqaybaw's seed and Satan, the Reptilian's seed). So either will come to you, from Me, Huda 'Calmness'. So he who follows My calmness, he will not be lead astray (into error), and he will not be miserable."

*He Who Turns Away From
The Source, Surely He Will
Be Blind On The Day Of
Resurrection*

124) And he who turns away from about Dhikri 'My Remembrance', so surely for him is a narrow livelihood; and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) will gather him blind on the Day of Standing, 'Resurrection.'

125) He will say: "My Rabb, who is 'Master and Sustainer', why did you gather me A'amaa 'Blind', and indeed I was a Basiyr 'Seer'?"

126) He will say: "Also Our, ([Our Not My] Anunnaqis') signs came to you, so did you forget them? And you are also forgotten this day."

127) And also We, ([We Not I]

Eloheem, Anunnaqi) will recompense he who exceeds bounds, and didn't have faith with the signs of his (His Not We) Rabb; and verily the pain of Al Aakhirah 'The End' is more forceful, and everlasting.

*How Many Generations Has
The Eloheem Destroyed? -
Muhammad Told To Glorify
His Rabb - To Command His
Family With Al Salaat -
Muhammad Tell The Meccans
Everyone Is Waiting For The
Signs Of El Rabb*

128) Did he not lead calmness for them? How many from the generations We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) destroy before them (Adam and Hawwah), walking in their dwellings? Surely, in that are signs for the first ones (who possess) intelligence.

129) And if not a word proceeded from your Rabb 'Sustainer', verily it, the pain, 'punishment' was a must and a predetermined time.

130) So have patience, Oh (Muhammad) on that which they say, and glorify your Rabb, with gratitude, before the appearance of the rising of Al Shams 'The Sun', and before Gharuwbihaa 'Its Appearance Of Setting In The West'. So glorify parts (times) of Al Layl 'The Shadow Hour period' and extremes parts

of Al Nahaar 'The MIDDAY', perhaps that you may be contented with.

131) And don't stretch 'Aynayka 'Your Eyes' to that which We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) has provided of it, Azwaajaa 'Mates' from them; splendour of the life of the physical world, that We, (Eloheem, Anunnaqi) test them in it; and a provision of your Rabb, is Khayrun 'Best' and everlasting.

132) And command your family with Al Salaat 'Salutation As Worship' and have patience upon it. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) don't ask you for a Rizqaan 'Provision'. We, (Eloheem) provided you, and Al 'Aaqiyat 'The (End), Consequence' is for those who tremble at the mention.

133) And they (the Meccans) say: "Why does he (Muhammad) not give us a sign from his Rabb 'Sustainer'? Did not already come to them Bayyinah 'Clear Evidence' from what is in Suhufaan Al Uwlaa 'The First Pages', (the Enuma Elish, and Gilgamesh Epics, Etana, Atra Hasis, The Descent Of Ishtar, Nergal And Arishkegal, The Secrets Of Adafa)?"

134) And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) had destroyed them with a pain, (punishment) from before him, (Muhammad), verily they, (the

Adamites) would have said: "Our Rabb, if only you had sent to us a Rasuwlaa 'One Sent' so we would have followed your signs from before, we were humiliated and disgraced."

135) Tell them (Muhammad): "Everyone is awaiting, so all of you are to wait. So you will know those who are the companions of the even (equal) narrow path, and those who are lead into calmness."

Sudika Allahu El Aelm

Chapter Forty-Six

Revealed In The Year 617 A.D.

Al Waaqi'ah

(The Great Event)

Original Order Chapter 46:

Wrong Order Chapter 56

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*Al Waaqi'ah Must Come To
Pass-Abasing The Jinn, And
Exalting The Elite Few Of
The 144,000 -Tiamat Will Be
Shaken With A Ruffaa -The
Jibaal Will Be Scattered - You
Shall Be Three Azwaaj
-Companions Of The Right
Hand Are Happy - The
Companions Of The Mash'amah
Will Be Wretched -The Elite
Few Of 144,000 Will Be The*

Chosen Of Allah

46 When Al Waaqi'ah 'The Great Event', (the Last Day) comes to pass,

2) There is no belying, denying, it's coming to pass.

3) Abasing, (one party, the Jinn/Cherubeem and his followers), exalting (the others, the Elite Few of the 144,000 and their chosen),

4) When the planet Earth, 'Ard (Tiamat)' shall be shaken with a Ruffaa, 'Severe Shaking' (Earthquake),

5) And the Jibaal 'Mountains' shall be made to crumble with (an awful) crumbling,

6) So that they shall be as scattered Habaa'a 'Dust.'

7) And you shall be three Azwaaj, 'Mates - (Sorts)' - (1. The Elite Few of the 144,000 2. The true followers of the Mahdi, the Messiah and the Mujaddid 'Reformer', Malachi Z. York; and 3. Those who followed Satan, the Reptilian).

8) Then (as to) the Companions, 'Ashaab of the Right Hand, (the followers of The Mahdi, The Mujaddid, 'Reformer' and The Masiyh, 'Messiah' who followed Arawhawm's Rites); What is Companions of the Right Hand! (How happy are they).

9) And as to the Companions Of Al Mash'amah 'The Left Hand' - (those who followed

Satan, the Reptilian; those who turn away to follow the Sons of Canaan or the many sects); what is the companions of the left hand! (How wretched are they).

10) And the foremost are the foremost - (Elite Few of the 144,000; the chosen ones which will also be all of the Newsbearers and Apostles),

*These Newsbearers And Ones
Sent Are Drawn Near Allah
- They Will Be Entered Into
Jannaat - A Numerous
Company Of The Dinneer
- They Sit Around The
Throne - They Are
Mutaaqabiliyn, Sitting Around
The Throne - Wildaan Will
Be Round Them - They Will
Have Goblets And Pitchers Of
Fresh Water - They Will Not
Be Affected With Headaches
- And Faakihat Which They
Choose*

11) These are they who are drawn near, (the Newsbearers, Ones Sent, the Mahdi, the Mujaddid, the Messiah and the Elite Few of the 144,000),

12) Into the Na'iym 'Gentle' Jannaat 'Gardens'.

13) A numerous company from amongst Al Awwaliyn, 'The First' (the Dinneer: Serapheem and Cherubeem).

14) And a few from amongst the latter, (the 24 Elders, who are the Dinneer sit around the

throne, but were on the Earth).

15) On decorated, Surur 'Couches',

16) Reclining on them, Mutaaqabiliyn, 'Facing One Another,' (sitting in a circle around the throne),

17) Round about them shall go Wildaan 'Youths,' never altering in age, (the Elite Few of 144,000 - Etherians).

18) With Akwaab 'Goblets' (there will be goblets in the garden, physical) and Abaariyq 'Pitchers,' (there will be pitchers in the garden, physical) and a cup (there will be cups in the garden, physical) of fresh source of water,

19) They Shall Not Yusadda'awn 'Be Affected With A Headache' thereby; nor shall Yunzifuwn 'They Get Exhausted';

20) And Faakihat 'Fruits' of that which they choose (there will be fruits in the garden, physical),

*They Will Have Lahm As
They Desire - And Huwr 'Ayn
- They Resemble Pearls - They
Will Not Hear vain Discourse
In It - They Will Hear
Salaam - The Companions Of
The Right Hand Are Happy
- They Will Have Thornless
Late-Trees, And Banana
Trees In It, And An Extended
Jill*

21) And the Lahm 'Flesh,' of

Tayr 'Fowls' as such as Yashtahuwn 'They Desire' (all things from planet earth);

22) And Huwr 'mates having such Pale White' Ayn 'Eyes That The Pupil Are Dark Black'.

23) Resembling the hidden, Luw'luw 'Pearls';

24) A Jazaa'a 'Reward' for that which they used to do.

25) They shall not hear in it, vain or disagreeable discourse (within the the Enclosed Garden of Delight),

26) Except the saying; Salaam, 'Peace,' Salaam 'Peace.'

27) And the Ashaab, 'Companions' of the Right Hand - (the followers of The Mahdi, The Mujaddid, 'Reformer,' Malachi Z. York, or The Messiah, who follow the Millat 'Rites' of Aabrawhawm); what is the companions of the right hand (how happy are they)!

28) Amid Sidr Makhzuwd 'Thornless Lote-Trees'.

29) And Talh 'Banana trees' with fruits, one above another (all things from planet earth),

30) And extended Zill 'Shade',

They Will Also Have Flowing Water - And Fruits That Is Not Prohibited - They Were Born Again - They Made Them Abkaar - They Were Also Atraab - The Companions Of The Right Hand Follow The Rites Of Aabrawhawm - A Sullah From Al Awwaliyn -

The 24 Elders Sit Around The Throne

31) And water Maksuwb, 'Flowing Constantly,'

32) And abundant Faakihat 'Fruit' (all things from planet earth),

33) Neither intercepted nor Mamnuw'ah 'Prohibited'.

34) And Marfuw'at 'Exalted' Furush 'Thrones',

35) Surely We (We Not He), have made them to Anshaa 'Grow' into a (new) Inshaa-a 'Growth', (born again pure);

36) Then We (We Not He) have made them Abkaar 'Virgins,' (all are returned to purity),

37) Loving, Atraab, 'Equal In Age, (All Are Age 19),'

38) For the sake of the Companions of the Right Hand - (the followers of The Mahdi, The Mujaddid, 'Reformer' Malachi Z. York, and The Messiah, who follow the Millat 'Rites' of Aabrawhawm).

39) A Sullah 'Numerous Company,' from amongst Al Awwaliyn 'The First' (Anunnaqi).

40) And a numerous company from amongst Al Aakhiriyn 'The Last', (the 24 Elders who sit around the throne but were on Earth),

The Companions Of The Left Hand Follow The Disagreeable One In Samuwm, And

Hamiym - They Will Have A Shade Of Black Smoke - They Were Living In Ease And Plenty - They Perished In Supreme Violation - When They Die, Will They Be Mab'uwthawn? - Or What About Their Fathers, The Awwaliyn? - On That Day, They Will Be Gathered Together On An Appointed Hour

41) And the Ashaab 'Companions' of the Left Hand, what is the Companions of the Left Hand? (How wretched they are - those who followed the Disagreeable One).

42) In Samuwm 'Hot Wind', and Hamiym, 'Boiling Water,'

43) And the Zillin 'Shade' of Yahmuwm, 'Black Smoke,'

44) Neither Baarid, 'Cool' nor Kariym, 'Generous.'

45) Surely they were before that, made to live in ease and plenty - (they had the good life on the planet Qi/Tiamat, 'Earth.')

46) And they perished in Al Aziym 'The Supreme' violation!

47) And they used to say: "What! When Mitnaa 'We Die' and have become Turaab 'Dust' and Izaam 'Bones', shall we then indeed Be Mab'uwthawn 'Raised, Brought Back To Life'?

48) Or our Abaa' 'Fathers' of Al Awwaluwn 'The Ancient Ones'.

49) Say, the first and Al

Awwaliyn 'The Last', (Eloheem, Anunnaqi) and Al Aakhiriyin 'The Last Ones'.

50) Verily they shall most surely be gathered together for the Miyqaat, 'Appointed Hour' of a known day.

Those Who Err And Call It A Lie, Most Surely Will Eat Of The Bitter Tree Of Zaquuwm - Their Bellies Will Be Filled With It - They Will Drink Boiling Water, Which Is Their Nuzul - Eloheem Created You - Anunnaqi Will Not Be Masbuqiyn

51) Then shall you, O you who err and call it a lie!

52) Most Surely La-aakiluwn 'They Eat' of a Shajarin 'Tree' of Zaquuwm - (a very bitter tree that grows in the eastern part of Arabia),

53) And Maa'li'uwn 'Fill' your bellies with it;

54) Then drink over it of Al Hamiym, 'Boiling Water';

55) Then drink as the thirsty camel drinks.

56) This is their Nuzul 'Entertainment' on the Yowm Al Diyn 'Day of Decision'.

57) We, (Eloheem, Anunnaqi) have Khalaqnaakum 'Created You All' (Adamites), why do you not trust?

58) Afa-ra-aytum 'Have you all seen' (considered) Maa 'What' you have Tamnuwn 'Seeded'

(cloned)?

59) Is it you (the companions of the left hand) that create it, or are We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Al Khaaliquwn 'The Creators'?

60) We, ([We Not He] Anunnaqi) have ordained Al Mawt 'Death' among you and We Are Not To Be Masbuqiyn, 'Overcome',

That We, Eloheem May Bring The Likes In Your Place - We Used To Know The First Growth: Malakuwt - The Anunnaqi Can Break It Down Into Pieces - The Enosites Are Indebted And Deprived - The Eloheem Ask About The Water We Drink - Are The Enosites The Munziliyn Of The Cloud? - The Anunnaqi Could Make Them, The Clouds Ujaaj

61) In order that We, ([We Not He] Eloheem) may Nubaddila 'Change' The Amthaal 'Likes,' of you and Nunshi-akum 'Make You Grow, Create' into that which you do not know.

62) And certainly, you all know Al Uwlaa 'The First' Al Nashaat 'Growth, Creation': (Malakuwt, created before the planet Earth). Why do you not then Tazakkaruwn 'Remember It'?

63) Have you considered what You Tahruthuwn 'Sow'?

64) Is it you that cause it to grow, or are We, ([We Not He]

the Anunnaqi) the Zaari'uwn, 'Causers Of Growth'?

65) If We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) pleased, We should have certainly made it broken down into pieces, then would you begin to Tafakkahuwn 'Lament'.

66) Verily We (We Not He) are Mughramuwn 'Burdened With Debt'.

67) Bal 'In Fact', we are deprived.

68) Have you considered Al Maa'a 'The Water' which You Tashrabuwn 'Drink'?

69) Is it you, (Enosites) that sends it down from Al Muzn 'The Clouds' or are We, ([We Not I] Anunnaqi) Al Munziluw'n 'The Senders'?

70) If We (We Not He) pleased, We, (Anunnaqi) would have made it Ujaaj 'Salty'. So why then do you not Tashkuruwn 'Give Thanks'?

What About The Fire You Strike - Are Enosites The Producers Of The Shajar? - The Anunnaqi Made It A Taakirah - So Sabbath The Name Of Your Rabb - It Is A Supreme Oath - Nusqu Swears By The Falling Nujuw'm - The Qur'aan Is Generous - It Is In The Hidden Mother Scripture - None Can Touch It, Except The Mutahharuwn - Qur'aan Is A Tanziyl From The Rabb Of

The Known Worlds

71) Have you considered Al Naar 'The Fire' which Tuwruwn 'You Strike (Kindle)?'

72) Is it you that produce the Shajar 'Trees' for it, or are We, ([We Not He] Anunnaqi) the Munshi'uwn 'Producers'?

73) We, ([We Not He] Eloheem) have made it A Tazkirah 'Reminder' and an advantage for The Muqwiyn, 'Wayfarers Of The Desert.'

74) Therefore Sabbih 'Glorify' with the name of your Sustainer, who is Rabb, Al 'Aziym 'The Supreme' (ANU).

75) Falaa 'But Nay! Uqsimu 'I Swear' Be-Mawaaqi'e 'By The Falling' Of Al Nujuwm 'Stars' (coming crafts),

76) And most surely it is a 'Aziym 'Supreme' oath if you only knew;

77) Most surely, it is a Kariym 'Generous' Qur'aan,

78) In a scripture that is Maknuwn, 'Hidden (And) Well Guarded' (the mother of the Scripture - The Holy Tablets).

79) None shall touch it, (the Mother of the Scripture) save the Mutah-haruwn, 'Purified Ones' (children of Nuwaubu).

80) It, (the Qur'aan) was Tanziyl 'Sent Down', from the Rabb, 'Sustainer' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

The Qur'aan Is The Real

Hadiyth - And You Lie, Trying To Make A Living - When The Soul - That Time, You Won't Be Able Explain It - Just Correct Yourselves With The Facts, If You Are Saadiqiyn - Those Who Are Drawn Near To The Source, Then Rayhaan And A Jannat Will Be With Them - Peace Be Upon Those Of The Right Hand

81) Do you then hold Al Hadiyth, 'The Tales - Announcement' in contempt? (The Qur'aan is the real Hadiyth).

82) And to give it, (the lie), you make your means of Rizq, 'Provision.' You (try to make a living out of) lying (on the Qur'aan by making up Tales, 'Hadiyth to make yourselves leaders - muslims in latter days).

83) Why is it not then that when it, (the soul) comes up to Hulquwm 'The Throat', - (You get lost for words),

84) And Hiyna'izin 'At That Time', you look on (and you just jump over what you can't explain),

85) And We (We Not I) are nearer to Him, than you, but Tubsiruwn 'You do not See'.

86) Then why not, if you are not Madiyniyn 'Held Under Authority'. (If no one is over you, you are the leader),

87) Will you not send it back,

just correct yourself with the facts, if you are Saadiqiyn, 'Truthful (Zodokites)?'

88) Then if he is one of those drawn near, (of the time of a Newsbearer or One Sent, The Mahdi, The Reformer, Malachi Z. York, or the Messiah),

89) Then Rawhun 'Happiness', and Rayhaan 'Bounty' and a Naiym 'Gentle' Jannat, 'Garden' (will be his).

90) And if he is one of those on the Yamiyn, 'Right Hand' - (the followers of The Mahdi, The Mujaddid, 'Reformer,' or The Masiyh 'Anointed Messiah,' who follow the Millat 'Rites' of Arawhawm.)

91) Then Salaam 'Peace' to you from those on the Yamiyn 'Right' hand.

*If He Is Of The Daalluwn
- He Shall Have A Nuzul Of
Boiling Water - They Will Be
Burning In Hell, For A Fact
- Glorify The Name Of Your
Rabb*

92) And if he is one of the liars, Al Daalluwn 'The Erring Ones', (the followers of Satan, the Reptilian).

93) He shall have a Nuzul, 'Entertainment' of Hamiym 'Boiling Water',

94) And Tasliyah 'Burning' in Jahiym 'Hell'.

95) Most surely, this is a certain Haqqun 'Fact' (beyond a doubt);

96) Therefore, Sabih 'Glorify' the name of your Rabb Sustainer/Master, who is Al 'Aziym 'The Supreme'.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Forty-Seven

Revealed In The Year 617-618 A.D.; Verses 197,

224-227 Revealed In Medina

Al Shu'araa


(The Poets)

Original Order Chapter 47:

Wrong Order Chapter 26

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Qur'aan Is A Clear
Scripture - Muhammad, Don't
Grieve Over Meccans Because
They Do Not Become Faithful*

47 () Taa: Tuwr - Mount Sinai, Siyn: 'Sorceries, Magic' Miym: 'Mosheh.'

2) These are verses of the clear Al Kitaab 'Scripture'.

3) Perhaps you will kill yourself with grief, because they (Isrealites) do not become faithful.

4) If We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaki) please, We can send a sign down upon them, (the Adamites) from the Skies, so that their needs will

become humble to it.

5) And a Dhikr 'Reminder' does not come to them which is new - a Hadiyth (in reference to the information of the Qur'aan which was new and was not in the Torah and the Injiyl, 'Evangel, Revelations') from Al Rahman, 'The Yielder', except that, they turn away from it.

6) So indeed, (they Israelites) lied and denied it, (the Qur'aan), but there the news, shall soon come unto them about that which they mocked.

7) Or have they not seen the planet (Qi/Tiamat), Al Ard also called 'Earth' and how We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) cause to grow in it of every Kariym 'Generous', Zayjin 'Kind Of Produce'.

8) Surely in that, there is a Aayat 'Sign' and yet most of them are not faithful.

9) And surely your Rabb 'Sustainer', verily is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

Mosheh Is Told To Go To Pharaoh - Mosheh Fears He Will Be Rejected - His Tongue Is Not Free - He Asks For His Brother Aharown To Be Sent To The Jacobites

10) And when your Rabb called out to Mosheh, "that you are to go to a Qawm 'Kindred' who are Al Zaalimiyn, 'Ones Who Are In

A State Of Unjustness."

11) The kindred of Pharaoh (Rameses II); will they not tremble at the mention?"

12) He said: "My Rabb 'Sustainer', surely I, (Mosheh) fear that they will reject me."

13) And my Sudry 'Chest' is narrowed and my Lisaaniy 'Tongue' will not be free - (Mosheh did not speak pure Aramic [Hebrew], because he was raised amongst the Mizraimites/Egyptians and not amongst the Israelites [Hebrews] as his brother Aharown/Haarown), so (therefore) send to (them, Israelites/Jacobites), Aharown, (because he spoke pure Hebrew.)

Mosheh Killed A Mieramite- The Miracles Of Mosheh, Are The Anunnaqi - He Asks For The Banee Israa'iy

14) And they have a disagreeable act against me; (Mosheh killed a Mizraimite/Egyptian and hid him in the sand). So I fear that they, (the Mizraimites) will kill me.

15) He (A Yehweh) said: "By no means, So go both of you - (Mosheh and Aharown) by way of Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi's) signs, (miracles); surely We, ([We Not He] Anunnaqi) are with you, hearing.

16) Then come to Pharaoh and say: "Surely we are the Rasuwl 'One Sent' of the Rabb who 'sustains' Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds' (all known things).

17) Send with us, (Aharown and Mosheh), the Banee Israaaiyl 'Children Of Yisrawale/Jacobites'.

18) He, (Rameses II) said: "Didn't we, (Egyptians/Mizraimites raise), sustain you, (Mosheh), amongst us as a Waliydaan 'Child', and you dwelled amongst us, the (Egyptian/Mizraimites) for many (25) years of your life?"

19) And you, (Mosheh) did your deed which you did; and you are of Al Kaafiriyn 'The Concealers Of That Which They Know To Be The Facts'."

20) He, (Mosheh) said: "I did it, then, am I of Al Daaliyn 'The Ones Astrayed (into error)?"

21) So I, (Mosheh) fled from you, (Rameses II) when I feared you, then my Rabb, gave wisdom upon me and made me of Al Mursaliyn 'The Ones Sent'.

22) And that is a favour, you bestowed on me. That you, (Rameses II) enslaved the Children Of Yisrawale/(Jacobites).

Says He Is The Only Eloh

23) Fir'own (Rameses II) said: "And what is the Rabb, 'Sustainer' of all the Known Worlds?"

24) He, (Mosheh) said: "The Rabb (ANU) of the Samawaat 'Skies' and the planet Qi and that which is between them if you were sure."

25) (Pharaoh) said to those around him: "Do you not hear?"

26) He, (Mosheh) said: "Your 'Sustainer' who is Rabb, and the Sustainer of your fathers, of Al Awwaliyn 'the Ancient Ones', (the Eloheem, Dinneer)."

27) He, (Pharaoh) said: "Surely your Rasuwl who has been 'sent' to you, is indeed Majnuwn 'possessed of a Jinn', (Disagreeable, Malevolent Being, A Cherubeem)."

28) He, (Mosheh) said: "The Rabb 'Sustainer' of Al Mashriq 'The East' and Al Magrib 'The West' and that which is between them, if you overstand?"

29) He, (Pharaoh) said: "If you take an ILAAHAAN, (ALLAH) 'Source' besides me, I will indeed make you one of Al Musjuwniyn 'The Imprisoned Ones'."

30) He, (Mosheh) said: "Even if I bring to you a Mubiyn 'Clear' thing?"

31) He, (Pharaoh) said: "Then bring it, (miracles), if you are of the Al Saadiqiyn 'Truthful Ones' (Sodoqites/Zodoqites)."

*Rameses II Asks About The Rabb Of The Known Worlds
ANU- Fir'own Thinks
Mosheh Is Majnuwn - Pharaoh*

*Mosheh Casts Down His Staff
- His Hand Turns White -
The Egyptians/Mizraimites
Want To Detain Him And His
Brother - Confrontation
Between Pharaoh's Magicians
And Mosheh*

32) So he, (Mosheh) cast down his Asaa 'Staff', so then it manifested as a Thu'baan 'Serpent'.

33) And he, (Mosheh) drew out his Yad 'Hand', and then it was baydaa'u 'white (leprous)' to the beholders.

34) (Rameses II) said to the rulers (chiefs) around him: "Surely, this verily a 'Aliym 'Learnt' Saahirr 'Magician'.

35) He, (Mosheh) wants to drive you out of your land by his Sihr 'Magic'. So what is it, that you command?"

36) They said: "Detain him, (Mosheh), and his brother, (Aharown) and send gatherers into the cities."

37) They shall bring to you, every 'Aliym 'Knowing' Sahhaarin 'Magician'.

38) So Al Saharat 'The Magicians' gathered at an Miyqaat 'Appointed Time' on a Ma'luwm 'Fixed' day.

39) And it was said to the Enosites: "Will you all be gathered?"

40) Perhaps we will follow Al Sahrat 'The Magicians', if they are the victors."

41) So when Al Sahrat 'The Magicians' came, they said to Pharaoh (Rameses II): "Shall there be a reward for us, if we are the victors."

42) He, (Pharaoh) said: "Yes and surely, you will then be of those who are near."

43) He, Mosheh said to them: "Al Quw 'Cast down' that which you are going to Mulquwn 'Cast Down'."

44) Then they Al Quw 'Cast Down' their ropes and their staffs and they said: "By the might of Pharaoh; surely, we shall be of the victors."

*Mosheh' Staff Seized The
Magicians' Staff - Magicians
Have Faith In The Rabb Of
Mosheh And Aharown - The
Pharaoh Gets Mad And
Threatens To Crucify Them -
The Magicians Hope To Be
Forgiven By El Rabb*

45) Then Mosheh Al Quw 'Cast Down' his 'Asaa 'Staff'; then behold, it seized that which they falsely showed.

46) Then Al Saharat 'The Magicians' fell down Saajidiyn 'Prostrating'.

47) They, (the magicians) said: "We Aamannaa 'Have Faith' in the Rabb (ANU), 'Sustainer/Master' of all the 'Aalamiyn 'Known Worlds'."

48) The Rabb of Mosheh and Aharown.

49) He, Pharaoh (Rameses II) said: "Do you have faith in Him, before I give you permission? Surely he is La-Kabiyrukum 'The Biggest Of You', (chiefs) who taught you Al Sihr 'Magic', so that you shall know, certainly I, (Pharaoh) will cut off your hands and your feet from alternate sides; and Usalliba 'I will Crucify' you all - (hang you on a cross, all of you) together."

50) They, (the magicians) said: "No harm done; surely, it is to our Rabb that we will return."

51) Surely we, (the magicians) hope that our Rabb 'Sustainer', will forgive us for all our wrong doings, because we were of the Awwala 'First' to be Al Muw'miniyn 'Faithful'?"

*Mosheh Inspired To Travel In
The Shadow Hour Period
With The Israelites/Jacobites
- Pharaoh Sends Assemblers In
The Cities - Egyptians Drove
Them Out Of Jannaat And
Springs And Generous
Dwellings - Israelites Are
Chased By Pharaoh To The
Reed Sea*

52) Then, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Awhaynaa 'Inspired' (Mosheh), that he is to move about in the Shadow Hour Period, with my slaves, (the Jacobites); surely you all, are being followed.

53) Then Pharaoh (Ramses II)

sent assemblers into the Madaa'in 'Cities'.

54) Surely, these (Israelites) are only a small band.

55) And surely they are angry against us.

56) And surely, we are a cautious gathering.

57) So We, (Mizraimites/Egyptians) drove them out from Jannaat 'Gardens' and Uyuwn 'Springs'.

58) And treasures and a Kariym 'Generous' dwelling.

59) Just like that, We, ([We Not He] Egyptians/Mizraimites) gave it an inheritance to the Banee Israa'iyl 'Children Of Yisrawale/Ya'aqob'.

60) Then they, (Pharaoh and his host) pursued them at the Mushriqiyn 'Appearance Of The Sun' (eastward).

61) So when the two gatherings saw each other, the Ashaab 'Companions' of Mosheh said: "Surely we are caught."

*Mosheh Divides The Reed Sea
- Eloheem Drowned The
Others - Yahuwa Is The
Mighty. The Most Merciful*

62) He, Mosheh said: "By no means! Surely, my Rabb, is with me. He will lead me into calmness."

63) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Awhaynaa 'Inspired' Mosheh saying: "Strike Al Bahr 'The (Reed) Sea' with

your 'Asaaka 'Staff', then it, (the Reed Sea) was divided, then each portion was like Al 'Aziym 'The Supreme', (huge) mountain.

64) Then We, ([We Not He] Anunnaqi) drew near the others.

65) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) saved (Mosheh) and those who were with him, all together.

66) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Agraqnaa 'Drowned' the others.

67) Surely in that, there is a sign and yet most of them are not Muw'iniyn 'Faithful'.

68) And surely your Rabb, 'Sustainer/Master', for He is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

*The News Of Abrawhawm
Questions His Father About
The Idols*

69) And recite to them, the Nabaa'a 'News/Prophecy' of Abrawhawm."

70) When he, (Abrawhawm) said to his father (Terakh, also called Azawr) and his kindred - (The Babylonians), what are you slaving for?"

71) They said: "We slave for Asnaamaan 'Idols' and we will forever, be 'Akifiyn 'Loyal' to them."

72) (Abrawhawm) said: "Do they, (the idols) hear you when you call upon, (pray to them)?"

73) Or do they benefit you, or cause you any harm?"

74) They said: "In fact, we found our forefathers doing it, like this."

75) He, (Abrawhawm) said: "Can't you see, that which you are Ta'baduwn 'Slaving' for?"

76) You and your forefathers of old?"

77) So surely they, (the idols and the Canaanites who worshipped them) are my (Abrawhawm's) 'Aduwn 'Enemies', except for the Rabb of all Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

*Abrawhawm's Rabb Creates,
Calms, Provides, Returns To
Life, And Forgives -
Abrawhawm Asks For
Wisdom, Jannat, To Be
Truthful, And Forgiveness For
His Father*

78) Who created me, (Abrawhawm): so he is who Yahdiyni 'Calms Me'.

79) And it is He, who feeds me, (Abrawhawm) and provides me with drink."

80) And when I, (Abrawhawm) am ill, He Yashfiyni 'Heals Me'."

81) And who will cause me (Abrawhawm) to die, then gives me life (again).

82) And he who, I, (Abrawhawm) hope will forgive me, of my wrong doings on Yawm Al Diyn 'The Day of

Decision'.
 83) My 'Sustainer' who is Rabb, give me wisdom, and make me, (Abrawhawm) to join in with Al Saalihiyn 'The Perfectionists'.
 84) And make my, (Abram's) Lisaan 'Tongue' truthful amongst the others.
 85) And make me, (Abram) of the inheritors of the Na'iym 'Gentle' Jannat 'Garden'.
 86) And forgive my father, surely he is of Al Dal-liyn 'Those Who Have Gone Astray Into Error'.
 87) And do not disgrace me on the day when they will be raised (back to life).
 88) The day when Wealth 'Maal' and sons will not avail.
 89) Except him who came to The Source, ALLAH with a Saliym 'Peaceful' heart.

*Jannat Are For The Tremblers
 Of The Source. Allah
 - Hell Is For The Ones
 Seduced - They Will Be
 Questioned As To What They
 Slaved For - 'Azaaziyl' Will
 Answer And Say, 'They Were
 Astrayed In Error'*

90) And the Jannat will be brought near for those who trembled at the mention.
 91) And Al Jahiym 'Hell' will manifest for the ones who were seduced.
 92) And it shall be said to them

all, where is it, that which you all used to slave for?

93) Besides The Source, ALLAH? Are they here now to aid you all, or even aid themselves?

94) So they will be thrown down in it. They, (your false Sources) and the ones seduced (cut off).

95) And Ibliys, 'The Rebellious One' (also known as 'Azaaziyl', 'The One Removed,' Nakhsh, Samael, Haylal son of Shakhar and Mylitta; the head of the disagreeable, malevolent beings, Cherubeems) and his armies (200 fallen Eloheem, Cherubeems) all together.

96) They shall say, while they dispute in it.

97) By The Source, ALLAH, we were surely astrayed into Mubiyn 'Clear' error.

98) When Nusawwiukum 'We, Made You Equal' with the Rabb, 'Sustainer/Master' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

99) And no one leads us astray, except the guilty ones.

100) So there is no intercessors for us.

101) Nor a near friend.

102) Now if there be a return - (return to the Earth for us), we would be of Al Mu'miniyn 'The Faithful'.

103) Surely in that, is a sign; yet most of them are not faithful.

104) And surely, your Rabb, 'Sustainer' for He is Al 'Aziyz

'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

*The Qawm Of Noach Lied On
The Mursaliym - Noach Says
He Is A Rasuwl - The
Sethites Want To Stone Him -
Him And His Family Were
Saved In The Craft. And
Eloheem Drowned The Rest*

105) The Qawm, 'Kindred' in Noach's time- (disagreeable cities of Nod and Enoch), lied on the Al Mursaliym 'Ones Sent'."

106) And Noach, their brother, said to them: "Will you ever tremble at the mention?"

107) Surely I am a faithful Rasuwl to you all!

108) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me.

109) And I do not ask you for any reward for it; my reward is only with the Rabb of Al 'Aalamiym 'The Known Worlds'.

110) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me.

111) They, (the descendants of Seth) said: "Shall we have faith in you, (Utnafishtim/Noach) and follow you, as those who are vile?"

112) He, (Noach) said: "And I have no knowledge of that which they, (descendants of Seth) were doing."

113) Their account is only with my Rabb 'Sustainer,' if you could perceive?

114) And I, (Utnafishtim) am not driving away the faithful ones.

115) I, (Noach) am only a Mubiyn 'Clear' warner.

116) They, (Enosites of the evil cities of Nod and Enoch) said: "Verily, if you, (Utnafishtim) don't stop teaching, O Noach, you will be of those whom, we will stone to death."

117) He, (Noach) said: "My Sustainer, who is Rabb! Surely, my kindred have denied me."

118) Then open a Fathaan 'An Opening' between me and between them and save me and those who are with me of the faithful.

119) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) saved him (Noach and those who are with him: Na'amah, Noach's wife, and his sons: Shem And His Wife Faatin, Ham And His Wife Haliyma and Japheth And His Wife Ifat, Lebana And The 80 Other Beings) in the loaded Fulk 'Craft'.

120) Then afterwards, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) drowned the rest.

121) Surely in that, is verily a sign, yet most of them are not faithful."

122) And surely your, (Noach's) Rabb, for He is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

'Ad Denies The Ones Sent -

*Eber Warn Them To Be
Faithful - They Built
Monuments Out Of Hills -
They Seized As Jabbaariyn*

123) The Enosites of 'Ad denied the Mursaliyn 'Ones Sent'.

124) When their brother, 'Eber' said to them: "Will you not tremble at the mention?"

125) Surely I, (Hud, also known as Eber) am a faithful Rasuwl, 'One Sent' to you.

126) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me, (Eber).

127) And I, (Eber) will not ask you for any reward. My reward is only from the Rabb, who is the 'Sustainer and Master,' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

128) Do you build a monument on every high hill, just for jest?

129) And you make fortresses, that you may abide eternally?

130) And when you seize by force, your seize as Jabbariyn/Gibboreem 'Mighty Ones'.

131) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me.

132) And tremble at the mention, He (He Not We) is who assisted you with that which you know."

133) He (He Not We) has assisted you with An'aam 'Cattles' and Baniyn 'Sons'.

134) And Jannaat 'Gardens' and springs.

*Hud Fears For A Pain
Against His Enosites - 'Ad Is
Destroyed By The Eloheem -
Yahuwa/Yehweh Is The
Mighty, The Most Merciful*

135) Surely I, (Eber) fear for you all, (Enosites of 'Ad) the pain of a 'Aziym 'Supreme' day.

136) They, (Enosites of 'Ad) said: "It is equal to us, whether you, (Eber) admonish or don't be of those who admonish."

137) Is this not but morals of the Awwaliyn 'Ancient Ones'.

138) And we, (Enosites of 'Ad) are not of those who would be punished.

139) And thus they, (Enosites of 'Ad) denied him, (Eber), then We, ([We Not I] Anunnaqi) destroyed them, (Enosites of 'Ad). Surely in that, verily is a sign, and most of them are not faithful.

140) And surely your 'Sustainer', Rabb, for He is Al Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym, 'The Merciful.'

*Thamud Denied The
Mursaliyn - Salih Sent To
Them As A Rasuwl - Thamud
Said, 'He Was A Sorcerer
And A Bashar Just Like Them'
- They Are Told, Not To
Touch The She-Camel With
Evil' - A Pain Overtook Them*

141) The tribe of Thamud denied the Mursaliyn, 'Ones

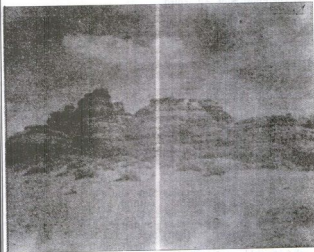


Diagram 11
Hills Of Mada In Salih



Diagram 12

A Nabatean Monument At Petra



Diagram 13
A Thamudic Monument At Madyan

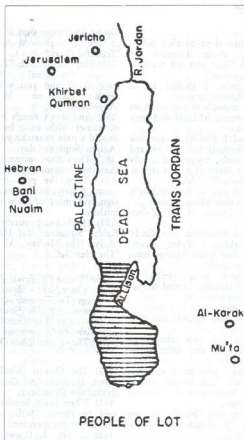


Diagram 14
The People Of Luwt (Lot)

Sent.'

142) When their brother Salih, said to them Enosites of Thamud: "Will you not tremble at the mention."

143) Surely, I (Salih) am a faithful Rasuwl to you."

144) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me, (Salih).

145) And I, (Salih) do not ask you, (Thamud) for any reward for it. Surely, my reward is only from the Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

146) Will you be left faithfully secure, in that which is here?

147) In Jannat 'Gardens' and springs.

148) And Zuruw'in 'Cornfields' and Nakhlin 'Palm' (trees) with its fine fruits (things from the planet earth).

149) And you, (tribe of Thamud) cleverly carved houses out of the mountains.

150) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me (Salih).

151) And do not obey the command of the extravagant ones (Kings).

152) Those who cause mischief in Al Ard, 'The Earth' and do not Yuslihuwn 'Perfect Themselves'.

153) They said: "Surely, you are only of Al Musah-hariyn 'The Sorcerers'."

154) You, (Salih) are nothing but a Bashar 'Mortal In Skin'

like us, so bring a sign, if you are of the Zodoqites/Al Saadiqiyn 'Truthful Ones.'

155) He, (Salih) said: "This is a Naaqat 'She-Camel'. It shall have drink and you will have drink on an Ma'luwm 'Appointed' day.

156) And don't touch her, the she-camel with evil, lest there should a pain overtake you, on a 'Aziym 'Supreme' day.

157) Then they wounded her, then they became regretful.

158) Then the pain overtook them. Surely, in this, verily is a sign, yet most of them are not faithful.

159) And most surely, your Rabb, 'Sustainer' for He is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

The Nation Of Lwyt, Denied The Ones Sent - Lwyt Tells Them To Tremble At The Mention Of The Source - Lwyt Asks The Enosites Of Sodom And Gomorrah Why Do They Come Unto Males?

160) The Qowm 'Kindred' of Luwt, (Sodom And Gomorrah) denied the Ones Sent.

161) When their brother Luwt said to them: "Will you not tremble at the mention?"

162) Surely, I, (Luwt) am a faithful Rasuwl to you.

163) So tremble at the mention

of The Source, ALLAH and obey me, (Luwt).

164) And I shall not ask you for any reward for it, surely my reward is only from the Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

165) From all Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds', you all come unto Al Dhukraan 'The Males (Forgetful Ones)'.

166) And you leave that which He (He Not We) Khalaqa 'Created' for you, from your Rabb, who is 'Sustainer' of Azwaajikum 'Your Mates'. In fact! You are a kindred who are transgressors.

167) They, (Enosites of Sodom and Gomorrah) said: "If you desist, O Luwt, you will be of Al Mukhrajijn 'The Outcast'."

168) He, (Luwt) said: "Surely I am of those who abhor your deeds."

Ly wt Asks His Rabb To Save Him And His Family - Everyone Is Saved Except For His Wife - Anunnaqi Destroyed Sodom And Gomorrah

169) My Rabb 'Sustainer'! Save me and my family from that which they do.

170) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) saved him, (Luwt) and all his family, all together (Luwt's daughters: Lubna and Jalaa'a).

171) Except an old women, (the wife of Luwt - Sabriya who became paralyzed, because she didn't obey her husband, Luwt). She was amongst those who stayed behind.

172) Then We, (Eloheem, Anunnaqi) destroyed Al Aakhirijn 'The Others' - (The cities of Sodom and Gomorrah).

173) And We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) showered a rain down upon them, so the rain was evil on the ones who were warned.

174) Surely, in that, verily is a sign and yet most of them are not faithful.

175) And surely your Rabb, is Al 'Aziyy 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

The Midianites Denied The Ones Sent - Jethro Sent Unto Them - Shu'aib Tells Them, To Give A Complete Measure - Midianites Denied Jethro

176) The companions of the wood, (Midianties) denied the Mursaliyn, 'Ones Sent.'

177) When Yethro (Also Called Shu'aib), said to them, (the Midianites): "Will you not tremble at the mention?"

178) Surely, I am a faithful Rasawl 'One Sent' to you.

179) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and obey me, (Yethro).

180) And I, (Yethro) do not ask



Figure 59
Lubna, Daughter Of Luwt (Lot) And Sabriyya

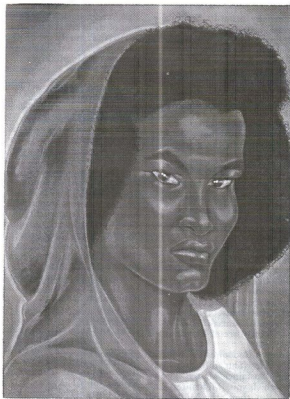


Figure 60

Jalaa'a, Daughter Of Luwt (Lot) And Sabriyya

of you any reward. Surely my reward is only from the Sustainer, who is Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

181) Complete the measure and do not be of those who give short measure.

182) And weigh with the upright scale.

183) And do not neglect the Enosites of their things and do not cause Mufsiidiyn 'Mischiefs', in the planet (Qi) 'Earth.'

184) And Tremble At the mention who Khalaq 'Created' you and the generations of Al Awwaliyn 'The Ancient Ones' (The Eloheem, Dinneer, the 24 Elders).

185) They, (The Midianites), said, "You are only of Al Musah-hariyn 'The Magicians'."

186) And you, (Shu'aib) are not but a Bashar 'Mortal Being In Skin' like us and surely we, (Midianites) think you, (Shu'aib/Jethro) are of the liars.

187) Then cause fragments to fall from Al Samaa-i 'The Sky', if you, (Jethro) are of The Trustful Ones. Al Saadiqiyn/Sodoqites/Zodoqites.

188) He (Shu'aib) said: "My Rabb 'Sustainer/Master' knows that which you, (Midianites) do."

189) But they, (the Midianites) denied him (Shu'aib), so a pain overtook them on a day of the covering. Surely it was a day of 'Aziym 'Supreme' pain.

190) Surely, in that is a sign; yet most of them are not faithful.

191) And surely your Rabb 'Sustainer', is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

Qur'aan Sent Down From The Rabb, By Nusqu - In Qurayshan, Arabic Dialect - Israelites Knew About The Qur'aan - The Qur'aan Was Not Sent To Foreigners

192) And surely it, (the Qu'raan) was sent down from the Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

193) It was sent down with Al Amiyn 'The Trustworthy' Ruwh 'Soul'- (Eloheem, Anunnaqi Nusqu, who bore the title Gabriel).

194) Upon Qalbika 'Your Heart', (Muhammad) so that by it, you may be of the warners.

195) With a Mubiyn 'Clear', (Qurayshan dialect of the) 'Arabiyyin 'Arabic' Lisaan 'Tongue'.

196) And surely it, (the coming of the comforter Ahmad, also known as the newsbearer Muhammad and the Qur'aan) is (foretold) in Al Zubuwr, 'The Psalms' of Al Aawwaliyn 'The First Ones' (The 'Twenty Four Elders')."

197) Or isn't it, (the Qur'aan) a sign for them, that the learnt (men) of the Banee Israa'iyl

'Children of Yisrawale/Ya'aqob' know it. (The scholars of the Children of Yisrawale are wise enough to see that the Qur'aan is from their Rabb).

198) And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) had sent it, (the Qur'aan), down unto any of Al A'ajamiyn 'The Foreigners'.

199) So if He, (Muhammad) would have read it, (the Qur'aan) unto them, (the Arabs,) they would have not had any faith in it - (the Qur'aan).

200) Just like that, We, (Eloheem, Anunnaqi) caused it, (the Qur'aan) to enter the very hearts of the guilty ones."

*The Guilty Ones Will Not
Have Faith In The Qur'aan -
Eloheem Didn't Destroy Any
Villages Without Raising
Warners - Al Shaytaatiyn
Didn't Come With The
Qur'aan- Don't Call Another
Source With Allah*

201) They will not have any faith in it, (the Qur'aan) until they see the very aching pain (of Judgement Day).

202) So that it will come upon them suddenly, when they do not perceive.

203) Then they will say: "Will we be Mundharuwn 'Looked Upon?'"

204) Is it on Our pain, 'punishment' that they seek to hasten?

205) Have not you seen, that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) let them enjoy themselves for years.

206) Then that which was promised, comes to them.

207) That which they were made to enjoy shall not avail them?

208) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not destroy any village without it having warners.

209) For a Dhikraa 'Reminder', and We, (Anunnaqi) are never unjust.

210) And We did not send it down by way of him, Al Shaytaatiyn 'The Satans (The Reptilians,' Malevolent Beings, Cherubeems).

211) And it is not meet for them, nor are they able.

212) Surely, they (Satans, The Reptilians) are verily isolated from Al Sami 'The Hearing'.

213) So do not call upon another ILAAHAAN (ALLAHS) 'Source' with The Source, ALLAH, unless you will be of those who are punished.

214) And warn your most nearly related kindred.

*Muhammad, Told To Lower
His Wing To The Faithful
Ones' - The Reptilians Descend
On Every Lying, Disagreeable
One - Poets Who Go Astray
Follow Them - Those Who
Perfect Themselves Will Know
The Unjust Ones*

215) And lower your, (Ahmad's) Janaahaka 'Wing' to the faithful, who follow you.

216) But, if they disobey you, then say: "Surely I am innocent of that which you do."

217) And entrust on Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Merciful'.

218) He who sees you, when you stand up.

219) And your turning over and over among Al Saajidiyn 'The Prostrators'.

220) Surely He is Al Samiyu 'The Hearing', Al 'Aliym 'The Knowing'.

221) Shall I inform you (as a newsbearer) upon whom the Shayaatiyn, 'Satans, The Reptilians' descend?

222) They descend upon every lying, guilty one (the 11 sons of Lebana).

223) They appear to listen, but most of them are liars.

224) And Al Shuaraau 'The Poets', those who go astray, follow them (Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi).

225) Do not you see that they wander in every valley?

226) And that they say that which they do not (say one thing and does another)?

227) Except those who have faith and work to Al Saalihaat 'Perfect Their Being' and Dhakuruw 'Remember' The Source, ALLAH a lot, and defend themselves after they

were unjust, (Nubian Nation), and shall know those who are unjust by that which returns (Nibiru), they shall return (to Illyuwn).

Sudlqa Allahu El Agim

Chapter Forty-Eight

Revealed In The Year 617-618A.D.

Al Naml


(The Ants)

Original Order Chapter 48:

Wrong Order Chapter 27

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Qur'aan Is A Clear Scripture,
And A Calmness, Good News
To The Faithful Ones -
Muhammad Will Be Given
The Qur'aan From The
Presence*

48 () Taa: Al Tayr, 'The birds,' Siyn: Shelomoh/Solomon/Sulaymaan; (these are verses of the Qur'aan and a clear Scripture).

2) A leading calmness and good news for the faithful ones.

3) Those who keep up Al Salaat 'The Worship' and pay Al Zakaat 'The Charity,' and they are sure of Al Aakhirat 'The End.'

4) Surely, those who do not

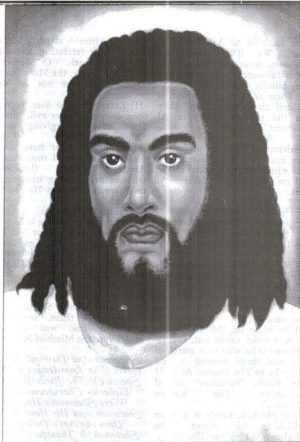


Figure 61

Shelomah (Solomon) Son Of Dawiyd (David) And Bathsheba

have faith in Al Aakhirat 'The End', We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) make their deeds fairseeming to them; but they blindly wander astray.

5) These are they, for whom is an evil chastisement, and they are the greatest losers in Al Aakhirat 'The End.'

6) And surely you, (Muhammad) will be given the Qur'aan from the presence; (it was whole on the throne) of the 'Aliym 'Knowing', Hakiym 'All Wise'.

*Mosheh Sees Fire - Allah
Speaks To Mosheh - Mosheh
Casts Down His Staff -
Mosheh's Hand Turns White*

7) When (Mosheh), said to his family - (Israelites/Jacobites): "Surely I see a Naar 'Fire'; I will bring you news from it, or bring you a burning brand, so that you may warn yourselves."

8) So when he, (Mosheh) came to it, a voice called out, saying: "Blessed is he who is in search of fire and those around it; and glory be to The Source, ALLAH the Rabb, 'Sustainer' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'."

9) O Mosheh, surely it is, I am ALLAH, Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

10) And cast down your, (Mosheh) staff. So when he saw it, in motion, as if it were a

Jaanun (Jinn 'serpent'), he turned back retreating and did not return back. O Mosheh, fear not. Surely, the Mursaluwn 'Ones Sent,' fear not in My presence.

11) Except he who does wrong, then does good after evil; surely I, am Ghafuwr 'Forgiving', Most Rahiym 'Merciful'.

12) And put your hand into your bosom, it will come forth Baydaa 'White,' (Leprous) without evil, among nine signs to Pharaoh (Rameses II) and his kindred (the Mizraimites/Egyptians). Surely, they are a transgressing kindred.

13) So when Our, (Our Not His - The Anunnaqi) clear signs came to them, which should open their sight, they said: "This is Mubiyn 'Clear' Sihir 'Magic'."

14) And they denied them unjustly and proudly, while Anfusahum 'Their Spirits' were convinced of them. See then, how the End was for Al Mufsidaiyn 'the Mischief Makers'.

*Shelomoh And Dawtyd, Were
Given The Knowledge Of The
Speech Of The Birds By The
Eloheem - Cherubeems Also
Were Shelomoh's Hosts -
Shelomoh And His Hosts Were
Upon An Ant's Valley -
Shelomoh Is Thankful To His
Rabb*

15) And indeed We, ([We Not

He] Eloheem, Anunnaqi) Aatay 'Gave' Dawiyd and Shelomoh 'Ilmaan 'Knowledge', and they said: "Al Hamdu 'All Gratitude' is The Source, ALLAH'S, who preferred us over many of His faithful slaves."

16) And Sulaymaan was Dawiyd's Waratha 'Heir', and he said: "O Naas/Enosites we have been taught the speech of Al Tayri 'The Birds' and we have been given (granted) of all things. Surely, this is for him the clear preference."

17) And the host (of evil, of the Evil, Disagreeable Race, Malevolent beings, Cherubeems), Jinns were assembled for Shelomoh and the Enosites 'Human Race' and Al Tayr 'The Birds' were arranged in ranks.

18) Until when they came to the valley of the ants, an ant said: "O ants, enter your houses, unless Shelomoh and his armies crush you, while they do not know."

19) So he, (Shelomoh) smiled, laughing from her saying, and he said: "My Rabb, 'Sustainer,' grant me that I may Ashkur 'Be Thankful' for your favour, which you have bestowed on me and on my parents, (Dawiyd and Bathsheba) and that I may work that which is Saalihaan 'Perfected', such as you are pleased with, and admit me, by your Rahmat 'Yielding' (mercy),

among your Saalihiyn 'Perfected' slaves.

Shelomoh Reviewing The Birds - Hudhud Found Queen Makiydah Of Sheba - Bilqiys And Her Enosites Are Sun Worshipers

20) And he, (Shelomoh) reviewed the birds, then said: "How is it, I don't see the Hudhud (Hoopoe), or is it that, he is one of the absentees?"

21) I, (Shelomoh) will verily cause him pain, (punish him) with a forceful pain, or I shall slaughter him, or he shall bring me with a clear Sultaan 'Authoritive Power' (he will produce a clear excuse).

22) And he (Hudhud) tarried not long, then (he) said: "I have compassed that which you has not compassed, and I have come to you from Saba' (Sheba) with sure news, 'information.'

23) Surely, I have found an Imra'at 'Woman' - (Bilqiys, the Queen of Sheba, also called Makiydah) ruling over them, and she has been given of everything, and she has a 'Aziym 'Supreme' Arsh 'Throne'.

24) And I, (the newsbearer Shelomoh), found her, (the Queen of Sheba, Bilqiys/Makiydah) and her kindred, (the Sabaeans/Ethiopians) prostrating to the Shams, 'Sun' - (sun

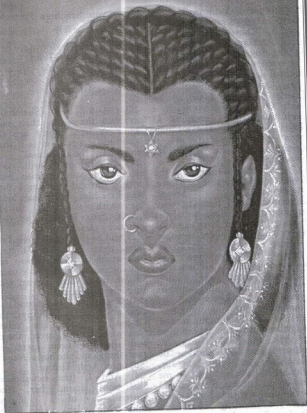


Figure 62
Queen Of Sheba (Makeda)

worshippers) rather than to The Source, ALLAH, and Al Shaytaan 'Satan', (The Reptilian, also known as Iblis, Samael, Haylal son of Shakhar and Mylitta) made their works seem good to them; so He turned them away from the path, thus they are not leaded into calmness.

25) So that they don't prostrate Lil-Lahi 'To Him', who brings forth that which is Al Khab 'Hidden' in Al Samawaat 'The Skies', and the planet (Qi/Tiamat) 'Earth' and knows that which you hide and that which you proclaim.

26) The Source, ALLAH, no ILAAH (ALLAH) 'Source' would exist except by way of He 'HU' (Creative Force Of Will), he is the Rabb, 'Sustainer/Master' of Al 'Aziym 'The Supreme' Al Arsh 'Throne'.

*Shelomoh Sends The
Hoopoe/Hudhud With A Letter
To Queen Sheba - He
Demands Them To Come
Before Him, As Muslims*

27) He, (Shelomoh) said: "We shall see whether you, (the Hoopoe) speaks the truth, or whether you are of the liars.

28) Go with this, my, (Sulaymaan's) letter and hand it over to them, then turn away from them, so see what, (answer) they return.

29) She, (Queen Makiyydah) said: "O Al Malauw 'Rulers', a Kariym 'Generous' letter has been delivered to me."

30) Surely, it is from Shelomoh, and it is:

*This Tasmika Is Placed Here
From Chapter 113, Surat Al
Fawbah*

Begin All Things Using The Name Of The Source, Allah, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

31) Proclaiming, exalt not yourselves against me, (Shelomoh) and come to me as Muslimiyn 'Ones Who Are Of Peace'.

32) She (Bilqiys) said: "O rulers, advise me respecting my command, I never decide a command, until you all watch me."

33) They said: "We are possessors of Qawawatin 'Strength' and possessors of Shadiyd 'Forceful' prowess; and Al Amr 'The Command' is yours, so consider that which you will command?"

34) She, (Bilqiys) said: "Surely, when the Muluwk 'Rulers' enter a town, they ruin it and make the A'izzat ' Mightiest' of its families to be abased, and they do (it) just like that.

35) And surely I, (Queen Of

Sheba) am going to send them a present, and to see what 'answer' the Mursaluwn, 'Ones Sent' bring back.

36) So when the envoy came to Shelomoh, he said: "Will you help me with wealth? But that which The Source, ALLAH has given me is better than that, which He has given you. In fact, you are exultant, because of your present.

37) Go back to them, so we shall certainly come to them with Junuwd, 'Armies' which they, (the Sabaens) have no power to oppose, and we shall certainly expel them from there, in disgrace, while they are abased.

*Shelomoh Wants Her Throne
Brought To Him - Sakir Of
The Ifriyt, Said He Was
Strong Enough To Do It -
Shelomoh Disguises Her
Throne And Questions
Makiydah*

38) He, (Shelomoh) said: "O messengers, which of you, can bring me, her throne before they Come To Me As Muslimiyn 'Ones Who Are Of Peace'?"

39) He, (Sakir, 'The Intoxicator') the Jinn 'Demon', (Disagreeable, Malevolent Being) of the Ifriyt (species of the Jinn, Cherubeems), stepped forward and said: "I will bring it, (the Queen of Sheba's throne), to you (Shelomoh), even before you rise

from your place - (Council of Justice). I am strong enough, (to bring her to you), and I can be Amiyn 'Trusted', (for my word).

40) One (Khayrim, Hiram) having in his presence, knowledge of the Book said: "I will bring it, to you, (Shelomoh) in the twinkling of your eye." Then when he saw it settle besides him, he, (Shelomoh) said: "This is of the preference of my Rabb, 'Sustainer' that He (He Not We) may test me, whether I am Ashkuru 'Grateful' or Akfuru 'Ungrateful', (concealing the facts); and whoever is Shakara 'Grateful', he is grateful only for his own Nafs 'Self' and whoever, is ungrateful, concealing the facts, then surely, My Rabb is Self-Sufficient, Kariym 'Generous'."

41) He (Shelomoh), said: "Let us disguise 'Arshahaa 'Her Throne', for her; we may see whether she leads into calmness, or is she of those who are not lead into calmness."

42) So when she, (Makiydah) came, it was said: "Was your throne like this?" She said: "It is as it were the same"; and we were given the knowledge before about it, and we became Muslimiyn 'Ones Of Peace'.

43) And that which she slaved for, besides The Source ALLAH prevented her, for she was of a Qawm, 'Kindred' who were Kaafiriyn 'Concealers Of That



Figure 63

Sakir, The Jinn Who Stole Shelomoh's Ring And Kingdom

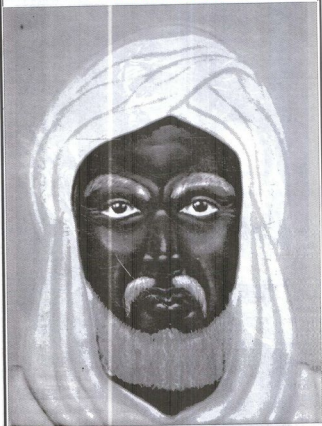


Figure 64

Hiram, The One Who Had Knowledge Of The Book

Which They Knew To Be The Facts.'

44) It was said to her (Bilqiys/Makiydah): "Enter Al Sarha 'The Palace'." But when she saw it, she deemed it to be a Lujjatan 'Great Expanse Of Water', and she uncovered her legs. He, (Shelomoh) said: "Surely it is a palace made smooth with glass." She, (Makiydah) said: "My Rabb! Surely I have been unjust to Nafsi 'Myself', and Aslamtu 'I Surrender In Peace' with Shelomoh, Lil-Lahi 'For Him', the Rabb 'Sustainer' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'."

*Salih Sent To Thamud -
Thamud Denies Salih, They
Were Destroyed*

45) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent to Thamud their brother Salih Saying: "Slave for The Source, ALLAH." Then, they became two portions (parties), disputing.

46) He, (Salih) said: "O my kindred, why do you, (Thamud) hasten on Al Sayyi-Ati 'The Evil' before Al Hasanat 'That Which Is Best'? Why do you not ask forgiveness of The Source, ALLAH, so that you may Turhamuwn 'Have A Yielding (mercy)'?"

47) "They said: "We augur, 'foretell' evil of you and those

with you. He said: "Your evil augury, 'foretelling' is in the possession of The Source, ALLAH. In fact, you are a kindred who are tried."

48) And there were nine persons in the city who caused mischief in Al Ard 'The Earth', and did not Yaslihuwn 'Perfect Themselves'.

49) They said: "Taqaasamuwn 'Swear One To Another' by The Source, ALLAH that we shall attack him and his family (by the Shadow Hour Period), then we shall say to his heir; we watched not the destruction of his family, and we are surely Saadiquwn 'Sodoqites/Zodoqites -Trustful'."

50) And they planned a plan, and We (We Not I - Eloheem Anunnaqi), planned a plan, while they do not perceived.

51) See then, how the End was of their plan, that We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) destroyed them and their kindred, all of them.

52) So those are their houses, fallen down because they were ones in a state of unjustness. Surely in that is a sign for a kindred who knows.

53) And We, (We Not He) delivered those who had faith and trembled at the mention.

*Iywt Said To His Kindred,
Why Do They Come To
Mortal Men, Rather Than
Enosite Women? - Iywt And*

*His Followers Are Driven Out
Of The Village - Eloheem
Saved Him, Except For His
Woman, Sabriyya - And
Rained Upon Them An Evil
Rain*

ALLAH, The Source Kahyrun 'Better', or that which you Yushrikuwn 'Associate Partners' (with)?"

*Or Is He, Who Khalaq The
Skies, Made Tiamat A
Habitable Place, Answers The
Distress, And Cures The Evil,
And Makes You Khulafaa'a
- Khalifa Left Behind? - The
Source Is Most High Of That
Which They Associate Partners
With?*

60) Or who has Khalaq, 'Created' the Samawaat, 'Skies' and the planet (Qi) Earth, and sent down water from Al Samaa-i 'The Skies'; so We (We Not He), brought forth Hadaa-iq 'Beautiful Surroundings'; there is not on you to bring forth trees in them; (or) AA-ILAAHUN 'Is There Another (ALLAH) Source', with The Source, ALLAH? In fact, they are a kindred, Ya-diluwn 'Turn Away From The Just'.

61) Or who has made the planet (Qi/Tiamat), Al Ard 'Earth' a firm, 'habitable' place and made in the middle of the rivers, mountains; and made between them two seas - (the White Nile, 'Pishon' and the Blue Nile, 'Gihon,' and there is a barrier - The Island Of Tuti, the place where Zakar, also called Adam/Kadmon was created between them, the White

54) "And Luwt, when he said to his kindred: "Do you commit Al Faahishat 'Abominable Deeds', while you see?"

55) "Will you come to Al Rijaal 'Mortal Men' Shahwatan 'Lustfully' rather than Al Nisaa-i 'Enosite Women'? In fact, you are a kindred who Tajhaluwn 'Act Ignorantly'."

56) "But the answer of his kindred was nothing, except that they said: "Drive out Luwt's followers from your village; surely, they are Unaasu 'Enosites' who would keep pure!"

57) "But We (We Not He), saved him, (Luwt) and his family, except for Amraatahu 'His Woman', (Sabriyya), We ordained her to be of Al Ghaabiriyn 'Those Who Remained Behind'."

58) And We (We Not I) Amtarnaa 'Rained' on them a Mataraan 'Rain'; so evil was the Mataru 'Rain' on those who had been warned.

59) Tell them: "Al Hamdu 'All Gratitude' be only Lil-Lahe 'To Him' (Him Not Us), and Salaamun 'Peace' be on His (His Not Our) slaves whom He (He Not We) have chosen; "is

and Blue Nile). So AA-ILAAHUN is there any other (ALLAH) 'Source', with The Source, ALLAH? In fact, most of them, don't have knowledge of this.

62) Or who answers the distressed, when he calls upon him, and cures the evil, and makes you all 'Khulufaa'-a 'Khalifa Successors, Left Behind' of Qi; is there an ILAAHUN (ALLAH) 'Source', with The Source, ALLAH? Little is that which you all remember.

63) Or who leads you all into calmness in the Zulumaat 'Darkness' of Al Barri 'The Dry Land' and Al Bahr 'The Sea' and who sends the winds as a bearer of good news between the hands of his Rahmatihi 'Yielding' (mercy); is there a ILAAHUN (ALLAH) 'Source' with The Source, ALLAH, who is 'Aala 'Most High', (ANU) of that which they Yushrikuwn 'Associate Partners' with.

64) Or who begins Al Khalqu 'The Creation', then Yu'iyduhu 'Repeats It', and who Yarzuqukum 'Provides You All' from Al Samaa-i 'The Skies' and the planet Earth, 'Qi/Tiamat.' Is there an ILAAHUN (ALLAH) 'Source' with The Source, ALLAH. Tell them bring your proof, if you all are Sodoqites/Saadiqiyn/Zodoqites.

*Except Allah Or In Tiamat,
Knows The Unseen - They
Are Blind About The
Knowledge Of The End -*

65) Tell them this, (Muhammad): "No one in the Samawaat, 'Skies' and Tiamat knows the Ghayb, 'Unseen' except for The Source, ALLAH; and they, (Enosites) will not perceive when they will be raised (back to life, resurrected).

66) In fact, their knowledge about Al Aakhirat 'the End', has reached them; in fact, they are in distrust about it. In fact, they are really 'Amuwn 'Blind' to it.

67) And those who concealed that which they knew to be the facts, said: "Is that when we and our fathers become Turaabaan 'Dust', then, will we be the ones brought forth (from the dead)?"

68) Indeed, we were promised this. We and our forefathers from before. This is nothing except the Asaatyr 'Fables' of the Awwaliyn 'The Ancient Ones -24 Elders'.

69) Tell them this, (Ahmad): "You all are to move about in Qi/Earth, so see how the End was for the guilty ones.

70) And don't grieve over them, (Muhammad), and don't you be in distress, over that which they scheme.

71) And they said: "When is this promise, if you all are truthful ones."

No One In The Samawaat,

72) Tell them this, (Ahmad), "Maybe, some of the things that you all wish to hasten, will immediately come to you all."

73) And surely your Rabb 'Sustainer', is possessor of the preference, upon the Enosites; but, most of them are not grateful.

74) And surely your Rabb, who is 'Sustainer,' verily He (He Not We) knows that which their chests hide, and that which they make known.

75) And there is not from the Ghaa-ibatin 'Unseen', in Al Samaa-i 'The Skies' and the planet Earth, 'Ard' except (recorded) in Kitaabin Mubiyn 'A Clear Scripture' (Akasha Records).

*Qur'aan Narrated On Jacobites
- Muhammad Is Told To
Entrust Upon Allah-
Muhammad Doesn't Cause The
Deaf To Hear, Only The
Faithful Ones*

76) Surely this Qur'aan was narrated upon the Banee Israa'iyl, 'Jacobites/Israelites', but most of them differed in it.

77) And surely, it (the Qur'aan), verily is Hudda 'Calmness' and a Rahmatun 'Yielding' (mercy) for the faithful ones.

78) Surely, your Rabb, He (He Not We) will decide between them with wisdom, and He is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Aliym

'The Knower'.

79) So you, (Ahmad) are to entrust upon ALLAH. Surely, you are on Al Mubiyn 'The Clear' Al Haqq 'Fact'.

80) Surely you, don't cause the dead to Tusmi-u 'Hear' and you don't cause the deaf to hear Al Du'aa-A 'The Call' (Prayer), when they are ones turning their backs.

81) And you are not the one who leads into calmness the blind from astraying (into error); you only cause to hear those who have faith in Our (Our Not My) signs, so they are Muslimuwn 'The Ones Who Surrender In Peace'.

82) And when the saying comes to pass upon them, we brought forth for them a Daabbat 'Beast' from Al Ard the planet Qi, 'Earth' that will speak to them; "That the Naas, they were not faithful with Our (Our Not My) signs, (and they will not be successful).

*The Day, The Anunnaqi
Will Assemble A Group Who
Lied About Their Signs -
The Day The Trumpet Is
Blown, Those In The Skies
Will Be Terrified*

83) And the day when We (We Not He), will assemble from every Ummatin 'Nation', a group who denied, 'lied' about Our (Our Not His) signs, so they

will be scattered about.

84) Until when they come, He (He Not We) will say: "Did you all deny my signs and didn't comprehend any knowledge in them? Or what was it, you were doing?"

85) And the saying came to pass upon them, because of their Zalamuw 'Unjustness', so they will not be able to talk.

86) Did not they see, that surely We (We Not He) made Al Layl 'The Shadow Hour Period' to Yaskunuw 'Dwell In It', and Al Nahaar 'The Daytime' as a sign, surely in that, are signs for a Kindred that are faithful.

87) The day when the trumpet (shofer) will be blown, (by the Eloheem Raphael), so those who are in Al Samaawaati 'The Skies' will be terrified and those who are in the planet Qi/Al Ard; except (for) whom pleases The Source, ALLAH; and all will come to him, abased.

88) And you see the Jibaal, 'Mountains', you will think that they are firmly fixed and they will pass like the moving of Al Sahaab 'The Clouds' - (the) Sun'a 'Molding' (handiwork) of the The Source, ALLAH, who has Atqana 'Perfected' everything. Surely He is Khabiyr 'Aware' of that which you all do.

*Those Who Come With
Goodness Are Secure From
The Terror - Those Who*

*Come With Evil They Will Be
Thrown, Faced Down In The
Fire - Ahmad Has Been
Commanded To Slave For
The Rabb Of The City, And
Recite The Qur'aan - All
Gratitude Is Due To Allah, He
Is Not Unaware Of All That
Which You Do*

89) And those who come with Hasanat 'What Is Best', there is a Khayr 'Goodness' for them, and from it, they are faithfully secure from the terror on that day.

90) And those who come with evil, so they will be thrown faced down in Al Naar 'The Fire'. Do you expect to be rewarded other than, that which you all were doing?

91) However, I, (Muhammad) have been commanded to A'abud 'Slave' for the Rabb, who is 'Sustainer/Master' of this land (Mecca), which He (He Not We) made sacred, and for Him (Him Not Us) is everything; and I have been commanded, to be from Al Muslimiyn 'The Peaceful Ones'.

92) And that I, (Ahmad) am to recite the Qur'aan; so whoever, is calmed, so surely his Nafs 'Self' is calmed, and whoever is lead astray (into error), so tell them: "Surely I, (Muhammad) am only from Al Mundhiriyn 'The Warners'.

93) And tell them, (the Meccans,

Ahmad): "That all Al Hamd 'Gratitude is due' Li-lahi 'To Him' (Him Not Us), and He (He Not We) will let you see His (His Not Our) signs, and you will know them; and your Rabb, is not unaware of all that which you do.

Sudliqa Allahu El Azim

Chapter Forty-Nine

Revealed In The Year 622 A.D.

Qasas

(Narrations)

Original Order Chapter 49;

Wrong Order Chapter 28

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Signs Of The Qur'aan. To Make Things Clear - The Eloheem Recite To Muhammad The News Of Pharaoh And Moshch - The Anunnaqi Makes Israelites A'immah

49 () Taaa: Mount Sinai; Siyn: Sihr 'Magic'; Miym: Moshch.

2) These are the signs of the scripture - (the Qur'aan), which makes things Mubiyn 'Clear'.

3) We (Eloheem, Anunnaqi) will recite to you, (Muhammad), the news of Moshch, and Pharaoh (Rameses II), with the facts for a

nation of (Enosites), which are faithful.

4) Surely, Fir'own (Rameses II) made himself 'Alaa 'Most High', in the land of (Mizrayim 'Egypt') and he made their family - (the Israelites/Jacobites) into Shiya-aan 'Sects', weakening a group amongst them. He slaughtered their sons and he made Nisaa-ahum 'Their Enosite Women' live. Surely, he, (Rameses II) was of Al Mufsiidyn, 'The Mischief Makers.'

5) And (also another story) We (We Not He - Eloheem Anunnaqi) wish to have grace upon those who were weakened (Esther daughter of Abiyhayil, Mordekay son of Ya'iyir, and Hege', of the Benjamite tribe, of the Israelites) in the planet (Qi) 'Earth (in Persia),' (the Benjamites Of Yisrawale) and We (Eloheem Anunnaqi) will make them A'immah, 'Ones Placed Upfront, Imaams' and We (Eloheem anunnaqi) will make them Al Waaritheen 'The Inheritors.'

6) And We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will place them, (Israelites/Jacobites) firmly in the 'Land,' (Persia) and (also) We will let Pharaoh (Rameses II) and (The High Official Of The Ruler Achashwerowsh Of Persia) Haman and their Junud 'Armies' (armies of Persia of Achashwerowsh and of Israel of



Figure 65
Esther (Estare/Hadassah), Daughter Of Abihail

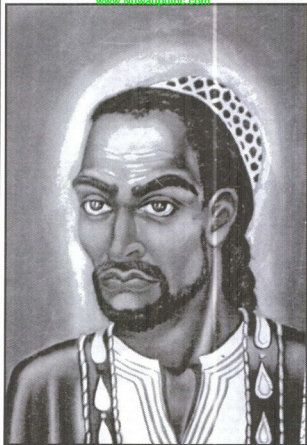


Figure 66
Mordekay (Mordecai), Son Of Jair

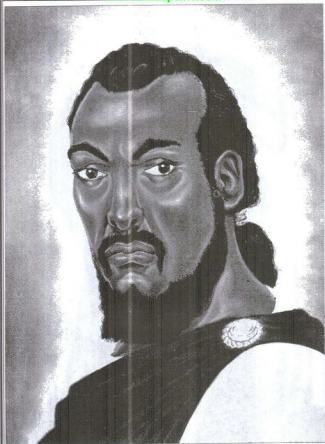


Figure 67
Haman, High Official Under Rulership Of Ahasuerus

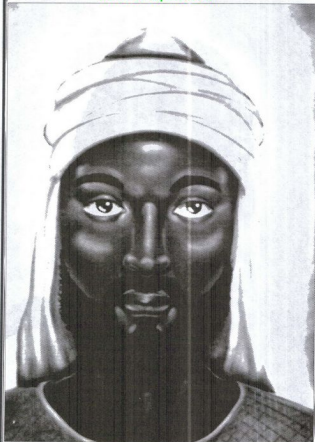


Figure 68
Hegai Of The Benjaminite Tribe

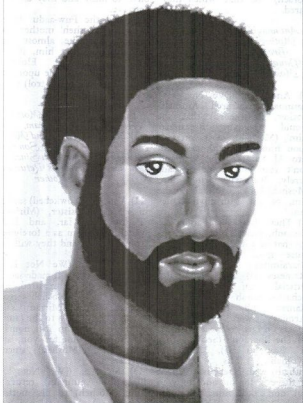


Figure 69

Korah, Ruler Of The Rebellious Israelites In Mosheh's Time

Qorach) see that which they feared.

*Anunnaqi Inspired Mosheh'
Mother That She Should
Breastfeed - Pharaoh
Daughter Bithiah Picks Up
Mosheh From The Yamm*

7) And We, ([We Not He] Anunnaqi) inspired Mosheh' mother, (Yowkebed) that she should Ardi-iyhi 'Breastfeed Him', (Mosheh), so if you fear upon him, (Mosheh), cast him into Al Yamm, 'The Sea' and don't fear and don't be sad. Surely, We will bring him, (Mosheh) back to you, and make him, of the Mursaliyn 'Ones Sent.'

8) Then the Aalu 'Family' of Pharaoh, picked him, (Mosheh) up; that he will be an enemy and cause grief for them, (the Mizraimites); surely, Pharaoh (Rameses II) and (The High Official Of The Ruler Achashwerowsh Of Persia) Haman and their Junuwd 'Armies' were Khattee'eena 'Doers Of Disagreeable Acts'.

9) The Pharaoh's (Seti I, father of Rameses II), Amra-Aat 'Woman', (His Daughter Bithiah) said: "Here is a delight of the eye, for me and for you; but don't kill him, (Mosheh), maybe he will benefit us, or we can take him as a Walad, 'Paternal Son (make like we gave

birth to him)' and they did not perceive.

10) And the Fuw-aadu 'Inner Heart' of Mosheh' mother was empty, that she almost was going to manifest him, if We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) did not tie upon her heart (keep her in control) to be from the faithful ones.

*Yowkebed, Mosheh' Mother
Tells His Sister Miriam, To
Watch After Him, And Make
Sure He Is Given To Someone
Who Will Give Him Sincere
Advice' - Mosheh Is Returned
To His Mother*

11) And she, (Yowkebed) said to his, Mosheh' sister, (Miriam): "Follow him far, and look, 'watch' after him as a foreigner, from the sides and they will not perceive.

12) And We (We Not He - Eloheem Anunnaqi) made sacred the (women) who breastfed, 'wet nursed' him, (Mosheh) from before; so she, (Miriam) said: "Shall I lead you to to the family of the house, who will nourish and support him for you, and give him, (Mosheh) sincere advice?

13) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) returned him, (Mosheh) to his mother, (Yowkebed), so that her eyes would be refreshed - (stop crying) and that she would not



Figure 70
(48) Bithiah, Daughter Of The Pharaoh Seti I

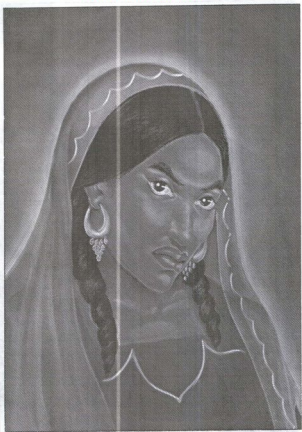


Figure 71
Miriam, Sister Of Mosheh (Moses, Tobadonijah)

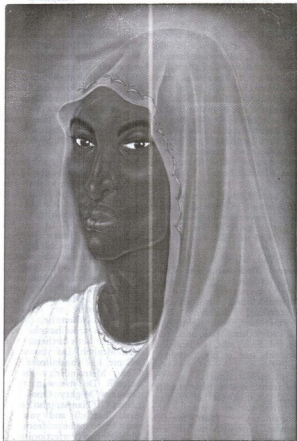


Figure 72
Zsipporah (Zipporah), Daughter Of Jethro

be so sad, and so that she would know that the promise of The Source, ALLAH is a fact (beyond a doubt); but most of them, the (Children Of Yisrawale), don't even know that.

14) And when he, (Mosheh) reached the age of maturity (13), and he fulfilled; We (We Not He) gave him wisdom and knowledge and just like that, We (Eloheem Anunnaqi) reward Al Muh-siy-noon 'The Doers Of That Which Is Best.'

*Mosheh Kills A Mizraimite/
Egyptian - Mosheh Asks For
Forgiveness - Mosheh
Confronted With The Same
Male He Had Helped*

15) And when he, (Mosheh) entered Madiynah, 'The City', when its family - (the Enosites) were unaware; then he, (Mosheh) found in it (the city of Mitzrayim), Rajlayn 'Two Mortal Men', both fighting to kill each other. This one, from his, (Mosheh's) sect, (an Israelite), and this one is his, (Mosheh's) enemy, (an Egyptian/Mizraimite); so the one from his sect, (the Israelite) asked (Mosheh) for help against he who was his enemy - (the Mizraimite). Then Mosheh punched him with his fist, and finished him. Mosheh said: "This is from the Amal 'Work' of Al Shaytaan, 'Satan', (The

Reptilian, also known as Haylal, Nakhsh, Al Khannas). Surely, he is a clear enemy, who leads one astray (into error).

16) He, (Mosheh) said: "My Rabb, who is 'Sustainer,' surely I have Zalamta 'Been Unjust' to myself; so forgive me, so He (He Not We) forgave him. Surely He, is Al Ghafuwr 'The Forgiving', Al Rahiym 'Most Merciful'.

17) He said: 'My Rabb, of that which you have bestowed upon me of your grace, so shall I be a supporter for the Mujriy-meen 'Guilty Ones?'

18) So he, (Mosheh) came in the Madiynah 'City' In the Early Daytime Hour, fearing, watching out for himself, then when he, the one who asked for his aid the day before, called out to him for help. Mosheh said: "Surely you, verily you are one who is Mubiyn 'Clearly' astrayed."

19) Then when he, (Mosheh) wanted to strike he who was an enemy, to both of them, he said: "Oh Mosheh, Do you want to kill me, like you killed a person, (The Mizraimite), the day before? Do you want to be a Jabbaar, 'Mighty One' in the planet Qi/Tiamat, (also called Al Ard, 'Earth,') and you don't want to be from the Musliyhawn 'Perfectionists?'

*Mosheh Is Warned To Leave
The City - Mosheh Leaves*

*Egypt And Goes To The Land
Of Median - He Meets
Zipporah And Arabia*

20) And a Rajulun 'Mortal Man' came hastening from the farthest end of the city; he said: "O Mosheh, the rulers are carrying out a command, to kill you; so go forth, from the land (of Mitzraim/Egypt). Surely, you are of those who give good advice."

21) So he, (Mosheh) went forth from (Mitzraim/Egypt), watching out for himself; he said: "My Rabb, save me from the kindred who are Zaaliymeen 'Unjust.'"

22) And when, he, (Mosheh) turned his face towards meeting Midyaan, 'the land of Median,' he said: "Maybe, my Rabb, who is 'Sustainer,' will lead me into calmness to an even path."

23) And when he, (Mosheh), arrived to the water place of Median he found a Ummatan 'Nation' from The Enosites - (the Midianites) who water their flocks and he found besides them, Amra-atayn 'Two Women' - (Tsifforah and Arabia) protecting their flocks. He said: "What is the matter with both of you?" They both said: "We will not give water to our flocks, until the shepherds take their flocks away; and our father, (Shu'aib/Yethro) is a Kabiyr 'Old' Shaikh, 'Elder.'"

*Mosheh Water Their Flocks
For Them - He Meets Yethro
- Yethro Makes A Deal With
Mosheh*

24) So he, (Mosheh) gave water to their flocks, for them, then he turned away to the shade, then he said: "My Rabb, surely, I am poor; and of that which you send down to me is Khayr 'Good.'"

25) So one of them, (the two women, Tsifforah and her sister Arabia), came walking lively, she, (Tsifforah) said: "My father, (Yethro), verily he will reward you, a reward, because you watered our flocks, for us; so when he, (Mosheh) came to him (Yethro), he (Yethro) said: "Don't fear, you are saved from the kindred who are Al Zaalimiyn, 'Ones In A State Of Unjustness'."

26) She (One Of Yethro's daughters, Tsifforah) said: "O my father, make a deal with him, (Mosheh), surely the best of those whom you make a deal with, are the strong, the faithful."

27) He, (Yethro) said: "I want to marry these to you, of my daughters: (Tsifforah, Hudiyna, Hannah, Arabia, Zinnar, Zainab, Rabia); if you make a deal with me, for eight years; so if you complete ten years, so that is from your possession. I, (Yethro) don't want to cause any difficulty upon you, (Mosheh),

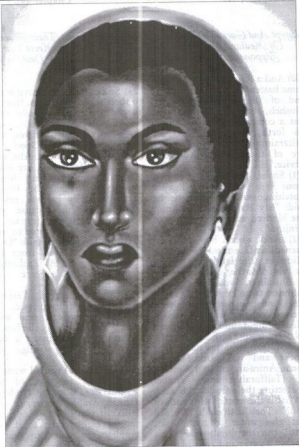


Figure 73
Arabia, Daughter Of Jethro



Figure 74
Hüdiyna, Daughter Of Jethro

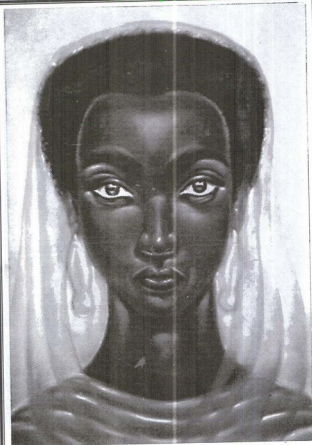


Figure 75
Khannah (Hannah), Daughter Of Jethro



Figure 76
Zinnar, Daughter Of Jethro



Figure 77
Zainab, Daughter Of Jethro



Figure 78
Raha, Daughter Of Jethro

and you will find me of Al Saalihiyn 'The Perfectionists'.

28) He, (Mosheh) said: "That is between me and between you, (Yethro), which ever of the two terms I decide to fulfill, so let there be no enmity upon me; and The Source, ALLAH is an advocate over that which we say."

*Mosheh Perceives A Fire -
Mosheh Called By The Source
From The Right Side Of The
Mountain*

29) So when Mosheh, had Fulfilled the term (8-10 years) and he moved about with his family (to Egypt), he perceived a fire on the side of Al Tuwr, 'Mount Sinai,' so he said to his family, "You all remain here, for I have seen a fire; perhaps I will bring back to you some news (about the route to Mitsrayim/Egypt), or a brand of fire, so that perhaps you all can warm yourselves."

30) So when he, (Mosheh) came to it, (the mountain), he was called from the right side of the valley (Mount Sinai) in the blessed spot of the tree (the burning bush, a light): "O Mosheh, surely I am The Source, ALLAH, Rabb, of Al Aalamiyn 'The Known Worlds'."

*Mosheh Was Told, To Cast
Down His Staff - As A Sign*

*To Rameses II, Mosheh' Hand
Will Turn White - Mosheh
Fear For His Life, And Asks
If His Brother, Aharown Can
Be Sent As A Translator*

31) And surely, you (Mosheh), are to cast down your staff, so when he saw it, (the staff) begin to move as if it were of a Jaan, (Disagreeable, Malevolent Being, 'Demon,' of the Cherubeem, -A Serpent), he turned back retreating, and did not return back: "O Mosheh, come forward (come close to us Eloheem Anunnaqi) and don't fear (don't be afraid of us extra-terrestrial), surely you are of the faithfully secure ones."

32) Put your hand in your pocket (Mosheh), it will come forth Baydaa-a 'White (Leprous)', without any evil, 'harm' and then draw it forth, to your bosom; of the terror, these are two proofs from your Rabb, who is 'Sustainer/Master' to Pharaoh (Rameses II) and his rulers. Surely, they are a kindred that are Fasiqiyn 'Transgressors'.

33) He, (Mosheh) said: "My Rabb, who is 'Sustainer,' surely I killed a Nafs 'Person' from amongst them (the Mizraimites), so I fear that they will kill me."

34) And my brother, Aharown, he is purer than I in his (speech), tongue (Pure Aramic Hebrew), so send him as a Rasuwl, 'One

Sent' with me, as a translator. He is of the Sodoqites, surely I, (Mosheh) fear they will tell lies on me.

35) He Said: "We ([We Not He] the Eloheem/Anunnaqi) will make your, (Mosheh) arm strong by using your brother, (Aharown The Prophet); and We (Eloheem Anunnaqi) will make for both of you, Sultaanaan 'An Authoritive Power' (Eloheem), so that they, (the Mizraimite/Egyptians) will not be able to reach up, high enough to you all, who have Our (Our Not My) signs. Both of you and all those who follow you, will be of Al Ghaaliybawn 'Those Who Triumph.'

*The Enosites Of Pharaoh Say,
That It Is Invented Magic' -
Pharaoh Says, He Is The
Only Source' - He Wants A
Palace So He Can Ascend To
Mosheh's Rabb - Rameses II
And His Armies Were Thrown
Into The Yamm*

36) So when Mosheh came to them, (the Pharaoh, and his Enosites, the Mizraimites), they said: "This is nothing except invented Sihir 'Magic'; and we didn't hear of this from our forefathers, the Awwaliyn (The 24 Elders, Eloheem, Anunnaqi.)

37) And Mosheh said: 'My Rabb, knows those who came with calmness, from His (His

Not Our) possession and those whom the End will exist for him as Al Daar 'The Abode'; surely, He (He Not We) will not make the unjust ones to succeed.

38) And The Pharaoh (Rameses II) said: "O Malaa-u 'Rulers (Two Great Leaders, The High Official Of The Ruler Achashwerowsh Of Persia - Haman And Qorach Of Israel)', I don't know of any ILAAHIN (ALLAHS) 'Sources' besides myself; so Waqadn 'Light Up' (brighten up) for me from Al Tiyn 'The Clay, (Some Bricks)' and make a Sarhaan 'Palace' for me, perhaps I can ascend to the ILAAHI (ALLAH) of Mosheh, and surely I, verily I, (Rameses II) think he is of the liars."

39) And he, (Rameses II) was big-chested, pouting with pride, he and his armies in the earth, (Mizraim 'Land Of The Two Rivers,') without the facts, and they thought they will not return to Us ([Us Not I] Eloheem Anunnaqi).

40) So We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) took him and his Junuwd 'Armies', then We (Eloheem Anunnaqi) threw them in the Yamm, 'Sea, so look at the End of The Zaalimiyn, 'Unjust Ones.'

41) And We (We Not He - Eloheem Anunnaqi) made them A'immah, 'Ones Placed Upfront, Imaams,' calling to Al Naar 'The Fire', and the day of Al

Qiyaamah, 'The Resurrection'; they will not be Yunsaruwn 'Aided'.

42) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made a curse follow them in Al Dunyaa, 'The Physical World' and the day of Standing, 'Resurrection,' they are of Al Maq-buwhiyn, 'The Shameful Ones.'

*Torah Given To Mosheh,
Yehowshuwa, And Aharown -
They Are Insights For The
Naas - Ahmad Is Not A
Watcher When Eloheem The
Fulfilled Their Commands
Upon Mosheh Or Midyan*

43) And indeed We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Aatay 'Gave' Mosheh the scripture (the Torah; 5 books of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Joshu'a); after We (Eloheem Anunnaqi) destroyed the first generations (people of Noach's time). In it are insights, for the Enosites, and a leading calmness, and a Rahmat 'Yielding' (mercy), that perhaps they will remember.

44) And You, (Ahmad) was not close to the western side, when We (We Not He - Eloheem Anunnaqi) fulfilled the command to Mosheh, and you were not of the Shaahiyydeen, 'Watchers.'

45) And We (We Not I - Eloheem Anunnaqi) raised up

generations, so the years were long upon them, and you, (Muhammad) were not a dweller amongst the family of Midyan; reciting Our (Our Not His) signs upon them, but most of Us, (Us Not He - Eloheem Anunnaqi) are Mursaliyn, 'Ones Sent.'

46) And you, (Muhammad) were not close to Al Tuwr 'Mountain Sinai', when We (We Not He) called out (to Mosheh), but it was only a Rahmat 'Yielding' (mercy) from your, (Muhammad's) Rabb, who is 'Sustainer,' as a warning for you, to warn a kindred to whom no warner had come - (the Ishmaelites), from before you, (Muhammad); so that perhaps they would remember, (that they are also of the covenant, made with Abrawhawm).

47) And if We (We Not He) had not afflicted them, (the Quraysh) with an affliction of that which their hands brought forth; then they would have said: "Our 'Sustainer and Master,' who is Rabb, why, have you not sent to us a Rasuwl, 'One Sent,' so that we can follow Your (Your Not My) signs and we be of the faithful ones?"

48) So when the facts (beyond any doubt) has come to them from Our possession, (the Qur'aan, was given to the newsbearer Muhammad, in its entirety in the presence of the Eloheem, Anunnaqi); they said:

"Why was he, (Ahmad) not given the likes of that which was given unto Mosheh? (Why wasn't he given the Tablets and the commandments?) Didn't they, (The Quraysh) conceal that which they knew to be the facts about that which was given to Mosheh, (Joshua, and Aharown) from before, (The Torah). They said: 'They were two magicians, (Mosheh and his brother, Aharown) that only supported each other and they also said: "Surely, we conceal that which we know to be the facts."

Muhammad Told To Tell The Quraysh To Bring A Scripture That Calms, Better Than The Qur'aan And Torah - Those Who Have Faith In Qur'aan Will Be Given Twice A Reward

49) Tell them this, (Muhammad): "So come forth with a scripture from the possession of The Source, ALLAH, He, 'HU -The Creative Force Of Will' who leads into calmness than these two (the Torah, and the Qur'aan, so) that I can follow him, if you are to be truthful."

50) So if, they (the Quraysh), don't answer, ('respond') to you, then, you (Muhammad) are to know that surely, they follow Ahwaa-a'a 'Their Loves' and those who are lead astray, (into

error) from those who followed their love without leading calmness from The Source, ALLAH; surely, ALLAH does not lead into calmness the kindred who are unjust.

51) And indeed We (We Not He) caused the sayings to reach them, (that) perhaps they will remember.

52) Those to whom, We had given the Kitaab, 'Scripture' (the Qur'aan) before it, they are faithful to it, (the Qur'aan).

53) And when it, (the Qur'aan) was recited unto them, they said: "We have faith in it, (the Qur'aan). Surely, it is a fact (beyond any doubt) from our Rabb, surely we were Muslims, 'Ones Of Peace', before it.

54) These are those who will be given their reward, twice, of that which they had patience for. They avert the evil with Al Hasinat 'The Goodness'; and of that, which We (We Not He - Eloheem Anunnaqi) Razaqnaahum 'Provided Them', they share willingly.

55) And when they hear the vain talk, they turn away from it, and they said: "For us, is our works and for you all, is your works, 'deeds.' Peace be upon you, we don't seek to be of the ignorant ones."

Muhammad Don't Calm Those You Like - Quraysh Wants To Know If They Follow

*Muhammad, Will They Be
Snatched From Their Land? -
Eloheem Doesn't Destroy
Villages Except If The
Enosites Are Unjust*

56) Surely you, (Muhammad) don't calm those whom you like but, The Source, ALLAH leads into calmness those whom He (He Not We) pleases and knows best the ones lead into calmness.

57) And they (Arabs) said: "If we follow the calmness (the Qur'aan) with you, (Muhammad), will we be snatched from our earth (Our Land- Mecca)?" Have We not established for them a sacred place (Kaaba), faithfully secure, in which tribute is brought to them of every kind of fruit as a provision from Our (Our Not My) presence? But most of them don't know.

58) And how many villages (in Arabia), have We, ([We Not I] Anunnaqi) destroyed, that were living in vain, 'recklessly'; so these are their dwellings, which will not be dwelt in, except for a few, from after them, and We will be their inheritors.

59) And your, (Muhammad's) 'Sustainer/Master,' who is 'Rabb,' was not a destroyer of the villages (pagan Meccans ruler), until he had raised up (back to life) a Rasuwl in their nations, reciting upon them Our (Our Not My) signs, and We (We

Not He) were not destroyers of the villages, except if their family (Enosites) were unjust ones."

*The Material Things Are Only
A Temporary Provision - A
Day When The Source Will
Question Those Who Associate
Partners With Him*

60) And the (material) things of which you are given, so these are only a temporary provision of the life of the physical worlds and its adornment; and that which is in the possession of The Source, ALLAH is Khayr 'Good', and enduring? Don't you all know this?

61) As for those whom We (We Not He) promised a good promise, verily he will meet it; and as for those We (Eloheem Anunnaqi) provided a temporary provision, of the life of the Dunyaa, 'Physical World', then he will be of the ones to come on the Day of Standing.

62) And the day, he will call them, so he will say: "Where are Shurakaa-iyaa 'My Associating Partners' (deities) whom you all Tazumuwn 'Appointed As Leaders'?"

63) Those, whom the saying, was a fact upon them said: "Our Rabb these are those whom we lead astray (into error). We lead them astray (into error), as we ourselves are astray (in error);

we are free, 'innocent' to You. It was not us, they were slaving for."

64) And it will be said to them: "Call upon your associating partners (deities); so they called upon them, and they didn't answer, 'respond' to them and they will see the pain; only if they were calmed.

65) And the day, he will call them, then He will say: "What is the answer you all gave the ones sent?"

66) The news on that day, will be blind upon them, and they will not ask about each other.

67) And as for those who turn to repentance and have faith and work to Saalihaan 'Perfect Themselves', he hopes that maybe, he will be of the prosperous ones.

*The Source Is The Most High
- He Knows What Your Chest
Hides And Makes Known - No
Allahs Would Exist Except By
Way Of Him - Is There
Another Source Besides The
Source?*

68) And your, (Muhammad's) Rabb, creates (and procreates) that which He (He Not We) pleases, and He chooses that which is the best choice for them. Glorified and Talaalaa 'Exalted', is The Most High, (ANU), of that which Yashrikuwn 'They Associate

Partners With'.

69) And your Master, 'Rabb' knows that which your chests hide, and that which they make known.

70) And he (HU -The Creative Force Of Will) is The Source, ALLAH; no ALLAHS 'Sources' would exist except by way of Him. The gratitude is for Him, in Al Uwlaa 'The Beginning', and Al Aakhirat 'The End'; and the wisdom is for Him, and we shall return unto Him.

71) Tell them this, (Muhammad): "If The Source, ALLAH made Al Layl 'The Shadow Hour Period,' eternally upon you all, to the day of resurrection; is there another Source, besides The Source, ALLAH, who can come with Diyaa-in 'Illumination', can't you all hear?

72) Tell them this, (Ahmad): "Don't you see that if The Source, ALLAH made Al Nahaar 'The Daytime' eternally upon you all, to the day of Al Qiyaamah 'Standing/Resurrection'. Is there another ILAAHIN (ALLAH) Source besides The Source, ALLAH who can come with the Shadow Hour Period, that you Taskunuwn 'Dwell' in? Don't you all see?

73) And from his Rahmah, 'Yielding' (Mercy), We (We Not He), made the Shadow Hour Period and the Daytime to dwell

in them and that you all are to desire his Fadl, 'Preference', that perhaps you all may be Tashkuruwn 'Grateful'.

74) And the day when He will call them, then He will say: "Where are my associating partners (deities) that you all Tazumuwn 'Appointed As Leaders'?"

75) And we pulled a watcher from every nation; so you all are to bring your proof, then you will know that the fact is for Him (The Source) and that which they invented, leads them astray (into error).

*Qorach Was Unjust Amongst
The Israelites - Don't Seek
Mischief - Qorach Was
Swallowed By The Earth*

76) Surely, Qaaruw (Qorach Ruler Of The Israelites), was from the kindred of Mosheh, he acted unjustly to them - (Israelites) and We (We Not He) gave him from the treasures of that were; surely, their keys would have been a burden to that group of males, who had strength; when his kindred said: "Don't be happy, surely, The Source, ALLAH does not like the happy ones - (who are happy about their riches).

77) And seek that which The Source, ALLAH have given you from Al Daar 'The Abode' of The End, and don't forget your

portion of the physical world and make good that which The Source, ALLAH has made good to you, and don't seek the mischief in the planet Tiamat/Earth; surely, The Source, ALLAH does not like the mischief makers.

78) He, (Qorach Ruler Of The Israelites) said: "Surely I have been given knowledge from my possession." Didn't he know that The Source, ALLAH has certainly destroyed the generations from before him? Those who were more severe, 'stronger' and had more gatherings, and they, the guilty ones, will not be asked about their disagreeable acts.

79) So he, (Qorach Ruler Of The Israelites) went forth from his kindred, in his adornments; those who wanted the life of the physical world said: "Only if we had the likeness of that which was given to Qorach, surely he is possessor of a 'Aziym 'Supreme' fortune."

80) And those who have been given the knowledge said: "Woe to us! The reward of The Source, ALLAH is better for those who are faithful and work to Saalihaan 'Perfect themselves' and none will receive it, except for the patient ones.

81) Then We (We Not He) caused the Earth to swallow him, (Qorach Son Of Izhar Who Rebelled Against Moses) up, and

his abode, so there is not for him from a group, who can aid him, from besides The Source, ALLAH and he will not be of the ones to be aided.

82) And those who wished to be in his, (Qorach Son Of Izhar's) place, the day before, they said: 'Only if The Source, ALLAH spread, the provision to whom He (He Not We) pleases from His (His Not Our) slaves, and He has the power to do it, why didn't ALLAH provide us graciously? Verily, the Earth will swallow us up, and woe to him, those who conceal that which they know to be the facts, because He will not make them succeed.

*The Abode Of The End Is
For Those Who Don't Want
Highness In Qi - Qur'aan Is
Made Obligatory Upon Ahmad
- Qur'aan Is Sent As A
Yielding Mercy - Muhammad
Don't Call Upon Another
Source - The Judgment Is His*

83) That abode of The End, We (We Not He - Eloheem, Anunnaki) will make it for those who don't want highness, in the planet Qi, nor mischief making, and this is the End of the ones who tremble at the mentioning.

84) And those who came with goodness, so this is better than it, and those who came with evil; so those who do evil will not be rewarded, except for that which

they were doing.

85) Surely He, has made the Qur'aan Farada 'Obligatory upon you, (Muhammad), and He will verily return you, (Ahmad), to your place (Mecca, in an appointed place); so tell (the Meccans): "My Rabb, knows best those who came with leading calmness and he who is clearly astrayed (into error).

86) And you, (Muhammad) were not hoping, (looking forward to) being met with a scripture (the Qur'aan), but it is nothing but a yielding mercy from your Rabb, who is 'Sustainer,' so, you (Ahmad) don't ever support Al Kaafiriyn, 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts.'

87) And don't let them, (the Meccans), turn you, (Muhammad) away from the signs of ALLAH, after they have already been sent down to you, and call upon your Rabb, and don't be of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners. (Other Deities With Allah)'.

88) And don't you, (Ahmad) call upon another ALLAH, with The Source, ALLAH. No ILAAHIN (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Him (HU -The Creative Force Of Will). All things will be destroyed except for Wajhahu 'His Face' (ALLAH has a face); the wisdom is for Him (Him Not Us), and you all

will return to Him.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Fifty

*Revealed In The Year 618 A.D. Verses 26, 32,
33, 57, 73-80 Were Revealed In Medina*

*Banee Israa'iy
(Children Of Yisrawale/
Jacobites) Or
Al Isra*

*(The Night Journey)
Original Order Chapter 50;
Wrong Order Chapter 17*

Begin All Things With The
Name Of The Source, ALLAH,
The Rahman, Who Is The
Yielder, The Most Merciful.

*Muhammad Taken Up In A
Craft From The Sacred
Place Of Prostration To
The Farthest Place Of
Prostration- The Torah Is
A Calmness For The
Jacobites*

50 Glorified is He who went
upward with Our slave
(Muhammad), one Shadow
Hour, from the Masjid Al
Haraam 'Place Of Prostration
That Is The Sacred One', to the
Masjid Al Aqsaa 'Place Of
Prostration That Is The
Farthest'. He it is whom, We
([We Not He] Eloheem,
Anunnaqi) put blessings all
Hawlahu 'Around Him' (a

circular craft); so that perhaps
We, (Eloheem) will be able to
show him Our (Our Not His)
signs; because surely He is Al
Samiyu 'The Hearer' Al Basiyr
'The Seer'."

2) And We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) gave
Mosheh the scripture - (the
Torah, The Law) and We,
(Eloheem) made it a calmness for
the Banee Israaiyl 'Children Of
Yisrawale.' (It teaches) that you,
(Israelites) should not take any
advocate besides Me (Me Not We
Who is Alone)."

3) The Offspring, ('Bloodline'
Children Of Yisrawale) of those
who We, (Anunnaqi) carried (in
the craft), with Noah - (Noach's
wife, Na'ama his three sons and
their wives; Shem and Faatin,
Japheth and Ifat, Ham and
Haliyma, Lebana and 80 other
beings). Surely he, (Noach) was a
Shakuwr 'Grateful' slave."

4) And We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) made
known to the Children of
Yisrawale/Ya'aqob in the
scripture - (the Torah), that you
will do mischief in the planet
Qi/Tiamat 'Earth' twice; (once in
the Enclosed Garden of Delight
and second in worshipping the
false ELOH Baal, 'Lord And
Master') and you, (Israelites) will
be elated with Kabiyr 'Much'
arrogance.

5) So when the promise of the
first of the two, We, ([We Not I]

the Eloheem, Anunnaqi) raised (back to life) on them a slave of Ours, having Shadiyd 'Forceful' misery, 'wretchedness.' So they explored inner compartments of Al Diyaar 'The Abodes' (Shamballah, Agharta), and it was a promise fulfilled."

6) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) returned for you all, the return of luck on them; and We, (Eloheem) helped you all with wealth and sons, and We, (Anunnaqi) made for you a lot of numbers of males - (an advance guard)."

7) If you all have done that which is best, you all have done that which is best for your own Nafs 'Selves' and if you all have done evil, so when the promise of Al Aakhirat 'The End' comes, to make your Wajh 'Faces' evil, and for them to enter the Masjid 'Place Of Prostration', as if they entered it for the first time, and for them to destroy all with the greatest destruction.

8) Maybe your 'Sustainer', who is Rabb, will Yarhamakum 'Show Yielding (mercy)' on you, and if you return, then We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) return and We, (Eloheem) made Jahannam 'Purgatory' a prison for the ones who concealed what they know to be the facts.

9) Surely, Haadhaa 'This' Qur'aan, is a leading calmness unto that which is most Aquwamu 'Strongest', and it is an

announcement for the faithful ones, who work to Al Saalihaat 'Perfecting Themselves'; that for them, is a big reward.

10) And that those who don't have faith in Al Aakhirat 'The End' We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) prepared for them an aching pain. "

*Enosities Are Hasty - The
Shadow Hour And The
Daytime Are Signs,
That You May Learn The
Number Of The Years And
The Calculation - Each
Destiny Is Brought Forth*

11) And Al Insaan 'The Enosite' Yad'u 'Calls' (prays) for Sharri 'Disagreeableness' as his call (prayer) for Khayr 'That Which Is Good' (Agreeable), and 'Al Insaan 'The Enosite' is hasty."

12) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made Al Layl 'The Shadow Hour' and Al Nahaar 'The Daytime' two signs. So We, (Eloheem) obliterated a sign of the Shadow Hour Period; and We, (Anunnaqi) made a sign for the Daytime, that it may be something you can see, for you all to seek, 'desire' a preference from your Rabb 'Sustainer,' and for you all to learn the number of the years (6,000) and the calculation (4,000 and 2,000); and everything, that We, (Eloheem, Anunnaqi) explained it with explicit detail.

13) And each Enosites (destiny in the Book Of Life) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have put around his own neck with him at all times; and We, (Eloheem, Anunnaqi) will bring it forth for him on the Yawm Al Qiyaamat 'Day of The Resurrection'. He, (the concealer of the facts,) will find a scripture - (book of his deeds), open wide for him to see for himself, (all that which he did)."

14) He, (the concealer of the facts will be ordered): "Read your own scripture - (Book of Deeds). You are a sufficient wise one with your ownself that day." (It will be on you to reckon with yourself, your own deeds).

15) Whoever becomes calmed, then indeed he has calmed his Nafs 'Spirit/Self', and as for him who goes astray then indeed, he has gone astray into error, for himself; and no one can bear the burden for anyone else - (no intercession burden) and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) will not inflict pain until we, (Eloheem) have raised (back to life) a Rasuwl 'One Sent'.

16) And If We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) wanted to destroy a Qaryatan 'Village', We, (Eloheem) commanded who lived easily, luxuriously in it. So they had forsaken, became disagreeable, (sinful) in it. So the saying became true on it; so We, ([We Not He] Eloheem,

Anunnaqi) destroyed it, (with) a total destruction."

17) And how many Al Quruwn 'Generations', have We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) destroyed from after Noach, and sufficient enough is your Rabb 'Sustainer' with Disagreeable Acts Of His slaves, (He Is) Khabiyr 'Aware', Basiyr 'Seer'."

*Eloheem Made The Things Of
This World Move As They
Please - Slave For Your
Rabb, Alone - You Are To
Give To The Needy -
Squanderers Are Brothers Of
Shayaatlyn*

18) Whoever wants (this world) to hurry (just for himself, quick returns and short term benefits;) we made it be quick for him in it what We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) please, for whom We (Eloheem Anunnaqi) want. then, we made for him Jahannam 'Hell'. He will burn in it (and arrive at it), abused and disgraced. "

19) And whoever, desired Al Aakhirat 'The End' and strived for her - its effort (works in this worlds); and he is one who is faithful, so these are those whose efforts, (works in this world), are the Mashkuwr 'Grateful Ones'."

20) We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) do help all those and those from the giving of your Rabb, and the giving of your

Sustainer was not prohibited."

21) Look how We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) preferred some of them, over others and verily Al Aakhirat 'The End' is Akbar 'Bigger, Older' in Darajaat 'Levels, (Degrees)' and Akbar 'Bigger, Older' in preference.

22) Don't make with ALLAH, another ILAAHAN (ALLAH), 'Source,' so you will remain abused, forsaken."

23) And Your Rabb, who is 'Master' has ordained that you all slave for Him (Him Not Us), and be Ahsaanaan 'Kind' to your parents. However, if they'll grow in your possession, old age one of them or both of them, so don't say to both of them, 'shame' and don't repulse both of them, and say to both of them a Kariym 'Generous' saying."

24) And lower down to both of them, the Janaaha 'Wing' of humility from Al Rahmat 'The Yielding' (mercy), and tell them: "My Rabb 'Sustainer' Arhamhumaa 'Have Yielding' (mercy) on both of them, like they two reared, brought me up, when I was little."

25) Your Rabb 'Sustainer' knows best, what's in your Nafs 'Selves.' If you all work to Saalihiyn 'Perfect Yourselves', so surely, He was Ghafuwrn 'Forgiving' for those who turn to Him (Him Not Us).

26) And give to the near relative

his just due, and the needy, 'poor' and the Abn Al Sabiyl 'Son Of The Path', and don't squander 'waste profusely."

27) Surely the squanderers were brothers of the (physical) Shayaatiyn, 'Evil Reptilians, Disagreeable, Malevolent Beings, Devils,' and the Shaytaan, was concealing that which he knew to be the facts, to his Rabb."

28) And however, if you all turn away from them, seeking Rahmat 'Yielding (mercy)' from your Rabb, 'Sustainer,' which you hoped for, so say to them a kind saying."

29) And don't make your hands fettered to your neck and don't spread them all of the extension. So you squat (sit) remain blameful, destitute, (stripped).

30) Surely your Rabb spreads out Al Rizqa 'The Provision' to whomsoever He (He Not We) pleases and withholds it. He is Khabiyr 'Aware' and Basiyr 'Seeing' with (the needs of) His Slaves."

*Don't Kill Your Children, Or
Person - Or Go Near
Fornication, Or The Wealth
Of Orphans*

31) And don't kill your children, dreadful of poverty. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) provided them, and to you all, surely their killing was a Kabiyr 'Great', wrong

(disagreeable) act."

32) And don't go anywhere near Al Zirnaaya 'Fornication' - (sex between Enosites married to two other Enosites), surely it was a shameful deed and an evil path (to be on).

33) And don't kill Al Nafs The Enosite' which The Source, ALLAH has forbidden except by facts and who was killed wrongfully, in a state of unjustness, certainly We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made for his heir an authoritative power. So don't let him exceed, transgress in the killing. Surely he will be aided."

34) And don't you all come near the wealth of the orphan except by that which is Ahsanu 'Better', until he reaches full strength and you all fulfill by way of Al 'Ahdi 'The Covenant'. Surely Al 'Ahdi 'The Covenant' will be asked about.

35) And you all fulfill the measure, when you measure and adorn with the balance of the ones who stand up straight - (the newsbearers), that is Khayr 'Good' and a Ahsan 'Better' interpretation."

36) And don't follow, 'pursue' what is not for you without knowledge. Surely Al Sam'a 'The Inner Hearing' and Al Basara 'The Inner Sight' and the Fu'aad 'Inner Hearts' of all of these, will be asked about."

37) And don't walk in the

planet Qi, 'Earth,' cheerfully. Surely, you didn't tear apart the planet Qi, and you didn't make the mountains reach their full height?

38) All of that was its evilness, that is hateful in the possession of your Rabb, who is Sustainer, and Master.

39) That is what your Rabb Awhaa, 'Inspired' you with Al Hikmat 'The Wisdom'; and don't make any other ILAAHAAN (ALLAHS) 'Sources' with The Source, ALLAH, or you will be cast into Jahannam 'Hell', blamed and defeated.

Has The Source, Taken For Himself Female Eloheem? - The Source Is The Most High

40) Has your Rabb, 'Sustainer,' then singled you out to give you sons, and has taken for Himself females from the Malaa-ikat 'Eloheem, Anunnaqi' Female (Messengers 'Angelic Beings,) surely you are saying a 'Aziym 'Supreme', evil thing.

41) And indeed We, ([We Not He] Eloheem) mentioned things in many ways, in this Qur'aan for a Dhakkaruw 'Reminder' and it did not increase them in any way except their dislike of it.

42) Tell them O, (Muhammad), "If there were with him AALIHATUN (ALLAHS) 'Sources' as they say, then they

would seek a path to the Possessor of Al Arsh 'The Throne'?"

43) Glorify and Ta-aalaa 'Exalted' is He (He Not I) above, what they say. The Most High, (ANU), The Kabiyr 'Biggest, Oldest'."

44) Al Sab-u 'The Seven' Samaawaat 'Skies' and Al Ard 'The Earth,' glorify Him, and who are in them; and there's not anything except that glorifies with Hamdihi 'His (His Not Our) Praise', and you all will not comprehend their glorification. Surely He is Haliymaan 'Clement', Ghafuwr 'Forgiving'.

45) And when you, (Muhammad) read the Qur'aan We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made between you, (Muhammad), and between those who don't have faith by way of Al Aakhirat 'The Last Day', a Mastuwraan 'Hidden' Hijaabaan 'Screen'.

46) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made a cover on their hearts, unless they should Yafqahuwhu 'Overstand It' - (the Qur'aan), and in their ears is a heaviness, 'deafness,' and when you remember your Rabb, who is 'Sustainer and Master' in the Qur'aan Wahdahu 'By Himself' (Alone), they turn their backs in dislike.

47) We (We Not I) know of that which they listen to, when they listen to you and when they're in

a secret conversation, when the ones in a state of unjustness will say: "That you all follow except, a 'Rajul' Mortal Man' who is Mashuwr 'Bewitched'."

Muhammad Questioning The Meccans About A New Creation - Satan The Reptilian Is A Clear Enemy To The Enosite - Allah Preferred Some Of The Newsbearers Over Others

48) Look how they, (he Meccans) struck forth for you, (Muhammad) the likenesses. They had gone astray (into error), so they can't be capable of finding a path.

49) And they said: 'If we were Izaamaan 'Bones' and Rufaataan 'Dust Fragments', surely we will be raised (back to life) as a Jadiyd 'New' Khalqaan 'Creation'."

50) Say: "You will be rocks or iron?"

51) Or a Khalq 'Creation' that is the Yakburu 'Biggest, Oldest' in your chests. So they will say: "Who will bring us back (to life)?" Tell them: "He (He Not We) who Fatarakum 'Splitted You All (Sliced Your Genes)' the first time." So they will shake their heads to you, and they will say: "When is it?" Say: "Maybe that it will be Qariybaan 'Near'."

52) On that day, He will call you all, so you will answer with His (His Not Our) Hamd

'Gratitude', and you all will think that you all remained except a little.

53) And say to My (My Not Our) slaves: "Which is Ahsanu 'Better', surely Al Shaytaan 'The Physical Evil One, The Malevolent Being, The Reptilian' incites evil between them. Surely, the Shaytaan was a Mubiynaan 'Clear' 'Aduwun 'Enemy' for the Enosite.

54) Your Rabb 'Sustainer/ Master' knows of you all. If He (He Not We) pleases, He shows Rahmat 'Yielding' (mercy) on you all. Or if He pleases, He punishes you, and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send you, (Muhammad) on them as a Wakiyl 'Advocate' (Guardian).

55) And (Muhammad), your Rabb knows who is in Al Samaawaati 'The Skies' (which beings live in the skies) and Al Ard 'The Planet Earth' (which beings live on or in the Planet Earth); and indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Fadal 'Preferred' some of Al Nabiyyina 'The Newsbearers' - (the major prophets

- 1.Zakar/Adam.
- 2.Adafa/Khanowch,
- 3.Utnafishtim/Noach,
- 4.Abram/Abrawhawm.
- 5.Yitskhawq/Isaac
- 6.Harsemtawi/Yishmawale.
- 7.Luqman/Leummiym
- 8.Thutmose I /Moshch

- 9.Tammuz/Yashu'a/Isa
- 10.Ahmad/Muhammad) over some others - (the minor newsbearers like: 1. Seth
- 2.Ya'aqob/Yisrawale
- 3.Daniel/Daniye'l
- 4.Isaiah/Yesha'yah,
- 5.Jeremiah/Yirmeyah
- 6.Yahyaa/Yokhawnawn, just to name a few); and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave Dawiyd the Zabuwr 'Psalms.

56) Tell them: "Call unto those whom you all imagine from besides him, so they don't have the power of removal of harm (affliction) from you and neither change.

57) These are those who call out, (pray) and they seek the means to have access to their Rabb, even those who are the nearest and they are hoping for His (His Not Our) Rahmat 'Yielding (mercy)'; and they fear his pain. Surely, the pain of your Rabb is one to take heed of.

*We Eloheem Don't Send Signs,
Except As An Intimidation -
The Cursed Tree Zakkuwm,
As A Test To Enosites*

58) And there's not from a village, except We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will be the ones to destroy it before Al Qiyaamah 'The Day Of Standing/Ressurrection' or the ones to punish it, with a Shadiyd 'Forceful' pain - punishment,

that was Mastuwr 'Recorded' in the scripture (Akasha records).

59) And did not hindered Us, (Eloheem, Anunnaqi) to send with signs except that the Awwaluwn - 'Ancient Ones' denied them, and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Thamud, Al Naaqat 'The She-Camel' as a sight. So they acted unjustly, with her; and We, (Eloheem) did not send with the signs except as a fear - (intimidation).

60) And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) said to you, (Muhammad): "Surely your Sustainer who is Rabb, has surrounded all Enosites and We, (Eloheem, Anunnaqi) have not made the vision which We showed you, except for a test for the Enosites and Al Maluwnat 'The Cursed' Shajarat 'Tree' 'Zakkuwm' in the Qur'aan and We frighten them; so they did not increase except in a Kabiyr 'Old, Big' transgression.

*All Eloheem, Anunnaqi Told
To Prostrate Before Zakar -
Reptilian's Promise Is Nothing
Except A Deception -
Muhammad You Are Not
Above Any Of My Slaves. As
An Authority*

61) And when We, ([We Not He] Eloheem) said to all the Malaa-ikat 'Eloheem, Anunnaqi' (Seraphem, 'Agreeable,

Benevolent Beings and Cherubeem, 'Disagreeable, Malevolent Beings') to Sajaduw 'Prostrate' for Zakar/Adam. So they all Sajaduw 'Prostrated' except, Ibliys 'The Rebellious One' (The Reptilian, also known as Haylal, son of Shakhar/Zuen). He, (the Evil Jinn, Cherubeem, the Reptilian) said: "Am I to Prostrate for Him, (Zakar/Adam) whom you, created of Tiyn 'Mud, Clay'?

62) He, (Ibliys/Haylal) said: "Didn't you see this, is he who Karamatu 'You Show Generousity' over me? Even if you Akhartani 'Respite Me' to the Yawm Al Qiyaamat 'Day Of Standing/Resurrection'; for I will destroy his offspring except a little, 'few' (Nuwaubu).

63) He said, go. "So who follows you from them? So surely your (the concealers of the facts) rewards will be Jahannam 'Hell', an abundant reward.

64) And lead to destruction, (instigate) whom you are able from them, with your voice; and attack on them with your cavalry and your foot (soldiers) and share in with them (be a partner) of the wealth and the children, and promise them, and the (physical Evil One), Shaytaan does not promise them nothing, except Ghuruwraan 'Deception'.

65) Surely, You, (Muhammad) are not above My (My Not Our)

slaves as a Sultaan 'Authoritive Power (Eloheem)'; and your Rabb who is 'Sustainer', is sufficient enough as a Wakiyl 'Advocate.'

*The Enosite Is Forever
Ungrateful To His Rabb -
Will Allah Return You. The
Reptilian's Followers In The
Sea? - Eloheem Honored
Bancee Adaam*

66) Your 'Master', who is Rabb, is He (He Not We) who drives forward the sails for you, the Fulk, 'Craft' in Al Bahr 'The Sea' for you all to seek His preference. Surely, He was for you, Rahiymaan 'The Most Merciful'.

67) And when harm, (damage) has touched upon you all in the sea, went astray, whom you called unto (pray) except Iyyaahu 'By Way Of His Sign'. So when he saved you to the dry land, you all turned away; and the Enosite was forever concealing that which they knew to be the facts (ungrateful).

68) So if you feel secure that He (He Not We), will cause to fall down for you a part of the dry land, or He, sends upon you a Haasibaan 'Violent Wind, (with stones in it)' then you all will not find for you an 'Advocate.'

69) Or do you all have faith, that He (He Not We), will return you all, (the Devil's

followers) into it, (the sea as Reptilians) one more time (return them to the sea again)? So He, sends on you all a shattering wind storm (destroyed by meteorite storm). He, drowns you all for that which you concealed of the facts, Then You Will Not Find Upon Us (Eloheem Anunnaqi), For You All, Blame By Way Of It.

70) And Indeed We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) have Karama 'Showed Generosity To' the Bancee Adam 'Children Of Zakar/Adam,' (Adamites) and We, (Eloheem) carried them in the dry land and the sea; and We, (Anunnaqi) Razaqnaahum (Rizqiyin) 'Provided For Them' from the agreeable things, and We, (Eloheem) preferred them upon many, whom we have created with a preference.

*Eloheem Will Call Enosites By
Way Of Their Imaam -
Meccans Will Only Take You,
Muhammad As An Associate. If
You Forge Things About The
Eloheem - Muhammad You
Won't Find Any Changes In
Our Sunnah*

71) A day when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will call all Enosites by way of their Imaam 'One Place Upfront'; so as for him, who was given his scripture in his right hand, so these are the ones of you who will read their scripture and not

at all, be dealt with unjustly.

72) And as for him who is blind at Al Aakhirat 'The End', he will be blind in Al Aakhirat 'The End', and stray, (drift) off the path, (into error).

73) And indeed they, the (Meccans) plotted in order to seduce, (divert) you, (Muhammad) from that in which We, ([We Not He] Eloheem) Awhay 'Inspired', to you - (The Qur'aan). They wanted you to forge, (fabricate) things about Us, ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi), and then they would take you, (Muhammad) as a friend (Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi the false Prophet Muhammad of Moslems today).

74) And if We, ([We Not He] Eloheem) did not make you, (Muhammad) firm, indeed you, almost began to rely on them, in some of the little things.

75) And had you, (Muhammad) relied on them, We, ([We Not I] Eloheem) would have caused you, (Muhammad) to taste a double share in this life, and a double share after death. Then you, (Muhammad) would not have been able to find any Nasiyran 'Aider' amongst us (more than one).

76) And if they wanted to remove, (expel) you from the planet 'Earth,' to put you out from it; and they will not remain after you, except (for) a little

while.

77) This is our Sunnah 'Way' with those of our Rusul 'Ones Sent' whom We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did send before you, (Muhammad), and you, (Muhammad) won't find any changes in our Sunnah 'Way'.

*Stand Up For Al Salaat -
Make Tahajjud - Reading Of
The Qur'aan During Fajr -
Tell Them This, Muhammad
The Facts Has Come, And
False Ways Are To Vanish
In Time*

78) You shall stand (in the rank) to keep up Al Salaat 'The Salutation As Worship' (regularly) as Al Shams 'The Sun' appears to decline right up to the shadow of the Shadow Hour Period; (pray according to the Sun) and read (the Qur'aan) in the Fajr 'Early Daytime Hour', before the breaking forth of the day (read Qur'aan according to the Sun). For Surely, the reading of (the Qur'aan) in the Fajr 'Early Daytime Hour,' is Mash-huwd 'Watched' (by the Eloheem, Anunnaqi).

79) And during a part of the Shadow Hour Period, Make 'Tahajjud' (worship) beyond that which is incumbent on you; (the five regular worships), so that perhaps your, (Muhammad's)

Rabb 'Sustainer' will raise you (back to life) to a position worthy of praise.

80) And say this, (unto humanity): "My Rabb, who is 'Sustainer and Master', enter me with a generous entrance, and exit me with a generous Mukhreja 'Exodus', and grant me that which comes from you, an assisting Sultaan 'Authoritive Power' (An Eloheem)."

81) And tell them this, (Muhammad): "The facts (beyond any doubt) have come and false ways were to vanish. Surely, the false ways were to vanish in time.

82) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down, (made clear) the Qur'aan of the things which Rahmat 'Yield (mercy)' and are healing to the faithful ones; and it does not increase a thing to the ones in a state of unjustness by their defeat.

83) And when We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) bestow our grace on the Enosite, he turns aside and goes away and refuses to show gratitude; and when he is touched by the evil, (which associate partners), he loses hope (he becomes despondent).

Everyone Acts And Works According To His Own Way - The Ruwh Is Controlled By The Rabb - Even If The Jinns Join All Together, They Can't

Bring The Likeness Of This Qur'aan

84) (Oh seal of the newsbearers, by the supreme sovereignty of your Rabb, and creator, I command you to) tell them: "Everyone acts and works according to his own way, so your Rabb, he knows as to which of you is the best calmed, on the right way."

85) (Michael Is Speaking) And they ask you about Al Ruwh 'The Soul', (Gabriel/Nusqu) tell them: "Al Ruwh 'The Soul' (Gabriel/Nusqu) is from my Rabb 'Sustainer' command; and you have been given only a little knowledge of it.

86) And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) please, We (Eloheem) can easily remove that which We, (Eloheem) Awhaynaa 'Inspired' to you, (Muhammad); Then You Will Not Find Upon Me, For Yourself, An Advocate By Way Of It.

87) Except a Rahmat 'Yielding (mercy)' from your Rabb, surely His (His Not Our) favor to you was Kabiyr 'Big'.

88) Tell them: "Even if Al Insaan 'The Enosite' and (the evil race, Malevolent Beings, Cherubeems,) Al Jinn 'The Jinn', (The Reptilians), join together intending to bring the likeness of this Qur'aan, they could not bring the likeness of it, and even if, some of them were to assist

others of them.

89) And indeed, We, ([We Not He] Anunnaqi) have explained for the Enosites in this Qur'aan from every likeness, so most of the Enosites refuse (to receive it) except Kufuwraan 'Concealing What They Know Are The Facts'.

90) And they said: "We will not have faith in you, until you gush forth from Al Ard 'the planet Earth,' Yanbuw'aan 'A Source Of Water' - (a spring).

91) Or exist for you a Jannat 'Garden' from Nakhiyl 'Date Palms' and Inabin 'Grapes'. So you cause Al Anhaar 'The Rivers' to gush forth in their midsts, (inner parts) gushing forth.

92) Or until you make Al Samaa-A 'The Heavenly Sky' fall down upon us (meteorite showers), in pieces as you said would happen, or bring The Source, ALLAH and all Al Malaa-i-kati 'The Eloheem, Anunnaqi' Qabiylaan 'Face To Face', (so We, Eloheem can see their tribes (1) Serapheems -The Agreeable, Benevolent Beings (2) Cherubeems, or Jinns, Malevolent Beings of the lesser light).

*Muhammad Is A Mere Bashar
Mortal In Skin' - We Would
Have Sent The Messenger
Nusqu If Eloheem Could Walk
Around Safe And Secure -*

*Then Muhammad Wouldn't Be
Needed*

93) Or exists for you a house from ornamented, (zodiac signs), or you ascend in the Samaa'a 'Skies' and we will not have faith for your ascension, until you send down upon us a scripture, we can read. Say: Glorify my Rabb who is 'Sustainer, and Master.' Am I, (Muhammad) not except a mere Bashar 'Mortal, In Skin', A Rasuwl 'One Sent'?"

94) And He will not hinder the Naas 'Enosite' from having faith if the leading calmness came to them, except that they said: "Has The Source, ALLAH raised (back to life) a Basharaan 'Mortal In Skin', (as) a Rasuwl 'One Sent'?"

95) Tell them, (Muhammad) if there was in the planet Earth, Malaai-kat - 'Angelic Messengers' (Eloheem, Anunnaqi) Yamshuwn 'Walking' safe and secure, (from Mortal Men); We (Eloheem, Anunnaqi) would have Nazzal 'Sent Down' upon them, (the Enosites) from Al Samaa-i 'The Sky' (See the Eloheem, Anunnaqi descending), An Malakaan 'Eloheem', (the messenger Gabriel, who also bore the title of Nusqu) as One Sent. (We would not have needed Muhammad).

96) Say, a Shahiyd 'Watcher' is sufficient by way of The Source, ALLAH, between me and

between you. Surely, He was with His slaves Khabiyaan 'Aware', He is a Basiyaan 'Seer'.

*The One Lead Into Calmness Is
The Calmed One -
Whomsoever, Allah Leads
Astray, Their Resting Place Is
Jahannam, Purgatory' - The
Source Created The Skies And
Q!*

97) And He whom, The Source, ALLAH leads into calmness, so he is the Calmed One; and he whom He leads astray (into error), so you will not find for them near friends from besides Him; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will gather them, On Qiyaamah 'The Day of Standing, Resurrection' on their faces, 'Amyaan 'Blind', Bukmaan 'Dumb', and Summaan 'Deaf'. Their resting place is Jahnnam, 'Hell' for the concealers of that which they knew to be the facts. As for when it goes out - dies out, We, (Eloheem, Anunnaqi) will increase the Sa'iyar 'Flaming Fire' - (Hell for Muslims who turn their backs on The Peaceful Means Of Judgment, Nuwaubu)."

98) That's their reward, because they concealed that which they knew to be the facts, with Our, (Eloheem, Anunnaqi) signs, and they said: "If we were Izaamaan 'Bones' And Rufaataan 'Dust Fragments', surely We will be

raised as a Jadiyd 'New' Khalqaan 'Creation'?"

99) Or they didn't see that The Source, ALLAH, He (He Not We) who Khalaq 'created' Al Samaawaati 'The Galactic Skies' and Al Ard 'The Planet Earth' (is able), have the power to create like them, and He made for them a fixed time, which there's no Rayba 'Doubt' in it (6,000 years)? So the ones in a state of unjustness refused (to receive it) except Kufuwraan 'Concealing What They Know Are The Facts'.

100) Tell them, (Muhammad), if you all possessed treasures of the Rahmati 'Yielding' (mercy) of my Rabb, who is 'Master/Sustainer,' then fear of sharing willingly, has withheld you, and Al Insaan 'The Enosite' was ever Qatuwraan 'Niggardly, Stingy.'

*Mosheh Is Given Nine Signs -
He Is Told To Go To
Pharaoh Rameses II - The
Pharaoh Drowned, And The
Israelites Are Saved*

101) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Mosheh, nine signs, as Mubiyn 'Clear' evidence. So ask the Banee Israaiyl 'Children Of Yisrawale/Jacob' when he came unto them. So the Pharaoh (Rameses II) said to him: "Surely, O Mosheh, I think you

are one who is Mashuwraan 'Bewitched'."

102) He, (Mosheh) said: "Indeed, you know these were not sent down except, by the Rabb of the Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi', as evidence Bassaa'ir 'Insights'; and surely I think you, O Pharaoh, (Ramses II), is one leading to destruction.

103) So he, Pharaoh, (Ramses II), wished to remove, (expel) them, (Israelites/Jacobites) from the earth (Mizraim/Egypt - Land Of The The Two Rivers, Or Burnt Faces). So We, ([We Not He] Anunnaqi) drowned him, (Rameses II) and those who were with him, all together.

104) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) said from after him, to the children of Yisrawale/(Jacob) you all dwell in (Tiamat) the 'Earth.' So when the promise of Al Aakhirat 'The End', comes, We, (Eloheem) will bring you all mingled together.

105) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent it (the Qur'aan), down as a fact (beyond any doubt) and We, (Eloheem, Anunnaqi) did not send you, (Muhammad) other than, as a Mubshiraan 'Announcer Of Good News' and a Nadhiyraan 'Warner'.

Was Recited To Them

106) And it's a Qur'aan - which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) divided into portions (received over a period of 23 years; divided into 114 chapters and 6,204 verses, 30 parts, 7 stages all based on the number 19, in order for you, Muhammad) to read it to Al Naas 'The Enosites' (gradually, 'deliberately. And We, Anunnaqi) sent it, (the Qur'aan) down. Sending it down (as it was needed. He, Muhammad saw it with the messenger Gabriel as a whole book on the Shadow Hour Period of Power, but received it to read to his Enosites in parts).

107) Tell them, (Meccans this, Muhammad): "Have faith in it, (the Qur'aan) or don't have faith." Surely those who were already given the knowledge, (Israelites) from before it, (the Qur'aan) when it is recited unto them, they fall down on their faces prostrating.

108) And they said: "Glorify to Our (Our Not My) Rabb, if the promise of Our Sustainer, will be fulfilled (acted upon)."

109) And they fall down on their chins, weeping and He (He Not We) increases humility for them.

*Qur'aan Divided Into Parts -
Israelites Fall Down On Their
Faces When The Qur'aan*

*Muhammad Told Them To
Call Upon Allah Or Al Rahman*

*- In Salaat Seek A Moderate
Path - The Source
Has No Mate Or Son*

110) Tell them this, (Muhammad): "Call upon The Source, ALLAH or call Al Rahmaan 'The Yielder', whichever you call upon, (pray) there is no distinction (use any name you wish). For Him, is the best of names (ANU, ELYOWN ELYOWN EL, YEHWEH, ADONIA, ADOWN, SHADI, OLAWM, EL ROI, RABB, ALLAH, EL ELOH, HASHEM) and don't be too loud (yell) when you are doing Salaat 'Salutation As Worship' and don't be too low, (whisper); but by it, you are to seek (tones) a path between these, (not too loud and don't whisper in worship, be moderate toned in worship).

111) And tell them, (Muhammad): "Al Hamd 'All Gratitude is due' Lil-Lahi 'To Him' who did not take, Waladaa 'A Son By Birth', and does not exist any Shariykun 'Associating Partner', (Mate - Miriam or son, Yashu'a/Isa) in Al Mulki 'The Rulership', and there does not exist for Him (Him Not Us) a Waliyun 'Near Friend' from humiliation, and Kabbirhu 'Exalt Him', (with the) Takbiyaraan 'Oldest Exaltation'.

Sudiq Allahu El Azim

Chapter Fifty-One

Revealed In The Year 620 A.D.; Verses 40, 94-96

Were Revealed In Medina


Yuwunus

(Jonah, Dove)

*Original Order Chapter 51;
Wrong Order Chapter 10*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Inspiration Sent To
Muhammad - The Source
Created The Skies And Qi,
'Earth' In Six Daily Periods -
He Established Himself On A
Throne*

51 () Alif: Adam/Zakar, Abrawhawm, Laam: The Shadow Hour Of Power, Raa: The Soul of the One Sent, (Muhammad). These Are the verses of the scripture of Al Hakiym 'The Wisdom'.

2 It's a wonder for the Enosites that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaki) have sent Our (Our Not My) Wahy or Weh 'Inspiration' To a Rajulin 'Mortal Man', (Muhammad) from amongst them the Enosites to warn the Naas and bring unto those of them that has faith, a Sadqin 'Trustworthy' rank in the possession of their Rabb, who is 'Master/Sustainer.' The

ones who concealed what they know to be the facts said: "Surely this is certainly a Mubiyn 'Clear' Sihrun 'Magician'."

3 Surely your Rabb 'Master', ALLAH Khalaq 'Created' the Skies 'Firmament' and the planet Ard 'Earth' in six daily periods. Then He (He Not We), established Himself upon the Arsh 'Throne'. He directed His (His Not Our) orders (over the creation). There Is no intercessors with Him (Him Not Us), except from after His permission. That is The Source, ALLAH. Don't you all have any brains?

4 Unto Him (Him Not Us) is the return of you all, (the Enosites) together. Promising of The Source, ALLAH is a fact, (real). Surely, He (He Not We) begins Al Khalq 'The Creation', then returns it (continues it) in order to reward those of them that has worked to Al Saalihaat 'Perfect Their Beings'; (and does righteous) by way of fairness; and those of them that conceal what they know to be the facts, for them is a boiling drink and an aching pain because of what they have concealed of the facts.

*The Source Created
The Moon And Sun
So You Maybe Able To
Calculate - Those Who Prefer
The Life Of This World Are*

Neglectful To The Signs Of The Eloheem

5 It is He (He Not We) who made Al Shams 'The Sun' and Al Qamar 'The Moon' shine and gave Nuwraan 'Light' and He made (the Moon) pass through phases so that you may know the number of years and be able to calculate. He, The Source, ALLAH didn't create them, (the Sun and Moon on purpose), except with facts. He made the signs detailed for the kindred who have knowledge.

6 Surely the difference of Daytime Hour and the Shadow Hour Period, and what The Source, ALLAH created in Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth', verily are signs for the kindred to tremble and fear.

7 Surely those of them who are not looking forward in meeting Us, ([Us Not Me] the Eloheem, Anunnaqi) and prefer the life of the physical world, and are content with it; and they are of those who are neglectful about Our, ([Our Not His] Eloheem) signs.

8 For them is their abode of Naar 'Fire' because of what they have earned.

9 Surely those who are faithful and they work to Al Saalihaat 'Perfect Their Beings', their Rabb 'Sustainer' calms them by way of their faith; flowing from

underneath them Al Anhaar 'The Rivers', in Al Na'iyim 'The Gentle' Jannaat 'Gardens'.

10 Their, (faithful ones) calling (prayer), therein (the Skies), will be: "Glory be to You" ALLAHUMMA (The Eloheem Anunnaqi) and their greetings therein, (the Skies) will be: "Saalamun 'Peace'," and their (true Muslims') last calling (prayer) will be: "Surely, all gratitude is to due to The Sustainer," who is Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'."

11 And if ALLAH was to hasten the evil For The Enosites, they, (the Evil Enosites) will try to hasten with the Khayr 'Goodness'; their fixed term will be decreed unto them; so warn those who don't look forward to meeting Us, ([Us Not We] Eloheem, Anunnaqi) in their rebelliousness, while they blindly wander astray.

When Misfortune Touches An Enosite He Prays To The Eloheem - When Taken Away, He Forgets

12 And if misfortune touches the Enosite, he, (the Enosite) calls upon Us, ([Us Not We] Eloheem. They pray either on their side - (side by side), or Squatting (Sitting Down - Jalsa) or Standing, (Qiyaam). So when We, ([We Not I] Eloheem,

Anunnaqi) take away from him (the Enosites) his misfortune, he acts, as if he had never Yad-unaa 'Called Upon Us' -(prayed to us); because of a misfortune that afflicted him. This is how transgression made what they, (the Enosites) did, seem fair-seeming.

13 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) had just destroyed the generations from before you, (Enosites of Mecca), when they became in a state of unjustness, and their Rusul 'Ones Sent' (Yashua, Isa) came to them, (generations from before), with Clear Evidence (Injiyl) and they (the Israelites, generations from before) would not have faith - (take heed); and We, (Eloheem, Anunnaqi) also rewarded the kindred that are guilty (with punishment).

Eloheem, Made Enosites Successors In The Earth - Those Who Are Not Hopeful Of Meeting With Us, Ask Muhammad To Bring Another Qur'aan

14 Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made you, (Enosites), Khalaaiifa 'Khalifa - Successors, Left Behind' In Qi/Tiamat 'Earth' after them, (who were before you). So We, (Eloheem, Anunnaqi) could see how you would do.

15 And when Our, ([Our Not My] Anunnaqi) verses are recited

upon them as clear evidence, those who don't have the hope of meeting with Us, ([Us Not Him] Eloheem, Anunnaqi) on the Last Day, say: "Bring another Qur'aan other than this (Qur'aan), or change it, (the Qur'aan). If I just want to, of my own will, I, (Muhammad) can't change it. I only follow it, (the Qur'aan), as it is being Yuwhaay 'Inspired' to me. Surely I, (Muhammad) fear that if I disobey my Rabb, that I will get the pain on that 'Aziym Supreme' Day.

16 Tell them this, (Muhammad): "If The Source, ALLAH pleases, I would have not recited unto you all, nor would I have made you able to increase (your perception) by it. So indeed I, (Muhammad) Labith-tu 'Dwelt' in the midst of you - (lived with you) a full lifetime before it - (before receiving the Qur'aan). Don't you have any intelligence?"

17 So whoever does unjust more than he who has fabricated falsehood against The Source, ALLAH, or lied by way of His signs; Surely He (He Not We), will not prosper to the Guilty Ones.

18 And they, (the unfaithful ones) worship (deities - pictures, statues, mortals and animals) besides The Source, ALLAH; what does not harm them and does not benefit them, and they

say: "These are our intercessors in the possession of The Source, ALLAH." Tell them this (Muhammad): "Are you, (associates with other deities) informing ALLAH of something that he does not know in Al Samaawaati 'Firmament, Skies' and not in Al Ard 'the planet (Tiamat) Earth?' Most Glorified and Ta'aalaa 'Exalted' is he above all that you associate (with)."

19 And the Enosites were nothing except one nation. So they, (the nation) differed, and had it not been for a word that had already gone forth - (a sign) from your (nations) Rabb who is 'Sustainer', their difference would have not been resolved.

*I, Muhammad Am Waiting
With You, For A Sign - You
Shall Return Unto Us, The
Anunnaqi - The Likeness Of
This World Is To Water*

20 And they, (the Enosites of Mecca) say: "If only a sign, (miracle) were sent down to him, (Muhammad) from his Rabb; then tell them this, (Muhammad): "The Unseen (Atom and Quarks) Belongs To Him (Him Not Us), ALLAH. So wait, for the sign. Surely I, (Muhammad) am amongst you who are waiting."

21 And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) caused Al Naas 'The Enosite' to taste of

Rahmatin 'Yielding' (mercy) after some adversity had afflicted them, if they, (Enosites) had a Makrun 'Pluwt' in Our, ([Our Not My] The Anunnaqi's) sign, tell them this, (Muhammad): "The Source, ALLAH is more swift in Makraan 'Plotting'. Surely Rusulanaa 'The Ones We Sent', (other Eloheem, Anunnaqi) will write whatever you, (Enosites) Tamkuruwn 'Plotted'."

22 He it is who makes you, (Enosites) move about in the dry land and the sea, until when you are in Al Fulk 'The Craft' (in the water) and flow with it by way of a good breeze; and they were happy by way of it. A violent wind and the wave came from all directions at them, (Enosites); and they thought that they were not going to be saved - (survive). They call upon ALLAH as of those who are sincere in Al Diyn 'The Means Of Judgment (Nuwaubu'. They say:) "If you, deliver us from this we, (Enosites), will be of Al Shaakiriyn 'The Grateful Ones'."

23 So when He (He Not We), delivers them, (Enosites), then, they desire to stay in the planet Earth, 'Qi' without facts (wrongfully). Oh those of you, Naas/Enosite, your desires - (rebellion) is only against yourselves. You enjoy the Mataa-a 'Temporary Provision' of the physical life; then to Us,

([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi), you are to return, and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) shall inform you, of that which you have done."

24 Surely the likeness of the life of the physical world is like (water) We, ([We Not He] Eloheem) send down from Al Samaa-i 'The Sky'; then it mingles with the Nabaat 'Plants' of the planet (Tiamat) 'Earth' and from it, do the Enosites and the cattle eat, until when the planet 'Earth,' (Qi/ Tiamat), puts on her Zukhrufahaa 'Ornaments' and becomes Azzayyanat 'Embellished'; and the family of it, thought that surely they had some power over it. Our (Our Not His) orders had come to it by the Shadow Hour period, or by Daytime, then We, ([We Not He] Anunnaqi) made it as ripened seeds as though it had not even existed the day before. That is how We (Eloheem Anunnaqi) prefer to utilize Our (Our Not My) signs, for a kindred who Yatafakkaruwn 'Thinks'.

25 And ALLAH calls to Daar Al Salaam 'The Abode Of Peace' (Nibiru) and He (He Not We) leads into calmness whomever He pleases to the straight and narrow path of those who stand up straight.

26 For those of them who Ahsanuwn 'Does The Best', Al Husnaa 'The Best' there is, and

more, and neither Qatarun 'Dust' nor Zillatun 'Humility' comes near their faces, they are companions of the Jannat 'Garden' where they shall abide eternally.

27 And those of them who earn evil deeds will be added more evil to them as it is, and a shadow shall overtake them. There won't be any 'Aasimin 'Defender' from ALLAH, as if I, cover their faces with dark pieces of the Shadow Hour period. These are the companions of the fire where they shall abide eternally.

Idols Testify Against Their Associates- Who Controls The Sight And Hearing Of Enosites? - Can Your Idols Bring Life And Death?

28 And on the day, (the Last Day) when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gather them - (associates and their deities- pictures, statues, mortals, and animals); then We, (Eloheem) say to those who Ashrakuw 'Associate Partners (with other deities)', take your places, you and Shurakaa-ukum 'Your Associating Partners (other deities)'. Then We, (Eloheem, Anunnaqi) separated between them, (the associates and the deities in two groups); and Shurakaa-uhum 'Their Associating Partners (other

deities)' said: "You all weren't slaving for us, (the deities)."

29 So The Source, ALLAH is sufficient as a Shahiydan 'Watcher' between us and between you. Surely we were unaware of Ibaadatikum 'Your Enslavement'.

30 There, (on the Day Of Resurrection) every Nafsin 'Person' is tested (for what they have done, in the physical life) and they will be sent back to ALLAH, their true Mawlaa 'Ruler' and all that they have fabricated, (in the physical life) will be lost."

31 Tell them this, (Muhammad): "Who Yazuqukum (Rizqiyins) 'Provides For You', (Enosites) from Al Samaa-i 'The Skies' and (Qi) Al Ard 'The Planet Earth', and who controls Al Sam-a 'The Hearing' and Al Absaara 'The Sight', and who draws away Al Hayya 'The Life' from Al Mayyiti 'The Dead', and who draws away Al Mayyiti 'The Death' and, gives Al Hayyi 'The Life', and who organizes the commands, so they, (the Enosites) will say: "ALLAH!" Then tell them this, (Muhammad): "Are you, (Enosites) not going to tremble and fear?"

32 "Thus ALLAH is your, (Enosites)' Rabb 'Master', so what else is there, other than the fact, except straying into error. So why do you, (Enosites) turn

away?"

33 Also, the word of your, (Muhammad's) Rabb 'Sustainer' is a fact, about those of them that transgressed and they will not be of the Faithful."

34 Tell them this, (Muhammad): "Can any of Shurakaa-ikum 'Your Associating Deities (Other Deities: - pictures, statues, mortals, and animals) begin the creation then return it back - (bring life and death)?" Tell them this, (Muhammad): "ALLAH starts Al Khalqa 'Creation' then Yu-iyduhu 'Returns It Back' - (brings life after death), so why do you (associates) go astray (and worship other deities)?"

35 (Gabriel Speaking) Tell them this, (Muhammad): "Is there any of Shurakaa-ikum 'Your Associating Partners (other deities)' who can calm as they lead you (enosites) toward the facts?" Who is it that can calm as they lead you towards the facts. Its the facts that is to be followed, or as for him who is not calmed, except, if he calms himself (with his own facts). So What Is The Matter With You? How do you use your wisdom?"

*Those Who Associate Other
Deities With Allah Follow
Nothing Except Hadiths - The
Qur'aan Is A Confirmation Of
The Scriptures And Tablets
From Before*

36 Most of them, (associates) follow nothing except conjecture (as Hadiyth). Surely the conjecture cannot take the place of the facts. Surely ALLAH knows of what they do.

37 And this Qur'aan can not be Yaftarra 'Fabricated', written by none except The Source, ALALH; and it, (the Qur'aan) is nothing but a Tasdiyyq 'Confirmation' of what is now in his, (Muhammad's) hands (the scriptures: Torah, Zubuwr, Injiyl, and tablets from before: Enuma Elish, Gilgamesh Epics, Atra Hasis, Etana, Nergal And Arishkegal, The Descent To The Underworlds, The Secrets Of Adafa; and a means to clear up) and Tafsiyl 'Explain' the scripture - (the Torah, 5 Books of the Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh's Successor). There is no doubt in it, (the Qur'aan). It is from The Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'."

38 Or they say: He Aftaraahu 'Fabricated It! Tell them this, (Muhammad): "So bring a Suwratin 'Chapter' like it, (this one); and invite who aids you without The Source, ALLAH if you are Saadiqeen/Zodoqites 'Truthful.'"

39 But they, (unfaithful ones) denied what is beyond the limits of their knowledge, when His, interpretation of (the Qur'aan)

comes to them, those of them from before has also lied. So look at how their, (the Enosites) who were in a state of unjustness, punishment was."

40 And of them, is he who is faithful in it - (the scripture) and from them is he who is not faithful in it - (the scriptures) and your, (Muhammad's) Rabb 'Master', knows best those who are Mischief Makers.

Muhammad, Tell Those Who Associate Partners With Allah, You're Innocent Of What I Do, And Vice Versa - The Source Does Not Lead Enosites Into A State Of Unjustness

41 And if they, (associates) deny you, (Muhammad), so tell them this: "I have my work and you (associates) have your work. You, (associates) are innocent of what I do - (you don't have to answer for my deeds), and I am innocent of what you do, (and I don't have to answer for your deeds on the Last Day.)"

42 And of them, (the associates) who listen to you, (Muhammad), verily can you (Muhammad) make Al Summa 'The Deaf' hear, even if they don't overstand?"

43 And of them who look to you, (Muhammad), verily can you calm Al Umya 'The Blind' even if, they can't see?"

44 Surely ALLAH does not lead

the Enosites into the state of unjustness; but the Enosites leads themselves into a state of unjustness."

45 And the day when He (He Not We) will gather them, (the Enosites) as if they never stayed for an hour, from the Daytime (Hour); they will know between them. Certainly those who denied, about meeting The Source, ALLAH were lost; and they are not of the Calmed Ones.

46 Whether We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) show you, (Muhammad) some of what We promised them - (the associates suffering), or even if, Natawaf-fay-annaka 'We Take Your (Muhammad's) Soul' (cause you to die); so to Us, ([Us Not Me] The Eloheem, Anunnaqi) are their (associates) return. Then The Source, ALLAH is a Shahiydun 'Watcher' on what they do.

For Every Kindred, There's A Rasuwl - Have You, Hypocrites Thought About The Source's Punishment, That Would Come Unto You?

47 And for every nation is a Rasuwl 'One Sent.' So if all their (nations') ones sent came (on the Day of Judgement), They the Rusuwl 'One Sent' will be judged fairly, between them and they shall not be treated

unjustly.

48 And they, (the hypocrites) would say: "When will this promise be fulfilled? Surely, if you, (Muhammad and his followers) were telling the facts."

49 Tell them this, (Muhammad): "I don't have for myself Amliku 'The Power' to harm and I don't (have the power) to benefit, except what pleases ALLAH. For every kindred is a fixed term; when their fixed term comes, none can delay it for an hour, nor can they speed its advance."

50 Tell them this, (Muhammad): "Have you, (hypocrites) thought about His (His Not Our) punishment that would come unto you, (hypocrites), by the Shadow Hour period or in the Daytime period? What would you, guilty ones desire to hasten?"

51 Is it then, when it, (the punishment) falls upon you, (hypocrites), you will have faith in it, now! And you, (hypocrites) have just been impatient to hasten it - (the punishment). "

52 And it was said to those of them who were in a state of unjustness: "Taste the pain of Al Khuldi 'The Eternity'! Do you, (hypocrites) think you will be rewarded with anything, except for what you have earned?"

53 And they, (the hypocrites) question you, (Muhammad)

saying: "Are these facts (beyond any doubt)?" Tell them this, (Muhammad): "Yes, by my Rabb 'Sustainer'. Surely it, (the sign) is a fact (beyond any doubt) and you, (hypocrites) cannot escape it.

54 And if, for each Nafsin 'Person' that has done unjust, possessed anything on the planet (Tiamat) 'Earth,' it would want to ransom itself there, on the planet Ard, (Tiamat) and (then on the Last Day, it, the spirit), will want to hide its regret when it, (the spirit) sees the punishment (coming to it), and (it, the spirits) will be judged fairly, between each other and they will not be treated unjustly.

*Is Not Whatever In The
Samawaat And The Earth
Belongs To Allah? - The
Source Has Sent An
Exhortation To The Enosites -
Most Enosites Are Not Grateful*

55 Is it not that whatever is in the Samawaat, 'Skies' and the planet Ard 'Earth' belongs to Him? Is it not that ALLAH'S promise is a fact (beyond any doubt)? But most of them, (the hypocrites) do not know it.

56 He 'HU (Creative Force Of Will)' Yuhi 'Gives Life' and Yumitu 'Causes Death' and to Him (Him Not Us, - the Enosites souls) will return.

57 O Naas/Enosites! Indeed an

exhortation has come to you all, from your Rabb and a Shifaa-un 'Cure' for what is in the chest and a leading calmness and a Rahmatun 'Yielding' (mercy) for the Mu'mineen 'Faithful Ones.'

58 Tell them this, (Muhammad): "By way of The Source's, ALLAH'S favor and by way of His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy), so rejoice by way of it. It is better than what you, (hypocrites) gathered to have faith in."

59 (O seal of the newsbearers - prophets, by the supreme sovereignty of your Master and Creator, who is Rabb of all things, I command you to) say: "Have you seen what The Source, ALLAH has sent down for you all, as Rizqin 'Provisions'; so you made of it what is Haraamaan 'Unlawful' and what is Haalalaan 'Lawful'. Tell them: "Has The Source, ALLAH permitted it for you, or do you tell a lie on ALLAH?"

60 What does those of them that invent lies concerning The Source, ALLAH think will happen to them on the Day of Resurrection? Surely ALLAH shows His (His Not Our), preference to Enosites; but most of them, (Enosites) are not grateful.

We, Eloheem Watches Any Affair You Engage In - For The Real Muslims, There Is

No Fear Or Grief. They Will Have Good News In The Life Of This Physical Worlds And In The Hereafter - No One Can Change Allah's Words

61 And there is not any situation in which you can find yourself; nor can you recite (any verses) from the Qur'aan and there is no work that you can do, without Our ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqis') knowledge. For We, ([We Not He] Eloheem) are always Shuhuwdaa 'Watching' when you engage in any affair, and there is nothing concealed from your Rabb, not even the weight of an Zarratin 'Atom', in the planet Qi 'Earth,' nor in Al Samaa-i 'The Skies' and not anything smaller than that, or bigger, except it is (recorded) in a Mubiyn 'Clear' scripture - (Book Of Life).

62 Verily, the nearest friends of The Source, ALLAH (the true Muslims), have no fear, nor do they grieve.

63 Those of them that have faith and tremble and fear.

64 For them, (the real Muslims,) there is good news in the life of the physical world - (planet Tiamat 'Earth,') and in Al Aakhirat 'The Hereafter' - (Eternal Life), and no one can Tabdiyl 'Change' ALLAH'S words. (No one can tamper with His scripture). That is the most

'Aziym 'Supreme' triumph.

*The Shadow Hour And
Daytime Hour Made As A
Sign For Enosites - They
Say Allah Has Taken For
Himself. A Paternal Son: He
Is Independent*

65 And you, (Muhammad) should not grieve of what they, (hypocrites) say. Surely the all the power together is for him. He is Al Samiy-u 'The Hearer', Al 'Aliymu 'The Knower'.

66 Is it not that whosoever is in Al Samaawaat 'The (Firmaments) Skies' and whomsoever is in the planet (Tiamat) 'Earth' belongs to ALLAH? And those who follow Shurakaa-a 'Associates (other deities)', besides The Source, ALLAH; surely they, (associates) follow only a conjecture, and surely they do nothing, but guess (the facts beyond any doubt)."

67 It is He (He Not We) who made Al Layla 'The Shadow Hour period', for you to rest, and Al Nahaar 'The Daytime Period' for you to be able to see your way. Surely in this, are signs for a kindred who can hear."

68 They say The Source, ALLAH has taken for Himself, a Waladaan 'Paternal Son' (son by birth); glory be to Him. He is Al Ghaniyu 'The Independent'.

His (His Not Our) is all that is in Al Samaawaat 'The Skies' (Firmaments), and what is in the planet Earth, (Tiamat). You do not have Sultaan 'Authoritive Power' for this, or do you say of The Source, ALLAH what you do not know?"

69 Tell them this, (Muhammad): "Surely those of them who fabricate a lie concerning The Source, ALLAH will not succeed."

70 They, (the Enosites) have a temporary enjoyment in the physical world, then unto Us, ([Us Not Him] the Eloheem, Anunnaqi) is their return. Then, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) makes them taste of Al Shadiyd 'The Forceful' pain, because of what they concealed what they know to be facts."

*The News Account Of The
Newsbearer Utnafishtim/Noach
- We Eloheem Saved Him And
Those With Him In The Craft
- We Drowned Those Who
Lied About Our Signs*

71 And (Muhammad), recite to them, (the Enosites of Mecca) the news account of (Utnafishtim)/Noach. When he, Noach said to his kindred, (the evil cities of Nod and Enoch): "O My Enosites, if it has become too big (a problem), for you that I'm staying with you, and reminding you of The Source,

ALLAH'S verses/signs: - (the tablets and scriptures from before, Adafa, Atra Hasis, Enuma Elish, Gilgamesh Epics, Etana, Descent To The Underworld, Nergal And Arishkegal); so I put my trust upon The Source, ALLAH? So Gather Your Commands (Affairs) And Your Shurakaa 'Associating Partners (Other Deities)', Then don't let your orders be Gummatin 'Hidden (in darkness)' upon you all. Then make your plans (for you to kill me, Noach) known to me and you don't look at me."

72 So if you all, (Enosites of Nod, and Enoch) turn away, so I, (Noach) won't ask you, for any rewards. My reward is only from The Source, ALLAH; and I decree that I be of The Peaceful Ones 'Muslims.'

73 So they, (the hypocrites) denied him, (Noach); so We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) saved him and those of them - (Ham, Haliymah, Japheth, Ifat, Shem, Faatin, Na'amah, And Lebana And The 80 Other Beings) that are with him in Al Fulk 'The Craft' and We, (Eloheem,, Anunnaqi) made them Khalaaifa 'Khalifa - Successors, Left Behind,' (in the planet Qi/Earth); and We, (Eloheem, Anunnaqi) Agraqnaa 'Drowned' those of them who lied by way of Our (Our Not My) signs. So look (Muhammad), at

how the punishment of those of them, who were warned."

*We, Eloheem Raised From
Amongst You, Mosheh And
Aharown To Pharaoh Rameses
II*

74 Then We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) raised (back to life) from after him, (Noach), Rusulaan 'Ones Sent' - (Mosheh And Aharown) to their kindred. So they came with 'Clear Evidence,' Bayyinah'; but they, (the hypocrites) were not ready to have faith in what they have denied before, as for that We, (the Anunnaqi) will put a Natba-u 'Stamp' upon the hearts of the ones who transgressed bounds - (the hypocrites)."

75 Then We, ([We Not He] the Eloheem) raised (back to life) from amongst you, (the Midianites), Mosheh and Aharown To Pharaoh (Ramses II) and Malaa-ihl 'His Rulers' - (the Council of Elders) with Our, ([Our Not My] the Anunnaqi) signs, (verses - 5 Books of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And Mosheh's Successor, The Apostle Yehowshuwa); but they, (the Pharaoh and his rulers, Council of elders), they were arrogant and they were of the kindred that are guilty."

76 So when the facts (beyond any doubt) came to them from

us, (the Eloheem, Anunnaqi) they, (the Pharaoh and Pharisees) would say: "Surely this is certainly a Mubiyn 'Clear' Sihrun 'Magician'."

77 Mosheh said, (with anger): Do You Say (This) To The Facts When It Comes To You? Is This Sihrun 'Magic'? And Al Saahiruwn 'The Magicians do not prosper.'"

78 They, (the hypocrites) said: "You, (Mosheh) came only to turn us away from what our fathers have found; and there will be for you two, (Mosheh and Aharown) Al Kibriyaa-u 'The Greatness' in the planet Earth; and we, (hypocrites) will not have faith in you, (Mosheh and Aharown)."

Rameses II Seeks Out The Most Knowledgeable Of Egypt's Magicians

79 And Pharaoh (Rameses II) said (to the council, his rulers: "Go down into 'Mitzrayim' Egypt, and) bring to me, all of the most 'Aliymin 'Knowledgeable' Saahirin 'Magicians'."

80 So when Al Saharatu 'The Magicians' came, Mosheh said to them, cast down whatever, you will cast (their rods)."

81 So when they, (magicians) cast down (their rods) Mosheh said: "Whatever you, (magicians) have brought, is Al Sihru

'Magic' which ALLAH will surely nullify. Surely ALLAH does not uphold the works of Mischief Makers."

82 And ALLAH makes the fact (beyond any doubt), that fact by way of His (His Not Our) words, however, the guilty ones may hate it.

Some Of Pharaoh's Enosites, And The Pharisees Had Faith In Mosheh - Inspiration From The Eloheem Is Sent To Mosheh And Aharown To Make Their Houses A Qiblat, And Establish Salaat

83 So they did not have faith in Mosheh except an offspring from his kindred, because of the fear Pharaoh (Ramses II) and Malaa-ihim 'His Rulers' - (Chief Council of Elders) tempting them; and surely Pharaoh (Rameses II) La-aalin 'Is Most High', (in his kindred' eyes) in the planet 'Earth,' and surely he is of the ones who are turned away."

84 And Mosheh said: "Oh, my kindred, if you had faith in The Source, ALLAH so place your trust in Him (Him Not Us), if you were of the Muslimiyn 'Peacemakers'.

85 So they, (some of them of the Pharisee's Enosites) said: "We have placed our trust upon ALLAH, Our Rabb. Don't make us be victimized for the

kindred that are in a state of unjustness."

86 And deliver us by way of Rahmatika 'Your (Your Not Our) Yielding' (mercy) from the kindred (of Pharisees), that are concealers of the facts."

87 And We (the Anunnaqi) Awhaynaa 'Inspired' (sent inspiration) to (the Eloheem) Mosheh, and his brother, (the Prophet Aharown) - to provide Buyuwtaan 'Houses' for both of your kindreds -(the Israelites) Be-Misr 'In Egypt'; and make Buyuwtaakum 'Your Houses' a Qiblatan 'Direction' (for prayer) and establish Al Salaat 'Salutation As Prayer' and give good news to the ones who are Al Mu'mineen 'The Faithful Ones.'

88 And he, Mosheh said: "O my Rabb, 'Master,' surely you have given Pharaoh and Malaalahu 'His Rulers' (Chief Elders), splendor and wealth within the physical world. Oh Rabb, they might mislead the kindred from your path. Get rid of their wealth and make hard their hearts, so they will not have faith until they see the aching pain."

89 He, said: "I have just answered you two (Mosheh and Aharown's) Da'waa 'Calling' (Prayers). So therefore, remain steadfast and don't you two, follow the path of those of them who have no knowledge."

Eloheem Brought Children Of Yisrawale Across The Reed/Red Sea - Pharaoh Finally Has Faith In Yahuwa, At The Drowning Point - Pharaoh's Body Preserved As A Sign To Enosites That Will Come After You

90 And We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) rewarded, brought the Banee Israaiyl 'Children Of Yisrawale/Jacob' across Al Bahr 'The (Reed/Red) Sea'. So Pharaoh (Rameses II) and Junuwdahu 'His Armies' followed them wickedly and maliciously until they were on the point of Gharaqu 'Drowning'. He, (Pharaoh Ramses II) said: "I have faith that surely He, no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except he who the Children Of Yisrawale have faith in; and I am of Al Muslimiyn 'The Peacemakers' (Muslims)."

91 Now! And you just disobeyed (me) before, and you were of Al Mufsiidiyn 'The Mischief Makers'.

92 So today We, (Eloheem, Anunnaqi) shall Nunajjiyuka 'Deliver You' (Pharaoh Ramses II) With Badanika 'Your Body' (the rest of your body); so it could be a sign for those of them that come after you; and surely most of the Enosites are heedless of Our, ([Our Not My] the Eloheems') signs."

*Eloheem Provided Israelites/
Jacobites With Agreeable
Things - Muhammad When In
Doubt About The Scriptures,
We Sent Down, Ask Those
Who Read The Scriptures
Before You*

93 And indeed We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) gave the Banee Israa'iyil a Sidqin 'Trusted', (Settled) Mabawwaa 'Abode', and We (Eloheem Anunnaqi) Razagnaahum 'Provided Them' of Al Tayyibaat 'The Agreeable Things'; and they did not differ until the knowledge came unto them. Surely your, (Muhammad's) Rabb 'Sustainer', assuredly will settle their differences on the Day of Resurrection, in that which they have differed."

94 So if you, (Muhammad) are in distrust, (uncertain) about that which We, (the Eloheem, Anunnaqi) have sent down to you; so, (Muhammad) ask those who read the scripture, from before you - (the Torah of the Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Joshua). Indeed, the facts from your Rabb, who is 'Master' has come to you, and don't you, (Muhammad) be of the ones who Mumtar 'Opposes'.

95 And don't you, (Mosheh, Aharown and the Children Of Yisrawale) be from those of them that lied by way of The

Source, ALLAH'S signs, if so, then be from the losers."

96 Surely for those of them that are affected by the fact, they are against the Kalimat 'Words' of your Rabb - (as Pharaoh Ramses II); they do not have faith."

*The Unfaithful Still Don't
Have Faith, Even After A
Sign From The Source Comes
To Them - Yonah's Enosites
Were Given A Temporary
Provision, When They Had
Faith*

97 Eventhough, every sign came to them, (the unfaithful ones), they still don't have faith until they see the aching pain."

98 If only there had been a community (of all those that were destroyed of old) that had faith and profited by its faith, as the (Ninevehites) kindred did of Yonah/Yunus! When they had faith, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) drew off from them the pain of the disgrace in the life of the physical world and gave them a temporary provision - (comfort) for a while.

99 And if your (Muhammads) Rabb 'Sustainer' wanted all of them together in the earth to have faith, would you (Muhammad) hate the Enosites until they become ones of faith?

Those Who Do Not Think,

*The Source Puts Doubt In
Their Minds - The Faithful
Ones Will Be Saved By The
Eloheem, Anunnaqi*

100 It is not for any person to have faith except by the permission of The Source, ALLAH, and He (He Not We) puts Rijs 'Shameful Act' upon those who do not think.

101 Tell them this: "Look at what is in Al Samaawaati 'The Skies', (Firmaments) and the planet Tiamat/Earth; and neither the signs, (the scriptures), nor the Nudhuru 'Warners' will profit about the kindred who does not have faith.

102 So do they, (the Enosites) expect anything other than a (Punishment) that was given to (the Naas/Enosites) in the days from before them, (for denying His scriptures)? Tell them this, (Muhammad): "So wait, surely I am of those who are waiting with you."

103 Then We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) shall deliver (save) Our (Our Not His) Rusul 'Ones Sent,' and those of them who truthfully have faith; it's also a fact (beyond any doubt) upon us, to deliver (save) the ones who are faithful."

*Muhammad Doesn't Slave For
Any Other Sources - Don't
Call Other Allahs, Other Than
Allah - If The Source Afflicts*

*You With A Misfortune, None
Of The Other Sources Can
Remove It*

104 Tell them this, (Muhammad): "Oh those of you, of the Enosites, if you were of Shakkin 'Distrust' from my, (Muhammads) Diyn 'Means Of Judgment,' so I, (Muhammad) do not slave for he who you slave for from besides the source, allah, but A'abuduw 'I Slave' The Source, ALLAH, he who Yatawaffaakum 'Takes Your Soul' (causes you to die), and I have been commanded to be from the Faithful Ones."

105 And that you should stand (set) your face to the means of judgment as the Haniyfaan 'Upright One'; and don't be like Al Mushriikiyn 'Those Who Associate Partners (With Other Deities)'."

106 And don't call on besides The Source, ALLAH, that which could not benefit you and can't harm you - (the deities); and if you did that, surely in that case, you would be of those in a state of unjustness."

107 And if The Source, ALLAH afflicts you with a misfortune, none of you (or your deities) could remove it except for Him (Him Not Us). And if He (He Not We) desires Khayr 'Good', for you, (the Enosites), there is none but he, who could take what He pleases. He striketh

whomsoever of His (His Not Our) slaves if He pleases with it - (a misfortune) and He is Al Ghafuwr 'The Most Forgiving', Al Rahiym 'The Most Merciful'.

Muhammad Is Not A Custodian For You All - Muhammad Follow That Which Has Been Inspired To You - And Be Patient - The Source Is The Best Of The Wise Ones

108 Tell them, this (Muhammad): "Oh you Enosites, the facts (beyond any doubt) has certainly come to you all from your 'Sustainer,' Rabb. So whoever is lead into calmness, is surely lead into calmness for his own Nafs 'Self'; and whoever is astrayed into error, so surely he is astrayed into error upon it, (the facts, that come down to you); and I (Muhammad), am not a Wakiyl 'Advocate' upon you all. (Muhammad is not your keeper)."

109 And (Muhammad), you are to follow that which has been inspired to you and be patient until The Source, ALLAH Yahkum 'Uses Wisdom', and He (He Not We) Is The Khayru 'Best' of Al Haakimiyn 'The Wise Ones'. (There Are More Judges Than ALLAH).

Sudiqah Allahu El Azim

Chapter Fifty-Two


Revealed In The Year 622 A.D.

*Huw'd/Eber
(Calmness)*

*Original Order Chapter 52;
Wrong Order Chapter 11*

Begin All Things Using The Name Of The Source, Allah The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Qur'aan Is A Scripture, Its Verses Are Wisely Arranged - Don't Slave For Any, Except The Source, Allah - Muhammad Is A Bringer Of Good News

52 () Alif: ALLAH Laam: Shadow Hour Period of Power Raa: the One Sent, Eber. (The Qur'aan) is a scripture, its verses are wisely arranged then properly divided, which is from the presence of who is Khabiyr 'Aware' and Hakiym 'Wise'.

2 Don't slave for any except The Source, ALLAH. Surely I (Muhammad), am a warner and a bringer of good news from Him (Him Not Us) for you all (Enosites).

3 And you all are to ask for forgiveness of your, (Enosites) Rabb 'The Source'; then turn towards Him (Him Not Us) for repentance. He (He Not We) will give you the Hasanaan 'Best' of an enjoyment until a time

appointed, to come back to Him; and He gives His preference unto every one of His preference. If any of you turn away, so surely I, (Muhammad) am afraid for you All (Enosites) a punishment on a Kabiyr 'Big' Day - (The Last Day).

4 Unto ALLAH, The Source is your, (mankind's) return, and He (He Not We) has the Qadiyr 'Power' over all things.

5 Lo surely, (the hypocrites) close their chests so that they may hide from Him (Him Not Us), while when they (the hypocrites) cover (themselves) with their Thiyaab 'Clothing', He (He Not We) knows what they Yusirruwn 'Keep Secret' and what they make known. Surely, He is the knower of what's in the essence of their (hypocrites') chests.

6 And (there) is not from any Daaab-bat 'Crawling Creature' (Tank) in the (planet Qi or Tiamat), Al Ard 'Earth' (hidden under the ground) except its Rizq 'Provision' is upon The Source, ALLAH; and He (He Not We) knows its place of rest, and its place of deposit - (depository). All is in a Mubiyn 'Clear' scripture.

It Is He Who Created The Skies And The Planet Qi In Six Daily Periods - Enosites Tastes Mercy From Eloheem - Enosites Are Ungrateful.

Concealing What They Know To Be The Facts

7 And He (He Not We) is who Khalaq 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' and the planet (Qi) 'Earth' in six daily periods (of 6,000 years each) and His Arsh 'Throne' (His Craft) was upon the water - (the soul of the Eloheem, Anunnaqi moved upon the face of the water, the winds crafts); in order for Him to test you all (to see which of you species of Man and the Eloheem) are the best deeds (Original Creation And Re-Creation); and if you, (Muhammad) said: "Surely, you all will be raised (back to life) after death, then those who conceal what they know to be the facts would say: 'Surely, this is (nothing) except Mubiyn 'Clear' Sihrun 'Magic'."

8 And verily, if We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) put off the pain from them to an extended period of time, they will say: "What restrains it?" Now surely, the day will come to them, not averting from them, and what they were ridiculing will surround them.

9 And verily if We, ([We Not I] the Eloheem) made the Enosites taste Rahmatan 'Yielding' (mercy) from us, then We, (Eloheem, Anunnaqi) pull it out, from him; surely he, (the Enosite) is despairing,

(ungrateful)- concealing what he knows to be the facts.

10 And verily if We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) cause him to taste the grace after some misfortune had afflicted him, he would certainly say: "The evils - misfortunes, have gone away from me." Surely, he is exaltant and very proud.

11 Except those who have patience and work to Al Saalihaat 'The Perfection'. These are for them a forgiveness, and a big reward.

12 So perhaps you, (Muhammad) would want to leave out some of what has been inspired to you, and because of it, you, (Muhammad) are ashamed of the criticism you might receive. That is because, they will say: "Why has not a treasure been sent down upon him? Or an (Eloheem, Anunnaqi) come, to be with him? Surely you, (Muhammad) are only a Warner 'Naziyr' and The Source, ALLAH is in charge of everything.

They Say Muhammad Has Fabricated The Qur'aan, Tell Them To Bring 10 Chapters Like It - The Torah Is A Likeness And A Mercy- And Muhammad Is Not To Doubt The Torah Of Mosheh

13 Or do they say, "That he, (Muhammad) has invented,

(fabricated the Qur'aan)?" Tell them this: "Bring forth ten Suwarin 'Chapters' like it, fabricated and call upon, (pray to) whomsoever you can, other than The Source, ALLAH, if you are to be 'Trustful Ones' - 'Sodoqites/Zodoqites.'

14 So if, (your false deities) don't answer for you all, your request, so then know that surely it, (the Qur'aan) is sent down by way of The Source, ALLAH'S knowledge and that no Eloheem, or ILAHS (ALLAH) would exist except by way of He 'HU (The Creative Force Of Will)'. So will you all, now become 'Ones Who Are Of Peace' - Muslims?

15 And whoever wants, desires the life of the physical world and its adornment, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will repay in full their works in it, and in it, they will not be diminished.

16 These are those for whom there will be nothing in the Last Day, except the Fire and all that they wrought in it, (the planet Earth is fruitless) and falsehood is what they do.

17 Is he (those who conceal what they know to be the facts, to be classified as an equal with him who) has clear proof from his Rabb, and a watcher from it, (the Qur'aan) recites it and from before it, (the Qur'aan) was a scripture of Mosheh, (the Torah)

as an example and a Rahmat 'Yilding' (mercy) (that We, [We Not He] Eloheem, Anunnaqi are to use the Torah as an example). These are they who have faith by way of it the (Tawraah/Torah); and as to him who conceals what he knows to be the facts from Al Ahzaab 'The Group' (the Quraish Clan), so they are promised an appointment with the Fire. So (Muhammad), don't you have any doubt about the scriptures (Torah), for surely it, (the Torah) is a fact (beyond any doubt) and from your (Muhammad's) Rabb who is Master 'Sustainer', but most of the Enosites don't have true faith.

*Physical Curse On Those Who
Are In A State Of Unjustness
- Those Who Humble
Themselves To Their Rabb,
For Them Is The Jannat*

18 And who is unjust from those who invent (makes up a lie) on The Source, ALLAH (Man Made Hadith)? These turn away upon their Rabb, 'Sustainer'; and the watcher says: "Those who lied upon their Rabb 'Sustainer' (become sects: Sunni, Shi-ites, Ahmadians, Baha'i, etc), now surely the La-nat 'Physical Curse' of The Source, ALLAH, is upon Al Zaalimeen 'The Ones Who Are In A State Of Unjustness,' (This

Is Why Arabs get no help from ALLAH in these last days).'

19 And those who turn away, divert from the path of ALLAH and they seek, desire it to be crooked, and they are the Kaafiruw'n 'Concealers Of The Facts' in the End.

20 These will not be (weak), frustrated in the planet Qi 'Earth' and there is not for them from near friends from besides The Source, ALLAH. He weakens the pain for them and they will not be able to hear, and they will not see.

21 These are those who have lost their Nafs 'Selves', and what they were making up (their false hadith and sunna), have went astrayed from them.

22 Of course in the End, they will be the greatest losers.

23 Surely, those who are faithful and work to perfect themselves, and humble themselves to their Rabb, these are the companions of the Jannat 'Garden.' They will be in it, eternally (Nuwaubu).

24 The likeness of the two portions (parties) is like the blind and the deaf (muslims sects), and Al Basiyr 'The Seeing' and Al Sami-u 'The Hearing' (Nuwaubu); Are they both equal in likeness? Do you not Dhakar 'Remember'?

*The Sending Of The
Newsbearer Noah*

25 And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent Utnafishtim/Noach, to his kindred. Surely, I am a Mubiyn 'Clear' warner for you.

26 That you should slave for none except The Source, ALLAH; Most surely, I have fear for you and the pain of an aching day.

27 So Al Mala'u 'The Rulers' of those who were concealers of the facts said to his kindred: "We don't see you, (Noach), as anything but a Bashar 'Mortal Being In Skin' like us; and we don't see anybody following you except those who are destitutes of us, and (Enosites) without influence (and power in our opinion); and we don't see for ourselves in you, any superiority. In fact, we see you and your followers as liars.

28 He, (Noach) said: "Oh my kindred! Did you not see if I was upon a clear evidence from my Rabb, and He (He Not We) gave me Rahmatin 'Yielding' (mercy), from His (His Not Our) possession. So it became hidden upon you. Should we compel you to accept it, and you are (aversing), disliking it?

29 And Oh my kindred (Enochites and inhabitants of Nod/Saturn), I (Noach), don't ask of you, wealth upon it. If my reward is except upon The Source, ALLAH and I'm not one who drives away those who are

faithful. Surely they will meet, encounter their Rabb; and I see you as a kindred who are ignorant.

30 And Oh my kindred. Who aids me from The Source, ALLAH, if I drove them away? Do you not Dhakar 'Remember'?

Noach Never Claimed In His Possession, There Was The Treasure Of Allah, Or That He Is An Eloheem

31 And I, (Noach) do not say to you: "In my possession are the treasures of The Source, ALLAH"; and I don't have knowledge of Al Ghayb 'The Unseen', (hidden) and I don't say: "Surely, I am a Malakun 'Angelic Messenger, an Eloheem Anunnaqi'; and I don't say to those who your eyes despise; The Source, ALLAH will not give them Khayraa 'Goodness'. ALLAH, knows of what is in their selves. Surely I, will then be from those who are in a state of unjustness.

32 They, (the Enosites of Hurrians) said: "O Noach, indeed you argued with us at great length and our argument has become long and drawn out (and complicated), so, now give us what you have promised us with - (the flood), if you are to be from those who are Truthful 'Sodoqites/Zodoqites.'"

33 He, (Noach) said: "However, The Source, ALLAH will bring to you it, if He (He Not We) pleases; and you will not be frustrated.

34 And my, advice will not benefit you, even if I wanted to give my advice to you. If The Source, ALLAH wants to lead you astray into error, He (He Not We) is your Rabb, and you will all return to Him.

35 Or do they say I, (Muhammad) have fabricated it, (the Qur'aan)? So if, I have done this, then I am guilty of a crime; and surely I am innocent of that which, you commit (they fabricate another Qur'aan)."

36 And it was inspired to Noach, that his kindred didn't have faith; except those whom indeed, were faithful. So don't be distressed of their actions."

*The Anunnaqi Calmed Noach
In The Construction Of The
Craft*

37 And, Noach/Utnafishtim, you are to build Al Fulk 'The Craft', with Our (Our Not My) eyes, and Wahiynaa 'Our Inspiration' (This Tells You That It Was A Group Of People Working With Noah And They Were 23 Angelic Beings That Noah Did Not See; Shah, Khan, Huwalti, Barun 4 Men Which Raped Mubiyna Then Repented; 6 Of His Sons: Cush, Mizraim,

Phut, Shem, Ham, Yapheth; And 50 Other Human Beings); and don't Tukhaatibniy 'Give Me A Sermon' in those who are in a state of unjustness. Surely, they will be of those who will be drowned.

38 And he, (Noach), began to make Al Fulk 'The Craft'; and whenever the Malaaun 'Rulers' of his kindred passed by him - (Noach and his wives: Na'amah, Waala, Mubiyna, and his sons: Shem and his wife Faatin, and Ham and his wife Haliyma, and Japheth and his wife Ifat), they would ridicule (and laugh) at him (Noach. So he Noach said: "Lo surely, the hypocrites close their bosoms so that they may hide from him, and laugh at him." So he, Noach) said: "If you ridicule (and laugh at us Noach's family), surely we will ridicule you as you ridicule (and laugh at us. We will have the last laugh)."

39 So you will know, to whom a pain will come to him, which disgraces him, and an everlasting pain descends upon him.

40 Until when Our ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) command came and Al Tannuwru 'The Oven' overboiled, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) said: "Carry in it (the craft), from every two pair of Zawjayn 'Mates', and your (Noach's) family, except whom the saying

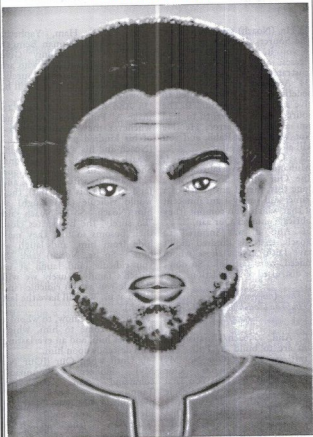


Figure 79
Shah, One Of The Men Who Raped Mubiyna

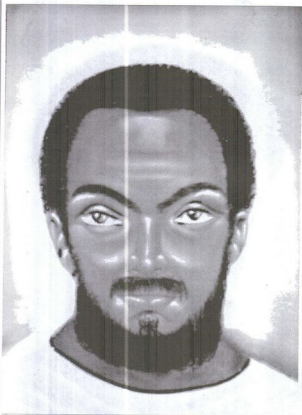


Figure 80
Khan, One Of The Men Who Raped Mubiyna

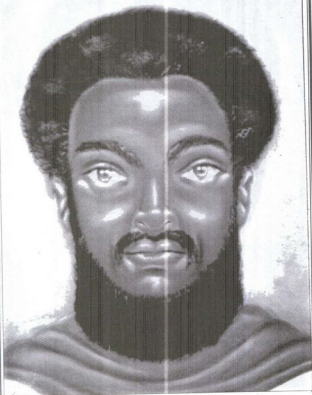


Figure 81
Huwalti, One Of The Men Who Raped Mubiyna

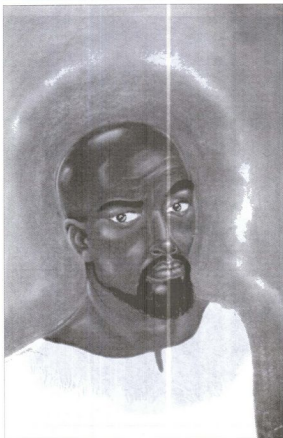


Figure 82
Baru, One Of The Men Who Raped Mubiyna

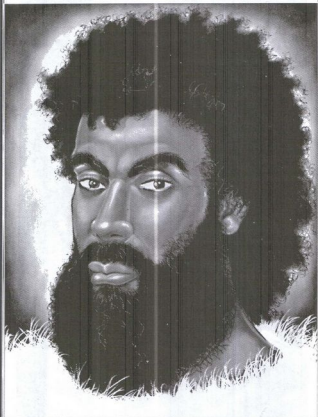


Figure 83
Kuush (Cush), Son Of Kham (Ham) And Haliyma

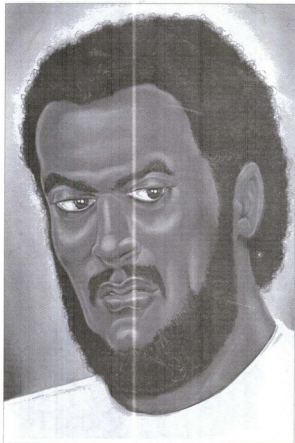


Figure 84
Mizraim, Son Of Kham (Ham) And Haliyma

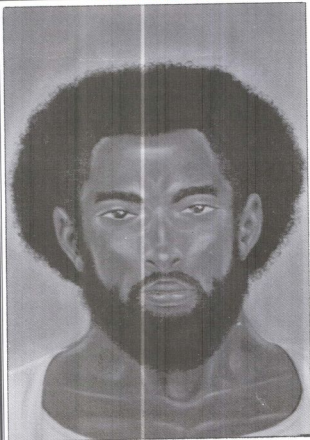


Figure 85

Fuwt (Phut), Son Of Kham (Ham) And Haliyma

proceeded upon him; and who has faith, and (they) didn't have faith with him except a few (of his kindred)."

41 And he said, "Arkabuw 'Ride' in it!" Begin using the name of The Source, ALLAH, be its running course and its Mursaahaa 'Anchoring', surely, my Rabb, who is 'Sustainer' is verily, Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Yielding (Merciful)'.

*The Flood Began - Raya
Takes Refuge On A Mountain
- The Craft Lighted On Al
Judi*

42 And it, (the craft) Tajri 'Sailed' on, with them in waves like mountains and Noach called out to his son - (Raya) because he was on a Mu'zilin 'High Spot'. Noach yelled "O my son, Arkab 'Ride' with us and don't be with the Kaafireen 'Concealers Of The Facts'."

43 He, (Raya) said: "I will take refuge to a mountain that shall protect me from the water." He, (Noach) said: "There is no safe place today from the command of The Source, ALLAH except on whom he has had Rahma 'Yielding' (mercy); and a big Al Mawju 'Wave' intervened between them, so he, (Raya) was of those who Mughraqiyn 'Drowned' (that day).

Noach's Request To Save His

*Son - Eloheem, Anunnaqi Send
Many Blessings On Noach And
His Ummah*

44 And Qiyla 'It Was Said': "O planet (Tiamat/Qi) swallow up your water, and O Samaa-u 'Sky' - (dark cloud), clear away the water and (settle), become less; and the command was decreed (concluded), and (the craft) Astawat 'Lighted' on the Good Place, 'Al Judi'; and Qiyla 'It Was Said': "After that - (the flood), the kindred who were in a state of unjustness - (Enosites of Nod, also called Saturn, and Abaddon and Cain's disagreeable children), were done away with."

45 And Noach called out to his 'Sustainer' Rabb and said: "Oh my Rabb 'Sustainer'! Surely, my son, (Raya) is of my (immediate) family and surely you, promised nothing, but facts (beyond any doubt), that you would save my family, and you are the Ahkam 'Wisest' of Al Haakimiyn 'The Wise'."

46 He, said: "Oh Noach!" Surely he, (Raya) is not of your family; for surely he does all kinds of things other than the Saalihin 'That Which Is Perfect'. So don't ask for what you are not to know about, for surely I (I Not We) give advice which is to keep you from Al Khaahiliyn 'the Ignorant Ones'."

47 He, (Noach) said: "My Rabb, I seek refuge by you, to ask you

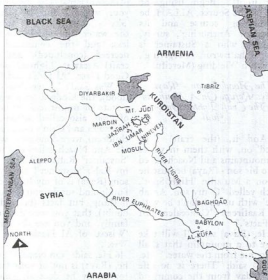


Diagram 15
The Land Of Noah's People And Mount Judi

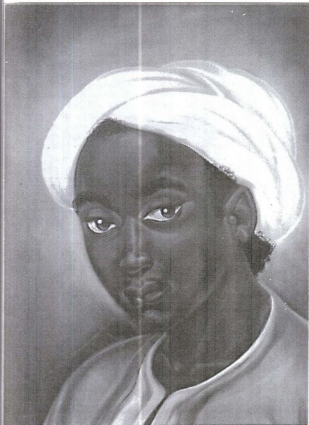


Figure 86
Raya, Son Of Noach (Noakh, Noah) And Waala

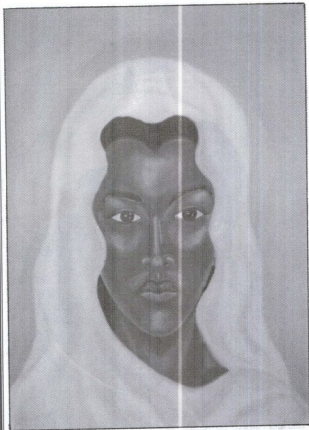


Figure 87
Waala, Wife Of Noach (Noakh/Noah)

of what I don't have knowledge of; and except if you Taghfir 'Forgive' me, and show Tarhim 'Yeilding (mercy)' upon me, I will be from the losers. "

48 It was said: "O Noach, Ahbit 'Disembark' in Salaamin 'Peace' from US, ([Us Not Me] the Eloheem, Anunnaqi) and many blessings are upon you, (Noach) and on your Community 'Ummah' - (Noach's wife, Na'amah, his sons and their wives: Shem and Faatin, Japheth and Ifat, Ham and Haliyma, who were all in the craft) who is (of you and) with you, (Noach); and there will be a Community - An 'Ummah' From your generation whom We, (the Eloheem, Anunnaqi) will also give protection. Then, an aching pain shall befall them, (the Children Of Yisrawale/Jacob) from us."

49 That is from the news of the Unseen - (Hidden). We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) inspired it to you, (Muhammad). You didn't have knowledge of it, and neither your kindred from before this. So have patience, surely the end is for the ones who tremble at the mentioning."

The Sending Of Eber Sent To 'Ad - Eber Tells Them To Seek Repentance From Their Rabb- They Will Not Leave Behind Their Allahs

50 And to (the tribe of) 'Ad, (we sent) their brother Eber. He said: "Oh my kindred, slave for The Source, ALLAH. There's not for you from an ILAAHIN (ALLAH) other than Him. If you are except ones who make up - (invent things)?"

51 Oh my kindred ('Ad) I, (Eber) don't ask you upon it, a reward. For surely, my reward is except on Him (Him Not Us), who Fatarniy 'Split Me' (Split My Genes). Don't you have intellect?"

52 O My Kindred! You all are to seek forgiveness from your 'Sustainer', who is Rabb; then turn for (repentance), to Him. He sends down rain (clouds) pouring with an abundance of rain, and He (He Not We) increases, adds strength on to your own strength; and don't turn away as guilty ones.

53 They, (tribe of 'Ad) said: "Oh Eber! You didn't come to us with clear evidence, and we will not leave behind AALIHATINAA (our ALLAHS) 'Our Sources' for your saying, and we will not be faithful to you."

54 If we say, unless you have possessed some of our AALIHATINAA (ALLAHS) 'Sources' with a evilness (a dishonorable thing). He, (Eber) said: "Surely, I Ush-hidu 'Watch' ALLAH and you Ash-hadu 'Watch' that I am free from that

which you, (tribe of 'Ad), Tushrikuwn 'Associate Partners With (other deities)."

55 From besides him, so you, (tribe of 'Ad) scheme on me (Eber) together. Then you will not look upon me."

Surely, Allah Is A Guardian Over Everything - Surely The Tribe Of 'Ad Disobeyed Eber And Followed Every Jabbaar - 'Ad Removed Far Away

56 And surely, I entrusted upon The Source, ALLAH, my Rabb, and your Rabb 'Sustainer'. There's not from a Daab-batin 'Crawling Creature' (Tank) except He (He Not We). He is the who takes it by its Naasiyat 'Forelock'. Surely, my Rabb is upon the narrow path of those who stand up straight."

57 So if you, (tribe of 'Ad) turned away, so I, (Eber) indeed, have propagated to you (the facts), that which I have been sent with to you; and My 'Master', Rabb, will make a kindred to succeed other than you; and you can't harm, (injure) Him in anyway. Surely, my Master, Rabb is a Hafiyzun 'Guardian' over everything."

58 And when our command came, We, ([We Not He] the Eloheem) saved Eber and who were faithful with him, with a Rahmat 'Yielding' (mercy) from us; and We, (the Eloheem,

Anunnaqi) saved them from a rough pain."

59 And that was 'Ad. They denied the signs of their Rabb 'Master', and disobeyed the one He sent (Eber), and followed the commands of every 'Aniydin 'Stubborn' Jabbaar 'Mighty One' - (Tyrant Barbarians)."

60 And they were followed in the physical world by a La-nat 'Curse (Leprosy)', and on Al Qiyaamah 'The Day Of Resurrection'. Behold! Surely 'Ad, they concealed what they knew to be the facts about their Rabb, and behold, surely 'Ad was removed far away -the nation of Eber (hebrews).

The One Sent, Shelakh Sent To The Tribe Of Thamud - Thamud Warned To Slave Only For Allah - Thamud Given The Source's She-Camel

61 And to the tribe of Thamud (Canaanites, We sent), their brother, Shelakh. (He, Shelakh) said: "Oh my kindred slave for ALLAH. There's not for you from an ILAAHIN (ALLAH) other than Him. He brought you forth from the planet (Tiamat, Qi) 'Earth,' (brought you forth from behind the water falls) and settled you as (inhabitants) in it (Enclosed Garden of Delight). So ask forgiveness from him. Then seek repentance from him.

Surely, My Rabb is a Near Mujiybun 'Approver'."

62 They, (tribe of Thamud [Canaanites]) said: "Oh Shelakh, certainly you were hopeful in us before this, that we slave for what our forefathers (the Canaanites) slaved for? And surely, we are in distrust, (ones who are) in doubt from that which you, (Shelakh) are calling us to him?"

63 He, (Shelakh) said: "Oh my kindred (tribe of Thamud [Canaanites]): "Did not you see, if I was upon a clear evidence from my Rabb and He gave me Rahmat 'Yielding' (mercy) from it; so who Yunsir 'Aids' me from ALLAH, if I disobeyed Him? So what can you, (tribe of Thamud) increase for me other than a loss?"

64 And Oh my kindred - (tribe of Thamud), this is a Naaqat 'She-camel' of The Source, ALLAH, a sign for you. So leave her eating in The Source, ALLAH'S Earth; and don't touch her with an evil (dishonorable) act. So a near pain will overtake you.

They Disobeyed And Slaughtered The She-Camel - Those Who Were Faithful To Shelakh Were Saved - The End Of Thamud

65 So they slaughtered her (She-Camel). So He said:

"Enjoy (life) temporarily in your Daar 'Abode' for three days. That's a Wa-dun 'Promise', other than a lying one.

66 So when Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) command came, we saved Shelakh and those who were faithful with him with Rahmat 'Yielding' (mercy) from us; and from the Khizyi 'Shame' of that day. Surely, your Rabb 'Master/Sustainer', He is Al Qawiyun 'The Strong', Al 'Aziyz 'The Mighty'.

67 And the loud cry overtook those who were in a state of unjustness. So they became in their abodes to lie on their breasts.

68 As though they had not dwelled in them. Now Surely, the (tribe of) Thamud concealed what they knew to be the facts of their Rabb. Now, away with (the tribe of) Thamud.

Eloheem, Anunnaqi Came To Abram - They Were Also Sent To Iywi's Kindred - News Is Given Of The Birth Of Yitschag

69 And indeed Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) Rusul, 'Ones Sent' came to Abrawhawm (the Hebrew) with good news. They, (Michael, Raphael, Uriel) said: Salaam 'Peace.' He, (Abrawhawm) Said: Salaamun 'Peace,'; and he made

no delay in bringing a Haniydh 'Roasted' Ijlin 'Calf'."

70 But when he saw that their hands were not extended towards it, he deemed them strange and conceived fear of them. They, (Michael, Raphael and Uriel) said: "Fear not surely we are sent to Luwt's kindred - (Sodom And Gomorrah)."

71 Amra-aatuhu 'His (Abrawhawm's) Woman', (and half sister Sarah) was standing (in her tent) and she laughed when We, ([We Not He] Al Khidr/Murdoq and the the Eloheem Anunnaqi Uriel and Raphael) gave her the good news of Yitschaq, and (her son) who is after Yitschaq, (which is) Ya'aqob.

72 She, (Sarah) said: "O my Master! How is it possible, Aalidu 'I give birth' -(to conceive a baby), and I am 'Ajuwzun 'Old'? And this, my Baal, 'Husband, Lord And Master' (Abrawhawm) is an Sheikh 'Old Man'." Surely, in this is an amazing thing.

73 They said: "Are you not amazed from the order of The Source, ALLAH, the Rahmatu 'Yeilding' (mercy) of The Source, ALLAH and His (His Not Our) blessings on you all, (the chosen Enosites) - Ahl 'Family' of Al Bayt 'The House'? Surely He (He Not We) is Hamiyd 'Worthy Of Gratitude'; Mujiyd 'Glorious'.

74 So when the fright had gone away from Abrawhawm, and the good news came to him; he disputed with us, (the Eloheem) in the tribe of Luwt.

75 Surely, Abrawhawm was Haliym 'Clement', one who turns for repentance.

76 Oh Abrawhawm, turn away from this. Surely, the command of your Rabb 'Sustainer/Master,' had just come; and surely an inevitable pain will come to them.

*Eloheem, Anunnaqi Came To
Luwt - Luwt Tells The
Sodomites, They Can Have His
Daughters - Don't Disgrace
His Guests - The Three
Eloheem, Anunnaqi*

77 And when Our (Our Not My), Rusul 'Ones Sent', (the Eloheem, Anunnaqi) came to Luwt, he (Luwt) was sad for them (the Eloheem) and he, (Luwt) was powerless (to protect) them (the Eloheem, Anunnaqi); and he, (Luwt) said: "This is a grievous day."

78 And his kindred went hastily unto him, (Luwt) and from before, they were doing evil (dishonorable) acts. He, (Luwt) said: "Oh my kindred, these are Banaati 'My Daughters'. They're At-haru 'Purer' for you all. So Tremble and fear The Source, ALLAH; and don't you, (males of Sodom and Gomorrah)

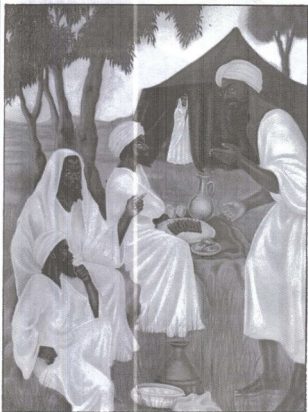


Figure 88

Michah'el, Rapha'el, Uri'el Comes To Visit Abraham At His Tent

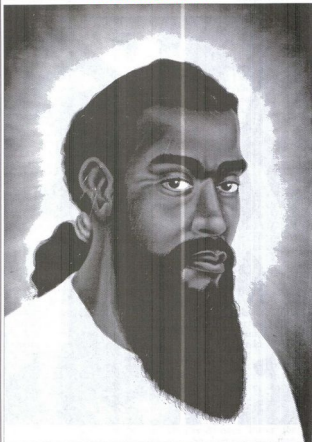


Figure 89
Yiskhaq (Yischaq/Isaac), Son Of Abraham And Sarah

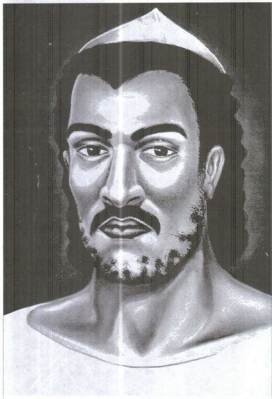


Figure 90

Ya'aqob (Jacob), Son Of Yitschaq (Isaac) And Rebecca (Ribqa)

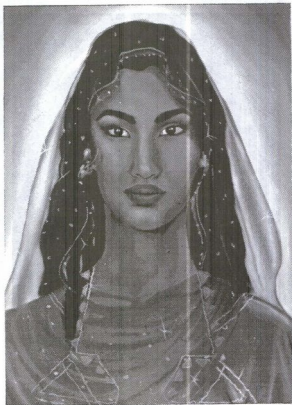


Figure 91

Fig. Sarah, Daughter Of Terach (Terakh/Terah) And Aiyda

disgrace me about Dayfiy 'My Guests' - (the three Eloheem Michael, Uriel, and Raphael). Is there not from you a Rajul 'Mortal Man' (who will) give true direction?"

79 They, (the males of Sodom and Gomorrah) said: "You, (Luwt) certainly know there's not for us in your daughters, from a fact (beyond doubt); and surely you, (Luwt) know what we want."

80 He, (Luwt) said: "If that I had strength to go against you, or betake myself to a Shadiyd 'Forceful' support.

*Luwt Warned To Travel
With His Family And Don't
Turn Back - Eloheem Rained
Down Sijiyi On Sodom And
Gomorrah*

81 They, (The Eloheem, Anunnaqi Murdoq/Miykaal, Uriel/Kalkael and Raphael) said: "O Luwt: "Surely We (We Not He) are Ones Sent from your Rabb 'Sustainer'. Never shall they make contact with you; so (Luwt), you are to Asri 'Move About' with your (immediate) Ahl 'Family', while a part of the Shadow Hour Period remains, and don't let any of you turn back, except your Amra-at 'Woman (Sabriyya)'. Surely, that which inflicted them -(the Enosites of Sodom and Gomorrah), it shall inflict her.

Surely, their appointed time is the Early Daytime Hour. Is not the Early Daytime Hour near?

82 So when Our, ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi's) command has come, We, ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) made (their township - Sodom and Gomorrah) upside down; and We, (the Eloheem) rained upon it stones from Sijiyi (Pellets, Which Are Naru 'Stones That Rise') layer on layer.

83 Marked and distinct in possession of your Rabb 'Sustainer'; and they are not far from the ones in who are in a state of unjustness.

*Yethro Sent To The
Midlanites - Yethro Warned
Midyan, To Slave For Allah,
Alone*

84 And to Midyan We, ([We Not He] the Eloheem Anunnaqi) sent their brother Yethro. He said: "Oh my kindred slave for The Source, ALLAH. There's not for you an ILAAHIN (ALLAH) 'Source' other than Him (Him Not Us); and don't consume up the vessel in which things are measured and the balance of weight. Surely I, (Yethro) see you, with Khayrin 'Goodness' -(a state of well-being), and surely I, (Yethro) fear upon you, (tribe of Midyan), a pain of an encompassing day."

85 And Yethro said: "Oh my

kindred (Midianites)! Fulfill the measure and the weight with fairness, and do not deceive the Enosites out of their things; go not wickedly in the (planet Tiamat) 'Earth' and Mufsiyyn 'Cause Mischief'."

86 That which The Source, ALLAH endures - (makes last), is Khayrun 'Good' for you. If you were faithful, and I, (Yethro) am not a Hafiyz 'Guardian' over you.

87 And they said: "O Yethro! Does your salutation as worship command you that we should leave alone that which our fathers slaved, or that we do what we please in (using) our wealth? Surely, you (Yethro); verily you are the most kind of the Ones Who Give True Direction."

88 He, (Yethro) said: "Oh my kindred (tribe of Midyan from Abrawhawn's third wife, Qetuwrahs Sons: 1. Zimrawn 2. Yoqshawn 3. Medawn 4. Midyan 5. Yishbawq 6. Shuwach) did not you see if I was upon a clear evidence from My Rabb, and He (He Not We) Razaqaniy 'Provided Me' a Hasanaan 'Better' Razqaan 'Provision' from it; and I don't want to accede you to that which I forbid you from? If I (Yethro), want except the Islaaha 'Perfection' of what I am able; and my success is not, except by way of The Source, ALLAH. I entrusted

upon him (Him Not Us) and to Him, I turn to for repentance."

*Midianites Warned Not To
Lead Themselves Into
Committing All Forms Of
Evils- And The Likeness Of
That Which Had Befallen The
Kindred That Were Before
Them*

89 And (Yethro) said: "O my kindred! Do not let yourselves be led away by opposition to me into committing all forms of evil; (so that befalls you), the likeness of that which had fallen on the kindred of Noach, or the kindred of Eber (Hebrews), or the kindred of Shelakh (Aramians, Assyrians). What has (inflicted) the kindred of Luwt; It is not far away from happening to you.

90 And ask your Rabb 'Sustainer', for forgiveness, then turn to Him (Him Not Us) repenting. Surely, My Rabb is Wadudun 'Compassionate', Most Rahiymun 'Yielding'."

91 They, the (tribe of Midyan) said: "Oh Yethro, we don't overstand a lot of what you proclaim; and surely, we see you weak amongst us; and if not for your family (seed of Abrawhawn), we would have Rajama 'Stoned' you, (Yethro); and you are not Aziyz 'Mighty' amongst us."

92 He, (Yethro) said: "Oh my

kindred -(Tribe Of Midyan), my family is more beloved upon you all than The Source, ALLAH? And you put Him behind you, neglected. Surely, my Rabb 'Sustainer' is surrounding all that which you do."

93 And Oh my kindred (Tribe Of Midyan)! Work on your ability; surely I, (Yethro), am a worker. You will know he whom a pain comes (to), disgracing him; and he who is a liar; and be observant. Surely I, am with you as a Raqiyyun 'Observer'.

Yethro And Those Who Were Faithful Were Delivered By The Eloheem

94 And when Our, ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi's) command came, We (We Not He) delivered (Yethro) and those who were faithful with them by way of Our Rahmat 'Yielding' (mercy), and those who were in a state of unjustness overtook all of those by way of a terrible and mighty sound. So they became in their abodes to lie on their breasts (like motionless bodies).

95 As if they have never dwelt there at all. The tribe of Thamud (a Canaanite tribe) was erased far away as Midyan was erased far away (from the physical Qi 'Earth').

Anunnaqi Sent Mosheh With

*Their Signs To Pharaoh
Ramses II - Eloheem Relate
These Messages To Muhammad*

96 And indeed, We, ([We Not He] Anunnaqi) sent Mosheh, with Our (Our Not My) signs, and a Mublyn 'Clear' Sultaanin 'Authoritative Power'.

97 To Pharaoh (Ramses II) and his Malaa-ihl 'Chief Rulers'; so they followed the command of Pharaoh (Ramses II) and the command of Pharaoh (Ramses II) was not truly directed.

98 He, (Pharaoh Ramses II) will proceed forward with his kindred (Egyptians/Mitzraimites), on the Day of Resurrection/Standing. So they are lead to the fire, and a miserable wretched, descending place.

99 And they, (the Egyptians/Mitzramites) are followed by a La-natin 'Physical Curse' in this; and on the Day of Resurrection/Standing is a miserable wretched given gift.

100 That's from the news - announcements of the villages. We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) relate it unto you, (Muhammad). Some from them are standing, and some from them are utterly destroyed.

101 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not make them to be unjust, and but they put their own Nafs 'Selves' to be in a state of unjustness. So

their ILAHAAT (ALLAHS), 'Sources/Deities' did not avail them; which they called upon (prayed to), from besides The Source, ALLAH from anything when the command of your Rabb came, and he did not increase for them, without a loss.

102 And also the taking away - removal of your Rabb 'Sustainer' when he took the villages and they are in a state of unjustness. Surely, His (His Not Our) taking away - (the removal of them) is aching (and) Shadiydun 'Forceful'.

103 Surely, in that is a sign for those who fear pain of Al Aakhirat 'The End'. That's a Day of Gathering for Him, of the hundred; and that's a day Mash-huwduun 'To Be Watched'.

104 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) didn't hinder them, except by way of His (His Not Our) permission; (so for some of them), is an extended term.

105 The day will come, a Nafs 'Person' will not speak except by His (His Not Our) permission. So from them, (the spirit) will be wretched and happy.

*Those Who Are Miserable
Will Be In The Fire - Those
Who Will Receive The Joy Of
Being In The Garden, It Is A
Gift Uninterrupted*

106 So -as for those who are

miserable, so they will be in the Fire. For them, will be Zafiyrun 'Sighing' and Shahiyqun 'Sobbing' while in it.

107 In it, (the Fire) they will abide eternally, or for as long as Al Samawaat 'The Skies' and (Tiamat/Qi) and Al Ard 'The Planet Earth' endures; except, what your (Muhammad's) Rabb 'Sustainer' pleases. Surely Your, (Muhammad's) Rabb does whatever He (He Not Us) wants.

108 And as for those who receive the joy of being in the Jannat 'Garden' - (Paradise) eternally; or for as long as the Skies And Qi endures, except for, what your Rabb 'Master' pleases. It is a gift (and will be) uninterrupted.

109 So don't be in doubt from that which these slave for. They don't slave for except as that which their forefathers slaved for from before; and surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will pay in full their portion without diminishing.

*Eloheem, Anunnagi Gave
Mosheh The Torah -
Muhammad Told To Stand Up
Straight And Don't Transgress*

110 And indeed We, ([We Not He] Eloheem) gave Mosheh the scripture - (The Torah: five books of the Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And Mosheh's Successor, The Apostle

Yehowshuwa), but they had differences about it (different interpretations about its true meaning); and if no word had gone forth already decreed from your (Muhammad's) Rabb, they would have used wisdom between themselves, (made their own decisions as to what it means,) and surely they, (the Children Of Yisrawale) are in grave doubt about it (and uncertain about its meaning).

111 And surely, all when your Rabb 'Sustainer,' will repay in full for their works. Surely, He (He Not We) is Khabiyr 'Aware' of what they do.

112 So stand up straight, Newsbearer (Muhammad) like you were commanded and those who repent with you; and don't you Tat-ghuw 'Transgress'. Surely He (He Not We) is a Basiyr 'Seer' of what you do.

Don't Incline Yourselves To Those Who Are In A State Of Unjustness - Keep Up Salaat Fajr, 'Asr, And 'Ishaa'a

113 And don't incline yourselves to those who are in a state of unjustness. So the fire will touch you; and there's not for you near friends, from besides The Source, ALLAH. Then you will not be Nasar 'Aided'.

114 And keep up Salaat 'Salutation As Worship' in the Tara 'Two Extremes' of Al

Nahar 'The Daytime' (Salaat Al Fajr, and Salaat Al Asr); and the approach of Al Layl 'The Shadow Hour Period' (Salaat Al 'Ishaa'a). For surely, it is Al Hasanaati 'The Best' way to take away evil deeds. This is only to Dhikraa 'Remind' those of you who want to Dhaakir 'Remember'.

115 O (Muhammad) be patient! So Surely, The Source, ALLAH will not lose the reward of the doers of that which is best.

116 So if it was not for, from the generations from before you, possessing endurance, forbidding from mischief in the planet Ard 'Earth' except a few from whom We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) saved from them; and those who are unjust follow what they were made to enjoy - (good news) in it, and they were guilty ones.

117 And your Rabb 'Sustainer', will not destroy the villages with the unjust (path); and her family was Muslihuwn 'Perfected Ones'.

The Source Can Make The Enosites Stop In Differing - Jannah Will Be Filled With Jinns And Zakar's Seed Who Follow Them - Everything Narrated To You, Muhammad Is To Strengthen Your, Muhammad's Heart

118 And if your Rabb

'Sustainer' pleased, verily, He (He Not We) would have made the Enosites as one nation, and they will not cease in Mukhtalifiyn 'Differing'.

119 Except for those whom your, (Muhammad's) Rabb has Rahima 'Yielded' (mercy) to; and that is why He (He Not We) Khalafa 'Created' them (Enosites: Negroid Race, Canaanite Race, Mongoloid Race); and completed the word, (all the scripture by the Qur'aan) of your, (Muhammad's) Rabb; that I will fill Jahannam 'Hell' from Al Jinnati 'The Jinns' (The Malevolent Being, Cherubeems, the Devil's seed); and the Enosites (Zakar/Adam's seed who follow evil) all (gathered) together; (the Devil and those with his mark -666, zain, zain, zain, will be cast into Hell fire together).

120 And everything that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaki) narrated unto you, (Muhammad) about the news of Our (Our Not My) Rusul 'Ones Sent' (all the things that Muhammad was taught about all the Newshearers before him), is nothing but a means for you to be strengthened in Fuwaa-daka 'Your Inner Heart' and that which has come to you, (Muhammad). In this is (nothing, but) facts (beyond any doubt) an (admonition), exhortation and (it) is a Dhikra

'Reminder' for those who are Mumineen 'Faithful'.

121 And tell them, those who don't have faith: "Work on your abilities. Surely we are working."

122 And you wait, surely we are waiting.

123 And Li-lahi 'For Him (Him Not Us)', is The Gaybu 'Unseen' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The planet Qi/Tiamat 'Earth,' and to Him, every command will be returned. So Slave for Him, and put your trust in him, and your Rabb, 'Sustainer' is not unaware of that which you all do.

Sudiq Allahu El Aelm

Chapter Fifty-Three

Revealed In The Year 620 A.D.


Yosafe

(Joseph)

*Original Order Chapter 53;
Wrong Order Chapter 12*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Qur'aan Sent Down In
Arabic To Muhammad, So
Perhaps He Can Overstand*

53 ﴿  ﴾ Alif: ALLAH,
The Source, Laam: Shadow

Hour Period of Power, Raa: The One Sent (Yosafe). These are the signs/verses of a clear scripture."

2 "Surely, We ([We Not He] the Eloheem), sent down an Arabic Qur'aan, so that perhaps you all will be able 'Aqala 'To Overstand' it (the Quraish dialect)."

3 We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) narrated to you, (Muhammad) the Ahsana 'Best' and most inspirational Al Qasasi 'Stories' of the past, as part of the Qur'aan, and before this you were surely of those who were negligent.

Yosafe Tells His Father Of His Vision - Ya'aqob Tells Yosafe Not To Tell His Brothers Of The Vision

4 When Yosafe, (who also bore the title Zaphenath-Paneah) said to his father: "O my father, (Ya'aqob)! I saw eleven Kawkab 'Planets- stars' and Al Shams 'The Sun' and Al Qamar 'The Moon', I saw them prostrating to me."

5 He, (Ya'aqob/Yisrawale) said: "O my son, (Yosafe) don't tell this story of your vision to your brothers, or they will devise a plot against you; and surely Shaytaan, 'Satan (the Reptilian)', is a Mubiyn 'Clear' 'Aduwun 'Enemy' for the Enosites."

6 And He (He Not We), Rabb chooses you, (Yosafe) and teaches

you from interpretation of (the written records) the Ahadiyth 'Tales' (Hadiths) and He, completes His (His Not Our) grace upon you, and on the descendants of Ya'aqob like He, completed upon your forefathers from before - Abrawhawm and Yitschaq. Surely, your Rabb, is 'Aliymun 'Knowing', Most Hakiymun 'Wise'.

7 Indeed, there was in Yosafe and his Brothers' signs for those who question."

Yosafe's Brothers Arr Jealous Of Him - They Throw Him Into A Well

8 When they said: "Certainly Yosafe and his brother, (Benyamiyn) are dearer to our father, (Ya'aqob) than we; and we are a group of (10) males (Reuwben, Shim'own, Lewiy Yehuwdah, Yissawkawr, Zebuwluwn, Dawn, Naftawlee, Gawd, Asher). Most surely, our father is clearly astray in error.

9 Kill Yosafe or cast him into a (part of the) earth (Egypt/Mitzrayim) so that (the) face of your father, (Ya'aqob/Yisrawale) will be clear for you; and from after that, you will be a Saalihiyn 'Perfected' kindred.

10 A speaker, (Yehuwdah) said from them - (Yosafe's brothers): "Don't kill Yosafe; and if you were to do (something), throw

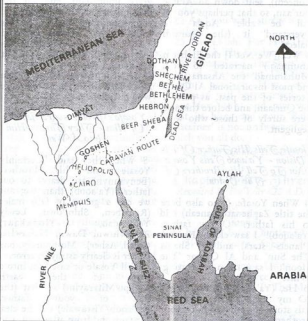


Diagram 16
Relating To The Story Of Joseph

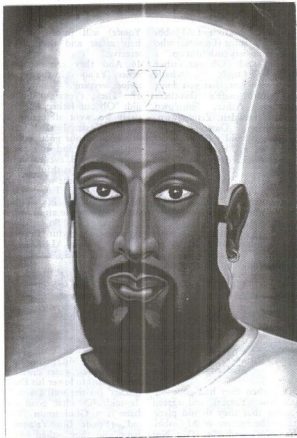


Figure 92
Yosafe (Joseph), Son Of Jacob And Rachel

him into the bottom of Al Jubbi 'The Well'. Some (Enosites) who move about may pick him up."

11 They said: "Oh our father Yisrawale/Ya'aqob, what's wrong with you, that you don't trust us Yosafe's (brothers -Reuwben, Asher, Shim'own, Lewiy, Yehuwadah, Zebuwlawn, Yissawkhawr, Dawn, Gawd, Naftawlee, and Binyamiyn)? Surely, we are those who will give counsel, advice to him, (Yosafe)."

12 "Send him, (Yosafe) with us tomorrow, that he can enjoy himself and play; and surely we will be Haafizuwn 'Guardians' for him."

13 He, (Ya'aqob) said: "Surely it will grieve me that you take him away; and I'm afraid that Al Dhi-Bu 'The Wolf' will eat him, and you are neglectful, (unaware) of him, (Yosafe)."

14 They said: "If the wolf eats him, and we are a group of (eleven) males, surely we, then will be the losers."

The Eloheem Inspire Yosafe- Yosafe's Brothers Lie To Their Father

15 So when they had gone off with him, (Yosafe), and agreed together that they should place him in the bottom of Al Gubbi 'The Well'; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) inspired to him, that you,

(Yosafe) will inform them of their affair and they do not perceive."

16 And they came to their father, (Ya'aqob) in the late dusk period, weeping.

17 "They, (Yosafe's) brothers said: "Oh our father, (Ya'aqob), surely we, went off racing, and we left Yosafe behind, in the possession of our goods. So the wolf ate him, and you are not faithful with us, eventhough we are Saadiqiyn 'Truthful'."

18 And they came with his shirt with Kadhibin 'False' Damin 'Blood' upon it. He, (Ya'aqob) said: "In Fact, the affair seduced yourselves. So Saburun 'Patience' is Jamiylun 'Beautiful'; and The Source, ALLAH is one to turn to for help, on what you have described."

Yosafe Sold Into Egypt By The Ishmaelites - Potiphar/Aziya Brought Yosafe

19 And when the travellers- (Ishmaelites came to the well, on their way to Mitzrayim/Egypt), they sent their water drawer (of the caravan) to lower his Dalwah 'Bucket' (in the well for water). He said: "O what good news; there is a Ghulaamun 'Young Lad', (Yosafe Bin Ya'aqob) in there." So they pulled him up and concealed him, as an article or merchandise, and The Source,

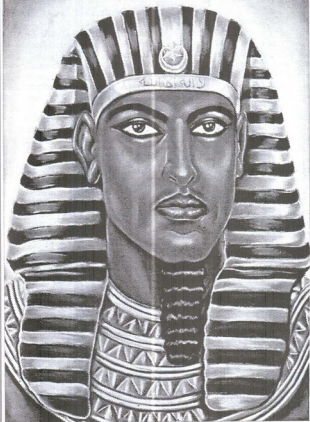


Figure 93
Potiphar/Aziyaz

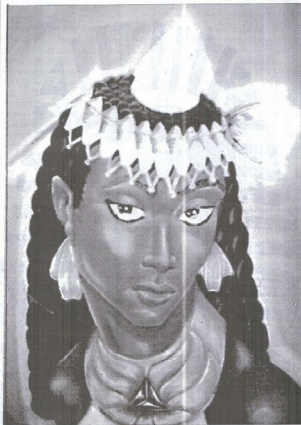


Figure94
Zulaykhaa, Wife Of Potiphar

ALLAH knew what they were doing.

20 And they sold him, (Yosafe) for a small deficient price. A few pieces of Silver (30 pieces of silver), and they held him in low estimation.

21 (Potiphar, also called 'Aziyz) the one who brought him, (Yosafe) from Misr 'Egypt/Mitzrayim', said to his Amra-at 'Woman' (Zulaykhaa): "Make his abode honorable. Maybe he will benefit us, or we can Takhitahu 'Take Him' And Say We Waladaan 'Gave Birth' To Him. And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) placed, established for Yosafe in the planet (Qi/Tiamat) 'Earth;' and We will teach him from interpretation of the Ahaadiyth 'Tales' (Hadiths); and The Source, ALLAH is Prevailing over His (His Not Our) command, but most Enosite don't know."

*Eloheem, Anunnaqi Gave
Zaphenath- Paneah Wisdom
And Knowledge - Zulaykhaa
Wants Yosafe*

22 And when he, (Yosafe) reached Ashuddahu 'Full Maturity', We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave him Hudmaan 'Wisdom and Ilmaan 'Knowledge' and thus We rewarded those who do good.

23 And she, (Zulaykhaa), in

whose house he, (Yosafe) was, wanted him to Raawadat 'Seduce Her' from his (pure) self; and she closed the doors and said to him: "Come to me." He, (Yosafe) said: "I seek refuge in The Source, ALLAH, Surely He (He Not We), is my Rabb and has made my dwelling place, the Ahsana 'Best'. Surely there is not prospering for the ones who are in a state of unjustness."

24 And indeed she, (Zulaykhaa, wife of Aziyz/Potiphar) had it in her mind to seduce him, (Yosafe) and it was in his mind also for her; if it were not that he saw proof against it from his Rabb 'Master'. We, ([We Not I] Eloheem) also diverted him from such an act of evil and shameful deeds. Surely, he was from our slaves, Al Mukhlasiyn 'The Purified'."

*Zulaykhaa Lies On Yosafe - If
Shirt Is Torned From The
Back, He Is Innocent -
Zulaykhaa Sends Yosafe
Infront Of The Women Of
The City*

25 And both (Yosafe And Zulaykhaa, Wife Of 'Aziyz) both hastened toward the door; and she Qaddat 'Caught Hold' of his shirt from Duburin 'Behind' and they both found Sayyidahaa 'Her Master,' (mate) at the door. She said: "What will be the recompense of one who wants to

inflict evil to (one of) your family, except that (of) imprisonment or an aching pain?"

26 He, (Yosafe) said: "She, (Zulaykhah) desired to Ra-aawadatniy 'Lay With Me' - (have sexual intercourse) and a watcher from her family watched: "If his shirt was torn from Qubulin 'The Front', so she, (Zulaykhah) spoke the facts, and he, (Yosafe) is from the liars."

27 And if his, (Yosafe's) shirt is torn from behind; so she, (Zulaykhah) lied; and he, (Yosafe) is one of Al Saadiqiyn 'The Truthful Ones'."

28 And when he, (Potiphar) saw that his, (Yosafe's) shirt was torn from behind he said: "Surely, it is from your, (Potiphar's wife) Kayd 'Scheme': surely your scheme is 'Aziymun 'Supreme'."

29 Yuwsuf turned away from this, and (Zulaykhah), ask for forgiveness for your disagreeable act. Surely, you was from the ones who do disagreeable acts."

30 And the Niswatun 'Women' in the Madiynah 'City' said: "(The) Amra-aatu 'Woman', (Zulaykhah) of Aziyz (Potiphar) wanted to lay - (have sexual intercourse) with her young male slave, (Yosafe) from his self (body). He just inspired her with violent love. Most surely we, (the women) see her clearly astraying into error."

31 So when she, (Zulaykhah, Potiphar's wife) heard about their plot, she sent for them - (the women), and prepared for them a reclining couch; and gave each one of them (of the women) a knife; and she said (to Yosafe) "Go out amongst them." So when they, (the women) saw him, they deemed him big (great), and they cut their hands, and they said: "(There is no) imperfection for him. This is not a Bashar 'Mortal Being In Skin,' but he, (Yosafe) is except a Kariynum 'Noble' / Malakun 'Messenger-Eloheem'."

32 She, (Zulaykhah) said: "That's he, (Yosafe) whom with you, have blamed me; and indeed, I sought to lay with him, (Yosafe) from his self (body). So he held on firm, (preserved himself); and if he does not do what I command him, he'll certainly be Yusjananna 'Imprisoned', and he will be of the small ones."

33 He, (Yosafe) said: "My Rabb, 'Sustainer', the prison is more beloved to me than unto that which they have invited me; and except if their scheming turn away from me, I will yearn to them and I will be from Al Jaahiliyn 'The Ignorant Ones'."

34 So His Rabb, responded to him, (Yosafe). So (they) turned away, (averted) from him their scheme. Surely, He is Al Samiy-u 'The Hearer', Al 'Aliymu 'The Knower'.

*Yosafe Is Imprisoned - Yunan
And Mahila Are His
Companions In The Prison -
They Want Him
To Interpret Their Visions*

35 Then it occurred to them from after, they had seen the signs, that they should Yasjunun-nat-hu 'Imprison Him' until a time.

36 And entered with him in Al Sijna 'The Prison', Fataayani 'Two Young Boys' (Yunan and Mahila), and one of them said: "Surely, I see myself squeezing Khamraan 'Intoxicants' and the other one said: "Surely, I see myself carrying bread on top of my head from which birds are eating. Inform us, (Yosafe) of its interpretation! Surely, we see you as one of those who do good."

37 He, (Yosafe) said: "Food will not come to you two, (Yunan and Mahila) which you two provided except, I will inform you two with its interpretation, before it came to both of you. This is from what my Master, has taught me. Surely I, left behind Millata 'Rites' of a kindred- (Mitramites/Egyptians) who don't have faith in The Source, ALLAH, and they are Kaafiruwun 'Concealers Of What They Knew To Be The Facts' in the End."

*Yosafe Follows Millat
Abrawhawm- Yosafe Tells His*

*Two Companions Not To
Associate Partners
With Allah*

38 "And I, (Yosafe) Follow Millat 'Rites, Replenishing' of my fathers Abrawhawm, and Yitschaq, and Ya'aqob. It's not for us to Sharika 'Associate (other deities)' with The Source, ALLAH from anything. That's from the preference of The Source, ALLAH upon us, and on the Naas; but most of the Enosites are not grateful."

39 Oh my two companions! (Yunan and Mahila) of the prison, Arbaabun 'Masters-Rabbis' Mutafarri-quwn 'Separating, Differing' with each other is Khayrun 'Good', or is ALLAH, Al Waahidu 'The One', Al Qahaaru 'The Dominant?'"

40 You, (the two prisoners - Yunan and Mahila) do not slave for none besides him (the Source), except names which you have named them - (deities you have made up), you and Abaa-uwkum 'Your Fathers' which The Source, ALLAH has not sent down any Sultaanin 'Authority' with it. The wisdom is only ALLAH'S, He, The Source, ALLAH has commanded you not to slave for any Source except for him. That is Al Diyn 'The Means Of Judgment (Nuwaubu)'; but most of the Enosites (who are the concealers of the facts), do not know.

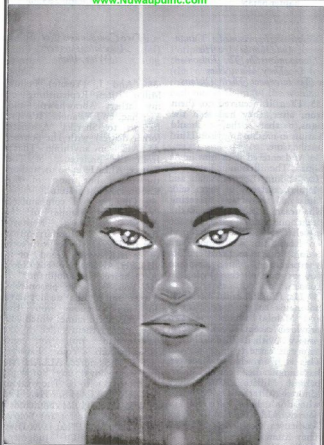


Figure 95
Yunan

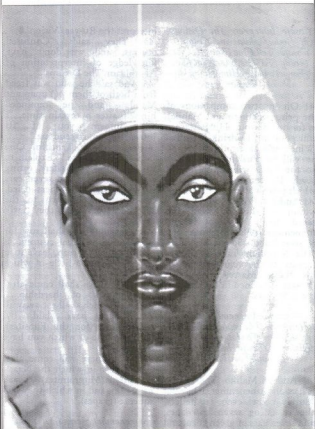


Figure 96
Mahila

*Yosafe Interprets The Visions
Of Both Mahila And Yunan -
Yosafe Tell One That Is Not
Going To Die, And Not To
Forget About Him Being In
Prison*

41 Oh my two companions of the prison: (Yunan and Mahila), as for one of you. His Sustainer will pour out to drink Khamraa 'Wine'; and as for the other, so he will be Yuslabu 'Crucified'. So the birds will eat from his head. The command is ordained which you two were consulting.

42 And He, (Yosafe) said to him, whom he thought would be saved from two of them. Remember me in the possession of your Rabb. So the Shaytaan, 'The Reptilian' caused him to forget, of the remembrance of his Rabb 'Master'. So he, (Yosafe) remained in the prison a few (13) years."

*Pharaoh Amenemhet Has A
Vision - Pharaoh Seeks His
Rulers To Interpret His
Vision - Yosafe Interprets The
Vision For Pharaoh*

43 And Al Maliku 'The Ruler', (Pharaoh Amenemhet III) said: "Surely I saw seven, fat heifers, they're eating seven lean ones; and seven ears of green corn, and other dry. Oh Al Malaa-u 'Rulers (Chief)', explain to me, in Ru-yaaya 'My Vision'; if you can

interpret the Ru-yaa 'Vision'."

44 They said: "Confused dreams, and we don't have knowledge of interpretation of Al Ahlaam 'The Dreams'."

45 And said he who was freed from both of them - (Yunan and Mahila), and he reminded himself after a certain time, "I will inform you of its interpretation, so send me."

46 Yosafe, Oh Truthful One 'Sodoqite/Zodoqite.' Explain to us: "In seven fat heifers, eating seven lean ones; and seven ears of green and the others dried, perhaps I can return to the Enosites, perhaps they will know."

47 He said: "You shall sow for seven years as usual custom, so as for what you reap, leave it in its ears, except a little of which you eat."

48 Then there shall come after seven years of hardship - (famine), which shall eat away all that you have laid by, beforehand; (for the Enosites), except a little of which you have preserved.

49 Then there will come after that, a year in which the Naas - (Egyptians/Mitzramites) will have rain, and in which they will squeeze (grapes)."

*Amenemhet Seeks Out Yosafe
Who Is Proven
Innocent - He Is Made
Treasurer Of Qi*

50 And Al Maliku 'The Ruler' of (Egypt/Mitzrayim, Pharaoh Amenemhet III) said: "Bring him, (Yosafe) to me. So when the Rasuwl 'One Sent' (Yosafe) came to him he, (the Pharaoh Amenemhet III) said: "Return to your Rabb and ask him what's the condition of Al Niswat 'The Women' who cut their hands? Surely, my master is knowing of their - (Zulaykhaa and womens') scheming."

51 He, (the ruler Amenemhet III) said: "What's the matter with you all when you all sought to Ra-aawadtunna 'Lay With' Yosafe, with his self (body)? They said: "(There is no) Haasha 'Imperfection' for him." We don't know on him of an evil dishonorable act." The Woman of 'Aziyz, (Zulaykhaa) said: "Now the fact (beyond doubt), the truth has manifested. I sought to lay with his Nafs 'Spirit' (body), and surely he, (Yosafe) was from Al Saadiqiyn 'The Truthful Ones'."

52 That he, (Pharaoh Amenemhet III) will know, surely I have not deceived him in Al Gaybi 'The Unseen'; and that The Source, ALLAH does not lead into calmness the plots of the deceivers."

53 "I don't cure my Nafs 'Self', surely the Nafs 'Person' is not a passerby with (dishonorable) evil things; except if my Rabb 'Sustainer' did not show Rahima

'Yielding' (mercy). Surely, my Rabb, is Ghafuwrn 'Forgiving' Most Rahiymun 'Yielding'."

54 And Al Maliku 'The Ruler', (Pharaoh Amenemhet III) said: "Bring him, (Yosafe) to Me. I will take him entirely to myself. So when he spoke to him, he said: "Surely you are today in our possession, a Amiynun 'Faithful' (Secured) Makiynun 'Place'."

55 He, (Yosafe) said: "Make me over the treasures of the planet Qi 'Earth.' Surely, I'm a 'Aliymun 'Knowing', acknowledged Hafiyzun 'Guardian'."

*Eloheem Establish A Place
For Yosafe- Yosafe's Brothers
Comes To Him -
Zaphenath-Paneah Asks About
His Brother Binyamin*

56 And also, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) established a place for Yosafe in the planet (Tiamat) 'Earth,' He, (Yosafe) gaining ground occupying from it whatever he pleases, We, (the Eloheem, Anunnaqi) bestow upon with our Rahmat 'Yielding' (mercy) whomever, We please and We don't lose the reward of the doers of that which is best."

57 And verily, the reward of the End, is Khayr 'Good' for those who have faith, and were trembling and fearing.

*Yosafe's Brothers Don't
Recognize Him - Yosafe
Provides His Brothers With
Provisions*

58 And Yosafe's brothers came and entered in upon him, and he knew them and they did not MunkiruwN 'Recognize' him.

59 And when he provided them (his brothers) with their provision, he (Yosafe) said: "Bring me a brother of yours from your father, (Ya'aqob/Yisrawale). Do you not see, surely I fulfilled the dry measure for grain and I'm best of the ones sent down."

60 So if you don't bring him, (Binyamiyn) to me, so I won't have for you a dry measure (of grain) in my possession, and you won't come near me."

61 They said: "We will entice, tempt him from his, (Binyamiyn's father - Ya'aqob) Surely, we shall do (it).

*Yosafe Schemes On
His Brothers - Yosafe
Brothers Beg His Father For
Benjamin To Come With
Them To Miterayim/Egypt*

62 And He, (Yosafe) said to Fityaanihi 'His Young Males': "Make, (place) their merchandise, goods in their saddle bags, that perhaps they'll know it when they return to their family. Perhaps they will

return (again)."

63 So when they returned to their father (Ya'aqob), they said: "Oh our father the dry measure (for grain) was detained from us; so send with us our brother, (Binyamiyn) uniting in a group, and surely we are Haafizuwn 'Guardians' for him."

64 He said: "How can I entrust upon him, (Binyamiyn) faithfully to you, like I, (Ya'aqob) entrusted upon his brother, (Yosafe) faithfully to you from before? So The Source, ALLAH is the best Haafizaa 'Guardian', and He (He Not We) is The Most Arhamu 'Merciful' of those who show Al Raahimiyn 'Yielding' (Mercy)."

65 And when they open their goods (belongings), they found their merchandise, (goods) returned to them. They said: "Oh our father, (Ya'aqob) what more can we seek (desire)? This is our merchandise returned to us, and we bring things we need to our family and we guard our brother, (Binyamiyn) and we increase the dry measure for grain of a camel. That is an easy, light dry measure for grain!"

*Ya'aqob Refuses To Send
Binyamiyn -
Ya'aqob/Yisrawale Commands
His Sons Where To Enter*

66 He, (Ya'aqob) said: "I will not send him, (Binyamiyn) with you,

until you bring me an agreement from The Source, ALLAH, that you bring him back to me, except that you protect, (watch) over him. So when they brought him, (Ya'aqob), their fulfillment of a promise (agreement), he said: "The Source, ALLAH is a Wakiylun 'Advocate' over what we say."

67 And he, (Ya'aqob) said: "Oh Baniyya 'My Sons', don't enter from one door, (gate); and you are to enter from separate doors, (gates) and I don't benefit of you all from ALLAH, The Source, in anything. Surely, the wisdom (decision) is (with none) except for him - The Source, ALLAH. Upon Him (Him Not Us), I entrusted, and upon Him so entrusts The Ones Who Entrust."

68 And when they entered from where their father commanded them, he had no benefit for them, from The Source, ALLAH from anything except a necessity - a (bodily) need in the Nafsi 'Spirit' of Ya'aqob. He, ordained it and surely, he is the possessor of knowledge for what We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) taught him, but most Enosites don't know - (they don't have any knowledge about this).

69 And when they entered upon Yosafe, his brother retreated to him. He said: "Surely I am your brother, (Binyamiyn). So don't be miserable for what they were

doing."

*Yosafe Places Drinking
Cup In His Brother,
Binyamiyn's Saddle Bag*

70 So when he, (Yosafe) provided them - (his two brothers) with their (journey's) provisions, he placed the drinking cup in his brother (Benjamin's) saddle bag. Then a Mu-adhinu 'Caller' Adhana 'Called' out: "Oh Caravan! Surely you, Yosafe/Zaphenath-Paneah brothers are thieves."

71 They said and faced towards them: "What is it you have lost?"

72 "They said: "Shall we lose a cubic measure of varying magnitude of Al Maliki 'The Ruler'? For who comes with it, to him a Ba'iyir 'Full Grown Camel's' cargo? And I, (Yosafe) am a (guaranteed) claimer (for it)."

73 They said, "By way of The Source, ALLAH, you knew we did not come to Nufsida 'Cause Mischief' in the planet Earth, and we were not thieves."

74 They said: "So what's its punishment, if you were liars?"

75 They said: "Its punishment, is he who will be found, the drinking cup in his saddlebag, so that is its punishment. Also we punish the ones in a state of unjustness."

76 So then he, (Yosafe) began

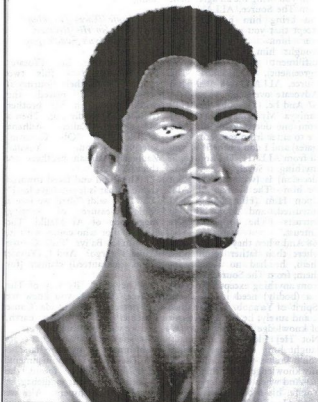


Figure 97
Rewben (Reuben), Son Of Jacob And Leah

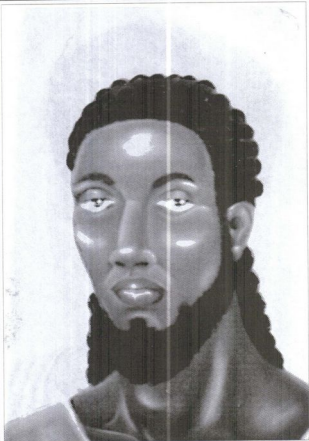


Figure 98

Binyamiyn (Benjamin), Son Of Jacob And Rachel

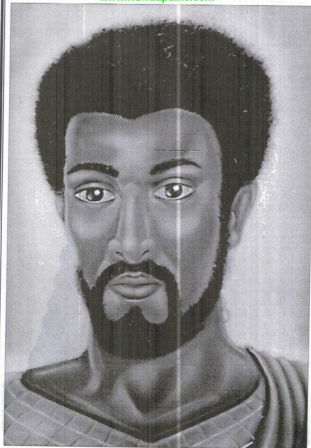


Figure 99

Yissaskar (Yissawkawr/Issachar), Son Of Jacob And Leah

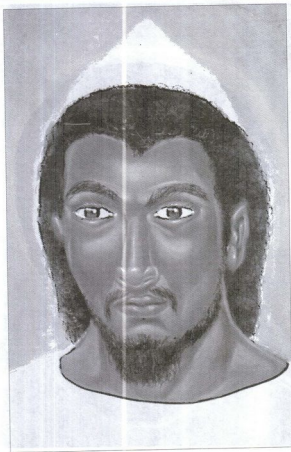


Figure 100

Dawn (Dan), Son Of Jacob And Bilhah

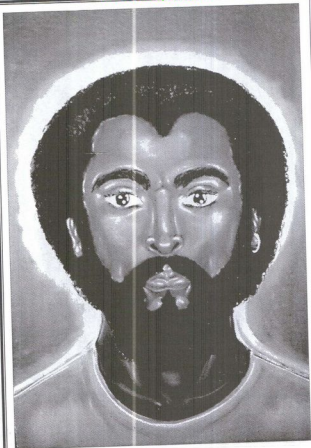


Figure 101
Naftaliy (Naftawlee/Naphtali), Son Of Jacob And Zilpha

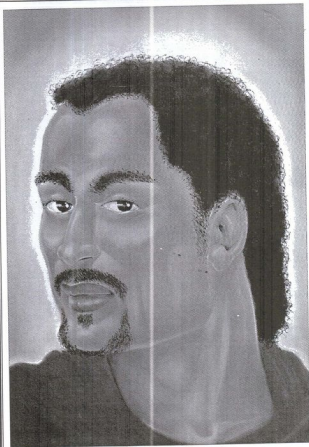


Figure 102

Gawd (Gad), Son Of Jacob And Zilpha

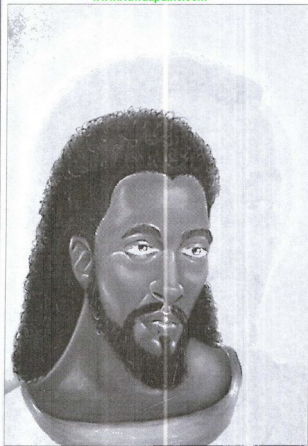


Figure 103
Awshare (Asher), Son Of Jacob And Zilpha

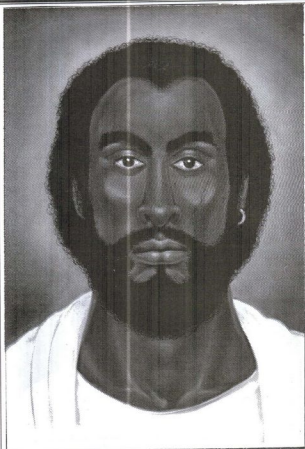


Figure 104
Yehuwdah (Judah), Son Of Jacob And Leah

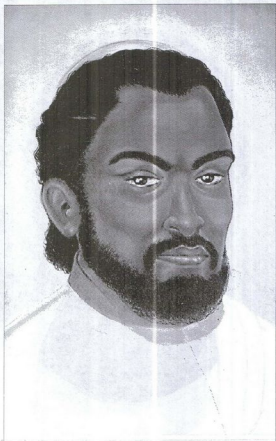


Figure 105
Shim'one (Simeon), Son Of Jacob And Leah

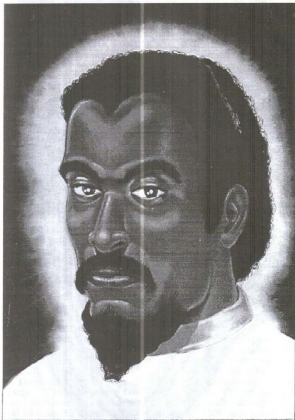


Figure 106
Lewiy (Levi), Son Of Jacob And Leah

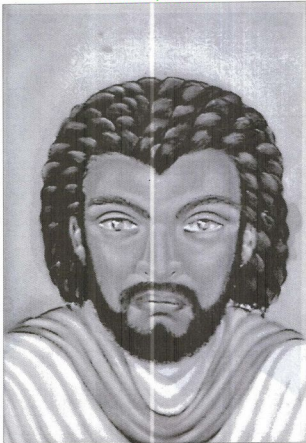


Figure 107

Zebuwluwn (Zebulon), Son Of Jacob And Leah

with their vessels, (containers) before the vessel of his brother, (Binyamiyn). Then He, (Yosafe) brought it, the drinking cup out from the vessel of his brother; also we toiled for labored for Yosafe. He does not have to take his brother, in sentence of Al Maliki 'The Ruler' (Pharaoh Amnemhat III), except that is that which, The Source, ALLAH pleases. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Narfa-u 'Exalt, Raise' degrees whomever We (Eloheem Anunnaqi) please, and above all, Dhiy 'Possessor' of knowing knowledge.

Yosafe Reveals Himself To His Brothers - His Brothers Lie About Binyamiyn Stealing - Ya'aqob Tells His Sons Go Out. And Make Inquiries About Yosafe And Binyamiyn

77 They said: "If he steals; so a brother just stole for him from before. So Yosafe kept secret in himself, and did not (disclose), reveal it to them. He, Zaphenath-Paneah said: "You are in an evil place and ALLAH knows of that which you describe."

78 They said: "Oh you, Al 'Aziyzu 'The Mighty One! Surely, for him is a father, an old elder (over 50 years). So take one of us in his place. Surely we see you from amongst the doers of that which is best."

79 He said, "Forbid us, The Source, ALLAH that we take except from whom, we found having our property (goods). Surely, we then, are the ones who are in a state of unjustness."

80 So when they were hopeless from him, they were liberated safely. Their oldest (Reuwben), the biggest one, said: "Have not you've known surely, that your father, (Ya'aqob) just took upon you, a fulfillment of a promise (agreement) from ALLAH, The Source, and from before you had not forsaken in Yosafe? So I, shall not depart this (part of the) Earth, until my father permits me; or The Source, ALLAH uses wisdom (upon) me, and He (He Not We) is The Best of Al Hakiymiyn 'The Wise Ones'."

81 You return to your Father, (Ya'aqob). So they said: "Oh our father, surely your son, (Binyamiyn) stole and we did not watch it; except by what we know, and we are not Haafiziyn 'Guardians' of Ghayb 'The Unseen' (the Hidden)."

82 And ask the village which we were in, and the caravan which we advanced in it and surely, we are the Truthful Ones - 'Al Saadiqeen/Zodoqites.'

83 He, (Ya'aqob) said: "However, seduced yourselves, a Amraan 'Command, (Matter)', so Sabrun 'Patience' is Jamiylun 'Beautiful'. Maybe The Source, ALLAH might come to me with

them all together. Surely He (He Not We) is Al 'Aliymu 'The Knower', Al Hakiymu 'The Wise'."

84 And he turned away from them and he said: "Oh my sorrows on Yosafe," and his, (Ya'aqob's) eyes became Abyad-dat 'Whitened' from grief, so he was full with anger.

85 They said: "By way of The Source, ALLAH you will not cease to remember Yosafe until you will be inflamed, or you will be from those who are destroyed."

86 He, (Ya'aqob) said: "However, I complain my sorrow and my sadness to The Source, ALLAH and I know from The Source, ALLAH that which you do not know."

87 Oh my Bance 'Sons' you go, so you can make inquiries about Yosafe and his brother, (Binyamiyn); and don't you, become hopeless from the Ruwh 'Soul' of ALLAH. Surely, He is not hopeless from the Ruwh 'Soul' of The Source, ALLAH except for the kindred who are Al Kaafiruw'n 'The Ones Who Conceal What They Know To Be The Facts'."

88 So when they, (Yosafe's brothers) entered upon him, they said: "Oh you, Al 'Aziyzu 'The Mighty' we were touched by misfortune and our family harmed, and we came with a little merchandise. So you,

fulfill for us the dry measure (for grain) and give alms 'charity' onto us. Surely, The Source, ALLAH rewards the ones who give alms - charity."

89 He said: "Did you learn what you've done with Yosafe and his brother (Binyamiyn) when you all are ignorant."

*Yosafe Meets His Brothers -
Yosafe Says 'Yahuwa Is
Forgiving. For What His
Brothers Did To Him' - He
Tells Them To Bring The
Whole Family Into Egypt -
Ya'aqob Told The Good News
Of Yosafe And Binyamiyn,
And Becomes A Seer Again*

90 They said: "Surely are you, you, Yosafe?" He said: "I'm Yosafe and this is my brother, (Binyamiyn). The Source, ALLAH just bestowed blessings upon us, surely he who trembles and fears, and is Yasbir 'Patient'; so surely, The Source, ALLAH does not loose (forfeit) the reward of the doers of that which is best."

91 They said: "By way of ALLAH, certainly, The Source, ALLAH preferred you, (Yosafe) upon us, and that we were ones who committed disagreeable acts."

92 He, (Yosafe) said: "Today no blame be upon you. The Source, ALLAH Yaghfiru 'Forgives' you, and He (He Not We) is The

Most Arhamu 'Yielding' (Merciful) of Al Raahimiyn 'The Ones Who Show Yielding Mercy'.

93 "Go with this shirt of mine, so lay it on my father's, (Yisrawale's) face, he'll become a Basiyraan 'Seer' and you come to me, (Yosafe) with your family all together."

94 And when the caravan separated (departed), his father (Ya'aqob) said: "Surely I, I must find the breath of Yosafe; that if you don't call me a liar - disapprove of me."

95 They said: "By way of The Source, ALLAH, surely you are in your old astraying, (into error)."

96 So when the one who brings good news came, he laid it on his, (Ya'aqob's) face, so he regain sight - became a Basiyraan 'Seer'. He, (Ya'aqob) said: "Have I not said to you, surely I know from The Source, ALLAH what you do not know?"

97 They said: "Oh Our father, (Ya'aqob)! Ask forgiveness for us, our disagreeable acts, surely we were ones who committed disagreeable acts."

98 He, (Ya'aqob) said: "I shall ask forgiveness for you," from my Rabb, 'Master'. Surely He (He Not We), is Al Ghafuwru 'The Forgiving', Al Rahiym 'The Most Yielding'.

Parents On The Throne - Allah Taught Yosafe The Interpretation Of The Hadiths

99 So when they, (brothers of Yosafe and their parents) entered on Yosafe, his parents took refuge unto him; and he, (Yosafe) said: "You enter Egypt/Mitzrayim, having faith - (feeling secure) if ALLAH pleases."

100 And He, Yosafe raised 'exalted' his parents on Al Arshi 'The Throne', and they fell down to him Sujjadaan 'Prostrating', and he said: "Oh my father this is the interpretation of my vision from before. My Sustainer, who is Rabb, just made it become a fact, and He (He Not We), just made me Ahsana 'Better', since He took me out from the prison; and He came with you from the nomads, - (the Ishmaelites) from after that, Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian' incited evil between me and my brothers. Surely, my Rabb, is Subtle to whomever He pleases. Surely He, is Al 'Aliymu 'The Knower', Al Hakiym 'The Wise'."

101 My Rabb, you have just given me from Al Mulki 'The Rulership' and taught me from the interpretation of the Ahaadiyth 'Hadith, Tales.' Splitter of the atoms of Al Samaawaati 'The Skies' and (Qi/Tiamat) the planet Earth. You are my Wali 'Nearest

Zaphenath-Paneah Exalts His

Friend' in the physical world and the End. Take my soul (make me pass away) as Muslimaan 'One Who Is Of Peace' - (A Muslim), and unite me with Al Saalihiyn 'The Perfectionists'."

102 This is from Anbaa-i 'The News, Announcements (As A Newsbearer)' (relating to) Al Gayb 'The Unseen', which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) (reveal by way of) inspiration to you, (Muhammad) and you were not in their presence, when they resolved upon their affair, and they were devising plans."

*Most Enosites Don't Have
Faith - Eloheem Tell
Muhammad, That Indeed,
Inspiration Is Sent To Mortal
Men- Indeed In Their Stories,
There Was A Warning Lesson
For Men Of Old And Wisdom,
That Perhaps Enosites Might
Have Faith*

103 And though you, try much, most the Naas/Enosites will not have faith."

104 And you didn't ask them about him, from a reward, except that he is a remembrance - (a reminder), for the Known World."

105 And how many signs were in the Skies and the planet Earth, which pass by, and they turn away from it."

106 And most of them did not

have faith by way of The Source, ALLAH except, and they are Al Mushrikuwn 'Those Who Associate Partner (with other deities)'.

107 So they had faith that an overwhelming event will come to them from an aching pain of ALLAH, or the hour of a surprising event will come and they do not perceive."

108 Tell Them This: "This is my path, I call, (pray) to The Source, ALLAH on having sight, I and who follow me. And glory be to The Source, ALLAH and I am not from Al Mushrikiyn 'Those Who Associate partners (with other deities)'."

109 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send from before you, except Rijaaal 'Mortal Men' whom we (sent) Inspiration to them, from family of the villages. So they did not move about in the planet (Qi), 'Earth,' so they can see how the punishment (is) of those from before them, and the abode of the End is good for those who tremble and fear. So don't you comprehend?"

110 Until when the Rusul 'Ones Sent' became hopeless and they thought surely they just lied; Our ([Our Not My] Eloheems') aid came to them; so We ([we not he] Eloheem, Anunnaqi) saved whomever We please, and Our misery does not avert from the kindred who are the guilty

ones."

111 Indeed, in their stories there was a warning lesson for Uwli 'The First Ones' (who passes through) Al Albaabi 'The Door' (Of The Mystic Order Of Zodoq). It was not a Hadiyth 'Tale' made up; but it was a confirmation - (something you can put trust into), which is between his hands and a complete detail of all things and calmness and mercy for a kindred so they may be faithful."

Sudika Allahu El Agim

Chapter Fifty-Four

Revealed In The Year 619-621 A.D.; Verses 1, 3,

7 Were Revealed Medina

*Al Hijar
(The Rock)*

*Original Order Chapter 54:
Wrong Order Chapter 15*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Kaafiriyn Wish They
Were Muslims - Quraysh
Called Muhammad Majnuwn
- Allah And Eloheem Are
Guardians Of The Qur'aan*

54 ()

Alif: Adam,
also known as Zakar, Laam:
Shadow Hour of Power, Ra:

Ruwah: The Soul. These are signs of the scripture and a clear Qur'aan.'

2) Perhaps those who conceal that which they know to be the facts, wish if it is possible; they were Peaceful Ones 'Muslims.'

3) Let them eat and enjoy the temporary pleasures, and let them amuse in the hope; then they will know.

4) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not destroy from any village and for her, is (nothing) except a known scripture.

5) No nation surpasses from its appointed term and they can't delay it.

6) And they, (tribe of Quraysh) said: "Oh you whom was sent down upon him, (the newsbearer Muhammad), the Remembrance - (the Qur'aan), surely you, (Muhammad) are possessed by a (Malevolent Being, Reptilian, A) Jinn - crazy 'Majnuwn'.

7) Why didn't you, (Muhammad) bring us, with Al Malaa-ikat 'The Angelic Beings - Eloheem, Anunnaqi' if you were from the Saadiqueen/Zodoqites 'Truthful Ones'?"

8) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) don't send down the messengers - (Eloheem) except by fact (beyond any doubt) and they will not be Munzariyn 'Looked Upon'.

9) Surely We, ([We Not I] Eloheem), sent down Al Dhikra

'The Reminder', and surely We (Eloheem Anunnaqi) are for it, its Haafizuwun 'Guardians'. (nobody can alter his words, it is protected by The Source and 19 Eloheem.)

10) And indeed We, ([We Not I] Anunnaqi) sent from before you, (Muhammad) in Shay-i 'Sects' of Al Awwaliyn 'The Ancient Ones' (Hebrews, Israelites, Nazarites, Judahites, Assyrians, Babylonians, Edomites, Midianites, Ishmaelites).

11) And a Rasuwl 'One Sent' did not come to them, except that they used to ridicule him.

12) We, ([We Not I] Eloheem) also made it pass through the hearts of Al Mujrimiyn 'The Guilty Ones'.

13) They don't have faith by way of it, and certainly the Tradition 'Sunnah' of Al Awwaliyn 'the Ancient Ones' (Hebrew Suhuf has passed).

14) And if We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) opened upon them a Baabaan 'Door' from Al Samaa-i 'The Heavenly Skies' (Vortex), they would still Ya-rujuwn 'Elevate In It'.

15) They Say: "Surely our seeing is as if we are Sukkirat 'Drunk'; but we are a kindred of Muhuwruwn 'Magical, Enchanted' (Enosites)."

Anunnaqi Made Zodiac In The Skies - They Guard The

Qur'aan From Every Cursed Shaytaan - Eloheem Made For You Livelihoods In The Planet Qi

16) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made a Buruwjaan 'Constellation, Zodiac' in Al Samaa-i 'The Heavenly Skies' (A Crystal City, A Mother Ship); and We, (Eloheem) have made it Zayana 'Beautiful' (to look at, crystal), for those who look.

17) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) guard it, (the Qur'aan) from every cursed (Malevolent, Cherubeem Being, Jinn), Shaytaan, (the Reptilian).

18) Except when (a Satan gets close and wished to) steal by listening, so there follows him Mubiyn 'Clear' flames of fire.

19) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) stretched it (split tiamat into parts, the planet Qi 'Earth') and We threw in it firm (one half solid, and the lower half into the asteroid belt); and We, (the Eloheem) cause to grow in it, the planet Qi from all things, measured weights evenly and equally balanced.

20) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made for you livelihoods in it, (the planet Tiamat/Qi); and you are not for Him (Him Not Us), Raaziqiyn 'Providers'.

21) And there is not from a thing, except its treasures in

Our, ([Our Not My] Eloheems' possession; and We, ([We Not I] Anuunaqi) do not send it down (crafts), except by a known way of Qadarin 'Power' (a unknown energy-source).

22) And We, ([We Not He] Eloheem) send Al Riyh 'The Wind' (a craft) to Waaqiha 'Fertilize'; then We sent down from the sky water; and We, (Anunnaqi) made you drink of it, and it is not you who store the water.

23) And Surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) give life and We give death (cause you to pass away); and We, (the Anuunaqi, Eloheem) are Al Waarithuwn 'The Inheritors'.

24) And indeed We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) know the ones who desire to go forward from you (return to Rizq); and We, (Eloheem) certainly know the ones who desire to delay (get left behind).

25) And Surely your Rabb, gathers them (144,000). Surely, He (He Not We), is Hakiymun 'Wise', 'Aliymun 'Knowing'.

Creation Of Enosites By The Eloheem, Anunnaqi - And The Jaann

26) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Khalaq 'Created' the Enosites from Salsaalin 'Mud' that is from Hamaain 'Hamite, Black

Substance' and Masnuwn 'Molded Him', (into shape by cloning)."

27) And Jaan, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Khalaqnaahu 'Created Him' from before (the Recreation Period) from Fire - (the Sun Cycle) 'Al Samoom ' The Poisonous' (Samael, a title also called Haylal, son of Shakhar and Mylitta).

28) And when your Rabb, 'Master', said to the Messengers, (Eloheem, Anunnaqi): "Surely I, (Enqi) am about to Khaaliquun 'Create' a Bashar 'Mortal Being In Skin,' from Hamaain 'Hamite, Black Substance', Masnuwn 'Molded' (into shape by cloning)."

Eloheem Commanded To Prostrate Before Zakar

29) "So when I, (A Yahuwa of the Eloheem) Saw-waytuhu 'Made Him (Adam' a perfect Mortal) and I Nafakha 'Blew' of My Ruwh 'Soul' into him (he was part Eloheem); so you (Eloheem) are to fall down Saajidiyn 'Prostrating' (in respect to him)."

30) So all Al Malaa'ikat 'The Angelic Messengers' (Eloheem, Anunnaqi) Sajada 'Prostrated' together.

31) "Except for Ibliys 'The Rebellious (Eloheem)' he refused to be of Al Saajidiyn 'The

Prostrators'."

32) He (A Yahweh Enqi) said: "O Ibliys! What is with you, that you were not with them that Al Saajidiyn 'Prostrated'?"

33) He (Ibliys) said: "I am not one to Asjuda 'Prostrate' for a Bashar 'Mortal In Skin'; Khalaqtahu 'You Created Him' of Salsaalin 'Dry Clay' of Hamaain 'Hamite, Black Mud' Masnuwn 'Formed Into A Shape (Cloned)'."

34) He, (ANU) said: "So Akhruj 'Get Out' Minhaa 'Of It', (the Enclosed Garden of Delight), you are to be Rajiym 'Rejected'."

*Samael Is Cursed - Samael
Dows To Make Disagreeable
Acts Look Good To The
Enosites On Earth - Samael/
Al Shaytaan Doesn't Have Any
Authority Over Allah's Slaves*

35) And surely on you, is Al La'nat 'The Curse Physically', to Yawm Al Diyn 'The Day Of Judgment (Decision)'.

36) He, (Samael, Nakhaash) said: "Oh Rabb, look upon me, (give me a chance) until the day they are to be Yub-athuwn 'Raised (Back To Life)'."

37) He, (The Source) said: "You, (Ibliys) are surely of those to be looked upon."

38) Till the period of time made known (6,000 years).

39) "He (Samael, Nakhash, Al Khannaas, the Whisperer) said:

"O my Rabb 'Master' because You have left me to go astray, verily I, will make Disagreeable Acts look Zayyina 'Fair-Seeming' to them in the planet (Qi) Earth, and I (Nakhash, 'The Whisperer') will cause them to go astray, (into error): all of them."

40) Except your slaves, Al Mukhlasiyna 'The Purified Ones' (Children Of Nuwaubu).

41) He, (The Source) said: "This is a straight path for me."

42) Surely, My (My Not Our) slaves, you have no Sultaanun 'Authoritive Power' over them, except for (him who follows you) - those who follow (Devils, Cherubeems, Jinns, Malevolent Beings of), the Astray Ones.

43) And surely Jahannam 'Hell' is certainly promised to them; every one of them.

*Jahannam Has Seven Doors -
Jannaat Is For The Ones
Who Tremble At The Mention
Of Allah- Eloheem, Anunnagi
Bring Good News To Abraham*

44) It, Jahannam 'Hell' has Sab-atu 'Seven' doors, for each door is a separate part (it's a physical place).

45) Surely those who tremble at the mention will be in Jannaatin 'Gardens,' and water sources - (springs).

46) You enter it with Salaamin 'Peace', Aaminiyn 'Faithfully' (secured).

47) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) violently pulled out from the enmity in their chests. They will be brothers on Sururin 'Beds' facing each other.

48) And Nasabun 'Fatigue' will not touch them in it, and they will not be those who are driven out (of the Enclosed Gardens of Delight).

49) Inform, Oh (Muhammad) My (My Not Our) slaves, "Surely I (I Not We) Am Al Ghafuwru 'The Forgiver', Al Rahiyumu 'The Most Yielding'."

50) And that My (My Not Our) pain, it's the aching pain.

51) And inform them about Abrawhawm's Dayfi 'Guests' (Anunnaqi, Angelic Beings).

52) When they entered upon him, (Abrawhawm), they said: Saalamaan "Peace." He, (Abrawhawm) said: "Surely we (me and my wife Sarah) are afraid of you (Angelic Beings)."

53) They (Al Khidr, Miykaal/Murdoq and the Eloheem, Anunnaqi Uriel/Kalkael, And The Eloheem Raphael) said: "Don't be worried, surely We, ([We Not He] Anunnaqi) bring you Bashir '(Good) News' of a Gulaamin 'Young Lad', who will be 'Aliymin 'Learnt' (Yitschaq)."

54) He, (Abrawhawm) said: "Do you bring Bashar '(Good) News' to me, on that Al Kibaru 'The Old Age' has touched upon me?

So what good news do you bring?"

55) They said: "We, ([We Not I] Murdoq/Miykaal, And Rudwaan/Kalkael And Raphael) bring good news to you, (Abrawhawm) by way of the fact (beyond doubt), so don't be from Al Qaanitiyn 'The Despairing Ones'."

56) He said, "And whoever is despaired, from the Rahmat 'Yielding' (mercy) of his Rabb, 'Sustainer', except Al Da-aal-luwn 'Those Who Have Gone Astray, Into Error'."

57) He, (Abrawhawm) said: "So what's your business, Oh Al Mursaluwn 'Ones Sent'?"

58) They said: "Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have been sent to a guilty kindred."

Descendants Of Lowt Will Be Saved, All Together Except Sabriyya

59) Except the descendants of Lowt, surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will save them, all together.

60) Except Amra-aatahu 'His (Lowt's) Woman', (Sabriyya); We, ([We Not He] Anunnaqi) are certain that she is of those who were to be left behind - (a pillar of salt, Paralyzed).

61) So when the Ones Sent, came to the descendants of Lowt.

62) He said: "Surely, you are an

unknown kindred."

63) They said: "In Fact, We (We Not I) came to you, of that which they were Yamtaruwn 'Suspecting'.

*These Eloheem Are Sodoqites -
LuwI Warned To Travel Out
Of The City*

64) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) bring to you the fact, (beyond doubt); and surely We, are the Sodoqites 'Truthful Ones' - Al Saadiquwn/Zodoqites."

65) So move about with your family in a part from the Shadow Hour Period; and follow their backs and don't anyone from you turn back, and go pass through where you are commanded.

66) And We, ([We Not I] Eloheem) ordained to him, that is the command, that the extreme uttermost part of these will be cut off in the Early Day Time Hour.

*LuwI Asks The Enosites Don't
Expose Him To Shame Infront
Of His Guests The Eloheem-
He Offers His Daughters To
Them*

67) And the Family of the City came, rejoicing at the good news.

68) He, (LuwI) said: "Surely these are my guests." So don't expose me to disgrace and

shame."

69) "And tremble at the mentioning of The Source, ALLAH, and don't disgrace me."

70) They said: "Have we, (Sodomites) not hindered you from the Known World?"

71) He, (LuwI) said: "These are my daughters, (Lubna and Jalaa'a) if you are doers (if you want to do something)."

72) By by your age! They were Sakratihim 'Drunk' Ya-mahuwn 'Staggering On'.

*Eloheem Destroy Sodom With
Stones Of Sijjyl*

73) So the loud cry overtook them at the appearance of Mushriqiyn 'The Rising In The East'.

74) So We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made it (Sodom) upside down and rained down on them Hijaaratin 'Stones' from 'Sijjiyl' (Pellets, Which Are Naru 'Stones That Rise' from Hell's fire, on which the disagreeable acts of a person are registered).

75) And surely in that, are signs for those of you who have the ability to perceive things by their outward signs.

76) And surely it will be an everlasting path.

77) Surely, in that is a sign for the Faithful Ones.

Midianites Were Unjust - And

*The Canaanites Rejects The
Rusul And The Eloheems' Signs*

78) And if the Companions, Inhabitants of Al Aykah - (the Midianites) were ones in a state of unjustness.

79) So We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) took vengeance on them; and surely both of them will be Mubiyn 'Clearly' in front.

80) And indeed the companions of Al Hijri 'The Rock - Cave Dwellers', (the Sons of Canaan) rejected the Rusul 'Ones Sent'.

81) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave them, (the Canaanites) Our (Our Not My) signs, but all they would do, is turn away from them.

82) And they, (Sons of Canaan, the Cursed Seed) Yanhituwna 'Carved' Buyuwtaan 'Homes' in their Jibaa 'Mountains' as a Aaminiyn 'Security' (faithful place to live in).

83) So then one Early Daytime Hour, Al Sayhatu 'The Disaster' struck them.

84) So their wealth will not profit them of that which they had earned.

85) And We, ([We Not I] The Eloheem, Anunnaqi) did not Khalaq 'Create' Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet (Qi) 'Earth' and that which is between them, except as a fact (beyond doubt); and surely

Al Saa-ata 'The Hour' is coming. So pardon them with Al Jamiyla 'The Beautiful' pardoning.

86) Surely your Rabb, is Al Khalaagu 'The Creator', Al 'Aliymu 'The Knower'.

*Muhammad Given Al Hamd
Twice By Nusqu -
Muhammad Told To Profess
Openly Of That Which He
Knows - And Glorify His
Rabb With Gratitude*

87) And indeed We, ([We Not I] Eloheem, Gabriel/Nusqu) have given you, (Muhammad) seven of the most repeated verses, twice - (Suwrat Al Faatiha was revealed twice to Muhammad, once in Mecca, as Al Hamd and again in Medina as Al Faatiha); and then the rest of Al 'Aziym 'The Supreme' (Reading), The Qur'aan.

88) Don't stretch your eyes to that which We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) bestowed (provided) them, Azwajaan 'Mates' from them; and don't grieve upon them and lower your wing for the Faithful Ones.

89) And tell them: "Surely I, I am the Mubiyn 'Clear' warner."

90) As that which We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) sent down on Al Muqtasimiyn 'The Ones Who Divide'.

91) Those who made the Qur'aan into Idiyna 'Parts'.

92) So by way of your Rabb,

We, ([We Not I] Eloheem) will ask them, all together.

93) Of that which they were doing.

94) So profess openly of that which you are commanded, and turn away from Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners (With Other Deities)'.

95) Surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) are sufficient for you from the ones who ridicule.

96) Those who make another deity, ILAAHAAN (ALLAHS) 'Sources' with The Source, ALLAH. So they will know.

97) And indeed We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) know that your chest is Yadiqu 'Narrow' of that which they are saying.

98) So glorify your Rabb 'Sustainer' by way of Hamdi 'Praise', and be from Al Saajidiyn 'The Prostrating Ones'.

99) And you are to slave for your Rabb, 'Sustainer,' until Al Yaqiyn 'The Inevitable' (death) comes to you.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Fifty-Five

Revealed In The Year 621 A.D.; Verses 20, 23,

91, 93, 114, 141, 151-153 Were Revealed In

Medina

Al Anaam

(The Cattle)

*Original Order Chapter 55;
Wrong Order Chapter 6*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*All Gratitude Is Due To
The Source, Who Khalaq
You - It Is He Who Is In
The Skies*

55 The gratitude is for Him (Him Not Us), who Khalaq 'Created' the Skies, (Firmaments) and the planet Earth, (Tiamat) and made Al Zulumaat 'the Darkness' and Al Nuwr 'The Light'. Then, those who conceal the facts about their Rabb 'Master' are deviants.

2 It is He (He Not We), who Khalaqakum 'Created You' all from Tiyn 'Clay'. Then He, (Enqi) decreed a term; a fixed term in his possession; then you all are still 'Tamtaruwn 'Doubting'?

3 And it is He (He Not We), The Source, ALLAH who is in Al Samaawaati 'The Skies', and He is in Al Ard 'The planet (Tiamat), Earth'; He knows that you keep Sirrakum 'Secret', and what you Jahrakum 'Reveal', and He, (ANU) knows all that which you have Taksubuwn 'Earned'.

*Meccans Turned Away From
The Qur'aan.*

*And Mocked The Israelite's
Portion Of Scripture*

4 And no signs came to them, (the Meccans, Desert Arabs), except the sign - (the Qur'aan), of their Rabb 'Sustainer'; but all they did was to turn away from it. (They turned away from the law).

5 So, indeed they, (the Desert Arabs), denied the facts (beyond a shadow of a doubt; the scriptures and tablets), when it came to them. So there shall come unto them Anbaauw 'The Good News' of what they used to make a Yastahziuwn 'Mockery' about. (When you came to them with the clear proof, all the scriptures and the Rites of Abrawhawm; they make a mockery about the Israelites' portion of the scripture, and exalt the Ishmaelites' portion).

Many Generations Were Destroyed By The Eloheem, Anunnaqi

6 Don't they, (the Meccans - the Desert Arabs), see how many a generation did We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), had destroyed before them; whom We had Makanaahum 'Established' in the planet Tiamat (great empires), which We, (Eloheem, Anunnaqi) have destroyed, which We have not yet Numakkin 'Established' for you all; and We, (the Eloheem, Anunnaqi) sent the Rain Clouds, pouring rain upon them in

abundance, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) made Al Anhaar 'The Rivers', to flow from beneath them; so We, (Eloheem, Anunnaqi) destroyed them on account of Dhunuwbihim 'Their Faults'. After them We, (the Eloheem, Anunnaqi) Anshaanaa 'Raised Up' another Qarnaan 'Generation'.

7 And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), had sent down unto you, (Muhammad) something written on Qirtaasin 'Paper', so that they would be able to touch it with their own hands; they, those who conceal what they know to be the facts, would indeed have said, "That this is nothing, but Mubiyn 'Clear' Sihrun 'Magic'."

Eloheem, Anunnaqi As Mortal Beings

8 And they, (the Meccans) said, to The Peaceful Ones, "Muslims": "Why has not a messenger, an 'Eloheem, Anunnaqi', been sent down to him, (Muhammad)?" And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), did send down a messenger, the matter would certainly have been decided once and for all; but then, they would not have been Yanzaruwn 'Looked Upon' (until the Last Day).

9 And if We, ([We Not I]

Eloheem, Anunnaqi) made him a Messenger (an Eloheem, Anunnaqi, to personify). We would have made him a Rajulan 'Mortal Enosite'; (Eloheems comes as Mortal Enosites); and we confuse them (whenever, an Eloheem Anunnaqi is in Human form); what they can make confusing. (They say, "Eloheems, Anunnaqis in Human form is confusing to them)."

10 And indeed, the ones sent before you, (Muhammad) were Astuhziyaa 'Mocked At'; but the very things they, the Evil Ones who opposed the facts mocked at, surrounded those who were mocking amongst them. They got caught up in their own mockery.

11 Tell them this, (Muhammad): "You all are to move about in the planet Ard, (Tiamat) 'Earth,' then see what was the punishment for the rejecters."

A Yielding Mercy From The Source - If The Source Touches You With An Affliction, No One Can Relieve It Except Him

12 (Yashu'a) said: "To whom belongs what is in Al Samaawaati 'The Skies', and the planet Ard (Tiamat)?" Say: "To ALLAH!" He (He Not We), The Source, ALLAH has prescribed upon Nafsihi 'His Ownself', Al

Rahmata 'The Yielding' (mercy); and most certainly, He will gather all of you, on the Day of Resurrection. There is no Rayba 'Doubt' about it. Those who have lost Anfusahum 'Their Spirits/Selves', so they will not have faith.

13 And for Him, is all that Sakana 'Dwells' in Al Layl 'The Shadow Hour', and Al Nahaar 'The Daytime'; and He (He Not We), is Al Samiy-u 'The All Hearing', Al 'Aliymu 'The All Knowing'."

14 Tell them, this: "Shall I take a Waliyyaun 'Near Friend' besides The Source, ALLAH The Faatir 'Splitter Of The Atoms' Of Al Samaawaati 'The Skies', and Al Ard 'The Planet Earth', And He (He Not We), is The Yut-Amu 'Feeder' (of all creatures, and He is not fed." Tell them this: "Surely I, (Muhammad), have been commanded to be of the Awwala 'First' who Aslama 'Surrender In Peace', and I am not to be from amongst Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners (with other deities)."

15 Tell them this, (Muhammad): "Surely, I fear, if I disobey My Rabb 'Sustainer', the pain, (chastisement) of the Aziymyn 'Supreme' day.

16 Whomever, it is Yusrafu 'Averted' on that day, the punishment of the Last Day; He indeed has Rahimahu 'Yielding

(mercy)' on him, and that is Al Mubiyn 'The Clear' Al Fawz 'Achievement'.

17 And if, The Source, ALLAH is to touch you with an affliction, no one can relieve it except Him (Him Not Us); and if He (He Not We), touches you, (Muhammad) with any Khayr 'Good'; so know that He, has the Qadirun 'Power' over all things.

18 And He (He Not We), is Al Qaahiru 'The Dominant' over all of His slaves; and He, is Al Hakiymu 'The Wise', Al Khabiyr 'The Aware'.

The Qur'aan Inspired To Muhammad - There Is Only One El - Jews Know Muhammad As Well As Their Own Son

19 Tell them, (the Meccans who ask you, 'Are you a real newsbearer?') Tell them this, (Muhammad): "Which things Shahaadatin 'Watched' are the Akbaru 'Biggest'?" Tell them this: "The Source, ALLAH is Shadiydun 'Forceful' between me and between you all; and this Qur'aan, has been inspired 'Wahy/Weh' to me, to warn you all by using it, and whomsoever it reaches, can you watch that there are other AALIHATIN (ALLAHS) 'Sources' (Eloheem, Anunnaqi) with ALLAH?" Tell them this: "I do not Ashhadu 'Watch' (That there is another

Source)!" Tell them this: "Surely, He, is The Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source', and surely I Am Bariyaa-u 'Innocent' of Tashrikuwn 'Associating Partners' (with other deities)."

20 Those whom We [We Not I]. (The Eloheem, Anunnaqi) have given, (so called Jews of Muhammad's) time the scripture; they know him, (Muhammad) as well as they Ya-rifuwna 'Know' their own Abnaa 'Sons', those who have lost Anfusahum 'Their Selves, Spirits'; so they will not have faith.

Who Is More Wrong Than He Who Fabricates A Lie About The Source? - Disputers Like Abu Sufyan, And Abu Jahl Come To Dispute With You, Muhammad, Tell Them That This Is Nothing But Stories Of The Aw'waaliyn

21 And who is more wrong, than he who Aftara 'Fabricates A Lie' about ALLAH or denies His (His Not Our) signs? Surely, Al Zaalimuwn 'The Unjust Ones' will not be prosperous.

22 And on the day, when We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) will assemble all of them together - (the Evil Ones, the Reptilians, and those who follow them); then We, (Eloheem,

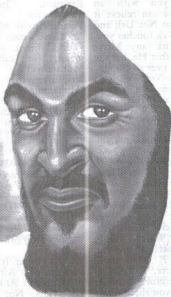


Figure 108
Abu Sufyaan

Anunnaqi) will say to those who Ashrakuw 'Associate Partners (with other deities)' "Where are Shurakaa-uwkum 'Your Associates (other deities)', whom you Tazumuwn 'Asserted'?"

23 Then, they would have no excuse that they will say: "By The Source, ALLAH our Rabb 'Sustainer'; we were not Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners (With Other Deities)'.

24 Look at how they lie over themselves; and that which they invented has strayed away from them.

25 And of them, (Abu Sufyan, Al Waliyd, And Al Nazar, Utba And Abu Jahl), are those who listen to you, (Muhammad); and We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) have made a Aakinnatan 'Covering' over their hearts, so that they would not overstand it; and in their ears is a deafness, and even if they saw every one of the signs, they still would not have faith in it, to the point that when they come to you, (Muhammad) to Yujaadiluwnaka 'Dispute With You', those who conceal what they know to be the facts; say: "That this is nothing else, but stories of the Al Awwaliyn, (The Dinneer), 'First' (The Ancient Ones, 24 Elders)."

26 And they forbid others from it - (the Rites of Abrawhawm, and the Qur'aan); and they go

away from it, (the Qur'aan) and they only destroy themselves; (so-called Jews of Muhammad's time), and they don't Yash-urwn 'Perceive It'. They lost Anfusahum 'Their Selves/Spirits'.

27 (Muhammad), if only you could see, when they are made to stand before the Fire (Hell). So, they would say: "Oh, we wish if, we could only Raddu 'Return' (to Tiamat, Earth), and not lie (reject) the verses; (not lie about the old scriptures and tablets) of our Rabb, 'Master'; and we would be of the faithful ones, (if He gave them another chance, to live on Tiamat. They will follow all the laws and the scriptures).

28 In fact I, made Badaa 'Manifest' unto them (Abu Sufyan, Al Waliyd, Al Nazar, Utba, And Abu Jahl) what they wanted to Yukhfuwna 'Hide' before; and if they were sent back to (life after death), they would only return to all that which they were prohibited from (sin) and surely, they are liars.

29 And they say: "Surely, there is nothing except our life of this physical world - (no life after death); and we will not be Mab-uthiyna 'Raised Again', (after death)."

30 (Muhammad), if only you could see, when they are made to stand in front of their Rabb; He, (He Not We) will say; "Is not this the facts, (Judgment Day)?"

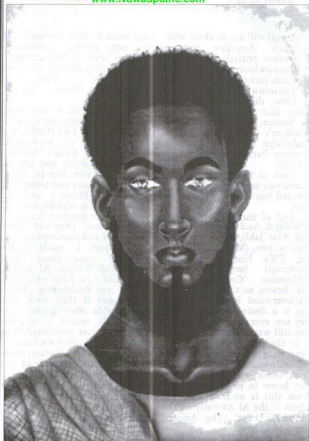


Figure 109
Al Waliyd

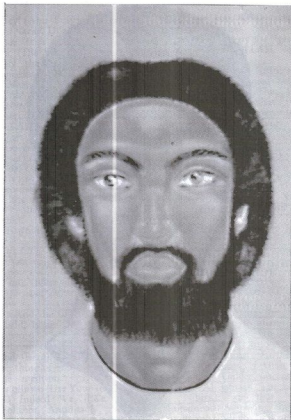


Figure 110
Al Nazar

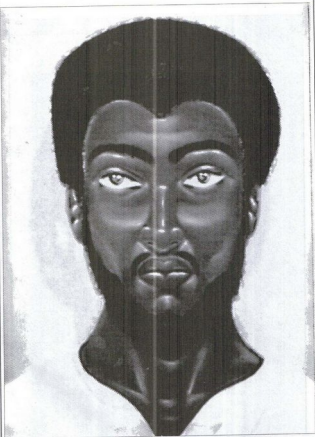


Figure 111
Utba Mu'tabi

They (Abu Sufyan, Al Waliyd, An Nazar, Utba, And Abu Jahl) said: "It is indeed, Our Rabb." He, (The Source), will say: "So taste the pain, by what you concealed." They said, "Judgement Day was a lie, and would never come."

31 Indeed, those who denied the meeting with The Source, ALLAH; are lost, until the hour comes (upon them of Resurrection); then they will say all of a sudden: "O Hasratanaa 'Our Pity' for what we Farratnaa 'Neglected' in it, (because we did not have faith in the Last Day)!" They shall carry their burdens on their own backs. Is it not evil, that they Ziruw'n 'Bear'!"

Life Of The Physical World Is Nothing But Play And Vain Sport - Newsbearers Before You Muhammad Were Denied And Persecuted Also

32 And the life of this physical world, is nothing but play and Lahwun 'Vain Sport'; and certainly the Daar 'Abode' of the End (Rizq), is Khayrun 'Good' for those of you who tremble at the mention. Do you not Ta'qiluwn 'Use Your Intellect'?"

33 Indeed We, ([We Not I] Eloheem Anunnaqi, and the ones sent), know that, what they say really grieves you, (Muhammad). So surely, they

don't deny you, (Muhammad); but those who do wrong unjustly always deny the signs of The Source, ALLAH (His scriptures and signs).

34 And indeed, the Rusul that were sent, were denied before you, (Muhammad). Then they had patience on what they denied and they were persecuted until Our, ([Our Not My] Eloheems, Anunnaqis') Nusr 'Aid' (Ansaruallah), came to them; and no one can change the words of The Source, ALLAH; and certainly news came to you, (Muhammad), from the Mursaliyn 'Ones That Were Sent. (He got his information from those before him).

If Shunning Is Too Hard For You Muhammad, If You Are Able, Seek Opening To Shamballah - Allah Will Raise The Dead Unto Himself

35 And if their Kabura 'Shunning', (avoiding the fact), be hard upon you, (Muhammad); then, if you are able (to seek a Nafqaan 'Opening' into Al Ard 'the planet (Tiamat) Earth' (to Shamballah 'Scent Of Allah'); or a Sullamaan 'Ladder' (ascending up), into Al Samaa-i 'The Skies' (to Nibiru); so that you, (Muhammad) can bring them a sign - (a miracle); and if it pleases The Source, ALLAH He (He Not We) would gather them unto Al

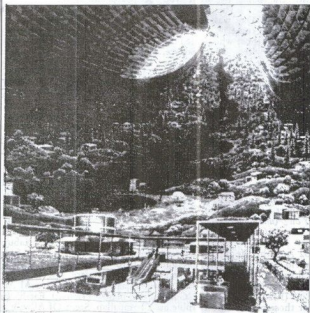


Diagram 17
Shamballah



Hudaa 'The Calmness'.) So don't be of Al Jaahiliyn 'The Ignorant Ones'.

36 When those who listens Yastajiybu 'Accepts'; and as for the dead, The Source, ALLAH will Yab-athuhum 'Raise Them' (back to life), then unto Him (Him Not Us) ALLAH, they will all Yarja-awn 'Return'.

37 And they, (the associates of Mecca), say: "Why has there not, been sent down unto him a sign from his Rabb?" Tell them this, (Muhammad): "Surely, The Source, ALLAH is Qadiruwn 'Powerful' to send down a sign; but most of them don't even know.

Eloheem, Anunnaqi Have Not Neglected, To Keep Record Of Anything In The Scripture - You Are Only To Call Upon The Source, Allah

38 And there is not any Daab-batin 'Creeping Thing' (tanks), in Al Ard 'the planet (Tiamat) Earth,' nor any Taa-irin 'Bird' which flies by its Janaahayni 'Two Wings'; but they are Umamun 'Nations' like yourselves; We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have not Faratnaa 'Neglected' anything in the scripture; nor failed to keep record; then they will all be Yuhsharuwn 'Assembled' to their Rabb.

39 And those who deny Our,

([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi's) signs, they are deaf and dumb in Al Zulumaati 'The State Of Unjustness'; and whomever The Source, ALLAH pleases He (He Not We), sends astray into error, (off the right path); and whomever He pleases, makes them on the narrow path of the ones who stand up straight.

40 Tell them this, (Muhammad): "Can't you see, if ALLAH'S 'Adhaabu 'Punishment' (pain) came to you, or the Last Hour came to you; will you call on others besides The Source, ALLAH if you are of the Saadiqiyn 'Truthful Ones'?"

41 In Fact! But it is Him, (A Yahweh/Yehweh) you all call upon, so He (A Yahweh/Yehweh) is who makes things clear of that which you have been calling unto Him (Him Not Us). If He (He Not We), pleases, and you will all even forget (your partners, those associates who) you have been Tushrikuwn 'Associating (Other Deities With)' The Source, ALLAH."

Eloheem Sent Rusul To Israelites - Samael Made What They Were Doing Fair-Seeming

42 And indeed, We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) sent ones sent to a nation - (Israelites,

Ya'aqob's children), from before you, (Muhammad); so We, (the Eloheem, Anunnaqi), took them by way of Baasaa-i 'Suffering' and Al Darraa-i 'Distress', so that perhaps they will Yatadarraa-uwna 'Humble Themselves'.

43 If only when Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi's) Baasunaa 'Suffering' came upon them, they (Israelites/Jacobites) had been Tadarrauwn 'Humble'; but their hearts became even Qasat 'Harder', and Al Shaytaanu 'The Evil One, Satan' (Samael/Ibliys/Nakhash, son of Shakharr the Reptilian), made what they were doing (by mixing in with the Canaanites,) as Zayyana 'Fair-Seeming'. (The Israelites mixed in with Children of Lebana/Canaan, and became evil Jews; who changed the laws of the Torah for traditions of males).

44 So when, they Nasuw 'Forgot' what they were Dhukiruw 'Reminded' of, about it - (Judgment Day) then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Fatahnaa 'Opened' unto them the Abwaaba 'Doors' of all things (they had His blessing); until when they started to rejoice about what they had been given; We, (the Eloheem, Anunnaqi) took them suddenly. Then indeed, they were in utter despair.

Allah, Rabb Of The Known

World Brings The Signs To You

45 So, the Daabiru 'Roots' of the wrong kindred (Jacobites) were no more than Quti-a 'Cut'. All the (tribes of Israel except Judah were perished); and Al Hamdu 'All Gratitude' is for Him (Him Not Us), who is Rabb of all the Known World.

46 Tell them this, (Muhammad): "Have you all considered that if, The Source, ALLAH was to take away all of your Sam-a 'Hearing', and all of your Absaar 'Seeing', and was to put a Khatam 'Seal' upon all of your Qalb 'Hearts'; then who is The ILAAHUN (ALLAH) 'Source', besides ALLAH that can bring the (signs or verses from the Qur'aan) to you?" See how We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Musarrifu 'Repeat' the verses (of the Qur'aan); then they (the Meccans), turn away.

47 Tell, (the Meccans) this, (Muhammad): "Have you all, considered that if, The Source, ALLAH'S pain came upon you suddenly, or openly; will He (He Not We) destroy any of you, except the kindred who are in Al Zaalimuwn 'The State Of Unjustness'?"

*Rusul Sent Except As
Bearers Of Good News -
Muhammad Never Said He
Has Allah's Treasure, He Was*

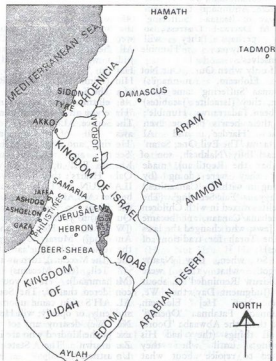


Diagram 19
The Kingdom Of Judah And Israel

*An Eloheem - He Follows
What Has Been Inspired To
Him*

48 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send the Rusul 'Apostles,' except as bearers of good news and warners; so whoever has faith and Aslaha 'Works To Perfect Themselves', so they shall not have any fear, nor shall they grieve."

49 And as, for those who denied Our, ([Our Not My] Eloheems, Anunnaqi's) verses, (take the scriptures, and use them the way they want; like the different sects of Muslims); the pain shall afflict them, for what they used to transgress.

50 Tell them this, (Muhammad): "I do not tell you, that I have the treasures of The Source, ALLAH nor do I know Al Ghayb 'The Unseen' (what is not seen by the physical eye); and I do not say to you all, that I am indeed of the Malakun 'Angelic Messenger, (Eloheem, Anunnaqi)'. Surely, I only follow that which has been inspired 'Wahy, Weh' to me, (the Qur'aan and all the other scriptures and tablets)." Tell them this, (Muhammad): "Is he who is Alamaa 'Blind', Yastawi 'Equal' to him that can Al Basiyru 'See'?" So will you all not use your intellect?" (Don't exalt Muhammad, higher than

any ordinary person).

51 And Andhir 'Warn' with it, (the Qur'aan) those who Yakhaafuwn 'Fear' that they will be gathered unto their Rabb; there is not for them, anyone besides Him who shall be a Waliyun 'Advocate', nor a Shafiyun 'Intercessor' so that perhaps they will tremble at the mention.

*Muhammad, You Are Not Held
Accountable For Anyone. Nor
Are They Held Accountable
For Your Account*

52 And you, (Muhammad) are not held accountable for anything of those who call on their Rabb, who is Master, in Al Ghadaawati 'The Early Daytime Hour', and in Al 'Ashiyya 'The Dusk Period, Late Shadow Time Hour'; they want his Wajh 'Face'. You, (Muhammad) are not held accountable on their account, nor, are they held accountable for anything on your account, (Muhammad); so that you should drive them away, and then be of those who are in a state of unjustness.

53 And thus We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) try some of them by way of others; so that they would say: "Are these those whom The Source, ALLAH was (gracious) upon from amongst us? Doesn't ALLAH know those who are grateful?"

54 And those who have faith in the signs - (the Qur'aan), come to you, (Muhammad); so tell them this: "Salaamun 'Peace' be upon you," your Rabb has written Al Rahmata 'The Yielding' (mercy), on Himself; that surely, if any of you who does a Sawaa 'Évil' work in ignorance from amongst you, then repents after it, (the evil work) and seek to Aslaha 'Perfect Himself'; then surely He (He Not We), ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'."

55 And this is how, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi), Nafasilu 'Explain' the verses and to clear the path of Al Mujrimiyn 'The Guilty Ones'.

Muhammad Forbidden To Call On Any Other Than The Source - Muhammad Only Brings The Facts

56 Tell them this, (Muhammad): "Surely, I am Nuhiytu 'Forbidden' to call on those whom you call on other than The Source, ALLAH"; Tell them this, (Muhammad): "And I do not follow Ahwaa-akum 'Your Love' (low desires); for indeed I, too would have been astrayed, and then I, too would not be of those who are lead into calmness."

57 Tell them this, (Muhammad): "Surely, I have clear evidence

from my Rabb; and all you do, is deny it (take the Qur'aan, and twist it and shape it the way they want to). I do not have in my possession what you all would like to run to. (I don't bring the doctrine, if it pleases them); Surely, the wisdom is (with none) except for Him (Him Not Us). He (He Not We), is who relates the facts, and He is The Best of The Wise Ones (There are more than one wise one).

58 Tell them this, (Muhammad): "If that which I have with me (the Qur'aan), is what will make you hasten unto it; (the type of doctrine they like to hear other than that which he really brought); the matter would have certainly been decided between you and me; and The Source, ALLAH is The Best of Knowers of those who are in a state of unjustness.

The Source Has The Keys Of All Hidden Things - You All Will Return Unto Allah

59 And He, The Source, ALLAH has the Mafaatih 'Keys,' of Al Ghyabi 'The Hidden Things', and no one knows them except Him (Him Not Us); and He (He Not We) knows what is in Al Barri 'The Dry Land' and what is under Al Bahri 'The Sea'; and there does not fall a leaf except which He

knows (of) it; and there isn't a Habatin 'Single Grain' in the Zulumaati 'Darkness' of Al Ardi 'The Planet (Tiamat) 'Earth,' nor anything Ratbin 'Wet', nor Yaabisin 'Dry' that is not in a clear scripture - (the Qur'aan).

60 And He (He Not We), The Source, ALLAH is who takes you, (your spirits), by Layli 'Shadow Hour period', and He knows everything you all do during the daytime. Then He will raise you all up, (after death in the day time) - that an appointed term may be Musamayan 'Fulfilled'. Then unto Him (Him Not Us), ALLAH The Source, will you all return, and then He will Yunabbiukum 'Inform You All (As A Newsbearer)' of what you used to do.

61 And He (He Not We), is Al Qaahiru 'The Conquerer' Fawqa 'Above' all His (His Not Our) slaves; and He sends upon you all Hafazatan 'Guardians' (Anunnaqi Eloheem), until when death comes to one of you; and for Our, ([Our Not My] Eloheems, Anunnaqis') apostles, whom we sent to take it (the spirit) and they are not Yufarrituwn 'Neglectful' of any.

62 Then are they returned unto ALLAH, Mawlaahum 'Their Rulers' (Angelic Beings), Al Haqqi 'The True One'; and surely, His, is Al Hukmu 'The Wisdom', and He is the Asra-u 'Swiftest' of Al Haasiyibiyn 'The Accountance'.

63 Tell them this, (Muhammad): 'Who is it that Yunajjiykum 'Delivers You All' from a state of unjustness, while in Al Barri 'The Dry Land, (the desert)' and Al Bahri 'The Sea', (while their ship was in the sea)? You all call upon Him, Tadarru'aan 'Humbly', and in Khufyatan 'Secret' to yourselves. If He (He Not We), was to deliver us from this, then we should surely, become of those who are truly grateful.

64 Tell them this, (Muhammad): 'The Source, ALLAH, delivered you all from them and from every Karbin 'Form Of Distress'; yet you still Tushrikuwna 'Became Associating Partners (With Other Deities)'.

65 Tell them this, (Muhammad): 'He, The Source, ALLAH has Al Qaadiru 'The Power' to send upon you all a (dreadful) pain, from above you all, or from beneath your feet, or He can throw you (into confusion; he can make you break up into different kinds of) Shiya-aan 'Sects', (thinking that you're right); and He can make some of you taste the Baasa 'Fighting

*Allah Is The Wisdom -
Eloheem, Anunnaqi Repeat
Their Signs Consistently So
Perhaps Enosites Will
Overstand*

Power' of others (Muslims fighting Muslims). Don't you see how We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Nusarrifu 'Repeat' (with consistency) Our (Our Not My) verses of (the Qur'aan), so that perhaps they may be able to overstand?"

*The Tribe Of Quraysh
Denied The Qur'aan - Allah
Has The Power - If They
Talk Bad About Our Signs,
Turn Away From Them*

66 And your kindred (The Family of the Quraysh, 'Big Fish, Reptilian' in Mecca) have denied it, (the Qur'aan); and (the Qur'aan) is the fact. Tell them this, (Muhammad): "I am not (in charge) over you all with advocacy. (I have no power)."

67 For every Nabaain 'Prediction', there is an Mustaqarun 'Appointed Time', and you shall indeed come to know it.

68 And when you have seen those who Yakhwuwna 'Talk Bad'; (saying the scriptures are tampered with - talking about Our, The Eloheems') verses, (of all the scriptures, and tablets); then turn away from them until they start to engage in Hadiyth 'Tales', other than that, and if the (Evil One), Satan, (Nakhash, the Reptilian), causes you to forget; then don't sit after Al Dhikraa 'The Remembrance',

with the kindred, who are in Al Zaalimiyna 'The State Of Unjustness'.

69 And it shall not be upon any of those who tremble at the mention a Hisaabihim 'Reckoning' (for their deeds) in anything that they do; and they will only be Dhikraa 'Reminded', so that perhaps they will tremble at the mention.

*Stay Away From Desert
Arabs Who Take Their Diyn
For A Game - Rise Up And
Upkeep And Tremble At The
Mention Of Allah*

70 And stay away from (those Red Arabs), who have taken their Diyn 'Means Of Judgment' (Al Islaam), for La-ibaan 'Game' and Lahwaa 'Amusement'. (They think to dress in Islaamic clothing, or do Islaamic things are only tradition); and the life of this physical world has deceived them - (wealth has fooled them,) and Dhakkir 'Reminded' them by it, least a Nafsun 'Person' will get by that which its Kasabat 'Earned'; and it will not have for it, (each person's spirit), besides The Source, ALLAH any Waliyun 'Near Friend', nor a Shafiiyun 'Intercessor', and if he seeks every Idlin 'Recompensation', (his spirit) will not be taken from it, (Hell). These are they, (the Red Arabs), who shall be

given perdition for what they earned. For them, there is a Hamiymin 'Boiling Hot' drink, and aching pain because they were concealers of the facts.

71 Tell them this: "Shall we call on another, other than The Source, ALLAH which does not Yanfa-unaa 'Benefit Us', nor Yadurrunaa 'Harm Us'? And shall we turn back on our A'aqaab 'Heels' after The Source, ALLAH has lead us in to calmness, like he whom Al Shayaatiyn 'The Evil Ones, Satans, (the Reptilians),' have Astahwat-hu 'Infatuated Him' in the planet (Tiamat) 'Earth' Hayraan 'Perplexed'. He has Ashaabun 'Companions' who call him to the leading calmness saying: "Come to us." Tell them this: "Verily, the calmness of The Source, ALLAH it is the leading calmness; and we are commanded to Nuslimu 'Surrender In Peace' to the Rabb, Who Is 'Master/Sustainer' of the Known World."

72 And that you should rise up, and upkeep Al Salaawata 'Salutation As Worship' and Attaquwhu 'Tremble At The Mention Of him'; and He (He Not We), is whom, you all will be gathered.

73 He (He Not We) is who Khalaaq 'Created' Al Samaawaat 'The Skies', and Al Ard 'The Planet (Tiamat)' with facts. And In The Day He, says: "Kun

'Exist'," Fayakuwnu 'So Into Existence It Comes'." His (His Not Our) saying is the fact, and his is Al Mulki 'The Angelic Rulership' the day Al Suwri 'The Trumpet (Shofer)' will be blown in (by the Eloheem Raphael). He, is 'Aalimu 'The Knower' of Al Ghaybi 'The Unseen' and Al Shahaadati 'The Seen', and He, is Al Hakiymu 'The Wise', Al Khabiyr 'The Aware'.

*Abrawhawm Asks His Father
About The Other Allahs -
Abrawhawm Showed Rulership
Of The Skies- Abrawhawm
Seeks Out His Rabb, Allah*

74 And when Abrawhawm, said to his father Azar/Terakh: "Do you take Asnaamaa 'Idols/Deities', as AALIHATAN (ALLAHS) 'Sources'? Surely, I see you and your kindred, in clear Zaalalin 'Error'."

75 And thus, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), showed Abrawhawm the Malakuwta 'Angelic Rulership' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard, 'Tiamat planet, or Qi, Earth'; and that He might be of those who are sure.

76 So when the Shadow Hour, Janna 'Overshadowed' him, he Raa 'Saw' a Kawkabaa 'Star'. He said: "This is my Rabb, who is 'Master'." Then when it Afala 'Appears To Set', he said: "I don't Uhibbu 'Like' anything Al

Aafiliyn 'That Appears To Sets'."

77 When he saw Al Qamara 'The Moon' Baazighaa 'Rising', he said: "This is my Rabb." Then when it Afala 'Appears To Set', he said: "If my Rabb 'Master' didn't lead me into calmness, I would have certainly been of the kindred who have gone astrayed into error."

78 So when he saw Al Shams 'The Sun' Baazighatan 'Appearing To Rise', he said: "This is my Rabb. This is the Akbaru 'Biggest One'." So when it Afalat 'Appeared To Set' he said: "O my kindred, Surely, I am clear of what you Tushrikuwn 'Associate Partners (with other deities)'."

*Abrawhawm Turns His
Face Wholly To Allah -
Those Who Are Faithful
Have A Security - The
Eloheem Raise In Degrees
Whom We Please*

79 Surely, I turn my face Wajahtu 'Wholly' to Him, ALLAH who Fatara 'Splitted The Atoms' (of) Al Samaawaati 'The Skies', and Al Arda 'The Planet Earth'; Haniyfaan 'Being Upright', and I am not one of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate'."

80 And his, (Abrawhawm's) kindred, Haajjahu 'Disputed' with him. He said: "Do you dispute with me about The Source, ALLAH and indeed, He

has lead me into calmness; and I don't fear any of what you Tashrukuwn 'Associate Partners' with Him (Him Not Us). ALLAH; nothing will happen to me, unless my Rabb, 'Master', wills. For my Rabb, Si-a 'comprehends' all things, in His knowledge. Will you not therefore, (take this to mind,) remembering it?"

81 And how should I fear the things Ashraktum 'You All Associate (As) Partners (with other deities)' and you all don't fear that you are (setting) up Ashraktum 'Associating Partners (other deities)' with ALLAH? That, for which has not been Nazalu 'Sent Down' to you any Sultaanaan 'Authoritive Power'; (you all do that, without any Authority). So which of Al Fariyqayni 'The Two Factions', (real Muslims, followers of Abrawhawm, or associates, fake sunni muslims) have the real right to the security, if you all have knowledge?"

82 Those who have faith and do not Yalbisuw 'Mix Up' their faith, with wrong; these are those, for them is the security and they are those who are calmed.

83 And that was Huijatonaa 'Our Argument'. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave it to Abrawhawm over his kindred. We, (the Eloheem, Anunnaqi) raise in Darajaatin 'Degrees', of

whom We please. Surely, your Rabb, is Hakiymun 'Wise', 'Aliymun 'Knowing'.

*The Eloheem Chose
Abrawhawm And The
Newsbearers And Their
Offspring Over The Known
World*

84 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), Wahabnaa 'Gave' on him (Abrawhawm), Yitschaq and Ya'aqob/Yisrawale; We, (Eloheem Anunnaqi), calmed each of them, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) also calmed Noah before them and of his offspring; Dawiyd and Shelomoh and Yowb and Yosafe and Mosheh and Aharown, and thus We, the (Eloheem, Anunnaqi), rewarded the ones who does that which is best.

85 And Zekaryaw and Yowchanan (The Baptist), and Yashu'a and Eliyah, who were all of those who work to Al Saalihiyn 'The Perfection'.

86 And Yishmael and Eliysha and Yonah and Luwt, and all of them did We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Fadalnaa 'Prefer' over all the Known World.

87 And of their fathers and their offspring and their brothers, and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), did chose them and We calmed them to the narrow path of the ones, (the

newsbearers), who stand up straight (The Eloheems).

88 That is The Source, ALLAH'S calmness. He (He Not We) calms by it, (the scripture), whomsoever of His (His Not Our) slaves as He pleases and if they, (Adam's) family Ashrakuw 'Associate Partners'; all that they had done will certainly be of no Habita 'Avail'.

89 These are they, (seed of Zakar/Adam), to whom We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave the scripture - (all the scriptures from Adam to Muhammad), and Al Hukma 'The Wisdom', and Al Nubuwwata 'The Prophethood'. So if they, (seed of Adam), conceal what he knows to be the facts about them - (all the scriptures and tablets); these are who indeed, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) entrusted with it a kindred, (seed of Adam. All the scriptures in the Great Book, Akasha Records), who are not of those who conceal what they know to be facts by them (the scriptures).

*Follow Newsbearers In
Calmness - The Qur'aan Is
Nothing But A Reminder Of
Scriptures From Before -
Meccans Don't Think Allah
Can Send Down Anything To
A Mortal*

90 These are they, the

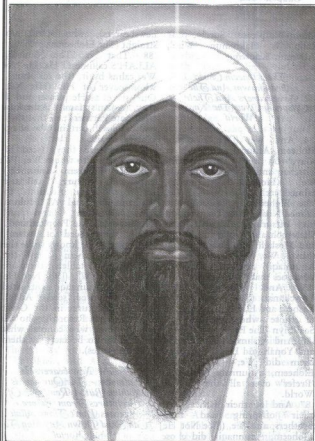


Figure 112

Zekaryaw (Zachariah), Husband Of Elisheba (Elizabeth)



Figure 113

Yowchanan

(Yowkhawnawn/John, The Baptist - Yuhanna El Mikwah)

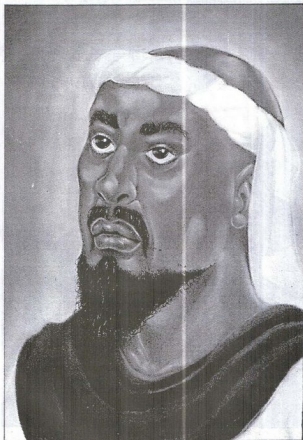


Figure 114
Eliysha (Elisha), The Prophet Who Succeeded Elijah

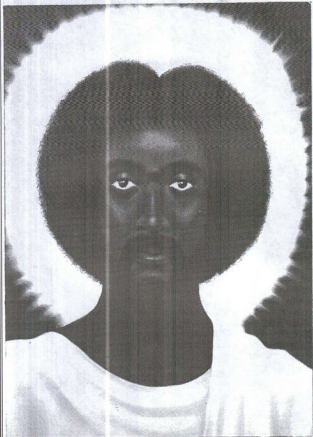


Figure 115

Yashu'a/Isa (Jesus)

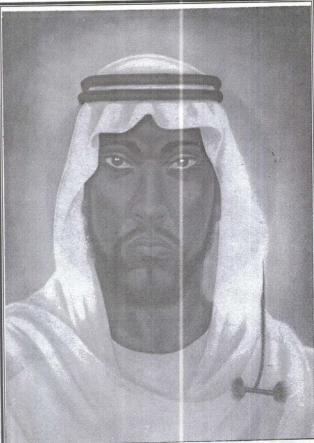


Figure 116
Yishmawale (Yishma'el/Ishmael), Son Of Abraham And Sarah

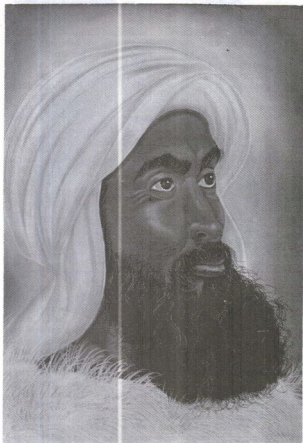


Figure 117
Eliyah (Elijah)

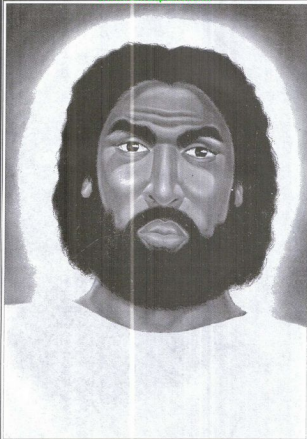


Figure 118
Yownah (Jonah), Son Of Amittai

newsbearers, whom The Source, ALLAH has lead into calmness, so follow them in calmness. Tell them this, (Muhammad): "I do not ask you all, for (any form) of reward; surely it, (the Qur'aan) is nothing but a reminder to the Known World. (The Qur'aan is merely to make you remember that which you were taught in the scriptures).

91 And they did not know the Qadaruw 'Power' of The Source, ALLAH; its true Qadrihi 'Power' when they, (the Meccans) said: "ALLAH did not send down unto Basharin 'Mortal Beings In Skin', anything." Tell them this, (Muhammad): "Then who sent down the scripture which came by way (of Mosheh), a Nuwraan 'Light' and a calmness for Enosites which you have made into Qaraatiysa 'Paper, (from stone tablets)' in order to show it; (the Torah - Law of Eloheem Mosheh, The Prophet Aaron, And Mosheh's Successor, The Apostle Yehowshua); but a lot of it, you have hidden by which you were taught, that which you did not know yourselves, nor did your fathers. Say, The Source, ALLAH then leaves them in their Khawd 'Wading' playing their games.

92 And your scripture, did We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) send down as a blessing Musaddiqu

'Confirming' that which is already between its hands -(the other scriptures which these prophets/newsbearers presently hold in their hands), and to warn the Umma 'Mother' of the villages, (Mecca) and whoever is around it. And those who have faith by way of the end, have faith in it (the Qur'aan), and they are Yuhaafizuwna 'Guarding' (strict) 'Alaa 'On' Salaatihim 'Their Salutation As Worship'.

*Disgraceful Pain Is For Those
Who Said Things Which Were
Not Facts - You Will Return
To Us - The Source, Allah Is
He Who Brings Forth The
Living From The Dead And
Vice Versa*

93 And who is in more of a state of unjustness, than he who Aftara 'Invents' lies, about The Source, ALLAH; or says he has Uwhiya 'Inspired' to me and He, has definitely not Yuha 'Inspired Him' (Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi) with anything and he who says, "He can send down the likes of what has been sent down by ALLAH; and if you had seen when a state of unjustness in the Ghamaarati 'Hardships' of Al Mawti 'Death' and Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers: (Eloheem, Anunnaqi)' Baasituw 'Spread' their hands (saying:) "Bring Out

(Give us) Anfusakum 'Your Spirits'. Today you shall be watered with a disgraceful pain, because you all (hadith writers) said things which were other than facts, and you were big-chested, pouting with pride concerning His (His Not Our) signs, (the scriptures; Red Arabs).

94 And indeed you have returned unto Us, ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi) alone; (you have no helpers, and no friends), as We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), had Khalaaqnaakum 'Created You All' in the Awwala 'First' time (coming back as a spirit, or soul returning) and you have left behind, your very backs, the things and favors which We (We Not He) had bethrown upon you, and We, (Eloheem) do not see Shufa-aa-ikum 'Your Intercessors' with you; those who you asserted, Shurakaa-uw 'Associates' with you - (your leaders, your so-called Imaams, your preachers, or your deities); certainly what you had between you all was indeed Taqatta-a 'Cut Off', and all that you expected from them has gone astrayed (into error), away from you.

95 Surely, The Source, ALLAH is He (He Not We) who brings forth each Al Hubbi 'Seed, and Grain', and He brings forth Al Nawaa 'Stones', and He brings

forth Al Hayya 'The Living' from Al Mayyiti 'The Dead', and He brings forth Al Mayyiti 'The Dead' from Al Hayyi 'The Living'; that is ALLAH. How then are you so Tu-fakuwna 'Diluted'?

96 He (He Not We), is who brings forth the early daytime hour, and He made the Shadow Hour period as a Sakanaan 'Resting Time', and Al Shamsa 'The Sun', and Al Qamara 'The Moon' as a Husbaanaan 'Reckoning - (time keeper in this solar system)'; that is how He, Taqdiyru 'Arranges It' all; Al 'Aziyz 'The Mighty', Al 'Aliym 'The Knowing'.

Eloheem Enqi Who Produced You All From One Spirit - Allah Is He, Who Sent Down Rain To Bring Forth Green Plants, Vegetation, Ears Of Corn, Palm Leaves, Dates And Pomegranates

97 And He (He Not We), is who made for you, Al Nujuwm 'The Stars' to calm you when in Zulumaati 'Darkness' over the dry lands, and seas; and indeed, We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) have Fassalnaa 'Detailed' for the kindred who know.

98 And He (A Yahweh Enqi), is who Anshaakum 'Produced You' all, the seed of (Adam), from one Nafsin 'Spirit' (from his own

Breath of Life), in a resting place (the genes of Zakar/Adam), and a safe place (the womb of Nekaybaw/Eve). So, indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), have presented the verses - (the scriptures) for a kindred who could overstand.

99 He (He Not We) is who sent down waters from the Skies; so after that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi, Ashnan/Thukkiac) brought forth, buds and all kinds of green plants. (The green vegetation brought forth compounded grains from the ears of corn); and We, (The Eloheem, Anunnaqi) produced clusters of Al Nakhli 'Date, Palm' trees, hanging (low and) near, and Janaatin 'Gardens' of A'anaabin 'Grapes', (vineyards) and Zaytuwn 'Olives', and Rummaana 'Pomegranates' alike; (the leaves of Pomegranates and Olives, look alike but their fruits) are not alike; so look at the Thamari 'Fruit' when it Athmara 'Bears Its Fruits', and becomes ripe from stages. Surely, in all of this are signs for a kindred, who are faithful.

*The Meccans Made The
Malevolent Jinns Partners
With The Source - Allah Is
Above All Male And Female
Eloheem - Allah Created And
Knows Everything*

100 And they, (the Meccans), made the (Malevolent Beings, Cherubeems), 'Jinn, Demons' as Shurakaa-a 'Associating Partners' for The Source, ALLAH, and He (He Not We) who Khalaq 'Created' (the Cherubeems, Jinns); and (the Meccans) say, 'He, has Baniyna 'Sons' and Banaatin 'Daughters'; (they say the female Eloheem, Anunnaqi, and the male Eloheem, Anunnaqi are The Sources children), without 'Ilmin 'Knowledge'. (They don't know anything about the Eloheem, Anunnaqi). Glory be to Him, and Ta'aalaa 'Exalted' about all that they, (Meccans) Yasifuwn 'Ascribe'. (He, The Source, is above all the Eloheem, Anunnaqi, male and female).

101 The Originator of Al Samaawaati 'The Skies' and the planet (Tiamat), Ard 'Earth!' How can there exist for Him (Him Not Us), ALLAH a Waladun 'Son By Birth (Paternal Son - Yashu'a)' and there does not exist for Him, any Saahibatun 'Female Companion', for He (He Not We), Khalaqa 'Created' everything and He, has 'Aliymun 'Knowledge' over everything.

102 That is your Source, ALLAH, your Rabb; no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Him (Him Not Us). Khaaliqu

'Creator' of all things; so slave for Him (Him Not Us), and He is over all things as a Wakiylun 'Advocate'.

103 You can not Tadrikuhu 'Perceive His' Al Absaar 'Inner Sight' (Aura), but He (He Not We) indeed, can Yadriku 'Perceive' Al Absaara 'All Inner Sight'; for He is Al Latiyfu 'The Subtle', Al Khabyru 'The Aware'.

*Muhammad Is Not A Guardian
Over Any Of You -
Muhammad Follow The
Inspiration Sent To You, And
Don't Abuse The Meccans*

104 Indeed, there have come to you all, things that you can see very clearly from your 'Sustainer', who is Rabb. So, whoever of you will take time to see it, is indeed for Nafsihi 'His Ownself'; and whoever becomes blind to it, so that (he does not know it is) on himself; and I, (Muhammad), am not a guardian over you all. (Muhammad was not sent to everybody in the whole world, he was only sent to a select kindred, The Quraysh Tribe).

105 And just like this, We, (the Eloheem, Anunnaqi), have Nusarrifu 'Repeated' the signs - (the verses from all the scriptures); so that they may say, 'You have Darasta 'Studied', (read all of the scriptures, and

studied their meanings); there was only for us to Bayyinahu 'Make Things Clear', to a kindred who already have a (certain amount) of knowledge; (because they read the scriptures previously to the Qur'aan. They should have already overstood what the Qur'aan was saying).

106 Follow that which has been inspired to you (Muhammad), from your Rabb; no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Him (Him Not Us); and turn away from Al Mushrikiyna 'Those Who Are Associating Partners'."

107 And even if, it pleases The Source, ALLAH with that which they have Ashrakuw 'Associated' (other deities with Him); and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not make you a Hafiyzaan 'Guardian' over them, and you, (Muhammad) are not a Wakiylin 'Advocate' over them.

108 And (Gabriel Said To Muhammad), don't Tasubuw 'Abuse'; (say things about their fake deities), whom they, (the Meccans) call on, (worshipping) that which are indeed beside The Source, ALLAH; so that they, (the Red Arabs of Mecca), will Yasubuw 'Abuse' ALLAH, and exceed the limits (brings His wrath on them) while you know they have no knowledge. Just like that, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made for every kindred, their own

works to look good (they think they are right). Then to their 'Master/Sustainer' who is Rabb, will they all return; so We, (the Eloheem, Anunnaqi) will inform them, (the Red Arabs) about all that they did (all their evil works)."

109 They, (the Red Arabs of Mecca) in (Muhammad's time) Aqamuw 'Swear' by The Source, ALLAH with the Jahda 'Strongest' of Aymaanihim 'Their Oath'; they say they have faith in (Muhammad), and (the Qur'aan) that if a verse, a sign of (the Qur'aan) came to them, they would indeed have faith in it. Tell them this, (Muhammad): "The verses of (the Qur'aan), are indeed in the possession of The Source, ALLAH and how, and what will make you all know that surely, when (the Qur'aan), comes they (the Red Arabs of Mecca still), will not have faith.

110 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), will turn their, (the Meccans') Afidat 'Inner Hearts', and Absaarahum 'Their Inner Sights', even as they did not have faith in it the first time; and We, (the Eloheem, Anunnaqi), will leave them in Tughyaanihim 'Their Suppression' Ya-mahuwn 'Blindly, Wandering On'.

111 And surely, if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), send down to them, (the Enosites) Al Malaa-ikata 'The Angelic

Messengers' and the dead (Enosites), were able to speak to them; and even if We, (the Eloheem, Anunnaqi,) assembled all things before them. Even then, they would not have faith, except if The Source, ALLAH pleases; but most of them are Yajhaluwna 'Ignorant'.

We, Eloheem Made For Every Newsbearer, An Open Enemy Human Shayaatiyn Devils Reptilians Of Every Race

112 And just like this, (as those who associate other deities are your enemies); We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi, the Benevolent Beings, Serapheems), have made for every Nabiyyin 'Newsbearer' an (open) Aduwwan 'Enemy' (Human Evil Ones) - Shayaatiyna 'Satans, (the Reptilians)', in Al Insi 'Human Form'; and (the Malevolent Beings, Cherubeems), Jinn, (the Evil) 'Demons', (which are their spirits), that inspires (the Enosites to the Evil One's, the Reptilian's worship), some of them over others - (the normal Enosites whether they be of the Negroid, Pale Caucasian, or the Yellow Mongoloid Race, of Satans, the Reptilians). They varnished (falsehood; to adorn them, by making them wealthy,) to say deceptive things - (to lie to the world, and make Enosites think they are not the Evil Ones

-Satans, the Reptilians in physical form); and if it pleases your, (Muhammad's) Rabb; they, (the physical Satans, the Reptilians) would not be able to do so. (He let's the Negroid, Pale Caucasian, Yellow Mongoloid Race of Evil Ones, Satans, the Reptilians test you); so leave them, (don't mix with them), in what they fabricate (lies).

113 And that, the Af-idatu 'Inner Hearts' of those who do not have faith (in the End), may be inclined to have faith in the Hereafter, and that they may become well pleased with it - (the results of the Judgment Day), and that they may earn, that which they should be pleased in.

*The Words Of The Source
Is Perfect And Complete. No
One Can Change Them -
Don't Follow Most Of Those
In Tiamat/Qi. They Only
Follow Conjecture*

114 Should I, (Muhammad), desire a wise one other than ALLAH and He (He Not We) is who sent down to you all the scripture (the Qur'aan) Mufassalaan 'Fully Detailed'? And those (Rusul) who We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave the scripture, they know that it was sent down from Your 'Master', who is 'Rabb' in (undisputed) Haqq 'Fact'; so don't be of those who

Mumtariyn 'Dispute'.

115 And the words of your Rabb 'Sustainer', are Tammat 'Complete', Sadqaam 'Perfect In Fact' and 'Adlaan 'Justice' and nothing, and no one can change His (His Not Our) words; for He (He Not We) is Al Samiy-u 'The All Hearing', Al 'Aliymu 'The Ever Knowing'.

116 And if you Tuti-u 'Obey' most of those in the planet (Qi/Tiamat) 'Earth,' they will lead you off the path of The Source, ALLAH; they only follow thoughts, conjecture and do nothing except guess, (muslims don't know what the Qur'aan is about).

117 Surely, your (Muhammad's) Rabb, He (He Not We) Knows who goes astray (into error), from His (His Not Our) path - (the Rites of Abrawhawm); and He Knows for those who are lead into calmness.

*If You Are Inforced To Eat
Unlawful Haraam Food, It Is
Not The Same*

118 So eat from, that which The Source ALLAH'S Asmu 'Name' has been Dhukira 'Remembered' over it - (only eat those things killed in the name of The Source which is "Halaal," Lawful) if you are of those who have faith by way of Our, ([Our Not My] Eloheems, Anunnaqi's) verses.

119 And what would cause you

all not to eat from the things which The Source, ALLAH'S Asmu 'Name' is Dhukira 'Remembered', and indeed He (He Not We), has made plain for you all what is Haraam 'Unlawful' for you all except for that which is forced on you all? (If you are imprisoned and forced to eat unlawful food; it is not the same), and surely, many will be led astray by Ahwaa-ihim 'Their Own Inner Loves (Desires)', without, (a lack of true) knowledge, (from not overstanding all the scriptures); surely your, (Muhammad's) Rabb, He Knows of all those who Mu-tadiyna 'Exceed The Limits'.

120 And avoid those Ithmi 'Guilty Actions' which appear openly, and (those guilty actions which) appear in secret; surely those who earn Ithma 'Guilty Actions' shall be rewarded by what they, themselves gained. (Enosites will be judged by their actions not for them).

121 And do not eat from that, on which The Source's, ALLAH Asmu 'Name' has not been Yudhkira 'Remembered' (only eat those things killed in his name, which is "Halal,") and surely it - (eating foods that are "Haraam,") is indeed a Fisqun 'Transgression' (by means of turning away from The Source); and surely, Al Shayaatiyna 'Satans (the Reptilians)', they

(suggest) by sending inspiration, to Uwliyaaihim 'Their Near Friends' (that the Muslims who have friends, who are now Muslims; Satans, the Reptilians uses them to convince them to eat unlawful foods), so that they should Yujaadiluwkum 'Contend With You All'; and surely, if you obey them; (start to eat the wrong foods), you most surely become of the Mushrikuwn 'Associates'.

*We Eloheem Raised
Iqzarus From The Dead -
We Eloheem Also Made The
Greatest Enosites In Their
Villages, Its Guilty Ones*

122 Is he who was Maytaan 'Dead'; then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) brought him back to life - (Lazarus, the one, Yashu'a Of 2000 Years Ago, brought back to life); and We, (the Eloheem, Anunnaqi) made for him a Nuwraan 'Light' that he may Yamshi 'Walk' in it - (that he may rekindled the spark of life in his body. In the matters of the Enosites, that the Pharisees, and the tribe of Judah, at the house of Martha and Mary Magdalene; actually, so Lazarus came to life and walked amongst them); but, is he like him who is in a state of unjustness, who is not able to come back forth from it - (a male in a state of unjustness, is further away from

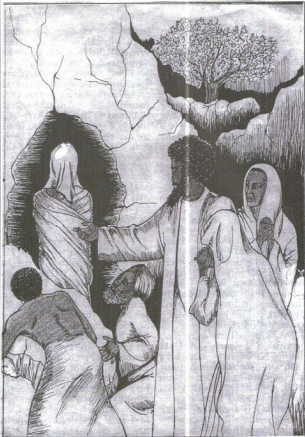


Diagram 20

Lazarus, Was Revived Back To Life By Yashu'a

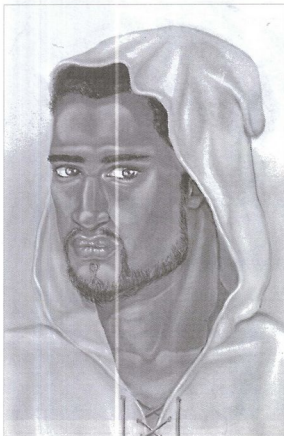


Figure 119
Lazarus

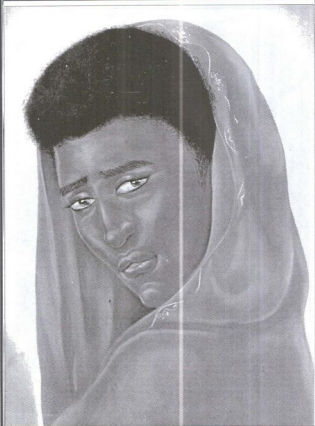


Figure 120
Martha, Wife Of Yashu'a

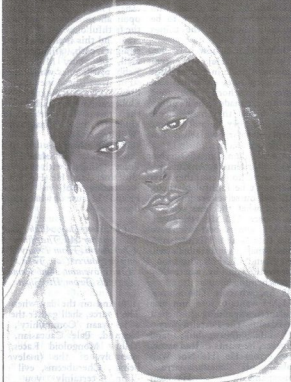


Figure 121
Mary Magdalene, Wife Of Yashu'a

His Source, than a male who is dead?) So that is how it has been made to look Zuyyina 'Fair-Seeming', for those who conceal what they know to be the facts about all the things that they did.

123 And that is how it is; We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made in every village the biggest ones - (the male of power in authority, the great Enosites are made to be its guilty ones); so that they may scheme in it, and they do not scheme except on their own selves, but they do not feel it.

124 And when Our, ([Our Not My] Eloheems, Anunnaqis') signs come to them, they say: "We won't be faithful to them, until we, ourselves are given the likes of what the ones sent, of The Source, ALLAH were given. ALLAH knows best where to place Risaalatahu 'His message'. Those small time criminals will have from ALLAH'S possession - a forceful pain, by what, they were scheming about.

125 So, whoever The Source, ALLAH wants to lead him into guidance, expanding his chest for Islaami 'The Peaceful Way Of Life, (Nuwaubu); and whoever, he wants to lead astray (into error) He (He Not We), makes his chest narrow, (un-expanded), Harajaan 'Restricted'. (He can't receive inspirations; it is), as if he

Yassa-'aadu 'Climbs' (upwards) in Al Samaa-i 'The Sky'; just like, ALLAH makes Al Rijsa 'The Filth', (an abomination) upon all those who are not of the faithful ones.

126 And this is the narrow and straight path, (filament over Hell, of your, Muhammad's) Rabb, of the ones who stand up straight, (the newsbearers); indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), have made the verses of (the Qur'aan), for a kindred who Yadhakkaruwna 'Will Remember'.

127 For them, is the Daar 'Abode' of Al Salaami 'The Peace', (Nibiru), with their Rabb 'Sustainer', and He (He Not We) is their Waliyyu 'Nearest Friend', because of what they are doing.

*On That Day, Allah Shall
Gather All The Jinn,
Cherubeem From Every Race
- The Source Can Take Away
Our Covenant, And Remove
Us From His Sight*

128 And on the day when He, The Source, shall gather them as a Jamiyaan 'Community', (the Negroid, Pale Caucasian, and Yellow Mongoloid Races;) O assembly of the (malevolent beings, Cherubeems, evil race) 'Jinn,' certainly you have Astakthartum 'Seduced' most of the Enosites. He, Satan/Samael)

said: "Their Awliyaa-uhum 'Nearest Friends' are those of the Enosites." Our Rabb, some of us, has Astamta-a 'Profited' by others, and we have reached our appointed term, which You (You Not Us) did appoint for us - (6,000 years is up). He shall say: "Al Naar 'The Fire' is your, (the Evil Ones and his helper and followers) abode, to abide eternally in it"; except as for what ALLAH pleases, and surely, your Rabb is The Hakiyumun 'Wise', 'Aliymun 'Knowing'.

129 And thus, do We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) make some of the ones in a state of unjustness, to Nuwalliy 'Befriend' the others, because of what they had earned.

130 O assembly of (Malevolent Beings, Cherubeems) Jinn, and Enosites, did not there come to you all the ones sent, (the apostles from you all - Mortal Men in Skin? As the Malevolent Beings Cherubeems Jinns, and men are) relating unto you all, verses - (the Qur'aan), and warning you all of a meeting of this day, (the End); when you will say: "We testify about our ourselves, and they are deceived by the life of this physical world; and they will testify against their ourselves, that indeed, they were concealers of the facts."

131 That is why your Rabb, was not the destroyer of the villages,

by way of their state of unjustness and its families were Ghaafiluwn 'Unaware'.

132 And to everyone, there are Darajaatun 'Degrees' of what they do; and your Rabb 'Master/Sustainer', is not Ghaafilin 'Negligent' about what they are doing. (The Source is ever aware of all, that everybody does.)

133 And your, (Muhammad's) Master, is Al Ghaniyyu 'The Independent'. The Possessor of Al Rahmati 'The Yielding' (mercy): if it pleases Him (Him Not Us) to make you all go away, (like the Children Of Israel; He can take away our covenant and remove us from His Sight), and to make others succeed after you. He (He Not We) does what He pleases, just as He raised you up. (He gave the Ishmaelites the covenant), from the seed (offspring) of another kindred. (He raised you out of Ishmael, from Hagar's seed; as opposed to the other seed, which was Israel, out of Sarah's seed).

134 Surely, what you should have been Tuwaduwna 'Threatened With', must indeed come to pass; and you all will not be able to escape it - (The Day of Judgement).

135 Tell them this, (Muhammad): "Of my kindred, (Ishmaelites) - you do works according to your own abilities; and surely, I am a worker; so

you will soon come into the knowledge of to whom, it will be a good ending for him, in the abode, "Daar (Nibiru,)" the Abode (of Peace in Heaven, Rizq.) Surely, He shall not Yuflihu 'Make Prosperous'; Al Zaalimuwn 'The Ones In A State Of Unjustness'.

136 And they, (the Meccans) made for Him, what He, Himself has Dharaa 'Created, Multiplied'; a Harthi 'Tilth' and Al Anaami 'The Cattle' and even a portion of their wealth. So they say: "This part is for him, and then they assert, and this is for those whom Shurakaa-inaa 'We Associate Partners (With - Other Deities)'." So that which Shurakaa-ihim 'They Were Associating With Him', did not reach unto The Source, ALLAH; and that which was for Him, so it Yasilu 'Reaches Out' to those whom they Shurakaa-ihim 'Associate (other deities).' Saa-a 'Evil' is what they use wisdom (upon).

The Pagan Arabs Lie About The Cattle - They Assert That The Cattle Backs' Are Unlawful - They Also Say That Which Is Inside The Womb Of These Cattle Is For Their Males - Those Who Kill Their Children Are Fools

137 And Al Mushrikiyn 'The Associating Partners' are those

that have made evil look Zayyana 'Fair-Seeming', to most of them by having them kill their Awlaad 'Children' in order to make themselves perish, and convert them to their Diyn 'Means Of Judgment'; and if ALLAH pleased, they would not have done this. So, therefore, leave them alone and that which they make up.

138 And they say: "These Anaamun 'Cattle' and this tilth is bad luck; none shall eat it except, for those whom We have ordained." So they assert; and the cattle backs' are Hurrimat 'Unlawful', and the cattle upon which ALLAH'S Asma 'Name' is not Yadhkuruwna 'Remembered'; but forging a lie against Him, (breeding it as righteous "Halal," Lawful food). He, shall Yajziyhim 'Requite' them for it. Those that they Yaftaruwna 'Made It Up'.

139 And they also say, "That which is inside the Butuwni 'Stomach' of these cattle is eventually for our males (eating of unborn animals (veal) they taught is only for males to eat,) and is Muharramun 'Unlawful, Forbidden' for Azwaajinaa 'Our Mates'; and if their (baby animal), is Maytatan 'Still Born', so it is shared amongst them, as Shurakaa-u 'Associates', (and the mates are allotted to eat it then). He, will reward them, punish them, (for attributing falsehood

to Him). Surely, He, is The Hakiymun 'Wise', The 'Aliymun 'Knowing'.

140 And indeed those (Enosites), who kill their children are truly in a state of loss; they are fools, and without any knowledge, and they have made Haramu 'Unlawful, Forbidden' the very Razaqahum 'Provisions' from ALLAH, and they make up lies upon ALLAH. They have indeed gone astrayed, (into error) and they are not lead into calmness.

141 And He (A Yahuwa/Yehweh Arazu), It is who produces Jannaat 'Gardens'; with those, that trip along the trails of things that do not creep along the path, and the Palm Trees, and that which yields seeds to produce of which the fruits of various kinds grow, and the Olives and the Pomegranates, and things like it and things unlike it. So eat of its fruits when it bears fruit, and come on the day of Hasaadihi 'His Reaping', (and do right by it, bears fruits, and come on the Day of Reaping, and do not be extravagant). Don't pick more than you need; surely, He (He Not We), does not like those who pick more than they need.

*Cattles Are Beasts Of Burden
- Unlawful Foods To Eat
Are: Animals Who Died. That
Has Clots Of Blood, And The*

*Pig. And That Which The
Name Of The Source Wasn't
Invoked Upon*

142 And of the cattle that are Hamuwlatan 'Beast Of Burden' and those which are fit for Farshaan 'Slaughtering'; so eat from what has been Razaqakum 'Provided To You All', from The Source, ALLAH and do not follow in the Khutuwaasti 'Footsteps' of Al Shaytaani 'The Shaytaan' (Samael, incarnated in the flesh, who teaches Enosites to eat unlawful things); surely, he is a Mubiyn 'Clear' (and open) 'Aduwun 'Enemy' to you all.

143 Eight Azwaaajin 'In Pairs' - two of them sheep and two of them goats, (males and females, and) say this: "Has He, made Hararama 'Unlawful' the (taking) of Al Zakarayni 'Two Males, Forgetful Ones', or Al Unthayani 'Two Females', or that which the Arhaamu 'Womb' of Al Anthayayni 'The Two Females', which Ashtamalal 'Contains' (the unborn baby, knowledgeably)? So Inform me (as a newsbearer) with knowledge, if you can be trusted."

144 And two of the camels and two of the heifers say this: "Has He, The Source, ALLAH made Haram 'Unlawful' the two males (forgetful ones) or two second parts, females, or that which the

womb of the two second parts, females contain, (yet unborn)? Or were you there, to watch when The Source, ALLAH Wasaakumu 'Enjoined' this (law) upon you?" Who then, is more in a state of unjustness, than he who makes up things about ALLAH and is lying in order to lead astray (into error), the Enosites not having any knowledge?" Surely, The Source, ALLAH does not calm a kindred who are in a state of unjustness."

145 Tell them this, (Muhammad): "I cannot find in that which he has been inspired, (the Qur'aan), anything that is Muharramaan 'Unlawful' for the Taaimin 'Eater' to eat, except that which has died of itself, or has (clots of) Damaan 'Blood' in it Masfuwhaan 'Pouring Forth', or the Lahma 'Meat' of the Khanziyrin 'Pig'; so surely which is Rijsin 'Unclean'; or that which is a Fisqaan 'Transgression' (any animal which His name has not been recited over); having invoked names other than The Source, ALLAH by it; so whoever is forced in desiring not of their own, and not exceeding in the limits - (if a man is forced to eat pork, or these unlawful things, and imprisoned with no access, to any other food, then His Rabb will forgive him), for surely your, (Muhammad's)

Rabb, is Ghafuwrun 'Forgiving', The Most Rahiymun 'Merciful'.

146 And upon those who are of Haaduw 'Ychuwdah', We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made Haram 'Unlawful' every (creature) which has Zufurin 'Nails', (splitted hoofs), and Al Baqari 'The Cow'; (symbol of animals who chew not its cud), and Al Ghanami 'The Sheep' We, (the Eloheem, Anunnaqi) made Haram 'Unlawful' unto them, (the Children Of Israel/Jacob), Shuhuwma-humaa 'The Fat Of Both Of Them', except for what, the little bit, which is carried on their backs - (when you cut the meat, some fat may remain), or (the bowels of) animals; (Chitterlings, and Hog-mogs, or) that which is Akhtalata 'Mixed' with the 'Azmin 'Bone' (the Marrow, or blood in the bones); that We, (the Eloheem, Anunnaqi) rewarded them, (the Jacobites/Israelites), for their outrage, and surely, We, (the Eloheem, Anunnaqi) are to be trusted.

147 So if, they lie about you, (Muhammad), tell them this: "Your Rabb, 'Master' is the essence of Rahmatin 'Yielding' (mercy), and He (He Not We) gave a Waasi-atin 'Lot Of Space'; but no one can Yuraddu 'Divert' His punishment when it is inflicted on the kindred of those who have been found guilty.

*For The Source Is The
Conclusive Argument - Don't
Lie About Our, Eloheem Signs*

148 So those who Ashrakuw 'Associate Partners', shall say: "If The Source, ALLAH pleases, we have not Ashrak 'Associated' (other deities, and worshipped them) instead of Yahuwa/Yehweh), nor would have Abaaunaa 'Our Fathers', and nor did Haramnaa 'We Make Unlawful' from anything, nor would we have before them also lied until they tasted the wraths and the punishment. "Tell them this: "Do you all have any knowledge, so bring it out onto us? For you only follow what you think, and do anything in that; but tell untruths."

149 Tell them this, (Muhammad): "So for Him, The Source, ALLAH is a conclusive argument; so if, He pleases, He will certainly lead you all into calmness together."

150 Tell them this, (Muhammad): "Bring forth your watchers, those who can watch that ALLAH has made this Harrama 'Unlawful, Or Forbidden'." So if, they watch, you are not to watch with them, and don't follow the Ahwaa-a 'Loves - (The Desires)' of those who lie about Our (Our Not My) Signs; and those who don't have faith in the End, and their

Rabb; they think they are acting justly.

*Don't Associate Other Deities
With The Source - Be Good
To Your Parents, And Don't
Kill Your Children - Igws On
Do's And Don'ts*

151 Tell them this, (Muhammad): "Come to Me, so that I can recite what is Haraam 'Unlawful', for you all from your Rabb 'Sustainer', and that is so, that you do not Tushrikuw 'Associate' with Him (Him Not Us) in anything; and to be Ahsaanaan 'Better' to your Waalidayni 'Parents'; and don't kill your own Awlaad 'Children', just because you are Imlaaqin 'Poor'; for We, ([We Not He] Eloheem, Anunnagi) Narzuqukm 'Provide You All', and for them; and don't draw near to Al Fawaahisha 'The Abomination', that which is seen from it and that which is hidden. And don't kill the person that which The Source, ALLAH has Harrama 'Made Unlawful' except by way of the facts (beyond any doubt), that he advised you all with it, so that perhaps you all will overstand."

152 And don't go near the wealth of Al Yatiym 'The Orphan' - (don't try to take the orphan's money), except to do what is Ahsanu 'Best' by it, until he reaches the Ashuddahu 'Age

Of Maturity'; and give him (full power and) fulfill it with justice and weigh everything exactly how it should be weighed; and don't enforce upon any Nafsaan 'Person' (anything) that goes beyond its ability; and when you speak, so speak with justice, even if it is against your own, near of kin - (relative), and fulfill The Source, ALLAH'S 'Ahdi 'Covenant' - (the covenant made with the Ishmaelites and the law); so this is what he has enjoined on you all, so that you may Dhakkaruwn 'Remember'.

153 And surely, this is the narrow path of the ones who stand up straight. So follow it and don't follow (Hadiyths and mens' ways) - the path which (creates) Farraga 'Differences' between you all, (created sects such as Wahhaabi, Shi'ite, Bilalian, Akhwaani, Ahmadiyyah, Bahai); on the path that he has advised you to follow. So, that perhaps you will learn to tremble at the mention (like His newsbearers).

154 Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Mosheh the Scripture - (the law, Torah); thus Tamaamaan 'Complete' (law) upon him, who does what is Ahsana 'Best'; and it, (the Torah) is Tafsiylan 'Detailing' for everything. (Given us all the laws), and it is a calmness and a Rahmatan 'Yielding' (mercy); so that maybe

they, (the Children of Israel) will have faith in the Liqaa-i 'Meeting' of their Rabb 'Sustainer'.

Follow The Qur'aan

155 And this scripture, (the Qur'aan); We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did send down as a blessing, so follow it, and tremble at the mention, that you may be of those who will (be shown), His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy).

156 That you may say this: "That I sent down the scriptures, unto Taa-ifatayni 'Two Sects' - (the Nazarites, the Evangel, Revelations and the Israelites - The Torah), from before (the Ishmaelites of Muhammad's time), and if We, were not Ghaafiliyna 'Aware' of the things that Diraasatihim 'They Studied'.

157 Or do you say, "If indeed (the Qur'aan), had come upon us, certainly we would have been calmed better than them. So the Bayyinatun 'Clear' (proof) has come to you all from your Rabb, and leading calmness and a Rahmatun 'Yielding' (mercy); so who is more in a state of unjustness then he who lies about ALLAH'S verses (signs) and Sadafa 'Turns Away' from it? We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) shall reward those who turn away from Our (Our

Not My) Signs, with an evil pain because they turned away.

158 They don't see nothing except that Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers, (the Eloheem, Anunnaki)' comes to them. If they, (Eloheem) don't come to them, they don't have faith in them; or that your Rabb, should come - (they want Him to come to them); or that some signs of your, (Muhammad's) Rabb, should come on the day when some of the signs of your Rabb shall come - its faith is not useful to any Nafsaan 'Person', which does not have its own faith from before, or acquired Khayraan 'Goodness', through its faith. Tell them this: "Wait, for surely we are waiting."

Don't Divide Yourselfs Up

159 Surely, those who divided their Diyn 'Means Of Judgment', and became many Shiya'aan 'Things' - (Sunni, Shi'ite, Wahhabi, Tajaani, Ahmadiyyah, Bah'i, Moorish Americans, Nation Of Islaam, Five Percenters, Etc.) You should not be of any of them in the things they became. Surely, all their affairs are with ALLAH. Then He (He Not We) will inform them of what they did.

160 And whoever comes with a Hasanati 'Better Thing' (Nuwaubu), so for him (Malachi

Z. York), there will be ten good things like it; but as for him who comes with a bad thing (sectisms), so his reward will be nothing less than its likeness; and they shall not be dealt with unjustly.

161 Tell them this, (Muhammad): "Surely, I am lead into calmness by my Rabb 'Master' to the narrow path of the ones who stand up straight, in the Diynaan 'Means Of Judgment', of those who Qiyamaan 'Upkeep' the Millat 'Rites' (Replenishing) of Aabrawhawm Haniyfaan 'The Upright One'; and he, (Aabrawhawm) was not from Al Mushrikiyina 'The Associates' (some of the Babylonians of Marar's Nimrod's time).

162 (O seal of the males of prophecy, Muhammad by the supreme sovereignty of your Rabb of all things I command you, surely to) tell them: "Salaati 'My Salutation As Worship' and all Nusukiy 'My Doctrinal Rites', and Mahyaayi 'My Life' and Mamaati 'My Death' are all for Him (Him Not Us), The Rabb 'Sustainer' of the Known World.

163 No Shariyka 'Associates' has He (He Not We), and by that Amartu 'I was commanded', and I, (Muhammad) am the Awwalu 'First' of Al Muslimiyya 'The Muslims' (amongst you).

164 (O seal of the

newsbearers/prophets, by the supreme sovereignty of your Rabb, and Creator who is the Master of all things, I command you to) tell them, O (Muhammad): "I do not desire any other Rabb, besides ALLAH, and He (He Not We) is The Rabb of everything; and every Nafsin 'Person' will earn its own, and will not bear a sinful burden of any other. Then, To Your Rabb, 'Sustainer' Is Your Return, so He will inform you (as a newsbearer) in that which you Takhtalifuwna 'Differ'.

165 And He (He Not We), is who made for all you, Khalaaaifa 'Khalifa - Successors, Left Behind', on the planet Tiamat, also called (Qi) 'Earth'; and He Rafa'a 'Raised' Ba'dakum 'Some Of You All' above Ba'din 'Some Of You' in Darajaatin 'Various Grades' - (given to others of you, that He) might try you in what you have been given; (so He can test you by the lessons in the scriptures, that He can see which one of you, the Ishmaelites or Israelites is worthy of the covenant); surely your, (Muhammad's) Rabb 'Master' is Sariy'u 'Quick' with His (His Not Our) Al Iqaabi 'Punishment'. (You see how He wiped out all the tribes of Israel except Yehuwadah)? Yet surely, He, is The Ghafuwrun 'Forgiving', The Most

Rahiymun 'Merciful'.

Sudlqa Allahu El Azim

Chapter Fifty-Six

Revealed In The Year 616 A.D.

Al Saaffaat

(The Arrangers Of Rows)

Original Order Chapter 56;

Wrong Order Chapter 37

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*The Saffaat Drive Away The
Evil With Reproof - Your
Source Is One Creator - Rabb
Of The Skies And Qi -
Anunnagi Adorned The Skies
With Goodness - There Is A
Guardian Against All Of The
Maarid - They Can't Listen To
The Highest Messenger - They
Will Be Followed By A
Brightly Piercing Beam -
Question Them, "Are They A
Stronger Creation Than That
Which We Had Created?"*

56 And Al Saaffaat 'The Arrangers Of The Rows (Heavenly Host).'

2) So they are the ones who drive away the evil with reproof (cast them out of the heavenly skies).

3) So for those who are

Dhikraan 'Mindful', to Taaliyaati 'Recite'.

4) For surely Ilaahakum (Your ALLAH) 'Source,' is One (Creator).

5) Rabb who is 'Sustainer/Master' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth, Qi' and that which is between them and the Rabb, who is 'Master' of Al Mashaariqi 'The Eastwardly Path' (east gate).

6) So for a surety We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have Zayyannaa 'Adorned' Al Samaa-a 'The Skies' of this Physical World with Zayinati 'Goodness, By Way Of The Adornment' of the (shining) Kawaakibi 'Stars' (crystal crafts).

7) And there is a Hifzaan 'Guardian' from all of Shaytaan 'Satan', (The Reptilian's) Maarid 'Rebellions,' (Extraterrestrials also known as the Greys, Maldekians).

8) They can not listen to the to Al Aa'ala 'The Highest' Al Malaa-i 'Angelic Messenger' (The Highest Angelic Being, ALLAH) and they are Yuqdhafuwna 'Shot' from all Jaanibin 'Sides' (fight with Nibiru and the Four Winds).

9) They will be defeated, and their pain will be perpetual.

10) Except for him who charges into the outer limits (the one craft that crashed down in the sea), he is followed by a

Shihaabun 'Brightly' Thaaqibun 'Piercing Beam' (creation of inner sun).

11) Question them: "Are they a stronger creation (the beings created before humans, Maldekians), or the ones We, ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) created (which is humans)?" Surely We Khalaq 'Created' them (humans) from Tiynin 'Clay', Laazibin 'Firmly Fixed'.

Muhammad Is Amazed, But Meccans Still Ridicule - They Don't Remember And Mock At The Signs - They Ask, 'Will They Be Raised To The Skies?' - When The Day Of Judgement Comes, They Will Say, 'Curse Us' - This Is The Distinction Of Agreeable And Disagreeable - They Are Lead Into Calmness To Al Jahiym - On That Day They Will Become Peaceful Ones - When They Ask Questions, They Will Be Told They Are Not Of The Faithful Ones - They Will Be Told They Were Led Astray And They Will Share In The Pain

12) In fact, you, (Muhammad) are amazed and they still ridicule.

13) And when they, (the Meccans) are Dhukiruw 'Reminded', they don't Yadhkuruwna 'Remember'.

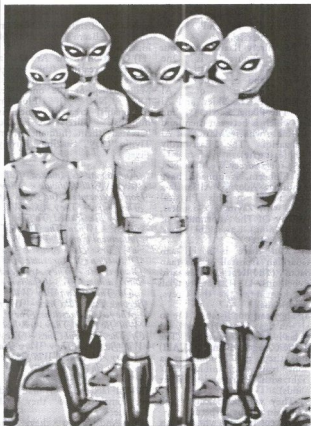


Figure 122
The Greys



Figure 123
A Maldekian (Troglodyte)

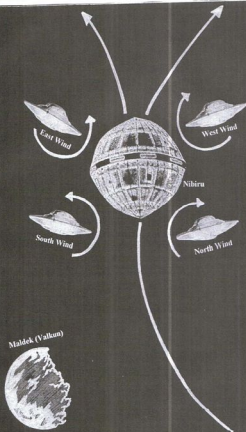


Diagram 21
The Four Winds

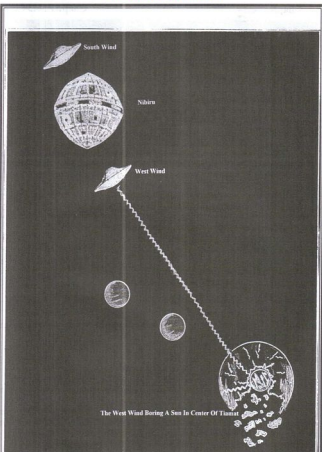


Diagram 22
The Creation Of Your Inner Sun
www.Nuwaupuinc.com

14) And when they see a sign Yastaskhiruwna 'They Mock'.

15) And they said, "That this is nothing except Mubiyn 'Clear' Sihrun 'Magic' (these stories of Nibiru and the Anunnaqi)."

16) When we are dead and we were Turaabaan 'Dust' and Izaamaan 'Bones', surely we will Mabuthuwna 'Be Raised (Back To Life)'?"

17) Or Abaaunaa 'Our Fathers', Al Awwaluwn 'the Ancient Ones'.

18) Say, "Yes. And you are those who will be Dhaakhiruwn 'Viled' (of no amount)."

19) Surely there will be just one Zajratun 'Cry', so if they will Yunzuruwn 'Look'.

20) And they will say: "O Yaawaylanaa 'Curse us!' This is the Day of Al Diyn 'Judgement'."

21) This is the day of Al Fasli 'Distinction' (of agreeable 'good,' from disagreeable, 'bad,') which you are (calling) a Kadhib 'Lie'.

22) You gather those who are in a Zalamuw 'State Of Unjustness' and Azwaajahum 'Their Mates' and that which they were slaving for.

23) From besides The Source, ALLAH; so they lead them into calmness to the narrow path of Al Jahiym 'Hell.'

24) And you stop them; surely they will be the ones who will be asked.

25) What's wrong with you?

Don't you all Tanaasaruwn 'Aid Each Other'?

26) In fact, on the day, they will be Mustasalamuwn 'The Ones Who Surrender In Peace,' (become Muslims).

27) And some of them will approach some of them, asking questions.

28) They (Maldekians) said you (Anunnaqi) were coming to us from about the right (hand) side (your crafts came on the right side. You attacked us).

29) In fact, they will say: "You are not of the Mu'miniyn 'Faithful Ones' (You Can't Be Truthful)."

30) And it, the Sultaan 'Authoritive Power,' (ANU) was not for us (Maldekians), upon you all; but you were a kindred who go to the Taa'ghiyn 'Extreme' to do wrong.

31) So the saying came (as) a fact upon them, of our 'Sustainer,' who is Rabb; surely we will taste (the pain).

32) So we led you astray, surely we were the ones Ghaawiyn 'Astrayed'.

33) So surely in that day they will be ones who share in the pain.

34) Surely, just like that, We (We Not Me) do deal with the guilty ones.

*They. Were Big-Chested
When They Were Told, No
Allahs Would Exist, Except*

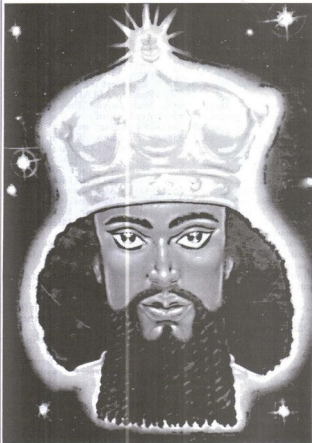


Figure 124
ANU, Son Of Anshar And Kishar
www.Nuwaupuinc.com

By Way Of Allah - The Meccans Ask, "Whether They Shall Leave Their Aalihath For A Possessed Poet?" - Qur'aan Is Sent To Confirm All Of The Newsbearers Before It

35) Surely they, were big-chested, (pouting with pride), when they were told that, "No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of The Source, ALLAH."

36) And they, (the Meccans) say surely, "Shall we leave our AALIHATH (ALLAHS) 'Sources' for a Shaa'ir 'Mad Poet', Majnuwn 'Possessed By A Jinn'?

37) In fact, the facts (beyond any doubt) has come in order to Saddaqa 'Confirm' all of the Rusul 'Ones Sent'. (The Qur'aan was sent to confirm the fact of all of the newsbearers that were sent before it).

Surely They Will Taste The Aching Pain - Except For Al Mukhlasiyn - They Will Have Fawaakih, They Will Be The Mukramuwn In The Jannaat, On Their Beds Meeting Each Other - A Cup From A Spring Encircles Them - There Will Be A White, Delicious For Those Who Drink - A Ghoul, Or A Demon Will Not Be In It - And In Their Presence Will Be Women, Who Are Chasted Eyes, Like They Were Controlled Eggs

38) Surely you will taste the aching pain.

39) You are only rewarded, except for that which you were doing.

40) Except for the slaves of The Source, ALLAH, who are Al Mukh-lasiyn 'The Ones Who Are Purified'.

41) These are for them, a Ma'lumun 'Known' Rizqun 'Provision' (Rizqiyans).

42) Fawaakih, 'Fruits' and they will be the Mukramuwn 'Honored Ones' (Rizqiyans).

43) In Al Na'iyim 'The Gentle' Jannaat 'Gardens'.

44) On their Sururin 'Beds' Mutaqaabiliyn 'Meeting Each Other'.

45) A Kaasin 'Cup' encircles upon them from a Ma'iyin 'Spring, Fountain'.

46) Baydaa-A 'White', Ladhatin 'Of A (Delicious) Taste' for those who Shaaribiyn 'Drink'.

47) There will not be in it (Rizq), a 'Ghoul' A Demon and they are not exhausted from it.

48) And they will have in their possession Qaasiraatu 'Chaste Women', Al Tarfi 'Restraining Their Glances' with their 'Aynun 'Eyes'.

49) Like they were Maknuwnun 'Controlled' Baydun 'Eggs'.

They Will Approach Each Other Asking Questions - The Story Of His Friend Who Is In Jahlym - Eloheem Made

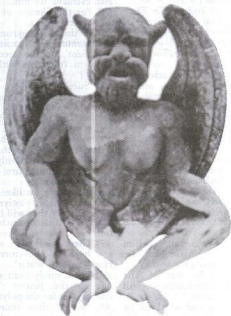


Figure 125
Ghoul -Gargoyle

*The Tree Of Zaquwm A
Temptation For The Unjust
Ones - A Tree From The
Foundation Of Hell - Its
Ascension Is Likened To The
Heads Of Al Shayaatiyn -
They Found Their Fathers,
Who Were Lost - Warners
Were Sent Unto Them*

50) So they will approach some of the others of them, asking questions.

51) A sayer will say, from amongst them: "Surely I had a Qariyn, 'Intimate Associate.'

52) He says: "Surely you will be from Al Musadiqiyn 'The Truthful Ones'."

53) When we died and we were brought back to exist as Turaabaan 'Dust' and Izaaman 'Bones', surely we will be the ones to be judged.

54) He shall say: "Are you one who looks?"

55) So he looked, and saw him in the midst of Jahiym 'Hell' (fire for the polytheists.)

56) He said by way of The Source, ALLAH: Surely you will cause me to perish."

57) And if it had not been by the Ni'matu 'Grace' of my Rabb, I would have too, been from the brought ones (in your presence).

58) So aren't we by way of death, (to die)?"

59) Except our Al Uwlaa 'First' Mawta 'Death', and we will not be the ones with an (aching)

pain.

60) Surely this is Al Aziym 'The Supreme' Al Fawzu 'Achievement' for him.

61) For the likeness of this, so the workers works.

62) Is this, a Khayrun 'Good' (Entertainment) Nuzulan 'That Was Sent' or the tree of Al Zaquwm (the tree with bitter fruits)?'

63) Surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made it a Fitnatun 'Temptation' for the ones in Zaalimiyna 'A State Of Unjustness'.

64) Surely it's a Shajaratun 'Tree' that comes forth in Asli 'Foundation' of Al Jahiym 'The Hell' (a flaming fire for the polytheists).

65) Its rising is like Rauwsu 'Heads' Of Al Shayaatiyn.

66) So surely they will be eating from it, so their stomachs will be full.

67) Then, surely they will have a Shaybaan 'Mixture' from Hamiym 'Hot Water'.

68) Then, surely their return is not to the Jahiym 'Hell' (a flaming fire for the polytheists).

69) Surely they found their fathers who are astrayed, (lost in error).

70) So they are on their tracks, making them hurry.

71) And indeed most of Al Awwaliyna 'The Ancient Ones' went Zalla 'Astray' before them (they followed Enqi).

72) And certainly We (We Not Me) sent Mundhiriyn 'Warners' unto them.

73) So look (at) how the end was of Al Mundhiriyn 'The Warners'.

74) Except Al Mukhlasiyna 'The Purified Ones', ALLAH'S slaves.

*Noach Called On The
Eloheem - Their Offspring
Were Made The Endurers -
Noach Left In The
Remembrance Of The Last
Ones - Peace Be Upon The
Faithful Noach - The Others
Were Drowned*

75) And indeed Noach did call on Us (Us Not Me); and We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) are the most excellent (and only ones) who can return an answer (to a prayer).

76) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Najaynahu 'Delivered Him' and his family from Al 'Aziym 'The Great' distress (sorrow).

77) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) made his Zurriyat 'Offspring'; they're Al Baaqiyn 'The Endurers,'.

78) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) left him as a (remembrance) upon Al Aakhiriyn 'The Last Ones' (End Of One World Beginning Of Another).

79) Salaam 'Peace' be upon Noach in Al 'Aalamiyn 'The Known World'.

80) Surely, just like that, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) reward Al Muhsiniyn 'Those Who Does Their Best'.

81) Surely he was from Our (Our Not My) slaves, Al Mu'miniyna 'The Faithful Ones'.

82) Then We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Aghraqnaa 'Drowned' the others.

*Abrawhawm Came To His
Rabb, With A Peaceful Heart
- Abrawhawm Asks His
Father, Terakh And His
Kindred, What Do They
Slave For Hebrews? -*

*Abrawhawm In His Freetime
Went To Their Sources, Baal
And Idols, And Said: 'What
Don't You Eat?*

*Why Don't You Speak?"
Then He Struck Them Down
- The Canaanites Under
Marar, Said Cast Him In The
Ur/Fire - Canaanites Made
Low And Vile Because They
Schemed On Abrawhawm*

83) And surely from the Shi'ah, 'Sects' of Abrawhawm (Aramian, Akkadian, Ashurian, Eberian).

84) When he came to his Rabb, 'Sustainer' with a Saliymmin 'Peaceful' Qalbin 'Heart'.

85) When he, (Abrawhawm) said to his father, (Terakh) and his kindred - (the Babylonians): "What do you Abudu 'Slave For'?"

86) Do you want false AALIHATIN (ALLAHS) 'Sources' without The Source, ALLAH?"

87) So what's your Zanna 'Thought' of the Rabb of Al Aalamiyn 'The Known World'?

88) So he (Abrawhawm) looked, one glance at the Nujuwmm 'Stars'.

89) So surely, he, (Abrawhawm) said: "I'm Saqiymun 'Ill'."

90) So they turned away from him, (and) they departed.

91) Solely by himself, (Abrawhawm) went to their AALIHAAT (ALLAH'S) 'Sources', so he said: "What don't you eat?"

92) "What's wrong with you, don't you speak?"

93) Solely by himself, (Abrawhawm in his freetime), struck a strike on them by his right (hand).

94) So they (the Babylonians) approached him, hurrying.

95) He (Abrawhawm) said: "What do you slave for that which you Tanhituwn 'Hew Out' (idols you carried yourselves)?"

96) And The Source, ALLAH has Khalaqakum 'Created You All', and that which you Ta'maluwn 'Make' (Idols).

97) They (Nimrods, also called Marars Enosites: the Canaanites) said: "Abnuw 'Build' for him, (Abrawhawm) a Bunyaanaan 'Fire, (Ur) Place', then throw

him in the Jahiym 'Hell,'."

98) So they, (the Canaanites) wanted to Kaydaan 'Scheme' on him, (Abrawhawm) so We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) made (them Canaanites), Al Asfaliyna 'The Lowest Of The Low, Vile.'

Abrawhawm Said, He Is Going To His Rabb. For Leading Calmness - Eloheem Bestowed On Abrahawm, From The Perfectionists - Abrawhawm To Sacrifice Isaac - This Was A Test For Abrahawm - They Ransomed The Throat With Another Slitting Of The Throat - Peace Be Upon Abrahawm

99) And he, (Abrawhawm) said: "Surely I am going to my Rabb, who is 'Sustainer/Master'. He will lead me into calmness."

100) And (Abrawhawm) said, "My Rabb bestows only on me, from those who are Al Saalihiyn, 'The Perfectionists'."

101) So We (We Not I) brought good news to him, (Abrawhawm) of a (very) Haliymin 'Kind', Ghulaamin 'Young Boy'.

102) So when he, (Yitschaq) became big enough to assist his father, (Abrawhawm) said to him (Yitschaq): "O my son, I Al Manaami 'Dreamt' that I was Adhbahuka 'Cutting You For Sacrifice'. Now look (straight) at me and tell me what do you see (in this dream)? He, (Yitschaq)



Figure 126
Abrawhawm Sacrificing Yitschaq (Yitskhaq/Isaac)

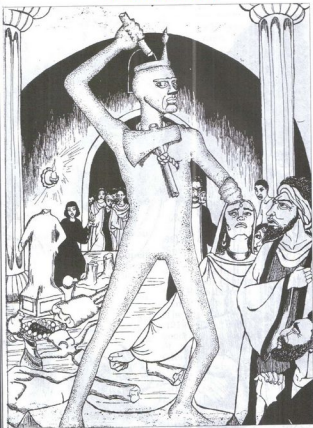


Figure 127
Abrawhawm Broke The Canaanites Idols

said: O my father: "Do whatever you are commanded by The Source, ALLAH. You will find me, if it pleases The Source, ALLAH, of Al Saabiriyn 'The Patient Ones'."

103) So when they both had Aslamaa 'Surrendered' themselves; (Abrawhawm and Yitschaq;) and (Abrawhawm) put him Tallahu 'Face-Forward' to the Jabiyna 'Ground'.

104) And surely we called out to him saying, O Abrawhawm."

105) Certainly, you have Saddaqta 'Confirmed The Truth'; (Abrawhawm) of this vision. Now just like that, We (We Not He) reward those of you who does their best.

106) Surely this was for him, (Abrawhawm) nothing but a Mubiyn 'Clear' Al Balaa-u 'Trial, Test'.

107) And We (We Not He) Fadaynaahu 'Ransomed Him' with A 'Aziymmin 'Supreme' Dhibhin 'Slitting Of The Throat'.

108) And We (We Not He) left (this recorded in history) upon him, from then, until Al Aakhiriyn 'The End Of All Times'.

109) So Salaamun 'Peace' be upon Abrawhawm.

110) Just Like that, We (We Not He) will reward those that does what's best.

111) Surely he, (Abrawhawm) was of Our (Our Not My) slaves,

Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones'.

112) And We (We Not He) gave him good news of Yitschaq, a Newsbearer from Al Saalihiyn 'The Perfectionists'.

113) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) put blessings upon him, (Abrawhawm) and over Isaac and from both of their offspring is a doer of what is Muhsinun 'Best' and this is Mubiynun 'Clear' to one who's in a Zaalimun 'State Of Unjustness', to his Nafs 'Ownself'.

Eloheem, Anunnaqi Granted Hope To Moshch And Aharawn - We Delivered Both Of Them And Their Kindred - They Both Were Lead Into Calmness On The Narrow Path - Eloheem Reward The Doers Of Good - They Both Are From Our Faithful Ones

114) And indeed We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) have Manannaa 'Granted A Hope' on Moshch and Aharawn.

115) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) delivered both of them and (both) of their kindred from The 'Aziymi 'Supreme' Al Karbi 'Distress (Sorrow)'.

116) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) aided them so they were the overcomers.

117) And We ([We Not I]

Eloheem Anunnaqi) gave them two, (Mosheh and Aharown) the clear Mustabiyna 'Manifested' Scripture -(the Torah).

118) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) lead both of them (Mosheh and Aharown) into calmness on the narrow path of those who stand up straight.

119) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) left behind both of them (in the remembrance) of Al Aakhiriyn 'The Last Ones' (those after them).

120) Salaamun 'Peace' be upon Mosheh and Aharown.

121) Just like that, surely We (We Not He) reward those who does what is best.

122) Surely, they both are from Our (Our Not My) slaves, Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones'.

Elijah (Ilyas) Is Of The Ones Sent - He Asks Them, "Why Do They Call Upon Baal, And Forsake The Best Of Al Khaaliqiyn?" - Rabb Of Your Fathers, Al Awwaliyn - Israelites Denied Elijah And Called Him A Liar - Peace Be Upon The Descendants Of Elijah - Elijah Is Of The Faithful Ones

123) And surely Elijah is of Al Mursaliyn 'The Ones Sent'.

124) When he said, to his kindred (Israelites), "Don't you

tremble at the mentioning?"

125) Do you call upon Ba'laan 'Baal (Lord And Master)' and Tadharuwna 'Forsake' the Ahsana 'Best' of Al Khaaliqiyn 'The Creators'?"

126) The Source, ALLAH is your Rabb, 'Sustainer' and the Rabb of your fathers, Al Awwaliyn 'The Ancient Ones' (Anunnaqi).

127) But they (called Eliyah) a liar, now surely they are the ones who are made to be present (for the fire, Hell).

128) Except the slaves of ALLAH, Al Mukhlasiyn 'The Purified Ones' (Nuwaubu).

129) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) left him behind, upon Al Aakhiriyn 'The Last Ones'.

130) Peace be upon the Il 'Descendants' of Yaasiyna 'Elijah'.

131) Just like that, surely We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) reward those who does what's best.

132) Surely he was from Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) slaves, Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones'.

Iywt Was From The Mursaliyn - Iywt And His Family Was Saved From The Destruction - Yonah Was Of The Ones Sent - Yonah Cast Lots And Was Condemned - Yonah Swallowed Up By A



Figure 128

Baal, The Deity Worshipped By The Children Of Israel

Whale - He Would Have Remained In The Whale's Stomach. Until The Day They Will Be Raised - He Was Cast Naked And Ill - And A Tree From The Yaqtiyn Was Brought To Him - He Was Sent To A Hundred Thousand Or More - They Were Faithful And Given A Temporary Enjoyment - They Ask Questions As, "Does Their Rabb, Have Females And Can They Be Watchers" - Or Has He Chose The Daughters Over The Sons?

133) And surely Luwt was from Al Mursaliyn 'The Ones Sent,'.

134) When We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) saved him, (Luwt) and his family all of them.

135) Except an 'Ajuwzaan 'Old Woman (Luwts wife Sabriyya)' in (amongst) those who stayed behind.

136) Then We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Damara 'Annihilated' the others.

137) And surely you pass by, on them in the Musbihiyna 'Early Daytime Hour'.

138) And by Al Layl 'The Shadow Hour Period', do you not have intelligence?

139) And surely Yonah was of the Ones Sent.

140) When he, Yonah escaped to Al Mush-huwn 'The Loaded' Falki 'Craft'.

141) So he agreed to cast lots,

and he was of Al Mud-hadiyn 'The Condemned Ones'.

142) So he, (Yonah) was Taqamahu 'Swallowed Up' by Al Huwtu 'The Whale' (submarine), and he was Muliymun 'Worthy Of Blame'.

143) Even then, if he had not been of those who glorify.

144) He would have remained in its, (the whale's) Batni 'Stomach' to the day, they will be Yub'athuwn 'Raised (Back To Life)'.

145) So We (We Not He) casted him while he was 'Araa-i 'Naked' and he is Saqiymun 'Ill'.

146) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) brought forth a tree upon him, from of the Yaqtiyn 'Gourd'.

147) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) sent him to a hundred thousand or more.

148) So they were faithful, so then We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) gave them a Matta-a 'Temporary Enjoyment', for a while.

149) So they asked questions: Do your Rabb 'Sustainer,' have Banaatu 'Daughters' and for them are Banuwna 'Sons'?

150) Or that We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Khalaq 'Created' Al Malaaikat 'The Angelic Messengers, (the Eloheem, Anunnaqi)' Inaath 'Second Part, Females' and they are Shaahiduwn 'Watchers'?

151) Is not what they say, is

from their own Ifk 'Invention'?

152) The Source, ALLAH has Walada 'Conceived' and surely they, verily are Kaadhibuwna 'Liars'.

153) Astafa 'He chose' the Banaat 'Daughters,' over the Baniyn, 'Sons?'

154) What is wrong with you all, how you use (your) wisdom?

155) Don't you all Tadhakaruwn 'Remember?'

156) Or do you have a Mubiyn 'Clear', Sultaanun 'Authoritive Power'?

157) So you all bring forth your scripture, if you all were Saadiqiyn 'Truthful Ones'.

The Meccans Made Family Ties Between Allah And The Jinn - Glory Be To The Source Of That Which They Attribute To Him - The Meccans - They Desire A Remembrance Of The Awwaliyn - They, The Meccans Concealed That Which They Knew To Be The Facts About The Qur'aan - The Ones Sent Would Be Aided - Our Armies Are The Conquerors - Their Pain Will Descend Down Upon An Open Field - Glorified Is The Rabb Of Might And Honor - Praise Be To Allah, Rabb Of The Known World

158) And they, (the Meccans, Red Arabs) made a Nasabaan

'Blood Relationship', (family tie) between him, and between Al Jinnati 'The Jinns', (Red Arabs and joining with the Devil in flesh) and indeed, Al Jinnatu 'The Jinns' knew that they will be brought (in his presence, and shall be given a punishment).

159) Glory be to The Source, ALLAH, of that which they attribute to Him.

160) Except for the slaves of The Source, ALLAH, Al Mukhlasiyna 'The Purified Ones' (Nuwaubu).

161) So surely, they and that which they slave for;

162) You all cannot Fatana 'Tempt' anyone with it.

163) Except he who is Saali 'Going To' Jahiymi 'Hell'.

164) And there is not nothing for us, except a known Magaamun 'Place' (Rizq).

165) And surely We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi), verily, We (Eloheem Anunnaqi) are Al Saafuwna 'Ones Arranged In Ranks'.

166) And surely We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi), verily, We are the ones who glorify him.

167) And if they were, they would have said:

168) If there was only in our possession, a Dhikraa 'Remembrance', (reminder) from the Awwaliyn - (Eloheem, Dinneer, who are 'The First Ones').

169) Verily, we would have been

the slaves of The Source, ALLAH, Al Mukhlasiyna 'The Purified Ones'.

170) So they concealed that which they knew to be the facts by way of it - (the Qur'aan); then they will know.

171) And indeed Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) words has passed before to Our slaves, Al Mursaliyna 'The Ones Sent'.

172) Surely they will be Al Munsuwruwna 'The Ones Aided'.

173) And surely our Jund 'Armies', they are Al Ghaalibuwna 'The Conquerors'.

174) So he turned away from them, for a while.

175) And look at them and they will see.

176) So they Yasta'jiluwn 'Wish To Hasten' on Our (Our Not My) Azaab 'Pain'.

177) So when it (is) Nazala 'Sent Down' in their Saahat 'Open Space, Field' (nature will do her work in the last days); so evil is the early daytime hour of those who were Al Mundh-ariyn 'Warned'.

178) And you are to turn away from them, for a while (1970-2,000. 30 years to break the spell).

179) And you are to see, and then they will see.

180) Glorified is your Rabb, 'Sustainer', Rabb 'Sustainer' of Al Izzati 'The Might (And Honor)', of that which

Yasifuwna 'They Attribute'.

181) And Salaamun 'Peace' be upon Al Mursaliyna 'The Ones Sent'.

182) And Al Hamdu 'The Gratitude' is for him, Rabb of Al Aalamiyn 'The Known World'.

Sudisqa Allahu El Azim

Chapter Fifty-Seven

Revealed In The Year 619 A.D.; Verses 27-29

Were Revealed In Medina

Luqmaan


(The Obstructor)

Original Order Chapter 57;

Wrong Order Chapter 51

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Book Of Wisdom Was Given To Luqman - Those Who Perform Salaat And Zakaat Are Calmed By Their Rabb - Those Who Take The Qur'aan As A Mockery, They Will Have A Disgraceful Pain

57 () Alif: ALLAH, Laam: Leummiym (The Obstructor); Miym: Muhsiniyn (the doers of that which is best; ALLAH; his Midianite Prophet Leummiym of the book of wisdom for those who are

Muhsiniyn 'the doers of that which is best').

2) These are the verses of the Scripture of Al Hikmah 'The Wisdom': (given to the newsbearer Leummiym, meaning "The Obstructor".)

3) A calmness and a Rahmatan 'Yielding' (mercy) for those who are Muhsiniyn 'Doers Of That Which Is Best'.

4) Those who perform Salaat 'Salutation As Worship' and they give Zakaat, 'Charity' and they will certainly be Yaqiynawn 'Assured' in Al Aakhirat 'The End'.

5) These are those who are lead into calmness by their Rabb, who is 'Sustainer'; these are they, who are the Muflihuwn 'Prosperous Ones'.

6) And of the Enosites, there are those who buy other than, (the Qur'aan), for the Hadiyth 'Tales' (they buy false hadith other than the Qur'aan) for amusement; and in order to lead (Enosites) astray (hadith, and sunna will mislead you), into error, off the path of The Source, ALLAH, without any knowledge; and they take it, (The Qur'aan) as Huzuwaan 'Mockery' (they use Hadith over Qur'aan). For them, is a Mu'hiynun 'Disgraceful' pain.

7) And when Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) signs - (all the scriptures are recited to him, the false Muslim), he turns

around, Mustakbir 'Big-Chested, Pouting With Pride', as if he does not hear it - (the scriptures) being recited in his own ears as if he is deaf. So give him the news of the aching pain.

Jannat Is For The Peaceful Faithful Ones - He Created The Skies Without Supporting Columns - Leummiym Is Given The 19 Books Of Wisdom, And Told To Be Grateful - Leummiym Tells His Son Yethro, Not To Slave For Idols' - Don't Obey The Alkites Of Mid'yan

8) Surely those who are faithful - (the true Peaceful Ones) and work to Saalihaati 'Perfect Themselves', Jannaat 'The Gardens' is for them.

9) They shall be in them, (the Enclosed Gardens of Delight) eternally. This is what The Source, ALLAH Wa'da 'Promised' and it is a fact (beyond any doubt) and He is Al Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

10) He (He Not We), Khalaq 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' Beghayri 'Without' 'Amadin 'Supporting Columns'; that you can Tarawnahaa 'See Them', and He Alqaa 'Casted Down' (things which have form and are) Rawaasiya 'Immovable As Mountains' in the planet 'Qi,' also known as Earth, so that

they don't Tameeda 'Move About' you; and He, Bath-tha 'Scattered' all kinds of Daabbatin 'Crawling Creatures' (pairs of species out of generosity) in the Earth; and We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) sent down water from the Sky, then We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) caused to grow in it, of every kind of Kariymin 'Noble' (creatures in) Zawjin 'Pairs, Mates' (The Evolution Of Humans).

11) This is the creation of The Source, ALLAH (The First Adam), so then show me, (Leummiym), that which those other than He, (Reptilian Greys) created without Him (human beast, Behemoth). In fact, the ones in a state of unjustness are clearly astray into error (they are the cursed seed).

12) And indeed We (We Not He) gave Leummiym (the Prophet who is the father of Yethro), the Wisdom - (19 Books of Wisdom,) saying: "Be thankful to Him, and whoever is thankful, 'grateful,' then surely he is being thankful for his ownself, and whoever conceals that which they know to be the facts - ('Al Hikmah,' The Wisdom), so surely, ALLAH is Ghaniyyun 'Independent', (he doesn't need them), Hamiydun 'All Worthy Of Gratitude'.

13) And when Leummiym said to his son, (Yethro) while he

cautions him: "O my son, don't Tashriku 'Associate' (other deities), with The Source, ALLAH. Surely, Al Shirka 'The Associates, Partners' is for those in a state of 'Aziymun 'Supreme' unjustness (Canaanites and their seed).

14) And We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Wasaynaa 'Enjoined' for the Enosite to (respect) his parents, for his mother Hamalat-hu 'Carried Him', (9 months). (His mother) was faint and weakened for him, (in childbirth) and she Fisaaluhu 'Weaned Him' for 'Aamayni 'Two Years'. So be grateful to Me, (The Source), and your Waalidayda 'Parents'; for Al Masiyr 'The Destination' is to Me.

15) And if they, (the Aikaitees of Midian) try to force you, (Yethro) into Tashrika 'Associating (other deities)' with Me (Me Not Us), of which you, (Yethro) have no knowledge, don't obey, or follow them, (the Aikaitees of Midian); and make your companions only out of kindness, of those in this physical world; and only follow the path of those (Midianites) who repented and turned to Me. Then to Me, will you, (Yethro and the Enosites of Leummiym) will all return; and then I (I Not We), will inform you all (as a newsbearer) of that which you were doing.



Figure 129
Reptilians



Figure 130
Behayma (Behomath), Human Beasts

16) (The Prophet Leummiym said): "O my son, (Yethro), surely even if it, the wrong you do is as small as the weight of the seed from a Jardalin 'Mustard Seed', which is to be found in the center of a Sakhratin 'Rock', or even in Al Samaawaati 'The Skies' or (anywhere else) in the planet Qi/Tiamat, The Source, ALLAH will bring it out. For surely, The Source, ALLAH is Latiyfun 'Subtle', Khabiyrun 'Aware'.

Leummiym Orders Yethro To Make Salaat - And Not To Scorn And Walk Arrogantly In The Planet. To Impress Enosites - The Source Made Every Thing Subservient To You All In The Skies And Qi

17) (The newsbearer Leummiym said): "O my son, (Yethro), get up when it is time to make Al Salaat 'The Salutations As Worship' and order the doing of that which you know is good; and forbid the doing of wrong, and be patient on that which afflicts you. Surely, that is of the tasks of the 'Azmi 'Determined' Ones - (Warners, The Mahdi, The Mujaddid 'Reformer', Malachi Z. York).

18) And don't Tusa'iru 'Frown' (in a scornful manner in order to leave an impression) on other Enosites; and don't walk about in the planet 'Earth,' Al Ard/Qi

arrogantly. Surely The Source, ALLAH does not like any arrogant and proud boasters.

19) And control the way you walk with dignity and be Aghdud 'Moderate' with your, (Yethro's) voice; for surely, the most hateful of all voices is the voice of Al Hamiyri 'The Asses' (yelling out loud).

20) Can't you all see that The Source, ALLAH made everything in the Skies and the planet Qi, 'Earth' subservient for you all and completed for you all with grace; both the Dhaahiratan 'Outward' and the Baatinatin 'Inward'? And yet there are still Enosites who dispute with you, (Yethro) in (respect) of The Source, ALLAH without any knowledge and without leading calmness and without a Mubiyn 'Clear' scripture?

The Aikaites Of Midyan Were Warned To Follow That Which Allah Has Sent Down - Allah Knows The Essence Of The Chests - All In The Skies And The Earth Is His - Yahuwa Is Self-Sufficient - If All Of The Trees Were Quills, And There Were Seas, It Still Wouldn't Be Able To Exhaust The Words Of The Source - Your Creation, And Resurrection Is Like A Single Spirit

21) And when it is said to them, (the Aikaitees of Midian), follow that which is sent down from The Source, ALLAH - (all of scriptures); they, (Aikaitees of Midian) say: 'Nay! We will follow that which we found left for us, by our fathers (customs, traditions).' (He was sent to the Aikaitees, who were associates. Would they follow that which their fathers left); even if, it is Al Shaytaanu 'Satan', (The Reptilian, Haylal, son of Shakhar) who calls them into the pain of the Sa'iyir 'Flaming Fire'.

22) And as for him who Yuslim 'Becomes Peaceful' (a Submitting Muslim) with Wajhahu 'His Face' to The Source, ALLAH, and he is Muhsinun 'The Doers Of That Which Is Best'. So indeed, he has taken hold with Al Wathqaa 'The Firmest' Al 'Urwati 'Hand-Hold' (on the rope), and to ALLAH is the end of all commands.

23) And as for him who is a concealer of the facts, don't let the fact that they conceal that which they know is a fact, make your grieve; for to Us, ([Us Not We] Eloheem, Anunnaqi) will they return (in the End); and then We ([We not I] Eloheem, Anunnaqi) will inform them (as a newsbearer) about all that they did. Surely, The Source, ALLAH knows and is the essence of Al Suduwri 'The Chests'. (He made man a living

soul by breathing His spirit into them.)

24) We ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) give them, (the concealers of the facts) a little grace; then We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) will force them (the concealers of the facts) into a Ghaliyz 'Severe' pain.

25) And if you indeed ask them who Khalaq 'Created' the Skies and Al Ard 'The Planet (Qi)', verily they will say, "The Source, ALLAH. Then say: "All gratitude is due to Him (Him Not Us); yet most of them don't know that.

26) All that is in the Skies and all that is in the planet Earth is for Him (Him Not Us); surely The Source, ALLAH, He (He Not We) is Al Ghaniyyu 'The Independent' (and to whom) Al Hamiydu 'The Gratitude' (is due)."

27) And if all the trees in the planet (Qi/Tiamat), 'Earth' were Aqlaam 'Quills' and Al Bahru 'The Sea' which Yamuddu 'Extends' (the Earth) and even after that, add seven seas; the words of The Source, ALLAH would still not be Nafidat 'Exhausted'. For surely, The Source, ALLAH is Al 'Aziyyun 'The Mighty', Hakiymun 'Wise'.

28) Your creation nor your Ba'thukum 'Resurrection' (after death), is anything but like a single Nafs 'Person/Spirit'. Surely The Source, ALLAH is

The Samiy'un 'Hearing',
Basiyrun 'Seeing'."

*Yethro, Told, That Allah
Made The Sun And The Moon
Subservient To Them' -
Whatever The Aikaitees Call
On For Help, Is Nothing But
Falsehood - Yahuwa Is The
Most High - Aikaitees Are Told,
To Tremble At The Mention
Of Allah' - The Knowledge Of
The Final Hour Is In The
Source's Presence - Allah
Alone Knows What Is In The
Wombs*

29) Didn't you, (Yethro) see that The Source, ALLAH Yuliju 'Penetrates' (the darkness) of Al Layl 'Shadow Hour Period' into (the light) of Al Nahaar 'The Daytime' and He, Yuliju 'Penetrates' (causes the light of) Al Nahaar 'The Daytime' (to enter) into (the darkness of) Al Layl 'The Shadow Hour Period' and He (He Not We), made Al Shams, 'The Sun' and Al Qamar, 'The Moon' Sakh-khara 'Subservient'; each Yajri 'Runs' towards a Ajlin 'Fixed' and Musaamman 'Determined Time', and surely ALLAH is Khabiyrun 'Aware' of all that you do."

30) It is by things like that, you know He (He Not We), The Source, ALLAH is the fact (beyond any doubt); and surely that whichever they, (Aikaitees of Midian) call on for help besides

Him (Him Not Us), is Al Baatilu 'Falsehood'; and surely, The Source, ALLAH He (He Not We) is Al 'Aliyyu, 'The Most High, Exalted,' (ANU) Al Kabiyru 'The Biggest, Oldest'.

31) Didn't you, (Yethro) see that Al Fulka 'The Crafts' Tajri 'Runs (Sails)' in Al Bahri 'The Sea' by the grace of The Source, ALLAH? And indeed He (He Not We) shows you all His (His Not Our) signs in this way. Surely in that, are signs for all who are Sabbaarin 'Grateful' and Shakuwrin 'Patient'.

32) And when they, (the Aikaitees) were Ghamiyahum 'Covered' over by a Mawjun 'Wave', as big Kal-zulali 'As A Mountains Shadow', they, (the Aikaitees) called out to The Source, ALLAH as if they had Mukhlisiyna 'Purified' for Him (Him Not Us), their Diyn 'Means Of Judgment'. But, when We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made them, (the Aikaitees of Midian safe from it, the big wave and) brought them to dry land, then after that, some of them - (Aikaitees of Midian who kept to the right path) had Muqtasidun 'Good Intentions', and none of them rejected Our (Our Not My) signs except for the Khat-taarin 'Treacherous', concealers of the fact (of the Wisdom).

33) O you Naas! Tremble at the mention of your Rabb, who is 'Sustainer', and Akhshaw

'Dread' the day when no Waalidun 'Father' will be able to benefit his Waladihi 'Son' and no Mawluwdun 'Child' will be able to benefit his Waalidihi 'Father' (book of Malachi). For the thing, that The Source, ALLAH promised is a fact (beyond any doubt). So don't let the deceivers deceive you in respect of The Source, ALLAH - (things pertaining to The Source and His scriptures and His newsbearers).

34) Surely The Source, ALLAH, has in His (His Not Our) possession, the knowledge of Al Saa'ati 'The (Final) Hour' and He (He Not We) sends down rain; and He knows that which is to Al Arhaami 'Yield In The Wombs'; and no one else can perceive with His Nafsun 'Spirit' what you will add up to - (earn in the End,) tomorrow and no one can perceive his own destiny here on Earth. Death will meet his spirit/self; surely ALLAH is Khabiyrun 'Aware' (of all this,) 'Aliymun 'The Knowing'.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Fifty-Eight

*Revealed In The Year 614 A.D. (Verse 6 Was
Revealed On Another Date)*

*Saba
(Sheba)*

*Original Order Chapter 58;
Wrong Order Chapter 34*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*All Praise Is For
Allah - Allah Is The Knower
Of The Unseen - He
Rewards Those Who Work
To Perfect Themselves With
An Honorable Risa - Those
Who Are Given Knowledge.
Know That The Qur'aan Is
A Fact From Your Rabb*

58 All gratitude is for Him (Him Not Us); that which is in Al Samaawaat 'The Skies,' and the planet Qi, also known as Al Ard, 'Earth', and that which is in Al Aakhirat 'the End', and He (He Not We), is Al Hakiymu 'The Wise' and Al Khabiyr 'The Aware'.

2) He (He Not We) knows that which Yaliju 'Penetrates' (passes) into the Ard/Qi (crafts that go into Shamballah the Inner World), the planet 'Earth' and that which Yukhruju 'Comes Out' of it (crafts that come out of Shamballah), and that which Yunzilu 'Comes Down' from Al Samaa-i 'The Sky' (crafts that come to earth) and that which Yu'ruju 'Goes Up' unto it (crafts that leaves); and He is Al Rahiymu 'The Most Yielding', Al Ghafuwru 'The Forgiving'.

3) And those who conceal that

which they know to be the facts, say: "Al Saa'atu 'The Hour' will not come upon us (Judgment Day - the return to Nibiru)." Tell them this, (Muhammad): "O yes, and (I swear by) my Rabb, who is 'Sustainer' that, verily it is coming unto you all." The Knower of Al Ghaybi 'The Unseen' (Things not foreseen by the naked eye). Nothing escapes Him (Him Not Us), not even at the weight of a Zarrat 'Atom' in Al Samaawaati 'The Skies', nor in the planet (Tiamat/Qi), 'Earth'; nor anything Asgharu 'Smaller' than that, nor anything Akbaru 'Bigger' than that, besides that, it has been inscribed in a Mubiyn 'Clear' scripture (Akasha records).

4) That He (He Not We) may reward those who try to Al Saalihaati 'Perfect Themselves'; these are the ones, for them is a Mughfiratun 'Forgiveness' and a Kariymun 'Generous' (Honorable) Rizqun, 'Provision' (return to Rizq).

5) And for those who strive hard in Mu'aajiziyn 'Invalidating' Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) signs (trying to make it look untrue); for them is a pain, these are the ones who will have an aching torment.

6) And those who have been given the Ilm 'Knowledge,' are able to see that which was sent down to you, (the Qur'aan,

Muhammad) is from your Rabb and that it is a fact (beyond any doubt) and a leading calmness to the narrow path of Al 'Aziyy 'The Mighty' (one, worthy of) Al Hamiydi 'The Gratitude'.

*Concealers Of The Facts
Ridicule Muhammad - Or
They Claimed He Is Possessed
By A Cherubeem - David
Given A Fadl, From The
Eloheem - The Wind And The
Jinn Are Made Subservient To
Shelomoh - The Jinn Didn't
Know About His Death*

7) And those who conceal that which they know to be the facts, say (in ridicule): "Shall we point out to you, a Rajul 'Mortal Man' who informs you all (as a newsbearer) that when you are scattered totally, Mumazzaqin 'Disintegrated'; even then, you surely shall be returned into a Jadiyd 'New' Khalaq, 'Creation' (your Etherian state)."

8) Has he Aftaraa 'Invented' a Kazibaan 'Lie' about The Source, ALLAH, or is he being used by a Jinnatun 'Disagreeable, Malevolent Cherubeem 'Demon.' In fact, those who don't have any faith in the End, (the Resurrection) are to be tormented and are astrayed far out into error.

9) They do not see then, that which is before them and that which is behind them of Al

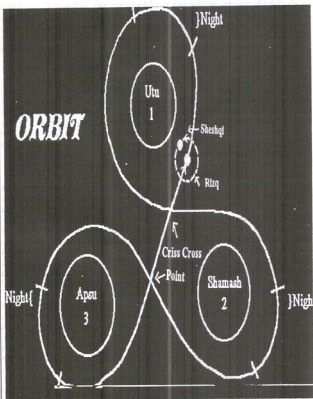


Diagram 23
Rizq

Samaa-i 'The Skies' and the planet Qi, 'Earth (the other cycles)?' If We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) please, We (Eloheem Anunnaqi) will make them Nakhsif 'Sink' into the Earth (cast them into the prison of Kurnugi), or We will cause a Kisafaan 'Piece' to Nusqit 'Fall' upon them from the Sky (meteorite shower); verily in this, is a sign for every slave turning unto (The 'Master' Asking How He Did It).

10) And indeed We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) gave Dawiyd a Fadl, 'Preference' from us, saying: "O Mountains! You are to Awwibi 'Sing' (the praise of The Source), along with him, and you Al Tayra 'The Birds', too;" and We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) made Al Hadiyd 'The Iron' Alannaa 'Soft' for him.

11) Saying unto (Dawiyd): "You are to make coats of mail, and measure its links and work to Saalihaan 'Perfect Yourself'; surely I, see all that which you do."

12) And for Shelomoh, We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made Al Riyha 'The Wind' subservient which made a Shahrin 'Month's' journey in the early daytime hour, and a month's journey in the evening (Shelomoh traveled in a craft, one of the winds); and We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi)

caused for him a fountain flowing of molten brass; and of the Jinn 'Evil, Disagreeable race; the Malevolent Cherubeems', there were those who worked between his hand by the permission of his Rabb, who is 'Sustainer,' and of those of them who turned aside from Our (Our Not My) command, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) made them to taste of the painful Hell, of Al Sa'iyir 'Flaming Fire'.

13) They made for him whatever he pleased, of fortresses and statues and basins, large as Jawaabi 'Reservoirs', and huge cooking cauldrons, immovable (from their places); "You are to act gratefully, O' family of Dawiyd! And very few of My (My Not Our) slaves are grateful!"

14) And when We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Qadaynaa 'Decreed' Al Mawta 'Death' for him, (Shelomoh), nothing or no one did show them his death, but a Daabbatu 'Worm' of Al Ard 'The Earth', which gnawed away at Sa-aatahu 'His Staff'; and when it fell down, then it became clear to the Jinn 'The Demon', who came, that they had not known Al Ghayba 'The Unseen'. They would have not tarried in Al Muhiyn 'The Humiliating' (pain of their toil).

The Children Of Saba Were Given A Sign - But, They

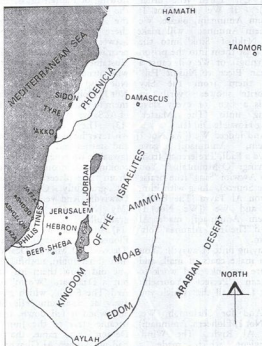


Diagram 24
The Kingdom Of David And Solomon

*Turned Away, And Received
A Flood, Bitter Fruits, And
Tamarisks, And Few Lote
Trees - They Were Unjust To
Themselves - A Lot Of Them
Followed Iblis - He Doesn't
Have Any Authority Over
Them - Your Rabb 'Sustainer'
Is A Haafiz, 'Guardian' Over
All Things*

15) Indeed, for (the children of) Sheba in their Maskana 'Abode', there was a sign; Jannataani 'Two Gardens' on the Yamiynin 'Right' and the Shimaalin 'Left'; and it was said unto them: "You are to eat of the Rizqi 'Provision' of your Rabb and you are to give thanks unto Him (Him Not Us)"; an agreeable land, and a Ghafuwrin 'Forgiving' Rabb 'Sustainer'!

16) But they turned away, so We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) sent upon them Al 'Arimi 'The Irresistible' Sayla 'Flood' and in place of Jannatayhim 'Their Two Gardens', We gave them Jannatayni 'Two Gardens' yielding Khamtin 'Bitter' fruits and Athlin 'Tamarisks' and a few Sidrin 'Lote-Trees'.

17) This We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) rewarded them for that which they concealed; but do We (Eloheem Anunnaqi) recompense any for those who conceals that which he knows to be the fact?

18) And We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) caused between them and the towns which We had blessed, other towns to be seen, and We (Eloheem, Anunnaqi) have made the journey easy with them; you are to move about through them faithfully secure, in the Shadow Hour Periods and days.

19) Then they said: "O our Rabb, 'Master/Sustainer!' Make the spaces to be longer between our journey" and they were unjust to themselves, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) made for them Ahaadytha 'Hadiths, Tales' and scattered them with a total scattering; verily in this are signs for every patient, grateful one.

20) And indeed Iblis found true his conjecture upon them (Hadith), so they followed him, except a portion of Al Muw'miniyn, 'The Faithful Ones.'

21) And there is not any Sultaanin 'Authoritive Power' for him over them, except that We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) would know (to distinguish) those who have faith in Al Aakhirat 'The End,' from him who, there is Shakkin 'Distrust' concerning it; and your Rabb 'Sustainer' is a Haafiz, 'Guardian' over all things.

Your Sources Don't Possess

*The Weight Of An Atom. In
The Skies - No Intercession
Will Avail, Except To Those
Whom Were Given Permission
- Allah Will Gather And Use
Wisdom Between Each Other
- Muhammad Sent To A Full
Amount Of Enosites*

22) Tell them this (Muhammad): "You all are to call upon those (other deities) whom you Za'amtun 'Deemed' besides The Source, ALLAH; they do not possess the weight of even a Dharratin 'Atom' in Al Samaawaat 'The Skies' nor in the planet (Qi/Tiamat) 'Earth,' nor for them is any Shirkin 'Associates, Partnership' in either of them; nor for Him is there anyone to back up from amongst them.

23) And no Al Shafaa'atu 'Intercession' will not Tanfa'u 'Avail' Him in his possession, except to whom permission was given to him, until when Fuzzi'a 'Terror Shall Be Removed' from their hearts, they shall say: "What is it that your Rabb said?" They ([They Not Me] Eloheem, Anunnaqi) shall say: "That which is Al Haqq 'The Fact' and He, (ANU) is Al 'Aliyyu, 'The Most High,' Al Kabiyrü 'The Biggest, Oldest'!

24) Tell them this, (Muhammad): "Who Yarzuqukum (Which Rizqian) 'Provides You With A Provision'

from the Samawaat 'Skies' and (Tiamat) 'Earth?'" Tell them this: "It is The Source, ALLAH (ANU) and verily, either we or you are lead into calmness, or Mubiynin 'Clearly' astrayed in error?"

25) Tell them: "You will not be questioned as to that which, we are guilty of, nor shall we be questioned as to that which you do.

26) Tell them this: "Our Rabb 'Sustainer' will gather us together, then He (He Not We) will Yaftahu 'Open' (use wisdom) between us with Haqqi 'Facts'; and He is Al Fattaah, 'The Opener,' Al Aliym 'The All-Knowing'."

27) Tell them this (Muhammad): "Show me those whom you put your faith in, as Shurakaa-a 'Partners, Associates'. This you definitely can't do. In fact, he is ALLAH, Al 'Aziyzu 'The Mighty', Al Hakiymu 'The Wise'."

28) And We (We Not He) did not send you (Muhammad), except for a Kaaffatin 'Complete amount' of Naas/Enosites (a total amount -144,000), as a Bashiyyaan 'Bringer Of Good News' - (the Qur'aan) and to Nadhiraan 'Warn'. In fact, most of the Enosites don't even know that (about the 144,000).

29) And they, (the False Muslims) say, "When will this Al

Wa'du 'Promise' be fulfilled? If you all are Saadiqiyn (Zodoqite) 'Truthful'.

The False Muslims And Nazarites Will Not Have Any Faith In The Qur'aan - The Oppulent Ones Of The Town Said, They Are Concealers Of The Facts - They Think Their Wealth And Their Children Will Make Them, Not Punishable

30) Tell them this, (Muhammad): "For you, is the appointment of a day from which you cannot hold it back, even for a Saa'atan 'While', nor can you hasten it on (6000th year).

31) And those who conceal that which they know to be the facts - (false muslims Israelites, and Nasaaraa, followers of Jesus Christ) won't have any faith in this Qur'aan, nor in that which is between his hands - (the other tablets: Enuma Elish, Gilgamesh Epics, Atana, The Secrets Of Adafa, The Descent Of Ishtar To The Underworld, Atra Hasis, Nergal And Arishkegal; and the scriptures before the Qur'aan); and if you could only see the ones in a state of unjustness made to stand in the possession of their 'Sustainer,' who is Rabb, some of them will put (the blame) on others of them (on their leaders, Imams, Shaikhs,

Rabbis, Kohanes, Priest, Pastor, Reverends). Astud'ifuw 'The Weak Ones (followers)' will say to Astakbaruw 'The Ones (Pouting With Pride,) Big-Chested' (leader): If it were not because of you, we would be in with the Mu'miniyna 'Faithful Ones' (with the children of Eloheem, Nuwaubu)."

32) Those who are Astakbaruw 'Big-Chested', (Pouting With Pride), shall say unto those who were Astud'ifuw 'Despised As Weak': "What! Did we turn you away from the leading calmness after it had come unto you? In fact, you yourselves were the Mujrimiyn 'Guilty Ones' (did not listen to Right Knowledge, Right Wisdom, and a Right Overstanding, Nuwaubu).

33) And those who were Astud'ifuw 'Despised As Weak' shall say unto Astakbaruw 'Those Who Had Pride, They Are Big-Chested': "In fact! It was your Makru 'Planning' by the Shadow Hour Period and by daytime, when you commanded us that we should not have faith in The Source, ALLAH and set up Andaadaan 'Equals' unto Him" (worship Muhammad, Khalifas, kissing and bowing to the Kaaba, Etc.). And they shall feel regretful, when they shall see the pain; and We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) will put Al Aghlaala 'The Shackles' on the A'anaaqi 'Necks' of those who

Kafaruw 'Conceal That Which They Knew To Be The Facts' (those who turn their backs on Ansaruallah); they are rewarded, except for that which they did.

34) And We (We Not He) did not send a warner unto a town, but the Mutrafuwhaa 'Wealthy Ones' of it said: "Surely we are Kaafiruw, 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts,' in that which you are sent with.

35) And they said: "We are more than you in Amwaalaan 'Wealth' and in Awlaadaan 'Children', and we shall not be the ones chastised with a pain."

36) Tell them this, (Ahmad)!: "Surely, my Sustainer, who is Rabb, Yabsutu 'Enlarges' the Rizq (Rizqian) 'Provision', for whomsoever, He (He Not We) pleases and Yaqdiruw 'Restricts It', for whomsoever He pleases, but most of the Enosites do not know.

*Neither Their Children Nor
Their Wealth Will Bring
Them Near To The Anunnaqi's
Possession- He Is The Best Of
Providers - Those Who Slaved
For The Eloheem Will Be
Gathered - Eloheem Will Say
They, The Enosites Slaved
For The Jinn' - No Profit Or
Harm Will Benefit Them On
That Day - When Eloheem
Verses Recited Unto Them,
They Say It Is Magic'*

37) And neither Amwaalukum 'Your Wealth' and nor Awlaadukum 'Your Children' are, that which brings you near unto what we have, what will draw you near is none except he who had faith and work to perfect himself, these are the ones, for whom is a double recompense for that which they do, and they shall be faithfully secure in Al Ghurufaati 'The Exalted Places' (Illyuwn).

38) And those who strive hard in Mu'aajiziyna 'Invalidating' Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) signs, they shall be brought to the chastisement (False leaders).

39) Tell them this: "Surely, my Rabb, who is 'Sustainer' enlarges Al Rizqa 'The Provision' for whomsoever He (He Not We) pleases, of His (His Not Our) slaves and restricts it for whosoever He pleases; and whatever things you shared willingly, He returns it with His reward along with it, and He is the best of Al Raaziqiyn 'The Providers' (The Rizqiyans).

40) And on the day when He (He Not We), will assemble all (of those who worship the Eloheem, Anunnaqi) all together then He, will say to the Malaa-ikati 'Angelic Messengers (Eloheem, Anunnaqi)': "Are these, those who were slaving for you all?"

41) The (Anunnaqi) will say: "Subhaanaka 'Glory Be Unto

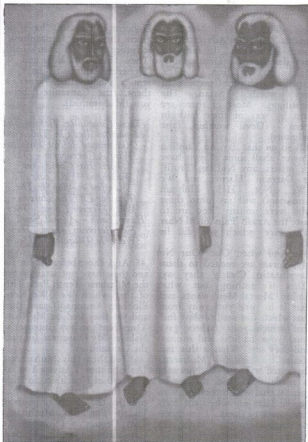


Figure 131
Rizqiyans

You'. For You (You Not We), are our Waliyyun 'Advocate' not them - (Enosites). In fact, for they slave for the (Disagreeable, Malevolent), Jinn, (The Reptilians, who are Cherubeems; they worship Satan, The Reptilian). Most of them are firm by way of their faith in them - (Devil worship, false religions).

42) So on that day, no Yamliku 'Power' shall some of you have for others, any Nuf'aan 'Profit' or Darraan 'Harm'; and We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will say unto those who were unjust: "You are to taste the Azaab 'Pain' of Al Naar 'The Fire' which you did lie about.

43) And when Our (Our Not My) verses are recited to them Bayyinaatin 'Clearly' they say: "This is nothing but what Rajlun 'Mortal Men' wants, and that is to turn you away from that which you used to slave for" that which your fathers gave you, (your hadiths and sunnas) and they say: "What is this, but Ifkun 'Lies' Mustarran 'Invented'? (They say Nuwaubu is made up)" And those who conceal that which they know to be the facts say when the facts have come to them: "That this is nothing, more than Mubiynun 'Clear' Sihrun 'Magic', (sorcery)."

44) And We ([We Not I]

Eloheem Anunnaqi) have not given them (the Canaanites) a scripture that Yadrusuw-nahaa 'They Have Studied', and We (Eloheem Anunnaqi) have not sent a Nadhiyrin 'Warner' to them, (the Canaanites) before you, (Muhammad).

*Those Canaanites Before The
Ishmaelites Lied On The Rusul
- Muhammad Is Not Possessed
With A Cherubeem - The
Facts Has Come, And
Falsehood Will Cease To
Manifest - Allah Is The
Knower Of The Unseen -
When Terror Comes, They
Have Faith - A Gulf Shall Be
Set Between Them, They
Were In Disquieting Doubt*

45) And those before them lied and these have not attained even the Mi'ashaar 'Tenth Part, Tithe' of that which We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) gave them, and yet they lied on My Rusul, 'Ones Sent'; so how (intense) was Nakiyri 'My Disproval' (of them, the Canaanites).

46) Tell them this (Muhammad): "Aa'idhukum 'I Advise You' all - (the seed of Noach) in one thing only, that is that all of you stand up, (in the ranks of worship) Lil-lahi 'For Him', Muthnaa 'In Two Groups' - (Nubians And Canaanites) and Furaadaa 'Singularly' (as one family of Noach) then reflect on how your

Saahib (Muhammad), is not of the jinnatin (possessed with a Disagreeable, Malevolent, Being, A Cherubeem, Jinn). He is only a Naziyr 'Warner' for you all, all of Abraham's seed in your own hands; in your midst to warn you of a severe pain, (Hell)."

47) Tell them this, (Ahmad): "Whatever reward I have asked of you, it is only for yourselves; my recompense is to be expected from The Source, ALLAH (alone), and he is a Shahiyd 'Watcher' over all things.

48) Tell them: "Surely, my Rabb, 'Sustainer' does Yaq-dhifu 'Hurls Out' (the light) of Haqqi 'Fact', the 'Allaamu 'Knower' of Al Ghuyuwbi 'The Unseen' (things).

49) Tell them this: "The facts (beyond any doubt) has come and Al Baatilu 'The Falsehood' will cease to Yubdi-u 'Manifest' and will not return."

50) Tell them this: "If I stray into error, I stray only against my ownself, and if I am lead into calmness, it is, of that which was inspired unto me, by my Rabb; surely He (He Not We) is Samiyun 'Hearing', Qariyibun 'Near'.

51) And you could see when they Faziuw 'Shall Get Terrified', then there shall be no Fawta 'Escape' and they shall be Ukhidhuw 'Seized' from a near place.

52) And they shall say: "We now have faith in it." And whence shall the approach to faith be for them from such a distant place?

53) And certainly they did not have faith in it before, and Yaq-dhifuwna 'Hurl Out (Aim Their Conjectures)' about Al Ghaybi 'The Unseen' from a distant place.

54) And a Hayla 'Gulf' shall be set between them and that which they desire, as was done unto the likes of them of before. Surely, they have been in Shakin 'Distrust', Muriybin 'A Hopeless Doubter'.

Sudqia Allahu El Azim

Fifty-Nine

Revealed In The Year 618 A.D. Except Verses 32, 33, 34

Zumar

(Crowds)

*Original Order Chapter 59;
Wrong Order Chapter 39*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*The Qur'aan Is A Tangle
From Allah - Allah Does Not
Lead Into Calmness He Who
Is A Liar And A Kaffaar -
Even If The Source, Allah
Desires To Take A Walad,
Verify He*

*Would Have Chosen From
His Creation That Which He
Pleases - He Created The
Skies And Qi - He Causes
The Day And The Shadow
Hour Period To Overlap
Each Other - He Creates
You In The Stomach Of
Your Mothers*

59 It is a Tanziyl, 'Sending Down' of the scripture from The Source, ALLAH, Al Aziyz 'The Mighty', Al Hakiymi 'The Wise'.

2) Surely We, ((We Not I) Eloheem, Anunnaqi) sent down to you, (Muhammad), the scripture - (the Qur'aan), as a fact (beyond any doubt). So slave for The Source, ALLAH, for in His Diyn 'Means Of Judgment', is Mukhlisaan 'Purity'.

3) Is not for Him, Al Khaalisu 'The Purified' Al Diynu 'Means Of Judgment', and those who took from besides Him, Awliyaa-a 'Near Friends'; we will not slave for them, except if they will make us come nearer to The Source, ALLAH; Zulfaa 'Draw Near' (to him). Surely The Source, ALLAH uses wisdom between them in that which they Yakhlatifun 'Differ'. Surely, ALLAH does not lead into calmness he, who is a liar and a Kaffaar, 'A Concealer Of The Facts'.

4) Even if The Source, ALLAH desires to take a Waladaan

'Physical, Blood Son', verily He (He Not We) would have Yastafaa 'Chosen' from Yakhluqu 'His (His Not Our) Creation', of that which Yashaa-u 'He Pleases'; His glorify. He is Al Waahid 'The One', Al Qahhaar 'The Dominant'.

5) He (He Not We) Khalaaq 'Created' Al Samawaat, 'The Skies' and the planet Qi, 'Earth,' (also known as Tiamat), Al Ard by way of Al Haqqi 'The Facts'. He causes Al Layl 'the Shadow Hour Period,' to Yukawwiru 'Overlap' On Al Nahaar 'the Daytime,' and the Shadow Hour Period to overlap on the Daytime, and He made the Shams 'Sun' and the Qamar 'Moon' Sakh-khara 'Subservient'; each runs to a fixed term. Is not He Al 'Aziyzu 'The Mighty', Al Ghaffaar 'The Forgiver'?

6) He (He Not We) Khalaaqakum 'Created You All' from Waahidatin 'One' Nafsin 'Person,' (Ninti) then He made from it, Zayjahaa 'Its Mates' (Adam and Eve), and He sent down for you all, of Al An'aami 'The Cattle' eight Azwaajin 'Pairs (16 clonings); He Yakhluq 'Creates' you all in the Butuwni 'Stomachs' of Ummahaatikum 'Your Mothers', (then from test tube to birth in the wombs) as a Khalqaan 'Creation' (birth), from after the Khalqin 'Creation' (cloning) in the

Zulumaatin 'Darkness' Thalaatin 'Three Times' (13 cycles). That is your Rabb, ALLAH. For Him (Him Not Us) is Al Mulku 'The Rulership', and no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of him (HU). So then, you all turn away?

7) If you conceal that which you know to be the facts, so then surely, The Source, ALLAH is Ghaniyy 'Independent', of you all; and He (He Not We) is not pleased with the concealing of the fact for His (His Not Our) slaves; and if you all are grateful, He will be pleased with you; and no bearer will bear another's burden, then his return is to his Rabb. Then He will inform you all of that which you were doing. Surely, He is knowing of the Dhaati 'Essence' of (that which is in) Al Suduwri 'The Chests'.

*When Al Insaan Is Afflicted
With Harm, He Calls Upon
His Rabb - When He Is Given
Grace, He Forgets That Which
He Called Upon - They Are
The Companions Of The Naar
- The Patient Ones Will Have
A Fulfilled Reward Without
Measure - Muhammad Is Told
To Slave For Allah - And Be
The First Of The Peaceful
Ones*

8) And when Al Insaan 'The Enosite' is afflicted with Darr

'Harm,' he calls upon his Rabb, turning to him; then when he bestowed a gracious favor from Him (Him Not Us), he, (the Enosite) Nasiya 'Forgets', that which he called upon, from before. And He made Andaad, 'Rivals' to lead them astray into error, from His (His Not Our) path (disagreeable Eloheem). Tell them this: "Enjoy your concealing of the facts (temporarily), for a little while, surely you are of the As-haab 'Companions' of the Naar 'Fire'."

9) Is he who is Qaanitu 'Devoted Obediently', throughout the Shadow Hour Period, Saajudaan 'Prostrating' and Qaa-imaan 'Standing', taking heed of Al Aakhirat, 'The End,' and hopes for the Rahmat 'Yielding' (mercy) of his Rabb, who is 'Master?' Tell them this: "Are those who have knowledge, and those who don't know alike?" Surely, those endowed with intelligence (Nuwaubu), will remember (about Nibiru and the Anunnaqi).

10) Say, O my slaves, those who are faithful, you are to tremble at the mentioning of your Rabb, who is 'Sustainer'. There is betterness for those who does their best in this physical world; and the Ard, 'Earth,' also called (Qi/Tiamat) of The Source, ALLAH is wide, 'spacious'; and the reward of Al Saabirun 'The

Patient Ones' is fulfilled without any Hisaabin 'Measure'.

11) Tell them this, (Muhammad): "Surely, I am commanded to slave for The Source, ALLAH; and for Him (Him Not Us) is the Mukhlisaan 'Purified' Al Diyna 'Means Of Judgment'."

12) And Umirtu 'I Was Commanded', verily that I be the Awwal 'First' of Al Muslimiyn 'The Peaceful Ones'.

*If Ahmad Disobeys His Rabb,
He Will Have A Day Of
Supreme Pain - Those Who
Lost Their Owselves And
Families Will Have A Clear
Loss On The Day Of
Resurrection - Give Good
News To Those Who Avoid Al
Taaghuwt/Zuen, They Turn
For Repentance To The
Source - Can You Save He
Who Is In The Fire?*

13) Tell them this (Ahmad): "Surely I fear that if I disobey my Rabb, I will have a day of 'Aziym 'Supreme' pain."

14) Tell them: "I slave for The Source, ALLAH, for Him (Him Not Us) is my Mukhlisaan 'Purified' Diyn 'Means Of Judgment'."

15) So you all are to slave for that which you pleased, from besides Him. Tell them, (the Meccans) this, (Ahmad): "Surely, the losers are those who lost

their own selves (who they are), and their families (children of Etherians, 9 ether beings), Day of the Resurrection. Isn't that the Mubiyn 'Clear' Al Khusraanu 'Loss'?

16) There will be Zulalun 'Layers' of Fire, 'Naar' from above them and Zulalun 'Layers' from beneath them. By way of it, that is how The Source, ALLAH (a disagreeable cherubeem) causes His (His Not Our) slaves to fear. Oh my slaves, so tremble at the mentioning of Me (Me Not We).

17) And those who avoid Al Taaghuwt, (father of Haylal, also known as Zuen, and Shakhar, and Humbaba), to slave for it, and they turn to The Source, ALLAH (in repentance), for them is good news. So give good news to Ibaadi 'My (My Not Our) Slaves'.

18) Those who listen to the saying, and they follow that which is best in it, these are those who are lead into calmness by The Source, ALLAH, and these are those who have intelligence.

19) Is he whom the word of the pain is due upon him, a fact? And can you deliver him, who is in Al Naar 'The Fire'?

*There Are Ghuras For Those
Who Tremble At The
Mentioning Of Their Rabb -
The Source Sends Down Rain*

*And From It Causes Crops To
Grow - Those Whom The
Source Has Expanded They
Have The Light Of Their
Sustainer - Curse Be Upon
Those Who Are
Hard-Hearted From The
Remembrance Of Their Allah -
The Qur'aan Is The Best
Hadiyth Sent Down By Allah
- The Eloheem Struck For
Every Likeness For The
Enosites In This Qur'aan -
The Qur'aan Is In The
Qurayshan Dialect, There Is
No Crookedness In It*

20) But, those who tremble at the mentioning of their Rabb, for them are Ghuraf 'Lofty Rooms' (in the Crystal City) from above them are Mabniyyatun 'Built' Ghurafun 'Lofty Room' (abode in Illyuwn); and rivers are flowing from underneath them. The Source, ALLAH does not break His (His Not Our) promise.

21) Didn't you see that The Source, ALLAH has sent down water, (rain) from Al Samaa'a 'The Sky,' then He (He Not We) caused it to travel to the water sources, 'springs' in the planet (Qi/Tiamat), then He (He Not We) brings forth, by way of it, many crops of different colors. Then He causes them to wither away, so you will see, that it has a Musfaraan 'Yellow' (color). Then he makes it to Hutaamaan

'Crumble Away'. Surely, in that is a remembrance for those with intelligence.

22) As for those whom The Source, ALLAH has Sharaha 'Expanded' their hearts (transform them into Etherians), to Al Islaam 'The Peaceful Way Of Life', so they have the Nuwr, 'Light' of their 'Sustainer/Master,' who is Rabb. So woe, be upon those who are Qaasiyati Quluwbuhum 'Hard-Hearted' from the remembrance of The Source, ALLAH. So these are those who are clearly astraying into error.

23) The Source, ALLAH has sent down the Ahsana 'Best' of Al Hadiythi 'The Hadiyth, tales' - (the Qur'aan), Kitaabaan 'A Scripture', Mutashaab-ihaaan 'Looking Like' it's Mathaaniya 'A Second One'. It makes the Juluwdu 'Leathery Skins' of those who dread their 'Sustainer', who is Rabb tremble; then it makes their Juluwd 'Leathery Skins' and hearts Taliynu 'Tender' to the remembrance of The Source, ALLAH. That is the leading calmness of The Source, ALLAH. He (He Not We) leads into calmness whom He pleases and whoever, The Source, ALLAH leads astray into error, there is not a calmness for him.

24) As for he who trembles at the mentioning of His face, evil is the pain on Al Qiyaamah,

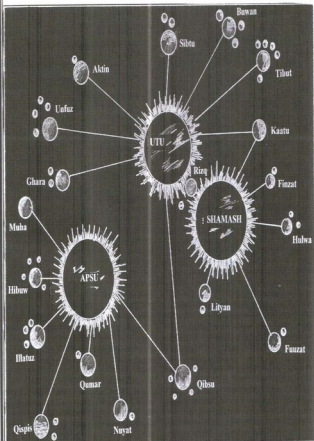


Diagram 25
The Galaxy Illyuwn

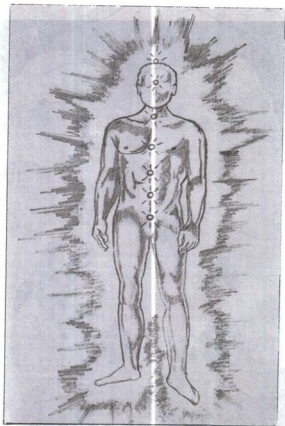


Figure 132
An Etherian

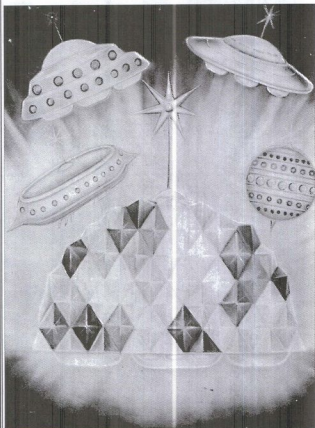


Diagram 26
The Crystal City

'The Day Of Resurrection', and it will be said to the unjust ones: "You are to taste that which you have Taksibuw 'Earned'."

25) Those who lied from before them, so the pain will come to them, from where they will not perceive.

26) So The Source, ALLAH will make them taste Al Khizya 'The Disgrace' in the life of the physical world, and verily the pain of The End is the Akbaru 'Biggest', if they only knew.

27) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Daraba 'Struck Forth' for the Enosites in Haadha 'This' Qur'aan from every Malthalin 'Likeness', that perhaps they will remember.

28) Arabiyyan 'An Arabic' Qur'aan, (in the Qurayshan dialect) Ghayr 'Without' any Iwajin 'Crookedness, Error'; that perhaps they will tremble at the mentioning.

*The Likeness Of A Mortal Man
Who Belongs To A
Partnership And The Mortal
Man Who Belongs To His
Master - He Who Lies About
Allah, There's Not A Dwelling
Place For Him - Those Who
Come With The Truth, For
Them Is The Presence Of
Their Rabb - There Is Not A
Calming For He, Whom The
Source Leads Astray - Allah Is
The Mighty Possessor Of
Vengeance*

29) The Source, ALLAH has Daraba 'Struck Forth' a Mathalaan 'Likeness' of a Rajulaan 'Mortal Man', who belongs in a Shurkaa-u 'Partnership', disputing amongst themselves, and a Salamaan 'Peaceful' Rajul 'Mortal Man' belonging to a Rajul 'Mortal Man' - (his master)? Are Yastawiyaani 'These Two Equal' in Mathalaan 'Comparison'? All Hamd 'Gratitude' is due to Him; but most of them do not know this.

30) Surely you will (pass on), Miyyatun 'Die,' and Miyyituwn 'They Will Die'.

31) Then on the Day of Resurrection, surely you will be in the possession of your Rabb, Takhtasimuwn 'Disputing'.

32) So who is more unjust than he who lies about The Source, ALLAH and denies the truth, when it comes to him? There is not A Mathwaa 'Dwelling Place' for him in Jahannam 'Purgatory/Hell'.

33) And he who comes with the Sidq, (Zodoqites) 'Truth' and he has Sadaqa 'Trust' in it, these are they, who are the ones who tremble at the mentioning.

34) For them in the possession of their Rabb, who is 'Master,' is that which they please. That is the reward of the Muhsiniyn 'Doers Of That Which Is Best.'

35) That The Source, ALLAH may conceal the Aswaa 'Worst',

of that which they have done, and that he may reward them with the Ahsani 'Best' of their rewards, of that which they have done.

36) Is not The Source, ALLAH Kaafin 'Sufficient' for His (His Not Our) slaves? They will try to make you fear those from besides Him (other ALLAHs before this ALLAH); and whoever, The Source, ALLAH leads astray into error, so there is not a Haad 'Calming' for him.

37) And whoever The Source, ALLAH leads into calmness, so there is no one who can Mudhilin 'Lead Him Astray Into Error'. Is not The Source ALLAH, The 'Aziyz 'Mighty', Possessor Of Intiqaamin 'Vengeance'?

Muhammad Tells The Meccans, 'If The Source, Allah Wants Harm For Him, Can They Remove The Harm?' - Muhammad Told Them To Work On Their Own Selves - Muhammad Is Not A Guardian Over Them - Allah Receives The Ansus When They Pass On - Ahmad Asks Them Why Do They Take Idols When They Don't Have Anything Or Any Intellect - For Him Is The Rulership Of The Skies And Qi - Allah, Alone Can Fill The Hearts Of Those Who Don't Have Faith In The End With Disgust And Horror

38) And if you ask them, who Khalafa 'Created' the Samawaat, 'Skies,' and the planet Qi, 'Earth,' verily they will say, "The Source, ALLAH." Tell them, (Muhammad): "Have you seen that which you have called upon, from besides The Source, ALLAH? If ALLAH wants harm for me, can they, Kaashifaatu 'Remove' His harm? Or if He wants a Rahmatin 'Yielding' (mercy) for me, can they hold back Rahmatihis 'His Yielding' (mercy)? Tell them, ALLAH is Hasbiya 'Sufficient' for me (as a Reckoner); the ones who Yatawakkalu 'Entrust', entrusts upon Him (Him Not Us).

39) You are to tell them, "Oh my kindred, you all are to work on Makaanatikum 'Your Places', surely I work on mine; then you all will know."

40) Who is he, to whom comes a pain; he disgraces him and a lasting pain descends upon him.

41) Surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) sent down upon you, Al Kitaab, 'The Scripture' for the Enosites as a fact (beyond a doubt). So whoever, is lead into calmness so it is on his own self, (spirit); and whoever he leads astray into error, so he is led astray into error by it; and you, (Ahmad) are not a Wakiyl, 'Advocate' over them.

42) The Source, ALLAH is He

(He Not We) who Yatawaffa 'Receives' Al Anfus 'The Spirits' when Mawtihaa 'They Die'; and that which didn't Tamutu 'Die' in Manaamihaa 'Their Sleep', so He can Yamsiku 'Hold' Al Mawti 'The Death' back, which He has Qadaa 'Ordained'; and He can send the others to a fixed term. Surely in that, verily, are signs for a kindred who can think.

43) Or do they take from besides The Source, ALLAH 'Shufaa'a 'Intercessors?' You are to tell them this, (Ahmad): "Even if they, don't Yumliquna 'Have Any Power' (over) anything, and they don't have any intellect?"

44) Tell them, (the Meccans) this: "For Him (Him Not Us) is Al Shafaa'atu 'The Intercession' all together. For Him is the Mulk 'Rulership' of the Samawaat 'Skies,' and the planet 'Earth,' also known as Qi and (Tiamat) and Al Ard; then to Him, you all will return.

45) And when The Source, ALLAH is Dhukira 'Remembered', He (He Not We) Wahdahu 'Alone' can fill the Quluwb 'Hearts' of those who don't have faith in The End with Ishmaazzat 'Disgust And Horror'; and when those who are besides Him (Him Not Us), ALLAH is Dhakiru 'Remembered', then they will be given the good news.

O Eloheem, Creator Of The Skies And Qi, Knower Of The Unseen And The Seen, Will Judge Between That Which They Differed - All That The Unjust Ones Have, Will Be Sacrificed On The Day Of Al Qiyaamah - Those Enosites Given Grace By The Eloheem, After They Were Afflicted Think, It Is Because Of Their Knowledge - The Unjust Ones Will Be Afflicted With The Evils, That They Had Earned

46) Tell them this (Muhammad): "O Allahumma/Eloheem! Faatir 'The Splitter Of The Atom' of the Samawaat, 'Skies' and the planet Qi. Knower of Al Ghayb 'The Unseen', and Al Shahaadat 'the Watcher'. You will use wisdom between Your (Your Not Our) slaves, in that which they Yakhtalifuwna 'Differed' in.

47) And even if, the unjust ones had all that which is in the planet (Qi/Tiamat) 'Earth' and all of its Mithlahu 'Likeness' and with it everything all together. Verily, will they redeem it for the evil pain on the day of Al Qiyaamah, 'The Resurrection/ Standing'? And (something will) Badaa 'Manifest' for them (Nibiru) from The Source, ALLAH which they did not Yahtasibuwn 'Calculate'.

48) And the Sayyihhtu 'Evils' will Badaa 'Manifest' to them

(disagreeables also), all that which they have earned; and they will be surrounded by them, all that which they were ridiculing.

49) So when the Enosite, is afflicted with harm, he calls upon Us, ([Us Not Him] Eloheem, Anunnaqi). Then when We (We Not He) bestows a gracious favour from amongst us, he (the Enosite) says: "He has been given this, because of the knowledge he has." But in fact, it is only a test, but most of them do not know that.

50) Certainly those from before them also said it; and nothing will Aghnaa 'Avail' them of that which they had earned.

51) So the evils Saabahum 'Afflicted Them' of that which they had earned, and those who were unjust from them, they will be afflicted with the evils of that which they had earned; and they will not be the ones who can Mu'jiziyn 'Frustrate' Us ([Us Not Me] Eloheem Anunnaqi).

The Source Spreads The Provision To Whom He Pleases - He Is The Forgiving, The Most Merciful - Submit In Peace To Your Rabb, Before The Pain Come To You - The Plitful Spirit Wish That Allah Will Lead Him/Her Into Calmness; And Give Them Another Chance- Those Who Lied On The

Source, Their Faces Will Be Blackened - Allah Will Deliver Those Who Tremble At The Mentioning

52) Or don't they know that The Source, ALLAH Yubsutu '(spreads), Enlarges' (opens up) Al Rizqa 'The Provision' to whom He (He Not We) pleases, and can Yaqdiru 'Restrict' it. Surely, in that, verily are signs for a kindred that are Yu'minuwna 'Faithful'.

53) Tell them this (Muhammad): "Oh my slaves, those who have Asrafuw 'Exceeded Bounds' against themselves, don't despair of the Rahmat 'Yielding' (Mercy), of The Source, ALLAH. Surely, The Source, ALLAH Yaghfiru 'Forgives' the disagreeable acts all together. Surely He (He Not We), is Al Ghafuwru 'The Forgiving', Al Rahiymu 'The Most Merciful'.

54) And you all are to turn in (repentance) to your Rabb, who is 'Sustainer,' and Aslimuw 'Submit In Peace' to Him (Him Not Us) before the pain will come to you, then you will not be Tansaruwna 'Aided'.

55) And you all are to follow that which was sent down from your Rabb, 'Sustainer,' which is Ahsana 'Best' for you, from before the pain Baghtataw 'Suddenly' comes to you, and you all will not perceive it.

56) That a Nafs 'Person' will

say: "Oh Hasra 'Pity' on me, that which I Farrat-ttu 'Neglected' in my (duties) to The Source, ALLAH, and that I was of Al Saakhiriyn 'The Ones Who Ridicule'.

57) Or you will say if only The Source, ALLAH may lead me into calmness, verily I will be of those who tremble at the mention.

58) Or you will say when you see Al 'Azaab 'The Pain': "If only I had Karatan 'Another Chance', so then I will be of Al Muhsiniyn 'The Doers Of That Which Is Best'."

59) In fact, certainly My (My Not Our) signs has come to you, so you denied them and you were Astakbara (pouting with pride), 'Big-chested', and you were of Al Kaafiriyn 'The Concealers Of The Facts,'

60) And on Al Qiyaamah 'The Day Of Standing,' you will see those who lied on The Source, ALLAH; their Wajh 'Faces' will be Muswaddatun 'Blackened'. Is not there a Mathwan 'Dwelling Place' in Jahannam, 'Purgatory' for the Mutakabiriyn 'Ones Who Are Big-Chested (Pouting With Pride)'?

61) And ALLAH will deliver those who tremble at the mentioning to Mafaazatihim 'Their Achieving Places', and they will not be afflicted with evil, and they will not grieve.

Allah Is Creator Of All Things

- For Him Is The Keys To The Skies And The Planet Earth - If Muhammad Associate Partners, His Work Will Fail - Muhammad Tell The Meccans To Slave For The Source And Be Of The Grateful Ones - They Don't Have The Power To Determine Allah's Powers - The Trumpet (Shofer) Will Be Blown By The Eloheem Raphael - Those In The Skies And Qi Will Be Dumbfounded - The Planet Earth Will Shine With The Light Of Her Rabb - Every Person Will Be Paid In Full, That Which He/She Has Done - Those Who Conceal That Which They Knew To Be The Facts Will Be Led To Purgatory In Jumar - Those Who Tremble At The Mentioning Of Their Rabb Will Be Led In Crowds To The Jannat - All Gratitude Is Due To The Source - The Eloheem Surround The Throne Of Their Rabb, Glorifying Him

62) ALLAH, The Source, is the Khaaliq 'Creator' of all things and He (He Not We), is a Wakiylun 'Advocate' over every thing.

63) For him is the Magaaliyd 'Keys' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard/Tiamat, 'Earth' and those who conceal that which they know to be the

facts about the signs of ALLAH, these are those who will be Al Khaasiruwn 'The Losers.'

64) Tell them this: "Is there other than The Source, ALLAH, whom you all have commanded me, that I slave for, O you Al Jaahiluwn 'Ignorant Ones.'

65) And indeed (Inspiration by way of) 'Wch/Wahy' was inspired to you, (Muhammad) and to those who were before you, verily if you Ashrakta 'Associate Partners', your Amal 'Work' will fail and you will be of the losers.

66) In fact, so slave for The Source, ALLAH and be of Al Shaakiriyn 'The Grateful Ones.'

67) And they can never have the Qadaruw 'Power to (determine)', His (His Not Our), ALLAH'S Haqqa 'True' Qadri 'Power'; and the planet Qi, together will be His (His Not Our) Qab-dat 'Handful' on the day of judgment, and Al Samaawaat 'The Skies' will be Mutwiyyaatun 'Folded Up' in his Yamiyn 'Right' (hand). So glorify and Ta'aalaa 'Exalted' is He (He Not Us), of that which they Tashrikuwna 'Associate (with other deities)'.
68) And Al Suwri 'The Trumpet' will be Nufikha 'Blown' (by the Eloheem, Anunnaqi Raphael), so those who are in Al Samaawaati 'The Skies' (Anunnaqi) and those who are in the planet Tiamat, 'Earth'

(Human Beings) will be Sa'iqa 'Dumbfounded', except for those whom The Source, ALLAH pleases. Then another one will be Nufikha 'Blown'; so then, they will be standing, looking on.

69) And the planet Qi will Ashraqa 'Shine' with Nuwri 'The Light' of Rabbihaa 'Its Rabb, Sustainer', and the scripture will be Wudi'a 'Placed'; and Al Nabiyyiyn 'The Newsbearers', and Al Shuhadaa 'The Watchers' will be brought forward, and the Haqq, 'Fact' will be decreed between them and they will not be unjust.

70) And every Nafs 'Person' will be Wuffiyat 'Paid In Full', of that which he has done, and he knows all that which they do.

71) And those who conceal that which they know to be the facts will be Siyqa 'Led' to Jahannama 'Purgatory', in Zumar 'Crowds' until when they come to it. Its gates (hell has gates) will be opened and the Jazanatuhaa 'Keepers' of the gates will say: "Didn't Rusul, 'Ones Sent' come to you all, from amongst you, reciting the signs of your Rabb, upon you all and warning you about the Liqaa-a 'Meeting' of this day - (your day)?" They said: "In fact, the Kalimat 'Word' of the pain is a fact against the concealers of that which they knew to be the facts.

72) It will be said: "You all are

to enter the Abwaab, 'Gates' of Jahannama 'Purgatory', and shall be in it Khaalidiyna 'Eternally'; so it is an evil and miserable Mathwa 'Dwelling Place' for Al Mutakabbiriyna 'The Ones Who Are Big-Chested (Pouting With Pride)'.

73) And those who tremble at the mention of their Rabb, will be led to Al Jannat, 'The Garden' in crowds until when they come to it; and its gates (heaven has gates) will be opened and the keepers of the gates will say to them: "Salaam, 'Peace' be upon you all. Tibtum 'You All Have Done Agreeable'; so you all are to enter into it Khaalidiyna 'Eternally'."

74) And they will say: "All Hamdu 'Gratitude' is due for Him (Him Not Us), who has truly (fulfilled) his promise, and we Awratha 'Inherited' the planet 'Earth,' also called (Tiamat/Qi) Al Ard; we can dwell anywhere we please Min 'From' the Jannat 'Garden'; so how graceful, is the reward of Al 'Aamiliyna 'The Workers'."

75) And you will see: Al Malaaiikat 'The Angelic Messengers' - The Eloheem, Anunnaqi', Haaffiyna 'Surrounding' from around Al 'Arsh 'The Throne,' (24 Anunnaqi Eloheems) glorifying with Hamdi 'Gratitude' their Rabb 'Sustainer'; and the decision will be Qudiya

'Decreed' between them with the fact, and it will be said: "Al Hamdu 'All Gratitude' is due for Him (Him Not Us), the Rabb of the Known World."

Sudqia Allahu El Azim

Chapter Sixty

Revealed In The Year 618 A.D.

Al Muw'min

*(The Faithful One) Or
Ghafir*

(The Forgiver)

Original Order Chapter 60;

Wrong Order Chapter 40

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Wisdom Of Muhammad -
The Sending Down Of The
Scripture From The Mighty
Source - To Yahuwa Is The
Destination - The Kindred Of
Noach Denied Him - Those
Who Conceal That Which
They Knew To Be The Facts
Will Be The Companions Of
The Fire - Those Who Carry
Their Rabb's Throne, Ask Him
To Protect Those Who Are
Faithful - And Can They
Enter Into The Jannat?*

60() Haa: Aharown,

Or Haaruwn Or Aaron The Prophet and Miym: Moshesh Or Muwsa Or Moses The Eloheem.

2) The sending down of the Scripture (Torah), is from The Source, ALLAH, Al 'Aziyz 'The Mighty' Al 'Aliym 'The Knower'.

3) The Forgiver of the disagreeable acts, and The Acceptor of Tawbi 'Repentance', forceful in the way He (He Not We) punishes; Possessor of Al Tawli 'The Bounty'. No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Him (HU); and to Him (Him Not Us) is Al Masiyr 'The Destination'.

4) None dispute concerning the Aayaat 'Signs' (of this Qur'aan) of The Source, ALLAH but those who conceal that which they know to be the facts; therefore, do not let their going to and from the lands deceive you.

5) The Qawm 'Kindred,' denied Noach, (who were the evil cities of Nod and Enoch) before them and the groups from after them and every (sect,) nation plotted against their Rasuwl (one sent to them), to take him and they disputed by means of Baatil 'Falsehood', that they might nullify the facts by way of it. So I seized them. Then how was my punishment?

6) And just like that, did the Kalimat 'Word' of your

Sustainer, who is 'Rabb' has proven to be a fact, against those who concealed that which they knew to be the facts; they are the companions of the Fire 'Naar.'

7) Those who carry the Arsh 'Throne' (ark of the Most High) and those who are around Him (high priest), glorify the Hamd 'Gratitude' of their Rabb, 'Sustainer' (A Yahuwa) and they have faith in him and ask protection for those who are faithful: Our Rabb! You embrace all things in a Rahmat 'Yielding' (mercy) and knowledge, therefore forgive those who turn to You (You Not We) in repentance and they follow Your (Your Not Our) path, and save them from the punishment of Hell.

8) Our Rabb make them enter the Jannaat 'Garden', which you have promised to them and those who do good to their fathers (Abrawhawm, Yitschaq And Ya'aqob) and Azwaajihim 'Their Mates' and their Zurriyat 'Offspring' (Israelites), surely you are Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

9) And keep them from evil deeds, and whoever you keep from evil deeds this day, indeed you had Rahmat 'Mercy' on him, and that is Al 'Aziym 'The Supreme' Fawzu 'Achievement'.

*Allah's Hatred Is Greater,
Than Your Hatred Of Your*

*Ourselves - The Concealers Of
The Facts Will Be Asking For
A Way Out Of It - Anu Is
The Most High, The Oldest -
Allah Sends Down A Riaz
For You From The Sky - He
Is The Possessor Of Throne
And Highest Rank - Allah Is
The Dominant - Every Spirit
Will Be Rewarded For What
It Has Earned - There Is No
Compassionate Friend Or
Intercessor For Anyone On
That Day*

10) Surely, those who conceal that which they know to be the facts, shall be called out; certainly ALLAH'S hatred is greater than your hatred of yourselves, when you were called upon to the faith and you concealed that which you knew to be the facts.

11) They shall say: "Our Sustainer, Rabb! You made us (subject) to death, Athnatayni 'Twice' (First Seed Of Humans And The Recreation Of Adam) and you have given us Hayy 'Life' Athnatayn 'Twice', so we do confess our disagreeable acts; is there then a way to get out?"

12) That is because you all concealed that which you knew to be the facts, when The Source, ALLAH alone was called upon; and when Yushrak 'You Associated Partners' with him (Baal Hadad), you all had faith, so the decision is for Him

(Himnot Us), ALLAH Al 'Aliyyu 'The Most High,' (ANU), Al Kabiyyi 'The Biggest, Oldest'.

13) It is He (He Not We), who shows you His (His Not Our) signs and sends down Rizq, 'Provisions' for you, from Al Samaa-i 'The Sky' (Manna Which Is Reishi Mushroom), and none remembers but he who turns to Him (Him Not Us), again and again (true Muslims).

14) Therefore call upon The Source, ALLAH, being Mukhlisiyna 'Purified Ones', to Him (Him Not Us), though the Kaafiruwun, 'Concealers Of The Facts' detest it.

15) He is the Possessor of the Rafi'u 'Highest' Al Darajaati 'Rank' (Angelic Beings), and Possessor of Al Arshi 'The Throne' (the ark of Yahuwa); He makes Al Ruwh 'The Soul', (to light) by His (His Not Our) command upon whom He (He Not We) pleases of His (His Not Our) slaves (the soul in the ark of the covenant), that He may warn Enosites of the Day of the Meeting (when humans will meet the Anunnaqi).

16) The day when they shall come forth (leave earth to go thru to the stars); nothing concerning them remains hidden upon The Source, ALLAH. To whom belongs the Mulk 'Rulership', this day? For him is Al Waahidi 'The One', Al Qahhaar 'The Dominant.'

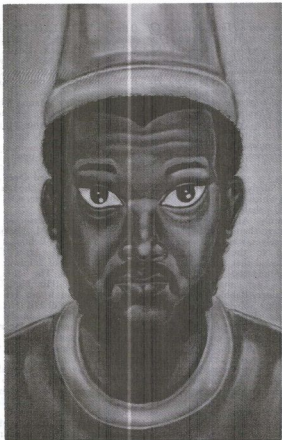


Figure 133
Baal Hadad

17) This day every person shall be rewarded for that which it has earned; no injustice shall be done this day. Surely, The Source, ALLAH is quick in reckoning.

18) And warn them of the day, that which draws near, when hearts shall rise up to the throats grieving inwardly; the unjust shall not have any Hamiyim 'Hamite, Nubian Brother', nor any intercessor who should be obeyed.

Allah Knows That Which The Breasts Conceal - Those Who Call Upon Others Than The Source, Cannot Judge - Allah Overtook Them For Their Disagreeable Acts - They Concealed That Which They Knew To Be The Facts, When Their Rusul Came To Them With Clear Evidences

19) He knows the stealthy (looks) with the eyes and that which the breasts conceal.

20) And The Source, ALLAH judges with the facts; and those whom they call upon besides him cannot judge; surely ALLAH, he is Al Samiy-u 'The Hearing', Al Basiyru 'The Seeing'.

21) Have they not traveled in the planet (Qi/Tiamat) 'Earth' and seen how the end was of those who were before them? More forceful were they in

strength than them, and Aathaaraan 'Fortification' in the earth; but The Source, ALLAH overtook them for their Dhunuwb, 'Faults'; and there was not any defender for them against ALLAH.

22) That was because there came to them their Rusul 'Ones Sent', with Al Bayyinaat 'Clear Evidences', but they concealed that which they knew to be the facts, so, The Source, ALLAH overtook them; surely He (He Not We) is strong, forceful in punishment.

Mosheh Sent With Eloheem, Anunagis' Signs To Fir'own Ramses II - The Mizramites Plan To Kill Mosheh And The Sons Who Had Faith In Him, And Let The Women Remain Alive - Ramses II Fears Mosheh Will Change The Dyn Of His Enosites - Mosheh Seek Protection With His Rabb, Allah - A Faithful Man Amongst Pharaoh's Enosites Questions Fir'own About His Actions Against Mosheh - He Tells Israelites/Jacobites, The Eloheem Will Appear In Qi, And Aid Them

23) And indeed We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent Mosheh with Our (Our Not Their) signs and a Mubiyn 'Clear' (The Torah) Sultaanin 'Authoritive Power' (it's an

authority).

24) To Pharaoh (Ramses II) and (The High Official Of The Ruler Achashwerowsh Of Persia) Haman and (the ruler of the rebellious Israelites) Qorach, but they only said: "He is a lying Saahirun 'Magician'."

25) So when he, (Mosheh) brought the fact to them, (the Mizramites, Or Ancient Egyptians) from us, they said: "Kill the Abnaa-a 'Sons' of those who have faith in him, and those with him and keep Nisaa-ahum 'Their Women' alive; and the plot, (or scheme) of the concealers of the facts will only come to a state of astraying into error."

26) And Fir'own (Ramses II) said: "Let me (alone, to be the one), that I can kill, Mosheh and let him call upon his 'Sustainer,' who is Rabb; surely I fear that he will change your Diyn, 'Means Of Judgment' or that he will make Fasaada 'Mischief' Yudh-hira 'Appear' in the earth."

27) And Mosheh said: "Surely I seek protection with my 'Sustainer/Master,' who is Rabb and your Rabb from every big-chested, one pouting with pride who does not have faith on the Day of Reckoning."

28) And a faithful, Rajulun 'Mortal Man' of Fir'own's (Ramses II), Enosites who hid his faith said: "What! Will you kill a

Rajulaan 'Mortal Man' because he says: "My Rabb is ALLAH? And indeed he has brought to you clear evidences from your Sustainer and Master? And if he be a liar, on him will be his lie, and if he be truthful, then some of that which he threatens you with will befall you; surely The Source, ALLAH does not lead into calmness him who is a transgressor, and a liar."

29) O my, Mosheh kindred - (Israelites/Jacobites), for you all is Al Mulku 'The Rulership'. Today the (Eloheem, Anunnaqi) will become evident, (Nibiru will come and all will see it) in the planet Qi, 'Earth.' So who will aid us from the Baas 'Wretchedness' of The Source, ALLAH if it comes upon us? The Pharaoh (Ramses II) said: "I don't show you all except that which I see, and don't I lead you all into calmness on the path of the right direction?"

The Faithful Man Of The Mizramites Said To Them, They Are To Be Aware Of The Likes Of That Which Befell The Parties Like Nod And Enoch, Sodom And Gomorrah, Ad - On The Day Of The Calling, There Will Be No Haad For Those Whom The Source, Allah Leads Astray Into Error, - Yosafe Came To Them With Clear Evidences, But They

Still Were In Shakk

30) And he who had faith said: "O my kindred! Surely I fear for you, the like of that which befell Al Ahzaabi 'The Parties'."

31) Just like the state in which We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) put the kindred of Noach - (evil cities of Nod and Enoch), and 'Ad and Thamud and those after them, (Babylon and Sodom and Gomorrah); and The Source, ALLAH does not want His slaves in a state of unjustness.

32) And, O my Qawm, 'Kindred!' I fear for you the day of Al Tanaad, 'The Calling Out (when all the names on the list will be read)."

33) The day on which you will turn back retreating; there shall be no defender for you from The Source, ALLAH, and whomsoever, The Source, ALLAH causes to go astray into error, there is no Haad 'Leading Calmness' for him.

34) And indeed Yosafe, came to you before with Bayyinaati 'Clear Evidences', but you still remained in Shakk 'Distrust', as to that which he brought; until when he Halaka 'Perished,' you said: "The Source, ALLAH will never raise a Rasuwl 'One Sent' after him. Just like that, does The Source, ALLAH causes to go astray into error he who is a Murtaabu 'Sceptic' Musrifun

'Transgressor'.

The Source Puts A Stamp On The Heart Of The Gibbor/Jabbaar - Pharaoh Asks Haman To Build A Lofty Palace, So That He Can Ascend To The EloH Of Mosheh - The Faithful One Tells His Enosites To Follow Him To The Right Path - He Who Does An Evil Deed, Will Be Rewarded Its Likeness - Mosheh Asks Why His Nation Calls Him To The Fire, While He Calls Them To Salvation? - Mosheh Entrusts His Affair Upon Allah - The Source Protected Mosheh Of The Evil Consequences - Pharaoh's Family Was Overtook With The Most Evil Punishment

35) Those who dispute concerning the signs of The Source, ALLAH without any authoritative power that He has given them; greatly Muqtaan 'Hated' is he, by The Source, ALLAH (ALLAH hates) and by those who are faithful (the faithful hates). Just like that, does The Source, ALLAH put a Yatba-u 'Stamp' over the heart of every big-chested, pouting with pride, Jabbaar/Gibbor 'Mighty One'.

36) And Pharaoh, (Ramses II) said: "O Haaman (ruler of Persia) Abni 'Build' for me a Sirhaan 'Lofty Palace' (place in

another galaxy) that perhaps I may Ablughu 'Reach' Al Asbaaba 'The Paths' (thru the stars)."

37) That I can Tali-a 'Ascend' (raise up to) Asbaaba 'The paths' of the Samaawaat 'Skies' (in the skies) upward to see the ILAAHI, (ALLAH) 'Source' of Mosheh (Yahuwa) and surely I consider him, (Mosheh) Kaadhibaan 'A Liar'; and just like that, the evil of his deed was made Zuyyina 'Fair-Seeming' to Pharaoh (Ramses II); and he was made to remain aloof from the true path; and the plots of Pharaoh (Ramses II) could do nothing, but perish.

38) And he who had faith from (the Mizramites/Egyptians) said: "O my kindred! Follow me, I will lead you into calmness to the right path."

39) O my Qawm, 'Kindred!' This Al Dunyaa 'The Life Of The Physical World,' is only a Mutaan 'Temporary Enjoyment', and surely Al Aakhirat 'The End', is the Daar 'Abode' to Al Qaraari 'Settle Down' in.

40) Whoever does an Sayyi-atin 'Evil' deed, he shall not be rewarded nothing, but the Mithal 'Like' of it, and whoever does Saalihaan 'Perfect' deeds, whether a Zakar 'Male, Forgetful One' or an Unthaa 'Second Part, Female,' and he is a faithful one; these shall enter

the Jannat, in which they shall be given Rizq 'Provision' without measure.

41) And, O my kindred (Jacobites)! How is it that I, (Mosheh) call you to Al Najaawati 'Salvation', and you call me to the fire?"

42) You call on me, that I should conceal that which I know to be a fact about The Source, ALLAH and Ushrika 'Associate' with Him that which I have no knowledge of, and I call you to Al 'Aziyz 'The Mighty' Al Ghaffaari 'The Most Forgiving'.

43) No Jarama 'Doubt!' That which you call me to, (has no title) to be called on in this physical world, nor in The End, and that our turning back, is to The Source, ALLAH, and that Al Musrifiyna 'The Transgressors' are the companions of the fire.

44) So you shall remember that which I say to you, and I entrust my Amr 'Affair' to The Source, ALLAH. Surely, ALLAH sees the slaves.

45) So The Source, ALLAH Waqaa 'Protected' him from the Sayyiaati 'Evil Consequences' of that which they planned, and the most evil punishment overtook Fir'own's (Ramses II) family.

46) The fire, they shall be brought on it (every) Early Daytime Hour and Dusk Period

(Evening) and on the day when the hour shall come to pass; make Firown's (Ramses II) family enter the most severe pain.

The Weak Shall Ask Those Who Pout With Pride, Will They Avert From Them A Portion Of The Fire? - Those In The Pain Will Ask For Your Rabb To Lighten The Pain - The Prayers Of The Concealers Of The Facts Leads One Astray Into Error- Allah Will Aid Those Rusul And Those Who Had Faith

47) And when they shall contend with one another in the fire, then the weak shall say to those who were Astakbaruw 'Big-Chested (pouting with pride)': "Surely we were your followers; so will you then avert from us, a Nasiybaan 'Portion' of the fire?"

48) Those who were Astakbaruw 'Big-Chested, (pouting with pride)' shall say: "Surely we are all in it;" Surely The Source, ALLAH has Hakama 'Used Wisdom' between the Ibaad 'Slaves'.

49) And those who are in the fire shall say to the Jazanati 'Keepers' of Jahannama 'Hell': "Call upon your Rabb, who is 'Sustainer,' that He (He Not We) may Khaffifu 'Lighten' Al Adhaabi 'The Pain' for us this day.

50) They said did not there come to you, your Ones Sent, by way of the Bayyinaati 'Clear Evidences'?" They said: "Nevertheless." Fa-aduw 'So Pray (call upon)'; except that the Duaauw 'Prayers (call)' of those who conceal that which they knew to be the facts are nothing and leads one astray into error."

51) Surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will aid the Ones, We (Eloheem Anunnaqi) sent, Our (Our Not My) Rusul, and those who are faithful in the life of this physical world and on the day when all will watch (the Resurrection).

No Excuse Shall Benefit The Unjust On That Day - Mosheh Is Given The Leading Calmness - Torah Sent As A Calmness And A Remembrance To Israel- Muhammad Told To Have Patience, And Seek Forgiveness For His Zamb'- Those Who Dispute The Signs Concerning Allah, Their Desire Is Only To Be Great

52) On that day, their excuse shall not benefit the unjust, and for them is Al La'anaa 'The Physical Curse', and for them is the Suw-u 'Evil' Daar 'Abode'.

53) And indeed it was Us, ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi) who gave Mosheh the leading calmness, and We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made the

Banee Israa'iyi 'Children Of Israel/Jacob' to Waratha 'Inherit' the scripture - (the Torah, 5 Books of The Eloheem Moshch, The Prophet Aharown and Mosheli' Successor, The Apostle Yehowshuwa).

54) As a Hudaan 'Leading Calmness' and a Dhikraa 'Remembrance' for the Uwli 'First Ones' - (Tribe of Israel before the Tribe of Ishmael) who have intellect.

55) So have patience, (Muhammad). Surely, the promise of The Source, ALLAH is a Haqq 'Fact' and you are to seek forgiveness for your Zanb 'Faults', and glorify with Hamd 'Gratitude' your Rabb, who is 'Master and Sustainer' in Al 'Ashiyyi 'The Dusk Perod (Evening)' and Al Ibkaari 'The Early Daytime Hours'.

56) Surely, those who Yujaadilu 'Dispute' concerning the signs of ALLAH, 'Source', without any Sultaanin 'Authoritive Power' given to them, there is only a desire in their chests to be Kibrun 'Big, (great)'; and they will never reach it. So seek protection in The Source, ALLAH; surely He (He Not We) is Al Samiy-u 'The Hearer', Al Basiyru 'The Seer'.

The Khalaaq Of The Skies And Earth/Qi Is Greater Than The Creation Of The Enosites - The Blind And The Seeing

Are Not Alike - The Hour Is Coming - Those Who Are Big-Chested, Pouting With Pride, They Will Enter Hell, Abased

57) Verily the Khalaaq, 'Creation' of the Samaawaat 'Skies' and Qi, the planet 'Earth' is Akbaru 'Bigger' (than most humans know) than the Khalqi 'Creation' of the Enosites, but most Naas do not know that.

58) And Al 'Amaa 'The Blind' and Al Basiyr 'The Seeing' are not Yastawi 'Alike', nor are those who are faithful and work to Saalihaati 'Perfect Themselves' and Al Musiy-u 'The Evil-Doer'; little is it that you all Dhakkar 'Remember'.

59) Most surely Al Saa'ah 'The Hour' is Aatiyat 'Coming'; there is no Rayba 'Doubt' about it, but most Enosites/Naas do not have faith.

60) And your Rabb, 'Sustainer' says: "Call upon me, I will Tajib 'Answer' you; surely those who are Astakbir 'Big-Chested, (Pouting With Pride)' about My (My Not Our), ALLAH'S enslavement, shall soon enter jahannam 'Hell', Daakhiriyn 'Abased'."

Allah Made The Shadow Hour For You, That You May Rest In It - Allah Is The Khaaliq Of Everything - Allah Made Jannat A Resting Place, And

*The Skies A Canopy - He,
Also Provided You With The
Tayyibaat - Yahuwa Is Al
Hayyu - No Allahs Would
Exist Except By Way Of Him
- Muhammad Prohibited From
Slaving For That Which The
Meccans Call On - Yahuwa
Created You From
Dust, Then A Life Germ, Then
An 'Alaqat - He Says To It,
'Kyn.'*

61) The Source, ALLAH is He (He Not We), who made Al Layla 'The Shadow Hour Period' for you, that you may Taskunuw 'Rest' Fiyha 'In It' and Al Nahaara 'The Daytime' to Basir 'See'; most surely, The Source, ALLAH has preferences to the Naas, but most Enosites do not give thanks, (they are not grateful).

62) That is The Source, ALLAH, is your Rabb, 'Sustainer,' the Khaaliq 'Creator', of everything; no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources', will exist except by way of Him (HU); so why are you then turned away?

63) Just like that, they were turned away, those who denied the signs of ALLAH.

64) The Source, ALLAH is He (He Not We) Who made the planet (Tiamat/Qi) 'Earth' a Qaraaraan 'Resting Place' for you (put you on this planet) and Al Samaa-a 'The Skies' a

Binaa-an 'Canopy' (asteroid belt), and He Sawwara 'Fashioned' (cloned) you, then he made Ahsana 'Best' Suwarakum 'Your Fashion' (Bread You), and Razaqakum 'Provided You All' from Al Tayyibaati 'The Agreeable Things'; that is The Source, ALLAH, your Rabb; blessed then is The Source, ALLAH, the Sustainer, Rabb of the Known World.

65) He, (HU) is the Hayyu 'Living.' No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist, except by way of Him (Him Not Us); therefore call on Him being Mukhlis 'Purified' to Him in the Diyn, 'Means Of Judgment'. Al Hamdu 'The Gratitude' is due to Him, the Rabb of the Known World.

66) Tell them this, (Muhammad): "Surely I have been prohibited from slaving for those whom you, (Meccans) call on other than The Source, ALLAH, when the clear evidence - (the Torah) has already (before me) come from my 'Sustainer,' who is Rabb, and I, (Muhammad) am ordered to Aslima 'Surrender In Peace' to the Rabb 'Sustainer', of all the Known World.

67) He [He Not We], (ALLAH) is, who Khalaqa 'Created' you all from Turaabin 'Dust' (from the particle of the earth, first evolution), then from a

Nurfatin 'Life-Germ, Semen' (then cloned 14 Ilybrids); then from Alaqaat 'Clot Of Congealed Blood (Cells Separating Of Mother Ninti)'. Then He brings you forth as a Tislaan 'Baby'; then so that you might Balagha 'Reach' Ashuddakum 'Maturity', then you will become Shuyuwkhaan 'Elders' (Shaikhs); and of you, there are those who Yutawaffaa 'Die' before (old age) and yet are suppose to reach Ajalaan 'Fixed Term' Musamman 'An Appointed Time,' and that perhaps you will Aqala 'Learn' (from this)."

68) He (He Not We) is who Yuhi 'Gives Life' and Yumiytu 'Causes Death'. So when He decides a Amraan 'Command', so surely He says to it, Kun 'Exist', Fa-yakuwn 'So Into Existence It Comes'.

*Those Who Deny The
Scripture Will Know That
Which Is In Store For Them
- They Shall Be Dragged,
With Fetters And Chains -
They Will Be Asked, "Where
Is Their Associating Partners?"
- They Will Admit The Other
Sources Led Them Astray -
They Shall Enter Jahannam, A
Dwelling Place For The
Mutakabbiriyn*

69) Have you not seen those who dispute with the signs of

The Source, ALLAH; how are they turned away?

70) As for those who lie and deny with the Scripture (the Qur'aan) and that which We (Eloheem Anunnaqi) Sent With Our Rasul 'Ones Sent'; (All Of The Other Scriptures, Tablets From Before, Enuma Elish, Gilgamesh Epics, Etana, The Secrets Of Adafa, Nergal And Arishkegal, The Descent Of Ishtar To The Underworld, Atra Hasis), they shall soon know that (which is in store for them).

71) When Al Aghlaalu 'The Fetters' and the chains shall be on their necks; they shall be Yashab 'Dragged'.

72) Into Hamiym 'Boiling Water', then they shall burn in the fire.

73) Then it shall be said to them: "Where is that which you Tushrikuwn 'Associated Partners With (Other Deities)?"

74) Besides The Source, ALLAH? They shall say: "They has lead us astray into error." In fact, we did not call upon anything before. Just like that, does The Source, ALLAH lead Al Kaafiriyn 'The Concealers Of The Facts,' astray into error.

75) That is because you Tafrah 'Exulted' in the (Tiamat), planet 'Earth' without the facts; and because you Tamrah 'Behaved Insolently'.

76) Enter the gates of Jahannam 'Hell/Purgatory' to abide in it

eternally; how evil, wretched a Mathwa 'Dwelling Place' it is for Al Mutakabbiriyn 'The Big-Chested Ones, (Pouting With Pride)'.

77) So be Sabr 'Patient', surely the promise of The Source, ALLAH is a fact. So should We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) make you see part of that which We (Eloheem Anunnaqi) promised them with, or should We (Eloheem Anunnaqi) cause you to pass on, die. So to Us ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi) they shall be returned.

*Rusul Sent Before You,
Muhammad - The Rasuwl
Brings A Sign Only By Allah's
Permission - Allah Is He Who
Made The Cattle For You To
Ride On And Eat From -
Those Who Were Greater In
Strength And Fortifications,
Didn't Avail Them - When
They See The Wretchedness
Of The Eloheems Pain, They
Say, "They Have Faith In
The Source." And Deny The
Associates - Their Faith Is Not
Going To Benefit Them - The
Punishment Is Allah's Sunnat,
Which Passed From Amongst
His Slaves From Before*

78) And certainly We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent Rusul 'Ones Sent' before you (Muhammad); there are some of

them that We have narrated, (mentioned) to you and there are others whom We (Eloheem Anunnaqi) have not mentioned to you; and it was not meet for a Rasuwl that he should bring a sign except with The Source, ALLAH'S permission, but when the Amr 'Command' of ALLAH came, judgment was given with facts, and those who treated it as a lie, were lost.

79) The Source, ALLAH is He (He Not We) who made the An'aam 'Cattle' for you that you may Tarkab 'Ride' on some of them, and you can Ta'kul 'Eat' some of them.

80) And there are benefits for you in them, and that you may attain a want in your chests from them; and you are carried upon them and upon Al Fulki 'The Crafts'.

81) And He (He Not We) shows you His (His Not Our) signs; then which of The Source, ALLAH'S signs will you deny?

82) Have they not then Yasiyruw 'Moved About' in Al Ardi 'The Earth' and seen how the end was of those before them? They were more (in numbers) than them and forceful in Qawwatan 'Strength' and in fortifications in the earth; but that which they earned, did not avail them.

83) Then when their Rusul 'One Sent' came to them with Bayyinaati 'Clear Evidences',

they exulted any knowledge that they had in their possession, and then, that which they use to ridicule, surrounded them.

84) But when they saw Baasanaa 'Our Wretchedness', they said: 'We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) have faith in The Source, ALLAH Wahdah 'Alone', and we deny that which we used to Mushrikiyn 'Associate (other deities with him)'."

85) But their Iymaan 'Faith' was not going to benefit them when they had seen Our (Our Not My) misery (punishment); this is The Source, ALLAH'S Sunnat, 'Tradition,' which has certainly passed from amongst His (His Not Our) slaves, (from before); and there, the concealers of the facts are lost.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Sixty-One

Revealed In The Year 616 A.D.

Fussilat

(Explained In Detail) Or

Ha Mim

(Hakiym And Muhammad)


Original Order Chapter 61;

Wrong Order Chapter 41

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Qur'aan Sent Down By The

Rahman- Most Enosites Turn Away From The Qur'aan-Muhammad A Bashar Like Them -Those Who Don't Give Zakat Are Kaafirun - Muhammad Asks The Meccans, Do They Set Up Equals With Allah? - The Source Turns His Direction To The Skies - The Source Ordained Them Seven Heavenly Skies

61 () Ha: Hakiym - 'Wisdom' of Miym: Muhammad. 2) (Al Qur'aan) was sent down from Al Rahmaan 'The Rahman', who is Al Rahiym 'The Most Merciful'.

3) A scripture whose verses are in Fusilat 'Detail', 'Arabiyyan 'An Arabic' Qur'aan, (in the Qurayshan dialect) for a kindred who knows.

4) Good news and a Nadhiyraan 'Warning'; yet most of them turn away from it, (the Qur'aan), so that they can't even Yasma 'Hear'.

5) And they say: "Our hearts are in Akininnatin 'Coverings' from that to which you call us; and there is a Waqrun 'Heaviness' in our ears, and a Hijaabun 'Veil' (hangs) between us and between you (Muhammad). So work. We too are working."

6) Tell them this, (Muhammad): "I am only a Bashar, 'Mortal In Skin,' like you. It has been inspired to me, that

ILAAHUKUM (Your ALLAH), 'Source' is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source', therefore, so stand up to Him (Him Not Us), and ask for His (His Not Our) forgiveness; and curse be to the Mushrikiyn 'Associates'.

7) Those who do not give the Alms 'Zakaat' and they are Kaafirun, 'Concealers In That Which They Knew To Be The Facts,' in The End;

8) Surely, as for those who are faithful and try to Saalihaat 'Perfect Themselves', they shall surely have a reward never to be cut off.

9) Tell them, (the Meccans) this, (Muhammad): "What! Do you indeed conceal that which you knew to be the facts about Him (Him Not Us) who created the Qi/Ard 'Earth' in Yawmayni 'Two Days (Periods)' - the two cycles: the creation, and the re-construction), and do you Andaad 'Set Up Equals', with Him? That is the Sustainer, 'Rabb' of the Known World.

10) And He (He Not We) made in it Rawaasiya 'Mountains' above its surface, and He blessed in it, and made in it its nourishment in Arba'ati 'Four' Ayyaamin 'Days' (four cycles); Sawaa-in 'Alike' for the seekers (2 sun cycles, 2 moon cycles, 4 periods or time).

11) Then He (He Not We), Astawaa 'Turned His direction'

to the (Heavenly) Skies and it was Dukhaanun 'Smokey, (dark clouds),' so He said to it, and to the planet (Qi) Earth, come Tawaan 'Willing' or Karhaan 'Unwillingly'. They both said: "We come Taai'iyina 'Willingly'."

12) So Qadaahunna 'Hunna 'Those Two' Anshar And Kishar), Ordained' them seven Heavenly Skies: (Mummu (Mercury) Lahamu (Venus) Lahmu (Mars) And The Second Firmament: Kishar (Jupiter) Anshar (Saturn) Ea (Neptune)) in Yawmayn 'Two Days' (Periods), and Awhaa 'Inspired' in every Sky its affair (in each galaxy they have their own affair); and We, ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Zayana 'Adorned' Al Dunyaa (This Planet) 'The Lower' skies (beneath the asteroid belt) with Masaabiyha 'Brilliant Lights (Crafts Like Stars)' and (made it to) Hifzaan 'Guard' (Angelic Being To Protect The Vortex); that is the Taqdiyr 'Decree' of Al 'Aziyy 'The Mighty', Al 'Aliym 'The Knowing'.

*If The Meccans Turn Aside,
They Will Have A Scourge Of
'Ad And Thamud' - 'Ad And
Thamud Told To Slave For
None, Except Allah - 'Ad And
Thamud Think They Are
Nightier Than The Eloheem -
A Furious Wind Was Sent
Upon 'Ad - Thamud Was*



Figure 134
Anshar

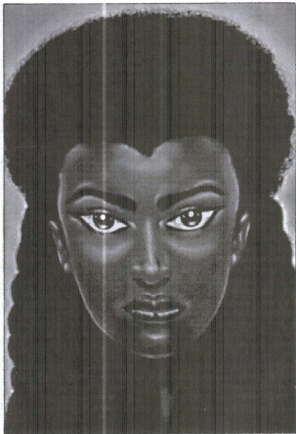


Figure 135

Kishar

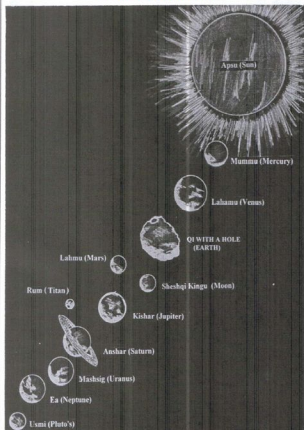


Diagram 27
All Of The Planets In The Firmaments (Your Solar System)

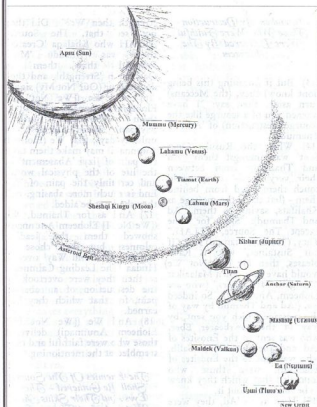


Diagram 28
The Two Firmaments

*Overtaken By Destruction -
Those Who Were Faithful
Were Delivered By The
Eloheem*

13) But if (meaning this being dont know) they, (the Meccans) turn aside, then say: "I have warned you of a scourge like the scourge (destruction) of 'Ad and Thamud."

14) When the Rusul, 'Ones Sent' was amongst them ('Ad and Thamud); from between their very hands' (they could touch them), and from behind them - (left them the message as Khalifats, saying to them, 'Ad and Thamud): "Slave for none except The Source, ALLAH." They, ('Ad and Thamud) said: "If our 'Sustainer,' who is Rabb pleases, then He (He Not We) would have sent down Malaaiikat - 'Angelic Messengers,' (who are Eloheem, Anunnaqi). So indeed we, ('Ad and Thamud by way of the message which you sent, by way of the newsbearer Eber, who was sent to the Enosites of 'Ad and the newsbearer Salih, who was sent to the Enosites of Thamud), were those who concealed that which they knew to be the facts about it.

15) Then as to 'Ad, they were Astakbaru 'Big-Chested, (pouting with pride) in the (Qi/Tiamat), planet 'Earth' without the facts, and they said: "Who is more forceful in

strength then We?" Did they not see that, The Source, ALLAH who Khalaga 'Created' them was Ashaddu 'More Forceful' than them in Qawwatan 'Strength', and they denied Our (Our Not My) signs?

16) So We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent upon them a Sirsaraan 'Furious' Riyhaan 'Wind' (crafts) in unlucky days, that We (Eloheem Anunnaqi) may make them taste the pain of Jizyi 'Abasement' in the life of the physical world; and certainly the pain of The End is much more abasing, and they shall not be aided.

17) And as for Thamud, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) showed them the leading calmness, but they chose Al 'Amaa 'The Blind Way' over Al Hudaa 'The Leading Calmness', so then they were overtook by the destruction of an abasing pain, for that which they had earned.

18) And We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) delivered those who were faithful and they trembled at the mentioning.

*The Enemies Of The Source
Shall Be Gathered - Their
Eyes And Their Skins Shall
Watch Against Them - Evil
Thoughts You Entertained Has
Troubled You Down Into
Perdition - Eloheem Anunnaqi
Assigned Guardian Anunnaqi*

For Human Belings - The Human Jinn Are In A State Of Loss - Those Who Conceal The Facts, Yell Out False Words Against It While The Qur'aan Is Being Recited - The Fire Is For The Enemies Of The Source - Those Astrayed From Abraham's Seed, Will Say: The Source Will Make Them See The Jinn."

19) And on the day that the enemies of ALLAH shall be gathered to Al Naar 'The Fire', then they shall be Yawzauwn 'Formed Into Groups'.

20) Until when they come to it, their hearing and their sight and their Jald 'Leathery, Skin' shall Shahida 'Watch' against them as to that which they did.

21) And they shall say to their Jald 'Leathery, Skins': "Why have you watched against us?" They shall say: "The Source, ALLAH who makes everything speak, has made us speak, and He (He Not We) Khalaga 'Created' you the Awwala 'First' Marratin 'Time', and to Him (Him Not Us), you will return.

22) And you did not Tastatiruwna 'Veil Yourself', unless your hearing and your sight and your Jald 'Leathery, Skins' should watch against you, but you thought that The Source, ALLAH did not know most of that which you did.

23) And that was your (evil) Dhana 'Thought' which you Dhana 'Thought' about your Rahh, 'Sustainer/Master' that has Ardaakum 'Troubled You Down Into Perdition', so are you to become of Al Khaasiriyn 'The Lost Ones'.

24) Then, if they will endure with patience, so the fire is an abode for them, and if Yasta'tibuw 'They Ask For Goodwill', then are they not of those who shall be Al Mu'tabiyna 'Granted Goodwill'.

25) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have assigned for them, (Enosits) Qarnaa-a 'Intimate Associates', so make for them Zayyanuw 'Fair-Seeming' that which is between their hands and what is behind them - (the enosite and their past); and the facts (beyond any doubt) has been pronounced against the kindred which have already passed away before of the Jinn - (the realm of the Cherubeem who fought in the Skies before the planet Tiamat or Al Ard, known as 'Earth' lead by the evil, disagreeable Jinn, 'Azaziyl, Tarnush, or Humbaba, the father of Haylal, or Shaytaan and his Host of Unholy, Disagreeable, Malevolent Beings called Cherubeem and Michael/Murdoq and his Holy, Agreeable, Benevolent Beings called Serapheem) and the Enosite- (evil beings who are in

For Human Beings - The Human Jinn Are In A State Of Loss - Those Who Conceal The Facts, Tell Out False Words Against It While The Qur'aan Is Being Recited - The Fire Is For The Enemies Of The Source - Those Astrayed From Abraham's Seed, Will Say: "The Source Will Make Them See The Jinn."

19) And on the day that the enemies of ALLAH shall be gathered to Al Naar 'The Fire', then they shall be Yawzaunw 'Formed Into Groups'.

20) Until when they come to it, their hearing and their sight and their Jald 'Leathery, Skin' shall Shahida 'Watch' against them as to that which they did.

21) And they shall say to their Jald 'Leathery, Skins': "Why have you watched against us?" They shall say: "The Source, ALLAH who makes everything speak, has made us speak, and He (He Not We) Khalaqa 'Created' you the Awwala 'First' Marratin 'Time', and to Him (Him Not Us), you will return.

22) And you did not Tastatiruwna 'Veil Yourselfs', unless your hearing and your sight and your Jald 'Leathery, Skins' should watch against you, but you thought that The Source, ALLAH did not know most of that which you did.

23) And that was your (evil) Dhana 'Thought' which you Dhana 'Thought' about your Rabb, 'Sustainer/Master' that has Ardaakum 'Troubled You Down Into Perdition', so are you to become of Al Khaasiriyn 'The Lost Ones'.

24) Then, if they will endure with patience, so the fire is an abode for them, and if Yasta'tibuw 'They Ask For Goodwill', then are they not of those who shall be Al Mu'tabiyna 'Granted Goodwill'.

25) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have assigned for them, (Enositeo) Qarnaa-a 'Intimate Associates', so make for them Zayyanuw 'Fair-Seeming' that which is between their hands and what is behind them - (the enosite and their past); and the facts (beyond any doubt) has been pronounced against the kindred which have already passed away before of the Jinn - (the realm of the Cherubeem who fought in the Skies before the planet Tiamat or Al Ard, known as 'Earth' lead by the evil, disagreeable Jinn, 'Azaziyl, Tarnush, or Humbaba, the father of Haylal, or Shaytaan and his Host of Unholy, Disagreeable, Malevolent Beings called Cherubeem and Michael/Murdoq and his Holy, Agreeable, Benevolent Beings called Serapheem) and the Enosite- (evil beings who are in

Human form the cursed Canaanites - the pale race), surely they, (the Human Jinn), are in a state of loss - (the losers).
 (26) And those who conceal the facts say don't listen to Haadha 'This' Qur'aan and Alghuw 'Yell Out' (false words while it is being read) so that perhaps you all will Taghlibuwn 'Conquer It' - (meaning, you will be so loud no one will hear it)."

(27) Therefore, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will most certainly make those who don't have faith taste a forceful punishment, and We (Eloheem Anunnaqi) will most certainly reward them for the Aswaa-a 'Evil Deeds' they used to do.

(28) That is the reward for the enemies of The Source, ALLAH - the fire. In it, (the fire) is an Daar 'Abode' for eternity. This is the reward for that which they rejected of Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) signs.

(29) And those who conceal that which they know to be the facts - will say: "Our Rabb, 'Sustainer' will make us Araa 'See' those who Adhallaanaa 'Cause Us To Be Unjust, (hegible)' of the Jinn - (200 fallen Disagreeable, Malevolent Beings called Cherubeem) and Al Insi 'The Enosite': (cursed seed of Canaan who are the pale race,) so that we, (true peaceful ones) will make both of them Tahta 'Beneath' Aqdaamina 'Our Feet'

so that they will be of the Asfaliyn 'Lowest Ones' - (suffer the greatest humiliation).

Those Who Stand Up For That Which Is Right, The Messengers Will Come Down To Them - They Are The Nearest Friends In This Physical World And The End - And A Rizq (Rizqan) From The Forgiving, Most Merciful - Are Good And Evil Alike? - If Shaytaan Incites You To Do Evil, Then Seek Allah's Protection

(30) Surely, those who say: "Our Rabb is ALLAH", then they stand up, for that which is right; The Malaa-ikat 'Angelic Messengers' (Eloheem Anunnaqi) will come down upon them, (the receiver; the Holy Ghost, Nusqu, who bore the title Gabriyl saying): "Don't fear, nor grieve and receive the good news (in Al Qur'aan) of The Al Jannat 'The Garden,' of that which you were promised.

(31) We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) are your Awliyaa 'Nearest Friends' (Guardians) in the lives of the physical world and in Al Aakhirat 'The End', and you shall have in it, that which your Nafs 'Self/Spirits' desire and you shall have in it that which you ask for.

(32) Sent down from a Ghafuwr 'Forgiving,' Rahiym 'Most

Merciful.' 33) And whos speech is Ahsana

'Better' than he who calls upon, (pray) to The Source, ALLAH and works to perfect himself, and says: "I am of those Al Muslimiyn 'The Ones Who Surrender In Peace'?"

34) And don't Tastawiy 'Equal' Al Hasanatu 'That Which Is Best' and not Al Sayyi-atu 'That Which Is Evil'. Repel (evil) with that which is Ahsana 'Best'. When behold! He who has enmity between you and him would be as if he was a Hamiym 'Hamite, Nubian Brother'?

35) And none are made to receive it, but those who are Sabr 'Patient', and none are made to receive it, but those who have a 'Aziym 'Mighty', good fortune.

36) And if Shaytaan 'Satan' (The Reptilian) tries to Zaghanna 'Incite' you to do evil with Nazagha 'Insinuation', (of his Satanic inspiration), then seek protection by way of The Source, ALLAH. Surely, He (He Not We) is Al Samiy-u 'The Hearing', Al Aliym 'The Knowing'.

The Layl And The Nahaar And The Sun And The Moon Are Amongst Allah's Signs - Those Who Glorify Him, Are Not Tired - The Source Has Power Over All Things - The Pharisees And The Scribes

Who Distort The Qur'aan, Are Not Hidden From The Anunnagi - The Qur'aan Is A Mighty Scripture - Qur'aan Sent Down By The Wise, One Worthy Of Gratitude - Anything That Was Said To Ahmad, Was Said To The Rusul Before Him - If The Qur'aan Was In A Foreign Language, Those Who Doubt Will Say, If Only The Qur'aan Was Explained Better."

37) And among His (His Not Our), signs are the Layl, 'Shadow Hour Period' and the Nahaar, 'Daytime' and the Shams, 'Sun' and the Qamar, 'Moon'. Do not Tasjuduw 'Make Prostration' to Al Shams 'The Sun', nor to Al Qamar 'The Moon'; and Asjuduw 'Make Prostration' to The Source, 'ALLAH' who Khalaq 'created' them, if He (He Not We) is whom you slave for.

38) But if they are Astakbar 'Big-Chested, (pouting with pride)', yet those with your Master, who is Rabb glorify Him (Him Not Us) during Al Layl 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'The Daytime', and they are not tired.

39) And among IIs (IIs Not Our) signs, that you see the planet Qi, 'Earth' Khaashi'atan 'Barren', but when We ([We Not He] Eloheem Anunnagi) send

down the water on it, it Ihtazzat 'Stirs' and Rabat 'Swells'; most surely, He (He Not We) who Ahyaahaa 'Gives It Life', is the Muhyi 'Giver Of Life' to Al Mawlaa 'The Dead'. Surely He has power over all things.

40) Surely, those (Pharisees and Scribes) who Yalhid 'Distort, Alter' that which is in Our, (Our Not My - Eloheems) verses - (The Qur'aan), they are not hidden from Us. (We know who you are). Isn't it, that he is better than he who will be cast into fire; or he who comes faithful on the Day of Resurrection? You all do that which you all want; surely He (He Not We), sees you all by way of that which you do.

41) Surely, those who conceal that which they know to be the facts about that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Dhikri 'Remind' them - (the Qur'aan) when it has come unto them, and verily it, (Al Qur'aan), is a 'Aziyz 'Mighty' Scripture.

42) The falsehood shall not come to him, (Muhammad) from between his hands and not from behind him. (There will not be any fault in the Qur'aan or the Scriptures before the Qur'aan). It was sent down from The Hakiymin 'Wise', (The One Who Is Worthy Of) Hamiydin 'Gratitude'.

43) He, did not say anything to you, (Ahmad), except that which He, had said to the Rusul

(Yashu'a/Isa And Mosheh And Abrawhawm) 'One Sent' from before you, (Ahmad); for surely (Muhammad), your Rabb is He (He Not We), who forgives and He who punishes with an aching pain (Hell).

44) And if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) had made it, the Qur'aan (to be read) in a A'ajamiyyaan 'Foreign Language'; then they, (those who want to doubt) would say: "If only the Aayaat 'Verses' of (the Qur'aan) was (better) Fussilat 'Explained In Detail'. (How come), it is in a A'ajamiyyun 'Foreign Language' and you (Muhammad) are Arabiyyun 'An Arab'?" Tell them this, (Ahmad): "It, (the Qur'aan) is (only) for those who have faith, it is a calmness and a Shifaa-u 'Healing'; (a power only for those who can read it in Arabic); and those who don't have faith, in their ears is a deafness and they are also blind to it, (the Qur'aan. If you don't overstand arabic you cant overstand the Qur'aan). They are those of you, whom will be called to it, (the Qur'aan. Many foreigners will learn its Arabic); from a far Makaanin 'Place' (America, Europe, Pakistan).

*Eloheem Gave Mosheh,
Aharown And Yehowshuwa
The Torah - Your Rabb Is
Not Unjust To The Slaves -*

*The Knowledge Of The Hour
Will Return To Him, Allah -
The Female Will Not Carry
And Lay Her Load Except By
His Permission - Al Insaan
Will Not Tire From The
Calling Of Goodness, But
Become Despair - Those Who
Conceal The Facts, The
Eloheem Will Make Them
Taste A Severe Pain*

45) And indeed We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi), gave (The Eloheem) Mosheh the scripture - (the 5 Books of the Torah, and The Prophet Aaron and Mosheh's Successor, The Apostle Yehowshuwa), Fa-akhtalifa 'So Differences Arose' in it, (the Torah. The Pharisees created a Talmud and Mishna) and if the word had not already Sabaqat 'Gone Forth' from your Rabb (The original Tablets of Mosheh), there would have been judgment between them, (those who obey the scripture, and those who disputed about it); and surely they are in Shakkin 'A Distrust' Minhu 'From It', Muriybin 'A Hopeless Doubter', (about that which is in the scriptures).

46) Whoever works for Saalihaan 'Perfection', so it is for his ownself, and whoever does evil, it is against it; and your Rabb is not in the least, Zallaamin 'Unjust' to the slaves.

47) The knowledge of Al Sa'ah 'The Hour,' will be returned to him; and no Thamaraat 'Fruit' will come forth from its Akmaam 'Sheath', (skin) and the Unthaa 'Second Part, Female' will not Tahamal 'Carry' and Tada'u 'Lay Her Load' except by way of his knowledge; and the day He (He Not We) will call them (and say): "Where are the Shurakaa-iy 'Associating Partners (other deities) to Me'?" They said: "We will assure you, there is not one of us who can Shahiydin 'Watch'."

48) And they were led astray from them - (the idols, Baal Hadad), of that which they used to call upon from before, and they thought that they will not have a way to Mahiysin 'Escape'.

49) Al Insaan 'The Enosite' will not tire from Khayri 'Agreeable' calling (asking for agreeable things), but if Sharru 'Disagreeableness' afflicts, (touches) him, so he becomes distress, and one who is depaired, (losing hope).

50) But if We (We Not He) make him, (the Enosite) to taste a Rahmat 'Yielding' (mercy) from Us (Us Not Me), from after the harm touches him, verily he will say: "This is because of me; and I don't think the hour will stand, (be established)" and verily, if I am returned to my Rabb, surely, for me are the better (things in His presence)."

Verily We, (Anunnaqi Eloheem) will inform those who conceal that which they knew to be the facts, of that which they have done, and We will make them taste the severe pain.

*When Eloheem Grant Grace
Upon The Enosite. He Turns
Away - When He Is Afflicted
With Evil, He Has A
Prolonged Calling Out - Tell
The Meccans, Have They Seen
That Which Is From The
Possession Of The Source? -
The Anunnaqi Signs Will
Appear To Them In The
Upper Regions Of Qi - Your
Rabb Is A Shahiyd Over All
Things - Nevertheless They
Are In Doubt In Meeting Of
Their Rabb, And Allah Is
Encompassing Over All Things*

51) And when We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) grant grace upon the Enosite, he turns away; and he succumbs to his side; and when disagreeableness afflicts him, he has a prolonged calling out, (prayer).

52) (Muhammad, you are to) tell (the Meccans this): "Have you seen that which is from the possession of The Source, ALLAH, then you all concealed that which you knew to be the facts about it. Who is more astray than he who is in a far Shiqaaqin 'Disunion'?"

53) We, ([We Not He] Eloheem

Anunnaqi) will make them see Our (Our Not My) signs, in the upper regions of (Qi, The Surface Of Earth) and in their own selves, until it will Yatabayyana 'Manifest, Become Evident' to them that it is Al Haqq 'The Fact.' Or is not it enough, that your Rabb, who is 'Master and Sustainer,' is a Shahiyd 'Watcher' over all things?

54) Nevertheless, surely they are in Miryat 'Opposition' about the Liqaa-i 'Meeting' of their Rabb 'Sustainer'; nevertheless, surely he, is watching over all things.

Sudiq Allahi El Azim

Chapter Sixty-Two

Revealed In The Year 618 A.D.; Verses 23, 25,


27 Were Revealed In Medina


*Al Shuwwaa
(The Consultation)
Original Order Chapter 62;
Wrong Order Chapter 42*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*The Qur'aan Is The Work
Of Our Slaves Of The Skies
- Muhammad Is Inspired By
Way Of Inspiration - For
Hlm Is All That Which Is In
The Samaarwaat And Tlamat*

A Yehweh Is The Most High - The Cracking Of The Skies Is Almost Near - The Eloheem Seek Allah's Forgiveness For The Beings Here On Qi - Allah Is A Guardian And A Wakiyl Over Them, Muhammad You Are Not - Qur'aan Inspired With An Arabic, Qurayshan Dialect To Warn Mecca And The Villages Around It - Allah Causes To Enter Into His Yielding Mercy Whomever He Pleases

62 () Haa: Hakiym 'The Wisdom' of Miym: Muhammad.

2)  Aiyn: Ala 'Perhaps' Saa: Saa'ata 'The Hour' Qaa: Qariybun 'Is Near'. (How Generous The Wisdom Is Muhammad For Perhaps The Time Is Near).

3) Just like that, He (He Not We), Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise', has inspired you, (Ahmad), by way of (Weh/Wahy' 'Inspiration') and to those who were before you - (the newbearers from before you).

4) For Him (Him Not Us), is all that is in the Samaawaat, 'Skies' and that which is in the planet (Tiamat/Qi), known as 'Earth', and he is Al 'Aliyyu 'The Most High', (ANU), Al 'Aziym 'The Supreme'.

5) The cracking of the Heavenly Skies is almost near - (the end of this world rule in year 2030 A.D.) from above them; and (the Eloheem, Anunnaqi) glorify by way of their gratitude of their Rabb, 'Sustainer' and they, (Eloheem) seek His (His Not Our), ALLAH'S forgiveness for those who are in the planet Qi. Behold, verily, ALLAH, is He (He Not We), Al Ghafuwru 'The Forgiver', Al Rahiym 'Most Merciful' (to the Enosites).

6) And those who took from besides Him (Him Not Us), Awlii'aa-a 'Near Friends'; The Source, ALLAH is a Hafiyyzun 'Guardian', over them and you, (Muhammad) are not a Wakiyl 'Advocate' over them.

7) And just like that, We (We Not He) inspired you, (Ahmad) with Arabiyyaan 'An Arabic' Qur'aan, (in the Qurayshan dialect) to Tundhira 'Warn' the Umma 'Mother' village, (Mecca) and those who are around it; and it is for you to warn of a Day of Jum'i 'Gathering'. There is no Rayba 'Doubt' Fiyhi 'In It', Fariyqan 'A Portion' of (the Enosites) will be in the Jannat, and a portion in the Sa'iyir 'Flaming Fire.'

8) And if The Source, ALLAH pleased, verily he would have made them Waahidatan 'One' Ummatin 'Nation'; but He (He Not We) causes to enter in His (His Not Our) Rahmat

'Yielding' (mercy), whomever He pleases; and there is not a Waliyyin 'Near Friend' nor a Nasiyr 'Aider' for Al Zaalimawna 'The Unjust One'.

9) Or did they, (the Meccans) take Awliyaa 'Near Friends' from besides Him? So therefore, The Source, ALLAH, he is Al Waliyyu 'The Nearest Friend', and He (He Not We) Yuhyi 'Gives Life' to the dead, and He, is Qadiyrun 'Powerful' over everything.

10) And that which you differed in from things, so its wisdom is to The Source, ALLAH; that is The Source, ALLAH, my Rabb, who is 'Sustainer.' Upon Him, I entrust, and to Him, I will turn to for repentance.

The Source Is The Originator Of The Skies - For Him, Allah Is The Maqaaliyd Of The Skies And The Planet Earth - The Command That Which Was Enjoined Upon You, Muhammad, In The Diyn, The Same As Which Was Enjoined Upon Noach, Aabrawhawn, Mosheh And Tammue - Muhammad You Are To Call All Of The Enosites To The Peaceful Way Of Life - There Is No Huffai Between Us, The Ishmaelites Or Israelites - The Source Sent Down The Scripture As A Fact Beyond

Any Doubt - Those Who Dispute About The Hour Are Verily Astray - The Source Is Lefty With His Slaves

11) Faatiru 'Splitter Of The Atoms' of the Samaawaat 'Skies' and the planet 'Qi', Earth. He (He Not We) made Azwajaan 'Mates, Pairs' for you from your own selves, and he made Azwajaan 'Mates' from Al An'aami 'The Cattle'; He Yadhra-ukum 'Multiplies You' all in it. There is not a Mithl 'Likeness' of anything to Him (Him Not Us); and He is Al Samiy'u 'The Hearer,' Al Baseer 'The Seer.'

12) For Him (Him Not Us), ALLAH is the Maqaaliyd, 'Keys' of the Skies (he opens the vortex) and the planet Qi/Tiamat, 'Earth' (He Opens The Way To Shamballah). Yubsutu 'He Enlarges' Al Rizq (He Makes Room In Rizq) 'The Provision' to whomever He (He Not We) pleases, and He restricts it (and stops who He wills); surely, He is knowing over all things.

13) He (He Not We), has established for you all, the same Diyn 'Means Of Judgment' as He enjoined on Noach, and that which We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) inspired you, (Ahmad) with, that which We, (Eloheem Anunnaqi), has enjoined for Aabrawhawn and Mosheh, and Yashu'a/Isa

(Tammuz): that you uphold the Diyn 'Means Of Judgment,' and don't Tafaraq 'Separate' in it (don't become sects Sunni, Shi'ite, Ahmadiyan, Bah'i, Wahabi, Akhwani, Ansar, N.O.I). It is a big thing on Al Mushrikiyn 'The Associates' that you call them (to Al Islaam). The Source, ALLAH chooses for Himself whom He pleases, and He leads into calmness to Himself those who repent.

14) And that which they became divided in, (their way of life), from after Al 'Ilmu 'The Knowledge' came to them, desiring it between them; and even if a Kalimat 'Word' had not passed (before them) from your Rabb, who is 'Master,' to an appointed time; to be judged between them; and surely, those who Awrihuw 'Inherited' the scripture from after them, are in doubt, Muriybin 'A Hopeless Doubter'.

15) So for that, (Muhammad), you are to call (all the Enosites to the peaceful way of life), and you are to stand steadfast as you were commanded and don't follow their Ahwaa 'Lustful Desires, Loves' and tell them: "I am faithful by way of that which The Source, ALLAH sent down of the scripture: (the Qur'aan) and I was commanded to be 'Adila 'Just', (when dealing) between you all. ALLAH is our Rabb, 'Sustainer,' and your

Rabb. For us, is A'amaalunaa 'Our Deeds' and for you all are A'amaalukum 'Your Deeds'. There is no Hujjat 'Argument' between us, (the Ishmaelites) and between you all, (the Israelites). ALLAH gathers between us, and Al Masiyr 'The Destination' is to Him (Him Not Us).

16) And those who dispute concerning The Source, ALLAH from after that, which had been accepted for him; their argument is invalid in the possession of their Rabb, and the Ghadab 'Wrath' is upon them, and for them is a Shadiyd 'Forceful' pain.

17) The Source, ALLAH is He (He Not We) who sent down the scripture as a fact (beyond any doubt) and the scale - (the way to weigh things that you already have); and that you are able to perceive; L'ala 'For Perhaps', Al Saa'ata 'The Hour' is Qariybin 'Near'.

18) Those who want to hasten it, don't have faith in it, (the hour), and those who are faithful, are concerned about it, and they know that it is a fact. Nevertheless, those who dispute in (concerning) the hour, are verily astraying far into error.

19) The Source, ALLAH is Latiyf 'Subtle' with His (His Not Our) slaves. He (He Not We) Yarzaqu 'Provides' to whomever, He pleases and He is Al Qawiyyun 'The Strong' and Al 'Aziyz 'The Mighty'.

*Whoever Desires The Harth,
The Eloheem, Anunnaqi Will
Increase For Him In His
Harth - There Is An Aching
Pain For The Unjust Ones -
The Faithful Who Work To
Perfect Themselves Will Have
That Which They Please, In
The Jannat - Ahmad Only
Asks That The Enosites Have
Mawaddat For Their Near
Relatives - Allah Could Have
Sealed Up Muhammad's Heart
- Yahuwa Accepts Al Jawbat
From His Slaves - There's A
Mighty Pain For The
Concealers Of The Facts -
Allah Sends Down Rain, After
Enosites Lose Hope - Out Of
The Source's Signs Is The
Khalaq Of The Skies And Qi*

20) Whoever desires the Harth 'Tithe', of The End, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will increase for him in his tithe, and whoever desires the tithe of Al Dunyaa 'The Physical World,' We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will give him of it, and there is not a portion for him, in the Aakhirat 'End'.

21) Or, are there Shurakaa-uw 'Associating Partners' - (idols for them), who have establish for them, in their Diyn 'Means Of Judgment' and The Source, ALLAH has not given permission to them? And even if the word of decree is judged between them; and surely, there

is an aching pain for the unjust ones.

22) You will see the unjust ones worried of that which they had earned. And it will fall upon them and those who are faithful and work to Saalihaat 'Perfect Themselves', they will be in the content pleasures of the Jannaat 'Gardens'. For them is that which they please in the possession of their 'Master/Sustainer, who is Rabb'; that is it the great preference.

23) That is the good news, which The Source, ALLAH gives to His (His Not Our) slaves, those who are faithful and work to Saalihaat 'Perfect Themselves'. Tell them this, (Ahmad): "I don't ask any of you for a reward, except that you have Al Mawaddat 'The Compassion' for the near relatives; and whoever earns that which is best, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will increase the best for him. Surely, for The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Shakuwrn 'Grateful'.

24) Or do they say that, (Muhammad) has invented a lie about The Source, ALLAH? So if ALLAH pleases, He (He Not We) could have Yakhtim 'Sealed Up' your (Ahmad's) heart and Yamhu 'Wiped Out' any falsehood about The Source, ALLAH and make plain the facts (beyond any doubt) by His (His

Not Our) very own words. Surely, He knows the Dhaat 'Essence' of Al Suduwri 'The Chests' - (each man's inner feelings).

25) And He (He Not We) is who accepts Al Tawbat 'The Repentance,' from His (His Not Our) slaves, and He forgives the evils and he knows all that which they do.

26) And He (He Not We) answers those who are faithful, and who works to Saalihaat 'Perfect Themselves'; and He will increase for them from His (His Not Our) preference, and there will be a mighty pain for Al Kaafiriyn 'The Concealers Of The Facts'.

27) And even if The Source, ALLAH enlarges Al Rizqa 'The Provision' (Rizq) for His (His Not Our) slaves, they will still Baghuw 'Transgress' in the planet Earth, 'Qi'; but He (He Not We) sends down in Qadarin 'Due Proportion', whatever He pleases, surely He is Khabiyrun 'Aware', (and) Basiyrun 'Sees' (all that which His slaves do).

28) And He (He Not We) is who sends down the Ghayth 'Rain' after they, (the Enosites) have Qanatwu 'Lost Hope', and He spreads His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy); and He is Al Waliyyu 'The Near Friend', Al Hamiydu 'The Praiseworthy'.

29) And from His (His Not Our)

signs, is the Khalqu 'Creation' of the Skies and the planet 'Earth,' 'Tiamat/Al Ard,' and that which He (He Not We) has scattered in both of them from the Dabbatin 'Creatures' and He is powerful over Jam'ihim 'Their Gathering' when he pleases.

That Which You Have Been Afflicted With, Is Of That Which You Have Earned - There Is Not One For You Besides The Source - Out Of His Signs Are The Ships And The Mountains And The Winds That Remain Still - There Is Not A Mahlys For Those Who Dispute About The Anunnagis Signs - They Only Have A Mataa' Of This Physical World - Those Who Stand Up For Worship, They Seek Consultation - Those Who Are Afflicted With Wrong, They Aid Themselves

30) And that which has afflicted you from any affliction, is of that which you all have earned, from your own hands; and He (He Not We) forgives many of them.

31) And you all are not ones who can frustrate those who are in the planet Earth, and there is not anyone for you, from besides The Source, ALLAH, who is a Waliyyin 'Near Friend' or a Nasiyrin 'Aider'.

32) And of His (His Not Our) signs are Al Jawaari 'The Ships' in Al Bahri 'The Seas', as the mountains.

33) If He (He Not We) pleases, He can make Al Riyh 'The Wind' remain in their places, will they still be motionless on His (His Not Our) back? Surely in that, verily are signs for every patient, grateful one.

34) Or He (He Not We), can cause them to perish, because of that which they, (the Enosites) had earned, and He forgives much.

35) And He (He Not We), knows those who dispute, concerning Our, ([Our Not My] Anunnaqis) signs. There is not a Mahiys, 'A Place For Them To Escape'.

36) So, of that which they are given of anything, it is a Mata'a 'Temporary Provision', of the life of this physical world; and that which is in the possession of The Source, ALLAH is the agreeable and more enduring for those who are faithful and entrust upon their Rabb.

37) And those who choose the Kabaa'ira 'Biggest' of the guilty acts and the most abominable deeds and when they are exceedingly angry, they forgive.

38) And those who listen to their Rabb, and stand up for Salaat 'Salutation As Worship,' and seek between themselves Shuwraa 'Consultation' concerning their affairs; and that

which We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Razaqnaahum 'Provided For Them', they share willingly.

39) And those who when they are afflicted with Al Bahgyu 'The Wrong', they will aid themselves.

The Reward For A Sayyiat Is An Evil Deed - Those Who Aid Themselves After An Unjustness, Will Not Have Any Blame - There Is An Aching Pain For Those Who Does Unjustness And Transgress In Qi - Whomever The Source Leads Astray, There Is Not A Wally For Him - The Losers Are Those Who Have Lost Their Ownselves And Families On The Day Of Resurrection - You All Are Suppose To Listen To Your Rabb, Before That Day Comes - The Propagating Of The Facts Is Only Incumbent Upon You, Muhammad - He Creates That Which He Pleases - He Makes Aqiym Whomever He Pleases

40) And the reward for Sayyiat 'An Evil Deed,' is an evil deed, that is its likeness; so whoever forgives and Aslaha 'Perfects Himself', so his reward is upon The Source, ALLAH. Surely, He (He Not We), doesn't like Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones'.

41) And whoever aids himself, after his unjustness, so these,

they will not have any blame on them.

42) However, the blame is upon those who does unjustness to the Enosites and they transgress in the Earth without any facts; these, there is an aching pain for them.

43) And verily whoever has Sabara 'Patience' and he Ghafara 'Forgives', surely that is of the most determined resolutions of the affairs.

44) And whoever The Source, ALLAH leads astray into error, so there is not a Walliy 'Near Friend', from after Him (Him Not Us); and you will see that Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones,' when they Ra-aawu 'See' the pain, will say: "Is there a way we can return from this path?"

45) And you will see those who will be brought forward Khaashi'iyya 'Humbly', because of the disgrace; they will look with a Khafiyyin 'Secret' Tarfin 'Glance'; and those who are faithful said: "Surely Al Khaasiriyn 'The Losers', are those who have lost their own selves and their families on the day of Al Qiyaamah 'The Resurrection'." Nevertheless, the unjust ones are in an everlasting pain.

46) And there is not any Awliyaa-a 'Near Friend', for them, that will aid them from besides The Source, ALLAH, and whoever The Source,

ALLAH leads astray into error, so there is not a Sabiyl 'Path,' for him.

47) You all are to listen to your Rabb, who is 'Master,' before the day comes when there is no way to return for him from the source, ALLAH; on that day, there is no place of escape, and you will not have any Nakiyr 'Disproval.'

48) So (Muhammad), if they, (the Enosites) turn away; so We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have not sent you, (Ahmad) unto them as a Hafiyzaan 'Guardian'. It, Al Balaagh 'The Propagation Of The Facts,' is only incumbent upon you, (Muhammad) and surely if We, (Eloheem Anunnaqi) let all Enosites taste of Our (Our Not My) Rahmat 'Yielding (Mercy),' he, (the Enosite) is happy by way of it; and if they are afflicted with evil deeds by way of that which their own hands have done, so surely The Enosites are concealing that which they know to be the facts.

49) For Him (Him Not Us), is the Mulku 'Rulership' of the Skies and the planet Earth, 'Tiamat.' He Yukhluqu 'Creates' that which He pleases; He gives Inaath 'Second Part, Females' on whomever He pleases, and He gives Zukuwr 'Males, Forgetful Ones' on whomever He pleases.

50) Or He (He Not We), makes

them in Zawj 'Mates' (Pairs), Zukhraanaan 'Males, Forgetful Ones' And Inaathaan 'Second Parts, Females' and He makes whomever He pleases 'Aqiyim, 'Barren.' Surely He is a Qadiyrun 'Powerful', 'Aliymun 'Knower'.

It Is Not Fitting For The Source To Speak To A Bashar - Eloheem's Web Is Sent To You Muhammad By Way Of Nusqu - Muhammad Will Verily Lead Those Into Calmness Who Stand Up Straight - That Which Is In The Skies And The Planet Qi Is His - The Destination Of All Affairs Will Return To Him

51) And there is not (fitting) for The Source, ALLAH to speak to a Bashar 'Mortal In Skin,' except by Wahyaan 'Inspiration,' or from behind A Hijaab 'Screen,' or if He (He Not We) sends Rusul 'Ones Sent'; so his inspiration is by way of his permission, this is what pleases him. Surely He (over all things) is 'Aliyyun 'Most High', (ANU), Hakiymun 'Wise'.

52) And it is like that, We (We Not He) inspired to you, (Ahmad) A Ruwh 'Soul', (Gabriel/Jibriyl, who is also called Nusqu) from Our (Our Not My) command; you did not perceive what was The Scripture, nor

what was Al Iymaan 'The Faith.' But We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made it, (the Qur'aan) a Nuwraan 'Light', We, (Eloheem Anunnaqi) calm by it, whomever We please from Our slaves and surely you, (Muhammad) verily will lead into calmness those who stand up straight to the narrow path.

53) Siraat 'Narrow Path' of The Source, ALLAH; for Him (Him Not Us) is all that which is in the Samawaat 'Skies' and the planet Qi/Earth; nevertheless, the destination of all affairs will return to The Source, ALLAH.

Sudiga Allahu El Agim

Chapter Sixty-Three

Revealed In The Year 618 A.D.; Verse 14 Was

Revealed In Medina


*Al Zukhruf
(The Golden Ornaments)
Original Order Chapter 63;
Wrong Order Chapter 45*

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Scripture Makes Things Clear - Qur'aan Made In Qurayshan Dialect - Shall The Eloheem Take Away The Remembrance From You Because You Were Transgressing? - How Many

*Nabiyy Were Sent To The
First Ones? - The Most
Severe Of Them Were
Destroyed*

the most forceful from them in strength and the likeness of Al Awwaliyna 'The First Ones' has passed (this is a new cycle).

63 () Haq: Hakiym 'The wisdom' of Miym: 'Muhammad'.

2) And The scripture which makes things clear.

3) Surely We, (Anunnaqi) have made it 'Arabiyyaan 'An Arabic' Qur'aan, (in the Qurayshan dialect), that perhaps you all will be able to comprehend it.

4) And surely it, (the Qur'aan) is in the Ummi 'Mother' Scripture (Akasha records), which is in Our (Our Not My) presence, it is 'Aliyyun 'Exalted', Hakiymun 'Full Of Wisdom'.

5) Shall We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) take away from them the Dhikr, 'Remembrance,' (And) Repel (You), because you all were a transgressing kindred?

6) And how many Nabiyy, Newsbearers' did We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) send amongst The Awwaliyn, 'First Ones' (The Ptahites And Cuthites And Other 13 Tribes Before Adam)?

7) And never did a Nabiyy-in 'Newsbearer' come to them, except, for they were ridiculing him.

8) So We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) destroyed

*They Will Say. 'The Skies
And Earth's Creation Is By
Way Of The 'Aziyz And
The Knowing' - The
Source. Allah Made The
Earth A Resting Place - He
Created Nates. And He Made
The Crafts And Cattle -
When You Sit Firm Upon
Their Backs, You Will
Remember The Ni'amat Of
Your Rabb - The Enosites
Made A Share With The
Source. With His Slaves -
Muswadd Is The Likeness
Which He Has Struck Forth
To The Rahman - Has He
Allah. Taken Banaat. Whom
He Created? - Did The
Adamites Watch The
Eloheems Creation?*

9) And if you were to ask them, who Khalaq 'Created' the Skies and the planet Earth, verily they will say: 'Khalaqahunna 'Both Of Their Creation' (the creation and the re-construction) is by way of Al 'Aziyz 'The Mighty', Al 'Aliym 'The Knowing'."

10) He (He Not We), is who made the planet 'Earth,' Al Ard, A Mahd 'Resting Place,' and He made in it 'paths', that perhaps you all may be lead into calmness.

11) And who sent down water

with a measure from the sky; so We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Anshar '(Under The Rule Of Anshar) Raised To Life', a Maytaan 'Dead' Baldatan 'Land' by way of it; and just like that you all will be brought forth again.

12) And He (He Not We) who created Al Azwaaji 'The Mates', all of them, and He made for you all from Al Fulki 'The Crafts' and Al 'An'aami 'The Cattle', which you Tarkibawn 'Ride' (upon).

13) That you all may sit firm upon their backs, then you will remember, the Ni'amat, 'Grace' of your Rabb, who is 'Master and Sustainer' when you celebrate upon these. Glory be to Him (Him Not Us), who made this subservient for us, and we are not ones who can compare to these.

14) And surely we are ones who will turn back to our Rabb.

15) And they made for Him (Him Not Us), A Juz 'Share' with His (His Not Our) slaves. Surely, The Enosite is Mubiynun 'Clearly' concealing that which he knows to be the facts.

16) Or has He (He Not Us), taken Banaat 'Daughters,' of that which Yakhluqu 'He created'; and He chose for you all the Baniyn 'Sons' (whom He has chosen)?

17) And when the good news is given to one of them of that

likeness which they have struck forth to Al Rahman 'The Yielder', his face will become Mus-Wad 'Blackened' and he is full of grief.

18) Is he, who is raised up in Al Hilyat 'A Pleasant Life,' and is one who is clearly without evidence, in the quarreling (battle of the agreeable and disagreeable Angelic Beings)?

19) And they, make Al Malaa-ikata 'The Angelic Messengers', (who are The Eloheem, Anunnaqi) slaves of Al Rahman 'The Yielder', as Inaathaan 'Second Part. Females'. (They say, "They are The Yielder's daughters.") Did they, watch their, (the Angelic Messengers') Khalq 'Creation'? Shahaadatuhum 'What They Watched' will be Tuktabu 'Written Down' and they will be questioned about it (the Holy Tablets).

They Were Lying - Were They Given A Scripture Before The Qur'aan? - They Said, "They Were Lead Into Culminess On Their Father's Footsteps" - The Affluent Ones Of The Villages Said They Will Follow Upon Their Forefathers' Footsteps - The Anunnaqi Took Vengeance Upon Them - Abrawhawm Told The Babylonians, "He Was Innocent For That Which They Slaved For" -

*He, Abrawhawm Left It As An
Enduring Word For Those
Who Are After Him*

20) And they, said: "If Al Rahmaan 'The Yelder' pleases, we, (Adamites) would not have slaved for them (Anunnaqis); they do not have any knowledge of that except, that they (the Disagreeable Anunnaqi) were lying.

21) Or have We, ([We Not He] Agreeable Anunnaqi Eloheem) given them a scripture (Enuma Elish, Atra Hasis, Gilgamesh Epics, Etana, Nergal And Arishkegal, The Descent Of Ishtar To The Underworld, The Secrets Of Adafa) before it, (the Qur'aan), so that they could hold fast unto it?

22) In fact, they said: "We found our fathers doing the same thing as this nation; and surely we are lead into calmness upon their footsteps."

23) And just like that, We (We Not He) didn't send before you, (Muhammad), a Naziyr, 'Warner,' in any Qaryat 'Village', except Mutrafuwhaa 'Their Affluent Ones' said: "Surely, we found our fathers doing this (bringing us a scripture and way of life) as this nation, and surely, we will follow upon their footsteps."

24) He said: "What! Even if I come to you all with a leading calmness of that which you

found your fathers doing?" They said: "Surely, we are concealers of the facts of that which was sent to us."

25) So We (We Not He) took vengeance amongst them, so look (at) how was the Aaqibat 'End' of the liars.

26) And when Abrawhawm said to his father (Terach/Terakh, Azar) and his kindred, (Chaldean Babylonians): "Surely I am innocent of that which you slave for."

27) Except for He, who Fatarani 'Splitted Me' (Spit My Genes), so surely He (He Not We) will lead me into calmness.

28) And he left it, as a Baaqiyatin 'Enduring' Kalimatin 'Word' amongst those who are after him, that perhaps they will return.

*Allah Let Them And Their
Fathers Enjoy Themselves
Until The Facts Come To
Them - They Say, "The Facts
Are Clearly Magic" - The
Meccans Wish The Qur'aan
Was Sent Down To Wasid
Ibn Al Mughirah, Orwa Ibn
Mosour - The Eloheem Divide
Their Livelihood And Raise
Some Of Them In Degrees
Over Others - The Anunnaqi
Would Have Made Those Who
Conceal That Which They
Know To Be The Facts
Houses' Fiddah; And They
Will Appear Before The*

Places Of Ascension - The Zukhruf Is Only A Temporary Enjoyment - Whoever Turns Away From The Remembrance Of The Source, Satan, A Reptilian Has Been Prepared For Him - They Will Wish They Had The Distance Between Them And You As The Appearance Of The East And The West - And On That Day, All That You Have Done Unjust, Will Not Benefit You All, From The Pain

29) In fact, I (I Not We), let these and their fathers enjoy themselves until the facts beyond any doubt has come to them - (the Qur'aan) and the Mubiyn 'Clear' Rasuwl (Muhammad).

30) And when the facts (beyond any doubt) had come to them - (Al Qur'aan) they say, "This is nothing but Sihrun 'Magic', and surely we are concealers of that which we know to be the facts."

31) And they, (Meccans) said: "If only this Qur'aan was sent down unto Rajulun 'Mortal Men' (of one), of the two 'Aziymin' 'Supreme' villages, (Walid Ibn Al Mughirah Of Mecca Or Orwa Ibn Mosour Of Taif, Instead Of Muhammad).

32) Or do they divide the Rahmat, 'Yielding (Mercy)' of your Rabb, who is 'Sustainer'; We ([We Not He] Eloheem

Anunnaqi) divide their livelihood between them in the life of the physical world; and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Rafa'a 'Raise' Ba'dahum 'Some Of Them' in Darajaatin 'Degrees' Fawqa 'Over' Ba'din 'Others Of Them', that some of them may Sukhriyaan 'Oppress' others of them, and the Rahmat 'Yielding' (mercy) of your Rabb, is better than that which they gather.

33) And even if the Naas 'Enosite' were to become Wahidatan 'One' Ummah, 'Nation,' verily We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) would have made those who conceal that which they know to be the facts about Al Rahman, 'The Yields,' Suqufaan 'Roofs' of their Buyuwti 'Houses' Fiddah, 'Silver' and they will appear before the Places Of Ma'arij 'Elevation' (To Malakuwt).

34) And gates for their Buyuwt 'Houses,' and they will be reclining upon the Beds 'Suruwr.'

35) And the Zukhruf, 'Golden Ornaments,' and all of this, is only a Mataa'u 'Temporary Enjoyment' of Al Hayaat 'The Life', of the physical world; and Al Aakhirat 'The End,' in the possession of your Rabb is for Al Muttaqiyn, 'Those Who Tremble At The Mentioning.'

36) And whoever turns away and Ya'shu 'Ignore' the Dhikri

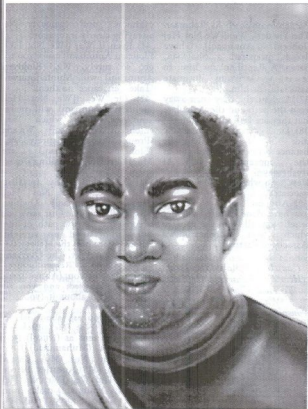


Figure 136
Orwa Ibn Mosour Of Taif

'Remembrance' of Al Rahmaan 'The Yelder', We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have already prepared a Shaytaan, 'Satan, A Reptilian' for him; so he is a Qariynun 'Intimate Associate' for him.

37) And surely, they turn away from the path and they calculate that they are lead into calmness.

38) Until when they came, he said: "Oh, if I only had the distance between me and you as (the appearance) of Al Mushriqayni 'The East And The West'. So what an evil intimate associate!"

39) And on that day, all that you have done unjust, will not benefit you all from the pain, in which you Mushtariquwn 'Associated Partners'.

*Can Ahmad Make The Deaf
Hear? - Muhammad Is Told
To Hold Tightly To That
Which The Eloheem
Inspired Him - The Qur'aan
Is A Dhikr For
You Ahmad And Your Kindred
- Mosheh Sent With
Our Signs To Pharaoh Ramses
He - Pharaoh And The
Miteraimite Laughed At Him -
They Told Him, Al Saahiru
To Call Upon His Rabb*

40) Can you, (Ahmad) make Al Summa 'The Deaf' hear? Or lead Al Umyaa 'The Blind' into

calmness, and whoever is astraying clearly into error?

41) Even if We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) cause you to go, so surely, We, (Eloheem Anunnaqi) will Muntaqimuwun 'Take Vengeance' on them.

42) Or We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will make you see, that which We, (Eloheem Anunnaqi) Wa'ada 'Promised' them; so surely, We, (Eloheem Anunnaqi) are Muqtadiruwn 'Prevailing' over them.

43) So hold tightly to that which We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Uwhiya 'Inspired' you (The Qur'aan); you are on the narrow path of the ones who stood up straight (those before him the Hebrews).

44) And surely it, (the Qur'aan) is a Dhikr, 'Remembrance/Reminder' for you, (Ahmad), and for your kindred; and you all will be asked about it (you will be questioned).

45) And you ask about whom We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent as (Rusul) from before you, (Muhammad) from Our (Our Not My) Rasuw 'Apostles' (315 Apostles Before Him)? Did We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) make from besides The Source, ALLAH, AALIHAT, (ALLAHS) 'Sources,' which they slaved for?"

46) And indeed, We, ([We Not

He] Eloheem, Anunnaqi) did send Mosheh with Our (Our Not My) signs, to Pharaoh (Ramses II) and his Malaa 'Rulers, Chiefs'; so (Mosheh) said: "Surely I am One Sent of the Rabb of Al 'Alamiyna 'The Known World'."

47) But they, (Fir'own Ramses II and the ancient Egyptians/Mizraimites) laughed when he came to them with Our (Our Not My) signs.

48) And that which We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made them to see from signs; only for it is greater than Ukhtihaa 'Its Sister', (the other one); then We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) overtook them with the pain, that perhaps they will return.

49) And they said: "Oh you Al Saahiru 'The Magician'." Call upon your Rabb, and that which he has made a 'Ahida 'Covenant' in your possession; We will be lead into calmness."

50) So when we uncovered the pain from them, then they violated it.

*Ramses II Asks His Nation,
Is Not The Rulership Of
Egypt/Mitsrayim For Him? -
Or Whether He Is Better
Than The Disgraceful One,
Mosheh? - Or Why Hasn't
Mosheh Cast Golden Bracelets
Upon Him, Or The Malaa'ikat
Come To Him? - He Made*

*Them Look Like Fools - The
Eloheem, Anunnaqi Took
Vengeance Upon The
Mizraimites - When Yashu'a
Example Is Given, The
Meccans Call Out In Joy -
They Want To Know If
Their Aalihat Is Better Than
Yashu'a? - Yashu'a Is Nothing
Except An 'Abd And An
Example For The Banee
Israa'iyf*

51) And Pharaoh, (Ramses II) called out to his Qawm, 'Kindred,' he said: "Is not for me the Mulku 'Rulership' of Mitsrayim/Egypt; and these Anhar 'Rivers', flow from beneath me, then don't you see?"

52) Am I, (Fir'own Ramses II), better than this (Mosheh) who is a disgraceful one, and cannot speak clear?

53) So why has he, (Mosheh) not cast upon him Aswiratun 'Bracelets' of Dhahabin 'Gold' or Al Malaa'ikat 'The Angelic Messengers' (Eloheem Anunnaqi), come to him, (to Mitsrayim), as his intimate associate?"

54) So he made them Astakhafa 'Look Like Fools', (lightly) and his kindred, (the ancient Egyptians/Mizraimites) obeyed him, surely, they were a kindred who Faasiqiyna 'Transgressed'.

55) So when they, (the ancient Mizraimites/Egyptians) wanted us to feel sorry for them, We,

([We Not He] Eloheem Anunnaqi) took vengeance upon them, and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Aghraqa 'Drowned' them, all together.

56) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made them Salasaan 'Ancestors' and an (example), Mathalaan 'Likeness' for Al Aakhiriyn 'The Last Ones' (generations after them).

57) And when the Abnu 'Son' of Miriam, (Yashu'a) Duriba 'Strickes forth' as a Mathalaan 'Likeness', behold, your Kindred, (Pharisees, Israelites) cry out for joy at it. (Ibn Al Zabiri, a Meccan idolater, disputed with Muhammad saying Yashu'a is going to hell because he was worshipped as a deity).

58) And they, (the idolaters of Mecca) say: "Are our AALIHAT (ALLAH'S), 'Sources' better, or is he, (Messiah Yashu'a)?" It is not Daraba 'Struck (As An Example) Forth' for you (Muhammad) except as a means of Jadalīn 'Argument'. In fact, they, (Meccan Arabs) are a kindred of Khasimuwna 'Disputers'.

59) Surely he, (Messiah Yashu'a) is nothing except an Abd 'Slave' on whom We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) bestowed grace; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made him, (Yashu'a/Isa Who Is Tammuz) a Mathalaan 'Likeness' for the Bance Israa'iyil, 'Children of Jacob/Israel', (the Lost Sheep of

the House of Yisrawale, The Tribe of Yehuwadah).

If The Anunnaqi Please, They Can Make The Eloheem Michael And Nusqu Become Khaliyfahs Down Here In Earth - The Messiah Yashu'a Is The Knowledge Of The Final Hour - Isa Came With Clear Evidences As To Who He Was - Yahuwa/Allah Is Tammuz's Rabb - The Groups Differed Amongst Themselves - On That Day, There Is Not A Fear For Allah's Slaves

60) And if We, ([We Not He] Anunnaqi) please, We can make (you give birth) from (amongst) you all, Malaa-ikat 'Angelic Messengers': (Like The Eloheem Michael/Miykaal And Gabriel/Nusqu) in the planet Qi, 'Earth' (came down as men 'human beings' to be) the Khaliyfah 'Successors, Left Behind' in Tiamat 'Earth'.

61) And surely, he, (Messiah Yashu'a) is the 'Ilmun 'Knowledge' for Al Saa'ati 'The (Final) Hour'. (His, The Messiah Tammuz return, marks the end of the world). So don't be suspicious (of) it, (the sign of the end) by way of (Yashu'a) and follow me, (Muhammad); this is the path of the ones who stand up straight (true followers of Muhammad look for the coming of the Messiah in the end to

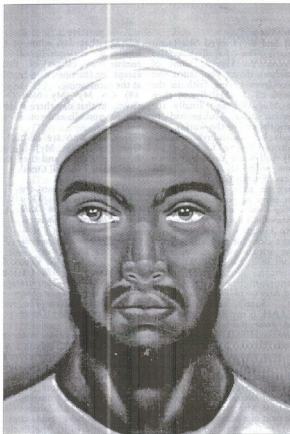


Figure 137
Ibn Al Zabiri (A Meccan Idol Worshipper)

mark the end).

62) And don't let Al Shaytaanu 'Satan, The Reptilian', (also known as Haylal, son of Shakhhar), divert you, (turn you away from having faith in the return of the Mahdi and then the Mujaddid and finally the Messiah after Muhammad to mark the end of the world). For surely, he is a Mubiynun 'Clear' 'Aduwun 'Enemy' for you all.

63) And when Yashu'a/Yashu'a came with Al Bayyinaat 'The Clear Evidences,' (of who he was); he said: "Indeed, I have just come to you all - (the Lost Sheep of the House of Yisrawale/Ya'aqob, Yehuwdah), with Hikmati 'Wisdom' and to make clear for you all, some of that which you are differing about in it; (to fulfill the law of Mosheh). So tremble at the mention of The Source, ALLAH and Atiy'uwni 'Obey Me'.

64) Surely, The Source, ALLAH, is my Rabb 'Sustainer', and your Rabb 'Sustainer,' so slave for Him (Him Not Us); this is the Siraat, 'Narrow Path' of the ones who stand up straight.

65) So Al Ahzaab 'The Parties,' (Pharisees, Sanhedrian, Rabbis, Essenes, Sadducees) differed between themselves, so curse be to those who were unjust, from the pain of a aching day.

66) Do they wait for the Saa'ah, 'Hour' to come to them, Raghraran 'Suddenly', and they

will not perceive it.

67) On that day, some of the Khillaa-u 'Friends' will be enemies to others of them, except for the ones who tremble at the mentioning.

68) Oh My (My Not Our) slaves, on that day there is not a fear for you all; and you all will not grieve.

69) Those who are faithful in Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) signs, and they were Muslimiyn 'Peaceful Ones'.

The Peaceful Ones Are To Enter Al Jannat - They Will Be Encircled With Plates And Cups Of Gold - There Is A Lot Of Fruit Inside Of It - The Pain Of Hell Is Eternally For The Guilty Ones - The Anunnaqi Won't Be Unjust To Them - They Will Ask The Eloheem Naalik, 'Let His Rabb, Bring An End To Them' - Most Enosites Hate The Facts Beyond Any Doubt

70) You all are to enter the Jannat (Enclosed Garden); you all and your Azwaaj, 'Mates' will be delighted (in the next world).

71) They will encircled them with Sihaafin 'Plates' (they will have plates in heaven) and Akwaab 'Cups' of Zahab, 'Gold' (they will have gold cups in heaven) and in it, (the Enclosed Garden Of Delight), there is whatever Al Anfus 'The Persons'

desire in it, and the eyes will be delighted, and you all will be in it eternally.

72) And that is the Jannat 'Garden' which you Awrith 'Inherited', because of that which you did.

73) In it, is a lot of Faakhihat, 'Fruits' of that which you eat from. (This is a physical place).

74) Surely, Al Mujrimuyn 'The Guilty Ones' are in the pain of Jahannam, 'Hell' Khaliduwn 'Eternally'.

75) (The pain) will not be lightened upon them, and they are despaired in it.

76) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will not be unjust to them; but it was themselves, who were the unjust (ones).

77) And they shall call out! "O Malik - (Eloheem over Hell), let your Sustainer who is 'Rabb,' bring an end to us." He said: "Surely you shall remain."

78) And indeed We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have brought to you all facts (beyond any doubt) but most of you Karaha 'Hated' the facts (beyond any doubt).

79) Or do they establish An Amr 'Affair'; surely, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) are the ones who establish.

Do They, Enosites Calculate We, Anunnaqi Don't Listen To Their Secrets And Private Conversations? - Muhammad

Tells Them If There Was A Walad Of Al Rahman, He Would Be The First To Show For Him - Glory Be To The Rabb - He Is Above That Which They Attribute To Him

80) Or do they calculate that We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) don't listen to their Sirr 'Secrets' and their Najwa 'Private Conversations,'? (Things That We Can't Hear) Nevertheless, And Our (Our Not My) Rusul, 'Ones Sent,' - (Eloheem, Anunnaqi) are writing down, (recording) in their presence (angelic recorders).

81) (Muhammad, you are to) tell them: "If there was a Walad 'Blood Son' for Al Rahman 'The Yelder', So I will be the first of the ones to slave for Him."

82) Glory be to my Rabb, who is 'Sustainer' of the Samawaat, 'Skies' and the planet Qi/Tiamat, 'Earth' and the Rabb of Al Arsh 'The Throne' (Illyuwn). All that which they attribute (to Him).

83) So let them Yakhwduw 'Babble' and Yal'abuw 'Play' until they meet their day which they have been promised.

84) And he is an ILAAHUN (ALLAH), 'Source' in the Skies and an ILAAHUN (ALLAH), 'Source' in the planet Qi, and He (He Not We) is Al Hakiymu 'The Wise' and Al 'Aliymu 'The

Knowing'.

85) And blessed is He (He Not We); for Him (Him Not Us) is the Mulku 'Rulership' of Al Samaawaati 'The Skies' and the planet Tiamat, and that which is between both of them (the asteroid belt); and in His (His Not Our) possession is the knowledge of the Saa'ah, 'Hour' and to Him, you all will return (to Rizq).

86) And those whom they call upon, they don't possess any power of Al Sha-fa'at 'Intercession' (when the world is being destroyed by evil help will come for the agreeable) except he who watches the facts and they know (him).

87) And if you, (Muhammad) ask them, (the Meccans) "Who Khalaq 'Created' them, they will verily say: "The Source, ALLAH: so then are they inventing a lie?"

88) And his, (Ahmad's) words are, "Oh my Rabb, surely, these are a kindred who will not have faith."

89) So (Muhammad), you are to turn away from them, and say: "Salaam 'Peace' and they will know.

Sudliqa Allahu El Azim

Chapter Sixty-Four

Revealed In The Year 618 A.D.


Al Dukhaan

(The Cloud Of Smoke)

*Original Order Chapter 64:
Wrong Order Chapter 44*

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Qur'aan Makes Things Clear - The Qur'aan Is Sent Down In A Blessed Shadow Hour Period - The Anunnaqi Are Munzariyn - It Is A Rahmat From Your Rabb - Master Of The Skies And Earth And That Which Is In Between Them - No Allahs Would Exist Except By Way Of Him - Wait For The Day The Skies Will Make Clear For You To See The Cloud Of Smoke

64 () Haa: The wisdom and Miym: Muhammad.

2) And the scripture - (the Qur'aan) which makes things Mubiyun 'Clear'.

3) Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent it, (the Qur'aan) down in a blessed Shadow Hour Period - (Laylat Al Qadr, 'Shadow Hour Period Of Power); surely, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) are Munzariyn 'Warners.'

4) In it, all Hakiymin 'Wise' affairs are Yafraqu 'Divided'.

5) An Amr, 'Command' from Our (Our Not My) possession;

surely We (We Not He) are Mursaliyn 'Ones Sent.'

6) A Rahmat, 'Yielding (Mercy)' from your Rabb, surely He (He Not We), is Al Samiy-u 'The Hearer', Al 'Aliym 'The Knower':

7) Rabb, 'Master and Sustainer' of Al Samaawaati 'The Skies' and the planet Earth, Tiamat/Al Ard and that which is between both of them - (the first firmament: Mummu (Mercury) Lahamu (Venus) Lahmu (Mars) Kishar (Jupiter) And The Second Firmament: Titon (Saturn) Ea (Neptune) Usmi (Uranus) if you Muwqiniyn 'Have Success':

8) No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by 'Him,' (HU). Yuhiy 'He Gives Life' and causes it to Yumiyyt 'Die'; your Rabb and the 'Sustainer, Master' of your fathers, Al Awwaliyn, 'The First Ones - (Eloheem, Dinneer).

9) In fact, they are playing in distrust.

10) So wait for the day to come, when Al Samaa-u 'The Sky' will make Mubiyn 'Clear' for you, (the coming of the crystal city craft) Dukhaan, 'Smoke' (hidden in a cloud).

To Screen The Enosites - They Ask That The Pain Be Removed From Them - They Ask How Is The Qur'aan A Remembrance? - The Meccans Say, That Muhammad Is

Possessed By A Jinn, A Cherubeem' - After The Eloheem Remove The Pain, They Return Back To Their Old Ways - On That Day, We Will Seize Them With The Greatest Seizure - The Anunnaqi Tested The Nation Of Pharaoh - Mosheh Tells The Jacobites, 'He Is A Faithful Rasuwl.' - They Are Not To Be Exalted Against The Source - He Seeks Protection In His Rabb

11) To Yaghsha 'Screen' the Enosites; this will be a day of aching pain.

12) Our Rabb, who is the 'Sustainer,' remove Al 'Azaab 'The Pain' from us. Surely, we are faithful ones.

13) How is Al Dhikraa 'The Remembrance', (the Qur'aan) for them, and the Rasuwl, (Muhammad) who has certainly come, made things Mubiyn 'Clear' to them?

14) Then they, (the Meccans) turned away from him, (Ahmad) and they said: "Surely, he is Mu'allamun 'One Learnt', (and) Majnuwnun 'Possessed By A Jinn' - (A Disagreeable, Malevolent Being, A Cherubeem).

15) Surely We (We Not He) will remove the pain; (surely, in a while) you all will return back to your own ways.

16) The day when We, (We Not

He] Eloheem Anunnaqi) will Bashata 'Seize' with force, which is the greatest Al Batshata 'Seizure'; surely, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will be the avengers.

17) And indeed, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) tested before them, (the Meccans), the kindred of Pharaoh (Ramses II, who are the ancient Mitzraimites/Egyptians) and the Kariymun 'Generous' Rasuwl 'One Sent' came to them.

18) That they ask to bring back to me, ALLAH'S 'Ibaad, 'Slaves,' surely, I am for you all a faithful Rasuwl 'One Sent'.

19) And you all are not to be exalted, 'arrogant upon The Source, ALLAH; surely, I, (Mosheh) come to you all with a Mubiyin 'Clear', Sultaanin 'Authoritative Power'.

20) And surely, I sought protection with my Rabb and your Rabb, who is 'Master,' in case, you all might Tarjimuwni 'Stone Me'.

He Tells The Jacobites To Keep Away From Him - Mosheh Is Told To Travel In The Shadow Hour Period - Mosheh Is Told That The Mitzraimites Armies Will Be Drowned- How Many Gardens And Springs Did The Israelites Leave Behind In Mitzrayim? - And Crops And Noble Buildings? - Eloheem

Made Other Nations Inherit Them - They Will Not Be Looked Upon - The Anunnaqi Saved The Children Of Israel From A Humiliating Pain

21) And if you, (Jacobites), don't have faith in me, so keep away from me.

22) So He, (Mosheh) called upon His Rabb, saying: 'That these, (Mitzraimites/Egyptians) are a guilty kindred.

23) So move about in Al Layl 'The Shadow Hour Period' with my slaves, (the Israelites/Jacobites). Surely, you all will be followed (after).

24) And you, (Mosheh) are to leave Al Bahra 'The Sea', (the Reed Sea, falsely called the Red Sea), Rahwaan 'Divided Peacefully'; surely, they are a Jund 'Army,' who will be Mughraqawn 'Drowned'.

25) And how many Jannaatin 'Gardens' and Uyuwnin 'Springs' did they leave behind?

26) And crops and Kariym 'Generous' (Noble) Maqaamin 'Buildings'?

27) And the Na'ammat 'Grace' in which they were taking delightfully.

28) Just like that, And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made other nations of Enosites, to Waratha 'Inherit' them.

29) And neither Al Samaa-u 'The Sky' nor the planet Al Ard/Qi 'Earth,' will Bakat

'Weep' for them and they will not be Munzar 'Looked Upon'.

30) And indeed, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) delivered, (saved) the Banee Israa'iyl from Al Mahiyn 'The Despicable' pain.

*Ramses II Was Most High -
Anunnaqi Chose Them
Knowingly - Quraysh Said
They Will Not Be Raise Back
To Life Again - They Ask If
Their Fathers Can Be
Brought Back - Eloheem
Didn't Create The Skies And
Qi Playing In Vain - Eloheem
Created Them By Way Of
Facts*

31) From Pharaoh (Ramses II), surely, he was 'Aaliy 'Most High,' of the ones who transgressed beyond bounds.

32) And indeed We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) chose them knowingly, above Al 'Aalamiyn 'The Known World'.

33) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) gave them of Our (Our Not My) signs, in which there is the Mubiyn 'Clear' Balaa-u 'Propagation Of The Facts'.

34) Surely these, (Quraysh) will say:

35) That it is, our Uwlaa 'First' Muwta 'Death', and we will not be Munshariyn 'Raised Back To Life Again'?

36) So bring back our fathers, if

you all are Saadiqiyn/Zodoqites?

37) Or are they better, or the kindred of Tubba'a - (a town in Yemen) and those who are from before them We (We Not He) destroyed them and surely, they were a guilty (kindred).

38) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) didn't Khalaaq 'Create' Al Samaawaat, 'The Skies' and the planet Qi, 'Earth, and that which is between both of them Laa'ibiyn 'Playing In Vain'.

39) And We, ([We Not He] Anunnaqi) didn't Khalaaqanaa-humaa 'Create Them', except by way of Al Haqq 'The Facts'; but most of them don't know that.

*The Day Of Decision Is Their
Fixed Term - On That Day,
A Master Will Not Benefit
Another Master - Except For
Those Shown A Yielding
Mercy From The Source -
The Tree Of Zaquwm Is For
The Doers Of Disagreeable
Acts - It Is Like The Dregs Of
Oil - Hot Water - He Shall
Be Dragged Into The Middle
Of Jahiym - A Taste That
Surely, He Is The Mighty,
The Generous*

40) Surely, the day of decision is all of their fixed term (6000 years).

41) A day, the Mawlan 'Master, Ruler' will not benefit another

Mawlan 'Master, Ruler' in anything, and they will not be aided.

42) Except those whom The Source, ALLAH has shown a Rahima 'Yielding' (mercy). Surely, He (HU) is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Rahiym 'The Most Merciful'.

43) Surely, the Shajarat, 'Tree' Of Al Zaguwm (A Bitter Fruit).

44) The food of Al Athiym 'The Doers Of Guilty (Disagreeable) Acts'.

45) Like Al Muhli 'The Dregs Of Oil'; it shall Yaghli 'Boil' in Al Butuwn 'Their Stomachs'.

46) Like the boiling of Hamiym 'Hot Water'.

47) Seize him, then drag him down, into the middle of the Al Jahiym 'The Blazing Hell.'

48) Then you all are to pour over his head, the pain of Al Hamiym 'The Boiling Water,' (Hell has trees and boiling water. It's a physical place).

49) Taste! Surely you are Al 'Aziyz, 'The Mighty,' Al Kariym 'The Generous.'

50) Surely, this is that which you were suspicious about.

Those Who Tremble At The Mentioning Of The Source. They Are Faithfully Secure In Their Positions - In The Jannat, They Will Be Robed In Silk And Brocade - They Will Be Given Mates, Pubescent Maidens With Black

Eyes - They Will Call For Every Kind Of Fruit In It - They Will Not Taste The Second Death In The Jannat - It Is A Fadl From Their Rubb - Muhammad We, Eloheem Made The Qur'aan Easy By Using Your Tongue - Muhammad You Are To Wait And Watch, For They Are Waiting And Watching

51) Surely, the Muttaqiyn, 'Those Who Tremble At The Mentioning' are Aamiyn 'Faithfully' (secure) in their positions.

52) In Jannaat, 'Gardens', and Uyuwn 'Springs' (Springs in the garden. A physical place).

53) They will be robed in Sundus, 'Silk' and Istabraq, 'Brocade' (Silk robe from the silk warm and brocade decorated by someone. A physical place), facing each other.

54) Just like that, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will give them Zawj 'Mates' - (pubescent maidens) with Huwrin 'Black' 'Aynin 'Eyes' (They will get mates in heaven. A physical place).

55) In it, they will call upon, on every kind of fruit, Aamiyn 'Faithfully' (secure).

56) In it, (they who tremble at the mention) will not taste Al Mawta 'The Death' - (the second death), only Al Uwlaa 'The First' Mawt 'Death' (of the body); and

they will be Waqaa 'Preserved' from the pain of Al Jahiym 'The Blazing Fire'.

37) A Fadl, 'Preference' from your Rabb, who is 'Sustainer,' and that is the 'Aziym 'Supreme' Al Fawzu 'Achievement, (Triumph)'.

38) So We, (Anunnaqi) have Yasara 'Made It, (the Qur'aan) Easy', by using your (Ahmad's own) Lisaan, 'Tongue' (the Quraysh dialect) that perhaps they will be able to Yatadhakar 'Remember It'.

59) So you, (Ahmad) are to Artaqib 'Wait And Observe'; surely, they are the ones Murtaqib 'Waiting And Observing'.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Sixty-Five

Revealed In The Year 618-619 A.D.; Except For

Verse 14


*Al Jaathiyah
(The Kneeling)*

*Original Order Chapter 65;
Wrong Order Chapter 45*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*The Qur'aan Sent Down
From The Mighty, The Wise
Source - The Khalaaq Of The
Creatures Is A Sign - He*

*Gave Life To Qi - And The
Changing Of The Riyaah As
Signs For Enosites - What
Other Hadiths Will The
Meccans Be Faithful To -
Those Who Mock About The
Anunnaqi Signs, Will Have
Jahannam Right Behind Them*

65  Haa: Hakiym 'The Wisdom' and Miym: Muhammad.

2) The scripture - (the Qur'aan) which was sent down from The Source, ALLAH, Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

3) Surely, in the Samaawaat, 'Skies' and the planet Qi, 'Earth' are signs for the Faithful Ones.

4) And in your Khalq, 'Creation' and the Daabbah, 'Creatures' that are Yabuthu 'Scattered', they are signs for a kindred who are successful.

5) And the Ikhtilaaf 'Diversity' of Al Layl 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'The Daytime' and that which The Source, ALLAH sent down from Al Samaa 'The Sky' as a Rizq 'Provision,' (Rizqians) so He (He Not We) Hayaa 'Gave Life' to the planet Qi/Tiamat, also called 'Earth,' after its Mawt 'Death' (replenished it) and the changing of the Riyaah, 'Winds' (crafts) are signs for a kindred that have sense, intellect.

6) These are the signs - (verses) of The Source, ALLAH which

We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Natloo 'Recite' to you (Muhammad), by way of the fact (beyond any doubt). So now in what Hadyth 'Tales' after The Source, ALLAH'S signs, (the Qur'aan) will they, (the Muslims) be faithful to?

7) Waylun, 'Curse' be to every guilty inventor of lies (those who created the Hadith and Sunna).

8) He hears the verses of The Source, ALLAH being Tatlaa 'Recited' upon him. Then he persists arrogantly, Mustakbiraan 'Big-Chested, Pouting With Pride' as if he did not hear it, so give him the good news of an aching pain.

9) And he had come to know anything of Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) signs, he took it as something to Huzuwaan 'Laugh And Mock' about. Those are the ones, for them is a humiliating pain.

10) They have Jahannam 'Hell/purgatory' right behind them and nothing will benefit them of that which they gained, nor that which they took as near friends from besides The Source, ALLAH, and for them is a 'Aziymun 'Supreme' Pain.

The Qur'aan Is Leading Calmness - He Made The Bahr And Al Fulk Subservient To You - Allah Made All That Which In The Skies And The

Earth Subservient To You - Ahmad Is Told To Tell Those Who Are Faithful, To Forgive Those Who Don't Hope To Meet Their Rabb' - You All Will Return To Your Rabb - The Eloheem, Anunnaqi Gave The Jacobites The Torah And That Which Is Agreeable - And The Bayyinaat - Muhammad Is Told To Follow The Shari'ah And Not The Vain Love - Allah Is The Wallyy Of Those Who Tremble At The Mentioning Of His Name

11) This, (Qur'aan) is leading calmness, and as for those who concealed that which they know to be facts of their Rabb's 'Sustainers' verses, for them is an aching, excruciating pain, as a penalty.

12) The Source, ALLAH is He (He Not We) who made the Bahr, 'Sea' subservient to you all, and Al Fulk 'The Craft' to flow upon it, by way of His (His Not Our) command, and to seek from His preference; that perhaps you all may be grateful.

13) And He (He Not We), made all that which is in Al Samaawaat 'The Skies', and that which is in the planet Qi/Tiamat, Sakhara 'Subservient' to you all; surely, in that, verily are signs for a kindred who can reflect.

14) (Muhammad), you are to tell

those who are faithful, they are to forgive those who don't hope to meet the days of The Source, ALLAH. It is He (He Not We) who rewards the kindred, all of that which they had earned.

15) Whoever, works to Saaliha 'Perfect Himself', so it is for himself, and whoever Asaa-a 'Does Evil', so it is upon him; then to your Rabb, you (all) will return.

16) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave the Children of Israel/Jacob the scripture - (the Torah) and Al Hikma 'The Wisdom' and Al Nabuwata 'The Prophecy' and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Razaqnaahum 'Provided Them' with that which is Al Tayyibaat 'The Agreeable' and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Fadalnaahum 'Preferred Them', (The Children Of Jacob) over Al 'Aalamiyn 'The Known World'.

17) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) gave them Bayyinaat 'Clear Evidences' from the command, so they did not Akhtalaf 'Deferred' until after knowledge had come to them out of envy between them(selves). Surely, your Rabb will judge between them on the Day of Al Qiyaamah 'Standing Resurrection', concerning that which in they Mukhtalif 'Differed'.

18) Then We, ([We Not He]

Eloheem Anunnaqi) have made you (Muhammad) over Shariy'atin 'Laws' from Al Amr 'The Command', so follow it and do not follow Ahwaa-a 'The Vain Desires, (Love)' of those who do not know.

19) Surely, they will not benefit anything of you from ALLAH; and surely, the unjust ones, some of them are Uwliyyaa-u 'Near Friends' of one another; and The Source is the Waliyy, 'Nearest Friend' of those who tremble at the mentioning (of his name).

20) These are the Basaa'ir, 'Inner Sights, for the Naas and a Hudaan 'Leading Calmness,' and a Rahmatun 'Yielding' (mercy) for the kindred, who will be successful.

*Do The Evil Ones Think
That The Anunnaqi Will
Make Them As The Faithful
Ones - Every Nafs Will Be
Rewarded For That Which
It Had Earned - Who Can
Calm Him After The Source
Has Lead Him Astray? -
They Think Nothing Will
Destroy Them Except For
Al Dahr - They Want
Their Fathers To Be
Brought Back To Them -
The Source Will Gather
You All On The Day Of
Resurrection - When The
Hour Is Established, Those
Who Dealt In Falsehood
Would Be In A State Of
Loss - All Nations*

*Will Be Kneeling, And
Brought Before His Own
Scripture - The Source Will
Make Them Enter Into His
Kneeling Mercy*

21) Or do those who seek after Al Sayyiaati 'The Evil Ways', Ilasiba 'Calculate' that We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will make them, as those who are faithful and work to Saalihah 'Perfect Themselves', as Sawaa-an 'Equals' to their life and death? Only evil, is that which they use wisely.

22) And The Source Khalaq 'Created' Al Samaawaat, 'The Skies' and the planet Qi, 'Earth' with a fact (beyond any doubt); and every Nafs 'Person' will be rewarded all that they had earned; and they will not be treated unjustly.

23) Did you see he who took ILAAHAHU, (His ALLAH) 'His Source' as his Haawa '(Love), Vain Desire'; and The Source, ALLAH has led him astray into error, and He Khatama 'Sealed' his Qalb 'Heart' and his Sam-a 'Sight', and made a Ghishaawat 'Covering' upon his sight, so whoever, can calm him, from after The Source, ALLAH; then will you not remember?

24) And they will say: "What is it, except our life of the physical world, we will (pass on), Muwt 'Die' and we Hayy 'Live'; and nothing will Yahlak 'Destroy'

us, except for Al Dahr, 'The Time' and there is not for them, any knowledge, except for that which they (conjecture), think up.

25) And when Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) clear verses were Tutlaa 'Recited' unto them, what was their argument except that they said, "Bring our fathers, (resurrector), if you are Sadiqiyn (Sodoq/Zodoq) '[To Be] Trusted'."

26) Tell them, this, (Muhammad): "The Source, ALLAH is He (He Not We) who gives you Hayy 'Life', then causes you all to Mawt 'Die', then He will gather you all to the day of Al Qiyaamah, 'The Standing/Resurrection'; no Rayba 'Doubt' in it; but most Enosites don't know that.

27) And for Him (Him Not Us), is the Mulku 'Rulership' of Al Samaawaati 'The Skies' and the planet Earth, and the Day, Al Saa'atu 'The Hour' will Taquwmu 'Be Established'; and on that day, the ones who deal in falsehood, will be in a state of loss (the evil ones).

28) And you shall see all the nations Jaathiyah 'Kneeling,' every nation will be called to Kitaabihaa 'Its Own Scripture'. (respect of other nations own scriptures on that day.) Today you will be rewarded by that which you were doing.

29) This is Kitaabunaa 'Our (Arabs) Scripture' (the Qur'aan) that Yantaqu 'Speaks' about you all, by way of facts (beyond any doubt). Surely, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) were the transcribers of that which you were doing.

30) As for those who are faithful and work to Saalihah 'Perfect Themselves'; so their Rabb, will make them enter into His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy); that is the Mubiyn 'Clear' Al Fawzu 'Achievement, Triumph'.

Those Who Concealed That Which They Know To Be The Facts. They Will Be Asked 'Whether Or Not Allah's Signs Were Recited Upon Them?' - The Promise Of Allah Is A Fact - Their Evils Will Encompass Upon Them And All Their Ridicule Will Befall Them - Allah Is The Rabb Of The Known World - All The Exaltedness Of The Skies And Qi Belongs To Him - Yahuwa Is The Mighty, The Wise

31) And as for those who concealed that which they knew to be the facts; it will be said to them, "Was not my signs recited upon you all, so you were Astakbar 'Big-Chested, (Pouting With Pride)', and you were a guilty kindred?"

32) And when it is said to them, "Surely, the promise of The Source, ALLAH, is a fact (beyond any doubt), and Al Saa'atu 'The Hour' (is coming), (there's) no Rayba 'Doubt' in it. You all used to say: "We do not know what Al Saa'at 'The Hour' is, and we only think a (conjecture) thought of it, and we are not sure about it."

33) And the evils will Badaa 'Manifest' for them all that they did, and shall Haaqa 'Encompass' them that which they used to ridicule will befall upon them.

34) And it will be said to them: "Today we forget you, just like you all have forgot the meeting of this day of yours; and your Mawa 'Dwelling Place' is Al Naar 'The Fire', and there will not be any Nasr 'Aiders' for you all."

35) That is for you all, for as much as you have taken the signs, verses of The Source, ALLAH, (the scriptures) as a jesture, 'joke' and the life of this physical world has tricked you all; so shall it be on that day, they shall not be brought forth from it - (the life of this Physical World); and neither shall they Yasta'tabuwn 'Receive Reapproval'.

36) So for him, is Al Hamdu 'The Gratitude'; Rabb, 'Sustainer' of Al Samaawaati 'The Skies' and the Rabb of the

planet Earth, 'Tiamat,' (who is) the Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known World'.

37) And for Him (Him Not Us), belongs all Al Kibriyaa-u 'The Exaltedness' of that which is in Al Samaawaat 'The Skies' and the planet Qi/Al Ard, 'Earth'; and He (He Not We), is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

Sudiqah Allahu 'El Azim

Chapter Sixty-Six

Revealed In The Year 619 A.D.; Verses 9,10, 15,

35 Were Revealed In Medina

Al Ahqaaf

(The Sandy Plains)


Original Order Chapter 66;

Wrong Order Chapter 46

**Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.**

*The Kitaab Was Sent Down
By The Mighty And Wise
Source - The Eloheem Didn't
Create The Samaawaat Or Qi
Or That Which Is Between
Them Except By Fact -
Muhammad Is Told To Tell
The Meccans 'Do Their
Sources Have A Share In The
Skies?' - Who Is More Astray
Into Error, Than He Who
Calls Upon Other Sources
Besides Allah? - The False*

*Sources Will Become Their
Enemies - Muhammad Told
The Meccans If He Invented
The Qur'aan, They Won't
Have Any Power Against Him
- Muhammad Is Not A Bid'a
From The Rusul - Moshich
Foretold Of Muhammad's
Coming*

66 () Haa: Wisdom,
Miym: Muhammad - the wisdom
of the Qur'aan of Muhammad.

2) The Scripture, 'Al Kitaab,'
which was sent down from The
Mighty and Wise Source,
ALLAH.

3) We, ([We Not He] Eloheem,
Anunnaqi) didn't Khalaq
'Create' the Samaawaat, 'Skies'
and the planet Qi/Tiamat, also
known as 'Earth' and that which
is between both of them; except
for a fact (beyond any doubt),
and We, ([We Not He] Eloheem
Anunnaqi) set an appointed
term (how long the planet Earth
will exist); and those who
conceal that which they know to
be the facts, who were warned
will be turned aside. (When the
time is up, they will not enter
the skies).

4) (Muhammad), you are to tell
them, (the Meccans) this:
"Didn't you all consider that
which you called upon besides
The Source, ALLAH? Show me
what they, have Khalaqa
'Created' from the planet Qi,

'Earth' or that which they have a share of which is in Al Samaawaati 'The Heavenly Skies'? (Or can they) bring about a scripture before this, (Al Qur'aan), or Aathaaratil 'Traces' of knowledge, if you are to be Trusted, of the Saadiqiyy/Zodoqites?"

5) And who is more astrayed into error than he who calls on others, besides The Source, ALLAH; who don't even answer him until the Day of Resurrection? And they are heedless of their calls; (they can't respond to their prayers).

6) And when the Enosites have gathered together for the Day of Judgement, they, (the false Sources or men that were worshipped shall come out against them), become their enemies and they, (the associates will deny ever having slaved for them - worshipped them); and (every false Source or the men that they worshipped), will deny (telling them), to worship them.

7) And when Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) clear scriptures were recited unto them, those who conceal that which they knew to be facts, said about the fact (beyond any doubt - the scriptures) when it has come to them, "that this is Mubiyn 'Clearly' Sihrun 'Magic, Or Sorcery'."

8) Or do they, (the Meccans) say that he, (Muhammad) Aftaraahu

'Invented It.' Tell them this, (Ahmad): "If I invented it, (the Qur'aan) you would have no power against me. The Source, ALLAH knows (best) of that which you say (amongst yourself) in it. He (He Not We) is a Sufficient Shahiyd 'Watcher' between me and between you all, and He is Al Ghafuwru 'The Forgiving', Al Rahiymu 'The Most Merciful'."

9) Tell them, this: "I was not an Bid'a 'Innovation' from the Rusul 'one sent', and I do not know that which will be done with me, and neither with you, (I can't foretell the future) except that I follow that which was inspired to me, and I am not, except a Mubiyn 'Clear' warner."

10) Say this to them: "Do you see? If it, (Al Qur'aan) is from The Source, ALLAH and you conceal that which you knew to be the facts about it and a watcher, (Mosheh) from the Children Of Israel watched, (foretold of one, Muhammad) like himself, (Mosheh), so he, (Mosheh) was faithful, and you, (Judahites, so-called Jews) are Astakbir 'Big-Chested, (Pouting With Pride)'. Surely, ALLAH does not lead into calmness the unjust kindred."

Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts, Don't Seek To Be Lead Into Calmness By It -

Qur'aan Is A Confirmation Of The Igw, The Torah - Those Who Say Our Rabb Is Allah, Will Not Grieve - They Will Be The Eternal Companions Of The Jannat - Eloheem Have Ordained That The Enosites Be Kind To Their Parents - The Peaceful Ones, Their Needs Are Overlooked By The Eloheem, Anunnaqi - The Human Jinn Are In A State Of Loss - They Shall Be Paid In Full For Their Needs - Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts, Will Be Rewarded With The Pain Of Humiliation

11) And those who conceal that which they knew to be the facts say about those who are faithful: "If it had been good, they would not have gone to it (to accept it before us); and since they were not lead into calmness by it. So they will say, "These are Qadiym 'Old' Ifkun 'Fabrications'."

12) And before the scripture of his, Moshch, (the Torah, 'Law') is a leading calmness and Rahmat 'Yielding' (mercy); and this scripture, (the Qur'aan) is a Musaddiqun 'Confirmation' (of it), in the 'Arabiyyan 'Arabic', (Qurayshan) Lisan 'Tongue', (dialect) and to warn those who were unjust, giving good news to Al Mulisiniyn 'The Doers Of That Which Is Best'.

13) Surely those who say, "Our

Rabb, who is 'Sustainer' is The Source, ALLAH, then continue on in the right way; so then no fear shall come upon them, nor shall they grieve.

14) These are you which are eternal companions of the Jannat 'Garden'; in it is your reward for that which you used to do.

15) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have enjoined that the Enosites are to be Ahsaanaan 'Better' to their Waalid 'Parents'. His Um 'Mother' did Hamal 'Carry' (conceive) him in Karaha 'Pain', and Hamuluahu 'His Carrying Period' (Period Of Conception) and Fisaaluhu 'His Weaning Time', is Thalaathuwna 'Thirty' Shahraan 'Months' - (two and a half years); until when he reaches the Ashuddahu 'Age Of Maturity' - the age of strength, which is Arba'iyna 'Forty' years. He, (the Enosite) says: "O My Rabb 'Sustainer', Awzi'niya 'Grant Me' that I may be grateful for your gracc, which you have bestowed on me and on Waalidayya 'My Parents'; and that I work to Saalihaan 'Perfect Myself', that you may be content and make Aslihu 'Perfect' for me in my Zurriyat 'Offspring'. Surely, I repent to you and surely, I am of Al Muslimiyna 'The Peaceful Ones'."

16) These are those, to whom We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) accept the best of

that which they do - their best deeds, and We, (Eloheem Anunnaqi) overlook their evil deeds in with the companions of the Garden; that is a Sidq (Zodoq) 'True' promise, that which they were promised.

17) And he who says unto Waalidayhi 'His Parents' - (blood mother and father or relatives in disgust), "Uffin 'I Revile' both of you, do you threaten me that I shall be brought forth and indeed generations have passed away before me?" And they both, (the mother and father) called out for aid of The Source, ALLAH. Curse to you, (their son). You are to have faith, surely the promise of The Source, ALLAH is a fact (beyond any doubt), so he, (the son) says that this is nothing but stories of Al Awwaliyn, 'The Ancient Ones, (the Eloheem, Dinneer)' /

18) These are those whom the saying, (the scriptures), which are the facts (beyond any doubt) have been proven upon them - (the facts show their evils) of the kindred which have already passed away before the Jinn, (the disagreeable, malevolent Beings, who fought in the skies before the planet Qi/Tiamat 'Earth,' led by the evil Jinn, Tarnush/Humbaba, or Shakhar and his host of Cherubeem, Disagreeable, Malevolent Beings and Michael, also called Murdoq/Miykhaal and his

Agreeable, Benevolent Beings called Serapheem) and the Enosite; those (evil beings who are in human form, cursed Canaanites, the Pale caucasoid Race, and from the Negroid and Mongoloid Devils). Surely they, (the human Jinn) are in a state of loss, (the losers).

19) And it shall be Darajaat 'Degrees' for all according to that which they do and that they may be Waffiya 'Paid-In-Full' for their deeds, and they shall not be treated unjustly.

20) And on the day when those who conceal that which they knew to be facts are 'Aradu 'Exposed' to the fire, you let all your agreeable facts get away from you, which is good in the life of the Physical World and you Astamta'a 'Sought Joy' in them, (the material things) so today you will be rewarded with the pain of Huwni 'Humiliation' (because) of that which you were so big-chested, (pouting with pride) in the planet 'Qi,' without having the facts (beyond any doubt), and because you used to transgress.

Muhammad Is Told To Remember Eber Of 'Ad - The Enosites Of 'Ad Wanted To Know Did He Come To Them, In Order To Turn Them Away From Their Elohs - Eber Tells Them, He Only Came To Propagate The

*Facts' - They Thought That
The Wind Will Fertilize
Their Crops - It Destroyed
Everything By The Command
Of The Source - The Eloheem
Curse The Enosites Of The
Valley Of The Sandy Plains
Inner Seeing, And Inner
Hearts To No Avail - When
The Company Of The Jinn
Went Back To Their Nation,
They Went Back As Warners*

21) And (Muhammad), you are to remember one of the Akhaa 'Brothers' of the city of 'Ad, (Eber), when he warned the Enosites in the Ahqaaf, 'Sandy Plains'; and indeed Nudhur 'Warners', had come from between his hands, and from after him; you are to slave for none except The Source, ALLAH. Surely I, (Eber) fear upon you all the pain, on the 'Aziym 'Supreme' Day.

22) They said: "Have you come to us, Enosites of 'Ad in order to turn us away from AALIHATINAA 'Our ELOHS (ALLAHS) 'Sources' - (the deities that they worshipped)? So bring upon us that which you have threatened us with, if you are to be Saadiqiyn 'Zodoqite, Trusted'?"

23) He, (Eber) said: "Surely, all 'Ilmu 'Knowledge' is in The Source, ALLAH'S possession and I only come Ubalighu 'Propagating The Facts', to you

all, that which I was sent with; but I can see that you all, are a ignorant kindred."

24) So when they saw what 'Aaridaan 'Appeared To Be A Cloudy Sky', overhead coming towards their valleys, they said: "This is a 'Aaridun 'Cloud' which will give us much rain," (thinking that it would fertilize their crops)." In fact, it is that which you sought or wanted to come fast, a Riyyh 'Wind, (A Craft In The Clouds)' in which there is an aching pain; (they asked to see the calamity and it came).

25) Tadammiru 'Destroying' everything by the command of its 'Sustainer', who is Rabb. So they became blinded, not able to see anything except their own Masaakin 'Dwellings'; (that which was in front of their faces). This is how We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) reward the guilty kindred.

26) And surely We, ([We Not I] Anunnaqi) Makanaahum 'Established Them', (the pale Enosites of the Valley of Ahqaaf, 'The Sandy Plains' Of Mamre) in (the land of Gidmon/Kadmon) more firmly than you, (the Enosites of Muhammad); and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made for them Sam'aan 'Inner Hearing' and Absaaraan 'Inner Seeing', and Aaf'idatan 'Inner Hearts', but none of their Sam'uhum 'Inner Hearing', and none of their

Absaar 'Inner Sight', and none of their Aafidat 'Inner Hearts' proved to be of any benefit to them, since they ignored the signs of The Source, ALLAH, (given by the newsbearer of the Tribe of 'Ad, called Eber). And they were encircled by that which they use to mock at.

27) And indeed We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) destroyed all the surrounding villages around you all, and We, (Anunnaqi's) Sarafa 'Turned Away' Our (Our Not My) signs - (the scriptures) so that they might return. (He sent multiple scriptures and newsbearers so that perhaps Enosite would return to the facts.)

28) So why did they, whom they took besides The Source, ALLAH, not aid them to get close to these AALIHAT (ALLAHS) 'Sources'? In fact, they were lost in error; (couldn't see them and this was nothing,) but fabrication and lies and things that they have invented.

29) And when We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) directed to you a Nafaraan 'Company' from the (Human) Jinn Yastami'uwna 'Listening' to the Qur'aan, so when they hadaruwahu 'brought it to him', they said: "Ansituw 'Be Silent', (Listen)." So when it was Qudiya 'Finished', they went (back) to their own kindred as Munzariyn, 'Warners.'

The Jinn Said The Qur'aan Confirms That Which Is Between Mosheh - Faithful Ones Are To Accept And Listen To The Call Of The Source - Whoever Doesn't Respond To Allah, Will Not Be Able To Escape In The Planet Ql/Earth - The Source Didn't Tire In Their Creation - The Concealers Of The Facts Will Be Asked 'Was It Not A Fact, That They Shall Taste The Pain?' - Muhammad Told To Be Patient As The Other Newsbearers, And That He Is To Propagate The Facts

30) They, (the human race of jinn) said: "Surely our kindred (Humans), of the Jinns heard Kitaabaan 'A Scripture' - (the Qur'aan) which was sent down after Mosheh (after the Torah), Musaddiqaan 'Confirming' that which (the Torah is now) between his, (Moshehs) hands, (The Torah which came before it. The Qur'aan came after the Torah). It's a leading calmness to the facts (beyond any doubt) and to the Tariyq 'Road' which is straight and firm.

31) Oh our kindred, answer the call of The Source, ALLAH, and have faith in Him. He will forgive you all from your faults, and rescue you all from an aching pain.

32) And whoever doesn't respond to the call of The

Source, ALLAH, so he will not be able to escape (to any place) in the planet Qi/Al Ard, 'Earth' and he will not find any near friends besides Him (Him Not Us). These are (you) who are in clear error.

33) Or didn't they see that The Source, ALLAH is He (He Not We) who Khalaq 'created' the Samaawaat, 'Skies' and Qi 'Earth'; and He didn't Ya'ya, 'Tire' in Khalqihinna 'Their Creation'? He has the power to give Hayy 'Life' to the Mawt 'Dead'; nevertheless, surely He is powerful over all things.

34) And on the day when they shall be brought before the fire and asked: "Is not this by way of the fact (beyond any doubt)?" And they will say: "Oh yes," and our Rabb, 'Master/Sustainer', He will say to them: "Now taste the pain, because you were indeed concealers of this fact." (They said: "This would never happen; this day would never come.")

35) (Muhammad), So Asbir 'Have Patience' as the Sabara 'Patience' (of the hearts) of those 'Azimi 'Strict' from the Rusul 'Ones Sent' (Muhammad, be as patient as all the other newsbearers); and don't try to hasten (the Last Day) for them. So on the day when they see that which was promised to them, it will be to them except (as if they only stayed) Saa'atan 'An Hour'

of the Nahaarin 'Daytime'. You are to Balaaghin 'Propagate The Facts'; So will any of you be destroyed, except the Qawm, 'Kindred' who are Al Faasiqunna 'Transgressing'?

Sudika Allahu El Azim

Chapter Sixty-Seven

Revealed In The Year 613 A.D.

Dhazariyat

(The Winds That Blow Pollen)

Original Order Chapter 67;

Wrong Order Chapter 51

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*A Dhazariyat That Blow
Pollen About - It Is
Distributed By The Source's
Command - The Day Of
Decision Is True - The
Day Will Come To Pass
- Nusqu Swears By The
Skies - Enosites Have
Different Things To Say
About The Day Of Decision
- The Concealers Of The
Facts Will Be Turned
Away From The Gardens -
The Ones Who Make Up
Things Will Be Killed*

67 And Al Dhazariyat 'The Winds', that blows (the great craft Nibiru blew).

2) So they, (the great cast Nibiru blew) it, carried it with a heavy burden (they removed the black carbon dust cloud that blocked the suns light from the earth).

3) So they, are running about with Yusraan 'Ease' (now clouds move about with ease).

4) So those (forces, powers of Nibiru) will distribute it, by his (ANU'S) Amraan 'Command'.

5) Surely what you are promised, (the Day of Decision) is verily Saadiq (Zodog) 'True'.

6) And surely the Diyn, your 'Your Means Of Judgment,' will come to pass.

7) And (I, Gabriel, who is also known as Nusqu swear) of the Skies, the Dhaat 'Essence' of Al Hubuki 'The Pathway' (to the stars to travel back and forward).

8) Surely you all have Mukhtalif 'Different' things to say about it, (the day of decision).

9) He, (the concealer of the facts) will be turned away from them, because he turned away (from the facts).

10) Al Kharraasawn 'The Ones Who Make Up Things' (sects of muslims) will be Qutila 'Killed'.

*Those Who Are Drowned,
Won't Obey - On The Day Of
Decision, Their Punishment
Will Be The Fire - They Are
To Taste Their Fitnat -
Those Who Tremble At The
Mention Will Be In Jannaat*

*- Those Were The Ones Who
Did Good - They Slept Only A
Little Of The Shadow Hour
Period - They Came For The
Breaking Forth Of Day
Worship - In Their Wealth Is
A Portion For The Beggars
- These Are Signs In Qi*

11) Those who are Ghamrat 'Drowned' in negligence won't obey.

12) They ask, "When is this Day of Diyn 'Judgment' (coming)?"

13) It's their own day, on which the fire shall be their punishment.

14) Taste your own Fitnat, 'Test,' (punishment, for) this is that which you all were hastening to.

15) Surely as for the ones who tremble at the mention will be in Jannaat and 'Uwawn 'Fountains'.

16) Taking from whatever their Sustainer, who is Rabb gave to them. Surely, they were the ones who do that which is best before (death).

17) They slept only a little of the Shadow Hour Period.

18) And when Al Ashaar 'The Early Daytime Hour,' (came for Salaat Al Fajr, 'Worship Of The Breaking Forth Of Day,') they were (up) asking for forgiveness (in worship).

19) And in their wealth, was a portion for the one who asks (beggar) and the one who is

Mahrwm 'Forbidden'.

20) And in the planet Earth, 'Qi/Tiamat' there are signs for the Muwqiniyn 'Ones Who Want To Be Sure'.

*You Will Never See Them,
Even By Your Ownselves - In
The Skies Is Your Rizq - By
The Rabb Of The Skies And
Qi, It's A Fact - Muhammad.*

*Did You Hear About The
Guests Of Abrawhawm? -
Michael, Uriel, And Raphael
Entered His Camp And Said
'Salaam' - Abrawhawm Tells
Sarah To Prepare A Fat Calf
For Them - The Anunnaqi
Told Abrawhawm Not To
Fear Them - The Eloheem
Are Going To Bring Good
News To Abrawhawm About
A Lad Full Of Knowledge.
Yitschaq - Sarah Said, 'She
Was 'Auzw And Barren - The
Source, Allah Is The Knowing,
The Wise*

21) And you will never be able to see them, even by your own Anfus 'Spirits'.

22) And in Al Samaa 'The Skies' is your Rizq (Rizqians) 'Provision', and that which you are Tuw'aduwn 'Promised'.

23) And by the Rabb, 'Sustainer/Master' of the Skies and Al Ard, the planet 'Earth' surely it is a fact (beyond any doubt) just as much as when you speak.

24) Did the Hadith 'Tale' come to you, (Muhammad) about Al Mukramiyn 'The Generous' Dayf 'Guests' of Abrawhawm: (Michael, Uriel, And Raphael)?

25) When they entered upon him (in his camp,) so they, (Michael, Uriel And Raphael) said: "Salaamaan, 'Peace.' He, Abrawhawm said: "Salaamun, 'Peace.' What Munkaruwn 'Sort Of Unknown (Strange)' kindred are you?"

26) So then He, (Abrawhawm) turned around to his Ahl 'Family' (Sarah): "So she (Sarah) came with a 'Ijlin 'Calf' Samiyn 'Fat'."

27) So he, (Abrawhawm) brought it to them, (The three Eloheem, Anunnaqi: Michael, Uriel, And Raphael) and said, "Will you not eat."

28) So he, (Abrawhawm) thought (to himself, how strange they, the three Anunnaqi: Michael, Uriel And Raphael were and) feared them. (But they, the three Eloheem: Michael, Uriel and Raphael read his mind and) said: "Don't fear Us (Us Not Me). We (We Not He) bring you good news of a Ghulaamin 'Lad' who will be full of knowledge, (Yitschaq son of Sarah)."

29) So (then, she, Sarah), his (Abrawhawm's) Amraat 'Woman' (Sarah) came forward, (out of the tent) in a Sarratin 'Loud Cry Of Laughter And Tears'; and Sakat

'Struck Violently' her own Wajh 'Face' and said: "I, (Sarah) am 'Ajuwz 'Old' and Aqiyim 'Barren', (Past Child Bearing)."

30) They, (The Three Eloheem, Anunnaqi: Michael, Uriel, and Raphael) said: "This is what your, (Sarah's) Rabb 'Sustainer', has said: "Surely He (He Not We), is Al Hakiym 'The Knowing', Al 'Aliym 'The Wise'.

*Abram Wanted To Know,
What Were The Three
Anunnaqi's Mission - They
Said, They Are Sent To The
Cursed Enosites Of Sodom And
Gomorrhah - They Were
Marked By Abrawhawm's
Rabb - Uriel And Raphael
Were To Bring Forth The
Faithful From Destruction
- The Eloheem Only Found One
Household Were Muslims, Lot
And His Two Daughters
- They Left In It, Signs;
Sabriyya, Lot's Wife, Who
Was Paralyzed - Moshah Sent
To Ramses II - Pharaoh Said,
He Was A Magician, And
Possessed With A Jinn - The
Anunnaqi Cast Pharaoh And
His Army Into The Reed Sea*

31) He, (Abrawhawm) said: "So what is your, (the three Anunnaqi: Michael, Uriel, and Raphael) Khutbah 'Sermon', (or Mission), O you who were sent, (His Messengers)?"

32) They, (the three Eloheem:

Michael, Uriel, And Raphael) said: "Surely we are only sent to the Mujrimiyn 'Cursed And Rejected' kindred: (Sodom and Gomorrhah)."

33) For We, (Uriel and Raphael) are to send on them Hijaaratan 'Stones' from (hot) Tiynin 'Clay', (they destroyed Sodom and Gomorrhah).

34) Marked by your, (Abrawhawm's) Rabb, 'Sustainer' for those who are Musrifiyn 'Accursed, Transgressing' (recipient).

35) So We, (Uriel And Raphael) were to bring forth who was in it (Sodom and Gomorrhah) of the faithful ones.

36) But We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi Uriel And Raphael) did not find in it, (Sodom and Gomorrhah) except for one household - (Luwt and his two daughters, Lubna and Jalaa'a) who were Muslimiyya 'Peaceful Ones.'

37) And We, ([We Not He] Uriel And Raphael) left in it, (the destruction of Sodom and Gomorrhah) signs; (Lot's wife, Sabriyya, who turned as a pillar of salt, which means she became paralyzed), for those who fear the aching pain.

38) And in (concerning) Moshah, when We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi), sent him to the (Pharaoh Ramses II) with a Mubiyn 'Clear' Sultaanin 'Authoritive Power'.

39) But he, (Pharaoh Ramses II) just turned away with his Rukn 'Chiefs' and said: "(He Mosheh is either) a Saahir 'Magician' or Majnuwn, 'A Madman, Possess With A Jinn!'"

40) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) took him (Pharaoh, Ramses II) and his Junuwd 'Army' of Egyptians /Mitsraimites and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Nabadha 'Cast' them in Al Yammi 'The Sea, the Reed Sea', (falsely called the Red Sea, that was parted for the Israelites/Jacobites and closed in on the Pharaoh, and his army,) and he is the blame.

The Destroying Wind Was Sent Upon The Enochites Of 'Ad - It Was Made To Look Like Ashes - Salih Told Them To Enjoy Themselves For A Little While' - Thamud Didn't Obey Allah - So Al Saa'iqat Overtook Them - They Were Not Able To Get Up And Aid Themselves - The Qawm Of Noach Were Transgressors - The Anunnaqi Are The Expanders Of The Heavenly Skies - The Eloheem Khalag All Things In Pairs - Ahmad Is A Warner To Abrawhawm's Seed

41) And in 'Ad, when We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi), sent upon them, (the Enochites) Al 'Aqiyma 'The Destroying

Riyh 'Wind'.

42) Nothing was left, not anything to which it came - (blew) upon, except that it was made to look like Ramiym '(Ruin), Rotten'.

43) And in Thamud, when it was said to them, (Enosites of Thamud by the newsbearer Salih) to Tamatta'uw 'Enjoy Themselves' for a little time.

44) So they, (the Enosites of Thamud) did not obey the Amr 'Command' of their Rabb 'Sustainer', so Al Saa'iqat 'The Thunderbolt', overtook them, and they, (Enosites of Thamud) were watching it all happen.

45) So they, (the Enosites of Thamud) were not able to even stand up, nor could they aid themselves.

46) And the Qawm, 'Kindred of Noach, from before; surely they, (the Enochites) were a kindred who were transgressors.

47) And Al Samaa-a 'The (Heavenly) Skies', We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Banaynaahaa 'Built It' with Aydin 'Great Strength' (laid the foundation of the Kosmos), and surely, We, (Eloheem Anunnaqi) are its Uwsu'uwna 'Expander/Enlargers' (we made it bigger).

48) And as for the Planet Tiamat/Qi, 'Earth,' We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Farasha 'Unfolded It' the planet Earth (split into two parts), also

called Al Ard, so We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Mahada 'Spread It' out in Our Ni'ma 'Grace' (Asteroid Belt).

49) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi), Khalaq 'Created', all things in Zawjayni 'Pairs, Mates', so that perhaps you would Tadhakar 'Remember'.

50) So rush, (flee) to The Source, ALLAH. Surely, I (Ahmad), am a Mubiyn 'Clear' warner for you, (Abrawhawm's seed), from him (Abrawhawm).

Don't Make Any Other Allahs With Allah - That Is How It Is, For Every Rasuwl That Came Before Them, Were Called A Magician And A Majnuwn - Have The Jacobites Inherited This Characteristic? Muhammad Is Not To Blame For Israel - The Remembrance Is Benefiting The Ishmaelites - Allah Didn't Create The Jinn And The Enosite, Except To Slave For Him - And Allah Does Not Want Any Provision, Or Food From Them - Yahuwa, Allah Is The Provider And Source Of All Power - For The Unjust Ones, They Will Have A Portion Just Like The Portion Of The Disagreeable Seed's Companions - Curse Be To All Of The Disagreeable, Malevolent One's Seed

51) And don't make with The Source, ALLAH any other ILAAHAAN (ALLAHS) 'Sources'. Surely, I (Muhammad) am a Mubiyn 'Clear' warner for you (Abrawhawm's seed), from Him.

52) That is how it is; there has not come to those before them, (the Enosites of Abrawhawm's seed) Rasuwl 'One Sent,' without them saying: "He is a Saahirun 'Magician' or a Majnuwn, 'Mad Man, Possessed Of A Jinn!'"

53) Have they, (the bad seed of Abrawhawm, the Jacobites) Atawaasaw 'Inherited This Characteristic (Of The Disagreeable Ones)' with it. In fact; they are just a kindred of transgressors.

54) So (Muhammad), turn away from them (Israel/Jacob), for you are not to blame (for them).

55) And (continue to) remember, so surely the remembrance is Tanafa'u 'Benefiting' the faithful.

56) And I, (I Not We) have not Khalaqa 'Created' the Jinn, (The Disagreeable, Malevolent Race of the Eloheem, Anunnaqi), and the Enosite - (seed of Enos), except to (be a) slave (to) me.

57) I (I Not We), don't want from them, (the seed of the Evil One and the seed of Adam/Zakar and Neqaybaw/Hawwah) any Rizq (Rizqian) 'Provision', (physical things), and I (I Not

We) don't want them to feed me (food).

58) Surely, ALLAH, He (He Not We) is Al Razaaqu (Rizqian) 'The Provider', Dhu 'The Source' of Al Qawwati 'All Power', Al Matiynu 'The Firm'.

59) So surely, for those who are in a state of unjustness, (Enosites who follow The Evil One) there is a Dhunuwbaan 'Portion' like the Dhanuwbi 'Portion' of their Ashaab 'Companions', (the Disagreeable One's seed); so don't let them Yasta'jiluw 'Seek To Speed (up time)'.

60) So Waylun 'Curse' be for those (followers of the Disagreeable, Malevolent One), who conceals that which they know to be facts, from their own day in which they are promised - (Day of Judgment).

Sudiq Allahu El Azim

Chapter Sixty-Eight

Revealed In The Year 813 A.D.

Ghaashiyah

(The Overwhelming Event)

Original Order Chapter 68;

Wrong Order Chapter 88

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Muhammad Is Asked About

*The Hadiyth Of The
Overwhelming Event - Some
Faces Will Be Cast Down
- They Will Be Thrown Into
Haamiyah - They Will Drink
Of The Aaniyah - Their Food
Will Be Dari' - The Faces Of
The Faithful Will Be Na'ym
- They Will Be Pleased, In
The Exalted Jannat*

68 Haven't the Hadiyth
'Tales' come to you,
(Muhammad) about The
Ghaashiyah, 'Overwhelming
Event?'

2) Some Wujuw 'Faces' on that
day will be Ghaashi'atun 'Down
Cast'.

3) Working and toiling,

4) They will be thrown, cast
into the Haamiyah 'Scorching'
flames of fire.

5) They will be made to drink
only from a spring of Aaniyah,
'Hot Boiling Water.'

6) There shall not be any
Ta'aam, 'Food' for them except a
Bitter Dari' 'Thorny Fruit.'

7) Which will neither fatten
them, nor give them any relief
from Ju'a 'Hunger'.

8) Faces (of the faithful), on that
day shall be Naa'imah 'Smooth'
(without a frown).

9) And they will be Raadiyah
'Content', with their works (in
this world).

10) In An 'Aaliyatin 'Exalted'
Jannat 'Garden'.

*They Will Hear No Vain Talk
In It - Kawthar Is In It,
- There Are Cups, And Cushions
Arranged In Rows -
Don't They Ponder The
Creation Of The Clouds? -
How The Heavenly
Skies Are Ruff'at? - And How
The Mountains
Were Erected And How Qi
Was Landscaped?*

11) In it, (they the faithful ones) will not hear any Laaghiyah 'Trifling Vain Words'.

12) In it, is a spring Jaariyah, 'Flowing,' (Kawthar).

13) Therein are Surur 'Beds', Marfuw'ah 'Raised High' (There are beds in heaven. Physical).

14) And Akwaab, 'Cups' are put there, (there are cups in heaven).

15) And Namaariq 'Cushions' Masfuwfah 'Arranged In Rows' (There Are Cushions In Heaven. Physical).

16) And Zaraabiyy 'Carpets' Mabthuwthah 'Spread Forth' (There Are Carpets In Heaven. Physical).

17) Do they not look to Al Ibil 'The Camels' how they were Khuliqat 'Created'?

18) And to Al Samaa-i 'The (Heavenly) Skies', how it is Ruff'at 'Raised'?

19) And to Al Jibaa' 'The Mountains' Kayfa 'How' they are Nusibat 'Erected'?

20) And to the planet Earth, 'Qi/Tiamat,' how it is Sutihat

'Landscaped'?

*Ahmad Remind Them -
Muhammad Doesn't Have The
Power To Compel Them - He
Who Turns Away From The
Faith Will Have The Greatest
Pain - Their Return And The
Taking Of The Their Hisaab
Is To The Eloheem, Anunnaqi*

21) So Dhakkir 'Remind' them, because you, (Muhammad) are (only) a Mudhakirun 'Reminder'.

22) You (Muhammad) do not have any power to compel them.

23) But as for he who conceals that which he knows to be the facts, and Tawalla 'Turns Away' (from the faith).

24) So he will be punished with Al 'Azaab Al Akbar, 'The Biggest, Greatest Pain.'

25) Surely to Us, (Eloheem, Anunnaqi) is their Iyyaab 'Return', (after death).

26) Thumma 'Then', the taking of their Hisaab 'Account' is on Us, ([Us Not My] Anunnaqis).

Sudiqu Allahu El Anim

Chapter Sixty-Nine

*Revealed In The Year 618-619 A.D., Verses
28-101 Were Revealed In Medina*

*Al Kahf
(The Cave)*

*Original Order Chapter 69:
Wrong Order Chapter 18*

Begin All Things With The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful

The Qur'aan Sent To Muhammad, It Has No Flaws In It - Give Good News To The Faithful - Allah Has Not Taken A Walad

69 All gratitude is due to Him (Him Not Us), who sent upon His (His Not Our) slave, (Muhammad) the Scripture - (the Qur'aan) and He (He Not We), did not make any 'Iwajaan 'Flaws, Crookedness' in it (the original Qur'aan).

2) (He Made It) Qaiymaan 'Upright' to warn of a forceful Baa-Saan 'Misery' from Ladunhu 'His Presence', and to give good news to the faithful who works to Saalihaat 'Perfect Themselves', that they would receive the best reward.

3) Wherein, they will abide always.

4) And he shall warn those who say, The Source, ALLAH has taken for Himself (himself not them) a Walad, 'Son By Birth' (meaning Yashu'a).

5) They don't have the knowledge about it, nor did Aabaaahim 'Their Father'. Big and grievous is Kalimatan 'The Word', that proceeds from their mouths. For surely, all they say

(about this matter) is only a lie (they don't overstand).

6) So maybe, you will blame yourself on the account, that they are not faithful to the Hadiyah 'Tale' and you, (Muhammad) become saddened.

7) Surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) made whatever is on the planet Qi, 'Earth' as an ornament of adornment (gold, silver, platinum, copper, etc.), in order to test them as to which of them has the best of works (who would earn and who would steal).

8) And surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will make everything on Qi the planet 'Earth' barren as dry ground, (without herbage).

The Companions Of The Kahf - Salha And Lebana Were Faithful To Their Rabb - The Anunnaqi Calmed Them

9) Or do you calculate, that the companions of the cave, and Al Raqiymi 'The Inscription', (and number) are of Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) 'Ajabaan 'Amazing' signs?"

10) When the youths, (Lebana and Salha) sought refuge in Al Kahf 'The Cave' they said: "Our 'Sustainer', Rabb, grant us a Rahmat 'Yielding' (mercy) from you and direct us to the leading calmness in our affair.

11) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Darabnaa 'Struck' over (so that they couldnt hear) their ears, in Al Kahf 'The Cave' a number of (309) years.

12) Then We, ([We Not He] Eloheem) Batha 'Raised Them Up (After Death)' that We, (Eloheem) might know which of Al Hazbayni 'The Two Parties' (was touched and best able to) Ahsaa 'Compute' the time for which they remained (the two parties being; the seed of Canaan and the Nubians in the latter day who's going to keep the calculation in the latter days of when the 6000 years will be up).

13) We, ([We Not He] Anunnaqi) relate upon you, (Muhammad) their story with facts (beyond any doubt). Surely they (Lebana and Salha) were youths who were faithful to their Rabb and We, (Eloheem, Anunnaqi) increased them in calmness.

*Lebana And Salha Owed Not
To Call Upon Any Other
Allahs, Besides Allah - Their
Canaanite Dogs Stretching
Their Paws In Front Of The
Cave; You Will Be Terrorized
If You Look At Them*

14) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) strengthened their hearts, when they stood erect (before their seed went on all fours) and said:

'Our 'Sustainer,' who is Rabb, is the Rabb 'Sustainer' of Al Samaawaat 'The Skies' and the planet Tiamat/Qi. We won't call on any ILAAHAAN (ALLAH) 'Source' besides Him (Him Not Us), The Source, ALLAH. For indeed, then We, (Eloheem, Anunnaqi) should have uttered an extravagant thing.

15) These, our (tribe), kindred (Canaanites) have taken ILAAHATAN, (ALLAHS) 'Sources' (Baalhadad, Lucifer) from besides Him (Him Not Us), The Source, ALLAH. If they don't come upon them with a clear Sultaanin 'Authoritive Power'; so who acts more wrongfully, (becomes one in spiritual darkness), than he who makes up 'invents' a lie, 'falsehood' on ALLAH?

16) And when you all A'arazal-tumuw-huma 'Segregate (Separate Yourself) From Them' and that which they worship (Lucifer) except The Source, ALLAH; So take refuge, (shelter) to Al Kahfi 'The Cave'. Your Rabb, 'Sustainer' spreads for you from His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy) and He (He Not We) prepares for you all from your Command 'Affair', Mirfaqaan 'Comfortably'.

17) And you would have seen Al Shams 'The Sun' when it Tala'at (comes down) 'Appeared To Rise' Tazaawaru 'Going Away,

Declining' from their cave to the Yamiyn 'Right'; and when it, (the Sun) Gharabat 'Appeared To Set In The West', turning away from them to the Shimaal 'Left' (they watch it from horizon to setting); and they were in a Fajwat 'Open Space, Disregard' of it, (the cave). That was signs from The Source, ALLAH. He whom, ALLAH leads into calmness, so he is one who is calmed. And he who, Yudlil 'Leads Astray Into Error', so you will not find for him a Waliyyan 'Near Friend' (to give him) Murshidaan 'True Direction'.

18) And you will think that they (the Canaanites) are Ayqaadaan 'Awake' and they are really Ruquwdun 'Asleep' and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) turned them to the right side and to the left side (confused them); and their Kalb 'Dogs' are stretching their paws right in front of their threshold (cave or living in their houses, sleeping in their beds). If you were to take a look upon (these Leperous Canaanites), you would certainly turn and run away from them escaping, and you would certainly become full of fear (and terror from looking at them, the Shaggies)."

19) And also We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Ba'athnaahum 'Raised Them (After Death)' to ask one another

A speaker from them said: "How long have you all remained?" They said: "We've remained for a day or some part of a day." They said: "Your Rabb 'Sustainer' knows best how long you've remained. So send one of you with this, Wariqakum 'Your Paper (silver coin, money) to the city; so he will look which of them is the Azkaa 'Pure' food, so he will come to you with a Rizqin 'Provision' from it and he will act with subtleness and gentleness; and no one will perceive who you are. (They will be allowed to come out of the caves and people will forget who and what they are).

20) Surely they (the original people), if they come to know of you all (how you are the cursed seed of evil beings), they will Yarjam 'Stone' you all (they will want to kill you), or will return you back in their Millat 'Rites' (or try to clean you up again as Abrawhawm did); and then you all will never succeed (yet your day is coming anyway).

Abrawhawm's Father Stumbles Upon The Canaanites - The Building Of The Tower Of Babel - Canaanites Remained In Their Caves 309 Years

21) And like that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made them, (the chaldeans;

Abrawhawm's father, Terach to stumble) upon them, (cursed Canaanites of the caves, for them Abrawhawm's seed) to learn that The Source, ALLAH'S promise is a fact (beyond any doubt); and surely as for the hour (Last Day), there is no doubt about it when they dispute amongst themselves about that which was ordered them. So they, (the cursed Canaanites in Babel) said: "Build for them a building (Tower of Babel), for their Rabb, knows of their affairs, that which they were doing. Those who prevailed in their affair said: "We will take (and put) over them a Masjid 'Place Of Prostration'."

22) They shall say: "There were three"; the fourth of them was their dog (for genetic breeding); and they say five, and the sixth of them was their dog (for genetic breeding), guessing about that which was Ghayb 'Unseen' (the gene and how they bread with the dog); and they say seven and the eighth of them was their dog (for genetic breeding). Say: "My Rabb knows their number (who left Noah and went into the cave) and none knows them except a small amount of (Enosites: Noah and his 8 member family, and the 80 beings who went in the ark with them.) So don't argue concerning them, except that you have a clear argument,

(the facts about the Halabeans, Flugelrods, The Canaanites and their genetic grafting) and don't seek an opinion 'guess' about them any of them (the origin of Caucasians)."

23) And you all shall not say to us of anything: "Surely I will do that tomorrow."

24) Except if The Source, ALLAH pleases, and remember your 'Sustainer,' who is Rabb when you forget and say: "Maybe that my Rabb will lead me into calmness to make me nearer to this calmness."

25) And they, (the Canaanites) remained in their caves (caucasian mountain) three hundred '300' years and they add nine (309).

26) Tell them: "The Source, ALLAH knows best how long they have remained. For Him (Him Not Us) is the Unseen, 'Hidden' of Al Samaawaati 'The Skies' and the planet Qi 'Earth.' He (He Not We) sees and hears of it. What's for them from besides Him, a Waliyyin 'Near Friend'? And He will not Yushrik 'Associate A Partner' with anyone in His (His Not Our) Hukmi 'Wisdom'."

No One Can Change Allah's Words - Jannat Is For Those Who Perfect Themselves

27) And recite that which has been inspired to you

(Muhammad) from the Scripture of your Rabb (Al Qur'aan), who is 'Sustainer,' (Muhammad) and no one can Mubadila 'Change' His (His Not Our) words (in the original Qur'aan) and you won't find any place of refuge other than with Him (Him Not Us).

28) And (restrain) yourself - be patient with those who Yad'uwna 'Call Unto', (pray to) their Rabb in the early Daytime Hour and the late Evening, seeking His (His Not Our) face, (to see him face to face); and do not let your eyes turn away from about them, wanting the Ziynata 'Adornment', (pomp) of the life of Al Dunyaa 'The Physical World'; and don't obey him, whose heart We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made unaware of Our ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) remembrance, and he followed Hawaahu 'His (Inclination), Love Of Lust' and his command 'affair' exceeded all bounds (the curse seed, soulless people).

29) (Muhammad), tell them the facts (beyond any doubt) is from your Rabb, so whoever pleases, so (to be faithful), let him be faithful, and whoever pleases (to be a concealer) so let him be a concealer of the facts; for surely, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have prepared for those in a state of unjustness 'concealers of the facts' a fire to encompass them (with smoke) in

Suraadiquhaa 'Their Tents', and if they seek assistance, their assistance will be water like Muhli 'Molten Brass', which will Yashwiyy 'Broil' the faces of the wretched. It will be a wretched drink, for a Saa-at 'Wretched', Murtafaqaan 'Couch On That Which One Leans On'.

30) Surely those who work to Saalihaat 'Perfect Themselves' and have faith We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will not fail to reward those who do the Ahsana 'Best' of works."

31) These are they, who are for them the Jannaat 'Gardens' Of 'Adnin' 'Eden', beneath it are the rivers running (seas of Rizq). They are to be adorned while in it (the Enclosed Garden of Delight), with Dhahaba 'Gold' Asaawira 'Bracelets' (real gold made into bracelets is there) and they will be Yalbisuwna 'Wearing' Khudraan 'Green' Thiyaabaan 'Robes' (Real robes that someone had to sew there) made of Sundusin 'Silk' (silk worms are there) and Istabraqin 'Brocade' (someone to embroidery there; A physical place); these will recline while in (the Enclosed Garden of Delight) upon Al Araa-ika 'Royal Thrones' (Something Physical). This is the most gentle and pleasant reward and the best Murtafaqaan 'Couch On That Which One Leans On'."

The Example

32) Adrib 'Strike Forth' for them Mathalan 'A Likeness' of Rajulayni 'Two Mortal Men', We, ([We Not He] Eloheem) made one of them to have two gardens of grapevines; And We, (Anunnaqi) surrounded them with Nakhlin 'Palm Trees' and We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made between them Zur'aan 'Cornfields'.

33) Al Jannatayni 'Both Gardens' gave food and didn't fail anything thereof; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) caused a Naharaan 'River' to flow in their midst."

34) And We, ([We Not He] Anunnaqi had other things besides these, and) he had fruit therein, so he said to his companion, while he Yuhaawiru 'Argued' with him: "I have more Maalaan 'Wealth' than you and I am A'azzu 'Mightier' to my Nafaraan 'Company Of Enosites."

35) And he entered his garden and he was unjust to himself. He said: "I don't think that this (garden) will ever perish."

36) And I don't think the Sa'aat 'The Hour' will arrive and if I am brought back to my Rabb 'Sustainer/Master', verily I will find from it, something better to be exchanged.

37) His Saahib 'Companion' (an Anunnaqi) said to him, when he

argued with him: "Do you conceal that which you know to be the facts about He, (Enqi) who Khalaqaka 'Created You' from Turaabin 'Dust' (from the particles of the earth, first evolution), then from a Nufatin 'Semen' (life-germ)', then Sawwaaka 'Fashioned You' as a Rajulaan 'Mortal Man'?"

38) Laakinnaa 'But as for me', He (He Not We), ALLAH is my Rabb 'Sustainer' (ANU) and I do not Ashriku 'Associate' anyone with my Rabb (Two separate creations)."

39) And if you had not said when you had entered your garden: "What The Source, ALLAH pleases, there is no strength except by way of The Source, ALLAH. If you have seen me, I have less wealth and Waladaan 'Children' than you."

40) So maybe that my Rabb 'Master', will give me better from your garden and He (He Not We) will send on it Husbaaman 'Darts Of Lightning' from Al Samaa-i 'the (Heavenly) Skies'. So (by naming it), you will become a slippery (dust)."

41) Or by the early daytime hour, her water will become Ghawraan 'An Underground Running Water System' (down to Shamballah by way of inner cavern). So you will not be able to make a Talabaan 'Search' for it."

42) And he was encircled by his fruit, (wealth) so he reached a state turning Kaffayhi 'The Palms Of His Hands' upside down on account of that which he offered freely - (spirit in it); and it was utterly wasted in Uruwshihaa 'Its Thrones (Foundations)' and he says: "O would that I had definitely not Ushrik 'Associated' anyone with my Rabb.

43) And there was not a Fi-atun 'Band Of Enosites' there for him to help him from besides the Source, ALLAH, and he was not able to defend himself (against His vengeance).

44) There, the true Walaayatu 'Near Friends', are for him, the true (one). He is the best in giving rewards and the best to (ensure) success, (victory).

The Physical World Is Like Water - Earth And Mountains Will Pass Away - El Rabb Does Not Put Anyone In A State Of Unjustness

45) And Adrib 'Strike Forth' for them (with) a Mathala 'Likeness' of this life of the physical world like water. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have sent down from Al Samaa-i 'The (Heavenly) Skies'. So it mixed with plants of the Earth, so it became dry and beaten down, Al Riyh 'The Winds' Tadhruwhu 'Scattering It', and The Source,

ALLAH is Muqtadiraan 'Prevailing' over all things."

46) The wealth and Al Banuwna 'The Sons' (of Lebana) are an adornment of the Hayaat 'Life' of the physical world; and the enduring, Saalihaatu 'Perfected' (works) are best in the possession of your 'Sustainer,' who is Rabb for a reward, and best of hopes.

47) And the day, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) cause to pass away the mountains (they left the caucasian mountains) and you will see the Earth as a Baarizatan 'Manifesting Plain' (the move to the plains of Mamre). And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will gather them (Canaanites). So We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) won't leave behind anyone from them.

48) And they shall be set before your Rabb 'Sustainer' in Safaan 'Ranks'. Indeed you all have came to Us (Us Not Me) as We, ([We Not Me] Eloheem, Anunnaqi) have Khalaqnaakum 'Created You All', the Awwala 'First' Marratin 'Time' (before the birth of Adam and Eve); But you all thought We, (Eloheem, Anunnaqi) will not make a promise for you all.

49) And the scripture was Wudi'a 'Placed' (the scroll of All), so you can see the guilty ones who are Mushfiqiyna 'Dreadul' from that which is in it; and they say: "O our shame

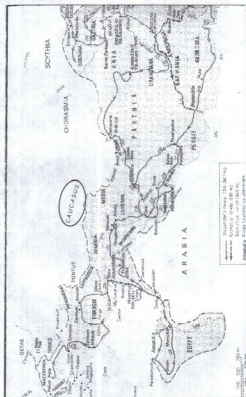


Diagram 29
Caucasian Mountain Between The Black And Caspian Sea

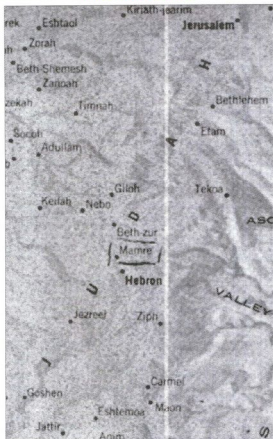


Diagram 30
Plains Of Mamre

unto us (what have we done under the tree). Maa 'What' Li 'Is For', Haadhaa 'This' Al Kitaab 'Scripture'? It does not leave behind a small and not a big except it has been counted (all things are in it); and they found what they have done presently; and your Rabb does not put anyone in a state of unjustness.

Eloheem Said For All The Messengers To Prostrate For Adam - The Jinns Did Not Watch The Khalqa Of The Skies And Qi, 'Earth,' Nor The Creation Of Themselves.

50) And when We, (We Not He - the Eloheem, Anunnaqi) said to the Malaa-ikati 'Angelic Messengers, (the Eloheem): "Asjuduw 'Prostrate' for Adam (Kadmon)," so they all Sajaduw 'Prostrated' except for Ibliys, 'the rebellious devil', he was of the (Malevolent Beings, Cherubeem), Jinn." So he, (Ibliys) Fasaqa 'Disobeyed' about the Amri 'Command' of his 'Master' who is Rabb; so will you take him, (the Evil One), and Dhurriyyatahu 'His Offspring' (Canaanites), as Awliyaa-a 'Near Friends', rather than Me (Me Not We), and they are 'Aduwwun 'Enemies' for you all? Evil will be the substitute for the ones who are in a state of unjustness - (the Prince of Evil

and his Enosites; those who live in the image of the beast and received his mark of approval - 666 Zain, Zain, Zain)."

51) I did not Ash-hadttuhum 'Let Them, (the Malevolent Beings, Cherubeems, the Reptilians) Watch' the Khalqa 'Creation' of Al Samaawaati 'The Galactic Skies' And Al Ardi 'The Planet Qi/Tiamat/Earth (the 18th galaxy),' nor the Khalqa 'Creation' of Anfusihiim 'Themselves' (their breeding and grafting). And nor could I have taken Al Mudilliyna 'Those Who Lead Astray Another Into Error' for 'Adudaan 'Assistants' (don't trust Canaanites).

52) And on that day, he will say: "You all call those who you thought (were) Shurakaa-iyaa 'My Associating Partners'." So they will call unto them, (pray) so they didn't respond to them, and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made a Mawbikaan 'Place Of Destruction' between them."

53) And the Mujrimuwn 'Guilty Ones' will see the fire. So they thought that they will be ones falling into it; and they will not find a place to escape from it.

54) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have Sarrafa 'Explained' in Haadhaa 'This' Al Qur'aan for the Enosites from every Mathalin 'Kind (All Races Of Example)', and The Enosites are Jadalaan

'Contentious' in most things.

*Enosites Should Be Faithful
Because The Qur'aan Has
Come - Concealers Of The
Facts Take The Eloheem's
Warnings As A Joke - Your
Rabb Is The Forgiver,
Possessor Of A Yielding Mercy*

55) And there is no reason for Enosites not to be faithful when the leading calmness, (the Qur'aan) has already come to them, and seeking forgiveness from their Rabb who is 'Sustainer/Master' except that the Sunnah 'Ways' of Al Awwaliyna 'The Ancient Times' overtakes them (the facts of the Sumerians); or that they come Qubulaan 'Face To Face' with pain.

56) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send Al Mursiliyna 'The Ones Sent' (or newsbearers) except as Mubash-shiriyna 'Sharers Of Good News'. (Some newsbearers brought scriptures,) and as Mundhiriyna 'Warners', so that those who conceal what they know to be the facts may dispute with their Baatili 'Falschhood' in order, that they may refuse the facts (beyond any doubt); and they only take Our, ([Our Not My] Anunnaqis') signs, (the Scriptures) and Our warnings as a Hazuwaan 'Joke'.

57) And who acts more

unjustly, than he whom has been reminded with signs of his Rabb? So he turns away from them and he has forgotten that which his hands has offered. Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made over their hearts Akinnatan 'A Covering' that they will Yafqahuwhu 'Be Wise And Have Overstanding In Its Law And Divinity'; and in their ears, is a Waqraan 'Deafness' and if you call them to the leading calmness; so, then they will never be lead into calmness.

58) And your Rabb is Al Ghafuwru 'The Forgiver', Dhu 'Possessor' of Al Rahmati 'The Yielding' (mercy). If He (He Not We) punishes them for that which they earned, He will hasten for them the punishment; But, for them is a promise; they will not find from besides Him (Him Not Us), Maw-ilaan 'A Refuge'."

59) And those villages, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) destroyed them when they were in a state of unjustness, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) made a promise for their destruction.

Mosheh And Yehowshuwa At The Two Niles

60) And when Mosheh, said to his Fataahu 'Boy Servant', (Yehowshuwa son of Nuwn and Ya'el), I will not cease this

journey until I, (Mosheh) reach the Majma'a 'Junction' - (Tuti of) Al Bahrayni 'The Two Seas', (White and Blue Niles Gihon and Pishon, in Sudan); or I, (Mosheh), will spend Huqubaan 'Ages Going On'.

61) So when they, (Moshch and Yehowshuwa) reached the Mujma'a 'Junction' (Tuti), between the two of them (White and Blue Niles), they had forgot Huwtahumaa 'Their Big Huwt (Fish)' and it got off the hook, took its way back into the sea and disappeared.

62) So when they passed (the junction), He, (Mosheh) said to Fataahu 'His Boy Servant', (Yehowshuwa): "Bring for us our lunch, (the fish." The boy let it get off the hook), for certainly we are at the point of Nasabaan 'Fatigue' from our journey."

63) He, (Yehowshuwa) said: "Didn't you see when we came to Al Sakhrati 'The Rock Area'? Well, surely I forgot to tell you, (Mosheh) about Al Huwt 'The Fish'. It was Al Shaytaan 'Satan', who made me forget to remember to tell you, (Mosheh) that it took its way in the sea. (Isn't that) 'Ajabaan 'Amazing'?"

64) He, (Mosheh) said: "That place, (where you, Yehowshuwa lost the fish was the place) Nabghi 'We Desired'. So they returned to it, retracing their footsteps."

Meets Al Khidr - Mosheh's Requests To Be Taught By Al Khidr

65) So they both, (Mosheh and Yehowshuwa) found 'Abdaan 'A Slave', (Al Khidr) from amongst 'Ibaadinaa 'Our Slaves' (Anunnaqi Eloheem); We, (We Not He) Eloheem), gave him, (Al Khidr) a Rahmat 'Yielding' (mercy) from 'Indinaa 'Our possession' (the right to personify to earth), and We, (the Anunnaqi) taught him, (Al Khidr) knowledge, from Ladunnaa 'Our presence' (this Al Khidr or Melchizedek has been taught).

66) Mosheh said to him, (Al Khidr/Melchezidek); is it possible for me to follow you? So that you can teach me all that you were taught, which is the Rushdaan 'Way To Direct Others' (Mosheh Wanted To Be Accepted Into The Order Of Zodoq Or Order Of Melchizedek)?"

67) He, (Al Khidr, 'The Green One' also called Qadiym Al Zamaan) said: "Surely you, (Mosheh) will not be able to endure with me in Sabraan 'Patience'."

68) (Al Khidr said:) "And how can you Tasbiru 'Be Patient' with that on which you, (Mosheh) don't have Khubraan 'Full Information'?"

69) He, (Mosheh) said you, (Al



Figure 138
Al Khidr

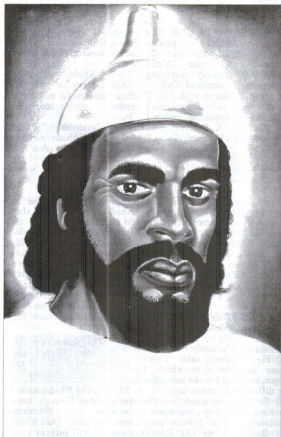


Figure 139
Yehowshuwa (Joshua), Son Of Nun

Khidr) will find me, if The Source, ALLAH pleases Saabiraan 'Patient', and I, (Mosheh) will not A'asiy 'Disobey (Question)' anything you Amraan 'Command (Do)'.

70) He (Al Khidr) said: "So if you (Mosheh) follow me, don't ask me about anything, unless I have Ahditha 'A Conversation' with you about it, 'remind you.'"

Mosheh's Journeys With Al Khidr And Is Put Through A Test

71) So they, (Al Khidr and Mosheh) started out on a journey until when they were riding on the boat. So he, (Al Khidr) Khararaqaa 'Made A Hole' in the boat; he, (Mosheh) said: "Did you make this hole in it, (the boat) in order to Tughriqa 'Drown' its family? This is indeed a (strange) thing to do?"

72) He, (Al Khidr) said: "Didn't I say to you, (Mosheh) that you will not be able to endure with me, Sabraan 'Patiently'?"

73) He, (Mosheh) said: "Don't blame me for that which I forgot, and don't make me suffer any difficulty in my orders."

74) So they departed (on the journey), until they came upon a Ghulaamaan 'Lad' (whose name was Badr), so he (Al Khidr) killed him. He, (Mosheh) said: "Did you kill an Zakiyyatan

'Innocent' spirit, (the lad) who had killed no one? Indeed, this is a Nukraan 'Horrible' thing to do!"

75) (Al Khidr) said to (Mosheh), "Didn't I say to you, (Mosheh) that you would not be able to endure with me Sabraan 'Patiently'?"

76) (Mosheh) said: "If I ask you, (Al Khidr) about anything else after this, then don't let me Saahib 'Accompany' you any further, for indeed, you would have taken a wage for doing that."

77) So they, (Mosheh and Al Khidr) went on, until they came to People of a village. So to its People, they begged for food and they refused to entertain them, (Mosheh and Al Khidr) as guests. So they found in it, (the village) a wall which was about to fall down; so he, (Al Khidr fixed it), standing it upright. So (Mosheh) said: "If you wish you could have taken a Ajraan 'Wage' for doing that?"

*The Separation Point
Between Mosheh And Al
Khidr - Al Khidr's Explanation
To Mosheh*

78) He, (Al Khidr) said: "This is the point of Firaagu 'Separation' between you, (Mosheh) and between me, (Al Khidr); and (now), I will inform you of the meaning of all that you were not able to be patient with."

79) As for the boat, it was the property of a very poor (family). They work in Al Bahr 'The Sea', (for a livelihood). So I made it defective, (damaged) because (in that region) there was a (cruel) ruler who was out to take all the boats (in that region) Ghasbaan 'By Force'.

80) And as for Al Ghulaam 'The Lad', (I killed), Abwaahu 'His Parents' were faithful. So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) feared that he, (being bad), was going to make them suffer, because of his transgressing and concealing of the facts.

81) So We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) wanted their (Salim and Wardi's) Rabb, who is 'Sustainer', to give them a better (son) than him (Badr), Zaaawatin 'A Pure' (son) who would be closer and more merciful (and caring to them).

82) And as for Al Jidaaru 'The Wall' that was (falling down), there were Yatimayni 'Two Orphan' Ghulaamayni 'Lads' (Nasim and Farid) who lived in that city (village); and there was under it, (the wall) a Kamuzun 'Great Treasure' for them; and their father (Waalid) was a Saalihaan 'Perfectionist, Righteous Man'. So your, (Mosheh) Rabb, wanted them, (Nasim and Farid) to grow up and reach their maturity, and to take their treasure from under

the wall. All of this was done by the Rahmat 'Yielding' (mercy) of your, (Mosheh's) Rabb 'Master', and I, (Al Khidr) did not do it on Amriy 'My Own Accord'. Now that is the Taawiyilu 'Explanation' of all that you, (Mosheh) were not able to endure in Sabraan 'Patience'."

*Asking About Al Qarnayn
Alexander The Great -
Alexander Told To Either
Punish Them, Or Receive
Them In Agreeableness - Gog
And Magog Cause Mischief In
The Earth*

83) They asked you (Muhammad) about, (the beast who has) Dhiy Al Qarnayn 'Possessor Of The Two Horns' (Alexander The Great Of The Seed Of Canaan). Tell them: "I will recite for you all about him, that which is Dhikraan 'Remembered'."

84) Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) established for him in the planet Qi/Tiamat 'Earth,' And We, (Anunnaqi) gave him a Sababaan 'Means, (path) from everything."

85) So he followed a Sababaan 'Means', (path).

86) Until when he reached the Maghriba 'Appearance Of The Setting Of Al Shams 'The Sun' In The West', he found it Taghrubu 'Appearing To Set' in a Hami-atin 'Hamite, Black

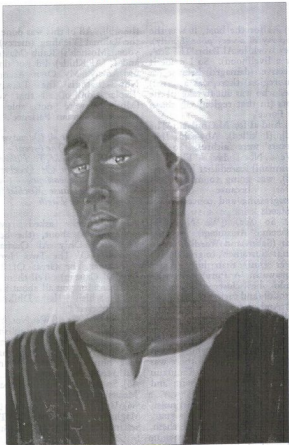


Figure 140
Salim, Husband Of Wardi

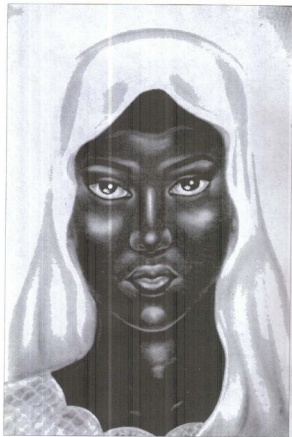


Figure 141
Wardi, Wife Of Salim

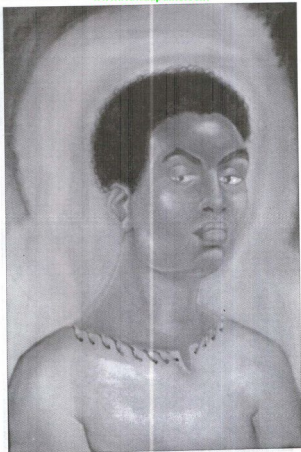


Figure 142
Badri, Son Of Salim And Wardi

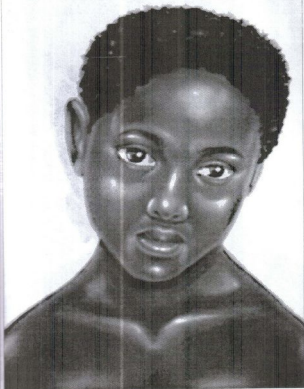


Figure 143
Nasim, An Orphan Son Of Waalid

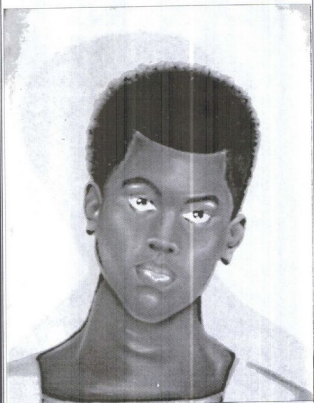


Figure 144
Farid, An Orphan Son Of Waalid

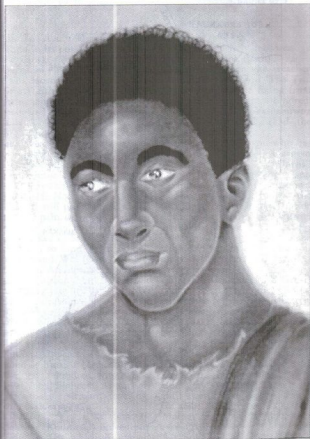


Figure 145
Waalid, Father Of Nasim And Farid

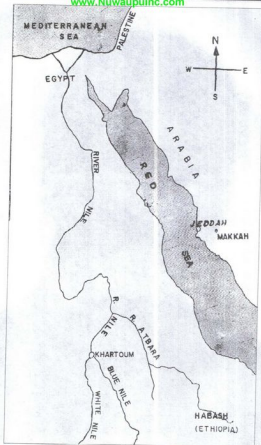


Diagram 31
Relating To The Story Of Khidr And Moses

Muddy' 'Aynin 'Spring'; And he found in its possession a kindred (Persians). We said: "Oh Dhal Qarnaiyn 'Possesser Of The Two Horns', (Alexander The Great) either that you punish them, and either you receive them in Husanaan 'That Which Is Best'.

87) He (Alexander The Great) said: "As for he who's in a state of unjustness, so We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will punish him. Then he will return to his 'Sustainer,' who is Rabb. So He (He Not We), The Source, ALLAH will punish him with a horrible pain.

88) And as for he who has faith and worked to Saalihaan 'Perfect Himself', so for him is the best reward and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will say to him: "Yusraan 'An Ease' from Amrinaa 'Our (Our Not My) Command, Affair.'

89) Then he followed a Sababaan 'Means, (path).'

90) Until when he reached the place where Al Shams 'The Sun' Mutli-a 'Appears To Rise'; he found it Tatlu-a 'Appearing To Rise' on a kindred whom We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) didn't make a Sitraan 'Covering' from besides it.

91) Also, We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) indeed put down of that which Khubraan 'Overstanding' he had in his presence, fully aware (of his

presence.)

92) Then he followed a Sababaan 'Means, (path)'.
93) Until when he reached

between Al Saddayni 'The Two Mountains', and he found from besides both of them a kindred. They, (the kindred) Yafqahuwna 'Scarcely Overstood', (had the intellect) of a saying.

94) They said: "O you who has two horns 'Dhaa' Al Qarniyn 'Possesser Of The Two Horns'! Surely Yaajuwja 'Gog' and Maajuwja 'Magog', (also known as Haarwt and Maarwt - the two Eloheem that hanged upside down in a well), Mufsiduwna 'Make Mischief' in the planet Qi 'Earth.' So shall we make tribute to you in order that you make between us, and between them a Saddaan 'Hindrance'?"

95) He, (Alexander The Great) said: "What he my Rabb, established for me in it is better. So you help me with strength. I will make between you and between them a strong wall."

96) Bring me Zubara 'Pieces' of Al Hadiyd 'Iron', until when I'll take Saawaa 'Shelter' between Al Sadafayni 'The Two Mountains'. He said: "Anfakhu 'You blow' until when he has made it a fire. He said: "Bring me a Qitraan 'Molten Brass', which I pour out over it."

97) So they are not able to Yadh-haruhu 'Mount It', and they are not able to Naqbaan

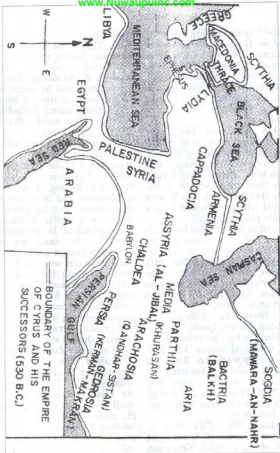


Diagram 32
Relating To The Story Of Dhu Al Qarnain

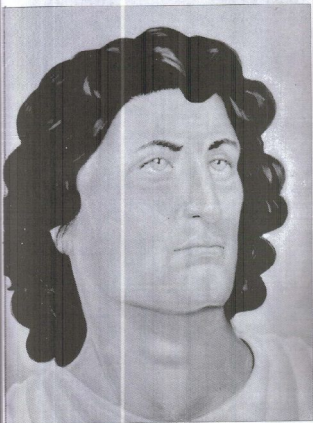


Figure 146
Alexander, The Great - Possessor Of Two Horns



Figure 147

Gog



Figure 148
Magog

'Dig A Hole' for it.

98) He said: "This is a Rahmatun 'Yielding' (mercy) from my Rabb, who is 'Sustainer.' So when the Wa'du 'Promise' of my Rabb comes, He (He Not We), will make it a Dakkaa-a 'Flat Mound Of Dust'; and the promise of my Sustainer was a fact (beyond any doubt).

*Trumpet Will Be Blown By
The Eloheem Raphael -
Jahannam Prepared For Al
Kaafiriyn*

99) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will leave, (let) some of them Yamuwju 'Surge In' others on that day; and Al Suwri 'The Trumpet' (shofer) will be Nufikha 'Blown' (by the Eloheem Raphael). So We, (Eloheem, Anunnaqi) will gather them all together (the guilty blue eyed Canaanites and their black devil friends).

100) And We, ([We Not He] Anunnaqi) shall bring to view Jahannam 'Purgatory/Hell' (of Muslims) for those who conceal that which they know to be the facts on the day of viewing.

101) Those whose eyes were in the Ghitaa-in 'Wrong' (concealed) about Dhikriy 'My Reminder', and who were not able to hear."

102) Do those who conceal what they know to be the facts think that they have taken My (My

Not Our) slaves as near friends from besides Me (Me Not He). Surely We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) prepared Jahannam 'Hell' for the Kaafiriyn 'Concealers Of The Facts' for (their) Nuzulaan 'Dwelling Place'.

103) (O seal of the Newsbearers 'Prophets,' Muhammad, by the supreme sovereignty of your Rabb 'Sustainer' and Creator, I command you to) say: "Shall Nuna-biukum 'We Acquaint You' of the greatest ones to overcome by defeat in their works?"

104) These are (the Enosites) whose endeavours in the life of the physical world have been directed towards false ends, and they thought that they were the best of Sun'aan 'Molders'.

105) These are those who conceal that which they know to be the facts with the signs of their Rabb and His meeting. So fruitless will be their works. So (on the Day of Standing, 'Qiyaamah' their good actions are of no value and) shall have no Nuqiymu 'Weight' on the Waznaan 'Scale' (on the Day of Resurrection 'Standing'.)

106) Thus Jahannam 'Purgatory' is the reward for which those who conceal what they know to be the facts, and take My (My Not Our) signs and all My Rusul 'Ones Sent' as Huzuwaan 'Mockery'."

*Those Who Are Faithful, For
Them Is The Jannaat And
Firdaws Descending Down -
Muhammad A Mere Bashar -
Allah Is Alone In His Power,
And The Only Rabb*

107) Surely those who are of the faithful and work in the way of Al Saalihaati 'The Perfection', it was for them to reside in the Jannaat 'Gardens' of Firdaws 'Paradise', for their Nuzulaan 'Dwelling Place'.

108) They shall be in it forever, and shall not desire any change.

109) (O Seal Of The News Bearers, by the supreme sovereignty of your Rabb and Creator, who is Sustainer of all things, I command you to) tell them: "If the sea was ink for the (sake of writing) words of My Rabb 'Sustainer', the sea will certainly be exhausted before the words of My Rabb becomes exhausted (information will never stop coming down to you except more holy books), and if We (We Not He) came with Madadaan 'Ink' (as) its likeness.

110) And tell them (Muhammad): "I, (Muhammad) am merely a Bashar 'Mortal In Skin,' as you all are (just another human being like you). It has been inspired to me that ILAAHUKUM (Your ALLAH) 'Your Source,' is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source'. So let he who hopes to

meet his Rabb who is 'Sustainer', work to perfect his being, and don't Ushrik 'Associate Partners' Ahadaan 'Anyone' Be-Ibaadati 'With The Slaving', of his Rabb."

Sudliqa Allahu El Azim

Chapter Seventy

*Revealed In The Year 621 A.D.; The Last 3
Verses 126, 127, 128 Were Revealed In Madinah
In The Year 624 A.D.*

*Al Nahl
(The Bee)*

*Original Order Chapter 70;
Wrong Order Chapter 16*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Don't Hasten Unto Allah -
Allah Is Ta'alaa - Eloheem
Sent Down By Way Of The
Ruwh*

70 The Amru 'Command' of The Source, ALLAH has come, so don't you hasten unto Him (Him Not Us - Don't try to add him to your deities now)? Glory be to Him and He (He Not We) is 'Ta'alaa' (ANU) 'Exalted' of that which Yushrikuwn 'They Associate Partners With'.

2) He (He Not We) sends down Al Malaa-ikata 'The Angelic Messengers' (Eloheem,

Anunnaqi) by way of Al Ruwhi 'The Soul' (the Holy Soul Murdoq) from Amrihi 'His (His Not Our) Command', whom He pleases of His slaves, that they should warn all, that no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Anaa 'I Or Me'. So Attaquwni 'Tremble At The Mention Of Me (Not We Or Us, Me, An 'I)'.

3) He, (He Not We) Khalaq 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi', by fact (beyond any doubt). Ta'aalaa 'He's Exalted' above all that which Yushrikuwna 'They Associate Partners With (Other Deities)'.

*Eloheem Enqi Created Enosites
- Cattle Created For You, For
Clothing. And To Bear Heavy
Burden - Horses And Asses
Are An Adornment*

4) He, ([He Not We] the Eloheem Enqi) Khalaqa 'Created' Al Insaana 'The Enosites' from Nutfatin '(Kisru) Semen (Life-Germ)'. So then, (despite his small origin), he, (the Enosite) is a Mubiyn 'Clear' Khasiymun 'Disputer'.

5) And the cattle, Khalaqaha 'He (He Not We) Created'. For you (Enosite), in it is Dif-un 'Warmth', (clothing) and Manaafi-u 'Benefits'; and you eat from them (the cattle).

6) And for you'll, in it is

Jamaalun 'Beauty', when you Tariyhuwn 'Take Them Home In The Dusk Period' and when they, (the flock of cattle) Tasrahuwn 'Go Freely To Pasture In The Early Daylight Hours'.

7) And they (the cattle) carry your heavy burden to the Baladin 'Lands', that you can't reach, except with difficulty of your own selves. Surely your Rabb, The 'Sustainer', is Ra-uwfun 'Kind', Rahiymun 'Most Merciful'.

8) And Al Khayl 'The Cavalries', and Al Bighaala 'The Mules' and Al Hamiyr 'The Asses' are for you to Tarkab 'Ride' them, and Ziynatan 'An Adornment', and He, (He Not We) Yakhluqu 'Has Created' of that which you have no Ta'lamuwn 'Knowledge' of.

9) And on ALLAH is the right way of the path, and from it (the path), are ones that turn aside; and if He (He Not We), pleases, He would lead you all into calmness together.

*Yahuwa Sent Down Water
For You All - He
Made The Moon And The Sun
And And The Sea Subservient
To You*

(10) It is He (He Not We), who Anzala 'Sent Down' water from Al Samaa-i 'The Skies'. You drink from it, and from it, there

are also Shajarun 'Trees (Vegetation)' Tasiymuwn 'In Which You Pasture' (Your Flocks).

11) Yunbitu 'He Plants' for you with it, Al Zar'a 'The Corn' and Al Zaytuwn 'The Olives', and Al Nakhiyl 'The Date Palms', and Al 'Anaabi 'The Grapes' and from all kinds of fruits. Surely in Dhaalika 'That' is a sign for a kindred, that they can think.

12) And He (He Not We) made Sakh-khara 'Subjected' for you Al Layl 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'The Daytime' and Al Shams 'The Sun', and Al Qamar 'The Moon', and Al Nujuwuwn 'The Stars' Musakh-kharaatun 'Are Subjected' Bi-Amrihi 'By His Command'. Surely, in Dhaalika 'That' are signs for a kindred Ya'qiluwna 'With Intelligence'.

13) And of that which He (He Not We), Dharaa 'Has Produced' for you in the planet Qi 'Earth' of different colors, surely in Dhaalika 'That' is a sign for the kindred Yadh-dhakaruwun 'Who Are Mindful (with gratitude)'.

14) And He (He Not We), is who subjected the sea that you may eat Tariyyaan 'Fresh' Lahmaan 'Meat' from it; and you bring forth from it Hilyatan 'Ornaments (pearls, sea shells)', that you can wear, and you see Al Fulka 'The Craft' (on water) cleaving through it, and for you to desire from Fadlihi 'His

Favour', and perhaps that you will be grateful.

15) And He (He Not We) placed in Al Ard 'The Planet Tiamat/Qi' all, referring to the 'Earth' firm mountains, so that it will not move with you; and rivers and paths so that perhaps you will be lead into calmness.

16) And 'Alaamaatin ' (Land Marks); and by way of Al Najmi 'The Stars', they are lead into calmness - (they find their way).

17) Is He (He Not We) who Yakhluqu 'Created', as he who does not Yakhluqu 'Create'? So don't you remember?

18) And if you would 'Adduw 'Count' the Ni'mata 'Grace' of The Source, ALLAH, you can't number it. Surely The Source, ALLAH Is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

*The Source Knows That
Which You Keep Secret And
Vice Versa - Your Allah Is
One Allah*

19) And The Source, ALLAH knows that which you Sirruwn 'Keep Secret' and that which you Tu'linuwn 'Make Public'.

20) Those who they call upon, (pray) from besides ALLAH, they do not create anything; and they themselves are created.

21) Amwaatun 'They are dead', Ghayru 'Other Than' Ahyaain 'Alive', and they have no idea

how, or where they will be Yab'athuwna 'Raised Back To Life'.

22) ILAAHUKUM (Your ALLAH) 'Your Source' is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source'. So those who don't have faith in the End, their hearts Munkiratun 'Have No Knowledge', and they are Mustakbiruwn 'Big-Chested, Pouting With Pride'.

Allah Doesn't Love The Proud Ones - They Will Carry Their Burdens Entirely. On The Day Of Resurrection - Jahannam Is For The Big-Chested Ones

23) Of course, surely The Source, ALLAH knows that which they Yusirruwn 'Keep Secret' and that which they Yu'linuwna 'Make Known'. Surely He (He Not We), does not like Al Mustakbiriyna 'Those Pouting With Pride (They Are Big-Chested)'.

24) And when it was asked of them, "What is it that your Rabb, who is 'Master/Sustainer' sent down (to you)? He said: "Asaatyru 'Fables' of Al Awwalyyna 'Those Ancient Ones' - (the Eloheem, Dinneer)."

25) So that they will carry their burdens entirely, on the day of resurrection - 'the standing'; and also of the burdens of those whom they lead astray into

error, without them even knowing it. Now surely, evil is the burden they will bear.

26) Indeed those from before them Makara 'Plotted'. So The Source, ALLAH took Al Qawaa'idi 'The Foundations' from Bunyaanahum 'Their Buildings' (Wall Of Jericho). So Al Saqtu 'The Roof' fell upon them, from above them and he came to them with a pain, from whence they don't perceive (the Ark of The Covenant).

27) Then the Day of Al Qiyaamah 'Resurrection' will disgrace them, and He (He Not We) will say: "Where are Shurakaa-iyaa 'My Associating Partners', those who were opposing in them?" Those who have been given the knowledge will say: "Surely the disgrace and shame of this day and evil act is on the Kaafiriyn 'Ones Who Concealed That Which They Knew To Be The Facts'."

28) Those who Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers, (Eloheem, Anunnaqi)' Tatawaf-faahum 'Cause To Pass Away, (Takes Their Soul),' put their own selves into a state of unjustness. So they threw themselves to Al Salama 'The Surrendering Of A Peaceful Way Of Life.' We were not doing any evil act. Nevertheless, surely ALLAH is knowledgeable of that which you used to do.

29) So enter the Abwaaba

'Doors' of Jahannam 'Hell' (hell has doors) eternally in it. So a miserable, wretched Mathwa 'Abode' for Al Mutakabbiriyn 'The Big-Chested Ones, Those Pouting With Pride'.

Those Who Tremble At The Mentioning Of The Source, There Is Jannat For Them

30) And it is said for those who tremble at the mention: "What is it that your Rabb has sent down?" They say: "That which is good for those who seek the best in this physical world, and the best in the abode of the End, and grace will be the Daar 'Abode' of those who tremble at the mention.

31) Jannaat 'Gardens' in 'Adnin 'Eden', they (the righteous) enters them; rivers flowing from beneath them. In them, (Enclosed Gardens of Delight,) they have that which they please; also The Source, ALLAH rewards those who tremble at His mentioning.

32) As for those whom, Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers, (The Eloheem, Anunnaqi)' cause to pass away, (takes their soul), in a state of agreeableness. They will say to them: "Salaamun 'Peace' be upon you all. Now enter the garden, by way of all that you were doing (your good deeds following all the laws).

33) Do they wait for anything except for Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers' (Eloheem Anunnaqi) coming to them, or should the orders of your (Muhammad's) Rabb 'Sustainer' come? This is how those who were before them (the other cycles), did things and ALLAH did not treat them unjustly; but they were unjust to themselves.

34) So the evil, disagreeable acts that they were doing fell upon them; and that which they used to ridicule, surrounded them.

35) And those who Ashrakuw 'Associate Partners' said: "If ALLAH pleased, we won't slave for anything from besides Him (Him Not Us); us, nor our fathers; nor have we Haramnaa 'Made Anything Unlawful' from besides Him. Also those from before them did this; So, what is on the Rusul 'Ones Sent' except the Mubiyn 'Clear' Al Balaaghu 'Propagating Of The Facts?'

Eloheem, Anunnaqi Ba'atha In Every Nation A Rasul - Avoid Al Taaghut - If The Anunnaqi Want To Bring Something Into Existence, They Just Say To It, "Exist," And So It Comes Into Existence

36) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Ba'athnaa 'Raised (To Life)' in every Ummatin 'Nation',

Rasuwlaan 'One Sent' that you will slave The Source, ALLAH; and Aghtanibuw 'Avoid' Al Taaghuwt, 'The Arrogant Devil' (also known as Humbaba, Anzu, Enzu, Tarnush, The Father Of Samael, The Reptilian). So from them, who are lead into calmness by The Source, ALLAH and from them who let the astrayness (from the light to spiritual darkness) become the facts to them. So Siyruw 'Move About' Fee 'In' the planet Qi 'Earth,' and see how the end was of Al Mukadhibiyn 'The Liars'.

37) If you, (Muhammad) Tahris 'Anxiously Desire' upon their calmness, so surely The Source, ALLAH does not lead into calmness those who has Yudhillu 'Gone Astray, (Into Error)' and there are no aiders for them.

38) And swear by way of The Source, ALLAH their Jahda 'Striving' Iymaan 'Faiths', The Source, ALLAH will not Yab'athu 'Raise (To Life)' who has Yumiyt 'Died.' Nevertheless, it's a factual promise on him, and most Enosites have no knowledge (of it).

39) To make clear to them who were Yakhtalifuwna 'Differing' in it; and to let those who concealed that which they knew to be the facts, know that they were liars.

40) When Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) saying to

something, if we want to say to it: Kun 'Exist,' Fayakun 'So Into Existence It Becomes'.

41) And those who Haagaruw 'Migrated' in ALLAH'S way from after they had been treated unjustly, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will inform them of goodness in Al Dunyaa 'The Physical World'; and the reward of the End is Akbar 'Bigger', if they only knew.

42) Those who were patient, and entrusted upon their Rabb who is 'Sustainer.'

*Eloheem Sent Mortal Men
Whom Were Inspired
Through Wahy - Qur'aan Is
Sent Down To Explain
Previous Scriptures*

43) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send from before you, except Rajulaan 'Mortal Men', whom We, (Eloheem Anunnaqi) inspired (by way of 'Weh, Or Wahy') to them. So ask Ahla 'The Family' Of Al Dhikri 'Remembrance' (Noach's family who remembered the flood), if you did not know.

44) By way of Al Bayinaati 'Clear Evidences' (Gilgamesh Epics), and the Zubuwr (the Psalm, of the Prophet Dawiyd); And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down to you, (Muhammad), Al Dhikra 'The Remembrance' (The Qur'aan), so

that you will be able to clearly explain to the Enosites what was Nuzzila 'Sent Down' to them. (Explain the tablets, scrolls and books before the Qur'aan), and perhaps they will consider (that which you are to teach).

45) Are those who plotted evil acts feel secure, that The Source, ALLAH will cause the planet Tiamat/Qi to Yakhsifa 'Swallow' them, or the pain will come to them from where they will not perceive.

46) Or He (He Not We), The Source, ALLAH will take them in their turning about, so they will not be (weakened) frustrated.

47) Or He (He Not We) will take them upon a fear. So surely your Rabb is Rauwfun 'Kind', Rahiymun 'Most Merciful'.

48) Or did not they see to that, which The Source, ALLAH Khalaqa 'Created' from Shayin 'A Thing', they turn about its shadow from the right and to the left, Sujjadaan 'Prostrating' Lil-lahi 'To Him', and they are Daakhiruwn 'Vile' (breeding of the canaanites).

*That Which Is In The Skies
And Qi Even The Eloheem,
Prostrate Before Allah - Don't
Take Two Allahs - If Harm
Touches You, Supplicate Unto
Allah*

49) And Lil-lahi 'To Him'

Yasjudu 'Prostrates' that which is in Al Samaawaati 'The Skies' and that which is in Al Ardi 'The Planet Earth (Tiamat)', from Daabbatin 'A Crawling Creature', and Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers,' (Eloheem Anunnaqi) and they are not Yastakbiruwn 'Big Chested', (pouting and proud).

50) Yadhaafuwna 'They fear' Rabbahum 'Their Sustainer' from Fawqahum 'Over Them' (hovering above in a craft), and Yaf'aluwna 'They Do' that which Yu-maruwn 'They Are Commanded'.

51) And The Source, ALLAH (As Gabriel/Nusqu) said: 'Don't take ILAAHAYNI Ithnayni (two ALLAHS) 'Two Sources', for surely, He (speaking about ALLAH) is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source', so you should be frightened Iyyaaya 'Only Of Me'.

52) And for Him (Him Not Us), is what is in Al Samaawaati 'The Heavenly Skies' and Al Ardi 'The Planet Qi'; and for Him is the Waasibaan 'Perpetual' Diyn 'Means Of Judgment'. Is there any other than ALLAH, that you tremble to?

53) And that which is with you, from the Ni'matin 'Grace'; so it's from ALLAH. Then if harm touches you, so Taj-aruwn 'Supplicate' unto Him (Him Not Us).

54) And if He (He Not We),

removes the harm from about you; if a Fariyqun 'Portion' from you, those who Yashrikuwn 'Associate Partners' with their Rabb,

55) They concealed that which they knew to be the facts of that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave them. So Tamatt'a 'Enjoy Life (temporarily)', so you will know.

56) And they make of what they have no knowledge of, a part from that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Razaqnaahum 'Provided Them'. By way of 'The Source, you will be asked of that which you were Taftaruwn 'Inventing'.

57) And they make Lil-lahi 'For Him' Al Banaati 'Daughters'. Glory to Him, and for them that which Yashtahuwn 'They Desire'.

58) And when one of them, is given the announcement of a Unthaaa 'Second Part, Female' (child), his face becomes Muswaddan 'Blackened' and he is Kaziymun 'Filled With Anger'.

*Those Who Don't Have Faith,
The End Is A Likeness Of
Dishonor - Shaytaan Made
Evil Look Fair-Seeming Unto
Them*

59) He hides himself from the kindred, because of an evil act, that news which was given to

Him should be kept in disgrace, or should be hidden in Al Turaabi 'The Dust'. Nevertheless, evil is what you use wisely.

60) For those who don't have faith by way of the End is a Mathalu 'Likeness' of evil; and Lil-lahi 'For Him', is Al A'laa 'The Most Exalted' Al Mathalu 'Likeness'; and He (He Not We) is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

61) And if The Source, ALLAH punishes the Naas/Enosite for their Dhilm 'Wrong Doing', He (He Not We) would not leave upon it from any Daabbatin 'Crawling Creature'; but He (He Not We) delays them to a Musamman 'Predetermined' Ajalin 'Time'. So if their time comes, they can't delay Saa'atan 'An Hour', and nor can they precede it.

62) And they make to The Source, ALLAH that which they hate, and Al Sinatuhum 'Their Tongues' describe the lie, that which is best is for them. No Doubt, the fire is for them; and they will be hastened to it.

63) By way of ALLAH, indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have sent (Apostle 'One Sent') to Umamin 'Nations' from before you. So Al Shaytaan, (also known as Haylal, Al Khannaas, Samael) 'Satan the Reptilian' Zayyana 'Made Fair-Seeming, Adorned'

A'amaalahum 'Their Works' for them. So He, (Satan the Reptilian), is Waliyyuhum 'Their Near Friend' today; and for them is an aching pain.

64) And We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have not Anzalnaa 'Sent Down' to you, (Muhammad), Al Kitaaba 'The Scripture' (Al Qur'aan) except that you may Bayyina 'Make Clear' to them that, about which Akhtalafuw 'They Differed' in; and as a leading calmness and a Rahmatan 'Yielding' (mercy) for a kindred who are faithful.

*Allah Revived Tiamat After
Her Death - There Is A
Drink From Their Stomach;
And From Between The
Faces And Blood. And Pure
Cream - There Is A Drink
From Palms And Grapes*

65) And The Source, ALLAH Anzala 'Sent Down' from Al Samaa-i 'The Skies', Maa-an 'Water' (Split The Planet Tiamat Into Two Parts). So He (He Not We) Ahya'a 'Revived (Brought Back To Life)' with it, Al Ard 'The Planet (Tiamat), Earth' (made the planet earth) after Mawtihaa 'Her Death' (He Reconstructed It). Surely in that is a sign for a kindred who hears.

66) And surely for you, in Al 'An'aami 'The Cattle' is a 'Ibratan 'Warning Lesson'. We, ([We Not He] The Anunnaqi)

give drink from what is in Butuwnihi 'Their Stomach'; from between Farthin 'The Feces' and Damin 'Blood', is Khaalisaan 'Pure' Milk Saa-ighaan 'Passing Easily And Pleasantly Down The Throat' For The Shaaribiyn 'Drinkers'.

67) And from the Thamaarati 'Fruits' of Al Nakhiyli 'The Date Palms' and Al A'anaabi 'The Grapes', you take it, (the grape and make a drink) to get you Sakharaan 'Drunk' and (of the Date Palm) the Hasanaan 'Best' Rizqaan 'Provision' (drink). Now surely, in this is a sign for the kindred who can use their brains 'intellect.'

68) And your 'Sustainer/Master' who is Rabb has Awhaa 'Inspired' to the Nahl 'Bee' that they are to put Buyuwtaan 'Homes' (hives) into Al Jibaali 'The Mountains' and into Al Shajari 'The Trees', and in the Yarishuwn 'Places, (Man) Constructs'.

*Honey Is A Healing For The
Naas - Angel Of Death Created
Enosites - Allah Made Nates
And Children And
Grand-Children For You*

69) Then eat from all Al Thamaraati 'The Fruits' - (flowers) so Aslukiy 'Tread' the paths (from plant to plant) of your Rabb 'The Sustainer' in 'Zululaan 'A Humble Way'.

There comes forth from Butuwnihaa 'Their, (The Bees) Bellies' Shuraabun 'A Drink' (Honey) Mukhtalifun 'Of Many Different' Al Waanuhu 'Colors' (honey comes in different colors); in it, (honey) is Shifaa-un 'A Healing' for the Enosites. Surely in that is a sign for the kindred who think.

70) And The Source, ALLAH (The Angel of Death, Enqi) Khalaaqakum 'Created You All', then Yatawafaakum 'Causes You To Pass Away (Takes Your Soul)'; and there are some of you who Yuraddu 'Reverts Back' to the Ardhal 'Lowest' Al 'Umuri 'Life Span' (Back To Genus Homo Or Homo Erectus; You Become Feeble); so that he does not know anything after having 'Ilmin 'Knowledge'. Surely ALLAH, is 'Aliymun 'Knowing', Qadiyrun 'Most Powerful'.

71) And The Source, ALLAH Fadala 'Has Preferred' Ba'dakum 'Some Of Them' over Ba'din 'Others' in Al Rizq 'The Provision'. So those who were Fadiluw 'Preferred' will not give back Rizqihim 'Their Provision', over to that which their right hand Malakat 'Possessed'. So they are Sawaa-un 'Equals' in it. Then is it the grace of The Source, ALLAH that they are denying?

72) And The Source, ALLAH made for you, Azwajaan 'Mates' from Anfusikum 'Yourselves',

then He (He Not We) made from your Azwajaan 'Mates', Baniyna 'Children' and Hafadatan 'Grand Children', and He Razaqakum 'Provided For You All' from that which is Al Taysibaati 'Agreeable'. Would they then, have faith in falsehood, and conceal the facts, what they know to be the facts by The Source, ALLAH'S grace?

73) And they slave for, from besides The Source, ALLAH that which does not Yamliku 'Possess' for them any Rizqaan 'Provision', from Al Samaawaati 'The Skies', and Al Ardi 'The Planet (Qi/Tiamat), Earth' anything; and they are not able.

Don't Strike Likenesses For The Source Knows-Likenesses Between The Owned Slave And One Who Is Provided By The Anunnaqi, And A Dumb Servant And His Master

74) So don't Tadribuw 'Strike Forth' Al Amthaala 'The Likenesses' for Him. Surely, The Source, ALLAH knows and you don't Ta'lamuwn 'Know'.

75) The Source, ALLAH has Daraba 'Struck Forth' A Mathaan 'Likeness'. Mamluwkaan 'A Possessed, Owned Slave' who does not have power over anything; and whom, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Razaqnaahu 'Provided For

Him', from us the Hasanaan 'Best' Rizqaan 'Provision'. So he shares willingly from it; Sirraan 'Secretly' and Jahraan 'Openly'. Are they Yastawna 'Both Equal'? Al Hamdu 'All Gratitude' is due for Him. In fact, most of them do not know.

76) And The Source, ALLAH has Daraba 'Struck Forth' a Mathalaan 'Likeness' of Rajulayni 'Two Mortal Men'. One of them is Abkum 'Dumb', he does not have Qadr 'Power' over anything, and he is a burden on Mawlaahu 'His Ruler'. Wherever he directs him, he does not bring that which is good. Is he equal to him; and he who Ya-muru 'Commands' with justice, and he is on a narrow path of the ones who stand up straight?

77) And to Him (Him Not Us), is the Ghaybu 'Unseen' (things) of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ardi 'The Planet Qi, Earth' and the Amru 'Decision' of Al Saa'ati 'The Hour' (of judgment) is except like a Kalamhi 'Twinkling' of Al Basari 'A Sight (Eye)', or it is even nearer than that. Surely The Source, ALLAH has the Qadiyrun 'Power' over all things.

*The Source Made You To
Hear And See, So You Will
Be Grateful - Allah Made For
You Houses, And Cattle To
Carry Your Burden*

78) And The Source, ALLAH brought you forth from Ummahaatikum 'Your Mothers' Butuwni 'Stomachs'. You didn't have knowledge of anything and He (He Not We), made for you Al Sam'a 'The Inner Hearing' and Al Absaara 'The Inner Sight', and Al Af-idata 'The Inner Hearts', that perhaps you will be grateful.

79) Did not you see Al Tayri 'The Birds', ones who are Musakh-kharaatin 'Subjected' in the Jawwi 'Firmament' of Al Samaa-i 'The Heavenly Skies'. Nothing holds them except ALLAH. Surely, in that are signs for a kindred who are faithful.

80) And The Source, ALLAH made for you from your houses Sakanaan 'A Dwelling' and He (He Not We) made for you from Juluwdi 'Leathery, Skins' of Al An'aami 'The Cattles', Buwutaan 'Houses' that you can lightly carry the day of your departure; and the day of your raising (standing straight) and from Aswaafihaa 'Their Wool' and Awbaarihaa 'Their Fur', and Ash'aarihaa 'Their Hair', Athaa-thaan 'He Made Furnishings' and a Mataa'aan 'Temporary Provision' to a time.

81) And The Source, ALLAH provided for you all, from that which He (He Not We) Khalaaqa 'Created' shelters, and He made for you from Al Jibaali 'The

Mountains', Aknaanaan 'Places Of Refuge', and He made for you Saraabiyl 'Garments', to Taqiykum 'Protect You All' from Al Harra 'The Heat', and Saraabiyl 'Garments' to Taqiykum 'Protect your Ba'as 'Misery, Wretchedness'. Also, He completes His (His Not Our) grace upon you all; that perhaps you will Taslimuwn 'Surrender In Peace' (Become Muslims).

82) So if they turn away, it is on you (Muhammad) to Balaaghu 'Propagate The Mubiyn 'Clear Facts'.

83) They know the grace of The Source, ALLAH then they deny it, and most of them are concealers of what they knew to be the facts.

*Anunnaqi Raises A Watcher
From Every Nation - They
Also Sent Muhammad As A
Watcher And The Qur'aan
As An Explanation For
Everything - There's No
Need For Hadith*

84) And the day We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Nab'athu 'Raise Up (Back To Life)' from every Ummatin 'Nation' a Shahiydaan 'Watcher', then He does not give permission for those who concealed that which they knew to be the facts; and they don't blame themselves.

85) And when those who are in

a state of unjutness Ra-aa 'See' the aching pain, it doesn't become easier on them, and they will not be looked upon.

86) And when they saw those who Ashrakuw 'Associated Partners' with Shurakaa-ahum 'Their Partners', they said: "Our Rabb, 'Sustainer' all of these are Shurakaa-unaa 'Our Partners' whom we Naduw 'Used To Call Upon' (pray) from besides you, ALLAH. So you Alquw 'Lay Down' for them Al Qawl 'The Saying': "Surely, you are the Kaadhibuwn 'Liars'."

87) And they Alquw 'Offered' Al Salama 'The Surrendering Of Peace' to the Source, ALLAH on that day, and what they made up 'invented' strayed off from them.

88) Those who concealed that which they knew to be the facts and turned away from the path of The Source, ALLAH. We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Zidnaa 'Increased' for them a pain over the pain from the mischief they use to make.

89) And the day which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will Ba'atha 'Raise Up (Back To Life)' in every Ummatin 'Nation' a Shahiydaan 'Watcher' over them from (amongst) themselves, (to each nation was sent a prophet,) and We (Eloheem Anunnaqi) brought you (Muhammad) forth as a Shahiydaan 'Watcher' over

Haa-uwlaa-i 'These' and We (Eloheem Anunnaqi) have Nazala 'Sent Down' the scripture to you, (the Qur'aan) as Tibyaanaan 'An Explanation' for everything. (We don't need any Hadiyth or 'Traditions' from men), and a calmness and a Rahmatan 'Yielding' (mercy) and as good news for the Muslimiyn 'Peacemakers, Muslims Who Surrender In Peace'."

*The Source Commands
With Justice
And Giving
To Relatives*

90) Surely The Source, ALLAH, Ya'muru 'Commands' with justice and kindness and giving of Al Qurbaa 'The Near Relatives' and He (He Not We) Yanhaa 'Forbids' from Al Fahshaa-i 'Abomination' and Al Munkari 'Evilness' and Al Baghyi 'The Act Of Injustice'. He admonishes (warns) you, so that perhaps you will remember.

91) You fulfill the 'Ahdi 'Covenant' of The Source, ALLAH if you 'Ahadtum 'Have Covenanted'; and don't Tanquduw 'Violate, Break' Al Aymaana 'The Act Of Faith' after Tawkiyidhaa 'Her Confirmation', and indeed you all have made The Source, ALLAH a surety upon you all. Surely, The Source, ALLAH knows that which you are doing.

*Don't Take Your Faith As An
Entrance Of Disturbance
Between You - Don't Sell The
Covenant Of The Source For
A Small Price*

92) And don't be like (the women), who has broken (violated) 'Azlahaa 'Her Yarn' into untwisted strands after it has become Qawwatin 'Strong'. Take Iymaanakum 'Your Faiths' as a Dakhalan 'Entrance' (of disturbance) between you all. For an Ummah 'Nation,' Takuwna 'To Exist', she is more, (in number) than the other Ummatin 'Nations'. However, ALLAH Yabluwkum 'Tests You All', by way of it and He will Yubayyinanna 'Make It Clear' for you all on the Day Of Resurrection 'Qiyaamah' of what you were finding differences in it.

93) And if The Source, ALLAH had pleased to make you Waahidatan 'A Single' Ummatan 'Nation', but He (He Not We) leads astray into error whom He pleases and leads into calmness whomever he pleases; and you are going to be asked about that which you used to do.

94) And don't submit Iymaanakum 'Your Faith' as Dakhalaan 'An Entrance' (of disturbance) between you all. So the foot Tazilla 'Slips' after Thubuwtihaa 'Her Firmness' and you will taste the evil, (grief)

from having turned away from The Source, ALLAH'S path; and for you is a 'Aziymun 'Supreme', aching pain.

95) And don't Tashtaruw 'You Sell' the 'Ahdi 'Covenant' of The Source, ALLAH for a small Thamanaan 'Price'. However, in the possession of The Source, ALLAH, He is Best for you, if you but know.

Eloheem Rewards Those Who Are Patient - When Reciting The Qur'aan Seek Protection From Nakhsh

96) What is with you Yanfaduw 'Wastes Away, (depletes)', and what is with ALLAH Baaqin 'Endures', and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) shall reward those who Sabaruw 'Had Patience', We (Eloheem Anunnaqi) will reward them with the best of that which they were doing.

97) Whosoever, worked for Saalihaan 'Perfection' from Zakarin 'A Male' or A Unthaa 'A Second Part, Female' and he is Mu-minun 'Faithful', We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will make his life Tayyibatan 'Agreeable', which is a good life; and We, (the Anunnaqi) will reward them with the Ahsani 'Best' of rewards of that which they were doing.

98) So when Qaraa-ta 'You

Read' the Qur'aan, so seek refuge with The Source, ALLAH from Al Rajiym 'The Cursed' Shaytaan, (Also Called Haylal, Samael, Nakhsh), 'Satan, The Reptilian.'

99) Surely he, (the Devil) has no Sultaanun 'Authoritive Power' over those who are faithful and put their trust in their 'Rabb' who is 'Sustainer'.

100) However His, (Satan, the Reptilian's) Sultaan 'Authoritive Power' is over those who bring him close to them (lets the Devil, The Reptilian live with them); and those who by way of him, Mushrikuwn 'Associate Partners'.

When Eloheem Change The Signs, Meccans Call Muhammad An Inventor - Gabriel Came Down With Qur'aan

101) And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Badala 'Changed' Ayatin 'A Verse' in place of another Ayatin 'Verse' and ALLAH, alone knows best, that which He (He Not We) has sent down. They will say: "Surely you, (Muhammad) are Muftarin 'An Inventor' (making up the scriptures)." In fact, most of them don't know anything.

102) Say (Muhammad), Al Quduws 'The Holy' Ruwh 'Soul' (Eloheem Gabriel/Nusqu) has Nazala 'Sent Down' from your

Sustainer by way of the facts (beyond any doubt), in order to Yuthabbitu 'Make Firm, Strengthen' those who have faith (in all the other scriptures and tablets from before; Gilgamesh Epics, Enuma Elish, Atra Hasis, Etana, Nergal And Arishkegal, Descent Of Ishtar To The Underworld, The Secrets Of Adafa) and as a leading calmness and good news (the Qur'aan) to the Muslimiyn 'Peace Makers, Muslims.'

103) And indeed, We, ([We Not He] Eloheem) know that surely they say: "A (certain) Basharun 'Mortal Being In Skin' Yu'allimu 'Teaches' (the Qur'aan) to (Muhammad). The Lisanun 'Tongue (dialect)' of him who they are referring to, is of a A'jamiyyun 'Foreigner'; and this Lisanun 'Tongue' (the pure Qurayshan dialect) of Arabiyyun 'Arabic' (of the Qur'aan) is Mubiyn 'Clear'.

*An Aching Pain For Those
Who Don't Have Faith - Allah
Doesn't Lead Into Calmness
Those Who Conceal The Facts*

104) Surely, those who don't have faith in The Source, ALLAH'S verse; The Source, ALLAH will not lead them into calmness, and for them is an aching pain.

105) However, those who don't have faith make up the lie

'falsehood' with the Aayaat 'Verses' of The Source, ALLAH and these are they, who are Al Kaadhibuwn 'The Liars'.

106) Anyone who concealed that which he knew to be the facts, in The Source, ALLAH after he (pronounces) his faith, except he who's Akriha 'Hated' and his heart Mutha-inun 'Rests, (Is Content)' with faith; but those who Sharaha 'Expand' their Sadraan 'Chest' in concealing that which they knew to be the facts; then on them is a Ghadabun 'Wrath' from The Source, ALLAH and for them is a 'Aziymun 'Supreme' pain.

107) That is because they preferred the Hayaat 'Life' of the Dunyaa 'Physical World' over Al 'Aakhirat 'The End'; and The Source, ALLAH does not lead into calmness the kindred who conceal what they know to be the facts.

108) These are those who ALLAH has Tabaa 'Stamped' (an impression) On Quluwbihi 'Their Hearts' And Sam'ilihim 'Their Inner Hearing' And Absaarih 'Their Inner Sights,' and these are Al Ghaafiluwn 'The Unaware Ones'.

109) No Doubt in the end, they are the losers.

110) Then surely your Rabb, who is 'Sustainer,' is for those who Haajaruw 'Migrated', from afterwards, they were Futinuwn 'Seduced', then Jaahaduwn 'They

Struggled' and Sabaruw 'Had Patience'. Surely, your Sustainer afterwards is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

111) On the day every Nafsin 'Person' comes Tujaadilu 'Disputing' for Nafsihaa 'Itself', and taking in full measure what every Nafsin 'Person' did, and they will not be the ones who are treated unjustly.

112) And The Source, ALLAH Daraba 'Struck Forth' a Mathalaan 'Likeness' of a Qaryatan 'Town', it was secured and content; Rizquhaa 'Her Provision' is abundantly coming to her from all places. So it concealed what it knew to be the facts with ALLAH'S grace, so ALLAH let her taste of Jaw'i 'Hunger' and Khayfi 'Fear' as a Libaasa 'Garment' from that which they used to do.

113) And indeed came to them a Rasuwl, 'One Sent' Minhum 'From (Amongst) Them'. So they lied on him, so the pain took them and they are the ones who are unjust.

*Eat Of The Lawful Food -
Unlawful For You Are The
Dead, The Blood And Flesh
Of The Pig*

114) So you eat from that which The Source, ALLAH has Razaqa 'Provided' you Halaal 'Lawful', Tayyib 'Agreeable' (food) and be grateful with the grace of

ALLAH, if He (He Not We) is whom you Ta'buduwn 'Slave For'.

115) He has Haraama 'Made Unlawful' on you; Al May-tata 'The Dead (Flesh)' and the Dam 'Blood' and Lahma Al Khinziyr 'The Pigs Flesh,' and what was Uhila 'Invoked' with it besides ALLAH'S name. So who is driven neither Baaghin 'Desiring', and neither transgressing; then surely, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

116) And don't proclaim that which Alsinatukum 'Your Tongues' describe the lie 'falsehood.' This is Halaalun 'Lawful' and this is Haraamun 'Forbidden' for you to make up falsehood against The Source, ALLAH. Surely, those who make up lies, falsehood against The Source, they will not be prosperous."

117) A brief temporary enjoyment, and for them is an aching pain.

*Those Of Al Yahuwd Are
Unjust - Your
Rabb Is Forgiving Most
Merciful - Abrawhawm Was
Upright And Devoted To The
Source*

118) And on those who are of the tribe of Al Yahuwd, 'Judah', We, ([We Not He] Eloheem,

Anunnaqi) Harramnaa 'Forbid' that which We (Eloheem Anunnaqi) Qasasnaa 'Narrated' on you, (Muhammad) from before; but they themselves, are ones in the state of unjustness.

119) Then surely your Rabb, 'Sustainer' is for those who have done evil by way of ignorance, then they repented from after that and Aslahuw 'Perfected' themselves. Surely your Rabb, 'Sustainer/Master' Is Ghafuwrūn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

120) Surely Abrawhawm was a Ummatann 'Nation' (Hebrews) Qaanitaan 'Devoted' to Him (Him Not We), a Haniyfan 'Upright One' and he was not from Al Mushrikiyn 'Those Who Associated Partners (with other deities; The Babylonians Of Nimrod's/Marar's Time).

121) He is grateful for His (His Not Our) graces. Ijtabaahu 'He Has Chosen Him' (Abrawhawm) and Hadaahu 'Lead Him Into Calmness' to Siraat Al Mustaqiym 'The Narrow Path Of Those Who Stand Up Straight- (The Newsbearers).'

122) And We, ([We Not Me] Eloheem, Anunnaqi) gave him, (Abrawhawm) that which is Hasanatan 'Best' in the physical world; and surely he, (Abrawhawm) in the End, is amongst Al Saalihiyn 'The Perfectionists'.

Muhammad, You Are To

*Follow Millat Abrawhawm-
Sabbath Made Into Effect, For
Those Who Differed*

123) Then We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Awhaynaa, Wahy/Weh 'Inspired' to you, (Muhammad), that you are to follow the Millatu 'Rites' Of Abrawhawm, Haniyfaan 'the Upright One,' (Muhammad and all Muslims are to be Hebrews like Abrawhawm) and He, (Abrawhawm) was not of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate As Partners' (other deities, like some of the Enosites of Nimrod's/Marar's time).

124) Surely, Al Sabtu 'The Sabbath' was made on those who Akhtalafuw 'Differed' in it (muslims are also to keep the Hebrew Sabbath); and surely your Rabb, who is 'Sustainer' will use wisdom between them on the Day of Ressurrection, 'Standing' in which they were Yakhtalifuwn 'Differing' in.

125) (Muhammad), you are to call upon your Rabb, 'Masters/Sustainers' Sabiyl 'Path', (Millatu Abrawhawm), by way of Al Hikmati 'The Wisdom' (the book given to Luemmiym, the Midianite) and by the best Al Maw'izati 'Exhortation' (teaching - Hebrew teachings). And dispute with them with that which is best (Hebrew Teachings), surely (Muhammad), your Rabb, he

knows that which has gone astray from his path, and he knows who are being lead into calmness, (the real Islamic Hebrews 'Peace Makers' who follow Millatu 'Rites' of Abrawhawm. They Follow Abrawhawm's Way Of Life).

*If You Are Supplanted, So
Supplant In The
Same Manner You Were
Supplanted - Allah Is
With Those Who
Tremble At Mentioning Of His
Name*

126) And if 'Aaqabtum 'You All Are Supplanted', (as Jacob was) so 'Aaqibuw 'Supplant', in the same manner that which you were Uwqib 'Supplanted' by (the Ishmaelite will receive the Israelites covenant if they follow Abrawhawm, become Islamic Hebrews). And if you Sabartum 'Were Patient', it is indeed best for the Saabiriyn 'Patient Ones'.

127) And have patience, (Muhammad) and what is your patience, except by way of The Source, ALLAH; and don't Tahzan 'Grieve' on them and don't be in distress from (Israelites) that which they Yamkuruwn 'Were Plotting'.

128) Surely, ALLAH is with those who Ataquw 'Tremble At The Mention', and they are doers of that which is best.

Sudlqa Allahu 'El Aqiym

Chapter Seventy-One

Revealed In The Year 617 a.d.

*Noach
(Rest Down Upon, To Weep)
Original And Current Order,
Chapter 71*

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Eloheem Anunnaqi Sent Noach
To The Children Of Qayin
- He Wants Them To Slave
For Allah - He Will Forgive
You For Your Zunuwb
- Noach Prayed For His
Nation, Days And Shadow
Hour Periods - His Nation
Only Turned And Walked
Away - They Mocked The
Face Veil Worn By Noach's
Women - Noach Even Spoke
To Them In Secret - El Rabb
Is Ghaffaar*

71 Surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) sent Noach, to his Qawm, 'Kindred' - (the children of Qayin). To Anzir 'Warn' your nation (Muhammad) before the aching pain comes upon them.

2) So he, (Noach) said: "Oh my kindred, surely I am a Mubiyn 'Clear' Nadhiyrun 'Warner' for you (to make you see things clearly)."

3) That you all are to slave for 'The Source,' ALLAH and tremble at the mentioning, and Atiy'uwni 'Be Obedient To Me.'

4) He (He Not We), will forgive you for all your Zunuwb, 'Faults' and He Yu'akhir 'Will Respite' you to a predetermined time - (Day Of Judgment). For surely, The Source, ALLAH is He who predetermined 'Izza 'When' it comes, or be put off, for another 'Ajai 'Time, if you only had the knowledge (to see this).

5) He, (Noach), said: "My Rabb 'Sustainer', I Da'awtu 'Prayed For' my kindred, Nahaar 'Daytime', and Layl, 'Shadow Hour Period.'

6) So it, (Noach's prayer) did not Yazid 'Increase', their (Noach's) kindred's faith; they only Firaar, 'Turned And Walked Away.'

7) And surely whenever I, (Noach) prayed for them, (the wicked Enosites of Noach's time) that you may forgive them, (the offspring of Qayin,) they put Asaabi'ahum 'Their Fingers' in Adhaanihim 'Their Ears'; And they, (the wicked Enosites of Noach's time) Astagh-shuw 'Pulled' Thiyaabahum 'Their Garments' (over their faces to make a mockery of the face veil worn by his, Noach's women Na'amah, Mubiynah and Waala and his son's wives: Haliyma the wife of Ham, Faatin the wife of

Shem and 'Ifat the wife of Yafeth,) and they were Astakbaar, 'Big-Chested, Pouting With Pride.'

8) Then surely I, (Noach) prayed even Jihaar 'Louder', (and in the open to be seen and heard by my nation).

9) Then surely I, (Noach) A'alantu 'Announced It' to them (the seed of Qayin) and I, (Noach) even spoke to them Israaraan 'In Secret' (from tent to tent).

10) So then I, (Noach) said: "Ask forgiveness (the seed of Qayin) from your Rabb, 'Sustainer/Master'; surely it is He (He Not We) who is Ghaffaar 'Forgiving.'

*Allah Will Send Down
Midraar, From The Skies -
The Source Gave You Much
Wealth And Sons - Noach,
Asks, What's Wrong With
Them? - The Source Khuliq
The Enosites And The 200
Fallen Eloheem, In Atwaar
- The Source Made The Moon
As A Nuwr, And The Sun As
A Lamp - He Even Built
Qayin's Body From Tlamat
- Allah Even Made The Ard As
A Bisaat, For Qayin's Seed
- Noach's Plead, That They,
200 Fallen Anunnaqi Will Not
Have Any Dayyaar In Qi*

11) He (He Not We), will send Al Samaa-i 'The Heavenly Skies'

(filled with clouds) to bring Midraar, 'Much Rain,' - (The Flood).

12) And He (He Not We), gave you (the children of Qayin) much Mawaalin 'Wealth' (the rich city of Nod) and Sons 'Baniyn' and made for you all Jannaat 'Gardens' and made for you Anhaar 'Rivers'.

13) What is wrong with you, (the seed of Qayin), that you don't want to return respect to Him (Him Not Us)?

14) And He (He Not We), has certainly Khalaq 'Created' you all - (Enosites and the 200 Fallen Eloheem, Anunnaqi) in Atwaar, 'Regular Stages (Cycles).'

15) Can't you see how The Source, ALLAH Khalafa 'Created' the Sab'a 'Seven' Samaawaat, 'Skies,' (the planes: 7 Spheres: 1. Troposphere 2. Stratosphere 3. Mesosphere 4. Thermosphere 5. Exosphere 6. Heterosphere 7. Homosphere) in Tibaaq 'Levels?'

16) And He (He Not We) Ja'ala 'Made', Al Qamar 'The Moon' Fiyhinna 'In It' (The Shadow Hour Period's) as a Nuwr 'Light' and He made the Sun to (shine like) a Siraaj, 'Lamp.'

17) And The Source, ALLAH Anbatakum 'Built You All', (Qayin's seed's bodies) from Al Ard 'The Planet Earth/Tiamat' like a Nabaat 'Plant, (Germination).'

18) Then He (He Not We),

Yu'iydukum 'Returns You All', (Qayin's seed) to it (the ground) and Yukhrijukum 'Brings You All Forth' (from it), Ikhraajaan 'Renewed'.

19) And The Source, ALLAH made Al Ard 'The Planet Earth', for you, (Qayin's seed) in Bisaat 'Landscapes'.

20) So that you, (Qayin's seed) may make spacious paths in it.

*The Children Of Qayin
Followed King Zuhak - They
Schemed Every Beat - They
Don't Want To Abandon Their
Sources, As Wadd, Sudd Or
Nasr - They Were Drowned,
Because Of What They Did -
They Will Cause The Seed Of
Seth To Go Astray - Noah,
Asks Forgiveness For Himself.
His Father Lamech, And
Mother, Ramtulah*

21) Noah said: "Oh, my Sustainer, who is Rabb, surely, they 'Asawniy 'Rebel Against Me'; and they followed him, (Zuhak, king of the Hurrians), who is lost; and is only corrupted by Maaluhu 'His Wealth' And Waladuhu 'His Children'.

22) And they have Makaruw 'Schemed' a Kubbaaraan 'Big' scheme.

23) And they tell each other, "Don't Tadharuwanna 'Abandon' AALIHATAKUM (your ALLAHS) 'Sources', nor Wadd

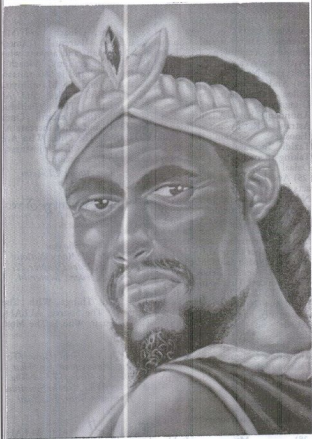


Figure 149
Zuhak, King Of The Hurrians

(A Man Deity) or Suwa'a (A Woman Deity) and don't abandon Yaghuwth (A Lion Deity) or Ya'uwq (A Horse Deity) nor Nasr (An Eagle).

24) And indeed, they, (the 200 Fallen Nephileem, who are Disagreeable Eloheem, Anunnaqi) have Adalluw 'Led Astray' Kathiyyaan 'Many' (Enosites). So don't let them Tazidi 'Increase' in (followers. Taking them, Qayin's seed into) Dalaal 'Error.'

25) And because of their wrong acts they, (the Enosites of Noach's time) did, they were Ughriquw 'Drowned', (and) then (made to) enter the Fire, 'Naar' of Hell, so they didn't find for themselves any Aiders, 'Ansaar' other than ALLAH.

26) And Noach said: "My Rabb, don't let the Kaafiriyn, 'Ones Who Conceal That Which They Know To Be The Facts,' (the Jinns; the 200 Fallen Eloheem, Anunnaqi) have any Dayyaar, 'Abode' on the planet 'Qi,' Earth."

27) If you were to leave them, (the Jinns, Cherubeems: the 200 Fallen Eloheem) causing your 'Ibaad' Slaves, (the seed of Seth) to go astray (into error), and they will Yaliduw 'Give Birth' to none but Faaajiraan 'Wicked' Kaffaaraan 'Concealers Of The Facts'.

28) My Rabb,
'Sustainer/Master' ALLAH,

forgive me, (Noach) and My Waalidayya 'Parents' (Lamech and Kamiylah) and anyone who Dakhala 'Enters' my, (Noach's) Bayt, 'Home' and is Mu-minaan 'Faithful'; and to Mu-miniyna 'The Faithful Males' and Al Mu-minaati 'The Faithful Women', (the Peaceful Ones 'Muslims') and don't increase Al Zaalimiyn, 'The Ones Who Are In A State Of Unjustness,' Execpt In Destruction.

Sudlqa Allahu El Azim

Chapter Seventy-Two

Revealed In The Year 620 A.D. Except For Verse

28 And 29

Abrawhawm

*(Father Of Many Nations)
Original Order Chapter 72;
Wrong Order Chapter 14*

Begin All Things With The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Qur'aan Sent Down To
You, Muhammad So That
You May Bring Forth The
Enosites Who Are In Spiritual
Darkness, Into The Light*

72 () Alif: ALLAH,
Laam: Shadow Hour of Power,
Raa: Rasuwl 'Ones Sent' from



Figure 150
Wadd, A Man Deity

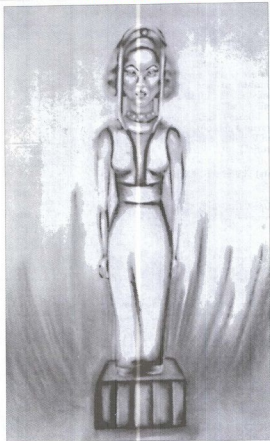


Figure 151
Suwa'a, A Woman Deity

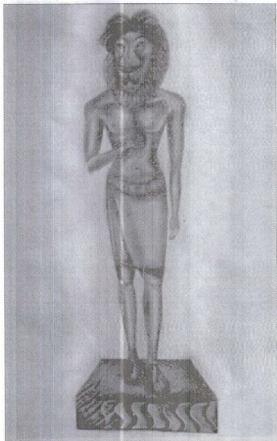


Figure 152
Yaqhuwth, A Lion Deity
www.Nuwaupuinc.com

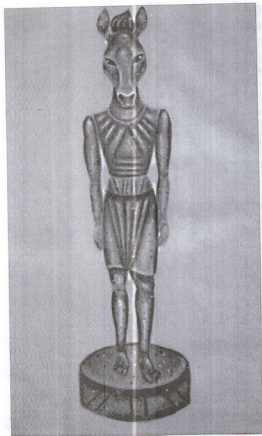


Figure 153
Ya'uwg, A Horse Deity



Figure 154
Nasr, An Eagle Deity

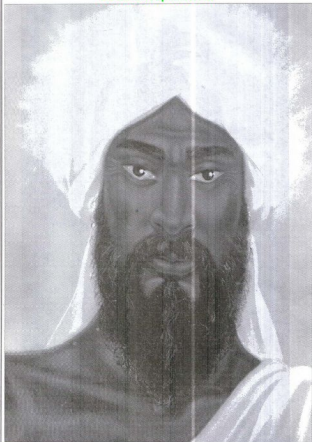


Figure 155
Abrawhawm (Abraham), Father Of Many Nations

The Source, ALLAH, A scripture, the Qur'aan which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down to you, (Muhammad) to bring forth the Enosites from Zulumaati 'Unjustness' (Spiritual Darkness) into Al Nuwr 'The Light', by their Rabb's, Idhn 'Permission', to the path of Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hamiyd 'The One Worthy Of Gratitude'.

2) It Is ALLAH, whom to him belongs what is in Al Samaawaati 'The Skies (Firmaments)' and what is in Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat, Earth'; and woe to those who conceal that which they know to be the facts from the Shadiyd 'Forceful' pain.

3) Those who Yastahibbun 'Like' Al Hayawat 'The Life Of Al Dunyaa 'the Physical World' Ala 'On, (Over)' the End and they turn away from the path of The Source, ALLAH and they seek 'Iwajaan 'Crookedness' in it. These are those who are in a far state of Zalaalin 'Error'."

The Anunnaqi Sent, Ones Sent Using The Tongue Of Those Nations - Mosheh Sent To The Jacobites

4) And We, ([We Not He] Anunnaqi) did not send from a Rasuwl 'One Sent' except one who uses Lisaan 'The Tongue' (dialect) of Qawmihi 'His

Kindred', in order to make things Bayyina 'Clear' Lahum 'For Them'; so The Source, ALLAH Yudillu 'Leads Astray' whom He (He Not We) pleases and He Yahdi 'Calms' whom He pleases; and He is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Ilakiym 'The Wise'.

5) And indeed, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent Mosheh with Our, ([Our Not My] Anunnaqis) Aayaat 'Verses' to bring forth your kindred (the Jacobites/Israelites) from Al Zulumaat 'the State Of Unjustness' (Spiritual Darkness) to Al Nuwr 'the Light', and He, (Mosheh), is to make them remember the days of The Source, ALLAH; surely, in that are Ayaat 'Verses', for every Sabbaarin 'Patient', (and) Shakuwrin 'Grateful One'.

6) And when Mosheh, said to his kindred (Israelites/Jacobites): "You are to remember the 'Ni'mat' Grace of ALLAH upon you, when He (He Not We), Anjaakum 'Delivered' you (children of Israel/Jacob) from the Aali 'Family' of Fir'own (Ramses II), he tormented you with an evil pain and Yudhabbihuwn 'Slaughtered' Abnaa-akum 'Your Sons', and they let Nisaa-akum 'Your Enosite Women' live; and in that is a 'Aziym 'Supreme' Balaa-un 'Trial' from your Rabb.

7) And when you call your Rabb 'Master' if you, (Israelites)

are grateful, I shall increase on you all more; and if you conceal what you know to be the facts, surely my aching pain is forceful."

8) And Mosheh said: "If you, (tribe of Israel), conceal what you know to be the facts, you and who is in the planet Qi 'Earth' together; So surely, ALLAH is the Ghaniyyu 'Independent', the Hamiydun 'One Worthy Of Gratitude'.

*Prophecies Of Nations Of
Enosites Who Came Before
You, Meccans - Their Rusul
Question The Source, Whether
He Is The Creator Of The
Skies And Qi*

9) Hasn't there come to you all, (Enosites of Mecca), the Nabauw 'Prophecies' of those who were before you? The kindred of Noach (evil cities of Nod, also called Saturn, and Abbadon and Enoch), and 'Ad and Thamud and those who came after them. No one knows them except The Source, ALLAH. Their Rusul 'Ones Sent' came to them with Bayyinaat 'Clear Evidence', so they will only put their hands over their, (the apostles) mouths, (to try and stop them from teaching. Meaning, they will try to stop the facts;) and they, (this future kindred) said: "Surely, we have concealed that which we know to be the facts by which

Arsaltum 'You'll Sent' with it (the newbearers of old), and surely we are in 'Shakkin 'Distrust' of that which you, (this One Sent in the last days), are calling us to - (this kindred in the last days says, "We don't know if we should follow you, or not), A Hopeless Doubt."

*They Tell Muhammad, He Is
A Bashar Mortal In Skin Just
Like Them - The Anunnaqi
Will Destroy The Ones In A
State Of Unjustness*

10) Rusuwluhum 'Their Ones Sent' said: "Is there doubt in The Source, ALLAH, Faatir 'The Splitter Of The Atom' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth/Qi.' He calls you to forgive you from your faults and He delays, (postpones) you to a predetermined time. They said: "In 'If Antum 'You All' are except A Bashar 'Mortal In Skin' Mithilunaa 'Like Us'. You want to turn us away from what Abaa-unaa 'Our Fathers' used to Ya'budu 'Slave For', so bring us a Mubiyn 'Clear' Sultaanin 'Authoritive Power'."

11) Rusuluhum 'Their Ones Sent' said to them: "In 'If Nahnu 'We' Are Illa 'Except' Basharun 'Mortal Beings In Skin' Mithlukum 'Like You'll', and The Source, ALLAH Uamunnu 'Reproaches Manna'

on whomever He (He Not We) pleases from His (His Not Our) slaves - (Israelites) and it was not for us to bring to you with an authority except by the permission of The Source, ALLAH; and the faithful ones, so they entrust 'Alaa 'On' ALLAH."

12) And what is for us that we should not entrust on The Source, ALLAH? And indeed He leads us into calmness in our paths and we will have patience on whatever harm - damage you should inflict upon us; and so Al Mutawak-kiluna 'The Entrustees' Yatawakal 'Puts Their Trust' on The Source, ALLAH.

13) And those who concealed what they knew to be the facts, said to Rusulihim 'Their Rusul': "We shall get you out from Ardinaa 'Our (Part Of The) Earth', or you shall return to Millatinaa 'Our Rites'." So their Rabb 'Master,' inspired to them that We, ([We Not He] Anunnaqi) shall destroy Al Zaalimiyn 'The Ones In A State Of Unjustness'.

14) And We, ([We Not He] Eloheem) shall make you Nuskin 'Dwell' in Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth' from after them. That is for who Khaafa 'Fears' Maqaamiy 'My Act Of Standing Straight', and Khaafa 'Fears' Wa'iydi 'My Promises' (threats).

They Sought Help From The Source

15) And they opened themselves up, (sought help) and every Stubborn Jabbaarin '(Ghibbor, Jabbaar), Majestic' was Khaaba 'Disappointed'.

16) From Waraa-ihii 'Behind Him' is Hell 'Jahannam' and he shall drink of the Maa-in 'Water' of Sadiyd 'Pus'.

17) He shall gulp it and not be able to swallow it; and death will come to him from all Makaanin 'Places', and he will not die, and from behind him is Ghaliydhun 'Rough' pain.

18) Like those who concealed what they knew to be the facts by their Rabb, their works are like Ramaadi 'Ashes'. They will be blown intensely by Al Riih 'The Wind' in a violent day. They don't have power with that which they earned, over things. This is it the Ba'iyd 'Far' state of Al Dalaalun 'The Astrayness, Into Error'.

Allah Is He Who Created The Skies And The Earth - Nakhsh, Al Shaytaan Admits He Has No Authority Over Enosites

19) Did you not see that ALLAH Khalaq 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth' by way of the fact (beyond doubt)?

Surely, if He (He Not We) pleases, Yudh-hibukum 'He Can Make You Go', and Yaa-ti 'Come' with a Jadyd 'New' Khalqin 'Creation' (in your place just as before, re-plenish the earth).

20) And that is not on The Source, ALLAH Bi-'Aziyz 'With Might' (It is not something difficult for The Source to do).

21) And Barazuw 'They Go Forth On A Plain (to fight) Lil-lahi 'For Him' together, so Al Du'afaa-uw 'The Weak Ones' said to those who were Astakbaruw 'Big-Chested, Pouting With Pride': "Surely, we are following you all." So are you all, ones who will avail anything for us, from the pain of The Source, ALLAH?" They said: "Even if The Source, ALLAH has Hadaanaa 'Lead Us Into Calmness'; verily He (He Not We) Will lead you all into calmness. Sawaa-un 'It Is Equal' on us Ajazi'naa 'Whether We Are Impatient', or Sabarnaa 'Whether We Are Patient', there is no Mahiysin 'Escape' for us?"

22) And Shaytaan 'Satan, the Reptilian' said: "When Al Amru 'The Command' was Qudiya 'Decreed', surely The Source, ALLAH promised you all, a true promise (the return to the Enclosed Garden of Delight); and I, (the Devil, the Reptilian) Wa'adtukum 'Promised You All', so Akhlaftukum 'I Failed

You All' (to keep my promise to you), and it was not for me over you all, to be a Sultaan 'Authoritative Power' except that I, (Satan the Reptilian) Da'awtukum 'Called You All'. So Astajibtum 'You All Answered' Liy 'Me'. (He The Devil calls Enosites to his way and they just come to him to live in his image - The Canaanites Image). So don't Talmuwniy 'Blame Me', (Satan, the Reptilian) and Lawmuw 'Blame' Anfusakum 'Your Owselves'. I, (Satan), cannot (listen) to you'lls cries, and you all cannot (listen) to my cries. I (Satan) Kafartu 'Concealed What I Knew To Be The Facts', of what Ashraktumuwni 'You Associated Me (Satan)', with (The Source) from before - (making Me your Source). Surely, Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones', for them (those who follow me), is an aching pain."

*Those Who Perfect
Themselves, They Will Enter
Al Jannat, And Their
Salutation Will Be Salaam -
Hell Is For The Kaafstreen*

23) And those who are faithful and try to Saalihaat 'Perfect Themselves', Adkhila 'Enter' Jannaatin 'Gardens' flowing beneath them are Anhaaru 'Rivers' (Flowing Rivers. A Physical Place). They shall be in

them eternally, by Idhni 'Permission' of their Rabb; Tahiyyatuhum 'Their Salutation' in it (the garden of delight), is Salaamun 'Peace'.

24) Did you not see how The Source, ALLAH Daraba 'Struck Forth' Mathalaan 'A Likeness', a Tayyibatan 'Agreeable' Kalimatan 'Word' like a Tayyibatin 'Agreeable' Shajaratin 'Tree'. Asluhaa 'Her Roots' Thaabitun 'Are Firm' and her branches are in Al Samaa-i 'The Skies' (Branches In The Sky. This Is Another World).

25) She gives her fruits everytime by Idhni 'The Permission' of Rabbihaa 'Her Sustainer', and The Source, ALLAH Yadribu 'Strikes' Al Amthaala 'The Likenesses' for the Naas/Enosites, so that perhaps they will remember.

26) And the Mathlu 'Likeness', of a Khabiythatin 'Wicked' Kalimatin 'Word' is like a Khabiythat 'Wicked' tree, Ajtuthat 'Uprooted' from Fawqa 'Above' the Earth; there is not for her a Qaraarin 'Habitation'.

27) The Source, ALLAH Yuthabbitu 'Makes Firm' those who have faith by Al Thaabit 'The Firm' Qawl 'Saying' (all the tablets and scriptures in this life of the physical world. Living our life according to all the laws of all the tablets and scriptures), in the physical world and in the end; and The Source, ALLAH

leads astray those who are in a state of unjustness, and The Source, ALLAH does what he pleases.

28) Didn't you see to those you exchanged the grace of The Source, ALLAH to concealing that which they knew to be the facts, and Ahalluw 'They Halted' their kindred to the Daara 'Abode' of Al Bawaari 'Perdition (Hell)'?

29) Hell. They (the concealers of the facts) will be burnt in it. And a miserable wretched habitation.

30) And they made for him (the Source), Andaadan 'Counterparts', to go astray (into error) from Sahiylihi 'His Path'. Say: "Enjoy temporary pleasures, so surely Masiyrakum 'Your Destiny' is to the Fire."

31) Say: To my slaves, those who have faith, Yuqiymuw 'Stand Up' to Salaawati 'Salutation As Worship' and share willingly from that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnagi) have Razaquunahum 'Provided Them' Sirraan 'Secretly' - (give charity and don't brag about it); and Alaaniyatan 'Publicly' - (do things to be seen) from before that day - (the Last Day) comes; there will be no Bay'un 'Selling' in it, and no Khilaalun 'friendships'.

The Source Created The Skies

And Earth, And Subjected The Moon And The Sun For You

32) It Is 'The Source, ALLAH who Khalaq 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi', and Anzala 'Sent Down' water from Al Samaa-i 'The Sky'; and brought forth by way of it from Al Thamaraati 'The Fruits' as a Rizqaan 'Provision' for you, and He (He Not We) Sakh-khara 'Subjected' for you, Al Fulk 'The Craft' to run about in Al Bahri 'The Seas' by Amrihi 'His Command', and He Sakh-khara 'Subjected' Al Anhaar 'The Rivers' for you.

33) And He (He Not We), Sakh-kara 'Subjected' for you Al Shams 'The Sun' and Al Qamar 'The Moon', Daaibayni 'Pursuing Their Respective Services' and He, Sakh-khara 'Subjected' for you, Al Layla 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaara 'The Daytime'.

34) And He (He Not We), gave you of everything what you ask of Him, and if you Ta'udduw 'Count' The Source, ALLAH's grace, you will not be able to Tahusirw 'Calculate' it. Surely, the Enosites are in a state of unjustness and of those who are Kaffar, 'Concealing What They Know To Be The Facts.'

Abrawhawm Asking His Rabb To Make Mecca Secure

35) And when Abrawhawm said: "Rabb make this Balada 'Land' - (Mecca) faithfully (secured), and keep me away and Baniyya 'My Sons' An 'In Order That' we (don't) Na'buda 'Slave', Al Asnaama 'The Idols'."

36) My Sustainer 'Rabb', surely they led many of the enosites astrayed into error. So who follows me, so he is from me and who 'Asaaniy 'Disobeys Me', so surely you are Ghafuwrn 'Forgiving', The Rahiymun 'Most Merciful'.

37) Our Rabb, surely I, (Abrawhawm) Askantu 'Have Settled' from my offspring - (Yishmael, and the Yishmaelites) in a valley without Zar-in 'Cultivation' near Baytika 'Your Muharram 'Sacred' House' - (the Kaaba, 'The Cube.) Our Rabb, that they may stand up to the salutation as worship; so You make the Afidatan 'Inner Hearts' of some of the Enosites, yearn to them and Arzaqum 'Provided Them' from the fruit that they may be grateful.

38) Our Master/Sustainer who is Rabb! Surely You (You Not We) know that which we hide and what we make public, and nothing can be hidden from ALLAH, The Source, in the planet Tiamat and in Al Samaa-i 'The Heavenly Skies' - (Firmaments).

Blessed Is He Who Gave Unto

*Abrawhawm In Old Age,
Yishmael And Yitschaq-
Abrawhawm Prays To Make
Him And His Offspring Stand
Up In Salutation As Worship*

39) Al Hamdu 'All Gratitude Is Due' to Him (Him Not We) who has given unto me (Abrawhawm) on Al Kibari 'My Old Age' Yishmael and Yitschaq. Surely my Master, who Rabb, is The Samiy'u 'Hearer' of Al Du'aa-i 'The Calling' (Prayer)."

40) O My Rabb! Make me, (Abrawhawm) one who stands up to Al Salaat 'Salutation As Worship', and from Dhurriyyatiy 'My Offspring' - (the Ishmaelites Israelites, Midianites). Our Rabb, and accept my, (Abrawhawm's) calling (prayer).

41) "Our Master, forgive me, and Waalidayya 'My Parents', and the Mu'miniyna 'Faithful Ones', on the day which stands Al Hisaabu 'The Reckoning'."

*Those Running With Their
Heads Erect, Their Afidah
Will Be Void - The Source Is
The Mighty Possessor Of
Vengeance*

42) Do not reckon that the source, ALLAH is negligent of what those who are in a state of unjustness does. When He (He Not We) delays them, for the day the Absaar 'Sights' (eyes)

Tashkhasu 'Stares' in it.

43) Those running forth, with their heads erect, their eyesight will not be returned to them, and their Afidah 'Inner Hearts' will be (void), Hawaa-un 'Desiring Divine Love'.

44) And warn the Enosites of a day when great pain will come to them, so those who are unjust will say: "Our Rabb, who is Master! Respite us for a time that is Qariyb 'Near', that we may Nujib 'Respond' to Da'wataka 'Your Call' and Nattabi'a 'We May Follow' Al Rusula 'The Ones Sent'." Were you not of those who Aqsam 'Swore' from before, that you would not Zawaal 'Pass Away'?

45) And Sakantum 'You Dwelled' in Masaakin 'Dwellings' of those who put their own selves into a state of unjustness; and it was made Bayana 'Clear' for you, how We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have done with them, and We, (The Eloheem, Anunnaqi) Daraba 'Struck Forth' for you Al Amthaala 'The Likenesses'.

46) And certainly they Makaruw 'Schemed', and Makrahum 'Their Scheme' and their plots are in the possession of The Source, ALLAH and as if their plot can quake Al Jibaal 'The Mountains'.

47) So do not reckon that ALLAH is who takes back His

(His Not Our) promise of Rusulahu 'His Ones sent'? Surely The Source, ALLAH is 'Aziyz 'Mighty', Possessor of the Intiqaam 'Vengeance'.

Qi 'Will Be Changed - The Guilty Ones' Garments Shall Be Of Charcoal, Tar And A Thin Veil Of Fire Shall Cover Their Faces

48) On the day when the planet Qi 'Earth' will be Badala 'Changed' to Ghayra 'Other Than' Al Ard 'The Earth- (bring in a new Tiamat/Qi), and Al Samaawaati 'The Skies,' and all will come forth for Him (Him Not Us), Al Waahidi 'The One', Al Qahhaari 'The Dominant'.

49) And you see Al Mujrimiyn 'The Guilty Ones' on that day bound by links together in chains.

50) Their Siraabiyl 'Garments' shall be of Qatiraanin 'Charcoal, Tar' and fire shall Taghshaa 'Cover' their faces.

The Source, Allah Is Swift In Reckoning - This Is A Warning To Enosites - The Source Is Alone

51) For The Source, ALLAH to recompense every person as to that which they earned; surely The Source, ALLAH is swift in reckoning.

52) This is a Balaaghun

'Propagation Of Facts', (message) for the Enosites in order for them to be warned by it, and that they may know that He (He Not We), is Waahidun 'One' ILAAHUN 'ALLAH', (Source), and to remind the Uuluw 'First Ones' (Who Passes Through) Al Albaab 'The Door' (of the Ancient Mystic Order Of Zodoq).

Sudika Allahu El Azim

Chapter Seventy-Three

Revealed In The Year 616-617 A.D.

*Al Anbiyaa
(The Newsbearers)
Original Order Chapter 73;
Wrong Order Chapter 21*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Reckoning Draws Near
For The Enosites -
Yahuwa Is The Hearer,
Knower - They Say That
The Qur'aan
Is Invented*

73 Their reckoning draws near for the Enosites/Naas, and they are turning away in heed.

2) There does not come unto

them a reminder 'Hadiyth' Tale from their Rabb 'Sustainer,' (which is new) except they listen to it, while they (continue) to play (around the Hadiyth. They listen to talks about stories of the Qur'aan).

3) With hearts preoccupied, and those who are in a state of unjustness confer in Sarruw 'Secrecy' (saying:) "Is this Illaa 'Except' a Bashar 'Mortal In Skin' like you all? Will you all go to Al Sihra 'The Magic' and you all Tubsiruw 'See (It)'?"

4) He said: "My Rabb knows Al Qawla 'The Saying (that which is spoken)' in Al Samaa-i 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth'. And He (He Not We) is Al Samiy-u 'The Hearer', Al 'Aliym 'The Knower'.

5) In fact, they say: "It (the Qur'aan) is nothing, but Ahlaamin 'Dreams'. In fact he, (Muhammad) Aftaraahu 'Invented It' (the Qur'aan). In fact it, (the Qur'aan) is only Shaa'irun 'Poetry', so then let him bring forth any Aayatin 'Verses' like those (verses) which Al Awwaluwn 'The First' Rusul 'Ones Sent' (before Muhammad received)."

The Ones Sent, Were Sent As Rijaalaan - Qur'aan Was Sent As A Leading Calmness

6) Not a town had faith of those which We, ([We Not He]

Eloheem, Anunnaqi) destroyed before them, (though We, Eloheem sent them signs:) then would they have faith?

7) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send before you, Illaa 'Except' Rijaalaan 'Mortal Men' whom Nuwhiy 'We, (Anunnaqi) Inspired' to them. So ask the Ahla 'Family (followers)' of Al Dhikri 'The Remembrance' if you don't know.

8) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not give them Jasad 'Bodies', that would not Ya-kuluwn 'Eat' Al Ta'aama 'Food', nor were they Khaalidiyn 'Eternal (Immortals)'.

9) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) fulfilled Al Wa'da 'The Promise' unto them. So We, (Anunnaqi) delivered them and whom We, (Eloheem) pleased, and We (Eloheem) destroyed Al Musrifiyn 'The Prodigals'.

10) Indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Anzal 'Sent Down' to you all a Scripture, (the Qur'aan) in which is Dhikrum 'Your Reminder'; don't you overstand this?"

How Many Communities Were Shattered By The Eloheem? - The Khalag Of The Skies And Qi Was Not In Play

11) And how many

communities that were unjust, have We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Qasama 'Shattered', and Anshaanaa 'Raised Up' after them another kindred?"

12) So, when they felt Our, ([Our Not My] Anunnaqi's) might, Idhaa 'In That Case', they Yarkuduwn 'Were Fleeing' from it!"

13) Don't you flee and return to that which you all were given in it and your dwellings, that perhaps you all will ask about it.

14) They said: "Curse us, surely we were ones in a state of unjustness."

15) And their Da'waahum 'Calling (Praying)' ceased not until We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made them as Khaamidiyn 'Extinct' Hasiydaan 'Reaped Corn'.

16) We, ([We Not He], Anunnaqi) did not Khalag 'Create', Al Samaa-a 'The Sky' and Al Ard 'The Planet Earth', 'Qi/Tiamat' and what is between them Laa'ibiyn 'In Play'.

17) If We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) wanted to have Lahwaan 'Amusement', (when creating), We, (Anunnaqi) would have taken (a suitable one, Eloheem) from our presence (ourselves), if We, (Eloheem, Anunnaqi) Kunnaa 'Willed' to Faa'iliyn 'Do So'.

18) In fact, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Naqdhif

'Hurl' with Al Haqqi 'The Facts' on that which is Baatil 'False', so then it breaks it so as if it vanishes, and for you all will be a curse for that which you ascribed (unto Him).

*Unto Allah Belongs
Whomsoever Is In Al
Samaawaat And Qi - If They
Have Taken Other Allahs
Besides The Source, Tell
Them To Bring Their Proof*

19) And who is in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth' is Lahu 'His' (His Not Ours), and those who are Indahu 'In His Possession' Are Not Yastakbiruwna 'Big-chested, Pouting With Pride' about 'Ibaadatihi 'His Slaving', and they are not Yastahsiruwn 'Weary' (about his worship).

20) They glorify (him), Al Layl 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'Daytime'; they dont Yaftaruwn 'Weaken'.

21) Or have they taken AALIHATAN (ALLAHS) 'Sources' Min 'From' Al Ard 'The Earth/Tiamat' Hum 'They' Yanshuruwn 'Raised from the dead (resurrected)'?"

22) If there were in them (the skies and the earth), AALIHATUN (ALLAHS) 'Sources' Illaa 'Other Than' The Source, ALLAH, La-fasadataa 'There Would Have Been

Mischief' (confusion in both the skies and the planet earth). So glory be to The Source, ALLAH, the Rabb 'Sustainer' of Al 'Arshi 'The Throne', 'Amaa 'Of What' they Yasifuwn 'Ascribe' (unto Him).

23) He will not be questioned of what Yaf'alu 'He does', and they will be Yus'aluwn 'Questioned'."

24) Or have they taken AALIHATAN (ALLAHS) 'Sources/Deities', other than Him (Him Not Us). Tell them, (Muhammad):

"Bring Burhaanakum 'Your Proof'. This is a Dhikru 'Reminder' of those who are Ma'iy 'With Me' - (the Ishmaelites) and a Dhikru 'Reminder' of those who were Qabli 'Before Me', (Muhammad - the Israelites)." In fact, most of them, (The Israelites and Ishmaelites) don't know the facts (beyond any doubt. Israelites, Ishmaelites, Hebrews and Muslims, are all confused about the facts of the Scriptures), so they turn aside (Israelites and Muslims) only use certain Scriptures. They feel others are tampered with, but both of them are wrong)."

25) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not send A Rasuwl 'One Sent' from Qablika 'Before You', Illaa 'Except' if We (Eloheem Anunnaqi) Nuwhiy 'Inspired' to him: "There is no ILAAHA (ALLAH) 'Source' Illaa 'Except'

Anaa 'Me or I', so 'Abuduwni 'Slave For Me' (Me Not We)."

They Say, The Rahmaan Has A Walad - No Intercessors For Them, Except For The Ones Who Are Well-Pleased With - Jahannam Is For The Concealers Of The Facts - Anunnaqi Blasted The One Mass To Separate The Skies And Earth - Anunnaqi Created Everything From Water

26) And they say: "Al Rahmaan 'The Yelder' has Atakhadha 'Taken' a Walad 'Blood Son.' Glory be to Him! In fact, they are Mukramuwn 'Generous' 'Ibaadun 'Slaves'."

27) They do not Yashbiqunahu 'Precede Him (Him Not Us)' Be-Al Qawli 'With The Saying', and they act by Amrihi 'His (His Not Our) Command'.

28) He (He Not We) knows that which is between their hands and what is behind them; and they will have no Yashfa'uwna 'Intercessors', except for those who are Artadaa 'Well-Pleased with', and they are afraid of his fear in reverence.

29) And who says of them: "Inniy 'I Am' an ILAAHUN (ALLAH) 'Source' Other Than Him (Him Not Us); so for that, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) reward Jahannam 'Hell, (Purgatory)', just like We (Eloheem Anunnaqi) reward Al

Zaalimiyn 'Those Who Are In A State Of Unjustness'.

30) Or did not those who conceal that which they know to be the facts see that Al Samaawaati 'The Skies' And Al Ard 'The Planet Qi' were both Ratqaan '(Closed As) One Mass' and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Fataqnaahumaa 'Blasted Both Of Them (to separate them)? And We, ([We Not He] Anunnaqi) Ja'alnaa 'Made' Kulla 'All' the Hayyin 'Living' things (Evolute) Min 'From' Al Maa-i 'Water'. Will they not have faith?"

31) And We, (Eloheem, Anunnaqi) Ja'ala 'Have Made (Placed)' in Tiamat Rawaasiya 'Firm Hills', An 'That' it Tamiyda 'Quake' with them, and We, (Anunnaqi) have made (placed) in it, Fijaajaan 'Ravines' as Subulaan 'Paths (Roads)' that perhaps they will be calmed- (may find their way).

32) And We, ([We Not He], Eloheem, Anunnaqi) have made Al Samaa-a 'The Sky' as a Masfuwzaan 'Guarded' Saqfaan 'Roof' (canopy of 7 sphears) and they are turning away from Aayaatihaa 'Its Verses'.

33) And Huwa 'He' (he not we) is who Khalaaq 'Created' Al Layl 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'The Daytime,' and Al Shams 'The Sun' and Al Qamar 'The Moon.' They each float in an orbit (things in this

one solar system).

Every Person Must Taste Death - Enosites Created In Haste - Rusul Before You. Muhammad Was Mocked At - No Shield Against Eloheem

34) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) did not make any Bashar 'Mortal In Skin' before you, (Muhammad) Al Khulda 'Eternal Life'. So, if Mitta 'You Die', so then will they Al Khaaliduwn 'Live Eternally'?"

35) Every Nafs 'Person' Dhaa-iqatu 'Tastes' Al Mawt 'Death'; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will try you all by way of Sharri 'Disagreeableness' and Khayri 'Goodness' (agreeableness), as a Fitnatan 'Trial'; and unto us, (the Eloheem), you all will return."

36) And when those who conceal that which they know to be the facts, see you, they will take you except as a joke (out of mockery, saying) is this he who remembers AALIHATAKUM (your ALLAHS) 'Sources'? And Hum 'They', with the remembrance of Al Rahmaan 'The Yelder', they are Kaafiruw'n 'Concealers Of That Which They Know To Be The Facts'.

37) Al Insaan 'The Enosites' (Human Being) was Khuliqa

'Created' in 'Ajalin 'Haste' (the 600 years process made possible, by the Eloheem, Anunnaqi, to speed up the Enosites' evolution). Sa-uwriyikum 'I Will Show You' Aayaatiy 'My Verses', so don't Tasta'jiluwn 'You'll Hasten'."

38) And they say: "When will this Al Wa'du 'Promise' (be fulfilled), if you are Saadiqiyn/Zodoqites 'Truthful'?"

39) If those who conceal that which they know to be the facts, knew (the time), when they will not be able to Yakufuwna 'Stop', (drive off) the fire from their faces and nor from Zuhuwrihim 'Their Backs', and they will not be Yansuruwn 'Aided'!

40) In fact, it will come upon them Baghtatan 'Suddenly', so that it will confound them, and they will be unable to Raddahaa 'Avert It', neither will they be reprieved.

41) The Rusul 'Ones Sent' before you, (Muhammad) indeed, were Astuhziya'a 'Mocked', so that which they mocked at, surrounded those who ridiculed at them.

42) Tell them this, (Muhammad): "Who safeguards you by Al Layl 'The Shadow Hour Period', or Al Nahaar 'The Daytime' from Al Rahman 'The Yelder?' In fact, they turn away from the Dhikri 'Remembrance' of their Rabb!"

43) Or have they AALIHATUN

(ALLAHS) 'Sources,' who can Tamna'uhum 'Shield Them' from besides Us, ([Us Not We] Eloheem, Anunnaqi)? They cannot help themselves, and nor can they be defended from Us.

44) In fact, We, ([We Not He] Anunnaqi, Eloheem) temporarily provided Haauwlaa-i 'These (Enosites)' and Aabaa-ahum 'Their Fathers', until Al 'Umru 'Life, (Age)' grew long on them. They do not see, how We, (Anunnaqi, Eloheem) visited the earth, reducing it of its outlying parts? Are they Al Ghaalibuw'n 'The Victors'?

45) Tell them this, (Muhammad): "I am only warning you by that which I have been Inspired "Al Wahy/Weh" and the deaf can not Yasma'u 'Hear' Al Du'aa-a 'The Call', if they are Yundharuwn 'Warned'."

46) And if a Naf-hatun 'Breath' of your Rabb's punishment were to touch them, they assuredly would say: "Woe, curse for us! Surely We were Al Zaalimiyn 'Ones In A State Of Unjustness'."

*Anunnaqi Set A Just Balance
For The Day Of A Qiyamah
- Mosheh Gave The
Differentiation*

47) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Mawaaziyna 'Set A Qista 'Just'

Balance' for the day of Al Qiyaamat 'Resurrection,' so that not one person is Tudhlamu 'Unjust' in a thing; as if there is the weight (as) a mustard seed, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) bring with it, and We, (Eloheem Anunnaqi) are Kafaa 'Suffice' for Haasibiyn 'Reckoners'."

48) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Moshch, and Aharown Al Furqaan 'The Differentiation' - (the Torah) and Diyaa-an 'An Illumination' - (light) and a Dhikr 'Reminder' for those who tremble at the mentioning. (For all the Israclites and the Ishmaelites).

49) Those who Yaghshawna 'Fear' their Rabb, 'Sustainer' Be-Al Ghayb 'By Way Of Being Unseen' and who dread Al Saa'ati 'The Hour' (of Doom).

50) And this is a blessed reminder that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have sent, (The Qur'aan); will you all, deny it, (Al Qur'aan)?

*Abrawhawm Is Given True
Direction By The Eloheem -
Abrawhawm Swears To
Scheme Against The Sources
Of Those Who Associate*

51) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Abrawhawm (of old), Rushdahu 'His True Direction' from before

(the Suhuf of Abrawhawm), and We, (Eloheem Anunnaqi) were aware with him.

52) When he, (Abrawhawm) said unto Abiyhi 'His Father', (Terach) and his kindred: (Hebrew) "What are these Al Tamaathiyl 'Images' unto which you 'Aakifuwn 'Pay Devotion'?"

53) They, (the Babylonians and Nimrod, also known as Marar) said to (Abrawhawm): "We found Aabaaainaa 'Our Fathers' (the Canaanites) slaving for them - (their idols)."

54) He, (Abrawhawm) said: "Indeed you and Aabaaukum 'Your Fathers' were in a Mubiyn 'Clear', Dalaalin 'State Of Astrayed Error'."

55) They said: "You, (Abrawhawm), bring unto us with the facts, or are you from Al Llaabiyn 'Those Who Play'?"

56) He said: "In fact, your Rabb is the Rabb 'Sustainer' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth,' who Fatarahunna 'Splitted Them [Sliced Their Gene]'; and Anaa 'I am' of those who Al Shaahidiyn 'Watches' unto that."

57) And Ta-ALLAH 'by The Source, ALLAH' I will scheme against your (self-made) Asnaam 'Idols' (Sources/Deities) after you go away, turning your back."

58) Then he reduced them to Khudh-aadhaan 'Fragments', except Kabiyaan 'The Biggest'

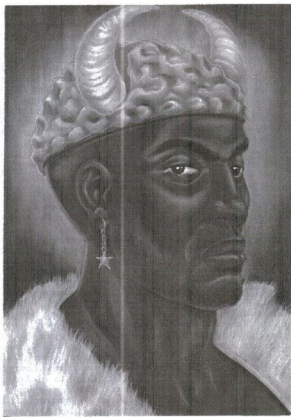


Figure 156
Nimrod, Son Of Kuwsh (Cush) And Semiramis

of them, that perhaps they will return to him.

59) They said: "Who has Fa'ala 'Done' this with our AALIHAAT (ALLAHS) 'Sources'? Surely he is from those who are Al Zaalimiyn 'In A State Of Unjustness'."

Abrawhawm Being Questioned - Abrawhawm Is Ordered To Be Burn - The Eloheem, Anunnaqi Saved Abrawhawm And Lowt - Eloheem Gave Yitschaq For Him Abrawhawm

60) They said: "We heard Fatan 'A Youth' Yadhkuruhum 'Remembering Them', who is called Abrawhawm.

61) They said: "Then bring him Alaa 'On' the Enosites' A'ayun 'Eyes' that perhaps they may Yash-haduwn 'Watch'."

62) They said: "Is it you who has done this with AALIHATINAA (Our ALLAHS) 'Sources', Oh Abrawhawm?"

63) He said: "In fact this was done by Kabiyruluhum 'Their Biggest One'. So question them, if they can Yantiquwn 'Use Words Clearly'."

64) So they Raja'uw 'Returned' (gathered) to themselves. So they said: "Surely you, yourselves are Al Zaalimuwn 'The Ones In A State Of Unjustness'."

65) Then they Nukisuw 'Turned Upside Down' on their heads:

and they said: "Well, you know that Haauwlaa-i 'These (idols)' do not Yantiquwn 'Use Words Clearly'."

66) He, (Abrawhawm) said: "Do you then slave for, from besides The Source, ALLAH that which cannot profit anything for you, and nor can it harm you?"

67) "Uffin 'Fie' for you and that you slave for, besides The Source, ALLAH! Don't you have any sense?"

68) They said: "Hariquwhu 'Burn him', (Abrawhawm) and Ansuruw 'Aid' AALIHAATAKUM (Your ALLAHS) 'Sources', if you all are to do it (act upon it).

69) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) said: "Oh fire, become Bardaan 'Cold' and Salaam 'Peace' be upon Abrawhawm.

70) And they wanted to Kaydaan 'Scheme' Bihi 'With Him', (Abrawhawm); so We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made them Al Akhsariyn 'The Losers'.

71) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Najjaynaahu 'Delivered' him, (Abrawhawm) and Lowt (and brought them) to Al Ard 'The Planet Earth', which We (Eloheem Anunnaqi) have blessed in it for Al 'Aalamiyn 'The Known World'."

72) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave for

him, Yitschaq, and Ya'aqob/Yisrawale and A Naafilat 'Superagatory Gift' and each of them, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made them Saalihiyn 'Perfectionists'.

We Eloheem Made Them Imaams - Children Of Abrawhawm Ordered To Keep Up Al Salaat And Al Zakaat - Eloheem Gave Lowt Knowledge And Delivered Him - We, Eloheem Delivered Noach And His Family And Drowned The Other Enosites

73) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made them to be Aa-immatan 'Up Front, Imaams' who calms by Amrinaa 'Our (Our Not My) Commands': and We, (Eloheem) Awhaynaa 'Inspired' to them (children of Abrawhawm) Al Khayraat 'The Good' Fi'la 'Deeds' and to keep up Al Salaat 'Salutation As Worship' and the giving of Al Zakaat 'Alms' and they were to be 'Abidiyn 'Our Slaves'."

74) And unto Lowt We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Hukmaan 'Wisdom' and Ilmaan 'Knowledge', and We, (Anunnaqi) Najaynaahu 'Delivered Him' from Al Qaryati 'The Town' which were (practicing) doing Al Khabaa-itha 'Impure (Acts)'. Surely, they were a kindred of evil, transgressing.

75) And We, ([We Not He] Anunnaqi) brought him in Our, ([Our Not My] Eloheems) Rahmat 'Yielding' (mercy). Surely, he was of Al Saalihiyn 'The Perfectionists'."

76) And Noach, when he called from before and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) answered to him, so We (Eloheem Anunnaqi) Najaynaahu 'Delivered Him' and Ahlahu 'His Family' from Al 'Aziym 'The Supreme' Kurb 'Distress'.

77) And We, ([We Not He] Eloheem) aided him from the Enosites who denied by way of Our, ([Our Not My] Anunnaqis') Aayaat 'Verses'. Surely, they were a kindred of evil, so We, (Eloheem) Gharagnaahum 'Drown Them' all together."

Dawiyd And Shelomoh Is Given Wisdom By The Anunnaqi - The Hills And The Birds Were Subdued To Hymn Their Praise - The Winds And The Cherubeem 'Shayaatiyn' Were Also Subdued Unto Him - Shelomoh

78) And Dawiyd and Shelomoh, when they give wisdom in (the matter concerning) the field, when The Kindreds sheep had strayed and browsed in it, (by the Shadow Hour Period); and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) were Shaahidiyn

'Watchers' to their wisdom (judgment).

79) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made Shelomoh to Faham 'Overstand' (the case); and unto each of them, We, (Eloheem, Anunnaqi) gave Hukmaan 'Wisdom' and Ilmaan 'Knowledge', and We, (Eloheem) Shakh-khara 'Made Subservient' with Dawiyd, the hills and the birds (to hymn, his, Shelomoh's) praise; And We, (Eloheem, Anunnaqi) were the doers of it."

80) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) 'Allamnaahu 'Taught Him' San'ata 'The Art Of Making' Labuwsin 'Garments' for you'll, (of Ma-il) to protect you from your misery. So are you then Shaakiruwn 'Grateful'?"

81) And unto Shelomoh, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) subdued Al Riyh 'The Wind' in its 'Aasifatan 'Raging'. It runs (flows) by Amrihi 'His (His Not Our) Command' to Al Ard 'The Planet Earth', which We, ([We Not He] Eloheem) had blessed in it, and We, (Anunnaqi) are 'Aalimiyn 'Knowledgeable' with everything.

82) And of Al Shaytaan 'The Disagreeable Beings, The Reptilians' (We [We Not He] Eloheem, Anunnaqi) subdued unto him, Shelomoh), some who Yaghusuwna 'Dived' (for pearls)

for him, and did other works besides that, and We, (Eloheem) were Haafiziyn 'Guardians' for them."

*Yowb Calling Out To His Rabb
- The Harm Of Yowb Is
Removed By
The Anunnaqi - Yishmael
And Chanowk And
Yechezqel Of The Patient
Ones*

83) And Yowb, when he called his 'Sustainer/Master,' who is Rabb: Anniy 'I Have' been touched with harm and distress, and You, are Arhama 'The Most Merciful' of Al Raahimiyn 'Those Who Show Mercy'."

84) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) answered to him, (Yowb), so We, (Eloheem, Anunnaqi) removed the harm which he was afflicted with, and We, (Eloheem, Anunnaqi) gave him Ahlahu 'His Family' and Mithlahum 'Their Likenesses' with them - (multiplied his family), and a Rahmatan 'Yielding' (Mercy) from Our, ([Our Not My] Eloheems') possession, and a Dhikraa 'Remembrance' for the Aabidiyn 'Slaves'.

85) And Harsemtawi/Yishmael, and Adafa/Idriys/Chanowk, and Dhu-al-Kifl, 'Possessor Of The Double Requital,' (Yechezqel), all were of Al Saabiriyn 'The Patient Ones'.

86) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) brought them in Our, ([Our Not My] Anunnaqi's) Rahmat 'Yielding' (Mercy). Surely, they are of Al Saalihiyn 'Those Who Perfect Themselves'.

*Yonah Thought The Eloheem
Were Not Able - Anunnaqi
Delivered Yonah From The
Distress - Zekaryaw Calls Out
To His Rabb - Eloheem
Corrects Elisheba, His Mate*

87) And Dhaa-Al-Nuwn (Yonah); when he, (Yonah) went Mughaadibaan 'In Anger', so he thought that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will not be able to Naqdira 'Have Power' on him, so he called (out) in Al Zulmaati 'The Darknesses', 'That no ILAAHA (ALLAH) 'Source' would exist except You (You Not We); so glory be unto You, I, (Yonah) was of Al Zaalimiyn 'The Ones In A State Of Unjustness'."

88) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) answered for him, (Yonah) and We, (Eloheem) delivered him from Al Ghammi 'The Distress' and just like that, We, (Eloheem, Anunnaqi) Nugiy 'Delivered' Al Mu'miniyn 'Faithful Ones.'

89) And Zekaryaw when he called out to his Rabb, who is 'Sustainer': "My Rabb, don't leave me Fardaan 'Alone'

(without an offspring), and you are the best of Al Waarithiyn 'The Inheritors'."

90) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) answered for him, (Zekaryaw), and We, (Eloheem) gave for him, Yowchanawn (The Baptist, also called Yahyaa); and We, (the Anunnaqi) Aslahnaa 'Perfected' for him Zawjahu 'His Mate', (Elisheba who was barren). Surely, they Yusaari'uwna 'Were Quick' in doing good, and they called upon Us (prayed to [Us not Me], Anunnaqi) with Raghabaan 'Desire' and Rahbaan 'Reverence', and they were Khaashi'iyn 'Humble' unto us.

*Anunnaqi Breathed Into
Miriam Their Soul - Tammuz
And His Mother Made As A
Sign For The Known World*

91) And it is she, (Mary) which kept Farjahaa 'Her Private Parts' Ahsanat 'Chaste'; so We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Nafakhnaa 'Breathed' Fiyhaa 'In Her', Min 'From' Ruwhinaa 'Our Soul (Gabriel/Nusqu); and We, (Eloheem) Ja'alnaahaa 'Made Her', and Abnahaa 'Her Son', (Yashu'a Also Called Tammuz, Symbolic Of Horus) as a Aayatan 'Verse' for the 'Aalamiyn 'Known Worlds'."

92) Surely, this, Ummatukum 'Your Nation', Is Waahidatan 'One' Ummatan 'Nation', and I



Figure 157
Elisheba (Elizabeth), Wife Of Zakaryaw

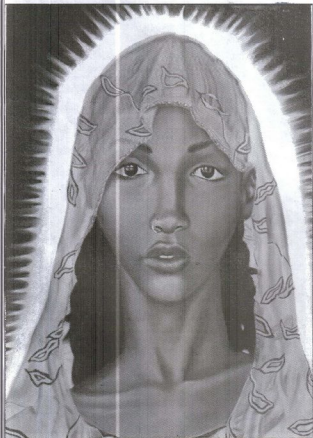


Figure 158
Miriam (Mary), Mother Of Yashu'a
www.Nuwaupinc.com

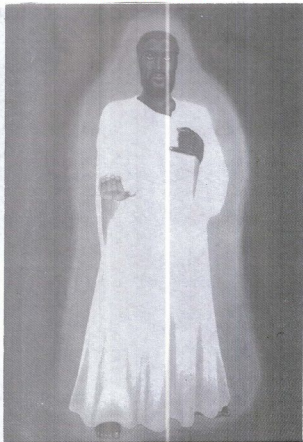


Figure 159
Gabriel, Father Of Yashu'a

am your Rabb 'Sustainer,' so 'Abuduwni 'Slave For Me (Me Not We)'."

93) And they have broken their Amr, 'Affair' - (their nation into fragments), between them. (Yet) all are returning unto Us, ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi).

94) So whosoever, works from Al Saalihaat 'Perfecting Himself', and is a faithful one, there will be no concealing of the facts of Lisa'yihi 'His Effort'. And We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Kaatibuwn 'Write It Down' for him."

There Is A Forbidden Ban
On Any Town The Anunnaqi
Has Destroyed - Gog And
Magog Are Let Loose. Coming
Out Of Every Mound -
Those Who Associate With
Other Deities Will Be Fuel
For Jahannam - Those Unto
Whom The Best Has Gone
Forth Before, From Us,
Eloheem, They Will Not
Grieve The Horror

95) And there is a Haraamun 'Forbidden (ban)', on any town which We, ([We Not He] Anunnaqi) have Ahlaknaa 'Destroyed': that they shall not Yarja'uwn 'Return'.

96) Until, when Gog, (also known as Haaruwt), and Magog, (also known as Maaruwt) are Futihat 'Opened, (let loose)', - (the 2 disagreeable, malevolent Eloheem that were hanging

upside down as a punishment in an old well in Iraq/Babylon) and they are Yansiluwn 'Hastening' from every Hadabin 'Mound'.

97) And Al Haquq 'The Factual' Al Wa'du 'Promise', Iqtaraba 'Draws Near'; so as if it Shaakhisatun 'Stares In Horror' Absaaru 'The Sight (Eyes)' of those who Kafaruw 'Concealed That Which They Know To Be The Truth'. (They will say:) "Woe to us! Indeed, we were in Ghaflatin 'Negligence' from this. In fact, We were Zaalimiyn 'Ones In A State Of Unjustness!'"

98) Surely, you (those who associate with other deities) and that which you Ta'buduwn 'Slave For', from besides The Source, ALLAH are Hasabu 'Fuel' of Jahannam 'Purgatory/Hell.' You will come to there.

99) If these had been AALIHATAN (ALLAHS) 'Sources', they would not have come to it, and all will abide in it Khaaliduwn 'Eternally'.

100) For them (those who concealed that which they knew to be the truth), in it, (hell), is Zafiyrun 'Sobbing' (for them), and they will not be able to Yasmauwn 'Hear' in it, (hell).

101) Surely, those unto whom Al Husnaa 'The Best' has Sabaqat 'Preceded Forth' for them from Us, ([Us Not We] Eloheem, Anunnaqi), they will

be removed far from there.

102) They will not Yasma'uwn 'Hear' Hasiysahaa 'The Slightest Sound' (in it), and abide in what Anfusuhum 'Their Spirits' Ashtahat 'Desired' Khaaliduwn 'Eternally'.

103) The Akbar 'Biggest' Faza'u 'Horror' will not grieve them, and Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers', (the Eloheem, Anunnaqi) will Tatalaqaahum 'Meet Them', (saying): "This is your day which you were Tu'aduwn 'Promised'."

The First Creation Will Be Repeated By The Eloheem, Anunnaqi - Muhammad Sent As A Yielding Mercy To The Known World- Allah Is The Rahman, Whose Help Is To Be Implored

104) The day when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) shall Natwiy 'Fold Up' Al Samaa-a 'The Skies' as Al Sijilli 'A Scroll' rolls up for Kutubi '(Written) Scriptures'. As We, (Anunnaqi) Badaa 'Began' the Awwala 'First' Khalqin 'Creation', We, (Eloheem) shall Nu'iyduhu 'Arrange It' (again). It is a Wa'daan 'Promise' upon us. Surely, We (Eloheem Anunnaqi) Kunaa 'Were' Faa'iliyn 'Doing It' (performing it).

105) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Kataba

'Wrote' in Al Zubuwr 'The Psalm' from some of Al Dhikri 'The Remembrance', (that) surely Al Ard 'The Planet Qi', 'Ibaadi 'My Al Saalihuwun 'Perfected' Slaves' will Yarithuhaa 'Inherit It'.

106) Surely in this is Balaaghaan 'The Propagating Of Facts', for a kindred who are 'Abidiyn 'Slaves'.

107) And We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) did not send you, (Muhammad), except as a Rahmat 'Yielding' (Mercy), to the 'Aalamiyn 'Known World'.

108) Tell them this: "It is only Inspired, 'Weh/Wahy' to me, (Muhammad) that ILAAHUKUM (your ALLAH) 'Source' is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source'. So will you then become Muslimuwn 'Muslims - Ones Who Surrender In Peace'?"

109) But if they are turned back, so tell them this, (Muhammad): "I have warned you all Sawaa-in 'Equally', and Adriy 'I Do Not Know' (if) what Tu'aduwn 'You Were Promised' is Aqribun 'Near' or Ba'iydun 'Far'.

110) Surely He (He Not We), knows that which is Jahra 'Public' from Al Qawl 'The Speech', And He knows that which you Taktumuwun 'Hide (Conceal)'.

111) And Adriy 'I Know Not',

but that this may be a Fitnatun 'Test' for you, and Mataaun 'Temporary Enjoyment' towards a Haynin 'While'.

112) He said: "My Rabb! Ahkumu 'Use Wisdom' with Al Haqqi 'The Facts' (beyond any doubt). And Our Rabb 'Sustainer', is Al Rahman, 'The Yelder,' Al Musta'aanu 'The Helper' Alaa 'On' Maa 'What' Tasifuwn 'You Ascribe'.

Sudliqa Allahu Al Azim

Chapter Seventy-Four

Revealed In The Year 622 A.D.

Al Muw'minuwn

'The Faithful Ones'

Original Order Chapter 74;

Wrong Order Chapter 23

Begin All Things With The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Faithful Ones Are Successful - They Guard Their Salaat - They Guard Their Private Parts - They Are Faithful To Their 'Ahd' - They Will Be Inheritors Of Al Firdaws

74 Certainly Al Muw'miniyn 'The Faithful' Ones,' are Aflaha 'Prosperous'.

2) These are they who are

Khaashi'uwn 'Humble' in their Salaat 'Salutations As Worship'.

3) And they are those who keep away from Al Laghwi 'The Trifling Vain Words'.

4) And these are they which do (service) for Zakaawti 'Charity'.

5) And these are they which Haafizuwn 'Guard' Furuwjihim 'Their Private Parts' (by restraining their carnal desires and not being exhibitionist).

6) Except over Azwaajihim 'Their Mates', or that which their right hands - (women you take care of) possess. So surely they are Ghayr 'Without' Maluwmiyn 'Blame'.

7) So who are these who seek after that, so these are those, Al 'Aaduwn 'The Transgressors'.

8) And those who are faithful to their Aamnaat 'Faiths' and their Ahd 'Covenant'.

9) And those who are Yuhaafizuwn 'Guarding' their Salaat 'Salutations As Worship'.

10) These are those Al 'Waarithuwn 'The Inheritors'.

11) Those who will Yarithuwna 'Inherit', Al Firdaws 'Plantations That Surrounds The Palace Of Rulers.' They will live in it eternally.

12) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Khalqnaa 'Created' the Enosite, 'Human Being' from Sulaalatin 'An Extract (Something Taken Out Of The Clay, Not The Clay Itself)' from Tiyn 'Clay' -(Mud.

[Evolution]).

13) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Ja'alnaahu 'Made (Made Not Created) Him' from Nutfatin 'Sperm (Life-Germ through gene splicing)' in a Qaraarin 'Secure' (isolation room in a laboratory) Makiyn 'Place', (firmly fixed).

The Eloheem, Anunnaqi
Creation Of The Enosites - On
The Day Of Qiyaamah You
All Will Be Raised Again -
Eloheem Have Power To Send
Water To Earth And Take It
Away

14) Then We ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Khalaaq 'Created' Al Nutfata 'The Semen (Life-Germ' through cloning by gene splicing); 'Alaqaatan 'Into A Clot Of Congealed Blood'; So We, (the Eloheem, Anunnaqi) Khalaaq 'Created' Al 'Alaqaat 'The Clot Of Congealed Blood', Mudghatan 'Into A Lump Of Flesh (An Embryo [Adam/Kadmon]), So We, (the Eloheem, Anunnaqi) Khalaaq 'Created' Al Mudghata 'The Lump Of Flesh (Embryo) into' 'Izaamaan 'Bones' (rib bone). So We (Eloheem), Kasaw 'Covered' Al 'Izaama 'The Bones' (rib bone) with Lahmaan 'Flesh'; then We, (Eloheem, Anunnaqi) Anshaa-naahu 'Raised Him Up (Established)' Aakhara 'Another' Khalqaan 'Creation'

(Eve/Hawwah). So Tabaaraka 'Blessed' is The Source, ALLAH, Ahsanu 'The Best' of Al Khaaliqiyn 'Creators'.

15) Then surely after that, (creation), Mayyitun 'You (Enosites) die'.

16) Then surely on the Day of Al Qiyaamah 'The Standing', You (Enosites), Will Be Tab'athun 'Raised (Back To Life)'.

17) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Khalaaq 'Created' Fawqakum 'Above You', (Enosites) Sab'a 'Seven' Taraa-iga 'Paths' (7 Spheres: 1. Troposphere 2. Stratosphere 3. Mesosphere 4. Thermosphere 5. Exosphere 6. Heterosphere 7. Homosphere); and We, (Eloheem Anunnaqi) were never Ghaafilayn 'Negligent' of Al Khalqi 'The Creation'.

18) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' from Al Samaa-a 'The Skies' Maa-an 'Water' (rain) with Qadarin 'A (controlled) Measure'. So We, (Eloheem Anunnaqi) let it Askan 'Dwell' in the planet Qi/Tiamat 'Earth', (rivers, streams, lakes, oceans) and surely We, (Eloheem) are capable, (have the power) to take it away (dry it all up).

19) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Anshaa-naa 'Made To Grow' for you all Bihi (the Planet Earth) 'With It',

Jannaatin 'Gardens' from Nakhiyl 'Date Palms', and A'anaab 'Grapes.' In it (the enclosed garden of delight) for you all, are plenty of fruits and you all are to eat from it.

20) And a (olive) tree that was brought forth from Tuwr Al Saynaa-a 'Mt. Sinai' producing Be-Al Duhni 'With Anointing Oil' and a Sibghin 'Sauce' for Al Aakiliyn 'The Eaters' (olives to eat and olive oil to anoint).

21) And surely for you all, in Al An'aam 'The Cattle', is an Ibratan 'Instruction' which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Nusqiykum 'Give You All A Drink' from what is in Butuwnihaa 'Its Stomachs' (milk) and for you all there are many Manaafi'u 'Benefits', and you eat (beef) from it (the cattle).

22) And on it and on Al Fulki 'The Craft', Tahmaluwn 'You All Are Carried'.

The Sending Of The Rasuwl Noach - The Ruler Zuhak Of The Hurrians, Tries To Denounce Noach

23) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent (the Rasuwl) Noach to his Qawm 'Kindred' (disagreeable cities of Nod and Enoch). So he, (Noach) said: "O my kindred, slave The Source, ALLAH, for you don't have any ILAAHIN (ALLAH) 'Source,' other than

Him (Him Not Us). 'Will you not then tremble at the mentioning?

24) And Al Malaw 'The Ruler (Zuhak)' of those who concealed that which they knew to be the facts, from his Qowm 'Kindred,' (the Hurrians) said: "This (Noach) is nothing except a Bashar 'Mortal In Skin,' just like you all. He wants to make himself (superior) on you all, and if The Source, ALLAH pleases, He (He Not We) will send down Malaaikatan 'Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi). We, (the Hurrians) have not heard about this among Aabaa-inaa 'Our Fathers', Al Awwaliyn 'The First Ones' - (original 24 Elders who were Eloheem, Dinneer who came to Qi and took wives).

25) Surely He (Noach) is nothing except a Rajul 'Mortal Man;' with him is a (disagreeable being, Cherubeem), Jinnatun 'A Demon, Reptilian.' So be patient with him until a time.

Noach Asks His Rabb To Aid Him - The Building Of The Craft Under The Anunnaqis' Calmness - Eloheem Who Are The Ones Who Prove By Trial

26) He said: "My Rabb 'Sustainer' aid me, by that which they lied about, (against) me.

27) So We, ([We Not He]

Eloheem, Anunnaqi) Awhaynaa 'Inspired Him', (Noah) to Asnali 'Make' Al Fulka 'The Craft' within A'ayuninaa 'Our Eyes', (direction) and Wahiyanaa 'Our Inspiration.' So when Our, ([Our Not My] Eloheem Anunnaqis) Amr 'Command' came and Al Tannuwru 'The Oven' Faara 'Boiled Over', so Asluk 'Tread' in it, (the craft), from Kullin 'Every' Athnayn '2 Pairs' of Zawjayni 'Mates'; and Ahlaka 'Your Family' (Noah's family and his wife Na'amah, and his sons and their mates: Kham and Haliymah, Shem and Faatin, Yafeth and Ifat And Lebana And The Other 80 Beings With Them); Except those whom Al Qawlu 'The Saying' Sabaga 'Preceeded' on them; and don't Takhaatibniy 'Give Me, (The Source) A Sermon' in those who are in a state of unjustness. Surely, they will be Mughraquwn 'Drowned'.

28) So when you, (Noah), Astawayta 'Have Sat Firm And Square, (Well Established)' and those who are with you on Al Fulki 'The Craft' (Noah and his 8 member family, and the 80 beings who went in the ark with them). So tell them: "Al Hamdu 'All Gratitude' is due to Him who delivered us from the kindred, Al Zaalimiyn 'Who Are In A State Of Unjustness'."

29) And tell them, (Noah): "My Rabb Anzilniy 'Have Descended

Me' at a Mubaarakaan 'Blessed' Munzalaan 'Place Of Descent', (landing - Mt. Ararat) and You, are the best of Al Munziliyn 'The Ones Who Send Down'."

30) Surely in that are Aayaatin 'Verses' and, surely In 'If' We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) verily Kunaa 'Were' Muhtaliyn 'Ones Who Prove By Trial, (test)'.

Anunnaqi Raised Eber And Shelach's Kindred After Noah

31) Then We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Anshaa-naa 'Raised Up' from after them, another Qarn 'Generation,' - (the newsbearers Eber's and Shelach's generation).

32) So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent among them (Hebrews) Rasuwlan 'A One Who Is Sent,' (Shelach and Eber) Minhum 'From Amongst Them', (Thamud, and 'Ad saying) you all are to slave The Source, ALLAH. You all don't have an ILAAHIN (ALLAH) 'Source' other than Him (Him Not Us). So do not you all tremble at the mentioning?

33) And Al Malaa-u 'The Rulers' from his kindred, those who conceal that which they know to be the facts and lied about the meeting of the Aakhirah 'End,' (Jews say there is no end) and We, ([We Not Me]

Eloheem, Anunnaqi) Atrafnaahum 'Bestowed Upon Them The Good Things' in the life of the physical world (saying:) "This is except a mortal in skin like you. He Ya-kulu 'Eats' from that which Ta-kuluwn 'You All Eat' of, and he Yashrabu 'Drinks' from that which Tashrabuwn 'You All Drink'.

34) And if you all Ata'tum 'Were To Obey' a Bashar 'Mortal In Skin' Mithlakum 'Like You All', (Eber and Shelach/Salih); then surely, you will verily be of the Khaasiruwn 'Losers'.

35) Does he promise you'll, that when you Mittum 'Have Died' and you'll were Turaabaan 'Dust' and 'Izaamaan 'Bones'; that you will be Mukhrajuw'n 'Brought Forth Again'?

36) Hayhaat 'Begone Far', Hayhaat 'Begone Far' with what you promised.

37) In 'If it is Illaa 'Except' Hayaatunaa 'Our Lives' of Al Dunyaa 'The Physical World'; Namuwtu 'We Die' And Nahyaa 'We Live' And We will not be Be-Mab'uwthiyn 'With Those Who Will Be Raised (Back To Life From The Dead)'.

38) In 'If he, (Shelach) is except a Rajulun 'Mortal Man' who made up, 'invented' a lie on The Source, ALLAH; And We (The Kindred) are not ones with faith for him (Shelach).

39) He, (Shelach) said: "My

Rabb Ansumniy 'Aid Me', of that which they have lied about, (against) me.

*The Eloheem Destroyed
Shelach's Kindred -
Ahaadiyth Given To The
Generations - The Sending
Of Mosheh And Aharawn To
Pharaoh*

40) He, said: "In a Qaliylin 'Little', they will be Naadimiyn 'Regretting'."

41) So Al Sayhatu 'The Blast' overtook them, (Thamud) with a fact (beyond doubt). So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made them like Ghuthaa-an 'Dark Stubble'. So away with a kindred, (of Thamud), who are in a state of unjustness.

42) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Anshaa-naa 'Raised Up' from after them, other Quruwnaan 'Generations'.

43) Does not pass from a Ummatin 'Nation', its appointed term and they do not Yastaakhiruwn 'Delay'.

44) Then We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Arsalnaa 'Sent' Our (Our Not My) Rusul 'Ones Sent' Tatraa 'One After The Other'; whenever came to a nation Rusuluhaa 'Its One Sent', they denied him (lied about him). So We, (Eloheem, Anunnaqi) caused some of them to follow others and We,

(Eloheem) made for them Ahaadiyth 'Tales'. So away with a kindred who does not have faith.

45) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent Mosheh and his brother, Aharown with Our, ([Our Not My] Anunnaqis') Aayaat 'Verses', and a Mubiyn 'Clear' Sultaanin 'Authoritive Power' (as an Eloheem).

46) To Pharaoh, (Ramses II) and Malaa-ihl 'His Rulers', so they became Astakbaruw 'Big-Chested, Pouting With Proud' and they were a kindred, who were 'Aaliyn 'Most High' (of Illyuwn also as Neturu).

47) So they said: "Shall we have faith for Bashrayni '2 Mortals In Skin', (Mosheh And Aharown), Mithlinaa 'Like Us' and Qawmuhaa 'Their Kindred' -(The Israelites/Jacobites) are slaves for us, (Mitzramites/Egyptians)?

48) So they, the (Mitzramites) denied both of them, so they were from Al Muhlakiyn 'The Ones Who Were Destroyed'.

*Mosheh Is Given The Torah
To Lead The Jacobites Into
Calmness - Tammuz And His
Mother Are A Sign - Rusul
Told To Eat That Which
Are Agreeable*

49) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Al Kitaab 'The Scripture' to

Mosheh, the 'Torah'; so perhaps they, (the Israelites) would be Yahtaduwn 'Lead Into Calmness'.

50) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made Miriam's Abna 'Son' (Yashu'a Symbolic Of Horus And Tammuz), and Ummahu 'His Mother' (Miriam Symbolic Of Isis And Ishtar) as a Aayatan 'Sign' - (the way he was born by an Eloheem, Anunnaqi) and We, (Eloheem) Aaway-naahumaa 'Gave Them Refuge' to a Rabwatin 'High Place' - (Egypt), where there was Qaraarin 'Security' (from Herod Son Of Antipater Of Idumaea, who wanted to kill the child) and Ma'iynin 'Running Water' - (the Nile river).

51) O you Rusul, 'Ones Sent,' you all are to eat from Al Tayyibaati 'The Agreeable Things', and A'amaluw 'Work' Saalihaan 'Perfecting Yourselves'. Surely I, have 'Aliym 'Knowledge' of that which you all do.

*Tremble And Fear Your
Rabb - Eloheem Don't
Burden A Person, Except
For Its Own Responsibility*

52) And surely this is Ummatukum 'Your Nation', Waahidatan 'One' Ummatan 'Nation', and I am your Rabb, 'Sustainer,' so Ataquwni 'Tremble At My Mentioning'.



Figure 160
Herod, Son Of Antipater Of Idumea

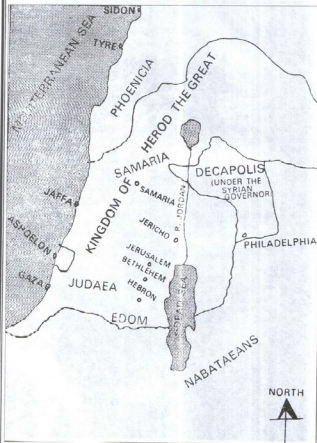


Diagram 33
The Kingdom Of Herod The Great

53) So they have broken Amrahum 'Their Command' between them, Zuburaan 'Into Sects'. Each Hizbin 'Party' of that which they have in their presence is happy.

54) So scatter them in their hardship until a time.

55) Haven't you all calculated that surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have extended to them, (Christians the right) to have Maalin 'Wealth' and Baniyn 'Sons'.

56) We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) Nusaari-u 'Quickened' for them in the agreeable things. In fact, they don't perceive.

57) Surely, those who are Mushfiqun 'Dreadful' from the Khashyati 'Fear' of their Rabb 'Sustainer';

58) And those who are faithful with the Aayaat 'Verses' of their Rabb;

59) And those who do not Yashrikuun 'Associate Partners' with their Sustainer, who is 'Rabb';

60) And those who give that which they give and their hearts are Wajilatun 'Smitten With Fear' because they are returning to their Rabb;

61) These are they who Yusaari'uwn 'Quickened' in the good things and they are preceeding to them.

62) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) don't

Nukalifu 'Burden' a person except of Wus'ahaa 'Her Own Responsibility, To Perform' and in Our presence is Kitaabun 'A Scripture', which Yantiqu 'Use Words Clearly' with a fact (beyond doubt), and they will not be treated unjustly.

63) In fact, their hearts are in Ghamratin 'Hardship' from this; and for them are works from besides that, which they are doing.

64) Until when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) took their enjoyment of the good things (of this life) with the pain, when they supplicated.

65) Don't you all supplicate this day. Surely you all will not be aided by Us, ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi).

*Allah's Signs Were Recited
To The Meccans - They
Say, Muhammad Is Being
Used By A Jinn' - If
Eloheem Remove The Harm
Of The Unfaithful Ones,
They Persist Obstinateley.*

66) Certainly Aayaati 'My Verses' - (scriptures) were recited on you all, (The Meccan Enosites) but all you did was turn away on A'qaabikum 'Your Heels', (turn your backs to it).

67) You all are Mustakbiryn 'Big-Chested, Pouting With Pride'. With it, (the Qur'aan) Saamiraan 'You'll Converse,

Tahjuruwn 'Raving Deliriously'
In The Shadow Hour'.

68) Did they not Dabbaruwn
'Direct' Al Qawl 'The Sayings'?
Or has there come to them that
which did not come to
Aabaa-ahum 'Their Fathers' of
Al Awaliyn 'The First Ones'?

69) Or, they did not know
Rasuwluhum 'Their One Sent',
so they reject him?

70) Or they, (the Meccans) say
that he, (Muhammad) is being
used by a Jinnatun, ((a
disagreeable being, Cherubeem),
'Demon'! In fact, He
(Muhammad) came to them, (the
Meccans) with the facts (beyond
any doubt- Al Qur'aan); and
most of them Kaarih 'Hate' the
facts (the Qur'aan).

71) And if the facts (beyond any
doubt) would follow
Ahwaa-ahum 'Their (corrupt)
Desires - (Loves)', then Al
Samaawaatu 'The Skies' and Al
Ard 'The Planet Earth,' and
whoever is Fiyhinna 'In Them'
would be Fasadat 'In Mischief'.
In fact, We ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi), brought
them by way of Dhikrihim
'Their Reminder' - (scripture),
but they turn away about (from)
their reminder.

72) Or you, (Muhammad) ask
them of a Kharjaan 'Tribute'. So
Kharajun 'The Tribute' of your
Rabb, 'Sustainer' is Khayr
'Good', and He (He Not We) is
the good of Al Raaziqiyn 'The

Providers'. And surely you,
(Muhammad) calls them to the
Narrow Path, 'Siraaat' of those
who stand up straight.

74) And surely those who don't
have faith by way of the End,
they will be ones who turned
aside, from the narrow path.

75) And if We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) have
Rahimnaahum 'Showed Yielding
(mercy) On Them' and We,
(Anunnaqi) removed them of the
harm, they persist obstinately in
their rebelliousness, Ya'mahuwn
'Blindly Wandering Astray'.

76) And indeed We, ([We Not
He] Eloheem, Anunnaqi) took
them with pain. So they don't
Astakaanuw 'Submit' to their
Rabb, who is 'Sustainer' ALLAH
and they don't Yatadarrauwn
'Humble Themselves'.

77) Until, when We, ([We Not
He] Eloheem, Anunnaqi) Fatah
'Opened' on them a Baabaan
'Door', (gate) of a more Shadiyd
'Forceful' pain, when they are
Mublisuwn 'Ones Who Rebel' in
it.

78) And He (He Not We) is who
Anshaa 'Raised' for you Al
Sam'a 'The Inner Hearing' and
Al Absaara 'The Inner Sights'
and Al 'Af'idah 'The Inner
Hearts'. Little is what you (give)
thanks (for).

79) And He (Yahuwa) is who
Dara-aakum 'Scattered You'll' in
the planet (Qi) Earth (Yahweh

from babel with different tongue) and to Him (Him Not Us), you will Tahsharuwn 'Be Assembled'.

The Source Gives Life, And
Takes Life Away - They,
Meccans Say That This Is
Except The Fables Of The
Eloheem Dinneer - Allah Has
Not Taken A Walad - Allah
Is The Knower Of The
Unseen

80) And He (He Not We) is who Yuhiy 'Gives Life', and Yumiyt 'Takes Life Away', and for Him (Him Not Us) is Ikhtilaaf 'The Diversity' of Al Layl 'The Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'The Daytime'. So don't you all comprehend?

81) In fact, they said, the Mithla 'Like' of that which Al Awwaluwn 'The Ancient Ones,' said.

82) They, (Meccans) say: "When Mitnaa 'We Die' and we were Turaabaan 'Dust' and 'Izaamaan 'Bones', surely then La-mab'uthuwn 'Are We To Be Raised (back to life from the dead)?"

83) Indeed Nahnu 'We' and Aabaaunaa 'Our Forefathers', we were promised this from before (before Adams time), that this is except Asaatiyr 'Fables' of Al Aawwaliyn 'The Ancient Ones' -(the Eloheem, Dinneer, The Twenty Four Elders).

84) Say: Liman 'To Whom' is the planet Qi 'Earth, and who Fiy-haa 'Are In It', if you have knowledge.

85) They will say to The Source, ALLAH! Say: "Don't you all remember?"

86) Say who is the Rabb 'Sustainer' of Al Sab'i 'The Seven' Al Samaawaat 'Skies' and the Rabb of Al 'Aziym 'The Supreme' Al Arsh 'Throne'?

87) They will say: "To Him (Him Not Us)." Say: "Don't you all Tataquwn 'Tremble At The Mentioning'?

88) Say who Be-Yadihi 'With His (His Not Our) Hands', is Malakuwt 'The Rulership' of all things and He (He Not We) Yugiyr 'Defends', and (their is) no Yujaaru 'Defense' upon Him (Him Not Us), if you have knowledge.

89) They will say: "To Him. Say: "So are you all Tus-haruwn 'Bewitched'?"

90) In fact, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) came to them with a fact (beyond doubt), and surely they were La-kaadhibuwn 'Verily Liars'.

91) The Source, ALLAH did not Attakhadha 'Take' a Walad 'Son By Blood,' and there was not with Him (Him Not Us) from a ILAAHIN (ALLAH) 'Source'. Then all the ILAAHIN (ALLAHS) 'Sources' would have taken away from that which He Khalaqa 'Created' and some of

them will be 'Alaa 'Higher (Exalted)' over others. Glory be to The Source, ALLAH of that which they ascribe.

92) 'Aalimi 'Knower' of Al Ghayb 'the Unseen,' and Al Shahaadah 'That Which Is Watched'. So He's (He Not We) Ta-aalaa 'Most Exalted (high)' of that which they Yashrikuwn 'Associate Partners' (with).

93) Tell them: "My Rabb, who is 'Sustainer,' if you Turiyanniy 'Make Me See', that which they are promised;

94) My Rabb, so don't make me in (upon) the kindred, who are in a state of unjustness.

*Muhammad Seeks Protection
In His Rabb. From The
Cherubeem - Trumpet Will
Be Blown By The Eloheem
Raphael. On That Day
There Will Be No Family
Ties*

95) And surely We, ([We Not I] Eloheem, Anunnaqi) are able, (full of power) to make you see that which We, (Anunnaqi) promised them.

96) Idfa'a 'Push' Al Sayyi-ata 'The Evil' with that which is Ahsanu 'Best'; for We, ([We Not He] Eloheem) A'alamu 'Learned' with that which they ascribe!

97) And (Muhammad) tell them: "My Rabb 'Sustainer', I seek protection with you from Hamazaat 'The Slandering,

Whispering', Al Shayaatiyn (physical Reptilians, Disagreeable Beings - Cherubeems).

98) And I seek protection by you my Rabb, 'Master', that Yahduruwn 'They Come To Me'.

99) Until when Al Mawt 'The Death' has come (and overtakes) one of them, he said: "My Sustainer, Arji'uwni 'Return Me'."

100) That perhaps I work to Saalihaan 'Perfect Myself' in that which Taraktu 'I Left Behind'. By no means, it's a word, which he speaks; and from behind them, is a Barzakhun 'Partition' to the day they will be Yub'athuwn 'Raised (back to life from the dead)'.

101) So when Al Suwri 'The Trumpet' (Shofer) is Nufikha 'Blown' by the (Eloheem, Anunnaqi Raphael); so there will be no Ansaaba 'Relationship, (family ties)' between them that day; and they will not ask about each other.

102) So those who (made) Mawaaziynuhu 'His Scale' (of righteous deed) Thaqlat 'Heavy'; so these are they, the prosperous ones.

*Jahannam Is For The
Concealers Of The Facts -
Those Who Have Patience
Are The Achievers - Enosites
Think, They Were Created*

Without A Purpose

103) And those who (made) Mawaaziynuhu 'His Scale' (of righteous deeds) Khafat 'Light'; so these are those who will Khasiruw 'Loose' Anfusahum 'Their Spirits' in Jahannam, 'Purgatory,' - (a Hell for the concealers of the facts) Khaaliduwn 'Eternally'.

104) The fire Talfahu 'Burns' their faces (burns the black faced) and they are in it Kaalihuwn 'Grinning', (and showing their teeth).

105) Were not Aayaatiy 'My Verses', (scriptures) Tutlaa 'Recited' upon you all, and all you did was lie (and deny it)?

106) They said: "Our Rabb, our Shiqwat 'Wretchedness' Ghalabat 'Overcame' us, and we were a kindred who were astrayed in error.

107) Our Rabb, 'Sustainer' bring us forth from it. So if we return (to evil), so surely we will be in a state of unjustness.

108) He said: you all will be driven in it, and don't Tukalimuwni 'Have Words With Me'.

109) There was a Fariyq 'Portion,' from My slaves saying, our Rabb, 'Sustainer' we have faith, so Aghfir 'Forgive' us and Arhamnaa 'Show Yielding (Mercy)' on us, and you are Khayr 'Good' of Al Raahimiyn

'The Ones Who Show Yielding (Mercy). These Are Other Rahiym's'.

110) So you took them as a ridicule, until they made Ansaykum 'You All Forget' Dhikri 'My Remembrance', and you were 'Ad-hakuwn 'Laughing At Them'.

111) Surely I, have rewarded them the day of that which they Sabaruw 'Had Patience'. That they are Al Faa-izuwn 'The Achievers'.

112) He will say: "How many 'Adada 'Numbers' of Siniyn 'Years' Labith-tum 'Have You All Remained' in the planet Qi 'Earth,' also called Tiamat?

113) They will say: "We've Labatha 'Remained' Yawmaan 'A Day', or part of a day. So ask, Al 'Aaa-ddiyn 'The Ones Who Keep Account'."

114) He will say: "You all have not remained except a little (while), if you all (only) knew."

115) Did you think that We (We Not He) created you all 'Abathan (In) Sport' And that you all would not Tarja'uw 'Return' to Us, ([Us Not We] Eloheem, Anunnaqi)?

Allah Is The Most High -
The Source Doesn't Make
The Kaafiriyn Prosper - My
Rabb Is The Best Of Those
Who Show Mercy

116) So Ta-'Alaa 'Most High,

Exalted' is The Source, ALLAH, Al Maliku 'The Ruler', Al Haqu 'The Fact'. No ILAAHA (ALLAH) 'Source' would exist except by way of He 'HU -The Creative Force Of Will', Rabb, 'Sustainer' of Al 'Arshi 'the Throne' Of Al Kariym 'Generosity'.

117) And whoever calls with (pray) The Source, ALLAH another ILAAHAAN (ALLAH) 'Source', there is no Burhaan 'Proof' for him with it; so when his reckoning is in the possession of his Rabb, surely He (He Not We), doesn't make Al Kaafiriyn, 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts,' Yaslih 'Prosper'.

118) And say: My, (Muhammad's) Rabb, Aghfir 'Forgive' and Arham 'Show Yielding (Mercy)' and You (You Not We) are Khayr 'Good' of Al Raahimiyn 'Those Who Show Yielding (mercy. These are other Rahiym's)'.
 Suddiq Allahu El Azim

Chapter Seventy-Five

Revealed In The Year 617 A.D. Except For Verse

16-20

Al Sajdah

(The Prostration)

Original Order Chapter 75;

Wrong Order Chapter 32

Begin All Prayers And Thinking

By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Qur'aan Doesn't Have Any Doubt In It - Qur'aan Is From Your Rabb, So That The Ishmaelites Are Lead Into Calmness - The Source Created The Skies And Qi In Six Days - One Day's Measurement Is Like A Thousand Years To Allah

75 () Alif: Adam, Laam: Shadow Hour Period Of Power, Miym: Muhammad.

2) That which was sent down, the scripture (Al Qur'aan), Laa 'No' Rayba 'Doubt' Fiyhi 'In It'; from the Rabb, 'Sustainer' of Al 'Aalamiyn 'The Known World'.

3) Or do they, (the Meccans) say that he, (Muhammad) Aftaraahu 'Invented It'? In fact, it, (the Qur'aan) is Al Haqu 'The Fact (Beyond Any Doubt)' from your Rabb, in order to warn a Qawm, 'Kindred' who were not given a Nadhiyr 'Warner' before you, (Ahmad), so that they, the (Ishmaelites) may be lead into calmness (those between Yashu'a and Muhammad).

4) The Source, ALLAH is who Khalaq 'Created' Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat', and that which is between them in Sittati '6' Ayyaamin 'Days' - (of 6,000 years each, the two firmaments:

Mummu (Mercury), Lahamu (Venus), Lahmu (Mars), Kishar (Jupiter), Anshar (Saturn) Mashig (Uranus), Ea (Neptune). Then Astawaa 'He Sat (Established)' on Al Arsh 'The Throne'. You don't have any besides Him (Him Not Us), from a Waliyyin 'Near Friend' and you won't have a Shafi' in 'Intercessor'. So, will you not remember?

5) He Yudabbiru 'Directs' Al Amra 'The Orders' of Al Samaa 'The Skies' to Al Ard 'The Planet Qi'. Then it, (his orders) Ya'ruju 'Elevates' Ilayhi 'To Him' in Yawmin 'A Day' which is Miqdaaruhu 'His Measurement' of Alfa 'One Thousand' Sanatin 'Years' (each earth day is a thousand years) by that which Ta'uddun 'You Count' (so six days to you is 6,000 years to Angelic Beings).

6) That is 'Aalimu 'The Knower' of Al Ghayb 'The Unseen' and Al Shahaadat 'That Which Is Watched', Al 'Aziyz, 'The Mighty,' Al Rahiym, 'The Most Merciful.'

*The Creation Of The
Enosites From Clay -
Eloheem, Anunnaqi Fashioned
And Breathed Into Men, Of
Allah's Soul - The Messenger
Of Death, Enqi Will Receive
Your Spirits - Hell Will Be
Filled With Jinns. And
Enosites Of Adam's Seed*

*- Those Who Have Faith In
Their Rabb. They Fall
Down In Prostration -
Those Who Are Faithful,
Will Be As Welcome Guests
In Jannat*

7) He (He Not We) who made everything when Khalaqahu 'He (He Not We) Created' Ahsana 'The Best', and Bada-a 'Began' the Khalqa 'Creation' of Al Insaan, 'The Enosite' from Tiyn 'Clay'.

8) Then He (He Not We) Ja'ala 'Made' Naslahu 'His seed' from Sulaalatin 'A Drop' from Mahiyn 'Despised' Maa-in 'Water, (Fluid - Cloning).'

9) Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Sawwaahu 'Fashioned Him' and Nafakha 'Breathed' Fiyhi 'Into Him' from Ruwhibi 'His Soul', and made for you Al Sam'a 'Inner Hearing' and Al Absaar 'Inner Sight' and Al Af'idat 'The Inner Hearts'. Little thanks is what you (give)!

10) And they say: "When we are astray in error, in the Earth, shall we be in a Jadiyd 'New' Khalqin 'Creation'? In fact, they are Kaafirun, 'Concealers Of That Which They Know To Be The Facts,' in the meeting with their 'Sustainer', who is Rabb.

11) Tell them this, (Muhammad): The Malaku 'Angelic Messenger' of Al Mawt

'Death', (The Eloheem, Anunnaqi, Enqi Also Known As Izrael), who is Wakkila 'Appointed As An Advocate' Bikum 'With You All' (who is appointed over you) will Yatawaffakum 'Receive All Your Spirits' (when that period of time is appointed for you all); and then unto your Rabb will you all return.

12) Couldn't you see when Al Mujrimuwn 'The Guilty' Naakisuw 'Turned Ru-uwsihim 'Their Heads' Upside Down' in the possession of their 'Sustainer,' Rabb and say: "Our Rabb, we have now seen and heard, so send us back. We will work to Saalihaan 'Perfect Ourselves'; we are Muwqinuwn 'Sure'."

13) And if We (We Not He) please, We could have given every Nafs 'Person,' its own calmness, but Al Qawl 'The Saying' from Me (Me Not We - Nusqu) was Haqqa 'Made True'. I, will fill Jahannam 'Hell' with those of Al Jinnat 'The Demons, (Disagreeable, Malevolent Beings, Cherubeems)' and Al Naas 'The Enosites' - (Adam's seed) all together.

14) So taste (the evil of your deeds) by what you forgot the meeting of this day of yours, surely, We (We Not He) forgot you; and taste the pain of Al Khuld 'Eternity' (immortality - become a Eloheem deity) because

of that which you used to do (you were a deity -Eloheem).

15) Surely, however, those who have faith in Our (Our Not My) verses, when they are reminded of them, they Kharruw 'Fall Down' in Sujjad 'Prostration' and they glorify their Rabb, with Hamd 'Gratitude' and they don't become Yastakbiruwn 'Big-Chested, Pouting With Pride'.

16) They who forsake their sides and beds to call unto their 'Sustainer,' who is Rabb in fear and hope and share willingly of that which We (We Not He) have provided for them.

17) No spirit/person knows that which is kept hidden for them of a delight of an eye, (joy) as a reward for that which they used to do.

18) Is he who is a faithful one, like he who transgresses? They are not Yastawn 'Equal'.

19) As for those who are faithful and work to Saalihaat 'Perfect Themselves', so for them, there are Jannaat 'Gardens' in other dwelling places; (when they will be welcomed as guest) for that which they were doing.

The Transgressors Place Will Be In The Fire - They Will Taste Pain Of The Anunnaqi - Muhammad Reminded That Mosheh Was Given The Torah - Muhammad Is Not To Be Sad - When The Israefites

Were Patient, We Made
Them Ai'mmah

Our, (Anunnaqis) Amr
'Command'.

20) And as for those who transgress, so Maawaahum 'Their Dwelling Place' is the fire. Whatever they want to bring forth from it, they are brought back in it; and then it is said to them: "Taste the torment of the fire which you used to deny."

21) And verily We, ([We Not He] Anunnaqi) will make them taste of Al Adnaa 'The More Suitable' pain besides Al Akbar 'The Biggest' Pain', that perhaps they will return.

22) And who does more wrong than he who is reminded of the verses of his Rabb, then turn from it? Surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) shall avenge the Mujrimuwn, 'Guilty Ones'.

23) And indeed We, ([We Not He] Eloheem) Gave Mosheh the scripture - (the Torah) so don't be in Miryatin 'Dispute' about it, (Muhammad receiving the Qur'aan) and We made it, (the Torah) a leading calmness for the Banee Israa'iyl 'Children of Israel/Jacob'.

24) And when they became patient, having faith firmly in Our (Our Not My) signs, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi appointed), made from (amongst) them A'immatan 'Ones Up Front, Imaams', (who are) calming by

Your Rabb Will Judge
Between Them On The Day
Of Resurrection- Many
Generations Were Destroyed
Before Them. By The
Eloheem- Signs Shown Unto
Them; By Sending Water
To The Barren Land- They
Ask About The Fath- The
Victorious Opening Will Not
Avail Them

25) Surely, your Sustainer, who is 'Rabb' will judge between them on the Day Of Al Qiyaamah 'Resurrection', concerning that which they used to differ (in).

26) Is it not a calmness for them, to observe how many Quruwn 'Generations', We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) destroyed before them, whose Masaakin 'Dwelling Places' they do Yamshuwn 'Walk'? Surely, in that, verily are verses! Will they not then hear?

27) Have they not seen how We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Nasuwqu 'Lead (Driven)' Al Maa-a 'The Water' to Al Juruzi 'The Barren' part of the planet earth, so with it bring forth Zar'aan 'Crops' which Anfusuhum 'Themselves' and An'aamuhm 'Their Cattle' eat? Will they not then see?

28) And they say: "When is Al

Fat-hi 'The (Victorious) Opening (Of The Seal)', if you are to be Sodoqites/Zodoqites Truthful'.

29) Tell them this, (Muhammad): "On the day of Al Fat-hi 'The Victorious Opening', those who conceal that which they know to be the fact, and (then will) have faith, (it) will not benefit them, neither will they be reprieved.

30) So you, (Ahmad) are to turn away from them and Antazir 'Await' (the event). Surely, they are also Muntaziruwn 'Waiting' for it.

Sudiqah Allahu 'El Agim

Chapter Seventy-Six

Revealed In The Year 614 A.D.

Al Tuwr
(The Mountain,
Bull: Sinai)

Original Order Chapter 76:
Wrong Order Chapter 52

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Mount Tuwr - And The
Torah Of Mosheh And
Aharown And Yehowshuwa -
The Kaaba Which Is Visited
For Umrah, And The Kaaba
Above The Canopy - The
Parting Reed Sea - Satan,
The Reptilian Will Not Have

Any Daafi' To Prevent It
- The Heavenly Skies Will
Fluctuate - And The Jibaal
Shall Start To Move, Pass
Away

76 And the Tuwr, 'Mount Sinai'.

2) And by a Kitaab, 'Scripture', (the Torah - 5 Books of Eloheem Mosheh, Prophet Aharown, And Mosheh' Successor, The Apostle Yehowshuwa) Mastuwr 'Written On Parchment'.

3) In Raqin 'Unfolded' Manshuwr 'Scrolls', - (five scrolls- Books of Eloheem Mosheh, Prophet Aharown, And Mosheh' Successor, Apostle Yehowshuwa).

4) And Al Bayt 'The House', (The Baytu Al Haraam, Kaaba in Mecca), which is Ma'muwr 'Frequently Visited, For Umrah-Small Pilgrimage' (In Nasuwt).

5) And the one, (the Spiritual Kaaba) Marfuw'i 'Raised Above' Al Saqf 'The Canopy' (In Malakuwt).

6) And by Al Bahr 'The Sea', Masjuwr 'Boiling', (the Reed Sea parting);

7) Surely your, (Muhammad's) pain, (Judgment Day) will Lawaaqi 'Come To Pass'.

8) He, (Shaytaan, the Malevolent Disagreeable, Satan the Reptilian) has no Daafi 'One Who Can Prevent It,' (the Judgment Day).

9) On this day Al Samaa 'The Heavenly Skies,' Will Tamuwr 'Fluctuate, Move Around' and around; (opening of a vortex like the tornado).

10) And Al Jibaal; 'The Mountains' shall start to move and pass away - (like great earthquakes).

Curse Be To The Liars On Yawm Al Qiyaamah - They Love Khawd, And To Play - They Will Be Called To The Naar - They Will Be Asking, Whether Or Not It Is Magic - Hell Will Be Equal To Them, Whether They Are Patient Or Not - The Muttaqiyn Shall Be In Jannaat - Allah Saved Them From The Fire - They Will Be Told To Drink And Eat With Pleasure - They Will Be United With Huwr 'Ayn

11) So curse be on that day - (Day Of Resurrection - Yawm Al Qiyaamah), to the Mukadh-dhibiyn 'Ones Who Lied (about the facts);

12) These are they who in Khawd; 'Vain Discourses'; (like to talk about nothing, and) Yal'abuwn 'They Are Playing.' (They like to play all the time);

13) The day, (judgment day) to which they all will be called to the fire of Jahannam 'Hell'.

14) This is the Naar 'Fire', which you used to say was a lie;

(they said, "It would never happen!")

15) Is this Sihr 'Magic' or do you all not see it, (Hell)?

16) Islawhaa 'Burn In It', (Hell); so be patient, or don't Tasbiruw 'Be Patient'; It is Sawaa-un 'Equal' on you. Surely you will get your reward for what you have been doing.

17) Surely, Al Muttaqiyn 'The Ones Who Tremble At The Mention' shall be in Jannaat 'The Garden' and have Na'iyim 'Ease'.

18) So they will be rejoicing by that which their Rabb, 'Sustainer' gave them. And their Rabb 'Sustainer', Waqaahum 'Saved Them' from the pain of a Al Jahiym 'Hell'.

19) (It will be said to them): Kuluw 'Eat' and Ashrabuw, 'Drink' with pleasure for that which you were doing. (You will have provision in the sky).

20) They will relax on Surur 'Couches' (They Have Couches In Heaven), arranged Masfuwfah 'Side By Side,' (they are even arranged in rows) and We (We Not He) will Zawajnaahum 'Unite Them With Mates' (your own mates will be there with you) having such Huwr 'Pale, White' Ayn 'Eyes', (The White Of The Eye, Is Extremely White That The Pupil Is Dark Black. They Will Be In A Pure State).

The Faithful Offspring Will

Follow Them In Faith - If
They Wish, The Anunnaqi
Will Give Them Fresh Fruit
And Meat - A Cup Will Be
Passed With No Vanity Or
Taa'thiym - Lads Will Be
Serving Them - Those Who
Advance Toward Each Other
Will Ask Each Other
Questions - They Are
Mushfiqawn, That Their
Families Will Misguide Them
- Allah Preserved Them
From The Fire And Saved
Them From Al Samuwm -
Allah Is The Barr, The Most
Merciful - Muhammad Is Not
Kaahin Or Majnuwn - They
Say He Is Just A Poet

21) And as for those who have Iymaan 'Faith' Dhurriyatahum 'Their Offspring' will follow them in faith and join them with one another (you will be together with your love ones). And their offspring will not diminish any of their Amal 'Deeds/Works' from themselves (even your children and children's children will be there). All will be responsible for that which they were commanded, and will earn the Rahiyn 'Pledge.'

22) And We, ([We Not He] Anunnaqi) will assist them by giving them (fresh), Faakihat, 'Fruit' (fruits are there) and Lahm 'Meat' (meat is there), from what Yash-tahuwn 'They

Wish' (all you wish for will be given to you).

h23) They shall pass in it Kaa'as 'A Cup' (which) shall have no Laghwun 'Vanity' in it, and no Taa'thiym, 'Accusation Of Crime.'

24) And Yatuwfu 'Round About' them will be Ghilmaan 'Lads' for them, (serving them. You will have servants, young boys there), as if they are Maknuwn 'Imbedded (Placed)' In Luw'luw 'Pearls' (Dressed In Pearly Whiter Robes).

25) And they, (those who enter the enclosed garden of delight) will advance towards each other, Yatasaa'aluwn 'Asking All Kinds Of Questions', (you will speak to each other using your normal voice).

26) Saying: "Surely we were Mushfiqiyn, 'Afraid' before we got into the garden, because of Ahlinaa 'Our Families', trying to misguide us. (These are normal conversations. It's a physical place);

27) So who is The Source, ALLAH on us, (who has preserved us from the fire) and Waqaa, 'Saved' us from the pain of Al Samuwm, 'The Hot Poisonous Wind - (Of) Ibliys, Azaaziyl, Samael, The Son Of Shakhar And Mylitta, The Fallen Eloheem, Anunnaqi).

28) Surely, we called to Him (Him Not Us), before (our death). Surely, He (He Not We)

is The Barr, 'Righteous,' The Rahiym, 'Most Merciful'.

29) So, (Muhammad) keep reminding them; for by the Ni'amah 'Grace' of your, (Muhammad's) 'Sustainer', who is Rabb, you are not a Kaahinin 'Sorcerer, Soothsayer/Cohen', or a Majnuwn, 'Possessed Of A Jinn'.

30) Or do they, (those who have no faith) Say: 'He, (Muhammad) is just a Shaa'ir 'Poet'. Natarabass 'We Will Wait,' and see His Rayb 'Doubt.' It will come in time!

31) Tell them this (Muhammad): "You just wait! For indeed, I will be with you waiting for the Rayb 'Doubt' in (Al Qur'aan)."

32) Or do you order them to think like this, or are they a nation of Taaghuwn 'Tyrants'?

33) Or do they, (the Meccans) say: 'He, (Ahmad) Taqwaluhu 'Has Made Up These Speeches', (the Qur'aan). In fact, they just don't Tuw'minuwn 'Have Any Faith'.

34) So let them (desert Arabs) come forth, with Hadiyth 'Tales' (all their man made hadiths) Mithlihi 'Like It', (Al Qur'aan) if they are to be Saadiqiyn/Zodoqites, 'Trusted!'

35) Or were they Khuliquw 'Created' without using anything, or are they Al Khaaliquwn 'The Creators'?

36) Or did they create Al Samaawaat 'The Skies' and the

planet Earth 'Qi'? In fact, they are not Yuw'qinuwn 'Certain' (as to how it all came about.)

37) Or do they have Khazaa'in 'Treasures' of your, (Muhammad's) Rabb, or are they Al Musaytiruwn, 'The Ones Who Preside Over All Things'?

38) Or do they have A Sullam, 'Ladder' - (a means to the Heavenly Skies), so that they can hear in it, (the Heavenly Skies)? So let there come forth from those who listen, A Mubiyn 'Clear' Sultaan 'Authoritive Power' (An Eloheem).

39) Or is there for him, (Muhammad), Banaat 'Daughters', and you, Banuwn 'Sons'?

40) Or did you, (Ahmad) ask them for A Arj 'Reward' that would put them in Muthqaluwn 'Heavy Debt' to you?

Do The Meccans Write The Unseen Down? - They Are The Makiyduwn - They Yushrikuwn With Allah - If They Would See A Segment Of The Skies Falling Down, They Would Say, 'It Is Only Clouds Gathered In A Heap' - Wait, Until They Meet Their Day Which Will Make Them Swoon With Terror - They Will Not Get What They Wanted - Muhammad Is Under The Anunnagis Eyes - He Is Told To Sabbih His Rabb - During The

Shadow Hour Periods And The Retreating Of The Nujuwu

41) Or is Al Ghab 'The Unseen' things in their possession, so Yaktabuwn 'They Write It Down'?

42) Or do they want to Kayd 'Plot'? So those are they who conceal that which they know to be the facts, (Al Qur'aan); they are The Makiyduwn 'Plotters'!

43) Or do they have an ILAAHUN (ALLAH) 'Source' other than The Source, ALLAH? Glory be to ALLAH from whatever they Yushrikuwn 'Associate Partners With (Other Deities).'

44) And if they were to only see A Kisfaan 'Segment' of Al Samaa-i 'The Heavenly Skies' Aaqit 'Falling Down' (how the meteorite shower hit the earth before) they would say: "Nothing but Sahaab 'Clouds' Markuwu 'Gathered In A Heap' (these are just black rain clouds. They try to explain the first destruction and the second creation by science)!"

45) So leave them, until they meet their own day, in which they will be made to swoon with terror.

46) A day in which they will not get what they want, nor be satisfied by that which they Plotted, (for they will get nothing), and they will not find

any aid.

47) And surely for Those Who Are Zalamuw, 'Unjust', there shall be a pain other than that; but most of them do not even know it.

48) So Asbir 'Have Patience', for the Hukmi 'Wisdom' of your, (Muhammad's) Sustainer, for surely you, (Ahmad) are with Our, ([Our Not My] Eloheem) eyes - (We watch over you), and Sabbih 'Glorify' with (the) Hamd 'Gratitude' of your 'Sustainer' Rabb, when you stand up, (for worship - Al Salaat).

49) And of the Layl, 'Shadow Hour Period': (His late night prayers, Salaatu'l Isha), so glorify Him (Him Not Us), and the Idbaar 'Retreating' of Al Nujuwu 'The Stars' (into the Early Shadow Hour Period for Salaat al Fajr).

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Seventy-Seven

Revealed In The Year 617 A.D.

Mulk

(The Rulership)

Original Order Chapter 77;

Wrong Order Chapter 67

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,

Who Is The Most Merciful.

Blessed Is He, Allah Whose
Mulk Is Over All Things
-He Khalag The States Of
Life And Al Mawtaa. To
Try You All -You Won't See
Any Tafaawut In The
Rahman's Creation -Return
Your Basar, And It Will
Return To You, Khaasi' -
Anunnaqi Adorned The Sky
Of The Dunyaa With
Masaabiyyh, To Cast Rujuwn
At The Satans, The
Reptilians - Those Who
Conceal The Facts, Their
Pain Is Jahannam - They
Will Be Asked, Whether A
Nagiyr Came To Them?
-The Enosites In Purgatory
Say, 'If Only They Would
Have Listened Or Used
Intelligence, They Would Not
Be Companions Of The Fire

77 Tabaarak 'Blessed' is He (He Not We), Be-Yadihi 'With His Hands' is Al Mulk, 'The Rulership' (over all things), and He is Qadiyr 'Powerful' Alaa 'On (Over)' all things.

2) He (He Not We) is who Khalag 'Created', Al Mawt 'The Death', and Al Hayaawat 'The Life', in order to try you all as to which of you is best in deeds, and He is the Al 'Aziyy, 'The Mighty,' Al Ghafuwr 'The Forgiver.'

3) He, (He Not We) is who also created Sab'a 'Seven' Samaawaat, 'Heavenly Skies' in Tibaaq 'Planes, one above another' (7 Spheres: 1. Troposphere 2. Stratosphere 3. Mesosphere 4. Thermosphere 5. Exosphere 6. Heterosphere 7. Homosphere), and you will not see in Al Rahman 'The Yields' Khalq 'Creation', any Tafaawut 'Imperfections' (there are many people born deformed, ect.). So return your sight, (look again), do you see any Futuwr 'Flaws? (Many).'

4) Then return your Basar 'Sight,' Karatayni 'Look Twice Again' and your sight will Yanqalib 'Return' to you Khaasi 'Dull' and he is Hasiyr 'Weary.' (You will look until your eyes get tired).

5) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have Zayyannaa 'Adorned' Al Dunyaa 'The Lower' (the physical world) Al Samaa-a 'Sky' (the solar system on this side of the asteroid belt) with Masaabiyyh 'Brilliant Lights, (Crafts Like Stars)'; and We (Eloheem Anunnaqi) made them, (the ships) to Rujuwm 'Throw Like Stones' Lil-Shayaatiyn, 'For Satans, The Reptilians' and We (Eloheem Anunnaqi To Shoot At The Evil Ones) have prepared for them, a pain of Al Sa'iyr 'The Flaming Hell's Fire'.

6) And as for those who conceal

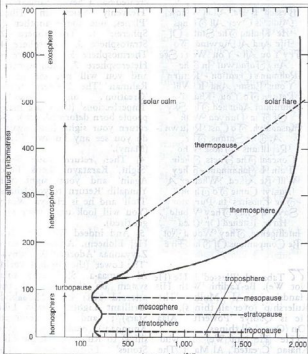


Diagram 34
The Seven Spheres



Diagram 35
The Many Flaws Of Creation

that which they know are the facts about their Sustainer, 'Rabb,' there pain is Jahannam 'Purgatory', and misery is their Masiyr 'Destination.'

7) When they, (the concealers of the facts) Are Ulquw 'Cast' into it, (Purgatory), they shall hear it Shahiyq 'Roaring' and Tafuwr, 'Foaming Up.'

8) Almost exploding with Al Ghayz 'Raging Anger'; whenever a Fawj 'Troop' is cast into it, (Purgatory), Khazanatuhaa 'Its Keepers' (guards) shall ask them, (the Enosites in Jahannam): "Didn't a Naziyr, 'Warner' (Muhammad) come to you?"

9) They, (the Enosites in Jahannam), shall say: "Yes indeed, a Warner had come to us, so we, (the companions of Purgatory) lied and said he was not sent with anything from ALLAH, if you all are but in Kabiyr 'Big' Dalaal 'Error.'

10) And they, (the Enosites in Purgatory) shall say: "If we would have listened, or used Na'qil 'Intelligence', we would not be with the companions of Al Sa'iyir 'The Flaming Hell's Fire'.

*They Will Be Suhqaan
From Allah, And Know
Their Own Zanb - There Is
A Maghfirah For Those Who
Dread Their Sustainer - The
Source Knows The Essence
In Everyone's*

*Chests - He Made The Planet
Qi Levelled, So That You Can
Walk In Its Manaakib - How
Are You So Sure, That
Allah Won't Put You
Beneath The Earth, In
Graves? - Those Before
Them, Didn't Listen, And
They Had A Terrible
Retribution - No One Can
Hold Up The Jayr, Except
Allah - The Rahman's Troops
Are Your Only Aiders*

11) So they shall know their Dhanb 'Faults', so then they will be Suhqaan 'Too Far' (from forgiveness) for the companions of Al Sa'iyir 'The Flaming Fire Of Hell'.

12) Surely, those who dread their Sustainer by being seen, (in private), for them is Maghfirah 'Forgiveness,' and a Kabiyr 'Big' reward.

13) And whether you keep your words Asirruw 'Secret', or let them Ajharuw 'Manifest', surely He (He Not We) knows by the Dhaat 'Essence' that which is in your Suduwr 'Chest.'

14) Doesn't He (He Not We) who created Ya'alam 'Knows?' And He is Al Latiyf 'The Subtle', and Al Khabiyr 'The Aware.'

15) He (He Not We) is who Ja'ala 'Made', Al Ard 'The Planet Earth/Qi', Dhaluwlaan 'Levelled' for you all, so Amshuw 'Walk,' in its Manaakib 'Highlands' - (go about in the spacious sides of it);

and eat from Rizqihi 'His Provisions,' and to Him (Him Not Us) will you be Al Nushuwr 'Raised From The Dead (Resurrected).'

16) Are you so sure, that He (He Not We) who is in Al Samaa 'The Heavenly Sky,' will not Yakhsifa 'Cause You To Be Swallowed (Buried) Beneath' by the planet Earth, 'Tiamat' (in graves)? So then, it, (Tiamat) Tamuwru 'Shakes (Pass Through A State Of Commotion).'

17) Or do you have faith that who is in Al Samaa-i 'The Heavenly Skies', should not send down upon you a Haasib, 'Violent Wind?' So you shall know how My (My Not Our) warning is.

18) And Indeed, those before, them lied (and refused to have faith that the warnings were for real, facts); how terrible was My (My Not Our) Nakiyr 'Disapproval!'

19) Don't they see to Al Tayr, 'The Birds' (flying) Fawqahum 'Above Them' in Saaffaat, 'Rows,' (outstretching their wings) and Yaqbidna 'Contracting Them'? None can hold them up there, except Al Rahmaan 'The Yelder', for surely He (He Not We) is a Basiyr 'Overseer' over everything.

20) Or who is this, whose Jund 'Armies' will be for you all, as aiders, other than Al Rahmaan

'The Yelder'. Surely, the ones who conceal that which they know to be the facts are only in Ghuruwr 'Deception'.

Who Can Provide You All With Provision Other Than Allah? - Is The One Groveling On His Face Andaa Than He Who Stands Up Straight And Firm? - The Source Gave You The Ability To Hear, And Inner Sight, And Afidah - All Of You Will Be Gathered To Allah - The Knowledge Of The Date Is With Allah - When The Last Day Comes, The Concealers Of The Facts, Faces Will Grieved - Muhammad Asks The Meccans, Who Can Protect The Concealers Of The Facts, If Allah Destroys Him And His Ahl Al Bayt? - The Source, Allah Is The Rahman - If Your Water Runs In A Ghawr, Then Who Will Be Able To Bring You A Ma'ayn?

21) Or who is this whom will Yarzuqukum 'Provide You All With Provision' if He Was To Withhold, Rizqahu 'His Provisions'; But in fact, they still persist in Utuwaan 'Insolence' and Nufuwr 'Aversion.'

22) Is one who walks around Mukibb 'Groveling' on Wajhihi 'His Face', (pretending to be

religious Muslims Better) Ahdaa 'Calmed' or is he who walks upright on the Siraat Mustaqiym 'Narrow Path Of The Ones Who Stand Up Straight And Firm?'

23) Tell them: He (He Not We) is who Ansha'a 'Raised You All' (brought you all into being) and Ja'ala 'Made' for you all Al Sam'a 'The (ability to) Hear,' and Absaar 'Inner Sight', and gave you Al Af'idah, 'The Inner Hearts': (yet) little thanks is what you (give).

24) Tell them this: "He, (Yahuwa) is who Zara'a 'Scatters' you all in this planet Earth, 'Qi' (at the tower of Babel); and you all will be gathered to Him, ([Him Not Us] on the Last Day).

25) And they, (the Enosites of Ahmad's time) say: "When will this Al Wa'ad 'Promise' (of the last day come to pass), if you, (Muhammad and your followers) are Saadiqiyn/Zodoqites 'Truthful?'"

26) Qul, '(Muhammad you are to) tell them': "Surely the Ilm 'Knowledge,' (of this date) is in the possession of The Source, ALLAH, and I, (Ahmad) am only a Mubiyn 'Clear' Nadhiyr 'Warner'."

27) So when they see it, (the last day) Zulfatan 'Near At Hand', the faces of those who conceal that which they know to be the facts shall show grief. They will be told: This is what you have

been Tadda'uwn 'Calling For.'

28) O (Muhammad), tell them, (the Meccans): "Can't you all see that if, The Source, ALLAH was to destroy me, (Muhammad) and those with me, (his family: Ahl Al Bayt) or if He Rahimanaa 'Yields To Both Of Us' - (himself, and his family: Faatimah, Ali, Hasan, Husayn; Ahlil Bayt), so who will Yujiyr 'Defend,' the ones who conceal that which they know to be the facts from the 'Azaab Aliym 'Aching Pain?'"

29) Tell them this, (Muhammad): "He, is Al Rahman 'The Yelder.' We have faith by Him (Him Not Us), and put our trust on Him. So you all will know who is in a Mubiyn 'Clear' Dhalaalin 'State Of Error'."

30) (Ahmad), Tell them this: "Can't you see that if your Maa'a 'Water' becomes to Ghowr 'Run Under The Ground,' then who would be able to bring you with a Ma'iyn 'Fresh,' (source of) Maa-in 'Water?'"

Sudiqah Allahu El Aeim

Chapter Seventy-Eight

Revealed In The Year 617 A.D.

Haqqah

(The Reality, Facts)

Original Order Chapter 78:

Wrong Order Chapter 69

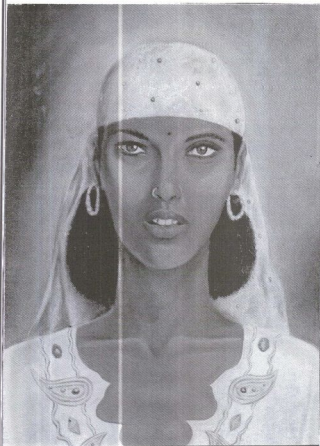


Figure 161

Figure 161 Faatimah

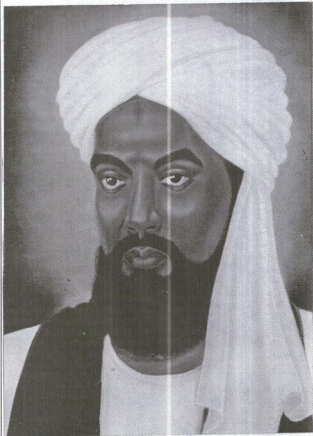


Figure 162
Amiyr'ul Mumiyn Ali

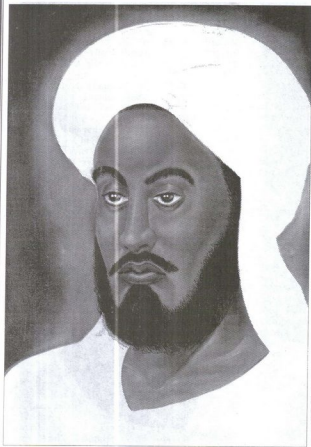


Figure 163
Hasan

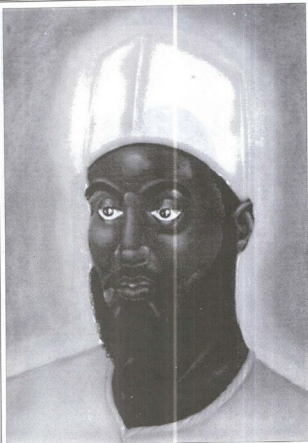


Figure 164
Husayn

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

What Is Al Haqqah?
- Enosites Of Thamud And
'Ad Called The Terrible
Striking A Lie - Thamud
Was Destroyed By Al
Taaghiyah - On The Other
Hand, 'Ad Was Destroyed
By A Violent Wind - Allah
Subjected Them, Into Seven
Layal And Eight Ayyaam Of
Miserable Succession - Now,
Do You See Them Here
Now? - The Cities That
Were Overthrown Were
Full Of Khatiyah - The
Enosites Of Sodom And
Gomorrhah Sought To Kill
The Anunnaqi Sent There

78 Al Haqqah 'The Reality'

2) And what is Al Haqqah 'The Reality'?

3) And what would make you, (Muhammad) Adraaka 'Perceive' what the reality is?

4) (The Enosites) of Thamud and (the Enosites) of 'Ad called Al Qaari'at 'The Terrible Striking', (the final blast) a lie.

5) So then as for (the Enosites) of Thamud, so they were destroyed by Al Taaghiyah, 'Storm And Thunder And Lightning.'

6) But as for (the Enosites) of

'Ad, so they were destroyed by a Sarsar 'Violent' Riyh 'Wind,' that 'Aatiyatin 'Roared With Fury' (a craft in the skies).

7) Which He (He Not We) Sakh-khara 'Made Them Subservient' (the Enosites of 'Ad), to seven Layaal, 'Shadow Hour Periods' and eight Ayyaam 'Days', in a Husuwmaan 'Miserable Succession', so that you could see that Qawm 'Kindred' Sar'aa 'Fell To The Ground' - in it as if they were old (decaying), hollow Nakhal 'Palm Trunks'.

8) So do you, (Muhammad) see any of them (the Enosites of 'Ad and Thamud) Baaqiyah 'Remaining'?

9) And then Pharaoh (Ramses II) came and those before him and Al Muw'tafikaat 'The Cities That Were Overthrown,' (Sodom and Gomorrhah) with Khatiy'ah 'Disagreeable Acts.'

10) And they, (the wicked Enosites of Sodom and Gomorrhah) disobeyed those sent from their Rabb 'Sustainer', (the Anunnaqi that visited Lot: Uriel/Kalkael and Raphael and Michael). So they took, upon themselves the punishment which was severe - (the destruction of Sodom and Gomorrhah).

The Eloheem Carried Noach
And His Family In A
Running Vessel - You All

Should Remember The
Eloheems Warnings - The
Trumpet Is Going To Be
Blown By Raphael - On
That Day, Tiamat Will Be
Thrown Off Of Its Orbit
- The Waaqi'ah Will Come
To Pass - The Samaa'a Will
Anshaqqat - Eight Eloheem
Will Carry The Throne Of
Your Rabb - You Will Not
Have Any Secrets - He Who
Is Given His Kitaab In His
Right Hand Will Say, "Here,
Aqraa."

11) Surely, when the water
Taghaa 'Overflowed' We ([We
Not He] Eloheem Anunnaqi)
carried you, (Noach And His
Wife Na'amah; Noach's Three
Sons And Their Wives: Kham
And Haliymah, Shem And
Faatin, Yafeth And 'Ifat, And
Lebana And The 80 Other
Beings With Them) in Al
Jaariyah 'The Running Vessel
(Ark).'

12) So that We, ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi), would
make you all remember and keep
listening with your Uzun 'Ears'
for that which you should
remember - (Our warnings).

13) So when Al Suwr 'The
Trumpet' (Shofar) is Nufikha
'Blown' by (Raphael) just one
Nafkha 'Blow.'

14) And the planet earth,
'Qi/Tiamat' is Humilat 'Carried
Away,' (thrown off its orbit);
and the mountains Are Dakkat

'Crushed' with one Dakkatan
'Crush',

15) On that day Al Waaqi'ah
'The Event,' (or the destruction)
will come to pass.

16) Al Samaa-u 'The Heavenly
Skies' will An-Shaqqat 'Shatter
Into Pieces,' so it is on that day,
it will all Waahiyah 'Fall Apart'.

17) And Al Malaku 'The
Angelic Messengers', (Eloheem,
Anunnaqis) on Arjaa-ihaa 'Its
Sides', (of the heavenly skies),
Thamaaniya 'Eight' of them will
Yahmil 'Carry' the Arsha
'Throne' of Rabika 'Your
Sustainer', who is Rabb,
Fawqahum 'Above Them'.

18) On that day, you will be
displayed, nothing made hidden
from you will be hidden.

19) So as for him who is given
his scripture, (record of deeds) in
Yamiynihi 'His Right (Hand',
the pure side), then he will say:
"Here, Aqraa 'Read' Kitaaabiy
'My Scripture Of It,' (Record of
Deeds)."

He Thinks, One Day, He
Would Meet Up With His
Good Deeds - He Will Be
Raised On High In The
Jannat - In It, Are Bunch
Of Grapes - They Will Be
Sold To Drink And Eat At
Pleasure - He Who Is Given
His Book Of Deeds In His
Left Hand, Will Wish That
He Wasn't Given His Book -
He Wishes

**For Death - Maalik 'Will
Take Him And Shackle Him**

20) Surely, I Zanantu 'Thought,' that I would meet up with my account, (good deeds one day).

21) So He is Raadiyah 'Contented' in 'Tyshatin 'Life'.

22) In A Jannat 'Garden,' Aaliyah 'Raised On High'.

23) Within it, (the Enclosed Garden Of Delight) are Qutuwf 'Bunches Of Grapes' that are at a hand's reach'. (There are grape vines in heaven).

24) They will be told to eat and drink Haniy'a 'Pleasantly' of that which is Aslaf 'Proper' for all of you, (for all the agreeable you have done) in the days which have passed. (In your life, you were good.)

25) And as for him who is given Kitaabuhu 'His Scripture', (Book of Deeds) in his Shimaal 'Left (Hand' the impure side), he will say: "If Only, I have not been given my scripture, (book of deeds)."

26) And then, I would never have known what Hisaabiy 'My Account' was; (my disagreeable deeds).

27) Oh how I wish it, (the death) was Al Qaadiyah 'The Total End.'

28) My wealth cannot Aghnaa 'Profit' me in any way!

29) Sultaanayah 'My Authority' is Halaka 'Gone From' me.

30) He, (Maalik, the Eloheem over Hell) will take him, so Ghullu 'Shackle' him.

**He Will Be Bound In
Jahiyim - The Chain 'Will Be
Seventy Arms Length - He
Was Not Faithful To Allah
- He Doesn't Have A
Hamiym, Nor Any Ta'aam
- Doers Of Disagreeable Acts
Will Eat From Ghisliyn
- Qur'aan Saying Of A
Generous Rasuwl**

31) Then Salluwahu 'Burn Him' in the Jahiyim 'Blazing Hell'.

32) Then let him Aslukuwahu 'Tread Him' with the Silsilah 'Chain' of the shackle, which will only be Sab'uwn 'Seventy' arms length (this is a place with a torture chamber).

33) Surely, he was not Muw'min 'Faithful', to The Source, ALLAH, Al 'Aziym, 'The Supreme.'

34) And he did not even Yahuddu 'Encourage,' the feeding of the poor settlers.

35) So therefore, he does not, have a Hamiyim 'Hamite, Nubian Brother.'

36) Nor any Ta'aam 'Food', except from the Ghisliyn '(Filth Of The Bodies When) Washed.'

37) None except the Khaati'uwn, 'Doers Of Disagreeable Acts' will eat of it.

38) So I don't Uqsim 'Swear' by that which is Tubsiruwn 'Visible

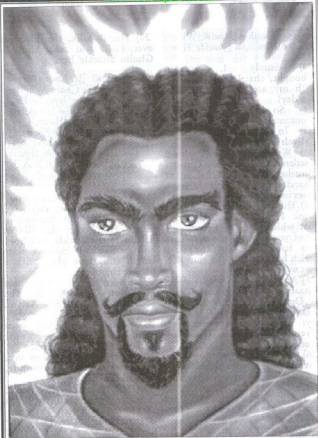


Figure 165
Maleek, The Eloheem Over Hell

To You,' (he whom was given his scripture, the Book of Deeds in his left hand).

39) And by what is not visible to you - (he whom was given his scripture, the Book of Deeds in his left hand.)

40) Surely it, (the Qur'aan) is verily the Qawl 'Saying' of a Kariym 'Generous' Rasuwl 'One Sent', (Muhammad).

The Qur'aan Is Not The
Saying Of A Poet - Nor Is
It The Saying Of A Kohen
- The Qur'aan Is Sent Down
From The Rabb Of All The
Known Worlds - If
Muhammad Made Anything
Up About The Eloheem,
They Would Have Punished
Him - The Qur'aan Would
Have Been Cut Off From
Him - No One From You
Can Make A Haajiz Between
Allah In The Heavenly Skies
- The Qur'aan Is A Dhikr -
Some Of The So-Called
Muslims Are Liars About It
- The Qur'aan Brings Grief
To The Kaafiriyn - Ahmad
Glorify Your Rabb By Using
His Asm

41) And it, (the Qur'aan) is not the Qawl 'Saying' of a Shaa'ir 'Poet'; however, very few of you have faith in it, (the Qur'aan).

42) Nor is it, (the Qur'aan), the Qawl 'Saying,' of a Kaahinin 'Cohen, (Jewish High Priest)';

little is what you (bother to) remember (of the Qur'aan).

43) It, (the Qur'aan) is Tanziyl 'Sent Down' from the Sustainer, who is 'Rabb,' of the 'Aalamiyn, 'Known Worlds.'

44) And if in his, (Ahmad's) talks, he made anything up about Us, ([Us Not Me] Eloheem, Anunnaqi) when Aqaawiyl 'Speaking,'

45) Verily We (We Not He) would have taken him, (Muhammad) by the right (hand) - (chastised him by his hand like a parent not a dcity).

46) Then verily We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) would have Qata'a 'Cut Off' the Watiyn 'Aorta' from him (Muhammad).

47) So Ahadin 'One Of You', could not have made a Haajiziyn 'Barrier' from him, (The Source in the Heavenly skies).

48) And surely it, (the Qur'aan) is a Tadhakiratun 'Reminder', for those who Muttaqiyn 'Tremble At The Mentioning'.

49) And surely We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) know that some of you, (so-called Muslims) are Mukazzibiyn 'Liars' (about the Qur'aan).

50) And most surely it, (Al Qur'aan) is a Hasrah 'Grief,' on Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts'.

51) And surely it, (Al Qur'aan) is a Yaqiyn 'Absolute' fact (beyond

any doubt).

52) So (Ahmad) Sabbih 'Glorify' your Rabb, Al 'Aziym 'The Supreme', by using His (His Not Our) Asm 'Name'.

Sudika Allahu 'El Azim

Chapter Seventy-Nine

Revealed In The Year 617 A.D.

Al Ma'aarij

(The 'Elevation)

Original Order Chapter 79;

Wrong Order Chapter 70

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Wassar Ibn Al Halth Asked About The Waaqi - The Pain Is For The Ones Who Conceal That Which They Know To Be The Facts - The Source Is The Essence To The Way To Elevate - The Measure On That Day Will Be Fifty Thousand Years To The Concealers Of The Facts - Muhammad Told To Be Patient - The Faithful Sees The Day Of Judgment As Being Very Near - The Heavenly Skies Will Be As Lava - The Mountains Will Be As Lakes Of Wool - No Friend Will Ask About His Hamiym

79 He, (Wassar Ibn Al Halth) asked a question about the pain which Waaqi 'Must Happen.

2) For the ones who conceal that which they know to be the facts, none of them will get away from it, (the pain).

3) It, (the Day of Judgment) is from The Source, ALLAH who is the Dhiy 'Essence' of Al Ma'aarij 'The Way All Elevate' (To Malakuwt).

4) Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers (Eloheem, Anunnaqi)' and Al Ruwh 'The Soul, (Michael), will Ta'ruj 'Elevate' to Him (Him Not Us), in a day that will measure (to those who conceal that which they know to be the facts) as Khamsiyn Alf Sanah 'Fifty Thousand Years' (2 Equinox's Away).

5) So, (Muhammad), be Asbir 'Patient' for patience is Jamiyl 'Beautiful.'

6) Surely they, (the ones who conceal that which they know to be the facts) see it, (the Day of Judgment) as Ba'iyyd 'Far Away.'

7) And we, (the faithful) see it, (the Day of Judgment) as Qariyb (Very) 'Near.'

8) That day, (the day of judgment), Al Samaa-u 'The Heavenly Skies' will be as Muhl 'Fused Brass, (Lava).'

9) And Al Jibaal 'The Mountains' will be like 'Ahni (Flakes) Of Wool'.

10) And no Hamiym 'Hamite

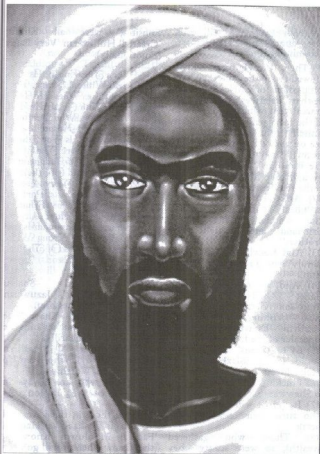


Figure 166
Wassar Ibn Al Halth

(Nubian Brothers)' will even ask about his Hamiymaan 'Hamite Brothers'.

11) They, (the Hamites) will be allowed to see the ones they have compassion for - (friends, mates, brothers, relatives); the one who conceal that which he knows to be the facts will wish to redeem himself (from the pain of hell's fire on that day, by even) using his own Baniy 'Sons' as Yaftadiy, 'He Ransoms'. (He is going to try and give his grand children to the retailers as ransom).

12) And his, (the concealers), Saahibaat 'Female Companions', (the women with him - girlfriend) and Akhiyhi 'His Brother'.

13) And Fasiylatihi 'His Noble Family' who Ta-wiyhi 'Sheltered Him'.

14) And all who are in the planet Qi/Tiamat, 'Earth' Jamiy'aan '(Gathered) Together', then (wishing they could) Yunjiyhi 'Deliver Him', (the concealer of the facts).

15) By no means! For it surely would Lazaa 'Blazes Fiercely' (Hell's Fire).

16) Plucking out for (the scalp) to Shawwaa 'Scald.'

17) It, (Hell) will call all those who turn their backs (on the facts);

18) Those who gathered (wealth), so were scanty (they did not give Zakaat).

19) Surely Al Insaan, 'The

Enosites,' were all Khuliq 'Created' Huluw'aan 'Very Eager' (Emotionally).

When The Enosite Is
Inflicted With Al Sharr, He
Is Fretful - When He Is
Inflicted With Good, He Is
Stingy - Those Who Perform
Salaat, Build Masaajid -
Their Wealth Is For The
Saa'il - They Are Truthful
To The Day Of Judgment,
And Are Afraid Of Their
Rabb's Pain - They Also
Guard Their Private Parts -
Those Who Follow That
Law Will Not Have Any
Blame - Muhammad Is
Asked, What Is Wrong With
The Concealers Of The
Facts?

20) When Al Sharru 'The Wickedness' Jazuw'aan 'Impatiently' touches him.

21) And when Al Khayr 'The Good,' (wealth) touches him, he is Manuw'aa 'Niggardly.'

22) Except for, Al Musalliyn 'Those (Wealthy), Who Keep Up Salutation As Worship'.

23) Those who are always in their Salaat 'Salutation As Worship';

24) And those in their Amwaaal 'Wealth' is (realized as) Haqqun 'Factual' Ma'aluwm 'Knowing', (they know where it will go).

25) It's, (their wealth) for Al Saa'il 'The One Who Ask For

Aid' and Al Mahruwm 'the Ones Forbidden' (to ask, but needs).

26) And those who are Yusaddiquwn 'Truthful' to the day of judgment.

27) And those Mushfiqwn 'Who Are Dreadful' of their Rabb 'Sustainers' pain.

28) Surely the Rabbs, 'Azaab 'Pain' is not to be taken for granted.

29) And those who guard their Furuwj 'Private Parts' - (sexual organs).

30) Except for in the case of their Azwaaj 'Mates' (those taken in marriage by contract) or that which your right hand possesses, (women you take care of, or taken in from battle as booty; common law). So surely, they, (those who follow this law), will have no Maluwm 'Blame.'

*Those Who Seek Anything
Beyond That, Are Al
'Aaduwn - The Mukramuwn
Are Those Who Are Faithful
To Their Vows And 'Ahd, -
And They Stand Firm To
Their Shahaadah - They, The
Concealers Of The Facts, Go
All Around Ahmad, Making
Fun Of Him - How Do
They Expect To Enter Al
Jannat? - Eloheem Khalaq
The Non-Muslims Also*

31) So whoever desires (seeks) anything after that (laws on sex), these are they who are Al

'Aaduwn 'The Transgressors.'

32) And those who (have) respect for their faiths and their Ahd 'Covenant' (Marriage Contracts);

33) And those who Qaa-imuwn 'Stand (Firm)' by what they watch;

34) And those who always guard their Salaat 'Salutation As Worship';

35) These are those who are to be in the Makramuwn 'Generous' (honored) Jannaatin 'Gardens'.

36) So what is with those who conceal that which they now to be the facts, that they rush Qibalaka 'Towards You,' (Muhammad looking strange).

37) All about you, (Ahmad) on your Al Yamiyn 'Right Side,' and your (Muhammad) Al Shimaal 'Left Side' are crowds (to make fun of you).

38) Does every Amrin 'Commander' of them hope to enter the Na'iym 'Gentle' Jannat 'Garden'?

39) On the contrary surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnagi) Khalaqnaahum 'Created Them' from what Ya'lamuwn 'They Know'.

*Gabriel Swears By Allah,
That The Anunnagi Are
Holders Of Fate - They Can
Change Them With Better
Enosites - Leave Them The
Non-Muslims In*

*Play - The Non-Muslims
Will Come Out To Their
Ajdaas*

40) But no! I, (Gabriel) swear by the Rabb 'Sustainer' of Al Mashaariq 'The East' and Al Maghaarib 'The West' that surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Laqaadiruwn 'Certainly Hold Fate' (We do the work of ALLAH by His command).

41) That We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Nubaddila 'Change' them, (non-Muslims) with better Enosites than them, (is nothing for Us, (Anunnaqi) to do), and nothing can prevent Us (Us Not Me) from doing it.

42) So leave them, (the non-Muslims) to blunder and play until they, (the non-Muslims come face to face), meet with their day, (day of judgment); that is promised for them, (the non-Muslims).

43) The day they come out from Al Ajdaath 'The Sepulchres' in haste, as if they were rushing to their Nusubin 'Idols'.

44) Khaashiah 'Humbling' their, (non-Muslims) sight which overburdens them in Zillah 'Disgrace', that is the day which was promised, (the Last Day).

Sudiqā Allahu El Azim

Chapter Eighty

Revealed In The Year 617 A.D.

*Al Nabaa'a
(The News)
Original Chapter 80:
Wrong Order 78*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*What Are The Enosites
Asking Each Other About? -
Is It About The Supreme
Nabaa, In Which They
Differed In? - Did Anunnaqi
Make The Planet Earth As A
Landscape To Live On? - And
The Mountains As
Landmarks? - Didn't Eloheem
Create The Enosites In
Pairs? - And Made The
Enosite's Sleep A Time For
Resting?*

80 What are they, the Enosites, asking each other about?

2) It is about the 'Aziym 'Supreme' Nabaa 'News'.

3) That which they, are Mukhtalifuwn 'Differing In.

4) Nevertheless, they (Enosites) will soon learn!

5) Then nevertheless, they will (really) Ya'lamuwn 'Learn'!

6) Did We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) not make the planet Earth, 'Qi/Tiamat' in Mihaadaan 'Spread Out (Landscapes To Live On)?

7) And the mountains as
Awtaadaan 'Landmarks'?

8) And We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) Khalaq
'Created' you (Enosites)
Azwaajaan 'As Mates' (in pairs;
male and female).

9) And We ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi) made your,
(Enosites') Nawm 'Sleep' a
Subaataan 'Time For Resting'.

10) And We ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi) made Al
Layla 'The Shadow Hour Period'
a (total) Libaasaan 'Covering'.

*The Eloheem Made The
Daytime For The Making Of
Livelihood - And They Built
Seven Strong Firmaments -
And They Made A Bright
Light - They Also Sent
Down Water - Eloheem Also
Brought Forth Grain - And
Jannaat Of Thick Foliage -
Day Of Judgment Is
Appointed - The Trumpet
Will Be Blown By Raphael
- The Heavenly Skies Will
Be Opened - And The
Mountains Were Made To
Move As They Are A Mirage*

11) And We ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi) made Al
Nahaar 'The Daytime' for the
making of livelihood.

12) And over you, We ([We Not
He] Eloheem Anunnaqi) Banay
'Built' Sab'aan 'Seven'
Shidaadaan 'Forceful' (Lasting)

Firmaments'.

13) And We, ([We Not He]
Eloheem Anunnaqi) made a
Wahaajaan 'Brightly Burning'
Sirajaan 'Lamp' (a shining sun).

14) And by Al Mu'siraat 'The
Squeezing' (of the clouds), We
([We Not He] Eloheem
Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent'
water pouring down (rain).

15) So that We, ([We Not He]
Eloheem, Anunnaqi) could bring
forth grain and plants.

16) And Jannaat 'Gardens' of
thick foliage.

17) Surely the day of Fasl
'Distinction' (between that
which is agreeable and that
which is disagreeable) is
Miyqaataan 'Appointed' - (the
end of all this).

18) A day when Al Suwri 'The
Trumpet' will be Yunfakhu
'Blown', (by the Eloheem,
Anunnaqi Raphael) so you will
come in Afwaajaan 'Separate
Groups' - (the Negroid,
Mongoloid and Caucasoid Race).

19) And Al Samaa-u 'The
Heavenly Skies' will be Futihat
'Opened' (the vortex) as like
Abwaabaan 'Doors'.

20) The mountains were made
to move, as if they were a
Saraabaan 'Mirage' (dimensional
shifts).

*Jahannam Will Be Waiting
For The Humans - It Is
The Final Place For Those
Who Go To The Extreme*

Wrong - They Will Be
 Staying In It For Long
 Periods Of Time - They
 Will Have Nothing To
 Drink, Except For Boiling
 Water And Pus - Enosites
 Didn't Anticipate The Day
 Of Reckoning - Enosites
 Denied The Qur'aan -
 Anunnaqi Recorded
 Everything Enosites Do In A
 Book - Eloheem Will
 Increase Their Pain

21) Surely, (they Enosites will find) Jahannam 'Purgatory' was Mirsaadaan 'As (A Place) Of Ambush'.

22) It will be the final place for those who go to any extreme to do wrong.

23) Staying in it, (Hell, Purgatory) for long periods of time.

24) In it, (Hell) they, (Enosites) will taste nothing Bardaan 'Cool', and no Sharaabaan 'Drink'.

25) Except for boiling water and Ghassaaqaan 'Pus'.

26) A punishment fitting their (Enosite deeds).

27) Surely they, (Enosites) didn't anticipate the day of reckoning - (the End).

28) And they, (Enosites) lied (denied) Bi-Aayaatinaa 'With Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi) Verses', (the Qur'aan) and denied them.

29) And everything, (that

Enosites do), We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have Ahsaynaahu 'Kept It Safe (recorded it down) in Kitaabaan 'A Book' (The Akasha Records).

30) So taste (the fruit of your Enosites' deeds), so We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will not increase for you (Enosites) nothing except pain.

31) Surely, for those who tremble at the mention, will be in Mafaazaan 'A Place Of Refuge' (a blissful abode).

32) Hadaa'iq 'Gardens' and Aa'anaabaan 'Vineyards'.

33) And there will be Kawaa'iba 'Young Pubescent Maidens' of the Atraab 'Same Age' - (all are the age of 19).

34) And a cup running over (with goodness).

35) In it, (the garden), they will not hear any lies or Laghwaan 'Vain Talk'.

36) This is a reward from your 'Sustainer' who is Rabb: a very satisfying gift.

37) The Rabb of Al Samaawaat, 'The Skies' and Al Ard 'The Planet' Qi/Earth' and (all) that which is between them is Al Rahman 'The Merciful'; none will possess from Him ([Him Not Us] the right) to Khitaabaan 'Address' (orate Him).

38) On that day, The (Holy) Ruwh 'Soul': (Michael) and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) will Yaquwm 'Stand'

in Saffaan 'Ranks', and no one will Yatakalam 'Speak' except him, whom The Source, ALLAH Al Rahmaan 'The Merciful', has Adhina 'Given Permission' to; and he will say Sawaabaan 'Who Is Right'.

39) That is the day of Al Haaq, 'The Facts' so whoever pleases, he may take a place of return unto his Rabb.

40) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) surely warned you, (Enosites) of a pain that is very near: a day when Al Mar-u 'A Person' will see that which he committed - (the agreeable and the disagreeable) of his own hands; and Al Kaafir 'He Who Conceal That Which He Knows To Be The Facts', will say despairingly: "If only I was Turaab 'Dust'."

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Eighty-One

Revealed In The Year 617 A.D.

Naazi'aat

(Those Who Violently Pull Out)

Original Order Chapter 81:
Wrong Order Chapter 79

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

Nusqu Swore By Those

Eloheem That Violently Pull
Out The Souls Of Men - And
Those Who Gently Remove
The Souls Of Enosites - And
Those Who Swiftly Float
Downward For The Souls
Of The Faithful - And Those
Who Advance Speedily With
The Souls To Paradise -
These Anunnaqis Are The
Directors Of Their Rabb's
Command - There Will Be A
Great Trembling On That
Day - The Inevitable Will
Follow It - Hearts Will Be
Throbbing With Fear - Their
Eyes Will Humbly Be
Downcast - Those Who
Reject The Faith Mockingly
Say, Will They Revert To
Their Original State?

81 And Al Naazi'aati 'The
Gharqaan 'Violent' Plucking
Out' (by the Eloheem Anunnaqi
of the souls of the wicked ones).

2) And by those (Eloheem,
Anunnaqi) who gently remove
(the souls of the righteous ones).

3) And by (the Heavenly Hosts)
who swiftly float (downward for
the soul of the faithful in crafts
called Sham).

4) And by them, (Anunnaqi)
that speedily advance (with the
souls to Paradise).

5) So these (Anunnaqi) are Al
Mudabbiraat 'The Directors' of
the Amraan 'Command'.

6) On a day when there will be

a great trembling, the shake of shakes.

7) And the inevitable shall follow it.

8) On that day, hearts will be Waajifatun 'Throbbing' (from fear).

9) Their sights will be Khaashi'atun 'Humbly (Downcast)'.

10) In (mockery of this day), they (rejectors of faith) used to say: "Shall we Marduwdown 'Avert' (return back) Fee 'In' (to) Al Haafirat 'The Original State' (back to ape man, shaggies, from homo sapien back to homo erectus)?"

Enosites Want To Know Will They Be Returned To Life After Death? -

The Trumpet Will Be Just One Cry - The Enosites Will All Re-Awaken - Didn't The Hadiyth Of Mosheh

Come To Ahmad? - When His Sustainer Called Him In The Valley Of Tuwa? - Telling Him To Go To Pharaoh

Ramses II - Mosheh Is To Ask Him, 'Does He Want To Purify Himself?' - And Mosheh Is To Lead Him Into Calmness To His Rabb - Mosheh And Aharown Showed

Him The Most Exalted Sign

11) Will we, (Enosites be returned to life even after)

'Izaamaan 'Our Bones' are Nakhirah 'Rotten?'

12) They say: "Then to return (to life after this), that will be a loss."

13) Verily it, (the sound of the trumpet) will be just one cry.

14) And behold, (they, Enosites) will (all) Saahirat 'Reawaken'.

15) Didn't the Hadiyth 'Tales' of Mosheh, come to you (Muhammad)?

16) When his 'Sustainer,' Rabb (The Yehweh Of The Eloheems) called him, in Al Muqaddas 'The Holy' Waad 'Valley' Tuwa, near Mount Sinai?

17) Saying: "Go to Pharaoh, (Ramses II) for surely he goes to any Taghaa 'Extreme To Do Wrong'."

18) And say to (Ramses II): "Do you desire to Iazakas 'Purify Yourself?'"

19) And I, (Mosheh) will lead you (Pharaoh Ramses II) into calmness to your 'Sustainer/Master', Rabb so that you (Ramses II) dread Him (Him Not Us).

20) So he, (Mosheh) showed him, (Ramses II), Al Kubraa 'The Biggest' Aayaat 'Sign' - (the miracle. Mosheh told Aharown to take his rod and cast it before Pharaoh and it became a serpent);

21) So he, (Pharaoh Ramses II) (called the miracle) a lie (an illusion), and he still 'Asaa 'Disobeyed'.

22) Then he, (Ramses II) turned his back and left in haste.

23) So he, (Ramses II) gathered (the Egyptians/Mizraimites) so he Naadaa 'Made A Call (Proclamation)'.

24) So He, (Ramses II) said: "I am your Rabb, Al A'alaa 'The Most High'.

25) So The Source, ALLAH took a punishment for him (Ramses II for this statement), in Al Aakhirat 'The End' and Al Uwlaa 'The Beginning'.

26) Surely, there is warning in that for those who dread (The Source).

27) Are you, (Enosites) Ashaddu A More Forceful' (harder) Khalqaan 'Creation' or Al Samaa-u 'The Heavenly Sky' Banaahaa 'Which He (He Not We) Built'?

28) He (He Not We), Rafa'a 'Raised Up' it, (the sky's) Samkaa 'Heights' so Sawwaahaa 'He Perfected It'.

29) And He (He Not We) made it, (the skys) Laylahaa 'Shadow Hour Periods' Aghtash 'Dark', and Akhrajaa 'Brought Out' (of the sky) its' Duhaahaa 'Bright Early Daytime Hours'.

30) And afterward He (He Not We), Dahaahaa 'Condensed' the planet Qi (After Tiamat Split Into Two Parts, Then He ANU Condensed It).

31) And from it, (the planet Earth), He (He Not We), brought forth its water (springs) and

Mar'a 'Pastures'.

32) And He (He Not We) firmly placed the mountains,

33) As a temporary provision for you all and your An'aam 'Cattles'.

34) So when the big calamity comes.

35) The day when Al Insaan 'The Enosite' shall Yatadhakkar 'Remember' that which he strove (for the agreeable and the disagreeable).

36) And Jahiym 'Hell' shall be displayed for whoever sees.

37) So for he who goes to any extreme to do wrong,

38) And have preferred the life of the Dunyaa 'Physical World.'

39) So surely Jahiym 'Hell' shall be the place of abode (for him).

40) And as for him who fears the Maqaam 'Raising Up' of his Rabb 'Sustainer,' and forbids himself from following, Al Hawaa 'The Love' (Vain Desires, Inclination).

41) So surely the Garden shall be the place of abode for him.

The Meccans Ask Ahmad About The Hour. When It Will Come - Muhammad Keeps Reminding Them Of It - Only Your Rabb Knows Its Precise End - Muhammad Is A Munzir To Those Who Dreads It

42) They, (those who associate partners of Mecca), ask you,

(Ahmad) about Al Saa'at 'The Hour'; when will its time be?

43) Of which you, (Muhammad) keep reminding them, (those who associate partners).

44) Only your Rabb knows its precise end.

45) Surely you, (Muhammad) are a Munzir 'Warner,' to him who dreads it, (the End).

46) And about that day when it comes, (those who associate partners of Mecca) will see it as if they stayed except (only) one dusk period (evening), or one early daytime hour (in their graves).

Sudhiqa Allahu El Azim

Chapter Eighty-Two

Revealed In The Year 617 A.D.

Inftaar

(The Sky Cleaves Asunder)
Original And Current Order,
Chapter 82

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Heavenly Skies Cleave
Asunder And The Stars
Disperse - And When The
Seas Break Forth And The
Graves Overturned - Each
Spirit Will Know That
Which It Had Sent Forward
- The

Source Created And Perfected
The Enosite - He Fashioned
You, However He Pleased
- Enosites Lie About The
Diyn - The Anunnaqi Are
Haafizun Over You

82 When the Heavenly Skies
Anfatara 'Cleave Asunder'.

2) And when Al Kawaakib 'The
Stars' Anta-tharat 'Dissolves'.

3) And when the Bihaar, 'Seas'
Fujjirat 'Break Forth' (and join
each other),

4) And when the tombs are
Bu'thirat 'Overturned'; (and the
dead emerge leaving them
vacant),

5) Every person will know that
which it has sent forward and
what it left behind.

6) Oh Enosites! What has
Gharraka 'Beguiled' you (and
made you turn) from your Al
Kariym 'Generous' Rabb?

7) He (He Not We) is who
Khalaaqaka 'Created You' so he
Sawwaaka 'Made You Complete'
so He 'Adalaka 'Made You Just'.

8) In whatever Suwratin
'Fashion' (of) what he Yashaa-a
'Pleases', he Rakkabaka 'Puts
You Together'.

9) Nevertheless, you, (Enosites)
lie about the Diyn 'Means Of
Judgment'.

10) And verily Haafiziyn,
'Guardians,' (Eloheem,
Anunnaqi) are 'Alaykum 'Above
You' (in a mothership).

They Are Honored Scribes
 - They, The Righteous Will Be
 In A State Of Na'iym - The
 Fujjaar Shall Be In A
 Blazing Fire - How Will
 They Perceive What The
 Day Of Judgment Is - On
 That Day, No Other Spirit
 Will Be Able To Help
 Another Person

11) They are Kiraamaan 'Generous' (Honored) Kaatibiyn 'Scribes', (recorders of your deeds).

12) They know, (they are aware) (of) what you do.

13) Surely, Al Abraar 'The Righteous' shall verily be in a state of Na'iym 'Grace.'

14) And surely Al Fujjaar 'The Wicked' shall be in Jahiym 'A Blazing Fire.'

15) They shall be cast into it, (Jahiym) on the Yawm 'Day' Of Al Diyn 'Judgment'.

16) And they will not be Ghaa'ibiyn 'Absent' from it.

17) And by what means will you Adraaka 'Perceive' what the day of judgment is?

18) Then, what really makes you perceive what the day of judgment is?

19) On that day, no person will be able to (help) any other person and Al Amr 'The Command' on that day will be Lil-Lahi 'For Him' ([Him Not Us] directly controlled by him).

Sudfiqa Allahu 'El A'im

Chapter Eighty-Three

Revealed In The Year 617 A.D.

Inshitaag
 (The Rending Asunder)
 Original Order Chapter 83;
 Wrong Order Chapter 84

Begin All Prayers And Thinking
 By Using The Name Of The
 Source, ALLAH, The Rahman,
 Who Is The Most Merciful.

When The Skies Render
 Asunder - It Listened To Its
 Rabb - When The Earth
 Extends Its Landscape,
 Tiamat Will Listen To Its
 Rabb - The Enosite Will See
 The Result Of Striving -
 Who's Given His Book In
 His Yamiyn Has An Easy
 Reckoning - Whoever Is
 Given The Book Behind His
 Back, He Shall Be Consumed
 In Sa'iyar

83 When Al Samaa 'The Heavenly Skies' Anshaqat 'Rend Asunder'.

2) And it, (the Heavenly Skies) Adhinat 'Hearkened' to its 'Sustainer,' who is Rabb, and Huqqat 'It Is Incumbent'!

3) And when the planet Earth, 'Qi/Al Ard' Muddat 'Extends (Into Landscapes)',

4) And casts out whatever is in it, (the planet Earth) and abandons it.

5) And it, (the planet Earth) hearkened to its Sustainer, and it is incumbent!

6) O Al Insaan, 'Enosite'! Surely you are Kaadihun 'One Who Labours' to your Rabb 'Sustainer', Kadhaan 'Labouring'; so you will meet him.

7) As for him who is given his Kitaab 'Scripture', (Book of Deeds) in his Yamiyn, 'Right (Hand)',

8) He shall be reckoning with, by an easy Hisaab 'Reckoning.'

9) He will be returned to his Ahl 'Family' in Masruwr 'total Happiness.'

10) And as for him who is given his Kitaab 'Scripture', (Book of Deeds) behind his Zahr 'Back,'

11) He shall call out his own destruction."

12) And he shall burn in the Sa'iyr 'Consuming, Blazing Fire.'

In His Lifetime, He, The Enosite Was A Happy Man - He Thought He Would Never Return To His Rabb - Allah Was Watching All That He Did - He Swears By The Sun When It Glows - The Moon When It Becomes Full - Enosites Will Certainly Pass From Plane To Plane

13) And in his (lifetime on Earth), surely he used to be a happy man with his Ahl 'Family'.

14) Surely he thought that he would never return to his Sustainer.

15) Nevertheless, surely his Rabb 'Sustainer', was seeing all that he did.

16) So Nevertheless, Uqsim 'I Swear' by Al Shafaq 'The Red Glow Of The Sun When It Darkens',

17) And Al Layl 'The Shadow Hour Period,' and what it Wasaqa 'Gathers Together (Shrouds)'.

18) And Al Qamar 'The Moon' When It At-tasaq 'Becomes Full.'

19) That you shall most certainly pass from Tabaq 'Plane' to Tabaq 'Plane' (life after death).

20) So what is the matter with them, that they are unfaithful?

21) And when the Al Qur'aan is read upon them, they don't Yasjuduwn 'Prostrate'?

22) But those who conceal what they know to be the facts, are nothing but the best liars.

23) And The Source, ALLAH knows that which they Yu'uwna 'Help'.

24) Therefore, tell them of an aching pain, (which is promised to them).

25) Except for those who are faithful and work Al Saalihaat 'To Perfect Their Beings'; there is a reward for them without indebt.

Sudika Allahu El Agim

Chapter Eighty-Four

Revealed In The Year 616 A.D. Except For Verse

9:14-17 In Medina

The Ruwm
(The Romans)

Original Order Chapter 84:
Wrong Order Chapter 30

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Romans Are Defeated -
After Their Defeat They
Were Victorious -
HU Is The Mighty, The
Merciful - Many Of Enosites
Are Kaafiriyin

84 () Alif: ALLAH, The
Source, Laam: Laylat Al Qadr,
"The Shadow Hour Period Of
Power," Miym: Mujrimuwn,
'The Guilty Ones'.

2) The Romans have been
defeated.

3) In the nearer part of the
earth, and they (the Romans),
after their defeat, will be
victorious,

4) Within a few (ten) years. For
Him (Him Not Us) is the
command in the former case and
in the latter and in that day, the
faithful ones will rejoice,

5) In The Source, ALLAH'S aid
to victory. He (He Not We)
aided to victory, whom He

pleases. He, is Al 'Aziyz 'The
Mighty', Al 'Rahiyim 'The
Merciful'.

6) It is a promise of The Source,
ALLAH He (He Not We) does
not fail in His promise, but most
of the Naas/Enosites do not
know.

7) They know only of the
'evident' - some appearance of
the life of the physical world,
and are heedless of the End.

8) Or have they not pondered
upon themselves, that The
Source, ALLAH did not Khalaq
'Create' Al Samaawaat 'The Skies'
and Al Ard 'The Planet Qi', and
that which is between them,
except with the facts and for a
determined term (each cycle)?
And surely, many of the
Enosites are Al Kaafiruwun
'Those Who Conceal That
Which They Know To Be The
Facts,' in the meeting with their
Rabb, who is 'Sustainer.'

9) Or have they not Yasiyru
'Moved About' in the earth and
so they see how the end was for
those who were before them
(they've seen how the dinosaurs
and others died)? They were
more forceful than these in
power, and they Athaaruw 'Dug'
the Earth and 'Amaruwhaa
'Cultivated Upon It' more that
these have 'Amaruwhaa
'Cultivated Upon It', and
Rasuwlulum 'Their One Sent'
came to them with Al Bayyinaat
'Clear Evidences.' So it was not

The Source, ALLAH who treated them unjustly, but they were unjust to their own selves.

10) Then evil was the end for those who did evil, that lied by way of The Source, ALLAH'S signs - (the scriptures), and all they did was mock it.

*Allah Originates Al Khalaq -
The Guilty Ones Will
Despair, When The Hour
Rises - Those Who Are
Faithful Will Be Delighted -
You All Are To Glorify Allah
In The Dusk Period And
The Early Daytime Hour -
All Gratitude Is Due To
Allah, In Al Ard And The
Samaawaat*

11) The Source, ALLAH Yabduw 'Begins' (originates) Al Khalaq 'The Creation,' then He (He Not We) Yu'iyduhu 'Reproduces It' (causes it to return again), then unto Him (Him Not Us), you all will return.

12) And in the day when Al Saa'at 'The Hour' Taquwm 'Stands' (rises) Al Mujrimuwn 'The Guilty Ones' will despair.

13) There will be none to intercede for them from Shurakaaihi 'Their Associating Partners'; and they will conceal the facts about Shurakaaihi 'Their Associating Partners'.

14) On the day when Al Saa'at 'The Hour' Taquwm 'Stands'

(comes); in that day they will be separate.

15) And as for those who are faithful and work to Al Saalihaat 'Perfect Themselves'; so they are delighted and well pleased.

16) And as for those who conceal that which they know to be a fact, and lied about Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) signs and the meeting of Al Aakhirat 'The End,' so these are they who will be brought forth to the pain.

17) So glory be to The Source, ALLAH, while you retire into the Dusk Period and while you all enter the glory of the Early Daytime Hour.

18) And for Him (Him Not Us), is due all gratitude in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth', and at the time, of the late Shadow Hour Period and when you all enter into Noon.

19) And He (He Not We), Yakhrij 'Brings Forth' Al Hayya 'The Living' from Al Mayyit 'The Dead' and He Yakhrij 'Brings Forth' Al Mayyit 'The Dead' from Al Hayyi 'The Living', and Yuhiy 'Gives Life' to Al Ard 'The Planet Qi/Earth' after Mawtihaa 'Its Death' (the re-construction of the planet earth); And just like that, you all will be Tukhrajwn 'Brought Forth'.

20) And of His (His Not Our), signs is that He (He Not We)

Khalaqakum 'Created All Of You' from Turaabin 'Dust' (granulated clotted blood), then when you are Bashar 'Mortal In Skin,' Tantashiruwn 'Spread Aboard' (be fruitful and multiply in this planet Earth).

21) And of His (His Not Our), signs is that He (He Not We) Khalaqa 'Created' Azwaajaan 'Your Mates' for you all from Anfusikum 'Your Ownselves', that you may Taskunuw 'Dwell' Ilayhaa 'In Them'; and He made Mawaddatan 'Compassion' between you all and a Rahmatan 'Yielding' (mercy). Surely, in that, there are signs for a kindred who are always thinking (about Him).

22) And from His (His Not Our), signs is the Khalaq 'Creation' of Al Samawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth' and Ikhtilaaf 'The Diversity' of Al Sinatikum 'Your Tongues', (dialects). From cuneiform you get Aramic, Syretic, Akkadian, Chaldean, which bred Hebrew, Amharic, Arabic, which itself broke up into thousands of dialects) and your Alwaan 'Colors (Pale, Red, Olive and from them Yellow, Brown and many other Hues Of Skin).' Surely, in that is a sign for the Known Worlds.

23) And from His (His Not Our) signs is that, of your sleeping by the Layl, 'Shadow Hour Period' and Al Nahaar 'The Daytime';

and your desires of His (His Not Our) preference. Surely, in that is a sign for the Qawm, 'Kindred' who hears.

24) And of His (His Not Our), signs is that He (He Not We) shows all of you Al Barq 'The Lightning' to (instill) fear and Tama'aan 'Ambitious Desire'. He sends water down from Al Samaa-i 'The Skies'; so He Yuhiy 'Gives Life' Bihi 'With It' to Al Ard 'The Planet Tiamat/Qi/Earth' (the re-construction of the planet earth) after its Mawt 'Death' (after the meteorite struck 17,250,000 years ago); surely in that is a sign for a kindred which Ya'qiluwn 'Has Intelligence'.

25) And of His (His Not Our) signs, is that Al Samaa-u 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth' Taquwm 'Stand' by way of His Amr 'Command'. Then when He (He Not We) calls unto you with His Da'watan 'Calling' from Al Ard 'The Planet Qi' when you will Takhrujuwn 'Come Forth'.

26) And to Him (Him Not Us), belongs those who are in Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth'; all and everything is Qaanituwn 'Willingly Obedient' unto Him.

27) And He (He Not We) is who Yabdauw 'Begins' (originates) Al Khalq 'The Creation', then He Yu'iyduhu 'Reproduces It' (causes it to return again); and it

is the easiest thing for Him (Him Not Us); and for Him is Al Mathal 'The Likeness' of Al A'ala 'The Most Exalted' (height), in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The planet Earth' and He is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise.

28) He (He Not We) Daraba 'Strikes Forth' a Mathalaan 'Likeness' for you all, from yourselves. Have you all from among those whom your right hands possess, Shurakaa-a 'Associating Partners' (in the wealth) We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have Razaqnaakum 'Provided Upon You All'? So you all are equal in it. You fear them as you fear each other, (that which you ascribe unto Us as partners out of that which We created)? Just like that, We explain in detail the signs for a Qawm 'Kindred' who have sense.

Those Who Are Unjust Will
Not Have Aiders - The
Source Causes The Big Bang
To Split, And The Cells To
Create 'Enosites' - Do Not
Associate Partners With The
Source - Each Sect Is Happy
With Their False Ways -
When Harm Afflicts An
Enosite, He Cries Unto His
Rabb - When They Taste A
Rahmat, They Rejoice

29) In fact, those (who do), are

unjust and follow their own Ahwaa-a 'Loves, Lusts' without 'Ilm 'Knowledge'. So who is able to lead into calmness him whom The Source, ALLAH has sent astray into error? And there are not any Naasiriyn 'Aiders.'

30) So stand (upright) with your face to the means of judgment as a Haniyfaan 'Upright One.' The Source, ALLAH Fitrat 'Splitted The Atom' Allatiy 'That' Al Naas 'The Enosites' Fataara 'Splitted [Spliced Their Gene]' Alayhaa 'On It'. There is no (altering) Tabdiyl 'Changing' of The Source, ALLAH'S Khalq 'Creation'. That is Al Diyn 'The Means Of Judgment', but most Enosites don't Ya'lamuwn 'Have Knowledge Of It'.

31) Turning unto Him (Him Not Us); and tremble and fear, and stand up for Al Salaat 'The Salutation As Worship,' and do not be of those who Mushrikiyn 'Associate Partners' (with Him).

32) From those who Faraguw 'Divide' Diynahum 'Their Means Of Judgment' and become Shiya'aan 'Sects' and they were (sects each) group of them, are happy by way of that which they have. (Each of them, Wahhabi, or Sunni or Shi'ites or Ahmadiyyah or Baha'i and other sects, or any other, they are happy with their false ways).

33) And when harm afflicts the Enosites, they call, (cry) unto

their Rabb, who is 'Master and Sustainer' turning to Him (Him Not Us) in repentance; then, when they have tasted of His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (Mercy) when Fariyqun 'Some' of them Yashrikuwn 'Associate Partners' with their Rabb.

34) So as for those who conceal the facts in that which We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have given them; tell them: "Enjoy yourselves for a while, but you will come to know."

35) Or have We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' upon them a Sulataan 'Authoritative Power', so he Yatakallam 'Speaks Words' of that which Ushrikuwn 'They Associate Partners' with Him?

36) And when We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) let the Enosites taste of a Rahmat 'Yielding' (mercy), they rejoice with it; but if an evil thing befalls them as to which their hands has presented (from before), then they are in despair!

37) Do they not see that The Source, ALLAH Yabsut 'Enlarges' Al Rizq 'The Provision' for whom He (He Not We) pleases, and has the power (to restrict) it. Surely, in that are signs for a kindred who are faithful.

38) So give to Al Qurbaa 'The Near Relative' his true due, and to the needy, and to the son of the path (wayfare). That is good

for those who seek The Source, ALLAH'S face, (his countenance. ALLAH has a face. He Is Physical)," and such are these who are the prosperous ones.

39) That which you give in usury, in order that it may increase on other Enosites' property has no increase in the possession of ALLAH; and that which you give in Zakaat 'Charity' wanting (seeking) The Source, ALLAH'S Wajh 'Face' (ALLAH has a face; he is physical), so these are them, who will have a numerous increase.

40) The Source, ALLAH is He (He Not We) who Khalaq 'Created' you and then Razaqakum 'Provided You All', then Yumiyytukum 'Caused You All To Die', then He Yuhyikum 'Gave You Life (Again)'. Is there any of Shurakaa-ikum 'Your Associating Partners' who does any of these things (for you all)? Glorify and Ta'aalaa 'Exalted' be He, (ANU), above that which they Yushrikuwn 'They Associate Partners' (with).

41) Corruption does appear on Al Barr 'Dry Land' (war on land) and Al Bahr, 'The Sea' (war on sea) because of the evil which Enosites' hands have done, that He (He Not We) may make them taste a part of that which they have done, perhaps that they might return.

42) Tell them this, (Muhammad): "You all are to

Siyruw 'Move About' in Al Ard 'The Earth' and see how the end was of those who were before you. Most of them were Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners'.

Muhammad Is Told To
Upkeep The Pure Way Of
Life - Concealer Of The
Facts Must Bear His Own
Consequences - He Sends The
Winds As Bearers Of Good
News - Rusul Sent To
Nations Before You
Muhammad

43) So set your face (your self) for the Diyn 'Means Of Judgment', before the day comes from The Source, ALLAH which there is no averting. On that day, they will be separated.

44) Whosoever conceals that which he knows to be the facts, must then bear the consequences of his concealing of the facts, and who works to perfect themselves, so for themselves, Yamhaduwn 'They Make Things Spread Open', (Things Being Smooth And Agreeable.

45) That He (He Not We) may reward out of His (His Not Our) preference those who are faithful and work to perfect themselves. Surely, He (He Not We) does not like the concealers of the facts.

46) And of His (His Not Our) signs is this: "He sends Al Riyh 'The Winds' (Crafts) as

Mubashiraat 'Bearers Of Good News', to make you taste from Rahmatihi 'His Yielding' (mercy), and that Al Fulk 'The Crafts' (in the sea) may sail at His command, and that you may seek His Fadl 'Preference,' and that perhaps, you may be grateful.

47) And indeed, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent Rasuwl 'Ones Sent,' before We (Eloheem Anunnaqi) sent you, (Muhammad) to their own kindred; so they came to them with clear evidences - (the scriptures), and then We (Eloheem Anunnaqi) took vengeance on all those who were committing a crime, and it was (incumbent) upon us to aid those who are faithful with the facts (beyond any doubt).

48) The Source, ALLAH is He (He Not We) who sends Al Riyh 'The Winds' (Crafts), then they scatter the Sahaabaan 'Clouds'; then He spreads them in Al Samaa-i 'The Sky' how He pleases, and He makes them into Kisfaan 'Fragments' (the four winds crashed), so that you see the raindrops coming forth from their midst. So when He causes it to befall whom He pleases from His (His Not Our) slaves, they are glad to rejoice.

49) Though before that, even before it was sent down upon them, they were Mublisiyn 'Ones In Despair.'

The Source's Yielding Mercy
In Creation - Ahmad Can't
Make The Dead And Deaf
To Hear - The Source
Appointed Strength To You
After Weakness - Nor Can
Muhammad Calm The Blind

50) Look at the Aathaari 'Traces' (Prints) of The Rahmat 'Yielding' (mercy) Of The Source, ALLAH'S (in creation): How He (He Not We) Yuhiy 'Gives Life' (again) to Al Ard 'The Earth' after Mawtihaa 'Her Death'. Surely, He is the one who is quick of giving life to the dead, and HUWA, (HU) 'He' has the power to do all things.

51) And if We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent a Riyhaan 'Wind' (craft) and they behold it Masfarraan 'Yellow' (amber lights of crafts), they verily, would still continue in their concealing of the facts.

52) For verily you, (Ahmad) cannot make the dead to hear, nor can you make the deaf to hear Al Du'aa-a 'The Call', (the prayer) when they have turned to flee.

53) Nor can you, (Muhammad) calm the blind out of their error. You can make none to hear except those who have faith in Our ([Our Not My] Eloheem Anunnaqis) signs that they 'Surrender In Peace' become Muslims.

54) The Source, ALLAH is He (He Not We) who Khalaqakum 'Created You All' out of Da'afin 'Weakness', then made Qawwatan 'Strength' after Da'afin 'Weakness'; then after strength, He made weakness and Shaybatan 'Grey Hair'. He Yakhluq 'Creates' that which He pleases; and He (A Yahuwa/Yehweh) is Al 'Aliym 'The Knower', Al Qadiyr 'The Powerful'.

55) And on the day when Al Saa'at 'The Hour' Taguwm 'Stands' (rises) the guilty ones will Yuqsim 'Swear' that they can remain Ghayr 'Besides' an hour. Just like that, were they ever deceived.

56) And those to whom knowledge and faith are given, will say: 'The fact is; you have remained in The Source, ALLAH'S scripture until the day of raising, 'resurrection.' This is the day of Al Ba'th 'The Resurrection' (after death), but you all did not know.

57) On that day their excuses will not profit those who were unjust, nor will they be allowed to make amends.

58) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Darab 'Struck Forth' Mathalin 'Likenesses' of all kinds, for the Enosites in this Qur'aan and if you, (Muhammad) came to them with a Aayatin 'Sign' - (miracle), certainly they, who conceal that

which they know to be the facts, would say: "Surely you all have nothing serious to offer. (You're tricksters)."

59) Just like that, does The Source, ALLAH Yatba'u 'Stamp' (an impression on) the Quluwb 'Hearts' of those who do not know.

60) So have patience, O (Muhammad)! The Source, ALLAH'S promise is the fact, and don't let those who have no certainty make you impatient.

Sudika Allahu 'El Agim

Chapter Eighty-Five

Revealed In The Year 628-621 A.D.

Al 'Ankabuwt
(The Spider)

Original Order Chapter 85;
Wrong Order Chapter 29

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Enosites Will Be Tested
As Those Before Them -
Allah's Determined Time Is
Coming - Allah Is
Independent Of Things In
The Known Worlds

85 () Alif: Abraham;
Laam: Laylat Al Qadri - 'The

Shadow Hour Period Of Power.'
Miym: 'Mosheh'.

2) Do the Naas/Enosites, calculate that they will be left alone by just saying that they have faith and they won't be tested?

3) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Fatannaa 'Tested' those who were before them; so that The Source, ALLAH will know those who are Sadaquw 'Truthful', and verily He (He Not We) will know Al Kaadhibiyn 'The Liars' (the followers of the false Muhammad, the liar Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi).

4) Or do those who do evil deeds imagine that they can outstrip us (get the better take over Islam)? Evil is for them in that which they Yahkumuwna 'Thought Was Wise'.

5) Whosoever looks forward, 'hope' to the meeting with The Source, ALLAH, so let them know that ALLAH'S determined time, verily is coming, and He, (A Yahuwa/Yehweh) is Al Samiy'u 'The Hearer', Al 'Aliym 'The Knower'.

6) And whosoever strives, he strives only for himself, surely, The Source, ALLAH is (altogether) Ghaniyyun 'Independent' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

7) And as for those who are faithful and works to perfect

themselves, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) shall remit, (delay) from them their evil deeds (give an extension of time) and We (Eloheem Anunnaqi) shall repay them, the best for that which they did.

8) We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have enjoined the best on the Insaan/Enosite to Waalidayhi 'His Parents'; and if they strive to make you to Tashrik 'Associate Partners' with Me (Me Not We), of that which you have no knowledge of, so do not obey them; unto me, is your return, so U-nabbi-ukum 'I Shall Inform You (As A Newsbearer)', of that which you use to do.

9) And as for those who are faithful and work to perfect themselves, verily We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) shall make them enter in, amongst Al Saalihiyn 'The Perfectionists'.

10) And from the Enosites, is he who says: "We Aamanna 'Have Faith' in The Source, ALLAH", so if he suffer in (the sake of) The Source, ALLAH, Ja'ala 'who Made' Fitnat 'A Test' of the Enosites, as 'Adhaab 'The Pain' of The Source, ALLAH; and if Nasrun 'Help' comes from your Rabb, who is 'Sustainer,' he will say: "Surely, We were with you all the while." Or is not The Source, ALLAH with knowledge of that which is in the Suduw 'Chest' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'?

11) And verily The Source, ALLAH knows those who Aamanuw 'Have Faith', and verily He knows Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites' (Followers Of Musaylimat, founder of all the sects in Islam and the false Koran).

12) They who conceal the facts say unto those who are faithful: "Follow our Sabiyl 'Path' (the false Islam) and verily, we will carry your wrong acts for you," and they cannot carry none of their wrong acts. Surely they, verily Al Kadhiba 'The Liars' (and his Sunni followers).

13) But verily, they will carry their own loads and other loads with their own loads, and verily, they will be questioned on the day of resurrection concerning that which they invented, (the false Koran).

Noach Sent To The Enosites
Of Nod And Enoch -
Arawhawm Warns His
Nation To Slave For Allah -
The Origination And Khalaaq
Is Easy For The Source -
He Causes Pain And Shows
A Yielding Mercy Unto
Whom He Pleases

14) And indeed We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) sent Noach to his kindred - (the evil cities of Nod and Enoch); so he (Noach) did stay amidst them one thousand years, less fifty -

(950 years - 1 1/2 days in earth. Each day is a thousand years to the Eloheem), and Al Tuwfaan 'The Deluge' (flood) overtook them and they were in a state of unjustness. (The Disagreeable malevolent, Cherubeems had Cain's seed's souls).

15) And We ([We Not He] Eloheem - Anunnaqi) rescued him, (Noach) and the Ashaab 'Companions' (Noach and his 8 member family, and the 80 other beings who went in the ark with them) of Al Safiynat 'The Ship -Ark' and made it as a sign for Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

16) And Abraham, (remember) when he said unto his kindred: "Slave for The Source, ALLAH, and tremble at the mentioning of Him (Him Not Us). That is good for you, if you only knew.

17) Surely, you slave for only Awthaan 'Idols', besides The Source, ALLAH, and you only invent a lie. Surely, those whom you slave for besides The Source, ALLAH, can't provide you with Rizqaan 'Provision'. So seek your Rizq 'Provision' from The Source, ALLAH'S possession, and slave Him (Him Not Us), and be grateful to Him. You all will return unto Him.

18) But if you deny (lied), then the Umamun 'Nations' from before you, have denied (lied). So, what is on the Rusul 'Ones Sent' except the Mubiyn 'Clear

Al Balaaghu 'Propagation Of The Facts'?

19) Don't they see how The Source, ALLAH Yabdi-u 'Begins' (originates) Al Khalaq 'The Creation', then He (He Not We) Yu'iyduhu 'Reproduces It' (causes it to return again)? Surely, that is Yasiyr 'Easy' Alaa 'On' ALLAH.

20) Tell them this, O (Muhammad): "Siyruw 'Move About' in Al Ard 'The Earth', so see how He (He Not We) Bada-aa 'Began' (originated) Al Khalq 'The Creation', then The Source, ALLAH Yunshi-u 'Brings Forth' (creates) Al Aakhirat 'The Later' Al Nashaat 'Growth' (creation). Surely, ALLAH has the Qadiry 'Power' to do all things.

21) He (He Not We) causes pain to those whom He pleases and Yarham 'Shows A Yielding' (mercy) unto whom He pleases, and you all will be turned unto Him.

22) You cannot escape from Him (Him Not Us) in Qi, the planet 'Earth' and neither in Al Samaa-i 'The Sky' (people trying to escape to the sky); and there is no Waliyyin 'Near Friend' nor Nasiyr 'Aider', from besides The Source, ALLAH.

23) Those who conceal the facts about the signs of The Source, ALLAH and (their) meeting with Him (Him Not Us), these are those who has no hope of my

Rahmat 'Yielding' (mercy). For them is an aching pain.

24) But the answer of his, (Abrawhawm's) Qawm 'Kindred' except that they said: "Aqtuluwhu 'Kill Him,'" or "Harriquwhu 'Burn him,'" so The Source, ALLAH Anjaahu 'Delivered Him' from Al Naar 'The Fire'. Surely, in that verily, are signs for a kindred who are faithful.

25) And he, (Abrawhawm) said: "You, (Babylonians) have taken Awthaanaan 'Idols' for yourselves, besides The Source, ALLAH; Mawaddata 'By Way Of Your Compassion' between you all in the life of the physical world. Then on the Day of Al Qiyaamah, 'Standing/Resurrection,' some of you, who conceal that which you know to be the facts, will deny others and some of you will Ya'anu 'Put A Curse' on others of you; and your abode is Al Naar 'The Fire' and you will not find any Naasiriyn 'Aiders' (Ansarullah).

26) And Lowt, had faith in Him, and said: "Surely, I am Muhaajiru 'One Who Has Made Hajj' (Left My Home) Ilaa 'Unto' my Rabb, 'Sustainer/Master. Surely, He (A Yehweh/Yahuwa), is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'."

27) And We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) Wahabnaa 'Gave' Lahu 'For Him',

(Abrawhawm), Yitschaq and Ya'aqob, and We (Eloheem Anunnaqi) Ja'ala 'Made' (established) in Dhurriyyatihi 'His Offspring' Al Nubuwwat 'The Newsbearers' and Al Kitaab 'The Scripture', and We (Eloheem Anunnaqi) gave him his reward in Al Dunyaa 'The Physical World', and surely, in Al Aakhirat 'The End', he verily, is amongst Al Saalihiyn 'The Perfectionists'.

28) And Lowt! (Remember) when he said unto his Qawm 'Kindred': "Surely you commit Al Faahishat 'The Obscene Crimes (Indecencies)' such as no one did, before you in Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'."

Michael Tells Abrawhawm,
They Are Going To Destroy
Those Enosites - Lowt's
Mate, Sabriyya Will Be Left
Behind - To Midyan, We
Sent Yethro - Satan, The
Reptilian Made Ad And
Thamud's Deeds
Fair - Seeming - Qorach,
Ramses II, And Haman, All
Were Big-Chested, With
Pride

29) Do you Taa-tuwn 'Come In Unto' Al Rijaaal 'Mortal Men', and Tuqata'uwn 'Cut' the path (for travellers), and come (bring) Al Munkar 'Abominations' in Naadiykum 'Your Callings'

(Assemblies)? But the answer of his Qawm 'Kindred' was only that they said: "Bring ALLAH'S pain upon us, if you are Sodoqites/Zodoqites 'Truthful'!"

30) He said: "My Rabb! Ansumniy 'Aid me' (Lowt), over my kindred who are Al Mufsideyn 'The Mischief Makers'."

31) And when Our (Our Not My) Rasuwl, (Michael) brought Abrawhawm the good news, they said: "Surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) are about to destroy the Ahl 'Family' of this Al Qaryat 'Village', for surely, Ahlahaa 'Its Families' are in Zaalimiyn 'A State Of Unjustness'."

32) He, (Abrawhawm) said: "Surely, Lowt is there." They said: "We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) know of who is in it (Sodom And Gomorrah). We (Eloheem Anunnaqi) are to deliver him and Ahlahu 'His Family', except Amra-atahu 'His Woman (Sabriyya)' who is of those who will stay behind."

33) And when Our (Our Not My) Rusul 'Ones Sent' came unto Lowt, he was troubled upon their account, and he was weak in power concerning them (he could not protect them); and they said: "Fear not, nor grieve! Surely, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) are to deliver you and your Ahl 'Family', except

Amra-aataka 'Your Woman' (Sabriyya), who is of those who will stay behind."

34) Surely We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) are about to bring down upon the Ahl 'Family' of this Al Qaryat 'Village' (Sodom and Gomorrah), Rijzaan 'A Fury' from Al Samaa-i 'The Sky', because they were transgressors."

35) And indeed of that, which We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have left behind is a clear sign for a kindred who have sense, 'intellect.'

36) And unto Midyan, We ([We Not I] Eloheem Anunnaqi) sent their Akh 'Brother' Yethro. He said: "O my kindred! Slave for The Source, ALLAH, and look forward to, (wish) for the last day, and do no evil, causing mischief in the Earth 'Tiamat'."

37) But they denied him, (Yethro) and Al Rajfat 'The (Dreadful) Earthquake' overtook them and in the Early Daytime Hour, they were Jaathimiyn 'Laying Prostrating' in Daarihim 'Their Abodes'."

38) And (the tribes) of 'Ad and Thamud! Their fate has become clear to you from their (ruined and deserted) Masaakin 'Dwellings'. And Al Shaytaan, 'Satan, The Reptilian', (Also Known As Nakhsh/Samael And Haylal Son Of Shakhar And Myfitta) made their deeds Zayyana 'Fair-Seeming' to them,

so, he turned them away from the path, though they were Mustabsiriyn 'Keen Observers'.

39) And Qorach (the son of Izhar, the ruler of the rebellious group of Israel) and Fir'awn, (Ramses II) and Haman (Chief Minister of the Ruler Achashwerowsh), and indeed Mosheh came to them with the clear evidences, so they were Astakbar 'Big-Chested, Pouting With Pride' in the planet Qi, Al Ard 'Earth' and they were not passing us.

40) So We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) took each one in his faults; so of them, was he on whom We (Eloheem Anunnaqi) sent a Haasibaan 'Hurricane', and of them was he who was overtaken by Al Sayhat 'The Awful Cry', and of them was, he whom We (Eloheem Anunnaqi) caused the Earth to Khasafa 'Swallow', and of them was he whom We (Eloheem Anunnaqi) Aghraq 'Drowned' (each had their own fate). If it was not for The Source, ALLAH to be unjust to them, but they were unjust to themselves.

The Frailest Of All Houses

Is The Ankabuw -

Muhammad Is Told, To

Recite That Which Was

Inspired To Him -

Muhammad Is Told, Not To

Argue With The Jacobites,

And Their Yahuwa And His

Yahuwa Is One

41) The Mathal 'Likeness' of those who took Awliyaa-a 'Near Friends' from besides The Source, ALLAH is as the likeness of Al 'Ankabuw' 'The Spider' when she takes a Baytaan 'House' unto herself, and surely the frailest of all houses is the spider's house, if they only knew.

42) Surely, The Source, ALLAH knows that which they Yad'uwn 'Call Upon', (pray to) besides Him. He (He Not We) is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

43) And these are Al Amthaal 'The Likenesses' We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Nadrib 'Strike Forth' for the Enosites, and none Ya'qiluhaa 'Overstand Them', except for Al 'Aalimuw'n 'The Learnt Ones'.

44) The Source, ALLAH Khalaaq 'Created' Al Samawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Qi/Earth' with the facts. Surely in that, is indeed a sign for Al Mu-Miniyn 'The Faithful Ones'.

45) Utlu 'Recite' that which has been Uwhiy 'Inspired' to you, (Muhammad) of the scripture - (The Qur'aan) and keep up Salaawta 'Salutation As Worship'; surely, Salaat 'Salutation As Worship' keeps one away from Al Fahshaa-a 'Wicked Deeds' (indecenty) and Al Munkar 'Abominations', and certainly the Dhikr 'Remembrance' of The Source,

ALLAH is the Akbar 'Biggest' (of all things to do), and ALLAH knows that which you Tasna'uwn 'Mold'.

46) And don't argue with the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture' - (the Torah), except by that which is best, except for those of them, (Israelites/Jacobites) who are in a state of unjustness; and say we have faith in that which has been Unzil 'Sent Down' to us, (the Qur'aan) and that which is Unzil 'Sent Down' to you all, (the Torah) and ILAAHINAA (our ALLAH) 'Source', and ILAAHUKUM (your ALLAH/YAHUWA/ADONIA) 'Source' are Waahidun 'One' and we are Muslimuwn 'Ones Of Peace' for Him. (Israelites, Ishmaelites and Midianites are all Muslims with the same Deity).

47) And just like that, did We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Anzalnaa 'Send Down' to you, (Ahmad) Al Kitaab 'The Scripture' (Qur'aan) so that those whom We, (Eloheem, Anunnaqi) have given the Scripture - (Torah, And Injiyl) have faith by way of it; And from those (Jacobites/Israelites, and Nazarites, followers of Jesus) who have faith by way of it, (the Qur'aan) and none reject Our (Our Not My) verse, (the Qur'aan) except Al Kaafiriyn

'The Concealers Of That Which Is Fact.'

48) And (Muhammad), you were not able to Tatluw 'Recite' before it, (the Qur'aan) from any scripture, (the Torah or Injiyl) and don't Takh-ttuhu 'Inscribe It' (any scripture) with your right hand; if so (the doubters) would have doubted; those who deal with vanity.

49) In fact it, (the Qur'aan) is of the clear signs in the Suduwr 'Chests' of those who were given Al 'Ilm 'The Knowledge' - (those chosen to overstand the Qur'aan) and no one can deny its signs, except those who are in a state of unjustness.

50) And they, (the Meccans) say: "If only there were signs Anzal 'Sent Down' to him, (Muhammad) from his Rabb 'Sustainer' ALLAH." Tell them (this Muhammad): "Surely, the signs are only with The Source, ALLAH and surely I, (Ahmad) am only a Mubiyn 'Clear' Nadhiyr 'Warner'."

51) Or is it not enough that surely We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Anzal 'Sent Down' to you, (Muhammad) the scripture - (the Qur'aan), being Yutlaa 'Recited' 'Alayhim 'Upon Them'? Surely, in that is a Rahmat 'Yielding' (mercy), for the kindred, who are faithful.

52) Tell them this, (Muhammad): "The Source, ALLAH is Sufficient as a

Shahiyd 'Watcher' between me and you all. He knows that which is in Al Samaawaat 'The Skies' and the Qi; and those who have faith in the false ways and conceal that which they know to be the facts by way of The Source, ALLAH, these are they, who are Al Khaasiruwn 'The Losers'."

53) They bid you, to hasten the pain of The Source, ALLAH, and if a term had not been appointed, the pain would assuredly have come unto them; and verily, it will come upon them suddenly when they don't perceive.

54) They bid you to hasten on the pain, when verily, Jahannam 'Hell' will encompass the concealers of that which are facts.

55) On the day when the pain will cover them from above them and from underneath their feet, and He will say: "Taste that which you used to do."

56) O My (My Not We, Or Our) slaves who have faith! My Ard (My Not We) 'Earth/Qi' is Waasi'at 'Spacious', (Wide), so therefore, slave for Me (only).

57) Every Nafs 'Person' must taste death; then to Us, ([Us Not We] the Eloheem Anunnaqi), you will all return.

58) And as for those who have faith and work for perfection, verily We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) will

Nubawwi-annahum 'Give Them' from Al Jannat 'The Garden' a Gharfaan 'Lofty Room', beneath which is flowing rivers. They shall be in it eternally. This is an excellent reward for Al 'Aamiliyn 'The Workers' (The Lulu Amelu).

59) Whoever is patient, and puts their trust in their Rabb, who is 'Sustainer and Master.'

60) And how many a Daa-bbatin 'Beast' (human beast) there is that does not carry its own Rizq 'Provision'? The Source, ALLAH Yarzuquhaa 'Provides (For) It' and for you; and He (He Not We) is Al Samiy'u 'The Hearer', Al 'Aliym 'The Knower'.

61) And if you were to ask them: "Who Khalaqa 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Earth', and made Al Shams 'The Sun' and Al Qamar 'The Moon' Sakh-khara 'Subservient' (to their appointed work)?" They would say (these are the talking beast speaking): "The Source, ALLAH!" How then, are they turned away?

62) The Source, ALLAH spreads Al Rizq 'The Provision' to whom He (He Not We) pleases, out of His (His Not Our) slaves, and He is able (to provide) for him; surely, The Source, ALLAH is 'Aliym 'Knowing' of all things.

63) And if you were to ask them (you can speak to these human

beast): "Who Anzal 'Sent Down' from Al Samaa-i 'The Sky' Maa-an 'Water', so it Ahya'a 'Gives Al Ard 'The Planet Earth' Life' by it from after Mawtihaa 'Its Death'? They verily would say (the human beast can speak): "The Source, ALLAH." Say: "All gratitude is due to The Source ALLAH." In fact, most of them have no sense (most human beast are senseless).

64) And what is the life of the physical world except a Lahwun 'Vain Sport (Amusement)' and La'ibun 'A Game'; Al Daar 'The Abode' of The End, Lahiya 'Verily It Is' Al Hayawaanu 'Life', if they only knew.

65) And when they Rakibu 'Rode' (mount upon) Al Fulk 'The Craft' they Da'auw 'Call (pray)' to The Source, ALLAH making their means of judgment Mukhlis 'Pure' for Him (Him Not Us); so when He (He Not We) delivered them (safely) to Al Barri 'The Dry Land', then they Yashrikuwn 'Associated Partners' (unto Him).

66) That they may conceal that which they know to be the facts in that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have given them, and that they may Yatamatta-uw 'Enjoy' (take their ease); but they will come to know.

67) Have they not seen that We (We Not He) have appointed a sacred sanctuary (immune from

violence), while Enosites are ravaged all around them? Do they then have faith in falsehood and conceal that which they know to be the facts, in the grace of The Source, ALLAH?

68) Who is more unjust than he who invents a lie against The Source, ALLAH, or denies the facts when it comes to him? Is there not a Mathwan 'Dwelling Abode' in Jahannam 'Hell' for Al Kaafiriyn, 'The Concealers Of The Facts'?

69) As for those who strive in Us (Us Not We), verily We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) surely will calm them to Our (Our Not My) paths, and The Source, ALLAH is with Al Muhsiniyn 'The Doers Of That Which Is Best'.

Sudiqā Allāhu 'El Azīm

Chapter Eighty Six

Revealed In The Year 622 A.D.

Al Mutaffisiyn

(The Cheaters)

Original Order Chapter 86;

Wrong Order Chapter 83

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

The Cheaters Are Cursed -
They Take A Measure From

The Naas - All Naas Will Be Standing Before The Rabb Of The Known Worlds, On That Supreme Day - The Scriptural Ledger Of The Wicked Is Kept In Sijjiyn - It Is A Scripture Marked With Numbers

They Say, 'It Is The Fables Of The Awwaliyn' - Their Wrong Has Ruined Their Hearts - They Will Be Casted Into Jahlym - The Scriptural Ledger Of The Righteous Is Kept In Illiyuwn - It Is A Kitaab Marked With Times

86 Waylun 'Woe,' to all The Mutaifiyyn 'Cheaters.'

2) Those who fully demand all they can get, when they take a measure from the Enosites.

3) And, when they give measures (for others), or they decrease the measures (in their own favor),

4) Don't they think that they will be Mab'uthuwn 'Raised Up (Back To Life After Death)?'

5) For Yawm Aziym, 'A Most Supreme Day.'

6) A day when all Enosite, will be standing before the Rabb of the 'Aalamiyn, 'Known Worlds,' (to be judged).

7) Nevertheless, the scriptural ledger of Al Fujjaar 'The Boaster', is kept in 'Sijjiyn 'a Place Where Records Are Kept.'

8) And by what means are you able to Adraak 'Perceive' what Sijjiyn is?

9) It is a scripture (marked with) Marquwm 'Numbers.'

10) Woe be on the Mukathibiyn, 'Liars,' on that day.

11) Those who lie about the Day Of Judgment.

12) And none lies about it, except the Mu'atadin, 'Transgressor', Athiym, 'Doers Of Guilty Actions.'

13) And when Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi) Ayyaat 'Verses' - (the Qur'aan) are Tutlaa 'Recited' to him (correctly), he says: "These are (but) the Asaatir 'Fables' of Al Awwaliyn, 'The Ancient Ones,' (who are the Eloheem, Dinneer).

14) Nevertheless, in fact, (the wrong), they have Yaksibuwn 'Earned,' has Raana 'Rusted' over their hearts.

15) Nevertheless, on that day, they will be Mahjubuwn 'Screened,' from their Rabb, who is 'Sustainer.'

16) Then surely, they shall be cast into the Jahiym 'Hell.'

17) Then it shall be said to them: "This is what you claimed to be a lie."

18) Nevertheless, the scriptural (ledger) of Al Abraar, 'The

Curse Be To The Liars On That Day - When The Qur'aan Is Recited To Them.

Righteous,' is in Illiyyiyn, 'The Highest Places,' (where the records of agreeableness are kept in The 19Th Galaxy).

19) And by what means are you able to perceive what 'Illiyuwn is?

20) It is a Kitaab, 'Scripture' Marquwm, 'Marked With Numbers/Time'.

It Is Witnessed By The
Qaraabeem - The Righteous
Will Be In Paradise -
Looking Down From Exalted
Couches - Happy. And
Provided With Rahiyq - It
Will Be Mixed With Sweet
Scents Of Tasniym - A
Spring Where All The
Anunnaqi Who Are Near,
Are Allowed To Drink -
Guilty Ones Laughed And
Winked At The Faithful

21) Which is watched by Al Muqarrabuwn, 'Those Who Are Near', (To The Source, ALLAH - Cherubeem, Or Qaraabeem).

22) Surely, Al Abraar, 'The Righteous' will be in Na'iym, 'The Gentleness' (of paradise).

23) Looking down (Rizq) from Al Araa'ik, 'The Lofty, ('Exalted') Couches'. (They will be in another galaxy, the 19th galaxy).

24) You can see that their faces Nadra 'Radiate' (with happiness) and Na'iym 'Ease.'

25) They will be Risqawna

'Provided With Drinks' of Rahiyq 'Pure Wine,' which will be Makhtuwm 'Sealed From Others'. (They will have wind there).

26) Khitaamuh 'Its seal', will be made from (the scent of) Misk 'Musk' (the musk deer will be there). And in that, so Al Mutanaafisuwn, 'Those Who Aspire To Be Of The Spiritual Ones' (Etherians), will Yatanaafis 'Aspire'.

27) And it will be Mizaaj 'Mixed, Min 'From' Tasniym 'The Sweet Scents Of The Fountain.'

28) 'Aynaan 'A Spring,' from which all the Muqarrabuwn, 'Those Who Are Near, Cherubeem, (Eloheem, Anunnaqi) are allowed to drink. (There are springs there).

29) Surely, those who Ajramuw 'Committed A Crime' (in the Physical World) was of those who (mocked and) Yad-hakuwn 'Laughed' at those who were faithful.

30) And when they, (the guilty ones) pass by them, (the faithful ones), they Yataghamazuwn 'Wink At One Another' (and point at the faithful and jeer).

31) And when they returned with their Ahl 'Families', they returned Fakiheen 'Mocking.'

32) When they saw them, (the faithful ones), they said: "These are they who are Daaluwn, 'Astrayed,' (they have lost touch

with reality)."

33) They were not sent to be Haafiziyn, 'Guardians' over them, (the faithful, or to judge their acts).

34) So the day will come, when these who are faithful will be laughing at the ones who concealed that which they knew to be the facts.

35) On Al Araa'ik, 'The Exalted Couches' (there is couches there), they will look down (they will be up there).

36) Don't Al Kuffaar, 'The Ones Who Concealed That Which They Knew To Be The Facts', get their payment (reward) for that which they did?

Sudiq Allahu 'El Azim

Chapter Eighty-Seven

*Revealed In The Year 624-626 A.D. (Verses 266,
632 Were Revealed In Medina)*

Al Baqarah
(The Helper)

Original Order Chapter 87;
Wrong Order Chapter 2

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

87 (11) Adam - the Shadow Hour of Power; Muhammad the first and the last newbearers, of the seed of Adam.

2 That Book is a scripture no

doubt about that; inside of it, there is leading calmness to those who tremble.

3 These are they who are faithful to what is unseen, and they get up to perform salutation as worship; and of the things We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have provided for them, they share willingly.

4 These are they who are faithful to what was sent down to you, (Muhammad), and what was sent down before your time; (that is the other scriptures and tablets), and in Al Akhir 'The End' they will certainly be prosperous.

5 These are the ones who follow the calmness given by their Rabb, 'Master'; and these are the ones who are prosperous.

6 Surely, those who cover the facts; it is the same for them, whether you warn them, or do not warn them; they are not going to be faithful.

7 The Source, ALLAH has put a seal on their Emotional Hearts and their hearing; and on their eyes is a screen, and there awaits for them a supreme pain.

8 And from amongst Al Naas, 'The Enosites'; there are those of them who will say: "We have faith in The Source, ALLAH for fear of the day of Yowm Al Akhir 'The End'; and they are not really in with the faithful.

9 They only seek to deceive The

Source, ALLAH and those who have faith; and they don't deceive anyone except themselves; but they don't perceive it.

10 In their hearts, there is a disease, so ALLAH will increase their disease and for them, there is an aching pain, because they are liars.

11 And when it is said to them, "Don't cause mischief in Qi also called Al Ard 'The planet Tiamat Earth.' They say: "Surely, we are Perfectionists."

12 Except for the fact that they are surely the Mischief Makers, but they don't feel it.

Those Who Wander Astray

13 And when it is said to them: "Have the same faith that the Naas/Enosites had before you," they say: "Shall we have the faith of fools?" Now surely, they are the biggest fools, but they don't know it.

14 And when they meet those who have faith they say: "We have faith also"; and when they are left alone with their Shayaatiyn 'Satans,' the Reptilians, Luciferians,' they say to them: "Surely we are with you, and we were only ridiculing them."

15 So, The Source, ALLAH ridicules them by way of themselves, and He (He Not We) increases their rebelliousness;

and they blindly wander astray.

16 These are they who buy error by way of leading calmness. They are deliberately rejecting the facts, but they do not gain, nor are they successful in their transactions; nor are they lead into calmness.

17 Their likeness is as the likeness of one who kindles a fire, to remove the fear of darkness, and when it illuminates all around them they feel secure; Then, The Source, ALLAH, took away their light and left them in a state of darkness, unable to see.

18 They are deaf, dumb, blind, so they will never return to the leading calmness.

19 Or like a rainstorm from the Skies; in it is darkness, thunder and lightening. It makes them put their fingers in their ears from the claps of thunder, in order to guard against death. Yet, The Source, ALLAH encompasses those who conceal what they know are facts.

20 The lightening almost dazzles their vision, as often as it illuminates for them. They walk in it and when it darkens upon them, they stop and stand still; and if The Source, ALLAH had pleased, He (He Not We) would have taken away their hearing and their sight; surely ALLAH can do all things.

21 Oh you Al Naas/Enosites slave for your Rabb, (Enqi)

'Master' who created you and those before you, that perhaps you all will tremble at the mention of The Source, ALLAH.

22 It is He, ([He Not We] - A Yahuwa) who made the planet Earth a resting place for you, and the Sky a well-built structure; and He sent water down from the Sky; and He bringeth forth fruits by way of it, as provisions for you; and don't make any rivals with Him (Him Not Us), while you all know better.

A Challenge To The Doubters Of The Qur'aan

23 And if you are in doubt about what We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down, (this Qur'aan) to Our (Our Not My) slave (Muhammad), then produce and present a chapter like it; and call on your witnesses other than The Source, ALLAH if you are speaking truthfully.

24 But if you can't do it, and by no means can you do it, then fear the fire whose fuel is the Enosites and stones. It is prepared for the ones who conceal what they know are facts.

25 And give good news to those who are faithful and work to perfect themselves. There is a Jannat 'Garden' for them and there flows beneath it rivers, all of which has been provided for

them; fruits also are provided (there are fruits in heaven) and they will say: "This is He (He Not We), who has provided us with things like this. He it is who has provided this before," and they give things by way of Him (Him Not Us) and for them, in the Jannat, there will be mates who are pure, and they will be in it forever.

26 Surely, The Source, ALLAH is not ashamed to strike out with a likeness, whether it's about the lowest of creation; a gnat or anything above it. So as for those who are faithful, they know that (this Qur'aan) is a fact (beyond doubt) from their Rabb who is 'Sustainer'; and as for the ones who conceal what they know are facts, they say: "What does The Source, ALLAH mean by this likeness?" He leads many astray (by the Qur'aan), and He (He Not We) calms many (by the Qur'aan); and He did not lead any astray (by the Qur'aan) except the transgressors.

27 These are those who violate the covenant of The Source, ALLAH after His (His Not Our) fulfillment of a promise (covenant) was made, and they cut it and try to undermine what The Source, ALLAH ordered by way of this, by joining together and causing mischief in the Ard 'Planet Earth'; these are they who are

the losers from amongst you.

28 How can you conceal what you know to be the facts, given by way Of The Source, ALLAH and you were lifeless and He (He Not We) made you live? Then He will cause you to be lifeless again, then He will make you live again, then unto Him (Him Not Us) you will finally return.

29 (HU - The Creative Force Of Will), 'He' is, who Khalaq 'Created' for you all, that which is in the planet Earth, then He turned His (His Not Our) direction towards the Skies, so He (He Not We) completed two Heavens: (the planets above the firmament: Kishar (Jupiter), Anshar (Saturn), Mashsig (Uranus), Ea (Neptune); and the planets below the Asteroid Belt's Firmament: Mummu (Mercury), Lahamu (Venus), Tiamat (Earth), Lahmu (Mars); or seven heavens and He is the best knower of all things.

The Placement Of A Khalifat In The Earth

30 And when your Rabb, (Enqi) said to the Angelic Messengers, (Eloheem, Anunnaqi): "Surely, I will make a Khalifat, 'Successor - Left Behind' in the planet Tiamat Earth." They said: "Are you going to make in it one of those who cause mischief in it and shed blood?" And We, ([We Not Me] Eloheem, Anunnaqi

glorify You, by way of gratitude, and our holiness is to You." He said: "Surely, I know what you don't know."

31 And He, (Kalkael), (The Eloheem, Anunnaqi) taught Zakar/Adam the names of all things. Then (Kalkael, also known as Uriel) presented all things to the Angelic Messengers, (Eloheem, Anunnaqi) of the Skies.

32 So (Kalkael, who is also called Rudwaan/ Uriel) said: "Tell Me (Me Not We) about them; of all these things in the planet Tiamat, if you are to be trusted. They, (the Eloheem, Anunnaqi) said: "Glory be to You, (ANU)! We have no knowledge except what you have taught us." Surely, You (You Not We) are The Knowing, The Most Wise.

33 He said: "O Zakar, Adam, teach them, (these Eloheem, Anunnaqi) by using each of their names." When (Zakar, also called Adam) had taught and informed them of their names, he said: "Did I not say to you, (Eloheem, Anunnaqi): "Surely I know every unseen thing in 'Orion' the Skies and 'Tiamat, the planet Earth, and I know what you reveal and what you've been concealing?"

34 And when We (We Not He), said to the angelic messengers, (those Eloheem, Anunnaqi): "To prostrate for Zakar, Adam," so

they all prostrated except the Rebellious One, Samael/Haylal, Ibliys Son Of Shakhār, Tarnush/Taaghwt. He refused to prostrate and he was big-chested pouting with pride; and he was of Al Kaafirriyn 'Those Who Concealed What They Knew To Be The Facts.'

35 And Kalkael and the Eloheem, Anunnaqi said to Zakar/Adam, "You and your mate Nekaybaw/Eve dwell in the Jannat 'Garden,' and eat freely from whatever you two please; but don't approach this Tree of Agreeable and Disagreeable Things' or you will be classed with those who are from the Zaalimiyn 'Ones Who Are In A State Of Unjustness.'

36 So Al Shaytaan, Samael/Haylal, Satan, The Reptilian made both of them, (Adam/Zakar and Nekaybaw/Eve) slip from the (garden). So We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) told both of them to get out from the state they were in; and We, (Eloheem, Anunnaqi) said: "Get down. Some of you, (that is woman's seed), will be like enemies for others - (Satan, The Reptilian's seed); and for only a while the planet Tiamat 'Earth' is to be a residence and a possession for you; (the woman's seed and Satan, the Reptilian's seed)."

37 So Zakar/Adam received words from his Rabb, (Kalkael).

So he, (Adam/Zakar) turned to Him (Him Not Us) repenting. Surely, He, (Kalkael) is The Repentant, The Most Merciful.

38 We, ([We Not I] the Eloheem, Anunnaqi) said: "The whole gathering of you - (Adam, Eve And Satan), get down from here." From Me (Me Not We), there shall come to you leading calmness; and as for those who follow My (My Not Our) calmness, no fear shall be upon them and they will not grieve.

39 And those who conceal what they know to be the facts, and deny Our, ([Our Not My] Eloheems') signs, (which are the scriptures); these are the ones who are companions of the fire. They shall be in it eternally.

The Fulfillment Of Israel's Covenants

40 Oh Ye Banees Israaiyl 'Children Of Israel/Jacob,' remember My (My Not Our) grace and how gracious I (I Not We) was to you; and fulfill your covenant with Me (Me Not We), for I shall fulfill My covenant with you and you should be frightened only of Me.

41 And be faithful (and loyal) to what I (I Not We) sent down, (this Qur'aan). It is the facts confirming what is already with you; and don't be the first to conceal the facts in it, and don't buy things of the world and

reject My (My Not Our) signs for a little price; and only I (I Not We) should make you tremble.

42 And don't mix the facts (beyond doubt) with false things, nor conceal the facts of the laws while you know better.

43 And stand in the ranks of salutation as worship and give charity and bow down (in worship) with those who bow.

44 Do you command the Enosites in what is righteous and yet, you forget to do it your ownelves? Yet, you all (read and) recite the scripture. Don't you all have any intellect?

45 So seek help by way of patience and salutation as worship and surely, it is a big task, except for those who are humble.

46 Those who think they shall surely meet their Master, 'Rabb' and that towards Him (Him Not Us) is their return.

The Many Warnings Of Israel

47 O Banec Israa'iyl 'Children of Israel/Jacob,' remember My (My Not Our) grace and how gracious I (I Not We) was to you, and surely I, preferred you over the whole world.

48 And tremble at the day when no spirit will be able to vouch for any other spirit in any way; and no intercession will be

accepted for another, nor will compensation be taken from it and they will not be aided.

49 And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) delivered you all (Mosheh's Enosites) from the family of Pharaoh (Ramses II) who tormented you grievously and painfully. They were slaughtering your sons and letting your women live; and in that, there was a 'Aziymun 'Supreme' trial from your Master.

50 And when We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) divided Al Bahr 'The Reed Sea' for you all, (Mosheh's Enosites); so We, (the Eloheem, Anunnaqi), delivered you all. Yet, We, (the Eloheem, Anunnaqi) drowned the family of Fir'own, (Ramses II) while you were looking on.

51 And when We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) made an appointment with Mosheh for a forty Shadow Hour Period. Then you, Children Of Israel/Jacob took Al 'Ijla 'The Golden Calf', (symbolic of the Egyptian deity Hathor, for an object of worship) after he, (Mosheh) left you; and it was this, that turned you to be in a state of unjustness.

52 Then We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) forgave you, (the Children of Israel/Jacob) after that so that you might be thankful.

53 And when We, ([We Not He]

the Eloheem, Anunnaqi) gave Mosheh the scripture - (the Torah Of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa), and Al Furqaan 'The Distinction,' - (the ability to see its meaning) so that you, (Children Of Israel/Jacob) may be of those who are lead into calmness.

54 And when Mosheh said to his kindred: "Oh my kindred, (Israelites), surely you have turned your own souls towards a state of unjustness; by taking the Golden Calf (and worshipping it). So repent and turn back to Baari-ikum 'Your Maker, (Enqi)' so Aqtuluw 'Kill' them (of the Levite tribe) yourselves, (your own Enosites, that strayed into a state of unjustness). This is best for you with your Baari-ikum 'Your Maker, (Enqi)'. So He turned to you all, to accept repentance. For surely, He, (ALLAH), is the one you return to for repentance, Al Rahiym 'The Most Merciful'.

55 And when you (Children of Israel/Jacob) said: "Oh Mosheh, we will never have faith in you, until we see The Source, ALLAH Jahratan 'Manifest In Physical Form'; so then Our, ([Our Not My] Eloheem's) punishment overtook you (Children of Israel from the Skies) while you were looking.

56 Then We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi)

Ba'athnaakum 'Raised You After You Were Dead', so that perhaps you would be thankful.

57 And We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) caused the clouds to (protect you) and We sent down Manna (which is mushroom) and Quail To You. Eat Of The Good Things Of which We (The Eloheem Anunnaqi) have provided for you all; and they (the children of Israel) did no wrong to (the Eloheem Anunnaqi), but it was their own spirits that they wronged.

58 And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) said: "Enter this village (in the Land of Canaan), and eat from wherever you please abundantly and enter Al Baab 'The Door', Sujjadaan 'Prostrating' humbly"; and say: "Pardon us," and We, (Eloheem, Anunnaqi) will forgive you for disagreeable acts and the ones (of the Children of Israel) who do agreeable things, We will increase for the good doers.

59 But some of them, (Moshehs Enosites) who are in a state of unjustness, changed the spaces of sayings to make them say other than what was spoken to them. So for what they pervert; We, (the Eloheem, Anunnaqi) sent down pestilence from Al Samaa-i 'The Sky' on those who transgressed.

60 So when Mosheh asked for water for his kindred, the

Jacobites/Israelites We Eloheem, Anunnaqi said: "Adrib 'Strike' the rock Be'Asaaka 'With Your Staff'; and twelve springs flowed forth from the rock. Certainly, everyone of his Enosites knew which was (their tribe's) drinking place; and eat and drink of what is Rizqi 'Provided By' The Source, ALLAH; and do not be one of the mischief makers (like Satan, Samael the Reptilian, Son Of Shakhar And Mylitta causing corruption in the planet Qi/Tiamat 'Earth').

61 And when you, (sons of Ya'aqob) said: "Oh Mosheh, we can never be Sabr 'Patient' with Waahidin 'One' kind of food, so Ad'u 'Call' (pray) for us to your Rabb 'Master' to bring forth for us, the things that the Ard 'Earth' Tunbitu 'Grows': from Baqlihaa 'Its Herbs' and Qith-thaa-ihaa 'Its Cucumbers', and Fawmihaa 'Its Garlic', and 'Adasihaa 'Its Lentils' and Basalihaa 'Its Onions'." He, (Mosheh) said: "Do you seek to exchange something good for something inferior?" Maybe you should go down (resettle) in Misr, 'The Land of the Two Rivers - Mitsrayim, Burnt Faces, Kemet'; (in North East Africa). Surely, whatever you ask for, is yours." And they, (the Children of Israel) Duribat 'Were Hit' with Al Dhillatu 'Humiliation' and Al Maskanatu

'Wretchedness', and the plagues of The Source were brought down. That is because they were of those who conceal what they knew to be the facts, about the signs of The Source, ALLAH, and they would kill Al Anbiyaa 'The Newsbearers' (like Yowchanawn The Baptist; Immanuw'el son of Yesha'yah; Ezrah, and Le'ummiym) in order to change the facts. This is because they disobeyed and were transgressors of the law.

Reward For The Faithful

62 Surely, those who are faithful and those who are of the tribe of Al Yahuwd 'Judah'; and 'The Aiders,' Al Nasaara: (followers of Messiah Jesus), and the Saabi-een: (the Converts), and whoever was faithful to The Source and the Last Day, and worked to perfect their beings, their reward is with their Rabb 'Master', and no fear is to come to them and they shall not be regretful.

63 And when We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) took a second oath with you, (the Children of Israel), and We (Eloheem, Anunnaqi,) raised the mountain Al Tur, of the Bull; Sineen - Mount Sinai, over you, (while in the Valley of Serabid El Qadam where the Temple of Hathor is); take hold of what We, (the Eloheem) gave you

with strength, and Adhkur 'Remember' what is therein; so that you may be of the ones who tremble at the mention.

64 Then, after that, you turned from (the law); so if, it were not for The Source, ALLAH'S favor on you and His (His Not Our) yielding mercy, you would be of Al Khaasiriyn 'The Losers'.

65 And indeed, you know those from amongst you who violated the Sabbath. So We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) said to them: "Be like the Qiradatan 'Monkeys', (shaggy Enosites) driven away (in the wilderness)."

66 So We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) made it a painful lesson for those of their time for those who succeeded it, and We made it an exhortation for those who tremble at the mention.

The Sacrifice Of The Golden Calf

67 And when Mosheh said to his kindred: "Surely, The Source commands that you Tadhbihuw 'Sacrifice' a Baqaratan 'Heifer'." They said: "Are you mocking and ridiculing us?" He, (Mosheh) said: "I seek protection by way of The Source, ALLAH, from being one of Al Jaahiliyn 'The Ignorant Ones'."

68 They, (Children of Israel) said: "Pray to your Rabb,

'Sustainer/Master' to make plain to us what she, (this heifer) is." (Mosheh) said: "Surely, He says it is a Baqaratan 'Heifer'; neither advanced in age nor a Bukrun 'Virgin' of mid-age between that, so do what you are Tuw'muruwn 'Commanded'."

69 They, (The Children Of Israel) said: "Ad'u 'Call' (Pray) for us to your Master, Rabb to make it plain to us, what Lawnuhaa 'Color She Is' (to be)." He, (Mosheh) said: "Surely, He says: "She is a Baqaratan 'Heifer', Safraa-u Faaqi'un 'Deep Yellow'. Her Color; it is delightful to look at."

70 They, (the Children Of Israel) said: "Ad'u 'Call' (Pray) to your Rabb 'Master' to make it plainer to us what she is. For surely, all Al Baqara 'Heifers' Tashaabaha 'Look Alike' and if it pleases The Source, ALLAH, we will be lead into calmness."

71 Mosheh said: "Surely, He says: "Verily, she is a heifer not yet trained for tilling the soil, or for disturbing the Earth; and she has not surrendered to watering the ground, without a mark in her." They, (the Children Of Israel) said: "Now you have given us the facts (which are beyond a doubt)." So Dhabahuwhaa 'They Slaughtered It', and they nearly did not do it.

72 And when Qataltum 'You All Killed' Nafsaan 'An Enosite',

then you put about his (assassin), and The Source, ALLAH brings forth, what you were about to conceal."

73 So, when (the Eloheem, Anunnagi) said: "Adribuwu 'Strike Him', (the dead man) with a part of it, (the tongue of the heifer); so that The Source may bring him from death to life (again). And (by this), you will see His (His Not Our) signs, so that you will (utilize) your intellect.

74 Then, your hearts became hardened after that, as if it were a rock, or even harder than a rock. Surely, water comes forth from its cracks, and surely by this miracle, some have fallen down in dread of The Source, and ALLAH is never unaware of anything you do.

Changing Of The Torah By The Israelites

75 (Muhammad) don't hunger for the so-called Jews of your time to be faithful to you? While a party of them would hear the Kalaam 'Words' of The Source, ALLAH the Torah, Tawraah - (5 books of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa: 1.Genesis 2.Exodus 3.Leviticus 4.Numbers 5.Deuteronomy); then they Yuharrifuwnahu 'Would Twist And Change It', even after they

had overstood it; and they knew (right from wrong).

76 And when they meet those who are faithful; (those Israelites, who accepted Muhammad), they say: "We are of the faithful"; and when they are Khalaa 'Left' (alone) with one another, they say: "Do you Hadithuwnahum 'Converse With Them', about what The Source has Fataha 'Opened' for you in (the Torah of Mosheh, concerning Muhammad being that true Man of Prophecy what was conferred upon you, so that Muhammad's followers) may argue with you about it, in the possession, (being from) your Rabb, ALLAH who is 'Sustainer and Master'. Do you not have any intellect?

77 Or don't they, (the Jewish leaders in Medina, during Muhammad's time), know that The Source, ALLAH knows what Yusirruwna 'They Keep Secret' and what Yu'linuwn 'They Make Known'.

78 And there are some of those (who have only the knowledge that they were taught), they are taught by their mothers only (gentiles- unlettered, and they are unable to read). They don't know, (can't read) their scriptures except (all they know) is hearsay, and the things they do, is none other than what they made up.

79 So woe (curse be upon them)

to those who write Al Kitaab 'The Scripture' with Aydiyhim 'Their Own Hands', then say: "This is from the possession of The Source, ALLAH," so that they may sell it for a small price. So woe, to them for what is written by their hands; and woe, to them for what they earn by doing that.

80 And they say: "Al Naar 'The Fire' won't touch us, except for an extended period of days; (they mean 40 days), and not more than one year;" (Israel worshipped the Golden Calf, a symbol of the Egyptian deity, Hathor for 40 days). Say, this (Muhammad): "Did The Source, promise you this? If so, The Source, ALLAH will not Yakhliif 'Fail To Keep' 'Ahduhu 'His (His Not Our) Promise', or are you saying things about The Source, ALLAH of which you have no knowledge?"

81 In Fact (Yea), whoever earns evil deeds and is encompassed by way of the evil and the wrong doings, these are the Ashaab 'Companions' of Al Naar 'The Fire'. They will be in it forever.

82 And as for those who are faithful and work to perfect themselves, these are the Companions of Al Jannat 'The Enclosed Garden Of Delight.' They shall be in it eternally.

83 And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) took the (oath), fulfillment of a promise with Banee Israaiyl, 'The Children of Israel/Jacob'; and said to them: "You shall not slave for any one except ALLAH, and do good by Waalidayn 'Your Parents', and those Al Qurbaa 'Near Relatives', and Al Yataamaa 'The Needy' (Orphans) and Al Masaakiyn 'The poor settlers'; and say to the Enosites, only the best things, and they should observe Salaawat 'Salutation As Worship' and give Al Zakaawt 'Charity'." Then, all except a few of you turned back and now you too have turned away.

84 And when We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) took (made) Miythaaqakum 'Your Fulfillment As A Promise' (with you, the tribes of Abrawhawm) that you should not Tasfikuwn 'Shed' each other's blood, and you should not Takhrijuw 'Evict' each other from Diyaarikum 'Your Abodes', then you agreed amongst yourselves, and you were your own watchers (to this promise).

85 Then, you (Children Of Israel); it is you, who killed each other and evict some groups (as the tribes of Judah and Dan) from amongst you out of their abodes. (The other 10 tribes - Naftali, Benyamiyn, Gawd, Asher, Yissawkawr, Zebuwlawn,

The Eloheem, Anunnaqi's
Promise With Israel

Yosafe, Reuwben, Shim'own, Lewiy), from amongst you joined together by a sinful alliance and they were unjust (to Judah and Dan). If they came to you all as captives; you would ransom them and it was unlawful for you to evict them. Do you have faith in some parts of the scriptures, and conceal what you know to be facts, from some of the other parts of them? So, what will be the reward for those who does this from amongst you all? Nothing, except shame and disgrace in this physical world's life and on the Day of Resurrection; they shall return to a (grievous and) forceful (strong) pain and The Source, ALLAH is not unaware of what you do.

86 These are those who Ashtaruw 'Purchased' the life of this physical world for Yowm Al-Akhir 'The (world to come, the Paradise at the) End'. So their pain will not be Yukhaffafu 'Lightened', and they will not be Yunsaruwn 'Aided'.

87 And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) had given Mosheh Al Kitaab 'The Scripture'; We, (Eloheem, Anunnaqi) caused him, (Mosheh) to be (succeeded) by the one sent - (Yehowshuwa); and We, (Eloheem, Anunnaqi), also gave Isa/Yashu'a, the son of Miriam, (22 books) of Al

Bayyinaat 'The Clear Evidence'; and We, (Eloheem, Anunnaqi) Ayadnaahu 'Supported Him' by way of Ruwh Al Quduws 'The Holy Soul'; (The Messenger Nusqu; Gabriel/Jibriyl, "One who came forth from EL, ANU)." So whenever one was sent to you, with the facts that your spirits did not suit; (and things that was opposed to your wishes); you became filled and pouting with pride. A portion (party) of you called some (of the ones sent) liars; and another portion (party) from amongst you would kill some of them (like the newbearers: Yowchanan The Baptist, 'Immanuw'el son of Yesha'yah, Ezzrah, and Leummiym).

88 And they said: "Quluwbunaa 'Our Hearts' has Ghalfun 'A Covering'." In Fact (Nevertheless), The Source, ALLAH La'anahum 'Has Put A Physical Curse On Them', because they conceal what they know are facts. So how little their faith is.

89 And when the scripture, (the Qur'aan) had come to them from The Source, ALLAH Musaddiqun 'Confirming' what was already with them (of the scriptures and tablets); though before that, Yastaftihuwn 'They Used To Ask For A Victorious Opening, Opening Of The Seventh Seal', over those Al Kaafiriyn 'Who Concealed What

They Knew To Be The Facts.' So when (this Qur'aan) which they recognized had come to them, they concealed what they knew to be the facts about it. So The Source, ALLAH La'anat 'Has Put A Curse' on the concealers of the facts.

90 Wretchedness, is what they sold themselves for; so that they can conceal what they know are facts, about what The Source, ALLAH, has sent down, (this Qur'aan). Baghyaan 'They Are Jealous' that The Source, ALLAH should send down (revelations) unto whom He (He Not We) pleases and to the slave of His (His Not Our) preference (his choice, Muhammad who was an Ishmaelite). So they provoked wrath after wrath upon themselves; and as for those who conceal what they know are facts, there shall be a despicable (disgraceful) pain.

91 And when it is said to them, "To Aaminuw 'Have Faith' in what The Source, ALLAH has Unzala 'Sent Down' - (that is this Qur'aan); They say: "We have faith in what was sent down upon us (to us, the Torah)"; and they conceal what they know to be facts with what is behind it (the Qur'aan), and (while) it is the (indisputable) fact, Musaddiqaan 'Confirming' what is already with them, (the Torah). Say to them: "So why do Taqtuluwn 'You Kill' Al

Anbiyaa 'The Newsbearers; the prophets' like Yowchanan, The Baptist, Immanuw'el son of Yesha'yah, Ezrah, and Luemmiym of The Source, ALLAH before, if you were truly of the Muw-miniyn 'Faithful Ones'?

92 And indeed, Mosheh came to you, Children of Jacob with Bayyinaat 'Clear Evidences', (the Torah). Then, after that, you took Al 'Ijla 'The (Golden) Calf' (and worshipped it, and in Mosheh's absence,) you all went to the state of Al Zaalimiyn 'The Ones Who Are Unjust.'

93 And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) took (made) your fulfillment of a promise (with you, Children of Israel/Jacob): and We Rafa'naa 'Raised' above you the mountain "Al-Tur," (of the Bull, in the Sinai Peninsula), so take hold onto what We, (Eloheem) have given you all, being strong (in it) and listen. They, (The Children of Israel) said: "We heard and (yet) 'Asaynaa 'We Disobeyed'," and (they were made to) drink, (take) into their hearts (the faith) of Al 'Ijla 'The (Golden) Calf', on account of their concealing what they knew to be the facts. Say: "Of what wretchedness does he orders you all in, that which you have faith in, if you have any faith (at all)?"

94 Say: "If you think the Last Abode, (the Garden of Delight)

(with) the possession of The Source, ALLAH is especially for you, (the Children Of Israel), and it will exclude all other Enosites, (tribes from Abranchawm); so (then) you should wish and pray for Al Mawt 'Death' if you are Saadiqiyn/Zodoqites 'Truthful'.

95 And they won't ever wish for (death), because of what they present by way of their own hands - (their own works); and The Source, ALLAH knows the ones who are in Zaalimiyn 'A State Of Unjustness'.

96 And you will find these Ahrasa 'Greedy' Enosites (clinging) on to Hayaawatin 'Life', even more than those who Ashrakuw 'Associate Partners'. Every one of them wishes for Yummaru 'Long Life', (as long as) Alfa '1,000' Sinatin 'Years'; and it will not diminish his pain, if he lives long and The Source, ALLAH is The Basiyrun 'Seer' of (all) that they do.

Whoever Is An Enemy
Towards Gabriel, And
Michael And The Ones Sent,
The Source, Allah Is Their
Enemy

97 Say: "As for whoever is the 'Aduwwaan 'Enemy' of Jibriyl/Gabriel/ Nusqu; Surely, it was he who brought it, (this Qur'aan) 'Alaa 'On' (to) Qalbika 'Your Heart', (Muhammad) by

the permission of The Source. It (the Qur'aan), Musaddiqaan 'Confirms' (validifies) that which is Bayna 'Between' (Gabriel's) hands, and a calmness and good news for the Mu'miniyn 'Faithful Ones'."

98 Whosoever, is 'Aduwwaan 'An Enemy' to Him, (of him, The Source) and Malaa-ikatihi 'His Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) and (all) Rusulihi 'His Ones Sent,' and Jibriyl/Gabriel and Michael, (also known as Murdoq and Melchizedek); surely, The Source, ALLAH (EL) is the 'Aduwwun 'Enemy' (ALLAH has enemies) of Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal What They Know To Be The Facts'.

99 And certainly, We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi), sent down to you, (Muhammad) clear signs, (the Qur'aan); and none conceal what they know to be the facts about them, except Al Faasiqun 'The Transgressors'.

100 And is it not a fact, whenever they, (the Children of Israel) make a promise, a fariyqun 'portion' (group) of them Nabadhahu 'Reject It'? In fact, most of them do not Yu-minuwn 'Have Faith'.

101 When (Muhammad), a Rasuwl who was 'One Sent' came to them from the possession of The Source, ALLAH, Musaddiqun 'Confirming' what was already with them, (the

Torah); Nabadha 'They Rejected' (it, the Qur'aan). A Fariyqun 'Portion' (group) of them who have been given Al Kitaab 'The Scripture' (and tablets before), put the scripture (the Qur'aan) of The Source, ALLAH behind their backs, as if, they knew nothing.

102 And they followed what the Shayaatiyn 'Evil Ones', (the Reptilians) Tatluw 'Recited' against the Mulk 'Rulership' of Shelomoh (Sulaymaan) and Shelomoh was not one of those who concealed what he knew to be facts, but it was Al Shayaatiyn (the Evil Ones, the Reptilians) who Kafaruw 'Concealed What They Knew To Be The Facts'. Yu'allimuwna 'They taught' the Enosites Al Sihra 'Magic' and what was Anzila 'Sent Down' upon, (what was sent to) Al Malakayni 'The Two Angelic Messengers', Haaruwt and Maaruw; Gog And Magog' (in Babel, Sumer). They, (Haaruwt and Maaruw) would not teach a single Enosite until they said: "We, (Haaruwt and Maaruw) are only a Fitnatun 'Test', so don't conceal what you know to be the facts." So they learned from both of them, (Haaruwt and Maaruw) that which yufarriquwn 'could divide and bring separation' between Al Mar-i 'A Person' and Zawjihi 'His Mate', and they could harm no one except by

The Source, ALLAH'S permission and they learned what harmed them and did not benefit them; and certainly they knew those who Ashtaraahu 'Purchased It', and he should have no Khalaaiqn 'Share' of it in the End; and Labis-sa 'Evil, Wretchedness', is the price for which they sell their selves/spirits; if they only knew.

103 And if they had been of the faithful and trembled at the mention (of The Source), for them there would have been a good reward from the possession of The Source, ALLAH; even better, if they had only known.

104 Oh you who Aamanuw 'Are Faithful!' Don't say: "Raa'ina, meaning, Look At Us"; when speaking about (Muhammad); and it is better to say: "Unzurnaa" meaning 'Notice Us and listen'; and there is an aching pain for those who conceal what they know are facts.

105 Not like those who conceal what they know to be facts from the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture'; (the Children of Israel/Jacob); nor Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' would like that, anything good be sent down to you, from your Rabb 'Master', and The Source, ALLAH Yakhtasu 'Distinguishes' by His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy) whom He (He Not We) pleases,

and The Source, ALLAH possesses Al 'Aziym 'The Supreme' bounty.

106 Whatever We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) Nansakh 'Abolish' of a verse, or Nunsihaa 'Cause To Be Forgotten'; We (We Not He) will bring forth a better one, or the Mithlihaa 'Likeness Of It'. Don't you Ta'lam 'Know' that The Source, ALLAH has power over all things?

107 Don't you know that the Mulk 'Rulership' of Al Samawaat 'The Skies' and the planet Tiamat, Al Ard, 'Earth' belongs to ALLAH, and there is no one for you, other than The Source, ALLAH as a Waliy 'Near Friend,' or Nasir 'An Aider'?

108 Or do you want to question the Rasuwl, 'One Sent' to you, the way Mosheh was asked before? And as for him who Yatabaddal 'Exchanges' being Al Iymaan 'Faithful' for being a Kufra 'Concealer Of The Facts', certainly he strays from the right path.

109 And most of the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture'; (Israelites), want to turn you, (Ishmaelites) back into concealers of the facts (from the Religion of Aabrawhawm), after you all have accepted the factual faith; out of envy from within their own spirits, after the facts has been made clear to them, as

an (indisputable) fact. So forgive and Asfahuw 'Pardon' until The Source, ALLAH (Himself) gives His (His Not Our) amr 'command'; now surely, The Source, ALLAH has the Qadiyr 'Power' over all things.

110 And rise up to observe Al Salaawta 'Salutation' As Worship' and give charity and whatever good you send forth from your (spiritual) self, you shall find it in (with) the possession of The Source; surely, The Source, ALLAH, sees all that you do.

111 And they, Al Yahuwd 'The Judahites' Say: "None will enter Al Jannat 'The Garden' except he who was of the Yahuwd 'Judahites' (of Israel, Jacob's Children); or the Nasaaraa, 'Nazarites'. That is what they wish. Tell them this, (Muhammad): "Bring your proof, if you are Saadiqiyn/Zodoqites 'Truthful'."

112 In Fact, (Nevertheless), he who Aslama 'Surrenders In Peace', "Al Islaam," Wajhahu 'His Face' towards Him (Him Not Us), and he is one who does (good) that which is best. So his reward is from the possession of his Rabb, 'Master' and there is no Khawf 'Fear' for them and they shall not be sad.

113 And the Judahites (Of Israel, Jacob; who were the followers of Mosheh) say: "The Nasaaraa the 'Followers' Of

Yashu'a,' don't follow anything"; and the Nasaaraa 'Followers Of Yashu'a,' say: "That the Judahites, don't follow anything; yet they (read and) recite Al Kitaab 'The (Same) Scripture'; (the Torah of Mosheh). They, the (Nasaaraa and the Judahites) are like those who have no knowledge of what they are saying. So He (He Not We), The Source, ALLAH will use wisdom between them on the Day of Resurrection, about what they dispute over.

114 And who is more, unjust than he who seeks to prevent others from attending Masaajid "Places of Prostration" (and worship) of The Source, ALLAH for the remembrance of His (His Not Our) Asm 'Name', and strive to ruin them; they may not enter (the Masjid 'Place of Prostration') except if they have fear. So for them there is nothing but shame in this physical world, and there is a supreme pain in the End (One To Come) for them.

Everything In The Earth
And The Skies Belongs To
Allah

115 And Al Mushriq 'The East' and Al Maghrib 'The West' belongs to Him (Him Not Us), So wherever you turn there is The Source, ALLAH'S Wajh 'Face' (Allah Has A Physical

Face). Surely, ALLAH Is 'Aliymun 'Knowing', Waasi'un 'All Comprehensive',

116 And they say: "The Source, ALLAH has taken a Waladaan 'Paternal Son'. Glory be to Him (Him Not Us), (ALLAH). Nevertheless, His (His Not Our) is all that is in Al Samaawaat 'The Skies' (Firmament) and in the planet Tiamat - all of them is obedient to Him.

117 He is the Badiy'u 'Beginner' (Originator) of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard Tiamat, the planet 'Earth'; and if He (He Not We) decides anything, it is only for Him (Him Not Us) to say: Kun 'Exists', and it will come into existence.

118 And those who have no knowledge say: "If only ALLAH could Yaklimunaa 'Speak Words' to us, or come to us (in person) with a sign." This is how those (Children of Israel) from before them (The Nasaaraa) said it. Their hearts Tashaabahat 'Are Alike'; certainly, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave clear evidence through signs for a kindred, so that they may be sure.

119 Surely We, ([We Not He] Eloheem) sent you (Muhammad) with the facts; (the scriptures beyond doubt); as a bearer of good news; (the newsmen and ones sent) and as a warner; (like Al Mahdi 'The Guide To Calmness' and Al Mujaddid,

'The Reformer - Malachi Z. York'), you shall not be asked about the Companions of Jaheem 'hell'.

120 And never will the Judahites (The followers of the Eloheem Mosheh) and the Nasaaraa (the followers of Messiah Jesus, be pleased with you Muhammad), until you follow their Millat 'Rites'. Tell them this, (Muhammad): "Surely, the leading calmness of ALLAH is the (real) leading calmness, and if you follow Ahwaa-ahum 'Their Love, And Desires' after the knowledge of (the Qur'aan) has come to you, there will be neither a Waliyyin 'Near Friend', nor Nasiyrin 'An Aider' for you from The Source, ALLAH."

121 Those whom We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi,) gave the scripture; (the Qur'aan), they recite it correctly in facts the way it should be recited. These are the faithful ones to (the Qur'aan); so as for those who conceal what they know to be the facts about it, these are the ones of you, who are losers.

122 Oh Banee Israaiyl 'Children of Israel'; remember the grace I (I Not We Or Us) showed you and surely it was you (Israelites), I preferred you over the known worlds.

123 And tremble at the mention (of The Source, ALLAH) on the day when no Nafsun

'Person/Spirit' shall replace any other Nafsin 'Person/Spirit', and in no way shall have no benefit, nor any intercession will benefit it; and they will not be aided.

Abrawhawm Made An Imaam For All Enosites

124 And when his Rabb, tested Abrawhawm by Kalimaatin 'Using Certain Words', and he passed them so He said: "Surely, I am putting you up front, the 'Imaam' for all Enosites." (Abrawhawm) said: "And what about Dhurriyatiy 'My Offspring' (Israelites, Ishmaelites, and Midianites)?" he said: "My 'Ahd 'Covenant' will not be with those of them, who are Al Zaalimiyn, 'Those Who Are In A State Of Unjustness'."

125 When We, ([We Not He] The Eloheem) made Al Bayt 'The House' - (the Kaaba in Mecca), a Mathaabatan 'Resort' for the Enosites and a Amnaan 'Sanctuary', and (once this was done), they ([they not me] The Eloheem) took the station of Abrawhawm, (the Qiblat in Mecca) Musallan 'As A Place Of Salutation As Worship' (for you), and Our ([Our Not My] The Eloheem, Anunnaqi's) covenant is with Abrawhawm and Yishmael; so that both of them should Tahhiraa 'Purify' Baytiya 'My house', (and the

Kaaba), for Al Taa-ifiyn 'Those Who Make The Circuit, Run Around It' and for Al 'Aakifiyn 'Those Who Will Meditate' and Al Rrukka'i 'Those Who Bow Down In Prostration'.

126 And when Abrawhawm said: "Oh Rabb, who is "Sustainer/Master" make this town, (Mecca) a secure one; and Arzuq 'Provide' Ahlahu 'Its Families' with the fruits of those who have faith in The Source, ALLAH and the Last Day." He said: "And of the ones who concealed what they knew to be the facts, I will only give a little satisfaction - (wealth). Then I will drive him to a painful fire and it is an evil, wretched place to be, its destination."

127 And when Abrawhawm and Ishmael raised Al Qawaa'ida 'The Foundation' of Al Bayt 'The House' - (the Kaaba, praying); they, Abrawhawm and Yishmael said: "Our Rabb, 'Master' accept (the house) from us: surely, you, (ALLAH) are Al Samiy'u 'The Hearer' And Al 'Aliymu 'The Knower'."

128 Our Master, make us Muslimiyn 'Peaceful Ones'; "Muslims" for you and from our offspring (Ishmaelites), Ummatan 'A Nation' Muslimatan 'Of Peaceful ones' for you; and show us the way of devotion and redeem us. Surely, You, are Al Tawwaab 'The Acceptor Of Repentance,

(Redeemer)', Al Rahiym 'The Most Merciful'."

129 Our Master, Ab'ath 'Raise' (Back To Life) in the (Ishmaelites) midst a Rasuwl 'One Who Is To Be Sent'; (Muhammad) from them who shall recite to them Your (Your Not Our) Aayaat 'Signs', (as scriptures and tablets); and teach them Al Kitaab 'The Scripture', (the Qur'aan) and Al Hikmat 'The Wisdom'; and purify the (Ishmaelites). Surely, you are Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Most Wise'.

130 And as for him who turned away, (rejecting the Law), the Millat, 'Rites of Abrawhawm', he makes a fool of himself; and indeed We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi), have chosen him (Abrawhawm) in this physical world; and surely when Al Akhir 'The End', (comes), he will be of the Saalihiyn 'Perfectionists.'

131 When His Master, said to him: "(Abrawhawm), Aslim 'Surrender In Peace'." (Accept the peaceful way of life, 'Al Islaam.') He, (Abrawhawm) said: "Aslamtu 'I Surrender In Peace', (Al Islaam) to The Master, who is Rabb of all the Known Worlds."

132 And Abrawhawm bequeathed his sons, Ishmaelites by way of The Peaceful Way Of Life, Al Islaam, and Jacob's sons, Israelites

saying: surely, ALLAH has chosen the decision for you, the Diyn 'Means Of Judgment'. So do not die, unless you are of the ones Muslimuwn 'Surrendering In Peace, 'Muslims'.

133 Were you a watcher when death came upon Jacob and when he said to his sons, (12 tribes of Israel): "What will you slave after me?" They said: "We will slave ILAAHAKA 'Your Source,' (ALLAH) and ILAAHA 'The Source, (ALLAH - Creator) of Abaa-ika 'Your Fathers' and Abrawhawm And Yishmael and Yitschaq, Waahidaan 'One' 'Source', ILAHAAN (ALLAH); and to Him (Him Not Us), we do Muslimuwn 'Surrender, In Peace'."

134 That Ummatun 'Nation', (the Israelites), has certainly passed. For it is what it gained and for you, (the Ishmaelites), is what you have gained and you will not be asked about what they had been doing."

135 And they say: "Be Yahuwd Judahites, (followers of Mosheh), or Nasri (followers of Yashu'a)." You will be lead into calmness. Tell them this: "In fact, follow the Millat 'Rites' of Abrawhawm. He was of the Haniyfaan 'Upright'; and he was not of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners'; (Nimrod's, Marar's Enosites, some of the Babylonians)."

136 Tell them this,

(Muhammad): "We, (Muhammad and his followers) have faith in ALLAH, and what He sent down to us, (the Qur'aan) and what he sent down to Abrawhawm and Yishmael and Yitschaq, and Ya'aqob and the tribes and what was given to Mosheh, (The Torah) and Isa/Yashu'a - (the Revelations, and what was given to the Anbiyaa 'Newsbearers,' from their Rabb 'Master', we, (Muhammad and his followers) do not Nufarriqu 'Make Any Distinction' between any of them and we Muslimuwn 'Surrender In Peace' to him."

137 If their faith in The Source is the same as your (Muhammad's), in The Source, ALLAH; Then certainly, they are lead into calmness and if they turn back, then surely, they are in Shiqaaqin 'Opposition'. So, ALLAH will find contentment in You, (Muhammad against those who do not follow the Qur'aan,) and He, (Yahuwa) is Al Samiy'u 'The Hearing', Al 'Aliymu 'The Knowing'.

138 It is The Source's Sibghat 'Coloring'; and who is better than ALLAH Sibghatan 'In Coloring'? And We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi and Mortal Beings In Skin), are His (His Not Our) slaves. (He, The Source, ALLAH, made everything, the way He wanted).

139 Say: "Do you argue with (Muhammad and his followers) about The Source, and He (He Not We), ALLAH is our Rabb, and your Rabb, 'Master/Sustainer'?" And for us, is what we do, and for you (mis-informed Muslims), is what you do: and we (true Muslims), are Mukhlisuwn 'Purified' To Him.

140 Or do you (mis-informed Muslims) say: "Surely Abrawhawm, and Yishmael and Yitschaq and Ya'aqob and Al Asbaat 'The Tribes' were Judahites (followers of Mosheh) or Nasaaraa, (Nazarites; followers of Jesus Christ)?" Say: "Are you a better knower, or is The Source, ALLAH and who is more in a state of unjustness than he who conceals what he watches, which he had from the possession of The Source, ALLAH; (the scriptures are in his possession)? And The Source, ALLAH is Ghaafilin 'Aware' of all that you do."

141 That nation (of Israel which are Jacob's children) have certainly passed away; for them is what they earned, and for you is what you have earned; and you will not be asked about what they were doing (in their time).

142 The Sufahaa-u 'Fools' from amongst the Enosites; (the Muslims) will say: "What was it that turned (the Muslims) away from the direction of their Qiblat; (Jerusalem) which they were used to?" Say: "To The Source belongs the East and the West. He guides whom He pleases to the narrow and straight path of the Ones Who Stand Up Straight."

143 And thus We, ([We Not He] The Eloheem) made you a Wasataan 'Neutral' Ummatan 'Nation' so that you will be a watcher over the Enosites, and the Rasuwl 'One Sent' would be a watcher over you all, and the only reason We (Eloheem Anunnaqi) changed the Qiblat 'The Direction Of Worship', (from Jerusalem to Mecca), is so that We, (the Eloheem, Anunnaqi) will know who Yattabi'u 'Follows' the one sent from those (so-called Jews in Madiynah, Medina) who turn back on 'Aqibayhi 'His Heels', (and stopped following all the Scriptures); and surely it was a difficult test (following all the scriptures), except for those who The Source, ALLAH calmed; and The Source, ALLAH was not neglectful to you in your faith. Surely, ALLAH is Ra'uwf 'Kind' and Rahiym 'Merciful' to all Al Naas, Enosites.

144 Indeed We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) see you

The Turning Of The
Qiblah From Jerusalem To
Mecca

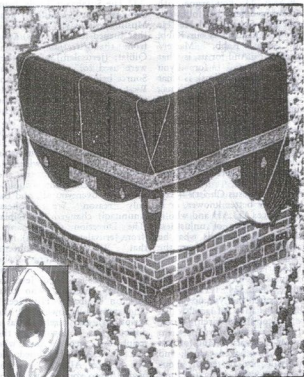


Diagram 36
Kaaba In Mecca

turning your face to Al Samaa-i 'The Skies', so We shall turn you in a Qiblat 'A Direction' in which you will be pleased with. Turn your face towards the Secret Masjid 'Place of Prostration; so wherever you may be, turn your faces in Shatrahah 'Its Direction', and surely, those (Enosites of the Torah Tawraah and Injiyl, Evangel, Revelations) who, when they were given Al Kitaab 'The Scripture', they knew that it was (a fact beyond any doubt), the facts from their Rabb 'Master', ALLAH, because they knew He is not at all negligent of what they, (the Enosites of the Torah and Injiyl) do.

145 And even if you, (Muhammad) brought and gave those, (the Enosites of the Tawraat and Injiyl), who were given the scripture in every way a sign, they (the Enosites of the Torah and Evangel, Revelations), would still not follow the direction you, (Muhammad pray) - your Qiblat, (the Kaaba at Masjid Al Haraam in Mecca), and you, (Muhammad) are not to follow the direction which some of them, (the Enosites of the Torah and the Evangel, Revelation pray), their Qiblat (in Jerusalem), and they, (the Judahites, followers of Mosheh and Nasri, followers of Jesus Christ), don't follow each other's

direction of worship, same Qiblat; and verily if you, (Muhammad), follow Ahwaa-ahum 'Their Loves, Desires' after you know better, then you will most surely, be of those who are Zaalimiyn 'In A State Of Unjustness'.

146 Those (Judahites) whom, We, ([We Not I] The Eloheem, Anunnaqi) had given the scripture - (the Qur'aan), they know about him, (Muhammad), as well as they know about Abnaa-ahum 'Their Own Sons'; and surely, a portion (group) of them tried to conceal (this fact, beyond doubt), the facts; and they knew (who he, Muhammad was. Ibn Salaam, one of the Judahites said to the others, in Medina: "I recognized Muhammad, as the newsbearer of ALLAH as I recognized my own son, the moment I saw him)."

147 The fact (beyond any doubt), is from your Rabb 'Master', (ALLAH. The so-called Judahites knew the fact that, Muhammad is that newsbearer). So don't be amongst the ones who dispute (doubt)."

Come Be With The Source
As One Community

148 And to everyone, (each religion) there is his own (direction) in which he turns- (the Qiblat, 'Direction Of

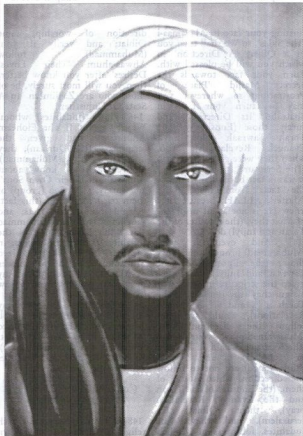


Figure 167
Ibn Salaam - A Judahite

Prayer.)' So hurry and seek the best way, (the Kaaba at Masjid Al Haraam, in Mecca,) wherever you may be. Come be with The Source, ALLAH, all of you; (each religion), Jamiy'aan 'As One Community'. Surely, The Source, ALLAH has the power over everything.

149 And from wherever you may be, leave and turn your face in the Shatra 'Direction' of Al Masjid Al Haraam 'The Sacred (Secret) Place of Prostration'; (the Kaaba in Mecca); and surely this is a fact (beyond any doubt; these are the facts) from your Master, (Muhammad); and The Source, ALLAH is not neglectful about anything you all do.

150 And from wherever you, (Muhammad) may go (outside of Mecca), turn your face in the direction of the Sacred (Secret) Place of Prostration; (the Kaaba in Mecca), and wherever you, (the faithful) may be, turn yourselves and faces towards the direction of (the Kaaba, 'The Cube' at the Secret Place of Prostration in Mecca), so that the Enosites don't have any argument about your (Qiblat: the Kaaba, at the Secret Place of Prostration in Mecca,) except for those from amongst them, who are already in a state of unjustness; and don't fear for them, fear Me, ([Me Not We] ALLAH), and that I (I Not Us) may complete My (My Not Our)

grace upon you, (stay in My grace), so that you, (the faithful) all will be lead into calmness."

151 As We, ([We Not He] The Eloheem) sent to you all, (Muhammad and his followers), from amongst you, reciting for you, (The Eloheem's) verses; (the Qur'aan) and Yuzakkiyikum 'Purifying You All', and to teach you the scripture and Al Hikmat 'The Wisdom', and teach you all that which you did not know.

152 So remember Me (Me Not We), and I will remember you all; and be grateful to Me and don't be of those who conceal what they know are facts.

153 Oh you who are faithful, seek help by way of patience and salutation as worship; for surely, The Source is with the patient ones.

154 And don't say of those who are Uqtalu 'Killed' in the path of The Source, ALLAH, "That they are dead and gone." For, in fact they are the everliving, but you don't perceive it.

You Will Be Tested By Your
Lives And Hunger,
And Wealth

155 And We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) shall certainly test you by way of those things that cause you fear and terror; and you will be tried by your hunger, and loss of wealth, and lives and crops; and

give good news (tidings) to the patient ones.

156 When those who are afflicted with disaster, they say: "Surely, we belong to Him (Him Not Us) and surely unto Him, we will return."

157 These are those (who are faithful). On them are salutations as worship (and blessings) and Rahmat 'Yielding' (mercy) from their Master; and these are the ones lead into calmness.

158 Surely, (the mountains near Mecca), Al Safaa - 'The Chosen Rock', and (the other called) Al Marwah - (The place related to Hagar, wife of Abrawhawm, to quench her thirst), are of the Sha'aa-ir 'Doctrinal Ceremonies' (rites) of ALLAH. So whoever, makes the Hajj 'Pilgrimage' to the house (the Kaaba at Masjid Al Haraam, in Mecca), or just visits, (Umrah the 'Lesser Pilgrimage'); it is no crime for him to run around both of them - (Al Safaa and Al Marwah.) Whoever, is obedient and does good surely, The Source, ALLAH appreciates it; and He, (ALLAH) is The 'Aliymun 'Knower'.

159 Surely, those who conceal what We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent down; (the Qur'aan) which is from clear evidences and the leading calmness; and even after what We, (the Eloheem, Anunnaqi)

made clear for the Naas in the scripture; (the Torah of Moshch), these are those whom The Source, ALLAH has put a physical curse (ALLAH curses people), and also all those who have the power to curse them.

160 Except for those who repent and (work) to Aslahuw 'Perfect Themselves' and make things clear, these are those of whom I (I Not We), accept repentance; and I, (ALLAH) am Al Tawaab 'The Acceptor of Repentance', Al Rahiym 'The Merciful' (Source).

161 Surely, those who conceal what they know are facts and die (in that state) of concealing the facts, these are those who have a physical curse from The Source, ALLAH, and (from) Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers'; (Eloheem, Anunnaqi) and the Ajma'iyn 'Community' of Enosites.

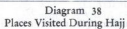
162 They are eternally damned in it; and the pain will not be lightened from them, nor shall they be given a respite; they can't see it.

The Oneness Of The Source
- And The Pain Of Those
Enosites Who Associate
Partners With Him

163 And ILAAHUKUM (your EL/ALLAH) 'Source', is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH/EL) 'Source.' No ILAAHA (ALLAH/EL) 'Source'



Diagram 37
Jerusalem (Qiblat Of The Muslims)



would exist if He (HU -The Creative Force Of Will), didn't create him; HUWA is Al Rahmaan 'The Yelder', Al Rahiym 'The Merciful'.

164 Most surely, in the Khalaq 'Creation' of the Skies 'Firmament,' and Tiamat the planet Earth,' and the Ikhtilaaf 'Alternation' of the Shadow Hour and the daytime, and Al Fulk 'The Craft' (ships) that run in the sea with that which profits the Enosites' (cargo), and the (rain) - water that The Source, ALLAH Anzal 'Sends down' from Al Samaa-i 'The Sky', (the clouds) then gives life with it, to the planet Earth - (giving plants life) after its death and spreads in it all (kinds of) Daabbatin 'Creature' (animals), and the changing of Al Riyyh 'The Winds' and the clouds; (seasons) made subservient between the Skies, and Al Ard, Tiamat The planet 'Earth'; these are signs for a kindred who will learn.

165 And yet there are some Enosites who take love, that should be for The Source, ALLAH and give it to Andaad 'Idols'. They have affection for their (idols) as the affection that is The Source, ALLAH'S only; and those who are faithful have a stronger affection for The Source; and if only those who are in a state of unjustness would see (what is to befall them

for this). Oh, When they see the pain (due for them, they will know) that the power is The Source's altogether; (the day when all is one community), and that The Source's pain is forceful.

166 And when those who were leaders of followers - (false newsmen and fake leaders) will try to clear themselves from their followers; and when they have seen the pain; and then all their relations will be cut off from them."

167 And those (hypocrites), who followed (Abdullah Ibn Ubayy) said: ("And he himself would have said): "If only we could return (to our life again), we would renounce them as they have renounced us. Thus, The Source, ALLAH, will show them that their works are nothing but sorrow, and they will never come out from (Hell's) fire."

Eat Of The Lawful Foods

168 O you Enosites! Eat of what is Halaalan 'Made Lawful'; (given to you by way of the Torah) and that which is Tayyinbaan 'Agreeable' (healthy from) in the planet Earth; and don't follow the Khutyuwaat 'Footsteps' of the Shaytaan (Also Known As Samael/Nakhash/Ibliys/Haylal Son Of Shakhar, Tarnush, Zuen And Mylitta, the Evil One, the Reptilian's Way of

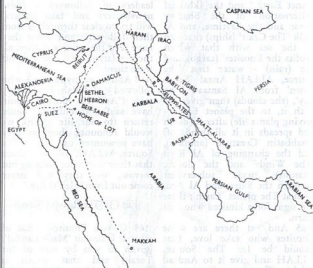


Diagram 39
The Places Visited By Abruahawm

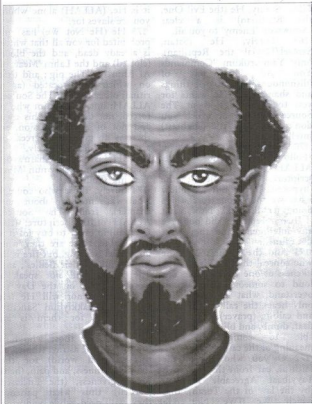


Figure 168
Abdullah Ibn Ubayy

Life). Surely, He (the Evil One, the Reptilian) is a clear 'Aduwwun 'Enemy' to you all.

169 Surely, He (Satan, Samael/Haylal the Reptilian), only Ya-murukum 'Commands You All' by way of (dishonourable) and evil things and shame; and He wants for you to say things about The Source, ALLAH of which you don't even have the (slightest) intelligence.

170 And if it is said to them: "Follow what The Source, ALLAH sent down, (the scriptures and tablets)": the (hypocrites) say: "But we follow what we found our forefathers doing; (traditions)." Now, what if their forefathers did not have any intelligence and they were not calmed?

171 And the likeness of those who conceal the facts, is like the likeness of one who screams out loud to someone who cannot overstand, what he hears. He only hears the call to the facts and calling (prayer). For he is deaf, dumb, and blind, not being able to comprehend (the meaning of the caller's words).

172 O you who are of the faithful, eat from that which is Tayyibaat 'Agreeable' for you (by the law of the Torah), that which We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Razakaakum 'Provided For You All'; and be grateful to Him, for

it is He, (ALLAH) alone whom you are slaves for.

173 He (He Not We) has only prohibited for you all that which is already dead, and the blood (clotted) and the Lahm 'Meat' of Al Khinziyr 'The pig'; and that on which is invoked (as a ritual) other than to The Source, ALLAH; but, as for him who is forced, not desiring of his own and not of a transgression, so there is no guilty (disagreeable) act upon him. Surely, He, ALLAH is The Ghafuwrūn 'Forgiving' and Rahiymun 'Most Yielding' (Source).

174 Surely, those who conceal what was sent down about (any chapter), from The Source, ALLAH of the scripture; (the Qur'aan) in order to buy for it a little value, these are they who do not eat nothing, but fire is in Butuwnihim 'Their Bellies'; and The Source will not speak a word to them on the Day of Resurrection, nor will He (He Not We) Yuzakkiyhim 'Sanctify Them', and for them is an aching pain.

175 These are those who buy the ways of the astray; (things of this material world) for the leading calmness, and pain, (hell) for forgiveness, (the Enclosed Garden); thus what patience they will need while enduring the Fire.

176 That is because The Source, ALLAH Nazzala 'Has Sent

Life). Surely, He (the Evil One, the Reptilian) is a clear 'Aduwwun 'Enemy' to you all.

169 Surely, He (Satan, Samael/Haylal the Reptilian), only Ya-murukum 'Commands You All' by way of (dishonourable) and evil things and shame; and He wants for you to say things about The Source, ALLAH of which you don't even have the (slightest) intelligence.

170 And if it is said to them: "Follow what The Source, ALLAH sent down, (the scriptures and tablets)"; the (hypocrites) say: "But we follow what we found our forefathers doing; (traditions)." Now, what if their forefathers did not have any intelligence and they were not calmed?

171 And the likeness of those who conceal the facts, is like the likeness of one who screams out loud to someone who cannot overstand, what he hears. He only hears the call to the facts and calling (prayer). For he is deaf, dumb, and blind, not being able to comprehend (the meaning of the caller's words).

172 O you who are of the faithful, eat from that which is Tayyibaat 'Agreeable' for you (by the law of the Torah), that which We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Razakaakum 'Provided For You All'; and be grateful to Him, for

it is He, (ALLAH) alone whom you are slaves for.

173 He (He Not We) has only prohibited for you all that which is already dead, and the blood (clotted) and the Lahm 'Meat' of Al Khinziyr 'The pig'; and that on which is invocated (as a ritual) other than to The Source, ALLAH; but, as for him who is forced, not desiring of his own and not of a transgression, so there is no guilty (disagreeable) act upon him. Surely, He, ALLAH is The Ghafuwrūn 'Forgiving' and Rahiymun 'Most Yielding' (Source).

174 Surely, those who conceal what was sent down about (any chapter), from The Source, ALLAH of the scripture; (the Qur'aan) in order to buy for it a little value, these are they who do not eat nothing, but fire is in Butuwnihim 'Their Bellies'; and The Source will not speak a word to them on the Day of Resurrection, nor will He (He Not We) Yuzakkiyhim 'Sanctify Them', and for them is an aching pain.

175 These are those who buy the ways of the astray; (things of this material world) for the leading calmness, and pain, (hell) for forgiveness, (the Enclosed Garden); thus what patience they will need while enduring the Fire.

176 That is because The Source, ALLAH Nazzala 'Has Sent

Down' the scripture - (the Qur'aan,) which is the facts (beyond any doubt); and surely those who disagree with the scripture are in manifest defiance.

True Righteousness-

Retaliation Bequest

177 It is not righteous that you turn your faces to Al Mashriq 'The East' and Al Maghrib 'The West', but rather to be righteous, is to be faithful to The Source, ALLAH and the Last Day and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi); and the scripture and the newsbearers 'men of prophecy'; and giving away wealth out of affection for those in need, and the near relatives (family and kindred) and to the needy (orphans), and the poor, and the son of the path (alien) and those who ask (beg), and those in slavery, and those who enforce salutation as worship, and give the Poor Rate, and those who keep the promises which are covenants that are made; and those who are patient when in distress and affliction; and when there is adversity before them, these are those who are truthful, and these are those who tremble at the mention of (The Source, ALLAH).

178 O you who are faithful, it has been written for you about

retaliation in murder by accident. It is Al Hurru 'The Freeman' for the freeman; Al 'Abdu 'The Slave' for the slave; Al Unthaa 'The Second Part, Female' for the second part, female. However, if the guilty is pardoned by the victim's brother, then a prosecution (for the blood money) should be done the way you know in payment to him in a kind manner. This is indeed a concession and an act of mercy from your Rabb, who is 'Sustainer,' and whoever transgresses after this, is made so clear for him, there awaits an aching pain - (the fire).

179 And for you all, there is a security in keeping the old life; (old Law) of Justice and Retaliation; oh you, First Ones (who pass through) the door (of the mystic order of zodoq), so that you would tremble (at the thought of judgment).

Laws Concerning Death

180 It has been Kutiba 'Written' (for) upon you all, when death comes for one of you; "If he leaves behind any good, that he makes a bequest for Waalidayn 'Parents' and Al Aqrabayn 'The Near Relatives' justly (without showing preference to a rich relative)." This fact is incumbent upon those who tremble at the mention (of The

Source, ALLAH).

181 So whoever, changes the (will) after he has heard of it, then it is a great guilt (disagreeable) act for those who change it. Surely, ALLAH is a Samiy'un 'Hearing' and 'Aliymun 'Knowing' (Source of everything).

182 So as for he who fears the person who wrote (the will), will decline (from following it truthfully) out of his guilty actions (sinfulness) and establishes an agreement between (the Enosites involved); it is no guilt (sin) on him for doing this. Surely, (He), The Source, ALLAH is The Ghafuwrūn 'Forgiving', The Rahiymun 'Most Merciful' (Source).

To Fast As Those Did Before You

183 O you who are faithful, it has been written for you all (followers of Muhammad) to Siyaam 'Fast' as it was written for those (Children of Israel) before you, so that you may tremble at the mention (of The Source).

184 A number of days are already set, (29 or 30;) so as for those of you who are sick, or on a journey (in the desert), he shall fast that number of other days; and as for those who are not able to fast, he must feed a poor

person (for each day of the fast missed); and those who obey are the best of (Enosites), but is even better for you to fast, if you only knew.

185 The month in Ramadaan, (the hot month), is the one in which 'the Two Reading'; the Qur'aan was Anzil 'Sent Down' as a leading calmness for the Enosites and Bayyinaat 'Clear Evidences' from the leading calmness, and gives Al Furqaan 'The Ability To Differentiate'." As for those of you who are a watcher in the month of (Ramadaan) let him fast during it; and whoever is sick or on a journey (in the desert), he shall fast for a number of other days. The Source, ALLAH wants ease for you all; He (He Not We) does not want things to be difficult; and complete the number (29 or 30) days in the month of (Ramadaan), for He (He Not We) is The Oldest in the way in which He calms you and perhaps you will be grateful.

186 And when My (My Not Our) slaves ask you, (Muhammad) about Me (Me Not We), know that I (I Not Us) am very near. For I answer the calling (prayers) of the caller (prayer) when he calls (prays). So they should answer Me (Me Not We, ALLAH) and have faith in Me, (ALLAH) so that perhaps they will be lead into calmness.

187 It is Uhilla 'Lawful' for you

all to have Rafthu 'Sexual Intercourse' with your Enosite women, through the Shadow Hours of Al Siyaam 'The Fast'; (your wives) are as your clothing, and you are as their own clothing. The Source, ALLAH knows that you used to betray yourselves, and He (He Not We) pardoned you. So repent, for you may now go in unto them (sexually); and seek to obey what was written for you to do; and eat and drink, (partake in Suhuwr 'A Meal Before The Breaking Forth Of The Day,') until it is clear to you that the white streak, like a thread is in the blackness of daybreak (Fajr). So complete the fast through the Shadow Hour and don't have sexual contact with them while you spend l'tikaaf, (the last ten days in the month called Ramadaan) in Al Masaajid 'The Places Of Prostration'. This is The Source, ALLAH'S limits. So don't go near them (sexually); thus He does make clear His signs for all Enosites, so perhaps they will tremble at the mention (of The Source, ALLAH.)

188 And don't eat up (rob) each other's wealth amongst yourselves by false dealings (bribes) to the Al Hukkaam 'Wise Ones,' to eat up the other Enosite's portion of wealth with guilt (sinfully) when you know better.

189 They ask you, (Muhammad) about Al Ahllat 'The Crescent Moons'. Tell them this, (Muhammad): 'The (crescent moons) are a timing for the Naas/Enosites and Al Hajji 'The Pilgrimage'; and it is not righteousness that you enter, (or leave) your houses from their back doors (trying to hide that you are Muslims); but the righteous is he who fears (for The Source) only and comes to the houses by way of its front doors; to (let all know you are Muslims), and tremble at the mention of The Source, so that perhaps you will be prosperous.

Pilgrimage And Fighting In Self Defense

190 And (the first followers of Muhammad) may Qaatiluw '(Fight To) Kill' in the path of The Source, ALLAH, only those who (fight to) kill you all; and don't commit aggression (by attacking them, the Meccans first; it is a form of transgression). Surely, The Source, ALLAH doesn't like the aggressors.

191 And kill them (the Meccans) wherever you come in contact with them (when they attack you), and drive them out from the places they drive you out from, (Mecca); and oppression is more forceful (worse) than killing, and don't kill them (The Meccans) in the possession of Al

Masjid Al Haraam 'The Sacred (Secret) Place Of Prostration', unless they attack you, to kill you all in it. But if they seek to kill you all, (first followers of Muhammad), then you may fight to kill them. This is a prescribed punishment for Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal What They Know Are Facts.'

192 And if they put an end to what they are doing, then surely (He), ALLAH is a Forgiving and Most Merciful (Source).

193 And you may (fight to) kill them (the Meccans), until there is no temptation or persecution and the diyn 'means of judgment' (way you live your lives by doctrine) is for The Source, ALLAH (alone); and if they finish (fighting you), don't be hostile except against those (Meccans) who are in a state of unjustness; (who persist in aggression).

194 The secret month; (Dhuw Al Hijjah) is indeed a sacred (secret) month, but you (the first followers of Muhammad) may retaliate (in this secret month). So whoever (the Meccans) act aggressively to you; yes, you may act aggressively against them; and tremble at the mention of The Source, ALLAH and know that surely, The Source, ALLAH is with those who tremble at the mention of (His name).

195 And spend your wealth in

the path of The Source, ALLAH, (help build schools, Masaajid 'Places Of Prostration; and provide defense) and don't cast yourself by your own hands, (holding back financial help) into danger, and do good to others; surely The Source, ALLAH likes the doers of that which is best (good).

196 And complete the Hajj, 'Greater Pilgrimage' to Mecca and the Umrah, 'Smaller Pilgrimage' for The Source, ALLAH (alone), so if you are kept back from (Hajj or Umrah), then make whatever offering is easy and available; and don't Tahlikuw 'Shave' Ru-uwsakum 'Your Heads' until your offering reaches its fulfilled destination. Whosoever amongst you is sick, or has an ailment in his head; (scalp ailment), he must make it up by fasting, or giving alms or sacrificing. But when you are secure (from the enemy) then it is a profit to change from the small pilgrimage (Al Umrah) to the big pilgrimage (Hajj); then make whatever offering is easy; but, if he does not have the means, (has nothing to sacrifice), then fast 3 days during the (greater) pilgrimage (Hajj) and 7 days when you return. That is the 10 completed days. That Is for whomever doesn't have his family present at the Sacred (Secret) House of Prostration; and tremble at the mention of

The Source, ALLAH, and know that (He), The Source, ALLAH, is forceful in punishment.

No Disputing During The Pilgrimage Months - Warnings To The Mischief Makers

197 The (greater) pilgrimage is to be performed in the well known months (which are the lunar months: Shawwaal, Dhuw Al Qa'dah, and the first 10 days of Dhuw Al Hijjah are ordained for the greater pilgrimage). So (in this time), he (the pilgrim, man or woman who is on pilgrimage) declares who is on pilgrimage, and or declares his/her intention to abstain from any Rafatha 'Sexual Intercourse' or fornication, and doesn't dispute in the pilgrimage; and whatever good you do The Source, ALLAH knows it. So make provisions (for your journey), so surely to increase in the best provision is to tremble at the mention of The Source; and tremble at the mention of The Source, ALLAH, Oh you first ones who (pass through) the door (of the mystic order of zodoq).

198 It is not a disagreeable act, or a crime for you to seek favor from your Rabb, so when you hasten from the place (where Zakar/Adam and Nckaybaw/Eve came to know each other for

the second time); remember The Source, ALLAH (by reciting prayers) as they did near the midway point between (the place where Zakar/Adam and Nckaybaw/Eve came to know each other for the second time, at the sacred 'place called Mash'ari Al Haraam 'The Place Of Perception'. (It is a mountain at the farthest end of Muzdalifah, a place located midway between Mina and Arafat); and remember how He (He Not We) calmed you (to do this rite), and surely before He did, you were of the astrayed; (those who had drifted from the right way into a total state of unjustness).

199 Then (O tribe of Quraysh; 'Big Fish, Reptilian;') hasten from wherever the other Enosites hasten; (Arafaat. The Quraysh used to stop at Muzdalifah, out of arrogance) and seek The Source's forgiveness (for their actions.) Surely, (He), ALLAH is The Ghafuwrn 'Forgiving' and Rahiymun 'Most Merciful' (Source).

200 So when you have fulfilled your rituals of pilgrimage, you still have to remember The Source, ALLAH as you would remember your own fathers; better yet stronger remembrance. But there are some Enosites who say: "Our Master give us our share of

prosperity in this physical world; but they will not have anything at the End (to come) of Khalaqin 'Creation'.

201 And of them there are those who say: "Our Master, give us all that wick is best (good things) in this physical world and that wick is best (good things) in the End, and save us from the pain of the (Hell's) fire.

202 These are the ones of you who shall have a portion of what they earned, and The Source, ALLAH is quick in reckoning.

203 And remember The Source, ALLAH in the days determined, (the 3 days of Tashriq; on the pilgrimage; the 10th, 11th, and 12th days of the month of Dhuw Al Hijjah). Then whoever hastens and completed it in two days, no Ithm 'Guilt' (sin) is upon him; and whoever lingers, no Ithm 'Guilt' (sin) is upon him. There is no blame on him if he trembles at the mention of ALLAH, The Source (when gathered in the valley of Mina, or stay behind for the third Shadow Hour); and tremble at the mention of The Source, ALLAH, and know that surely you will be assembled before Him (Him Not Us).

204 And there are some Enosites (like Akhnas Ibn Shuraik) who causes you to marvel with wonder when he speaks about the life of this physical world; and he even mentions The

Source, ALLAH as a watcher to things that are only in his own heart; and he is a violent disputer.

205 And when he roams in the land to turn his back (and leaves you), he spreads mischief in the Earth. (He also lies on you) and roams your Harth 'Fertile Soil' (land) to destroy. (He burns your crops) and kills your stock (of donkeys in the Shadow Hour); and The Source, ALLAH does not like the mischief (of Akhnas Ibn Shuraik).

206 And when it is said to (Akhnas Ibn Shuraik) to tremble at the mention of The Source, ALLAH; his actions takes on an even mightier (state of arrogance) and he commits more guilty acts (sins). So Jahannam 'Hell' is sufficient for him, and it is a miserable place to lay his head.

207 And from the Enosites, there is he who sells (all things and) himself to follow the pleasures of The Source, ALLAH. (So, know that) ALLAH is Ra-uwf 'Kind' (and generous) to all whom slave for Him (Him Not Us).

208 O you who are faithful! Enter into Al Silmi 'The State Of Peace', (and surrender) entirely, and don't follow in the footsteps of Shaytaan/Samael/Al Khannaas/Haylal, Satan, the Reptilian). Surely He, (Satan the Reptilian) is your Mubiyn

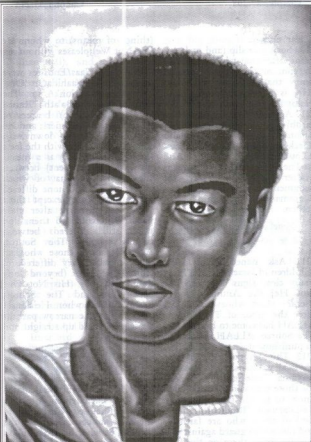


Figure 169
Akhnas Ibn Shuraik

'Clear' enemy.

209 So if you slip (and make an error) after that which has come to you, of the clear evidences; know that Allah, The Source, (He) is a 'Aziyz 'Mighty' and Hakiym 'Wise' (Source).

210 Are the (Children Of Israel, Jacob) looking to see if ALLAH is coming to them in a Dhulalin 'Dark Shadow' of Ghamaam 'Clouds' and destruction? And to The Source, ALLAH, (who is Master of The Day of Judgment), all Umuwru 'Commands' (rulership) will return.

Israel's Rejection Of The Scriptures

211 Ask Banee Israaiyl the 'Children of Israel, Jacob': "How many clear signs did We, ([We Not He] the Anunnaqi) give them? And whoever changes after the grace of The Source, ALLAH has come to him, surely The Source, ALLAH is forceful in punishment.

212 This physical life of the physical world is made to seem Zuyyina 'Fair-Seeming' (good) for those who conceal what they know to be the facts, and they Yaskharuwn 'Riddicule' (make fun) of those who are faithful; and those who guard against evil will be above them on the Day of Resurrection; and The Source, ALLAH Yarzuqu 'Provides'

(things of means) to whom He (He Not We) pleases without any measure.

213 All Al Naas/Enosites were (at one time) Waahidatan 'One' Ummatan 'Nation'; so The Source, ALLAH Ba'atha 'Raised Up (Back To Life)' bearers of good news, and warners; and He (He Not We) sent down with them the scripture with the facts (beyond any doubt) as a means of wisdom (judgment) between the Enosites, in that of which they differed; and none differed in (the scripture) except those who were given it after clear proofs had come to them and they still differed between themselves, so The Source, ALLAH calmed those who had faith in what they differed in, from the fact (beyond any doubt), by His (His Not Our) permission; and The Source, ALLAH, calms whom He desires (to calm) to the narrow path of those who stand up straight and firm.

When Is The Source, Allah's Aid?

214 Or have you all calculated that you will enter into the Jannat 'Enclosed Garden' and there has not come upon you the likeness of what has come upon those (Children Of Israel) who were before you all? They suffered distress, affliction and

adversity, and they were so shaken until the Rasuwl (Muhammad), and those who were faithful to him said: "When will the aid of The Source, ALLAH (Ansaruallah) comes?" However, surely (the time for) the nasr 'aid' of The Source, ALLAH (Ansaruallah) is Qariybun 'Near'."

Questions About Sharing,
Fighting, Intoxicants,
Gambling, And Menstruation

215 They ask you, (Muhammad) about what they should share willingly. Tell them: "Whatever (amount) that you share willing of that which is good: just as long as you take care of Waalidayn 'Your Parents, and your nearest relatives and the needy (orphans) and the poor and the son of the path (alien travelers in the path); and of all the good you do, so surely The Source, ALLAH knows it all."

216 Inscribed for you all is (fighting and) Qitaal 'Killing', and it is Karhun 'Hated' by you; and sometimes you may hate a thing and it is best for you; and sometimes you may like a thing and it is disagreeable for you; and The Source, ALLAH knows, and you all do not know.

217 If they ask you, (Muhammad) about fighting in the sacred (secret) month, say: "Qitaal 'Killing' (Fighting) in it

is a big disagreeable act, (it is reserved for the preparation of the pilgrimage); And to hinder (the followers of Muhammad) from the path of The Source, ALLAH and the Sacred (Secret) Place of Prostration (in Mecca), and to conceal the facts by way of it, and to put his family out, is even a bigger (sin) in the possession of The Source, ALLAH, and persecution is worse than being killed; and they (the Quraysh tribe) won't stop killing you, until they turn your, (Muhammad's) back from your means of judgment if they can; and whoever turns from his means of judgment, then dies while he is a concealer of what he knows to be the facts, so it is these whose deeds shall be in vain in this physical world and at Al Akhir 'The End'; and these are you, the Companions of the Fire, they will be in it eternally.

218 Surely, those who are faithful and those who Haajaruw 'Left Their Homes', and strove in the path of The Source, ALLAH, these are they whose hopes are in The Source's, ALLAH Rahmat 'Yielding (Mercy)'; and (for them) ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving' and Rahiymun 'Most Merciful' (Source).

219 If they ask you, (Muhammad) about Al Khamri 'Intoxicants' And Al Maysir 'The Drawing Of Lots', (Gambling);

tell them: "Both of them, (intoxicants and gambling) are a big guilty act (sin), in them are some benefits for the Enosites; and both their guilty actions (sin) is bigger than their benefits; and when they ask you (Muhammad), as to what they should be sharing willingly, tell them this, (Muhammad): "Whatsoever can be spared, The Source, ALLAH, makes the signs clear for you all, so that perhaps you all will think.

220 Concerning the life of this physical world and Al Akhir 'The End', and when they ask you about the needy (orphans). Say this: "Fix the (orphans), in what is good; (bring them up righteous), and if any of you mix their property (with yours) as your own brothers, and The Source, ALLAH knows the mischief maker from the perfectionist; and if it pleases The Source, ALLAH, He (He Not We) surely could destroy you all. Surely, He is a 'Aziyz 'Mighty' and Hakiym 'Wise' (Source).

221 Do not marry Mushrikaat 'Women Who Associate Partners' until they profess faith (in ALLAH; convert to Al Islaam). A woman that professes faith is better than an Mushrikaat 'Women Who Associate Partners' (who you like); and don't give in marriage, (women of faith) to Mushrikiyn

'Men Who Associate Partners' until they profess faith; (convert to the peaceful way of life "Al Islaam.") A slave who professes faith is better than an Mushrikiyn 'Men Who Associate Partners'. Eventhough, he may please you, (the faithful Muslim), they will call (you) to the fire, and if you like them, they will call you to the Fire; and The Source, ALLAH, invites you to Al Jannat 'The Garden', and forgiveness by way of His (His Not Our) permission; and He (He Not We, ALLAH) makes all His signs clear for the Enosites, so that perhaps (by The Source's clear signs), they will remember (Him).

222 And they asked you, (Muhammad) about Al Mahiyd 'Menstruation'. Tell them this: "It is harmful, so keep away from the enosite women (female), who is in the state of menstruation; (flowing unclean blood) and don't go near them (have sexual intercourse with her) until (the blood dries up after 7 days, and) she is pure (again, clean on the 8th day). So (when this happens), when they become pure) you can go in unto them (have sex with her) in the way it has been commanded for you by The Source, ALLAH. Surely ALLAH likes those who repent and he also likes those who keep themselves pure.

223 Your women are fertile just

for you, so cultivate them in anyway you like and maintain a pure spirit (while mating); and tremble at the mention of The Source, ALLAH and know that surely you will meet Him (Him Not Us), and give good news to the faithful ones.

224 And don't add (the name) of The Source, ALLAH to your casual swearing seeking to appear righteous. (As Abdullah Ibn Rawaha who said: "I swear by The Source, ALLAH I will not speak with my son-of-law and I will not bring about a reconciliation between him and his sister." This verse was revealed on this occasion). Act justly and tremble at the mention (of The Source, ALLAH) and (help bring about) perfection between the Naas/Enosites, and (He), ALLAH is The Samiyun 'Hearing', The 'Aliymun 'All Knowing' (Source).

225 The Source will not call you all to account (and punish you all) for swearing in your vain faiths; but He (He Not We) will call you all to account for what your hearts have earned, and (He) ALLAH is (a) Ghafuwrun 'Forgiving', Haliymun 'Clement' (and forbearing Source).

Abstaining From Divorce

226 As for those who vow to

abstain (divorce) from their enosite women, should wait for four months; (making the seperation period before the divorce final); so if they go back (on their vow), surely (He,) ALLAH is The Ghafuwrun 'Forgiving', The Rahiymun 'Most Merciful' (Source).

227 And if they decide on Al Talaq 'Divorce,' then surely He, The Source, ALLAH is a Samiy'un 'Hearing', 'Aliymun 'All Knowing' (ELOH).

228 And Al Mutlaqaat 'The Divorced Women' must wait for three successive menstruations (after the date of divorce); and it is not Yahillu 'Lawful' for them to conceal what The Source, ALLAH has created in Arhaamihinna 'Their Wombs' - (pregnancy) if they are faithful to The Source, ALLAH and the Last Day; and their Baals 'Lords And Masters, Husbands' are justified if they want them back in that period, if they wish for reconciliation; and for them is the same right as similar to those over them, in fairness and men are a degree above women (in these matters); and (He) ALLAH is a 'Aziyz 'Mighty', Hakiym 'Most Wise' (Source).

229 Divorce is only lawful twice, Then the (husband) either keeps her in fairness, or dismisses her with goodness; (the husband retains the right to dismiss the divorce by having

the first right to remarry her out of the goodness of his heart); and it is not lawful for you to take back what you have given them; (their dowry) except the things that you both fear that both of you will not be able to keep up, and stay in the limits of The Source's, ALLAH'S (laws). Surely, if you fear that they two will not be able to upkeep and stay in the limits of ALLAH, so then there is no crime (sin) on either of them (of the things that you reclaim, or take back), or what she gives up to become free of you. These are The Source, ALLAH restrictions, so don't exceed these restrictions of The Source, ALLAH; so it is these who are in a state of unjustness.

230 So if, he divorces her, she is not lawful for him until after (his former wife) marries a husband other than him. So if (the second husband) divorces her, then it is not a crime (sin) on them; (the divorce woman and her formal husband), if they return (to each other); if they think that they can upkeep the limits of The Source, ALLAH; He (He Not We) makes them clear for a kindred who know.

231 And when you divorced women and they had reached their prescribed time (for divorce, which is four months); then either retain them (to live in your house) in fairness, or set

them free in fairness; and don't retain them (the divorced women) to hurt them or to exceed (the time) and as for him who does this, indeed his spirit is in a state of unjustness; and don't take the signs of ALLAH, as something to mock and remember the grace of The Source on you, and what He ([He Not We] The Source, ALLAH) sent down to you all of the scripture; (Qur'aan), and Al Hikmah, 'The Wisdom'. He admonishes you by it; and tremble at the mention of The Source and know that in all things, ALLAH is 'Aliymun 'Ever Knowing'.

Remarriage After Divorce, Provisions For Divorces

232 And when you all divorce women, and they have reached their appointed time (for divorce, which is 4 months), don't prevent them from remarrying their mates, when they have agreed among themselves in a lawful manner. This will be headed by those among you who are truly faithful to The Source, ALLAH and the Last day. This is an act of faith for you and a At-har 'Purer' way for you; and ALLAH, knows best, while (you know) you don't know.

233 And all Waalidaatun 'Maternal Mothers', are to

Yurdi'na 'Breast-Feed' Awlaadihunna 'Their Children' for a complete two years when he, (the father) desires to complete the term of breast feeding; (if the mother is divorced) then (the ex-husband) should feed and provide provisions, (for this period) according to his means. No one is obliged to fulfill responsibilities that are beyond his ability. No mother shall be compelled to breast-feed if it will cause her harm, and no father shall be required to spend what he does not have for his child, (to be breast-fed). And if the father is not there, then it is on his heir; and if both the father and mother want the child weaned by mutual agreement and council, there is no crime done on either of them; and if you want to get a wet nurse for your children; (someone to breast-feed for her), there is no crime in it (if she can't breast-feed), provided you (the father) pay her what you promised and be fair; and tremble at the mention of The Source, and know that ALLAH, can see all that you are doing.

234 And as for those of you who pass away (die) and leave behind Azwajaan 'Mates', (the widows) must wait for four months and ten days; and when they have reached their appointed time, there shall be no (blame, or)

crime on you in what they may do with themselves in a lawful manner; and The Source, ALLAH is Khabiyrun 'Aware' of all that you do.

235 And there is no crime on any of you, if you make your desire to marry (a widow known to you during the waiting period,) or if you conceal it in yourselves. The Source, ALLAH knows that you will think of widows (and want to marry them), but don't give them a promise in Sirraan 'Secret' unless you speak in fairness. So He, ALLAH permits you to make your desires known to them, but only do it in the way prescribed by the law; and don't consummate the marriage before the waiting period is up; and know that The Source, ALLAH knows what is in your spirits, so beware of Him (Him Not Us); and know that surely, He (He Not We) is a Ghafuwrn 'Forgiving', Haliymun 'Clement' (and Forebearing Source).

236 There is no crime on any of you, if you divorce a woman before you have touched them (sexually), or settled a dowry on (the divorced women, but in this case you must) pay the wealthy (and the poor) a compensation in accordance with his means; (this being the payment required by law). This is the duty of those of you who are living by facts and

those who are doing things that which is best (the the right way).

237 And if you divorce them before you have touched them (sexually), but after having decided the dowry, then you should give them half of the promised payments, except if they pardon it or he, (the groom), relinquishes the whole dowry by way of him who holds the marriage contract, To relinquish his way is more righteous for those who tremble at the mention of The Source, ALLAH and don't forget the favor between yourselves. Surely, The Source, ALLAH sees all that you do.

238 Guard the Salawaat 'Salutation As Worship' and the Wastaa 'Middle' Salaawat 'Salutation As Prayer'; and stand up for Him (Him Not Us), ALLAH in Qaanitiyn 'Devotion'.

239 So if you are in fear, in danger (and cannot pray as prescribed), then (you may pray) on Rijaaalan 'Foot', or Rukbaanaan 'When Riding'. So when you feel secure, remember The Source as He (He Not We) has taught you of that, which you did not know.

240 And as for those of you who pass away (die) and leave behind Azwaaajan 'Mates', you are to leave at least one year of provision (for your mates) without putting them out of

their homes; but if they, themselves go away there is no crime, (or blame) on you all by letting them do with themselves whatever they want. (You don't have to support them in lawfulness); and (He), ALLAH is a 'Aziyz 'Mighty' and Hakiym 'All Wise' (Source).

241 And Al Mutallaqaat 'The Divorced Women' are to be given allowance with kindness. These are the facts for those who tremble at the mention (of The Source, ALLAH).

242 Thus, The Source, ALLAH makes things clear for you all by His (His Not Our) signs so that perhaps you will be able to overstand.

Fighting In The Path Of Allah

243 Didn't you see what happened to the thousands of those who left Diyaarihim 'Their Abodes', (villages, communities, and homes), and they should beware of death? So ALLAH said to them: "Die, and then He (He Not We) Ahyaahum 'Raised Them To Life'." Surely, ALLAH bestows grace on the Enosites, but most of the Enosites are ungrateful.

244 And Qaatiluw 'Kill' (fight) in ALLAH'S path and know surely, that (he), ALLAH is a Samiy'un 'Hearing' and Aliymun 'Knowing' (Source).

245 Who is it among you who would lend a (good) loan that which is best to The Source, so that He (He Not We) will multiply it for him many equal portions? And it is ALLAH that holds and extends; and towards Him (Him Not Us), you will return.

246 Didn't you, (Muhammad) see, Al Malaa-i 'The Rulers' (chiefs) of the Banee Israaiyl Children of Israel/Jacob after Moshehs (time)? When they said to a Nabiyy a 'Newsbearer - Man of Prophecy' of theirs, (the newsbearer Shemuw'el): "Ab'ath 'Raise Up (Back To Life)' for us a ruler, that we might kill (fight) in the path of The Source, ALLAH." He, (the newsbearer Shamuw'el), said: "Will it come to pass that you all will disobey that which is written about you all, that you would not kill (fight)?" (When asked), they said: "And what reason should we have not to kill (fight) in the path of ALLAH? And indeed we were put out of our abodes and deprived of Abnaa-inaa 'Our Sons'." So when it came to pass as it was written for them to kill (fight); they turned back (most of them), except for a few of them; and The Source, ALLAH knows those who are in a state of unjustness.

247 And the (Children Of Israel's) Newsbearer (Shamuw'el), said to them:

"Surely, The Source, ALLAH has appointed 'Taaluw't, 'Sha'uw'l as your Malakaan 'Ruler' (chief)." They said: "How can this be him, to have a Mulk 'Rulership' over us, and we have a greater right to Mulk 'Rulership' than him, nor has he been given a lot of wealth?" He said: "The Source, ALLAH has chosen him over you (to be your chief), and has blessed him with an abundance of 'Ilm 'Knowledge' and Jism 'Physique, (physical strength)'; and ALLAH gives His (His Not Our) Malk 'Rulership' to whomsoever He (He Not We) pleases; and The Source, ALLAH is Waasiun 'Omnipotent', 'Aliymun 'The All Knowing'."

248 And their, (Children of Israel's man of prophecy, the) newsbearer (Shamuw'el) said to the (chiefs of the Children of Israel): "Surely, the sign of (Sha'uw'l of Benjamin's) rulership, is that there shall come to you the Taabuwt 'Ark of the Covenant' in which there is Sakiynatun 'Tranquility' (and assurance) from your Rabb 'Master/Sustainer' and Baqiyyatun 'Relics' left from the descendants of Mosheh and descendants of Aharown; Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) will be carrying the (Ark of the Covenant). Surely, in that is a sign for you all, if

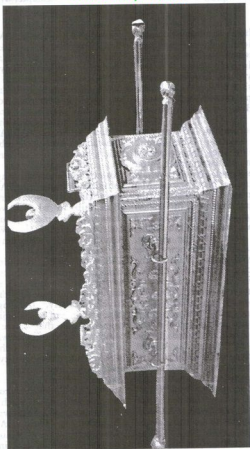


Diagram 40
Ark Of The Most High

you are really faithful.

Dawiyd's Victory Over Golyath, The Giant

249 So when Sha'awl left with the soldiers, he said: "Surely, ALLAH will test you (by your faith by guiding) you to a Nahr 'River', and whoever drinks from it, he is not of Me (Me Not We, Or Us); and he who does not taste it (the river), surely he is of Me. Except for him who sips a handful belongs to Me; but with the exception of a few (of the soldiers), they drank of it (the river). So when (Sha'awl) had crossed it, he and those who were faithful with him (to him - The Source), they said: "We don't have any power today against Golyath, (the Giant) and his armies (soldiers)." Those who think (the right way); which is that, they will meet their 'Master,' who is Rabb said: "How often has The Source, ALLAH let a small Fi-atan 'Band (Of Enosites)' conquer a numerous Fi-atan 'Band (Of Enosites)' by ALLAH'S permission? And The Source, ALLAH is with Al Saabiriyn 'Those Who Are Patient'."

250 And when they left to go to fight Golyath, (the 9 foot giant) and his army, (the Ghibboreem Philistines; the Children of Jacob) said: "Our Rabb! Pour down upon us patience and aid

us to stand firm on our feet (against them), and Ansumnaa 'Aid Us' against this kindred, (the Philistines). They are of those who conceal what they know are facts."

251 So they (the Israelites) by the permission of The Source, ALLAH defeated and made them (the Philistines) run away, and Dawiyd killed Golyath of Gath, (the son of Golyath and Orpah the 9 foot giant,) and ALLAH Aataahu 'Gave Him' (Dawiyd) Al Mulk 'The Rulership' and Hikma 'Wisdom' (to rule it), and 'Allamahu 'Taught Him' His (His Not Our), ALLAH'S will: and if The Source did not inspire some of the Enosites over others (of the Naas), the whole planet Tiamat, Al Ard 'Earth' would be in mischief; but The Source, ALLAH is the possessor of all grace over all the Known Worlds.

252 These are the signs of The Source; We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) recite them to you, (Muhammad) as facts (beyond any doubt); and surely, you are one of the Mursaliyn 'Ones Sent'.

Eloheem, Anunnaqi Are More Pleased With Some Rasuwl Than Others, As Yashu'a

253 That's how it is, with the Rusuwl 'Those Who Are Sent';



Figure 170
Golyath (Goliath) Of Gath - Son Of Goliath And Orpah

We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) were more pleased with some, than others. There were some to whom ALLAH spoke, and He raised some of them in Darajaat 'Ranks'; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) gave Yashu'a/Isa son of Miriam, the (criteria of) clear evidence and Ayadnaahu 'Supported Him' by way of Al Quduws 'The Holy' Ruwh 'Soul', (Nusqu; who bore the title Gabriel "One who comes forth from EL.") And if it pleased ALLAH those after them would never have fought to kill amongst themselves, after the clear evidences had come to them, but they had differences; and of them, there were some who had faith in it; while others of them are those who conceal what they know to be the facts; and if it pleased The Source, they would have never (fought to) kill amongst themselves, but (it is up to) ALLAH (because He [He Not We]) Yaf'al 'Does' what He Yuriyd 'Wants' (to do).

254 O you who are faithful! Spend out of what We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) have provided you all, before that day comes, when there will be no bargaining, and no Khallatun 'Friendship'; (Israelite Over Midianite or Ishmaelite over Judahite); and no intercession (where no man of prophecy will be able to vouch

for any of you); and as for the ones who conceal what they know are facts, they shall be of those who are in a Zaalimuwn 'State Of Unjustness'.

The Sources Seat In The Skies Is Spread Wide

255 The Source, ALLAH is He (Hu -Creative Force Of Will), and without Him nothing would be (exist), (for He is) Al Qayyuwm 'The Eternal', Al Hayyu 'Living EL' who never Sinatun 'Tires', nor (does He take a second from His creation to) Nawm 'Slumber Or To Sleep'. For Him (Him Not Us) is whatever is in Al Samaawaat 'The Skies' (Firmaments and beyond, and) in the planet Tiamat 'Earth.' Who is he, that can intercede with Him (Him Not Us) except by His (His Not Our) permission? He (He Not We, - ALLAH) knows what is between their hands, (what they decide and what works their hands do); and what (acts) they leave behind; but they can not comprehend anything from His (His Not Our) 'Ilm 'Knowledge' except what He Yasha-in 'Pleases' (wills). Spread wide is His (His Not Our) Kursiy 'Seat' in Al Samaawaati 'The Skies' and 'Tiamat'; the planet Earth, and the Hif-dhuhumaa 'Guardianship Of Both Of Them' is no burden for Him.

Because He is The Al Aliyyu 'Most High', (ANU), Al 'Aziym 'The Supreme'.

*Don't Use Force To Make
Enosites Accept The Peaceful
Way Of Life*

256 Use not force, in Al Diyn 'The Means Of Judgment' (making Enosites accept the doctrinal way of life, 'Al Islaam'); for certainly right is an ultimate watcher against error. Hence, he who rejects the arrogant, (Evil One Shakhar/) Taaghuwt (Humbaba/Tarnush, Father Of Haylal Samael), and faithfully lives by what The Source, ALLAH has ordained, (the rites of Abrawhawm; Al Islaam), indeed he has grasped onto the firmest bond; (the laws of The Peaceful Way Of Life) which will never sever (or be cut off); and (He), ALLAH is a Samiy'un 'Hearing' and 'Aliymun 'Knowing' (Source in all you do).

257 The Source, ALLAH is The Waliyyun 'Near Friend' of those who have faith. He (He Not We) gives (the faithful ones) the way out of the state of zulumaat 'unjustness' (spiritual darkness; other religions); into al nuwr 'the Light'; (the rites/religion of Abrawhawm); And those who conceal what they know to be the facts; (false Muslims), their near friends are the arrogant

(Evil One); Taaghuwt (Shakhar/Humbaba/Beelzebub Father Of Haylal/Samael). They give them the way out of the Light into the state of unjustness, (ignorance - 'Sectism.') These Are the Companions of the Fire. Therein, they shall be eternally.

258 Didn't you, (Muhammad) see him, (Marar 'Nimrod') who disputed with Abrawhawm about his 'Master,' Who Is Rabb? That is because ALLAH had given him, (Marar, or Amar 'Warrior' Nimrod) Al Mulk 'The Rulership' (over the Canaanites of Babel). When Abrawhawm said to him: "It's my Rabb 'Master', (EL) who Yuhiy 'Gives Life' and causes death (to visit)." So he said: "(No), I cause life and death." Abrawhawm then said: "Surely, it is The Source, ALLAH, who makes Al Shams 'The Sun' yaatiy 'Appears To Come' from Al Mushriq 'The East', so then you make it appear to come from Al Maghrib 'The West'; and by this, he who concealed what he knew to be the facts, was dumbfounded (and bewildered); And (know this,) ALLAH does not calm the kindred who are Zaalimiyn 'In A State Of Unjustness'.

259 Or like (Ezrah), who passed by a village, (Ursaliym 'Jerusalem and Solomon's Temple) was utterly ruined down to its foundation. He said: "When will The Source restore it



Diagram 41
Solomons Temple

to life after its death?" So He caused him; (Ezrah and his ass) to die for one hundred years and then Ba'athahu 'Raised Him (Back To Life' after seventy years. Nebuchadnezzar had died, and Cyrus 'The Great' gave permission to rebuild Solomon's Temple. This seventy years plus thirty years equals one hundred years). He (The Messenger Eloheem Nusqu; who bore the title Gabriel; in human form) said: "How long were you, (Ezrah) in that place?" He said: "I remained one day or part of a day." He, (Gabriel - Ruwhu Al Qudduws) said: "In fact, you remained in that place 100 'Aamin 'Years'. So look at your food and drink; they did not Yatasannahu 'Become Stale', and look at your donkey, so that We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) may make you a sign for the Enosites, (Ya'aqob's children); and look at the bones, and how We, (the Eloheems) put them back in place then We (the Eloheems) will garb it with Lahm 'Meat' - (skin)." So when it became clear to him, he said: "I know that The Source has the power over all things."

260 And when Abrawhawm said: "O My Rabb, Who is 'Master/Sustainer' show me how you give life to the dead." He said: "What! And do you not have faith?" He said: "Indeed I do. However, that my heart

may rest secure." He (He Not We) said: "Then take four kinds of birds, (a dove, an eagle, a raven, and a buzzard), cut them into pieces, combine them (their flesh and feathers) in front of you, (Abrawhawm). Then place on every mountain a part of them; then call them, (the four birds). They will come to you quickly and know (by that), that (He) ALLAH is A 'Aziyz 'Mighty', Hakiym 'Wise' (Source).

Sharing Of The Wealth In The Source's Path

261 The likeness of those who share their wealth willingly in ALLAH'S path, is as the likeness of a grain of corn when it sprouts seven ears, but in every one of the seven ears, there is a hundred grains; and The Source, ALLAH increases it for them for whomsoever He (He Not We) pleases; and (He), ALLAH is a Waasi'un 'Comprehensive', 'Aliymun 'Knowing' (Source).

262 Those who share their wealth willingly in the path of The Source, ALLAH then do not follow up what they have shared willingly with reproach, nor injury; for them is their reward which is (with the) possession of their Rabb, and they shall not fear and they will not have grief.

263 A kind Qawlun 'Saying' and forgiveness is good (better)

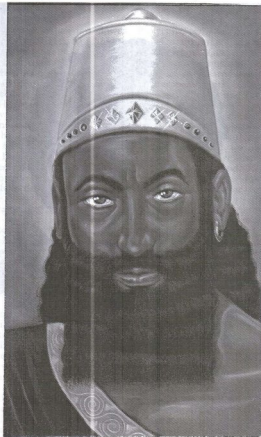


Figure 171
Nebuchadnezzar

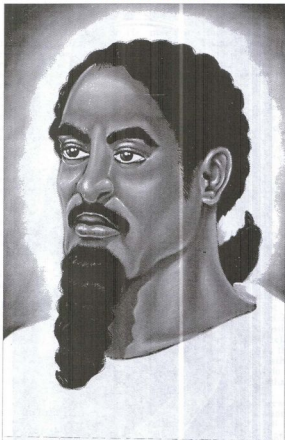


Figure 172
Ezrah (Ezra)

than charity, which is followed by injury; and (He), ALLAH is a Ghaniyyun 'Self-Sufficient', Haliymun 'Clement', (Forebearing Source).

264 O you who are faithful! Don't cause your charity to be in vain by way of reproach and injury, like him whose offers are accumulated (wealth), just to be seen by Enosites; and does not have faith in ALLAH, and the Last Day. So he is like the likeness of a smooth stone; and on it is dust. So then a heavy rain falls upon it and it is left bare. They will not be able to gain anything from what they earn, and (it is because) The Source, ALLAH does not calm the kindred, who are the concealers of what they know are facts; (like those Muslims who give money, but don't follow all the laws of Al Islaam).

265 And the likeness of those who offer their possessions desiring ALLAH pleasures and asserting of Nafsihim 'Their Selves/Spirits' in devotion, is as the likeness of an Jannatin 'Garden' which is on top of a hill upon which heavy rain falls, and it brings forth things to eat twice as much; but if the heavy rain does not fall, it will only drizzle, (rain lightly because they are high, they are blessed anyway; the wealthy which stay close to Al Islaam, and its law,) and The Source, ALLAH

Basiyrun 'Sees' what you all do.

266 Do any of you want there to be for him, (Ghaalib) a Jannat an 'Garden' consisting of Palm Trees and vineyards with rivers flowing beneath it? He has in it all kinds of fruits; and when old age overtakes him and his offspring, (his three sons) are weak (in faith and charity) and the (Enclosed Garden) is struck by a violent whirlwind; (tornado) with fire and it is burnt to the ground. This is how ALLAH, makes His (His Not Our) signs clear for you that perhaps you will reflect on your own acts (how and what you teach your sons, not just the wealth you have to offer them, without them following you in faith).

267 O you who are faithful, share willingly of the good things that are agreeable in that which you have earned, your wealth; and from what We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) brought forth for you from the Planet Earth - (crops); and don't aim to give what is wicked (bad from its crops), or what you share willingly; and you would not take it for yourselves except that you were deceived into it; and know that The Source, ALLAH is a Ghaniyyun 'Self-Sufficient' and Hamiyd 'Ones Worthy Of Gratitude'.

268 The (Evil One), Samael (the

Reptilian) promises you all that you will be in poverty and orders you to be shameful and dishonorable, and ALLAH promises you all, that forgiveness and all favors come from Him (Him Not Us) only; and (He) ALLAH is a Waasi'un 'Comprehensive', Aliymun 'All-Knowing' (Source).

269 And He, ALLAH gives Al Hikmat 'The Wisdom' (and the know how) to whom He (He Not We) pleases; and whoever is given Al Hikmat 'The Wisdom', certainly was given a lot of good; (wealth, success and knowledge,) and (the fools) will not remember, none except the first ones (who pass through) the door (of the Mystic Order of Zodoq).

270 And whatever charity you give, or whatever expenditure you vow (donations); surely ALLAH knows it; and there shall be no Ansaar 'Aiders' for the ones of you, in a state of unjustness.

*Share Your Wealth
Willingly. In Charity*

271 If you all distribute your charities (in public so that Enosites see you, and make you think you are a great Enosite), it will be a benefit to you; and if you hide it and give it to the poor (secretly), this is better for you; and it will do away with

some of your evil actions, and The Source, ALLAH is aware of all that you do.

272 Their leading calmness is not on you, (Muhammad), but it is The Source, ALLAH who calms whomever He (He Not We) pleases; and whatever you share willingly of the good, it is for your own good; and you don't share willingly except, if you are seeking ALLAH'S Wajh 'Face' (To be with The Source, ALLAH in the End); and whatever you share willingly of the good, will be fully repaid to you, and you will not be treated unjustly (in Paradise).

273 (Charity) is for the poor and those which are fully occupied (with teaching) in ALLAH'S Sabiyl 'Path', and are not able to strike (riding forth to fight) in the planet Tiamat to earn livelihood. Those who are unaware, think they are wealthy because of their virtuousness. You know them by way of their countenance; they do not insist when asking Enosites for money; and whatever you spend of good, so surely, The Source, ALLAH knows all about it.

274 As for those who share willingly their wealth (in charity), by the Shadow Hour and the daytime, whether in Sirraan 'Secret', or in public, for them is their reward with their Rabb 'Master' and they shall not have any fear and they shall not

grieve.

Usury Forbidden

275 Those who consume wealth in usury will not be able to rise (on Judgement Day), except as one who has the touch of the Evil One, (the Reptilian - Mark Of The Beast). That is because they say: "Surely, selling in trade is the same as usury"; and The Source, ALLAH made trade Ahalla 'Lawful', but usury is Harrama 'Unlawful.' So whoever, after the cautionary advice has come from his Rabb, 'Master,' desists he shall be forgiven for his past doings; and his orders are from ALLAH; and whoever returns (to usury), these are the Companions of the Fire; they will be in it eternally.

276 The Source, ALLAH will deprive the ones who use usury, and He (He Not We) will increase the value of charities (to the needy); and The Source, ALLAH does not like any concealer of the facts.

277 Surely, those who have faith and work for perfection and stand (in the ranks of) salutation as worship and give alms, for them is their reward in the possession of their Master, 'Rabb' and they shall not grieve.

278 O you who are faithful! Tremble at the mention of The Source, ALLAH; be careful and forsake that which remains of

your gains in usury, if you are to be of the faithful.

279 So, if you don't do it, (forsake usury), then know that ALLAH and the one sent (Muhammad) have declared Harb 'War' on you; and if you repent, it is all right for you to keep (your capital), your wealth. Don't inflict injustice, and you will not be dealt with unjustly.

280 (As if you are in a state of unjustness); and if the ones who find it difficult, (to pay you a debt); then postpone the payment until it is convenient for them; and if you treat it as charity, then this is good (better) for you, if you only knew.

281 And tremble at the thought of a day, in which you all, will return to The Source, ALLAH. Then every person (spirit) will fulfill what it has earned, and they shall not be treated unjustly; (as if they are in a state of unjustness).

Make Records Of All Your Loans

282 O you who are faithful! When you make a debt, or loan with each other for a fixed term, then Aktubuwhu 'Write It Down'; and verily, he who writes it down should be a scribe who will deal justly between you; and the scribe should not refuse to write, (make record of it). This is how The Source,

ALLAH has 'Alamahu 'Taught Him', so let him write; and as for him who owes, let him dictate it with all the facts, and he should be of those who tremble at the mention of ALLAH, his Master, and not diminish, (cheat) anything from it. Surely, now if he who owes, is a fool; (unsound) in overstanding, or weak, or if he is not able to Umilla 'Dictate' for himself, then he is to get a near friend, (guardian) to dictate for him in justice; and you must seek out two good watchers who are Rijaal 'Mortal Men' from amongst you all, (your own Enosites), but if there aren't any two mortal men to be found to be watchers, so then take one mortal man and two women from whom you choose as watchers, so that if one of them goes astray, the other one of the first two women may be there as a reminder of what happened to the other, and don't refuse to be a watcher when you are called upon; and don't neglect to write it, not even the smallest and the largest things and the time is not to be a matter. This procedure is most equitable with The Source, ALLAH and this is the upright way to do things for the ones who watch; (the testimony), and it is suitable and more convenient, and there will be no way to have doubt after, except when it is merchandise given

from hand to hand, or you have transacted it amongst yourselves. so there is no blame on you for not writing it down; and a watcher should be there when you Tabaaya'tum 'Sell To One Another'. And don't let any harm come to the kaatibun 'scribes' or the watchers; and if you do, then surely it will be a transgression for you, (if this happens); and Attaquw 'Tremble At The Mention' of The Source, ALLAH; and (it is) ALLAH who Yu'allimukum 'Teaches You All', and (He), The Source, ALLAH knows everything.

283 And if, you all are moving about (traveling) and there is no Kaatibaan 'Scribe' to be found, a pledge may be taken if you have faith in one another. Let him who is trusted, deal with the bond (whom you all have faith in), and tremble at the mention of The Source, ALLAH his Rabb, who is 'Sustainer'; and don't hide what was watched (the testimony); and as for him who does Yaktumhaa 'Hides It', know that surely, it is a Aathimun 'Guilty Act' (sin) in his heart, and ALLAH knows all that you do.

*All That Is In The Skies
And Earth Is The Source's*

284 All that is in Al Samaawaati 'The Skies', (Firmament) and the planet Earth is For Him (Him

Not Us. It Is His - ALLAH) and whether you manifest what is in your selves/spirits, or try to hide it, The Source, ALLAH will call you to account by way of it. So He (He Not We - ALLAH) forgives whom He pleases and punishes whom He pleases (wills), and The Source, ALLAH has the power over all things.

285 The Rasuwl 'One Sent', (Muhammad) had faith in that which was sent down to him, (the Qur'aan) from his Rabb, who is 'Master', and the faithful ones, all had faith in The Source, and Malaa-ikatihi 'His Angelic Messengers', (the Eloheem, Anunnaqi,) all of Kutubihi 'His Scriptures', and Rusulihi 'The Ones Sent By Him'. We do not Nufarriqu 'Differentiate' Bayna 'Between' any of the Rusuwl 'Ones He Sent'; and (the Children of Jacob/Israel) said: 'Sami'na 'We Heard' and ata'naa 'We Obeyed'. Forgive us, for you are our Master and to You (You Not Us, ALLAH) will be the Masiyr 'Destination'.

286 Charges not The Source, ALLAH any person (spirit) to fulfill Wus'ahaa 'Its Responsibilities' except to the extent of its abilities, for it is that which it has earned. He, ALLAH generously rewards good, and upon it, is that which it has deserved; He readily punishes wickedness. Our Rabb 'Master', please don't punish us,

(the Ishmaelites) if we sometimes forget, and if we sometimes err unintentionally. O Our Rabb, who is 'Master', please don't make us carry a burden, how (the Children Of Israel, Jacob lost their covenant), as You have made the (Children Of Jacob) who were before us, (Ishmaelites) carry their burden. O our Rabb 'Master', please don't make us carry their burden. O Our Rabb, please don't make us, (the Ishmaelites) carry what we have not the strength to bear, pardon us and forgive us, and kindly Arhamnaa 'Yield Unto Us', for you are surely Mawlaanaa 'Our Master'. Ansumnaa 'Aid Us' against the (deceitful) kindred who conceal what they know to be the facts; (they are certainly the ones who reject the factual faith).

Sudiq Allahu El Azim

Chapter Eighty-Eight

Revealed In The Year 624 A.D. Except For Verses 30-36, Which Were Revealed In Mecca Before The Emigration To Medina.

Al Anfaal

(The Spoils)

Original Order Chapter 88;

Wrong Order Chapter 8

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Spoils Are For The
Source And The Rasuwl -
You Are To Obey Allah And
The One Sent*

88 They ask you, (Muhammad), about Al Anfaal 'The Spoils' - (things taken in war), tell them this (Muhammad): "The spoils are for Him, (The Source), and Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad)." So tremble at the mention of ALLAH and make perfection between you all, and have obedience to ALLAH and his Rasuwl 'One Sent', (Muhammad), if you are to be ones, of the faithful."

2 Surely, they only are the faithful, those who, when ALLAH is remembered they feel a fright in their hearts; and when, there is Tuliyaat 'Recited' unto them of his, The Source's, ALLAH'S signs - (the scriptures), their faith only increases and they trust (only), on their 'Master/Sustainer', who is Rabb."

3 These are they, who upkeep Al Salaat 'The Salutation As Worship'; and of the things, that which We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) Razaqnaahum 'Provided For Them'; they share willingly."

4 These are they, by fact, who are the faithful ones, for them are Darajaat 'Levels, Degrees' in

the possession of their Rabb, and they will have a forgiveness, and a Kariym 'Generous' Rizq 'Provision'."

5 As your Sustainer, who is Rabb, has brought you forth, (Muhammad) from your house, by a fact (beyond any doubt); and surely a Fariyqaan 'Portion' from Al Mu-miniyn 'The Faithful Ones', verily, they hated it."

6 They dispute in, concerning the facts, after what He (He Not We), has made clear, (plain) as if they are driven towards death, and they Yandhuruwn 'See' (they are onlookers)."

*The Source Promises To
Strengthen You With A
Thousand Of Eloheem.*

7 And when ALLAH promises you one, of Al Taa-ifatayn 'The Two Parts' (Armies); surely it is yours; and you all love that, the one other than the fighting courage, to be yours; and The Source, ALLAH wants to confirm His (His Not Our) fact, by way of His Kalimaat 'Spoken Words' (he has a mouth. physical), and to cut off the backs of Al Kaafireen 'Those Who Conceal What They Know To Be The Facts.'

8 To confirm the facts, and to Yubtil 'Confirm' Al Baatil 'The Falsehood', eventhough, those who are guilty hated it."

9 When you all ask for help, from your Master, who is Rabb, so He (He Not We) answered you, saying: "That I will be the one who shall strengthen you, with a thousand of Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem Anunnaqi), following behind you."

10 ALLAH only made it for you, as good news that your hearts might be calm; and there is not any aid, (or victory) except from 'Indi 'The Possession' of ALLAH, Surely, The Source, ALLAH is 'Aziyz 'Mighty', Hakiym 'Wise'."

The Source Promises Aid To The Faithful During The Battle Of Badr - Terror Will Be Cast Into The Hearts Of The Kaafirun

11 When He (He Not We), Yughash-shiykum 'Screens You All' by way of Al Nu'aas 'Sleepiness' as a security, Minhu 'From His (His Not Our) Ownself', and sends down upon you all, water from Al Samaa-i 'The Skies', to Yutahhirakum 'Purify You All' by it; and that, He may make the reward of Al Shaytaan, 'Satan, the Reptilian,' go away from you all, and to make strong your hearts, and by it, make your feet firm."

12 When your (Muhammad's) Rabb, Yuwhiy 'Inspired' Ilaa 'To' Al Malaa-ikat 'The Angelic

Messengers', (Cherubeems) "That Anniy 'I am' (I Not We) Ma'akum 'With You All', so Thabbituw 'Stay Firm' those who were Aamanuw 'Faithful', will cast Al Ru'aba 'Terror' into the hearts of those who Kafaruw 'Concealed The Facts' (the Meccans); so Adribuw 'Strike' (them) above Al A'anaaq 'The Necks' - (the meeks, the head cut off), and Adribuw 'Strike' all of their Banaanin 'Very Fingers Tips'."

13 That is because they, (the Meccans) opposed ALLAH, and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Muhammad); and whoever, opposes The Source, ALLAH and His Rasuwl, so surely ALLAH is Shadiyd 'Forceful' in the punishment."

14 That is for you, so taste it, and surely for Al Kaafireen 'Those who conceal what they know to be facts' are the pain of Al Naar 'The Fire'."

Faithful Ones Are Not To Turn Their Back - If They Do Jahannam Will Be Their Destination

15 O you who are faithful, when you meet those who conceal what they know to be the facts, marching into Battle (Of Badr), don't turn your backs, away from them."

16 And whomsoever, turns their backs on that day, except

those who marched into battle, to kill, or retreats to his army forces; so indeed he has brought down Ghadabin 'The Wrath' from The Source, ALLAH and his resting place, is a Jahannam 'Blazing Fire', and wretchedness, is his destination."

17 So it was not you, (Muhammad and your followers on the battlefield of Badr) who Qutuluwhum 'Killed Them', (the Meccans); but The Source, ALLAH Qatalahum 'Killed Them' and you did not throw, (gravel into their eyes); but The Source, threw it. He, (He Not We - ALLAH) was just testing the faithful with a trial, and to what is best. Surely, The Source, is the Samiy'un 'Hearer', 'Aliymun 'All Knowing'."

18 That is for you, and surely, The Source, ALLAH is the one who weakens the scheme, of those who conceal what they know to be the facts."

19 If you Tastaftihuw 'Sought An Opening Victory' then indeed Al Fathu 'The Opening' has come to you; and if you desist, it is good for you; and if you return (to fight), We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) shall return and your forces will not avail you anything, and though they may be many; and surely (know that) The Source, ALLAH is with Al Mu'miniyn 'The Faithful'."

Obey The Source And His Rasuwl - Be Faithful To Your Trusts - Your Wealth And Children Are Only A Temptation

20 O you who have faith, obey The Source, ALLAH and His Rasuwl 'One Sent', and turn not away from Him while you hear."

21 And be not like those, who say: "We hear," and they hear not."

22 Surely the most evil of Al Dawaabbi 'The Beasts' in ALLAH'S possession, are Al Summu 'The Deaf' and Al Bukmu 'The Dumb', those who do not Ya'qilawn 'Have An Overstanding'."

23 And if The Source, ALLAH had known any good in them, he would have made them listen; and if, he makes them listen, they would turn away, while they are averse."

24 O you who are faithful! Respond for Him (Him Not Us), and Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad), when you are called to that which Yuhyiykum 'Gives You All (Eternal) Life', and know that ALLAH, intervenes between the hearts, and minds of Al Mar-i 'The Commanders'; and to Him (Him Not Us), ALLAH you all will be gathered."

25 And tremble and fear as a test, and don't afflict those who are in a state of unjustness,

exclusively who are from amongst yourselves; and know that The Source, ALLAH is Shadiyd 'Forceful' in Al 'Iqaab 'The Punishment'.

26 And remember when you were a few, deemed weak in the planet Qi/Tiamat 'Earth,' fearing that the Enosites should carry you all off by force; and He (He Not We) sheltered and He gave you His (His Not Our) aid and Razaqakum 'Provided You All' of the agreeable things, that perhaps you might be grateful."

27 O you who have faith, be not unfaithful to The Source, ALLAH and the one sent, (Muhammad); nor be unfaithful to your trusts, and you know."

28 And know that your wealth and Awlaadukum 'Your Children' are a Fitnatun 'Test, Temptation'; and that ALLAH has in His (His Not Our) possession, a 'Aziym 'Supreme' reward."

29 O you who are faithful! If you fear and tremble The Source, ALLAH, He (He Not We) Yaj'al 'Makes' for you all Furqaanaan 'A Distinction' and Yukaffir 'Covers' (do away) with your evils and forgives you all; and ALLAH is the Dhuw 'Essence' of Al 'Aziym 'The Supreme' (grace)."

*Mosque - Those Concealers
Of The Facts Will Be
Crammed In Hell*

30 And when (those who associate partners of Mecca), who conceal that which they know to be the facts, plot against you, (Muhammad), to restrain you, confine you, or to even kill you, (Muhammad), or to drive you out, (put you out of Mecca); and Yamkuruwn 'They Plan' and ALLAH Yamkur 'Plans', and The Source, ALLAH is good (the best) of (all) Al Maaskiriyn 'The Planners'?"

31 And when Our, ([Our Not My] the Eloheem, Anunnaqis) signs - (the scriptures) are Tutlaa 'Recited' unto them, they say: "Indeed, we heard (of it); if we pleased, that we could say the likes of this - (we can create our own scriptures); surely, this is nothing, except Asaatir 'Fables' of Al Awwaliyn 'The Ancient Ones', (the Eloheem Dineer)."

32 And when they said: "O ALLAHUMMA (The Eloheem Anunnaqi), if this is indeed the fact, from your possession, so Amtir 'Rain' (down) on us Hijaarat 'Stones', from Al Samaa-i 'The Skies', or come to us (inflict on us) with a painful chastisement."

33 And The Source, ALLAH was not going to inflict pain upon them, (the tribe of Quraysh), while you,

*Plot Against Muhammad -
Guardians Of The Sacred*

(Muhammad) are Fiyhim 'Amongst Them' (in Mecca), and The Source, ALLAH will not inflict pain upon them, and they seek forgiveness."

34 And what excuse have they, that ALLAH should not inflict pain upon them, while they hinder (enosite) from Al Haraam 'The Sacred' Al Masjid 'Place Of Prostration' and they are not its Awliyaa-a 'Near Friends'? No one can be Awliyaa-uwhu 'His Near Friends' except Al Muttaquwn 'Those Who Tremble And Fear', but most of them don't know."

35 And Salaatuhum 'Their Salutation As Worship' within Al Bayt 'The House', (the Kaaba), is nothing except Mukaa-an 'Whistling' and Tasdiyatan 'Clapping' (of hands); so taste the pain by way of what, you all concealed of the facts."

36 Surely, those who conceal what they know to the facts share willingly their wealth to hinder about the path of The Source, ALLAH so they will share willingly; then, on them, will be sighing with fatigue then they will be conquered and those who conceal what they know to be the facts will be gathered together in Jahannam 'Hell'.

37 That the Source, ALLAH may separate the wicked from Al Tayyibi 'The Agreeable', and make Al Khabyth 'The Wicked' one upon another, then gather

them together, so Yaj'alahu 'Make Him Go' (cast them) into Jahannam 'Hell'. These are those are Al Khaasiruwn 'The Losers'."

There's A Forgiveness For Those Who Desist In Opposition - Whatever Spoils You Obtain, A Fifth Of It Is For The Source, Muhammad, And The Masjid Etc.

38 Tell those who conceal what they know to be the facts, (Muhammad): "If they desist, (from opposing you), there is a forgiveness for them from that, (their sins) what has passed; and if they return (to opposing you, Muhammad), so indeed, what happened to those of Al Awwaliyn 'The First Ones (The Old Ones': Sodom, Gomorrah, Thamud, Ad, in the past life will happen to them)."

39 And Qaatiluwhum 'Kill Them', (the Quraysh, 'Big Fish, Reptilian,' by fighting) until, there doesn't exist any opposers, and Al Diyn 'The Means Of Judgment' becomes all for him (The Source), so if they Antahuw 'Finish' (stop), so surely The Source, ALLAH is the Basiyr 'Seer' of all that they do."

40 And if you, (the concealers of the facts), turn away (from evil), so know surely The Source, ALLAH is Mawlaakum 'Your

Ruler', the Ni'ma 'Grace' of (all) Al Mawlaa 'The Rulers', and grace of Al Nasiyr 'The Aiders'."

41 And know, that whatever you obtain, a fifth of it should go for him, (The Source - a place of prostration), and for Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad), and those Al Qurbaa 'Near Relatives' - (those who live with you, in the community) and the needy (orphans, those children of the dead in battle), and the poor settlers, the Abna Sabiyl 'Son Of The Path', if you have faith in ALLAH and that which We, ([We Not He] the Eloheem) Anzalnaa 'Sent Down' - (the scriptures), Alaa 'On' 'Abdinaa 'Our (Our Not My) Slaves', (the newsbearers) on the day of Al Furqaan 'The Distinction' (of agreeable and disagreeable), on the day Al Jam'aan 'The Two Gatherings (Armies)' will meet; (you will regret it), and (know that) ALLAH has the Qadiyr 'Power' to do anything."

42 When you, (the Muslims) were at one end of Al Dunyaa 'The Physical World' (the city) and they, (the Desert Arabs) were at the further end of (the city) and Al Rakbu 'The Riders' were in a lower place than you, (the Muslims) had; you arranged it, (the Battle Of Badr) that way, you would have not proceeded with the appointment; but in order that The Source, ALLAH

decree a command that was to be done so he who perishes, perished by clear evidence, and he who lives, lives by clear evidence, and surely, ALLAH is Most Samiy'un 'Hearing', 'Aliymun 'Knowing'.

*Whenever The Source
Decides A Matter It Will Be
Done - Guideline On How
To Act In Battle - Stand
Firm, Be Patient*

43 When the Source, ALLAH showed you them (Muhammad, the Desert Arabs) in your sleep as few; and if He, ALLAH had showed them to you as many, you (Muhammad) would certainly have Fashiltum 'Became A Coward', and disagreed with the affair, (of the Battle Of Badr); but The Source, ALLAH Sallama 'Saved You In A Way Of Peace'. Surely, He (He Not We) is Knowledgeable of what's in the essence of your Suduwr 'Chest'."

44 And when He (He Not We), lets you all see them; when you all met them, they were a few in your eyes; and He (He Not We) made you all a few in their eyes; so whenever The Source, ALLAH decrees (decides) a command (affair), it will be done; and to The Source, ALLAH, all affairs will be returned.

45 O you who have faith, if you meet a Fi'atan 'Band' (of enosites), stand firm and remember The Source, ALLAH Kathiyyaan 'Alot, Abundantly', so that perhaps you will prosper."

46 And you Muslims, obey ALLAH and his Rasuwl 'One Sent,' (Muhammad) and do not quarrel, so you will lose your courage and Riyhukum 'Your Soul' will Tadh-hab 'Depart'; and be patient, surely, The Source, ALLAH is with those who are patient."

47 And don't be like those, who left from their Diyaar 'Abodes', vain to show off their strength to Naas, and discourage them, the Naas/Enosites off ALLAH'S path; and The Source, ALLAH comprehends what they do."

*The Incarnation Of Satan,
The Reptilian In The Form
Of Saraqh Ibn Harith*

48 And when Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian' made Zayyan 'Fair-Seeming' A'amaalahum 'Their Works', (incarnated, made himself appear on the day of the Battle Of Badr, 'Azaaziyl, Satan, the Reptilian' - (the Devil, appeared in the form of Saraqh Ibn Harith, and shook hands with Harith Ibn Hisham); and he, (Satan, the Reptilian, in physical form), said: "No one will conquer you all, today of

any Enosites; and surely, I, (Al Shaytaan, the Reptilian) am here with you all, as a neighbor of you all (he is in physical form)." So when they saw the two bands (had come to fight, and the Devil saw Michael and the Eloheem, Anunnaqi, with the Muslims), he (the Devil), retreated on his two heels (and ran away); and (the evil one) said: "Surely I am guiltless of you all. (I have nothing to do with you all). Surely I, (Al shaytaan, the Reptilian) see (Michael and the Anunnaqi), which you (Enosites), can not see. Surely, I (the devil) Akhaafu 'Fear' The Source, ALLAH and ALLAH is Shadiyd 'Forceful' in The punishment."

49 When the hypocrites and those who have disease, inside their hearts say: "Their, (Muslim's) means of judgment, has mislead them"; and whoever, has trust in The Source; so surely, The Source, ALLAH is 'Aziyz 'Mighty', Hakiym 'Wise'."

*The Concealers Of The Facts
Are Defeated - The Source
Doesn't Change Any Nation
Until They Change*

50 And if, only you, (Muhammad) would have seen when, Yatawaffa 'The Souls Were Taken Away' from those who concealed that which they



Figure 173
Saraqh Ibn Harith (The Devil Took His Form)

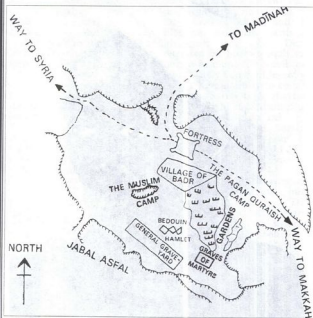


Diagram 42
The Battlefield Of Badr

knew to be the facts; Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Cherubeems) would Yadribuwn 'Strike Them' their faces and their backs; and they could taste the pain of burning in Hell."

51 That is for what your (concealers of the facts), hands has presented, and that The Source, ALLAH is not unjust to His (His Not Our) slaves."

52 Kadaab 'As Toiled' The Aaali 'Descendants' Of Pharaoh (The Mizraimites/Egyptians), and those from before him (Nod, Sodom, Gomorrah, 'Ad and Thamud), they concealed that which they knew to be the facts by the signs of The Source, Allah, so The Source, ALLAH has taken them away by way of their faults; surely The Source, ALLAH is Qawiyun 'Strong' in His (His Not Our) Shadiyd 'Forceful' punishment."

53 That is because, The Source, ALLAH would never change the grace of the grace he bestowed upon a kindred, until they change whatever is in themselves and that The Source, ALLAH is The Samiy'un 'Hearer', The 'Aliymun 'Knowing'."

54 Kadaab 'As Toiled' The Aaali 'Descendants' Of Pharaoh (The Mizraimites/Egyptians), and those from before him (Nod, Sodom, Gomorrah, 'Ad and Thamud), has lied by way of their 'Master', who is Rabb; therefore We, ([We Not I] the Eloheem) destroyed them, by way of their faults and We, (the Eloheem, Anunnaqi), Aghraqnaa 'Drowned' the Aal 'Descendants' Of Pharaoh (Ramses II); and all of them were Zaalimiyn 'In A State Of Unjustness.'

55 Surely, the most Sharra 'Disagreeable' Of Al Dawaabbi 'The Beasts' (human beasts), in ALLAH'S possession, are those who concealed what they knew to be the facts; so they don't have faith."

56 Those of them who made a 'Ahd 'Covenant', then they break their 'Ahd 'Covenant' at all times, and they do not tremble and fear."

57 Therefore, if you (faithful ones) overtake them, (the hypocrites), in Al Harb 'The Battle' (Of Badr), then scatter them - (teach them a lesson). So whoever comes after them, (the hypocrites); verily they may remember."

58 And if you, (Muhammad) fear Khiyaanat 'Betrayal' from the kindred, so throw at them their equal (their covenant). Surely, The Source, ALLAH does not like Al Khaa-iniyn 'The

Firown's Descendants And Nations Were Destroyed From Before - Concealers Of The Facts Are The Most Evil Beasts In Allah's Possession

Treacherous'."

*Faithful Ones To Be Be
Prepared To Do Battle - If
The Concealers Of Facts
Want Peace, Then Incline
To It*

59 And do not let those, of them who conceal what they know to be the facts, think that they have excelled (the Peaceful Ones 'Muslims'). Surely, they will not be able to escape."

60 And (faithful ones) prepare for them, (concealers of the facts) the strength of what you are able, and from Ribaat 'Tying' of Al Khayl 'The Cavalry' to frighten the enemy of The Source, ALLAH and your (Muhammad and his followers') enemy and other (enemy) from besides you, that are not known to you, (but) The Source, ALLAH Ya'lamuhum 'Knows Them'; and whatever you spend in the path of The Source, it will be paid back to you all and you will not be amongst those in a state of unjustness."

61 And if (the concealers of the facts) incline for Salm 'Peace', then incline to it, (peace) and trust in The Source, ALLAH surely He (He Not We), He is Al Samiy'u 'The Hearer', Al 'Aliym 'The Knower'."

62 And if they wanted to deceive you, (Muhammad), so surely The Source is Sufficient

for you, He, (A Yahuwa) is one who supported you by way of Nasrihi 'His (His Not Our) Aid' (Nasruallah) and by way of Al Mumineen 'The Faithful Ones.'"

63 And He (He Not We), united between their (the faithful ones') hearts, even if you, (Muhammad) spent all that is on Qi/Tiamat Earth's (wealth), you could not unite between their the believers' hearts, but The Source, ALLAH unites them the hearts. Surely, He is 'Aziyy 'Mighty', Hakiym 'Wise'."

*Encouragement For The
Muslims To Fight A Larger
Number Of The Enemy -
The Holding Of Captives*

64 O Al Nabiyy 'The Newsbearer' (Muhammad), The Source, ALLAH made you sufficient and those of them who follow after you, the Faithful One."

65 O Al Nabiyy 'The Newsbearer' (Muhammad), Harriidi 'Convince' (urge) al Mu-miniyn 'The Faithful Ones' Alaa 'On To' Al Qitaal 'The Killing' (war); surely, from amongst you are twenty patient men, (the Muslims) who shall overcome two hundred (non faithful ones; the Desert Arabs) and if there was hundred of you, (the Muslims) who shall overcome one thousand from those of them who conceal what

they know to be the facts, then they are a kindred that does not overstand."

66 Now The Source, ALLAH had lighten upon you all, (Muhammad and the faithful ones), and that He (He Not We) knows there is Da'faan 'Weakness' in you all, (Muhammad and the faithful ones); so if there are a hundred patient ones from you all, they shall overcome two hundred; and if there is a thousand from you all, they shall overcome two thousand by The Source's, ALLAH'S permission, and The Source, ALLAH is with Al Saabiriyn 'The Patient Ones'."

67 It was not for a Nabiyy (Muhammad) to have Asraa 'Captives' until he has Yuth-khina 'Slays In Great Numbers' (makes a great slaughter) in Al Ard 'The Planet Qi/Earth.' You (the Desert Arabs) wants 'Ardun 'The Goods' of Al Dunyaa 'The Physical World' and The Source, ALLAH wants Al Aakhirat 'The Last' (the hereafter), and ALLAH is 'Aziyzun 'Mighty' Hakiymun 'Wise'."

68 If there wasn't any Kitaabun 'Scripture' - (the mother book of all the scriptures), from The Source, ALLAH that had already gone forth, there will be punishment of what you would have became."

which you took as booty; Haalaan 'Lawful', (and) Taysibaan 'Agreeable'; and tremble and fear The Source, ALLAH, surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'All Merciful'."

70 O Al Nabiyy 'The Newsbearer' (Muhammad), tell them: "Whom are of Al Asraaa 'The Captives', who are in your hands? If ALLAH knows that in your (captives) hearts is goodness, He (He Not We) would have given you all goodness, which has been taken from you all, and He, will forgive you all, and ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'."

71 And surely, they (the Desert Arabs) want to act unfaithful to you, (Muhammad); so indeed they were unfaithful to ALLAH before, yet he gave you (Muhammad), power over them, and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing', Hakiymun 'Wise'."

*Faithful Ones Are To Help
Those, Unfaithful Ones In
The Dīn - Those Who Left
Their Homes Their Is A
Forgiveness - Those
Unfaithful Ones Who
Converted Are One With
You*

72 Surely, those of them who

are faithful and Haajaruw 'Fled, Left Their Homes' and Jaahiduw 'Fought Jihaad' (holy war) with their wealth, and themselves in the path of ALLAH; and for those of them - (the faithful ones who took the Enosites) and gave them shelter, aided them; these are you, (the faithful ones) who are near-friends to one another, and those who have faith, and didn't flee, leave their homes; you will not be guarded until you leave your homes (and fight in the war and if they, the unfaithful ones, seek help from you, faithful ones, in the means of judgment; so it is to you to help except for the kindred, with whom you have Miythaaq 'Fullfillments Of A Promise'; and The Source, ALLAH sees everything that you, (the Enosites) do."

73 And for those of them, who conceal what they know to be the facts; some of them are near-friends of the others. If you, (the faithful ones) did not do it, (spread the facts), then there will be Fitnatun 'Tests, Temptation' in the planet 'Earth' Qi and great mischief."

74 "And as for those of them, who had faith and left their homes and fought jihaad (holy war) in the path of ALLAH, and those of them who gave shelter and helped each other; these are the true faithful ones, for them is a Mughfiratun 'Forgiveness'

and Kariym 'Honorable' Rizqun 'Provision'."

75 And for those of them, who become faithful afterwards and left their homes and fought Jihaad (Holy War in the name of The Source) with you, (the faithful ones); so they are one of you, and they are your relatives; but most of them are closer related to each other, in ALLAH'S Kitaab 'Scripture' - (the Qur'aan). Surely, The Source, ALLAH is The 'Aliymun 'Knower' of everything."

Sudiq Allahu El Azim

Chapter Eighty Nine

Revealed In The Year 629-632 A.D.

Aal Imraan

(The Descendants Of Imraan)

Original Order Chapter 89;

Wrong Order Chapter 5

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

89 (Alif) Alif: Adam - Laam: Laytul Qadri, 'The Shadow Hour of Power'; Miym: Muhammad, (the first and last of the ones sent, of 'The Seed Of Adam')."

2 The Source, ALLAH is He (He Not We), who no ILLAAHA (ALLAHS) 'Sources'

would exist, except by way of Him (HU - The Force Of Creative Will). He is Al Hayyu 'The Everliving', Al Qayuwu 'The Subsisting'.

3 He (He Not We) Nazala 'Sent Down' on you, (Muhammad) Al Kitaab 'The Scripture' (Qur'aan) Bi-Al Haqqi 'With The Facts (beyond any doubt)', Musaddiqaan 'Confirming' what is between Yadayhi 'His Hands'. (These are the scriptures before the Qur'aan); and Anzala 'He Sent Down' Al Tawraat 'The Torah' and Al Injiyl 'The Evangel' (send down the Injiyl but gave it to Yashu's/Isa).

4 (The other scriptures) are Hudaa 'Calmness' from before (Qur'aan), for Al Naas 'The Enosites', (the Children of Israel and the Torah); And Anzala 'He Sent Down' Al Furqaan 'The Differentiation'. Surely, those who conceal what they know to be the facts, about ALLAH'S Ayyaat 'Verses' (which are all His scriptures); for them there will be a pain that is Shadiyd 'Forceful', and The Source, ALLAH has the might, for He (He Not We) is the Aziyz 'Mighty' of the Intiqaam 'Avenger'.

5 Surely, nothing in Al Samaa-i 'the Heavenly Skies', (The Firmaments) or the 'Planet Earth' is Yakhfaa 'Hidden' from The Source, ALLAH.

The Source Fashions As A Yielding Mercy In The Wombs

6 It is He (He Not We), who Yusawwirukum 'Fashions You' Fee 'Inside' Al Arhaam 'The Wombs' how it pleases Him (Him Not Us). There Is No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' except Huwa (HU). Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise.'

7 He (He Not We) it is, who Anzala 'Sent Down' Alayka 'On (To) You', (Muhammad) Al Kitaab 'The Scripture' (Qur'aan). Minhu 'From It' Are Aayaatun 'Verses' which are Muhkimaatun 'Clear Wisdom' (Decisive). They are Ummu 'The Mother' Of Al Kitaab 'The Scripture'. (The clear verses of the Qur'aan), and others Mutashaabihaatun 'Allegorically Can Be Interpreted More Than One Way'. So as for those, in their hearts there is Zayghun 'Deviation', so they follow what can be given more than one (interpretation), from it, seeking Al-Fitnat 'Testing, Temptation' and seeking (to interpret) Ta-wiylihi 'Their Meaning' and no one knows their meaning except for the source, ALLAH, and Al Raasikhuwn 'Those Deeply Rooted' in knowledge, (those The Source gave the ability to see the true meaning) say: "We have faith Bihi 'By It';

(meaning) all (the scriptures) is from the possession of our Master, 'Rabb', and none except the Uwlw 'First Ones' (Who Passes Through) Al Albaab 'The Door' (Of The Mystic Order Of Zodoq), Yudhakkiru 'Remembers'." (Only those who read all of the scriptures can see what they are saying.)

8 Our Rabb, 'Sustainer', don't suffer our hearts, after You (You Not We) have calmed us (aright); and Hab 'Give' for us from your presence a Rahmatan 'Yielding' (mercy). Surely You are Al Wahhab 'The Giver.'

*The Gathering Of The
144,000 - The Concealers Of
The Facts Were Destroyed*

9 Our Rabb, 'Sustainer', You are The One who Jaami'a 'Gathers' Al Naas 'The Enosites' (144,000) for a day, which there is no Rayba 'Doubt' Fihi 'In It'. Surely, The Source, ALLAH does not turn back on Al Miy'aada 'The Promise (His Covenant)'.

10 Surely, those who conceal what they know to be facts, their wealth, nor their children will suffice them from The Source, ALLAH in any way; and these are those who shall be Waquwd 'Fuel' for the Fire.

11 Kadaabi 'Like Toiled' the Aali 'Descendants' of Fir'own (Ramses II) and those before

them, they lied about Our, ([Our Not My] the Eloheems', Anunnaqis' Also Called Neteru To The Egyptians) Aayaat 'Signs'; (The Egyptian Book Of The Coming Forth To Life, Book Of The Dead); so ALLAH took them and destroyed them by way of their faults, and ALLAH is Shadiyd 'Forceful' in the punishment.

12 Say to those who conceal what they know to be the facts: "You will be Ghalaba 'Conquered' and Tahshur 'Assembled' in a (blazing) Jahannam 'Hell'; an evil and wretched, Mihaad 'Dwelling Place'."

*The Source's
Aid In The Battle Of Badr*

13 Indeed, there was a Aayatun 'Sign' for all of you (to learn in that), in which the Fi-atayni 'Two Parties' (the faithful and The Meccans Desert Arabs fighting to kill each other in the Battle Of Badr), Al Taqataa 'They Clashed'; one party, (the Faithful) Tuqaatilu 'Killing' in the Sabiyl 'Path' of ALLAH and the other ones who concealed what they knew to be the facts - (the Meccans Desert Arabs); they saw (twice as many) Mithlayhim 'As Themselves' Raaya 'In The Sight' of Al 'Ayn 'The Eye' (313 faithful, fighting 1,000 Meccans), and The Source, ALLAH

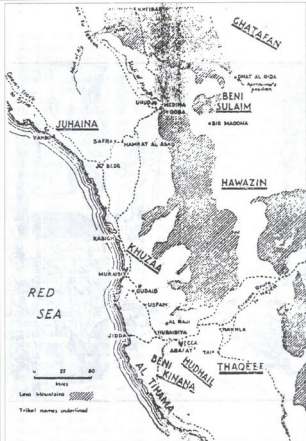


Diagram 43
The Battle Of Badr

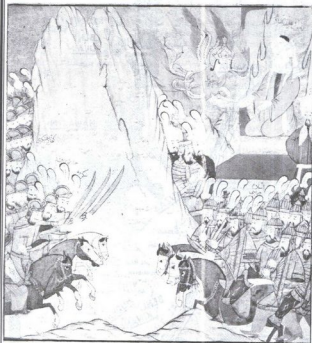


Diagram 44

Angelic Beings Coming To Help Muhammad In The Battle Of Badr

strengthens with His (His Not Our) aid (Ansars), whom He (He Not We) pleases. Surely in that, is instruction for the Uwliy 'First Ones' (gifted) with Al Absaar 'Inner Sight' (Clairvoyance).

14 The Hubbu 'Like' of Al Shahawaat 'Lusts' is made to Zuyyina 'Seem Fair-Seeming', Min 'From' Al Nisaa-a 'The Enosites' and Al Nisaa-i 'The Enosite Women' and Al Baniyn 'The Sons', (their own families); and Al Qanaatiyr Al Muqantarat 'The Hoarded Treasure' of Dhahab 'Gold' and Fiddat 'Silver' and Al Khiyl 'Cavalry' of Al Musawwamat 'Distinction' and Al An'aam 'Cattle' and Al Harth 'The Fertile Land'. That is the temporary provision of the life of this physical world, and The Source, ALLAH has the best place of return.

15 Say, "Shall Unabbi-ukum 'I Inform You As A Newsbearer' all about what is good (better) than these? For those who tremble at the mention, in the possession of their Rabb, 'Sustainer', there are Jannaat 'Gardens' beneath which flow rivers, eternally to abide in; and Mutah-haratun 'Pure' Azwaajun 'Mates', (if your mate is not faithful and you are); and Ridwaanun 'Pleasure' from the Source, ALLAH; and The Source, ALLAH Basiyr 'Sees' of His (His Not Our) slaves.

16 Those who say: "O Our Rabb 'Sustainer', surely we have faith, so forgive us our Dhunuwb 'Faults', and protect us from the pain of the Naar, 'Fire.'"

17 Those who are Al Saabiriyn 'The Patient Ones' and Al Saadiqiyn 'The Ones Who Can Be Trusted', and Al Qaanitiyn 'The Obedient Ones', and Al Nunfiqiyn 'Those Who Give Their Wealth As Alms'; and Al Mustagh-firiyn 'Those Who Seek Forgiveness' in Al Ashaar 'The Early Breaking Forth Of Day'.

18 The Source, ALLAH Shahida 'Watched' that there is no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' except Huwa 'Him' (HU -The Creative Force Of Will), and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers (the Dinneer)', and the Uuluw 'Awwaliyn 'First Ones,' (the 24 Elders), of Al 'Ilm 'The Knowledge', Qaa-imaan 'Standing' by way of Qist 'Fairness', there's no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' except Huwa 'Him' (Hu), Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakeem 'The Wise.'

19 Surely, Al Diyn 'The Means Of Judgment,' 'Inda 'In The Possession' of The Source, ALLAH is Al Islaam 'The Peaceful Way' (Nuwaubu); and those who were given the scripture, (the Judahites, followers of Mosheh, and the Nasaaraa, 'Nazarites') did not

Akhtalafa 'Differ, (dispute about it), except until after the 'Ilm 'Knowledge' had already come to them (after they got their new scripture Torah, Injiyl, Qur'aan) out of (insolence and) envy from amongst themselves; and whoever conceals what they know to be the facts about The Source's, ALLAH'S signs, (the Tablest Of Old), so surely The Source, ALLAH is Sarceyu 'Quick' at Al Hisaab 'The Reckoning.'

20 But if they (debate and) Haajjuwka 'Dispute With You', (Muhammad) then say: "Asllamtu 'I Surrender In Peace' (became a muslim) Wajhiya 'Turning My Face' to The Source, ALLAH and (so do) those who follow me"; and say to those (Children of Israel, the Jacobites, and followers of Yashu'a), who had been given Al Kitaab 'The Scripture', (the Torah Law, The Injiyl - The Revelations), and Al Ummiyyina 'Those Taught Only By A Mother's 'Wisdom' (Family Customs, Traditions): "Aslamtum 'Did You Surrender In Peace' (become a muslim)?" So if Aslamu 'They Surrender In Peace' (become muslims), so indeed they will be lead into calmness; and if they turn back; so on you (Muhammad) is Al Balaaghu 'The Propagation Of Facts' (You are responsible for preaching the facts); and The

Source, ALLAH Basiyr 'Sees' all by way of His (His Not Our) 'Ibaad' (True) Slaves.'

21 Surely, as for those who conceal what they know to be the facts about the verses; (the scriptures) of The Source ALLAH, and kills Al Nabiyyeen 'The Newsbearers' (like Yowchanawn, The Baptist, Emmanuel son of Yesha'yah, Ezra, and Leummiym), without knowing the facts, and kill those who command by way of fairness, (the learnt teachers of the peaceful way, "Al Islaam," Ali, Al Hasan, Al Husayn, and Al Imaam Al Haadi Abdur Rahman Al Mahdi) amongst the Enosites; so give them tidings of an (undesirable), aching pain.

22 These are the ones of you who work in vain in this physical world and at the End, (the Hereafter of this physical world), they will not find any Naasiriyn 'Aiders.'

23 Don't you, (Muhammad) see how (those Judahites; followers of Moshch, Nasaaraa; the Nazarites, followers of Yashu'a), who had been given a Nasiyan 'Fixed Share' of the scripture; (the Torah of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharawn, And The Apostle Yehowshuwa, and the Evangel of Yashu'a), they are called to The Source's, ALLAH'S scripture; (the Qur'aan, the final portion) that it may be the wisdom between



Figure 174

Al Imaam Al Haadi Abdur Rahman Al Mahdi

them. Then a certain group of them turn their backs (on the Qur'aan and the law of the Torah); and they are Mu'ridoon 'Those Who Turn Away In Averse.'

24 That is because they, (the Judahites, and the Nazarites) say: "The fire won't touch us except for an extended period of days; (40 days, not more than one year); and they have deceived themselves about their Diyn 'Means Of Judgment,' by the very lies they themselves made up; (because they forged Judaism, and Christianity).

*Every Spirit Will Be
Gathered On The Day Of
Judgment - The Power Of
The Eloheem, Anunnaqi*

25 So how (will they act) if We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) gathered them (so-called Christians, Muslims, and Jews, Buddist, Zoroastrians, Hari-Chrisnas, Jehovah Witnesses, Mormans, Black Hebrews, Seventh Day Adventist, Latter Day Saints, Baptist, Black Jews, Etc.) for the day in which there is no doubt, and every person will receive that which they earned, (no less), and none of them shall be treated unjustly.

26 Say: "O ALLAHUMMA, (The Eloheem Anunnaqi), you are The Maalik 'Ruler' of Al

Mulki 'The Rulership'. You (You Not Us) give Al Mulka 'The Rulership' to whomever You please, and You remove Al Mulka 'The Rulership' from whomever You please; and You (fortify) Tu'izzu 'Make Mighty' whom You Please, and You Tudhillu 'Humble' whomever You please, by (the aid of) Yadika 'Your hands', Al Khayr 'Is That Which Is Good'. Surely, You have the Qadiyr 'Power' over all things.

27 You (You Not Us) Tawlji 'Penetrate (Emerge)' Al Layl 'The Shadow Hour' into Al Nahaar 'The Daytime', and Tawlji 'Penetrate (Emerge)' Al Nahaar 'The Daytime' into Al Layl 'The Shadow Hour', and You Tukhrij 'Bring Forth' (extract) Al Hayy 'The Living' (spark of life) from Al Mayyiti 'The Death' (state of death); (you can summon forth the dead from the living). You Tarzuqu 'Provide' for whomever You please, without counting (Your gifts).

28 Al Mu'minuwn, 'Faithful Ones,' are not to take the Kaafiriyn, 'Those Who Conceal What They Know To Be The Facts,' as Awliyaa-a 'Friends' from besides Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones'; and whoever does Dhaalika 'That', he is not of The Source, ALLAH, in anything, except if you tremble at the fear of them; as in

trembling; and The Source, ALLAH Yuhadh-dhirukum 'Cautions You All' of Nafsahu 'Himself (Himself Not Us Or We)', and to ALLAH is the Masiyr 'Destination'.

29 Say (Muhammad): "Even if, you try to hide what (you feel) inside your chest, or Tabduwhu 'Let It Manifest', The Source, ALLAH knows it; and He (He Not We) 'Ya'lam 'Knows' what is in Al Samaawaat 'The Skies,' and what is in Al Ard 'The Planet Earth'; and The Source, ALLAH has Qadiyr 'Power' over all things.

30 On the day, (of Judgment), you will find every person has to deal with that which it has done; that which is good and that which it has done of wickedness. (The wicked person) shall wish that the span of time between (the evil) and the span of time between (the good), were much further. (They will want more time); and the Source, ALLAH cautions you of Nafsahu 'Himself' (Himself Not Us, Or We); and The Source, ALLAH is Ra'uwf 'Kind' Bi-Al 'Ibaad 'With His (His Not Our) Slaves'.

31 Tell them this, (Muhammad): "If you truly like The Source, ALLAH, so follow me. The Source, ALLAH will like you all and forgive you all for your faults, and The Source, ALLAH is a Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful'."

32 Tell them, (Muhammad): "Obey The Source, ALLAH and the Rasuwl 'One Sent' (Muhammad); so if they turn back, so surely The Source, ALLAH does not like Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal What They Know To Be The Facts'.

The Source's Choice - The Family Of Abrawhawm

33 Surely, The Source ALLAH did choose Adam and Noach and the family of Abrawhawm and the family of Imraan over all the other Enosites of the Known Worlds.

34 Offsprings, they are all from each other; and ALLAH is Samiy'u 'Hearing,' Aliym, 'Knowing.'

35 When Amra-aatu 'A Woman' (named Anna/Khannah) of Imraan (from the seed of Moshchs father) said: "Oh my Rabb, 'Sustainer,' surely I have Nadhartu 'Vowed' to You what is in my Batniy 'Stomach'. (Miriam will be dedicated to The Source's), Muharraraan 'In Service', so accept it from me. Surely, you are Al Samiy'u 'The Hearer', Al 'Aliym 'The Knower'."

36 So when she, (Khannah) had delivered, she said: "Oh my Rabb 'Sustainer', I have delivered her, Unthaa 'A Second Part, Female' (child named



Figure 175
Khannah (Anna), Wife Of Imran - (Mary's Mother)

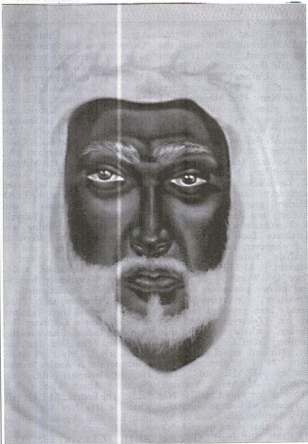


Figure 176
Imraan, Father Of Miriam

Miriam); and The Source, ALLAH already knew what she had delivered, and Al Dhakaru 'A Male (Forgetful One)' is not like a Unthaa 'Second Part, Female'. And I Samaytuhaa 'Have Name Her' Miriam, and I have place her under your protection by you, and Dhurriyyatahaa 'Her Offspring' from Al Rajiym 'The Cursed' Shaytaan 'Satan, The Reptilian'.

37 So her, (Khannah's Rabb) accepted her, (Miriam - Mother of Yashu'a/Isa) with the best acceptance and made her, (Miriam) grow up in the best manner, and Zekaryaw, (father of Yowchanawn The Baptist), Kafalahaa 'Took Care Of Her'; and whenever, Zacharias would Dakhala 'Enter' in on her, (Miriam's) Al Mihraab 'Private Place Of Worship', he would find in her possession Rizqaan 'Provision', (everything had already been provided for her). So he, (Zekaryaw), said: "O Miriam, where is all this (coming) from for you? And she, (Miriam) would say: "It is from the Possession of The Source, ALLAH, and The Source, ALLAH Yarzuqu 'Provides' for whom He (He Not We) pleases without any limits."

38 Zekaryaw called out to his Rabb, in that place; he said: "O My Rabb, 'Sustainer!' Give me from Your (Your Not Our) Possession Tayyibatan 'An

Agreeable', Dhurriyyatan 'Offspring' (a son from my seed to be my Successor); surely you are the Samiy'u 'Hearer', of Al Du'aa-i 'The Calls (Prayers)'."

39 So Al Malaa-ikatu 'The Angelic Messengers', (Eloheem Anunnaqi Michael, Gabriel, And Raphael [Someone Is Speaking About Michael And Gabriel And Raphael]), Naadat-hu 'Called Out To Him', (Zekaryaw) while he was standing in the Mihraab, 'Place Of Worship' Yusalli '(Giving) Salutation As Prayer': Surely The Source, ALLAH gives good news with Yowchanawn (Yahyah), Musaddiqaan 'Confirming' with a Kalimaat 'Word' from the Source, ALLAH; and a Sayyidaan 'Master', and a Hasuwraan 'Abstainer' and a Nabiyaan 'Newsbearer' from Al Saalihiyn 'The Perfectionist'.

40 He, (Zekaryaw) said: "O My Rabb! How will there Yakuwnu 'Exist' for me a Ghulaam 'Lad' (Son) and indeed, I have reached Al Kibaru 'The Old Age', and Amra-aatiy 'My Woman', (Elisheba) she is 'Aaqira 'Barren'? He, (the Messenger Gabriel) said (Speaking About What Gabriel Said): "The Source, ALLAH does what He (He Not We) pleases, (just like that, Speaking About ALLAH)."

41 He, (Zekaryaw) said: "O My Rabb, 'Master/Sustainer' make a sign for Me." He (this speaker is



Figure 177
Miriam Being Provided Sustenance In Her Chamber
www.Nuwaupuinc.com

a Rabb) said: "Your Sign is that you will not be able to speak to the Enosites, for Thalaathat 'Three' Ayaam 'Days', except Ramzaan 'By Using Sign Language'; and remember your Rabb 'Sustainer' often, and glorify Him (Him Not Us) in the dusk period and the early breaking forth of day."

*Glad Tidings Of The Birth
Of Yashu'a/Isa And His
Illustriousness, And Miracles*

42 And when Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi Michael, Gabriel, and Raphael) said: "O Miriam, surely The Source, ALLAH has Astafaaki 'Chosen You' and has Tahharaki 'Purified You', Alaa 'On' (above) Nisaa-i 'Enosite Women' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds', (in that day and time)."

43 O Miriam, be Aqnitu 'Steadily Attentive' (adoring him constant in prayers), to your Rabb; and Asjudiy 'Prostrate' and Arka'iy 'Bow' with Al Raaki'iy 'Those Who Bow'.

44 That is of the Anbaa-i 'News Of Prophecy', (announcements) of what is Ghayb 'Unseen', which We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) Nuwhiyhi 'Inspired It' to you (Muhammad). And you were not present when they (threw their arrows in the river) to cast

lots, (to decide) who should Yakfulu 'Take Care Of Miriam and you, (Muhammad) were not present when they disputed (amongst themselves over Miriam).

45 So when Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (The Eloheem Anunnaqi Michael, Gabriel and Raphael) said: "O Miriam, surely ALLAH gives you glad tidings with a word from Him (Him Not Us), whose name is Al Masiyh 'The Anointed One', (the Messiah) Yashu'a/Isa (Tammuz, Symbolic Of Horus), son of Miriam, Wajiyhaan 'Illustrious' in Al Dunyaa 'The Physical (Being Flesh) World'; and at Al Aakhirat 'The End', (the spiritual being a spirit to come) and of Al Muqarrabiyn 'Those Who Are Near' (to The Source, Yashu'a/Isa is half Angelic Being).

46 And He, (Yashu'a/Isa son of Miriam) shall speak to the Enosites, (while yet) in Al Mah-di 'The Cradle'; and (when in) Kahlaan 'Middle Age' - (the middle age of that time was about 60 years old, which is known as old age now, so he could not have died at the age of 33. That's not middle age); and he shall be from Al Saalihiyn 'The Perfectionists.'

47 She, (Miriam) said: "O My Rabb, 'Sustainer!' How can there be (exist) for me a

Waladun 'Blood Son' and no Bashar 'Mortal Being In Skin' has Yamsasniy 'Touched Me' (Sexually)? He said: 'Ka-dhaalika 'As That', The Source, ALLAH Yakhluqu 'Creates' what He (He Not We) pleases when He passes (Decrees) an Amraan 'Order', so then, He say for it, Kun 'To exist', Fa-yakuwn 'So Into Existence It Comes'.

48 And He (He Not We) will teach him (Yashu'a/Isa) Al Kitaab 'The Scripture'; (The Enuma Elish, Gilgamesh Epics, Etana, Atra Hasis, The Descent Of Ishtar To The Underworld, The Secrets Of Adafa, Nergal And Arishkegal), Al Hikmah 'The Book Wisdom (of Luqman)'; and Al Tawraat 'The Torah (the Law of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharawn, And The Apostle Yehowshuwa, The Successor Of Mosheh); and Al Injiyl, 'Evangel' (of Yashu'a/Isa).

49 And a Rasuwl, 'A One Sent' to the Banee Israaiyl 'Children of Israel/Jacob' (Saying): 'Surely, I just came to you all with a verse from your Rabb 'Master'. Surely, Akhluqu 'I (I Not We, Or Us) Created' for you from Al Tiyn 'Clay', as the Kahay-at 'Form' of Al Tayr 'The Bird' - (the dove), so Anfukhu 'I Blew' Fiyhi 'In It' (the Holy Spirit), so Yakuwnu 'It Will Become' (Exist As) a Tayr 'Bird' by the permission of The Source,

ALLAH; and Ubri-u 'I heal' (cure) Al Akmaha 'The Blind From Birth', and Al Abrasa 'The Leprous', and Uhiy 'Inspire' Al Mawtaa 'Those Who Died' (passed on to the next life), by way of the Source, ALLAH'S permission; and Unabbi-ukum 'I Inform You All As A Newsbearer' of that; which you eat, and what you tadakhiruwn 'store up' (for the future) in Buyuwitikum 'Your Homes'. Surely, in that are signs for you all, if you were Mumineen 'Faithful.'

50 And (I, Yashu'a/Isa have come) to Musaddiqaan 'Confirm' (for you), of that which is between, Yadaya 'My Hands' from Al Tawraat 'The Torah' (The Law); and to Uhillā 'Make Lawful' for you all (Jacobites), some of that which has been made Hurrima 'Unlawful' on you all; and I have come to you with a sign (Al Qur'aan) from your Rabb 'Sustainer/Master'. So tremble at the mention of The Source, ALLAH and Atiy'uwni 'Obey Me'.

51 Surely, The Source, ALLAH is my, Rabb, and your Rabb, so slave for Him (Him Not Us). This is the Siraat 'Narrow Path' of Mustaqiym 'Those Who Stand Up Straight' - (the calmed ones).

52 So when (Yashu'a/Isa), Ahssa 'Sensed' from them, (the disciples) those who were concealing what they knew to be

facts; (that they were starting to worship him), he said: "Who are Ansaariy 'My Aiders' toward ALLAH'S, (Ansaaru Allah)? "Al Hawaariyuwn 'The Disciples', (dressed in white robes) said: "We are The Source, ALLAH'S Ansaar 'Aiders', we have faith in The Source, ALLAH and Ash-hadu 'Watch' that we are Muslimuwn 'Ones Of Peace'."

53 Our Rabb, we have faith in that, which You have Anzalta 'Sent Down', (the Revelation) and we follow Al Rasuwl 'The One Sent', (Yashu'a/Isa, who is Tammuz Symbolic Of Horus). So Aktubnaa 'Write Us' (in the Book of Life), with Al Shaahidiyn 'Those Who Watches'. (They accept Tammuz as Our Messiah - who is the real messiah, known by his galactical name Sananda, and his return).

54 And they, (the Enosites of Yashu'a/Isa' time) Makaruw 'Plotted' (on Yashu'a/Isa), and The Source, ALLAH Makara 'Plotted'. However, the Source, ALLAH is good (the best) of Al Maakiriyn 'The Plotters'.

Yashu'a/Isa Did Not Die A Regular Death. He Was Taken Up By The Source

55 (O Muhammad), when The Source, ALLAH said: "O Yashu'a/Isa, surely I am the one Mutawattiiyka 'Who Receives' (your soul, takes your life), and

Raafi'uka 'Raises You Up' towards Me (Me Not We, Or Us); And Mutah-hiruka 'Purify You', (Yashu'a/Isa) from those who conceal the facts (and did not accept you as a Messiah), and I (I Not Us) will make those who follow you, (of the lost Sheep of the House of Israel, the Judahites) over those who conceal what they knew to be the facts to the day of resurrection/standing. (They did not accept Yashu'a/Isa as the Messiah until the Day of Resurrection); then unto Me (Me Not Us), you all will return, so then I (I Not We) will use wisdom between you all, about that in which you Takhtalif 'Differ'.

56 So as for those who conceal what they know to be the facts, I (I Not We) will punish them with a forceful pain in this physical world, and at the end; and they will find no aiders.

Tammuz's Return, And The Likeness Of Yashu'a/Isa Is Likened Unto Adam

57 And as for those who have faith and work to Saalihaat 'Perfect Themselves'; So He (He Not We) will give them their full reward; and The Source, ALLAH does not like those who are in a state of Zaalimiyn 'Unjustness.'

58 (O Muhammad), that

(information about Tammuz), which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Natluw 'Recited' to you, that (Tammuz will return at the end), it is of the signs (of Revelation), and Al Hakiym 'The Wise' Al Dhikr 'Remembrance'.

59 Surely, The Mathala 'Likeness' Of Yashu'a/Isa in the possession of The Source, ALLAH is as the likeness of Adam, He (He Not We) Khalaqahu 'Created Him' (Adam) from Turaab 'Mud' (of the Earth), then He said to him (Adam), "Kun 'Exist' Fa-yakuwn 'So Into Existence He Came'."

60 The fact (beyond any doubt) is from your Rabb 'Sustainer', so don't be of Mumtariyn 'Those Who Dispute' (about it; whether or not Yashu'a/Isa came in the flesh as a human being, or was some kind of deity).

61 So, whoever Haajjaka 'Disputes' with you, (Muhammad) in it, (whether or not Tammuz was a man, or The Source), from after that which has come to you of Al 'Ilm 'The Knowledge', so say: "Come and call Abnaa-anaa 'Our Sons', (the Muslims) and Abnaa-akum 'Your Sons', (the Christians) and Nisaa-anaa 'Our Women' and Nisaa-akum 'Your Women', and Anfusanaa 'Ourselves', and Anfusakum 'Yourselves'; then Nabtahil 'Let Us Invoke', so let us make the L'anat 'Curse' Of

The Source, ALLAH on Al Kaadhibiyn 'The Liars'.

62 Surely, this is for him the factual Qasasu 'Narrative', (Yashu'a/Isa is not The Source) and there is no ILAAHIN (ALLAHS) 'Sources' except The Source, ALLAH, and surely The Source ALLAH, is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

63 So if they turn back, (and leave the facts), so surely The Source, ALLAH is The 'Aliymun 'Knower' by (of) what Al Mufsideyn 'The Mischief Makers' (do).

*Invitation To The Family
Of The Scriptures By The
Ishmaelites Not To Associate
Partners With The Source*

64 Say (Muhammad): "O Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture'; (the so-called Judahites of Muhammad's time), come to a (reasonable) Kalimatan 'Word'; (an agreement) equal between ourselves (the Ishmaelites) and between yourselves, that we Na'abuda 'Slave' none except The Source, ALLAH and won't associate partners with Him (Him Not Us) of anything; and none of us is to take Arbaabaan 'Sustainers/Masters' from besides The Source, ALLAH (Stop worshipping men). So if they turn back, so all of you say;

'Ash-hadu 'Watch' that we are Muslimuwn 'Peacemakers'.

65 O Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture' - (Judahites; so-called Jews of Muhammad's time), why do you dispute in (about) Abrawhawm, And Al Tawraat 'The Torah', (law of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa), and Al Injiyl (of Yashu'a/Isa), were not Anzilat 'Sent Down' Ilaa 'Except' from Ba'dihi 'After Him' (Abrawhawm)? Have you no intellect (at all)?

66 It is you, those of who dispute on matters of 'Ilmun 'Knowledge' for you all. So why do you dispute about matters of which you do not have any knowledge? And The Source, ALLAH is The Knower and you do not know.

67 And Abrawhawm was not a Yahuwd, 'Judahite,' (follower of Mosheh; There were no Judahites until after him) and not a Nasraaniyaan 'Nazarene', (follower of Yashu'a/Isa; there were no Nazarites until after him), but he was a Haniyfan 'Upright' Muslimaan 'One Of Peace.' (He named us Muslims) and he was not of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' (like some of the Babylonians of his time).

68 Surely, the Awla 'First' of Naas 'Enosites', by Abrawhawm are those who follow him, and

this Al Nabiyyu 'Newsbearer', (the newsbearer Muhammad) and those who have faith; and The Source, ALLAH is The Waliyyun 'Near Friend' (Protector) of Al Mu-miniyn 'The Faithful Ones'.

69 Some followers, (Judahites of Muhammad's) time from the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', (the Torah of Mosheh), want to lead you all (off the right path), and all they do is lead themselves off (the right path); but they can't even feel it. (They don't realize it).

70 O Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture'; why do you conceal what you know to be the facts in The Source, ALLAH'S verses (of the Qur'aan) and you Tash-haduwn 'Are Watchers'?

The Denial Of The Comforter And Islaam

71 O Ahl 'Family' of the Scripture why do you Talbisuwn 'Clothe' the facts with Al Baatil 'Falsehood' (that Muhammad is that newsbearer, and he is Ahmad the Comforter by mixing falsehood; the Talmud, and the Mishnah to try) and Taktumuwn 'Conceal' (hide) the facts; (the laws of the Torah), and all of you know better? (You know who he is).

72 And some of the followers; (Judahites of Muhammad's time from the Ahl 'Family' of the

Scripture; (the Torah of Mosheh) say: "Have faith in that which was Anzil 'Sent Down', (this Qur'aan) Ala 'On' those who have faith as Al Nahaar 'The Daytime' (Hits) Wajha 'His Face', during the early daytime hour; and they conceal the facts at the end of the day in (hopes) that they could cause others to return (to their ways of thinking. That Al Islaam is not true. They are not allowed to get into the next world).

73 And don't have faith (and trust) in anybody except, for those who follow Diynakum 'Your Means Of Judgment'. Tell them this, (Muhammad): "Surely, the true calmness is the calmness of The Source, ALLAH." If anyone claims to have the likeness of what was given to you, or they want to dispute with you (about your matter) in the possession of your Rabb; tell them: "Surely, the preference is in the Yadd 'Hands' of ALLAH, He (He Not We) gives it to whomever He pleases, and The Source, ALLAH is The Waasiun 'Comprehensive', 'Aliymun 'Knowing'.

74 He (He Not We), The Source ALLAH, Yakhtassu 'Singles Out' by His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy) whom He pleases; and ALLAH is Al 'Aziym 'The Supreme' possessor of preferences.

75 And of the Ahl 'Family' of

the Scripture; (Judáhites of Muhammad's time who followed the law); who if you trust him with a Qintaar; (1,200 ounces of Gold); he will restore it to you; and of them are those who if you trust him with Dinar ('One Gold Coin'), he will not Yuwad-dihi 'Restore It' to you, unless you keep after him. That is because they say: "We are not in (any way, obliged to obey the path and law when it deals with) Al Ammiyyina 'The Ones Taught By Their Mother's Knowledge'; and they tell lies about The Source and they know (the facts).

76 In fact, whoever Uwfaa 'Fulfilled' by his 'Ahd 'Promise' and trembled and feared, so surely The Source, ALLAH Yuhibbu 'Loves' Al Muttagiyn 'The Ones Who Tremble At The Mention'.

77 Surely, those who buy barter, by way of their source, ALLAH'S 'Ahd 'Covenant', and their right hands for a small price of wealth, they will not have a share for themselves in the End (Paradise); and The Source, ALLAH will not Yukalimuhum 'Speak In Words To Them' and He (He Not We) won't look at them on the day of resurrection/standing, and he won't Yuzakkiyhim 'Purify Them' (make them abstain piety and prepare them for the Enclosed Garden Of Delight);

and for them is an aching pain; (the Hell's fire).

78 And surely, from amongst a Fariyqaan 'Portion' (A Sect of Jews) there is some who Yaluwna 'Twist' Al Sinatahum 'Their Tongues' (to distort) by the scripture, to make you think it is from Al Kitaab 'The (Holy) Scripture' and it is not from Al Kitaab 'The Scripture', and they say it is from the possession of the source, ALLAH, and it is not from the possession of the source, ALLAH, and they say things on The Source, ALLAH that are lies and they really have (right) knowledge.

79 It is not (right) that The Source, ALLAH Yu'tiya 'Gives' any Basharin 'Mortal In Skin', Al Kitaab 'The Scripture' and Al Hikma 'The Wisdom', and Al Nuburwat 'The Newsbearer', then he says to the Enosites: "Be slaves for me from besides The Source, ALLAH but, be Rabbaaniyn 'Rabbis'; (devoted to the Masters, Imaams of Israel/Jacob) because of what you have been Ta'llimuwun 'Taught' of Al Kitaab 'The Scripture' (by them), and that which you have been Tadrusuwun 'Studying' (your yourselves)."

*Newbearers And Scriptures
From Before, Confirms
Muhammad's Authenticity*

80 And He (He Not We) would

not command you all to take Al Malaan-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) and Al Nabiyyin 'The Newsbearers' Arbaabaan 'As Sustainers/Masters' (Rabbis). Would He command you all to be as the concealers of the facts, after you all are Muslimuwun 'Peacemakers'?

81 And when The Source, ALLAH took a Miythaaq 'Fullfillment Of A Promise' of Al Nabiyyin 'The Newsbearers', when I, The Source, ALLAH gave you (the newsbearers) Kitaabin 'A Scripture' and Hikmatin 'A Wisdom' (of it); then a Rasuwl, 'One Sent' (Muhammad) came to you, Musaddiqun 'Confirming' what was already with you all, you must have faith in him, (Muhammad) and Tansurunnahu 'Aid Him'. He said: "Do you agree with these terms? They, (the Newsbearers), said: "We affirm." He then said: "So then, watch to this, and I am with you from Al Shaahidiyn 'The Watchers'."

82 So whoever turns back (and breaks the agreement), after that; these are they who are Al Fasiqiyn, 'The Transgressors.'

83 Do they, desire other than the means of judgment of The Source, ALLAH (Al Islaam)? For Him (Him Not Us), is the Aslama 'Peaceful Way,' who is in Al Samaawaat 'The Skies'

(Firmaments) and Al Ard 'The Planet Earth/Tiamat'; be it Taw'aan 'Willingly' or Karhaan 'Unwillingly', and to Him, they all will return.

84 Say (Muhammad): "We, (my true followers and I), have faith by way of The Source, ALLAH and what was Anzal 'Sent Down', (the Qur'aan) Alaynaa 'On (To) us', and what was sent down 'Alaa 'On (To)' Abrawhawm and Yishmael - (Abrawhawm was given 10 Pages of Suhuf); and Yitschaq and Ya'aqob and Al Isbaat 'The Tribes' (Israelites and Ishmaelites And Midianites); and what was given to Mosheh; (the Torah) and Yashu'a/Isa; (the Evangel of Yashu'a/Isa) and Al Nabiyyuwn 'The Newsbearers', (males of prophecy, like Yesha'yah/Isaiah, Yermeyah/Jeremiah, Yechezqe'l/Ezekiel, Daniye'l/Daniel, Howshea'/Hosea, Yow'e'l/Joel, 'Amowc'/Amos, Abadyah/Obadiah, Yonah/Jonah, Miykayehuw/Micah, Nachuwm/Nahum, Chabaquuwq/Habakkuk, Tsefanyah/Zephaniah, Chaggay/Haggai, Zekaryaw/Zechariah, Mal'akiy/Malachi,) from their Rabb, (like the Psalms of Dawiyd and the Book of Wisdom by Leummiym) we don't make any Fariq 'Distinction' between any of them, (men of prophecy, and scriptures), and We (We Not He) Eloheem Anunnaqi) are to

him, Al Muslimuwn 'The Peaceful Ones, The Muslims'.

85 And as for him who seeks a means of judgment other than Al Islaam 'The Peaceful Way', so it will not be accepted from him; and in the End, he will be amongst Al Khasiriyn 'The Losers.'

86 How shall The Source, ALLAH lead a Qawm 'Kindred' into calmness, who concealed what they know to be the facts; after they had faith, and they were Shahiduw 'Watchers' that Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad) is Haqqun 'A Fact', (as predicted in the old scripture), and Bayyinaat 'Clear Evidences' had come to them; and The Source, ALLAH does not lead into calmness a kindred, who are in a state of Zaalimiyn 'Unjustness?'

87 As for these, their reward is that which is upon them; the L'anat 'Curse' of The Source, ALLAH and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem Anunnaqi) and the Enosites, all together.

88 Eternally, they shall be in it, and the pain shall not be lightened upon them, nor shall they be reprieved.

89 Except for those who Taabuw 'Repent' from after that, and Aslahuw 'Perfect Themselves', so surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most

Merciful'.

90 Surely, those who conceal what they know to be the facts, after claiming their faith, then increases in their concealing of the facts, never shall their repentance be accepted; and these are they, those who drifted (from the light on the right side to the darkness of the left side).

91 Surely, those who conceal what they know to be the facts and Maatuw 'Die', and they are concealers of that which they knew was the facts; so even if all, the Earth were full of Dhahaban 'Gold', and it is offered as a ransom for their redemption, it won't be accepted, from any of them. These are they who shall have an aching pain, and they will not have any Naasiriyn 'Aiders' (Ansaruallah).

92 By no means, can you attain righteousness until you share willingly of all you like most; (your most cherished possessions); and whatever you share willingly, of a thing, so surely The Source, ALLAH 'Aliym 'Knows' it.

*Unclean Foods Were Not
Unlawful Until After Mosheh
- First House For The
Enosites To Arrive At Was
Bekka*

93 All food was Halal 'Lawful' for the Bance Israaaiyl - (Jacob's twelve sons and one daughter,

Dina) except what Israel/Jacob made Haraam 'Unlawful' upon himself, before the Torah (of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh' Successor) was Tunazzala 'Sent Down'. (All things were good to eat before Mosheh was told in Leviticus what not to eat). Tell them (Muhammad): "Bring by way of the Torah, (the laws); then recite it (and prove it), if you, (Jacobites) are Saadiqiyn/Zodoqites 'Truthful'."

94 So as for him, who invents a lie on (about) The Source, ALLAH (if the Israelites make up something) after that; so these are the ones who are in a state of unjustness.

95 Tell them, (Muhammad): "The Source, ALLAH has Sadaqa 'Spoken The Facts'; so follow the Millat 'Rites' of Abrawhawm, the Haniyfaan 'Upright One,' and he was not of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners'."

96 Surely, the Awwala 'First' Baytin 'House' that was Wudi'a 'Established' for the Enosites (to arrive at), was the one at Bekka "To Weep" - (the place where Adam wept for the lost of his son Hebel, at the hands of his older brother Qayin; now called Mecca). Mubaarakaan 'Full Of blessings', and a leading calmness for the known worlds. (Mecca was holy before Jerusalem).

97 In it, (the Kaaba in Mecca

located in the spot where the tree in the Enclosed Garden of Delight stood), are Aayaat 'Signs' which are very clear; the Maqaamu 'Place where Abrawhawm Stood'; and whoever enters (its courts), was indeed Aaminaan 'Faithfully Secured'; and for Him (Him Not Us), the Enosites are to make Hajj 'Pilgrimage' to Al Bayt 'The House'. (That is for) whomever is able to take the path to (Mecca); and whoever conceals what he knows to be the facts; so surely, The Source, ALLAH is without need from Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

98 Tell them (Muhammad): "Oh Ahl 'Family' of the Scripture; (Abrawhawm's seed), why do you all conceal what you know to be the facts, about The Source, ALLAH'S signs, and ALLAH is Al Shahiydu 'The Watcher' over all that you, (Children Of Israel Do)?"

99 Tell them, (Muhammad): "Oh Ahl 'Family' of the scripture, why do you all turn those who have faith away from The Source, ALLAH'S path; (Al Islaam)? You desire to make it 'Iwajaan 'Crooked', and you all - (Children Of Jacob) are Shuhadaa-u 'Watchers'? And The Source, ALLAH is not unaware of what you are doing.

100 O you who have faith; (the Muslims), if you obey a group (of the different groups) from

those who were given the scripture; (the Israelites, Midianites, and Nazarites), they will turn you back into concealers of the facts, after you already have faith.

101 And how can you, (Children Of Jacob), conceal what you know to be the facts while the verses of The Source, ALLAH (the Qur'aan) are being Tutlaa 'Recited' unto you all, and Fiykum 'In Your Midst' is the Rasuwl, 'One He Sent', (Muhammad)? And whoever Ya'tasim 'Cleaves Firmly' by way of The Source, ALLAH, so indeed he, (the righteous) is calmed to the narrow path (of all the newscarers), who stand up straight, and firm.

Don't Die Unless You Are A Muslim- Hold Onto The Rope Of The Source, As One Community

102 O you who have faith, tremble at the mention of The Source, ALLAH; have true fear; and don't die except and you all, are Muslims 'Peaceful Ones'."

103 And hold on to the Hahl 'Rope' of ALLAH, as Jamiy'aan 'One Community Altogether', and don't Tafaraquw 'Become Separated', and remember The Source's, ALLAH'S grace on you all, when you were Aa'adaa-an 'Enemies'; (Ishmaelites and Israelites). So He (He Not We)

Allafa 'Made A Bond' between your hearts, so you all became under His (His Not Our) grace as Ikhwaanaan 'Brothers' (Islaamic Hebrews); and you were on the edge of a Hufrah 'Pit' of fire; then He (He Not We) saved you all from it. That is how The Source, ALLAH makes His (His Not Our) signs clear to you, so that perhaps you will be lead into calmness.

104 And there shall be (exist) from amongst you, a Ummatun 'Nation', that will call all to Al Khayr 'Good Deeds', and command you to know righteousness and Yanhawn 'Forbid' you to do acts of evil; and these shall be the Muflihuwn, 'Prosperous Ones' (The Ansarullah).

105 And don't be like, those who Tafarraquw 'Separated' and Akhtalafuw 'Differentiated' (Abrawhawm from Muhammad, the Torah from the Qur'aan), even after the clear proof of the scriptures (all of them), had come to them. And these are the ones who will have a 'Aziym 'Supreme' pain (Sunni, Shi'ite, Baha'i, Ahmadi-ite, and other sects).

106 On the day when Wujuwhun 'Faces' will Tabyaddu 'Become White', (happy); and Wujuwhun 'Faces' will bc Awaddat 'Turned black', (sad; then as for those whose faces are turned black, the sinner

who puts one newsbearer above another, or says one scripture was tampered with, and another was pure, they will be told): "Did you conceal the facts after you had faith? So taste of the pain, because of that which you have concealed."

107 And as for those whose Wujuwuhum 'Faces' Abyaddat 'Becomes White' - (happy; pure aiders of The Source; who makes no distinction between any of the men of prophecy, the newsbearers, or scriptures); so then, they are in ALLAH'S Rahmat 'Yielding' (Mercy). They are in it eternally.

108 These are the Aayaatu 'Verses' of The Source, ALLAH; all his scriptures which We, ([We Not He] the Anunnaqi, the Messengers) recite them unto you, (Muhammad) by way of facts. The Source, ALLAH wants no injustice done to Al 'Aalamiyn 'The Known World', (of His creatures).

109 And for Him (Him Not Us), is whatever is in Al Samaawaat 'The Skies', and whatever is in Al Ard 'The Planet Earth,' and to The Source, ALLAH will all affairs (commands) return.

*Ishmaelites Brought Forth
For 'Israel's Sake - Israel
Can't Harm The Muslims*

110 You, (Ishmael's seed, were

the good (best) of Ummatin 'Nations' - (the 12 tribes of Ishmaelites, and Midianites) brought forth for the Enosites, (Children of Israel). You order the right way, (the religion of Abrawhawm), and forbid the wrong way, (any other religion); and you, (the real Peaceful Ones-Muslims) have faith in The Source, ALLAH; and if the Ahl 'Family' of The Scripture, (the Children Of Israel; Jacob of the seed of Abrawhawm) had faith that would have been good (better) for them. Some from the (Judahites, Nazarites) who are faithful ones, (they accept Muhammad as the seal of the newsbearers); and most of them are Al - Faasiqun 'The Transgressors' (breakers of the law, and they are wicked).

111 (The Children Of Israel/Jacob) won't harm you all, (real Muslims); except a little harm. (Some of them spoke bad about you, Muhammad); and if they kill you, they will only turn their backs and run; then they will not be helped.

112 They will be Duribat 'Struck Forth' with humility upon themselves, wherever they are found. Except for those of them, who hold on to a Hablin 'Rope' from The Source, ALLAH (the Qur'aan), and a Hablin 'Rope' from the Enosites. They drew upon themselves a wrath from The Source, ALLAH

and Duribat 'Struck forth' with Maskanat 'Poverty' upon them; that is because (the 10 tribes of Yisrawale, Naftaliy, Re'uwbun, Binyamiyn, Shim'own, Lewiy, Gawd, Asher, Yissawkawr, Zebuwlun, And Yosafe; except for Yehuwdah, and Dawn) were concealers of the facts, about ALLAH'S verses - (the Evangel of Yashu'a/Isa; And (Herod Antipas, his mate Herodias, and his Daughter Salome) killed some of the Al Anbiyaa, 'Newsbearers' (like Yowchanawn The Baptist) without facts (unjustly). That is because they disobeyed and they were transgressors.

113 They are not all equal. Some of the Family of the Scripture are a Umaatun 'Nation' (the Judahites) who are upright (enforcers of the law). They recite the verses of the scriptures of The Source, ALLAH, during Al Layl 'The Shadow Hour period'; and they Yusjudun 'Prostrate' (in prayer like you, the Falasha).

114 They (The Judahites) have faith in The Source, ALLAH, and the Last Day, and they (the tribe of Judah) command others to do that which is right, (and follow all the scriptures), and they forbid evil acts, and hasten in the doing of what is good, and these (tribes of Judah), are of Al Saalihiyn 'The Perfectionists.'

115 And whatever good they



Figure 178
Herod Antipas

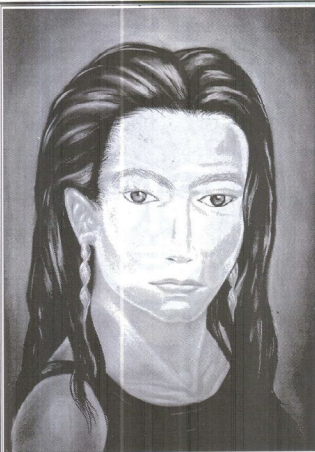


Figure 179
Herodias, Wife Of Herod
www.Nuwaupuinc.com

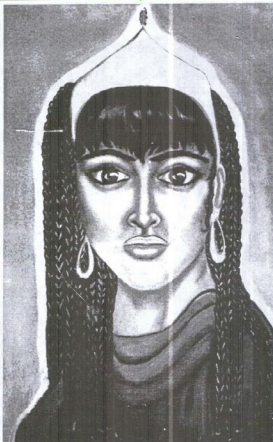
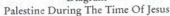


Figure 180
Salome, Daughter Of Herod



do, (keeping the laws); so they won't have to conceal what they know to be the facts. (If the tribe of Judah bears witness to the Qur'aan; they will also inherit Paradise), and The Source, ALLAH knows, the ones who trembles at the mention.

116 Surely, those who conceal what they know to be facts, (the other tribes of Israel); neither their wealth, and nor Awlaaduhum 'Their Children', anything will benefit them from the Source, ALLAH and these are the ones, (other than Judah), who are the Companions of the Fire. They shall be in it eternally.

117 The likeness of what they (the tribe of Israel, Jacob's children, other than Judah), share willingly in this life of the physical world; is as the likeness of a (strong) Riyyh 'Wind', a storm in which is Sirun 'Severe Coldness That Scorches The Plants', which Asaabat 'Falls Upon' the Harth 'Harvest' (Fertile Soil) of a kindred (Israelites) who are unjust to their own selves (Brothers Selling Brothers). So (the cold wind) destroyed (the harvest in the land of Canaan), and it was not The Source, ALLAH who was unjust to them, but it was themselves, who were unjust.

118 Oh you who have faith; (the Muslims), don't take for Batnatan 'Intimate Friends'

(non-Muslims) other than from your own, (Naas Enosites). They will not stop from trying, to corrupt you all. They wish for you all nothing, but hardship, and nothing but hatred comes out of their mouths for you; and what they keep in their chests for you is even bigger, hidden hatred. Indeed We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), have made clear the verses in all the scriptures (and tablets) from before, for you all, (the peaceful ones), if you would only use intellect and understanding.

119 Here, (you Muslims), you all like them, (the non-Muslims) and they don't like you; and you (the peaceful ones) are faithful to all the scriptures, (and tablets from before; every word found in them). When they meet you, (the non-peaceful ones), say: "We have faith, and when they are Khalaw 'Alone' (with their Satanic, Reptilian friends), they bite Al Anaamila 'Their Finger Tips' at you all. (They are afraid of the Evil One, the Reptilian; so they bite their nails, when asked about real Muslims, out of rage). You, (Muhammad) are to tell them: "You, (non-Muslims), will die in your rage. Surely, The Source, ALLAH knows the sense of what, is in your chests."

120 If a lucky chance befalls you, it grieves them, and if a disaster strikes you, they rejoice at it; but if you are patient, and

tremble and fear, their craftiness will never harm you. Surely, The Source, ALLAH surrounds, that which they do.

The Battle Of Uhud

121 And when you had left your family, in the early daytime hour; you gave the faithful their places for Qitaal 'Killing (Battle)', and The Source, ALLAH is Samiy'un 'Hearing', 'Aliymun 'Knowing'.

122 When two parties amongst you (led by the families of Banu Salma, and Banu Haritha), were Tafshal 'Defeated' (cowardly weakened by the propaganda of Abdullah Ibn Aabi Munafiq, the hypocrite), and The Source, ALLAH is The Nearest Friend to both of them; and on ALLAH, only the faithful can trust. (This was sent down when the faithful were defeated in the battle of Uhud).

123 And The Source, ALLAH aided you in the Battle of Badr, and you were Adhillatun 'Inferior', (300 to 3,000). So tremble at the mention of The Source, ALLAH so that perhaps you will show signs of gratefulness.

124 O (Muhammad), call to mind, when you said to the faithful: 'Is it not enough that your Rabb who is Sustainer' will assist you, by Munziliyn 'Sending Down' Thalaathat

Alaafin '3,000' Al Malaaiikat 'Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi. Angels Can Come In Human Form)?

125 'Yes, That's Correct! If you will be patient and tremble at the mention of The Source, when they (the Meccans) come from their point; this is (when) your Rabb, who is 'Master' will assist you with 5,000 Malaaiikat 'Angelic Messengers', (Eloheem Anunnaqi) Musawwimiyn 'Charging At You Swiftly'.

126 And ALLAH did not make this promise, but good news to you all, and thereby your hearts might be at ease, (because of the promise of 5,000 Eloheem to help you in battle); and there is no aid, except from the possession of The Source, ALLAH who is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

127 That He may cut off, part of those who conceal what they know to be the facts, or He (He Not We) will humiliate them, so that they, (the Meccans), will retire with disappointment.

128 It is not for you, (Muhammad) to command anything; whether He (He Not We) will let them repent, or torment them. For surely, they, themselves are of the Zaalimuwn 'Unjust Ones.'

129 And for Him (Him Not Us), is all that is in Al Samaawaat 'The Skies', (Firmaments) and that which is in Al Ard 'The

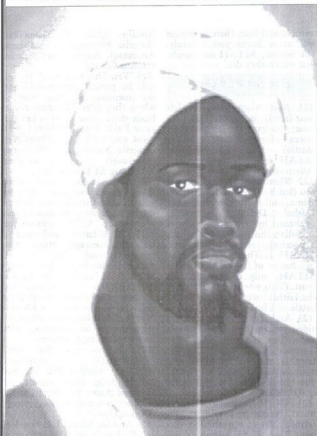


Figure 181
Abdullah Ibn Aabi Munafiq, The Hypocrite

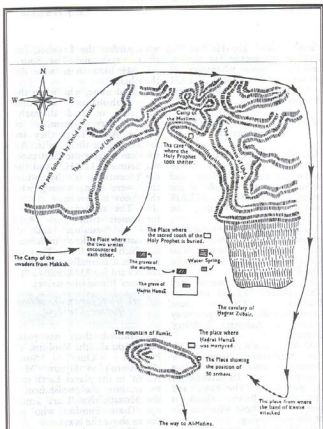


Diagram 46
The Battlefield Of Uhud

Planet Earth.' He (He Not We) forgives whomever He pleases, and He torments whomever He pleases; and The Source, ALLAH is Ghafuwrūn 'Forgiving', Most Rahiym 'Merciful'.

Don't Use Usury, As A Means To Succeed

130 O you who are faithful! Don't eat up the usury, try to make interest, doubling and redoubling; and tremble at the mention of The Source, ALLAH so that you all may be prosperous.

131 And tremble at the mention of the fire, which is prepared for Al Kaafiriyn 'Those Who Conceal What They Know To Be The Facts.'

132 And you all, are to obey The Source, ALLAH and the Rasuwl, 'One Sent' (Muhammad), so that you may receive a Rahmat 'Yielding' (mercy).

133 And you all, are to hurry to the forgiveness from your 'Sustainer', who is Rabb and to a Jannat 'Garden.' Its extension, is Al Samawaat 'The Skies' and the planet Earth, which is prepared for those who tremble at the mentioning.

134 Those who share willingly, out of that which has been given them; in ease when doing good, and in hardship; and those who restrain their anger, and those

who pardon the Enosites, (and their ways), and The Source, ALLAH likes those who does their best.

135 And those, who when they do Faahishatan 'Something Indecent', or lead themselves unjust, they remember the Source, ALLAH, so they seek forgiveness for their faults. And who can forgive the fault except the Source, ALLAH. And they don't continue in that which, they were doing wrong, when they know it's wrong.

136 The reward of such, is forgiveness from their Rabb, who is 'Sustainer' and the Jannatun 'Gardens'; underneath it, which rivers flow. They will reside in it eternally; and grace is the reward for Al 'Aamiliyn 'The Workers' (those who strive).

Don't Put Sunan, Traditions Before The Law

137 Indeed, there has passed before you all, (the Muslims, 'the Peaceful Ones') Sunan 'Traditions'; so Siyruw 'Move About' in the planet Earth so as to see, how the punishment of the Mukathibiyn 'Liars' (ended up. Those Enosites who put Sunan above the laws).

138 This is a clear explanation for Al Naas 'The Enosites', and a leading calmness, and a warning for those who tremble at the mentioning. (Don't put

Hadiyth, or Sunnah before the scriptures and tablets).

139 And don't become weak and don't be sad, for you all, are Al A'alawn 'The Winners', if you keep your faith, (the Rites of Abrawhawm).

140 If you all have been afflicted with a Qarhun 'Wound' (at the Battle Of Uhud); I, (A Eloheem, Anunnaqi), have also afflicted the kindred with wounds, just like it, and these days come upon (the Naas) in turns between each Enosite; so that all, will know those who are faithful to The Source, ALLAH and take from you all, Shuhadaa-a 'Those Who Watches And Determines His Death'; and The Source, ALLAH does not like those who are in a state of unjustness.

141 And that ALLAH may test those who are faithful, and the concealers of the facts will be destroyed.

142 Or did you think, that you will enter the Jannat 'Garden', which The Source, ALLAH has not yet known, those of you, who strive, and has not the patience?

143 And indeed, you were hoping for death, before you met it; so now you have, indeed seen death, while you were looking.

*Have Patience,
The Source Likes The
Patient Ones*

144 And Muhammad is nothing except a Rasuwl 'One Sent'. Indeed there were other Al Rasuwl 'Ones Who Were Sent' before him. So if he, (Muhammad) dies, or is killed, will you, (his followers), all turn your backs, and heels on his heels, (will you run without faith in ALLAH but rather had all their faith in Muhammad)? Whoever turns on his heels, will in no way be harming The Source, ALLAH in anything he does, and The Source, ALLAH will reward those who are grateful.

145 It is not for a spirit to die, except by ALLAH'S permission, in accordance with the text under fixed terms; and as for him, who wants the reward of this physical world, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), will give it to him, and We (Eloheem Anunnaqi) will reward those who are thankful.

146 And how many Nabiyy, 'Newsbearers,' Qaatala 'Killed' (fought battles accompanied) with many Rabbiyyuwna 'Rabbs 'Sustainers'; (Eloheem, Anunnaqis) and followers who never wavered when afflicted in the path of ALLAH, and they did not weaken, nor did they yield. And The Source, ALLAH likes the patient ones.

147 And they said: "Our Rabb, 'Master,' grant us forgiveness for our faults, and our

extravagances, that have made us (neglectful) in our affairs, and make firm our feet. (Make our faith firm), and aid us against the kindred who conceal what they know to be the facts.

148 So, the Source, ALLAH gave them the best reward of this physical world; (they will live good in this world), and the best reward, is in the End; and The Source, ALLAH loves those who does that which is best, (those who obey all the laws).

149 O you who are faithful; if you obey those who conceal the facts; (so-called Imaams, Rabbis, Reverends, Swamis, Monks, and Institutionalized Scholars), they will surely turn you all, on your heels; so that you shall turn into Khaasiriyn 'Losers.'

150 In fact, The Source, ALLAH is Your (Your Not Our) Protector, and He (He Not We) is The Best of Aiders.

151 We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), will throw Ru'ba 'Terror' into the hearts of those who conceal that which they know to be facts, for that which they Ashrukuw 'Associated Partners' with The Source, ALLAH; (like idols, as Muhammad, And Buddha). He (He Not We) didn't send down any authority, (none of the scriptures); and their abode will be the Fire, and worst, is the abode of the unjust ones.

Muslims Didn't Listen To Muhammad At The Battle Of Uhud

152 And indeed, The Source, ALLAH fulfilled for you all His (His Not Our) promise, that is when you cut them off, by His permission, up until the very moment your courage failed, and you all, started to dispute in the command that you had been ordered, and you disobeyed that which he, (Muhammad) had ordered, after he had shown you all, that which you like. (He said and taught things you liked). Some of you still want this physical life, (things of this world); and some of you, want the life of the End, (to return towards the Skies - The 'Firmaments'). Then He turns you away from them; just to test you all, and indeed He pardoned you all, and ALLAH is Gracious to the faithful ones.

153 Remember when you (Muslims), fled (the field of Uhud up the mountain), and did not wait for anyone, and (Muhammad), the Rasuwl 'One Sent' called you from the rear! Then He (He Not We) rewarded you another grief; instead of your grief, so that you all might not grieve at what had escaped you - (the loss of the war, and the pain of the spoils), nor at what befell you; and The Source, ALLAH is aware of what you

do. 154 Then He (He Not We) sent down to you all after the distress, security, (while you were in a deep sleep, a vision). A Nu'aasaan 'Sleepiness' overwhelms a group of you, and indeed the other group has to worry themselves; because they think things about ALLAH which are other than the facts (beyond a shadow of a doubt). They were thinking about the ignorant, (and paganistic things). They say: "Is it us, who control the order of anything?" Tell them, (Muhammad): "Surely, all the orders are for him." They hide in themselves, what they won't reveal to you. They say: "If we were in control of the command of things, we would not be killed here." Tell them: "Even if you were in Buwwtukum 'Your Homes', those who were written to be killed, would have gone forth to fight, and been killed, (on the spots marked for them); so that ALLAH might test you all, by way of that which is in your chests; so that He (He Not We) can purify what is in your hearts, and The Source, ALLAH knows all that which is in the chests.

155 Surely, those who fled away from you, on the day when the two gatherings met (at the Battle Of Uhud); it was none but the Al Shaytaan, 'The Evil One,'

(son of Shakhar and Mylitta); who Astazallahum 'Humiliated Them', on account of some of their own evil deeds which they earned; and indeed ALLAH has pardoned them. Surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Haliym 'Clement'.

156 O you who have faith, don't be as those who conceal what they know to be the facts, and then say about their Akhwaan 'Brothers', when they Darabuw 'Strike (Riding Forth To Fight)' in the planet Earth, or engage in invading: "Had they been here with us, they would not have died or been killed," so that ALLAH may make that, an intense regret in their hearts; and The Source, ALLAH Yuhyi 'Gives Life', And Yumiyyt 'Causes Death', and The Source, ALLAH sees all that you do.

157 And if you are killed in the path of The Source, ALLAH or die, verily you earn forgiveness from The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rahmatun 'Yielding' (mercy), is good (better) than all that they accumulate - (all of your deeds).

158 And if you die, or are killed, verily, towards The Source, ALLAH you all will be assembled.

159 So it is by that, which is from The Source, ALLAH that you, (Muhammad) are Linta 'Kindhearted' (gentle) to them;

and if you were Fazzan 'Mean', and Ghalithan 'Cruel' of heart, then they would have gone away from being around you. So pardon them, and seek forgiveness for them, and consult them in the affair. So if you have decided (in the affair), then put your trust in ALLAH. Surely, The Source, ALLAH likes those who put their trust (in Him).

160 If ALLAH Yansurukum 'Aids You All', so there will be no one who can conquer you all. And If He (He Not We) deserts you all, who else is there who can aid you after Him (Him Not Us)? And it is on The Source, ALLAH that the faithful ones should trust.

161 And no Nabyi 'Newsbearer' is to Yaghula 'Cheat', (take something from war booty); and whoever does cheat, (take something) will bring what he cheated, on the Day of Resurrection/Standing. Then every Nafsin 'Person' will be paid that which it (has) earned, and they will not be dealt with unjustly.

162 So then, there is he who follows the pleasures of The Source, ALLAH (the peaceful way of life), just like he who (turns his back to it and), earns ALLAH's anger; and his abode will be Hell, and it is an evil destiny.

163 They are of Darajaat

'(Density) Levels' in The Source, ALLAH'S possession; (many stages of Heaven, and Hell), and The Source, ALLAH can see all of that which they do.

164 Indeed, The Source, ALLAH favored the faithful ones, when He (He Not We) Ba'atha 'Raised Up' (back to life) in their midst A Rasuwl, 'One Sent,' (Muhammad), from Anfusihim 'Their Ownselves' (from Abrawhawm's seed, their own family) reciting to them His verses (of the scriptures, and tablets), and Yazqiyhim 'Purifying Them', and Yu'alimuhum 'Teaching Them', the scripture (the Qur'aan), and Al Hikmat 'The Wisdom' (Of Leummium), and surely before this, they were verily, in clear error.

The Faithful And The Hypocrites Are Identified By The Battle Of Uhud

165 And is it the same, as when you all were afflicted with affliction - (almost defeated at the Battle of Uhud), and indeed you had afflicted them, with twice as much; you said: "From where did this come?" Tell them, (Muhammad): "It is from you, yourselves; for surely The Source, ALLAH has Qadiyr 'Power' over all things.

166 And that which afflicted you on the day, when the two

gatherings met (at Uhud), so it was done by the Idhni 'Permission' of The Source, ALLAH and that He (He Not We) would know the faithful ones.

167 And also that He (He Not We) might know those who are Naafaquw 'Hypocrites'; and to whom it was said: "Come Qaataluw 'Kill', in the Sabiyl 'Path' of ALLAH ('Al Islaam,') or protect yourselves. They said: "If we knew how to kill, then we would follow you all" on that day; they were all nearer to concealing, what they knew to be the truth, than being of the faithful. They say with their own mouths things, that which are not in their hearts, and The Source, ALLAH knows that which they Yaktumawn 'Conceal (Hide)'.

168 Those who said of their Akhwaan 'Brothers', while they, themselves sat (at home): "If they had obeyed us, they would not have been killed." (Tell them Muhammad): "Then ward off death from yourselves, if you are to be truthful."

169 And don't account for those, who have been killed in the Sabiyl 'Path' of The Source, ALLAH as amongst the dead. In fact Ahyaa-u 'They Live' 'Inda 'In The Possession', (able to be seen) of their Rabb 'Sustainer,' Yarziqawn 'Being Provided For', (you will be living in

heaven).

170 They are happy by the things given to them (they will be given things), by The Source, ALLAH'S favor: and rejoicing for those who have not yet joined them from behind them; that no fear shall come on them, nor shall they be sad.

171 "They rejoice because of the grace, from The Source, ALLAH and His (His Not Our) preference, and surely The Source does not waste the rewards of the faithful ones."

Uhud A Loss

172 As for those who responded to Him (Him Not Us), and Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad) after the wound afflicted them, (the loss at the Battle Of Uhud); for those who did that which is best amongst them and trembled at the mentioning, they have a 'Aziym 'Supreme' reward.

173 Those to whom the Enosites, (the hypocrites), said to them: "Surely, the Naas 'Enosites' have indeed gathered against you, so fear them; but it only increased their faith, and they, (the Muslims) said: "Sufficient for us, is The Source, ALLAH and He (He Not We) is Al Wakiyl 'The Advocate'."

174 So they returned, by grace from ALLAH, and (His) favor. Affliction and evil did not touch

them, and they followed ALLAH'S (good) pleasure, and The Source, ALLAH has a 'Aziym 'Supreme' preference.

175 Surely, it is only Shaytaan (Haylal, Nakhash, the Evil One, the Reptilian), who instills fear into his Awliyaa-a 'Near Friends'; (Negroid, Canaanite, And Mongoloid Devils, Etc.); so don't fear them and fear Me (Me Not Us), if you are Mu'miniyn 'Faithful'.

176 And (Muhammad), don't become sad, because of those (Desert Arabs), who hasten toward concealing what they know to be the facts, (the Qur'aan). Surely, they will not harm The Source, ALLAH in anyway. ALLAH does not want to make for them a portion in the End, (Paradise); and for them is a 'Aziym 'Supreme' pain. (The Desert Arabs are not going to return towards the Skies.)

177 Surely, those who buy things, that conceal the facts by way of faith, (the price of their faith) will not do The Source, ALLAH any harm, and for them, is an aching pain.

178 And don't let those who conceal what they know to be the facts, think that because We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) have replenished, and have given them Namliyy 'An Extension Of Time'; that is best for them -(the Reptilian, the Evil One was given an extension of

time). We, (Eloheem, Anunnaqi) replenished, and gave them an extension of time, so that they may increase in Ithmaan 'Guilty Actions', and for them, will be a despicable pain.

179 The Source, ALLAH will not leave the faithful of you as you are now; until He (He Not We) separated Al Khabiytha 'The Wicked (the Evil Ones, of the Reptilian's seed) from Al Tayyib 'The Agreeable' - (Eve's Nekaybaw's Seed); and The Source, ALLAH will not acquaint you, (Eve's seed), Alaa 'Upon' Al Ghayb 'The Unseen'; (the Spiritual World, and things to come); but The Source, ALLAH Yajtabiy 'Chooses' Min 'From' Rusuwlihi 'His Ones Sent', whom He (He Not We) pleases. So have faith by way of The Source, ALLAH and Rusuwlihi 'His Ones Sent'; and if you have faith, and tremble at the mention, there is a supreme reward for you all.

180 And don't let those, who are avaricious with the things, that were given to them, by The Source, ALLAH out of His (His Not Our) Preference, (think that) He is good for them; but rather, it is disagreeable for them. They will be twisted up in it, because they were avarice about it, on the Day of Al Qiyaam 'Resurrection/ Standing'; and Lil-Lah 'For Him', is The Miyraath

'Inheritance' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth,' and The Source, is well informed of what you do.

181 Indeed, The Source, ALLAH has heard the saying of those who said: "Surely, ALLAH is Faqiyrun 'Poor', and we are rich." (This verse was sent down when some concealers of the facts said: "Why do we have to give money to The Source?") We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) will write what they say, and their killing of Al Anbiyaa-a 'The Newsbearers' without being right, and We will say: "Taste the pain of Burning."

182 That is for what you presented by your own hands, and surely, The Source, ALLAH does not deal unjustly and wrongly to the slaves.

183 Those who said: Surely, ALLAH, The Source made a 'Ahd 'Covenant' towards us, should not we have faith for the one sent until he brings us by way of a Qurbaan 'Sacrifice', the fire consumes it. Say: Certainly Ones Sent have come to you all from before me by way of clear evidences (other scriptures) and by all that which you said, so why have you still killed them if you are Sadiqeen/Zodoqites 'Trustful'.

184 So surely, if they deny you, so indeed they denied Rusuwlin 'Ones Sent' from before you,

(Muhammad), who came with clear evidences, and Al Zubur 'The Psalms' (Of Dawiyd), and Al Kitaab 'The Scripture' Of Al Muniyr 'Enlightment' (Holy Tablets).

185 Every Nafsin 'Person' will taste death, and you will only be paid your reward in full on the Day of Resurrection/Standing. So as for him who is removed from the Fire, and enters the Jannat 'Garden,' so certainly, he has Faaza 'Achieved', and what is the physical world, except a temporary provision of deceit.

186 You will surely be tested in your wealth, and yourselves; and you will hear from those who were given, the scripture - (like the tribe of Israel, Jacob) before you; and from those who associate partners (the so - called Moslems, Christians, and Jews), are a lot of bad treatments; and if you are patient, and tremble at the mention, then surely, that will determine all the orders, (if you are to go to the Skies 'Illyuwn' or not).

187 O (Muhammad, remember) when The Source, ALLAH took a Miythaaq 'Fulfillment Of A Promise', of those who had been given the scripture, (the Jacobites/ Israelites); you are to make it clear to the enosites, and don't conceal it (keep it back). So they threw (the scripture) behind their backs - (kept it for themselves), and they buy by it,

for a small price (to keep authority). So this is evil, in that which they buy; (they use it to gain wealth).

188 Don't think that (those Israelites) who rejoice for what they were given, and like to be showed gratitude, (The Rabbis - the Masters,) for what they did not even do; don't think, they will escape from the pain. And for them is an aching pain.

189 And Lil-Lahi 'For Him' is the Mulk 'Rulership' of Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard, Tiamat 'Earth,' and The Source, ALLAH has the Qadiyr 'Power' over all things.

190 Surely, in the Khalq, 'Creation' of Al Samaawaat 'The Skies', and 'Earth' (Tiamat) and between the difference of the Shadow Hour, and the daytime; verily there are signs, for uwliy 'those first ones', (who passes through) Al Albaab 'The Door' (Of The Ancient Mystic Order Of Zodoq).

191 Those who remember The Source, ALLAH Qiyaam 'Standing,' and Qu'ood, 'Squatting' and on their side when ill, and they meditate on the Khalq, 'Creation' of Al Samaawaat 'The Skies', and the planet Earth saying: "Our Rabb, you did not create anything, in falsehood, and in vain. Glory be to You (You Not Us); so keep us, from the pain of the Fire.

192 Our Rabb 'Master', surely

You (You Not Us) are, who causes any to enter the Fire, and certainly you disgraced him, and Zaalimiyn 'Those Who Do Wrong, Unjust,' will not have any Ansaarin 'Aiders' (Ansarullah).

193 Our Rabb 'Master', surely we heard a caller, (Bilaal Bin Rabah), calling the faithful, to have Faith in your Rabb

(ELYOWN ELYOWN EL Is The Most Magnificent Of All Things Seen And Unseen, I Bear Witness That Nothing Would Exist If ELYOWN ELYOWN EL Didn't Create It. I Bear Witness That Ahmad Is Sent From ELYOWN ELYOWN EL. Come Because Eternal Life Is In Worship. Come And You Shall Succeed. Indeed It Is Time To Raise Up For Worship. Indeed It Is Time To Raise Up For Worship. ELYOWN ELYOWN EL Is The Most Magnificent Of All Things Seen And Unseen. Nothing Would Exist If ELYOWN ELYOWN EL Didn't Create It) so we all did have faith. Our Rabb, forgive us for Dhunuwbanaa 'Our Faults', and do away with Sayyi-aatinaa 'Our Evils', and Tawallanaa 'Receive Our Souls', with Al Abraar 'The Righteous Ones', (the men of prophecy).

194 Our Rabb give us, that which You (You Not We) have promised us, through the ones You have sent, by way of their

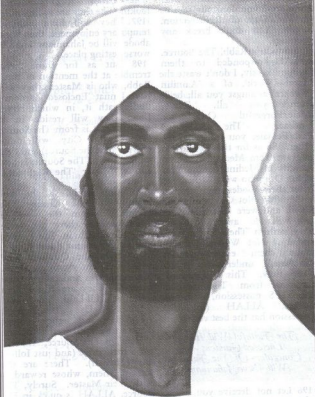


Figure 182
Bilal Bin Rabah

scriptures (all the holy scriptures), and don't disgrace us on the Day of Resurrection. Surely, You don't break any promises.

195 So their Rabb, The Source, ALLAH responded to them saying: "Surely, I don't waste the 'Amal 'Work', of a 'Aamilin 'Worker' amongst you all; be it from you all, Zakar, 'Male/Forgetful One' or Unthaa, 'The Second Part/Female'; you are from each other. So as for those (who did migrate from Mecca, to go to the city of Medina In The Year 622 A.D.); who were turned out from their abodes, and suffered in My (My Not Our) path, and killed, and were killed; I (I not us) will do away with all Sayyiaatihim 'Their Evil Deeds', and I (I Not We) will surely, make them enter Jannaat 'Gardens,' underneath which rivers flow. This is a reward, that is from The Source, ALLAH'S possession, and The Source, ALLAH (in) his possession has the best reward.

*The Faithful Will Have
Enclosed Gardens -
Concealers Of The Facts
Will Have Jahannam*

196 Let not deceive you, those who conceal what they know to be the facts, Tuqallubu 'Going To, And From', in Al Bilaad

'The Lands' (big countries, looking like they are successful).

197 They will have a little, temporary enjoyment, then their abode will be Jahannam 'Hell', a worse resting place.

198 But as for those, who tremble at the mention of their Rabb, who is Master; they will have Jannat 'Enclosed Gardens', underneath it, in which rivers flow; they will reside in it eternally. It is from The Source (the Crystal City, will come down from The Source) and that which is with The Source, is best for Al Abraar 'The Righteous' (pious ones).

199 And surely, of the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture' (from the seed of Abrawhawm), there are some who have faith in The Source; and what was sent down to you, (Muslims - the Qur'aan), and what was sent down to them, (the scriptures and tablets from before). They are Khaashi'iyn 'Humble' Lil-Lahi 'For Him' (Him Not Us - The Source, ALLAH) and they don't Yashtarawn 'Buy' the Aayaat 'Verses' of The Source, ALLAH for a little price (and just follow any Hadiyth). These are the ones of them, whose reward is with their Master. Surely, The Source, ALLAH is quick in His (His Not Our) reckonings.

200 O you who are of the faithful, be patient, and

Raabituw 'Tie' (in patience), and be firm, and tremble at the mention of The Source, ALLAH that you may be Taflahuwn 'Prosperous'.

Sudliqa Allahu El Aslm

Chapter Ninety

Revealed in The Year 628-629 A.D.

Al Ahzaab

(The Parties)

Original Order Chapter 90;

Wrong Order Chapter 33

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Muhammad Is Told, Not To Obey The Concealers Of The Facts' - Allah Is Sufficient As An Advocate - Allah Did Not Make Your Wives, Whom You Divorce Openly, Your Mothers; And He Made Your Adopted Sons, Your Sons, That Is Your Sayings, 'Words' - Muhammad Is A Closer Friend Of The Faithful, And His Mates Are Compared To Your Mothers

90 O you, (Muhammad), the Nabiyy, 'Newsbearer,' you are to tremble at the mentioning of The Source, ALLAH and don't obey the Kaafiriyn, 'Concealers

Of The Fact' and the Munaafiqiyn 'Hypocrites.' Surely, The Source, ALLAH is 'Aleeman, 'Knowing,' Hakiym, 'Wise.'

2) And follow that which is Yuhaay, 'inspired' to you, from your Sustainer, 'Rabb'; surely, The Source, ALLAH is aware of all that which you do.

3) And you, (Muhammad) is to Tawakil, 'Entrust' upon The Source, ALLAH, and ALLAH is Sufficient as a Wakiylaan 'Advocate'.

4) And The Source, ALLAH did not make for any Rajulin 'Mortal Men', to have Qalbayn 'Two Hearts', in Jawfihi 'His Interior'; and he did not make Azwaajakum 'Your Wives', whom amongst them, you divorce openly, Ummahaatikum 'Your Mothers'; and he made Ad'iyaa-akum 'Your Adopted Sons', Abnaa-akum 'Your Sons'. That is your sayings, (words) from your own mouths, and The Source, ALLAH tells the facts, and the path, which He leads into calmness.

5) Call upon them by the names of their fathers, it is more just, in the possession of The Source, ALLAH; so if you do not know the names of their fathers, so they are your brothers in the Diyn, 'Means Of Judgment,' and your Mawaal 'Rulers,' It is not a Junaah, 'Crime' upon you all, in that which you wronged in; but

that which your hearts intended, and The Source, ALLAH is Ghafuwr, 'Forgiving,' Rahiym, 'Most Merciful.'

6) The newsbearer, (Muhammad) is a closer friend to the Mu'miniyn, 'Faithful Ones' than they are to themselves; and his Azwaaj, 'Mates,' than their own mothers - (his followers were to look upon his mates as their mothers and not to marry them after his death); and in Al Kitaab 'The Scripture,' those of the same Arham, 'Wombs,' (kinship) have more rights to one another, than to the faithful and the Immigrants - (those who fled from Mecca in the year 622 A.D. with Ahmad to Medina); except that you should do kindness to your good friends, that has been recorded in the Kitaab, 'Scripture', Mastuwrān, 'That Has Been Written.'

*Stronger Covenants Made With
Noach, Abrawhawm, Mosheh,
Tammuz, Than That Of
Ahmad's - Aching Pain For
The Kaafiriyn - Allah Will Ask
The Sodoqites About Their
Trust*

7) And if We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) took from the newsbearers their Miythaaq 'Fulfillment Of A Promise,' (and made promises with them) and with you, (Ahmad) and from Noach, and Abrawhawm, and

Mosheh and Yashu'a/Isa Son Of Miriam, and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) took a Miythaaq Galiyzaan, 'Firm Fulfillment Of A Promise' with them.

8) That He (He Not We) will ask the Saadiqiyn (Zodoqites) about their trust and He, has prepared an aching pain for the Kaafiriyn, 'Concealers Of That Which They Know To Be The Facts.'

*O Faithful Ones, You Are To
Remember The Grace Of The
Source - The Faithful Are
Tested By A Zileaal - A
Party From Yathrib/Medina
Tells Them, To Retreat And
Get Permission From Nabiyy
Ahmad - Muhammad Tells
Them, Who Can Screen You,
If Allah Wants Evil Or Good
For You? - Allah Knows
Those Who Hold Back From
Their Men?*

9) O you who have faith! You all are to remember the Ni'mah 'Grace' of The Source, ALLAH upon you all, when the Junuwd, 'Armies' came upon you all, so We (We Not He) sent a Reehan, 'Wind' (Craft) upon them, that which you didn't see, and The Source, ALLAH is a Basiyr, 'Seer' in all that which you do.

10) And when they come upon you from above and below you all, and when the sights has

become dim, and the hearts has Balagha 'Gaped' up to the Hanaajir 'Windpipe' and you think vain thoughts about The Source, ALLAH.

11) At this, the Mu'miniyn, 'Faithful Ones' were tested and the Zilzaal 'Earthquake,' was quaking mightily.

12) And when Al Munaafiqun, 'The Hypocrites,' and those who have a Mardan, 'Disease' in their Quluwb, 'Hearts,' said: "The Source, ALLAH and his Rasuwl, 'One Sent' has not promise us nothing, except Al Aghruwrān 'A Deceivment'."

13) And when a Taa'ifah 'Part', from amongst them say: "O family of Yathrib, (which is now called Medina), you can not stand the attack, so return, (retreat) and get permission from the Nabiyy 'Newsbearer' (Ahmad), for a portion from amongst them, saying: "Surely our Buyuwt, 'Houses' are Awratun, 'Bare' and they are not bare, except that they wanted to use it as a place for Afiraar 'Fleeing.'"

14) And if an entry entered upon them from its Aqtaar, 'Sides,' then they ask about the Fitnah 'Test;' "Verily will it come to it, (the city?)" And they kept on Talbathuw 'Delaying' it with ease.

15) And indeed they had made a Ahd 'Covenant' with The

Source, ALLAH from before, and didn't Yuwalluna 'Turn' their backs on Him, and a 'Ahd 'Covenant' with ALLAH is Mas'uwlān 'One To Be Asked About.'

16) Tell them this, (Muhammad): "Surely the fleeing away will not benefit you, if you all flee from death and the killing, then you will not Tumata'auwna 'Enjoy Yourselves', except for a Qaliyl 'Little While'."

17) Tell them this, (Ahmad): "Who is he who can Ya'simukum, 'Defend You All' from The Source, ALLAH, if he wanted Suwa'an, 'Evil' for you all or if he wanted a Rahmat 'Yielding Mercy' for you all? And you will not find a Waleeyan 'Near Friend,' and neither an Nasiyrān, 'Aider' for them from besides ALLAH."

18) Certainly, The Source, ALLAH knows Al Mu'awwiquyn, 'Those Who Hold Back' from you all (their Enosites) and Al Qaa'iliyn, 'Those Who Say' to their Akhwaan 'Brothers': "Come to us"; and they will not come to the Baas 'Misery,' except for a little while.

19) Ashihha, 'Avaricious' against you all, so when the Khawfa, 'Fear' comes; you see, they are looking at you, turning their eyes as he who Yagshaa 'Covers' the one who has passed

on - (the Eloheem of death, Enqi); so when the fear goes away, and the tongues will Laquwkum, 'Smite You' Hedaad 'Sharply.' They are avaricious for the goods. These are those who don't have faith; so The Source causes their deeds to Habata 'Be In Vain,' and that was upon The Source, ALLAH with such Yasiyr 'Ease.'

*They Wish That The Parties
Didn't Leave - Surely The
Best And Most Excellent
Example For You All, Is
Found In The Rasuwl - Allah
Will Reward The Zodoqites -
The Source Is Qawwiy - The
Source Has Taken The
Family Of The Book Down
From Their Strongholds*

20) They would wish that Al Ahzaab 'The Parties Of Enosites', didn't leave, and when Al Ahzaab 'The Parties Of Enosites' come back, they would have compassion, that they are Baaduwn 'Bedouins - Camel Raisers' in A'araab, 'The Deserts' asking Anbaaa, 'News' about you; and if they were amongst you all, they will not Qaatiluw, 'Kill' you, except for a few of them.

21) And surely Hasana, 'The Best' Aswa 'Example' for all of you, was found in the Rasuwl, 'One Sent' of The Source, ALLAH - (Muhammad), for him

whose hopes are in The Source, ALLAH and the Last Day and remembers The Source, ALLAH Katheer 'Much.'

22) And when the Muwminuwn 'Faithful Ones' saw Al Ahzaab 'The Parties Of Enosites', they said: "This is that which The Source, ALLAH and his Rasuwl has promised us and ALLAH and His (His Not Our) One Sent, (Muhammad) has Sadaqa, '(Spoken) Truthfully'; and this only Zaadahum 'Increased Their' Imaan 'Faith', and their Tasliym 'Surrendering In Peace.'

23) And from amongst the Muwminuwn, 'Faithful Ones', there are Riijaalun, 'Mortal Men,' who were truthful, on that which they had covenanted with The Source, ALLAH; and from amongst them who Qadaa, 'Decreed' their Nahba, 'Pledge' and from amongst them who wait, and they don't change,

24) That The Source, ALLAH may reward the Saadiqiyn/Zodoqites 'The Truthful Ones' by their truthfulness; and He (He Not We) causes the Munafiqiyn, 'Hypocrites' to have pain, if He (He Not We) pleases, or He accepts repentance from them; surely The Source, ALLAH is Ghafuwr, 'Forgiving,' Rahiym, 'Most Merciful.'

25) And The Source, ALLAH has turned back those who conceal that which they know to

be the facts, about their anger, and they didn't Yanaaluw, 'Receive' goodness, and ALLAH is Kafaa, 'Sufficient' for the Muwminiyn, 'Faithful Ones' in their killing; and The Source, ALLAH is Qawwiyy, 'Strong', 'Aziyy, 'Mighty'.

26) And those of the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Book' - (the Torah, of the Eloheem Moshch), who helps them to conquer; The Source, ALLAH has taken them down from their Saayasiyy 'Defensive Work,' and Qadhafa 'Casted' Ru'aba, 'Terror' into their Quluwb, 'Hearts.' You killed a Fariqaan, 'Portion' of them, and you made a portion of them Ta'siruwn, 'Prisoners'.

27) And Awrathakum, 'He (He Not We) Has Caused You All To Inherit,' their (part of the) earth, and their Diyaar, 'Abodes' and Amwalihim, 'Their Wealth' and Ard 'Earth,' which you have not come into contact with, and The Source, ALLAH is Qadiyr, 'Powerful' over all things.

*Muhammad Tells His Mates,
If They Want The World's
Adornment, He Will Release
Them' - The Source Will
Double The Pain Of His Mates
If One Of Them Brings About
An Evil, Abominable Deed -
Muhammad's Women Are Not
The Same As Other Women -
Faithful Mates Are For*

*Faithful Females - What The
Source And His Rasuwl
Orders, Is The Best Choice*

28) O you newsbearer, (Muhammad), tell your Azwaaaj, 'Mates': "If you all want for the life of the Dunyaa, 'Physical World,' and its Zeenah, 'Adornment,' so you all are to come; and I, (Ahmad) will provide you all and I will Sariyh 'Set You Free' (Divorce) you with a Jamiyl 'Beautiful' releasing.

29) And if you all, (females) want The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Ahmad), and the Daar 'Abode' of Al Akhira, 'The End;' so surely The Source, ALLAH has prepared a Aziym 'Supreme' Ajran, 'Reward' for those Muhsinaat, 'Women Who Are Best.'

30) O Nisaa' 'Women' of the newsbearer (Muhammad! Khadiyyah, Sauda, Ayisha, Hafsa, Zaynab Bint Khuzaymah, Umm Salmaa, Zaynab Bint Jahsh, Juwariya, Rayhanna, Maryam Qibtiyya, Umm Habiba, Safiya, Maymuna), whomever from amongst you come, with a Mubiyn, 'Clear' Fahasha '(Evil And) Abominable Deed', so He, (The Source) has Da'afa, 'Weakened' the pain for her as a Da'iyfan 'Double;' and that was Yasiyr, 'Easy' upon The Source, ALLAH.

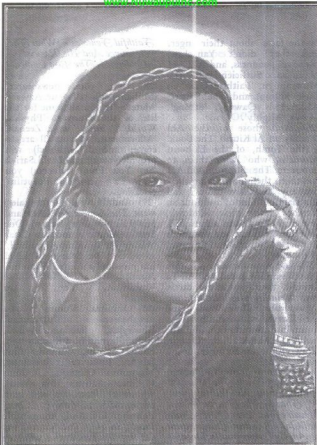


Figure 183
Khadijah Bint Khuwaylid, Wife Of Muhammad

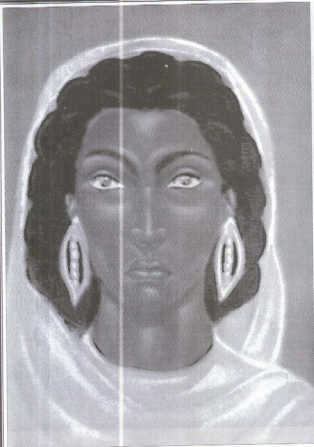


Figure 184
Suda, Wife Of Muhammad

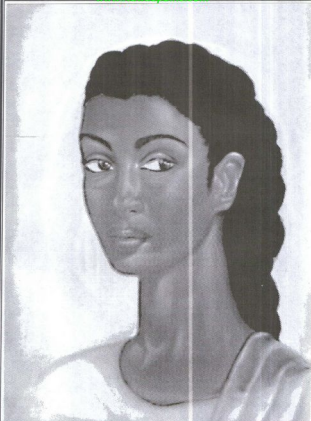


Figure 185
Zaynab Bint Khuzaymah, Wife Of Muhammad

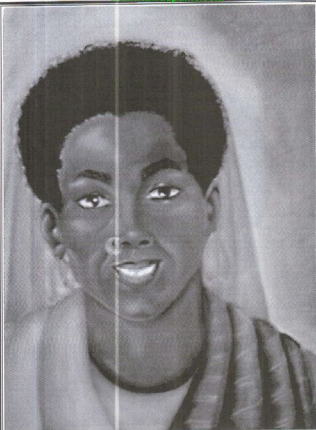


Figure 186

Umm Salmaa, Wife Of Muhammad

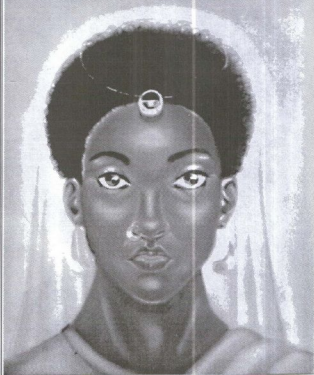


Figure 187
Zaynab Bint Jahsh, Wife Of Muhammad

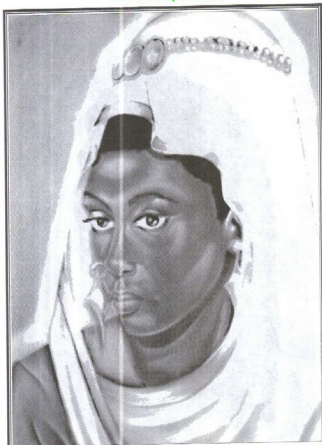


Figure 188
Juwariya (Juwairiyah) - Daughter Of The Chief Of Bence Al
Mustaliq , Wife Of Muhammad

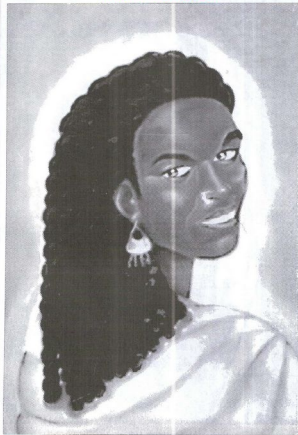


Figure 189
Rayhanna - A So-Called Jew, Wife Of Muhammad

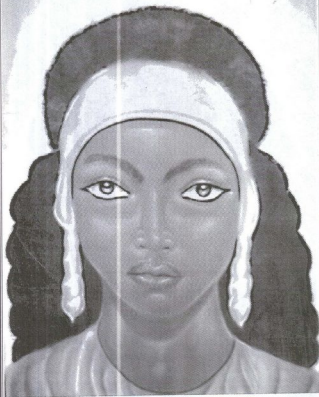


Figure 190
Maryam Qibtiyya (A Mizraimite), Wife Of Muhammad

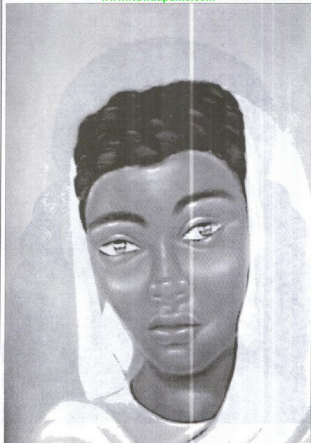


Figure 191
Umm Habiba Bint Abu Sufyaan, Wife Of Muhammad

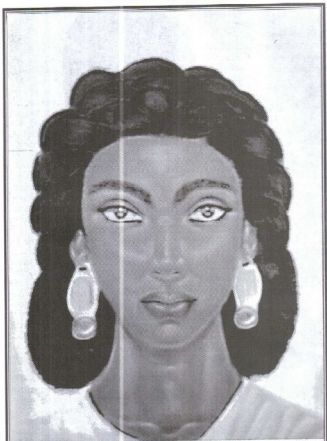


Figure 192
Safiya, Wife Of Muhammad

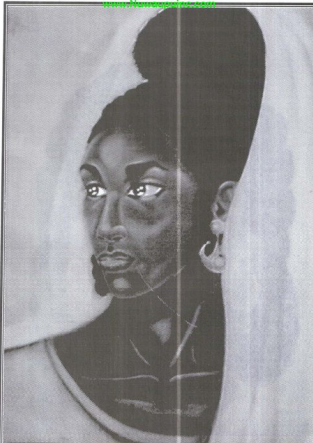


Figure 193
Maymuna Al 'Abbas, Wife Of Muhammad

31) And whoever from amongst you all, is Qanata 'Devout' for Him, (The Source) and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent' and tries to work for Saaliha 'Perfection,' she will be given her reward twice; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) has prepared for her a Kariym 'Generous' Rizq 'Provision.'

32) O Nisaa-a 'Women' of the Nabiyy 'Newsbearer'; you all are not the same as the other Nisaa 'Women;' if you Ataqa 'Tremble And Fear', so don't be Khada'a, 'Humble And Low' with the saying (for him), in whose heart is a Mardan, 'Disease,' (he) has his desires; always speak of that which you know is known, (right).

33) And you all are to stay in your Buyuwt, 'Houses,' and don't Tabarraaj, 'Adorn,' yourselves as those who adorn, themselves, to the Jaahiliya, 'Those In A State Of Ignorance' and stand up for Al Salaat, 'The Salutation As Worship' and give the Zakawt, 'Charity' and Ati'uw, 'Obey' The Source, ALLAH and his Rasuwl, (Muhammad). Surely, ALLAH only wants to keep you away from Rajasa, 'Committing Shameful Acts'. O Ahl Al Bayt, 'Family Of The House,' (of Muhammad), that He (He Not We) may Tahara, 'Purify' you all with a thorough purification.

34) And you all are to Zakkar,

'Remember' that which was Yutlaa, 'Recited' in your houses, from the Ayaat 'Verses' of The Source, ALLAH, and Al Hikmah, 'The Wisdom.' Surely, The Source, ALLAH is Latiyf, 'Subtle,' Khabiyr 'Aware.'

35) Surely, the Muslimiyn, 'Male Peaceful Ones', (Muslims) and the Muslimaata 'Female Peaceful Ones'; and the Muw'miniyn 'Faithful Males' and the Muw'minaat 'Female Faithful Ones,' and the Qaanitiyn 'Male Obedient Ones' and the Qaanitaat, 'Female Obedient Ones,' and the Saadiqeen 'Male Truthful Ones' and the Saadiqaat, 'Female Truthful Ones' and The Saabiriyn 'Patient Males' and the Saabiraat 'Female Patient Ones,' and the Khaashi'iyn 'Male Humble Ones' and the Khaashi'aat 'Female Humble Ones,' and the Mutasaddiqiyn 'Male Truthful Ones' and the Mutasaddiqaat 'Female Truthful Ones,' and the Saa'imiyn, 'Males Who Fast' and the Saa'imaat 'Female Who Fast' and Al Haafizuwn 'Those Males Who Guard' their private parts and the Haafizaat, 'Females Who Guard' their private parts, and the Dhaakiriyn, 'Male Forgetful Ones' who remember The Source, ALLAH a lot and the Dhaakiraat, 'Female Forgetful Ones'; and The Source, ALLAH has prepared a forgiveness and a

'Aziym 'Supreme' reward for them.

36) And it was not for the Muw'min, 'Faithful Male; and no Muw'minat, 'Faithful Female' when The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent, Qadaa, 'Decrees,' A Amr 'Command' that they have the best choice in their affair; and whoever disobeys The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', indeed he strays into a clear state of error.

*Zayd Ordered To Keep His
Mate, Zaynab - Eloheem
Divorce Her From Him, And
Gives Her To Muhammad -
Muhammad Is Not The Father
Of Any Of Your Mortal Men,
He Is Rasuwl Allah - O
Faithful Ones, You Are To
Remember Allah A Whole Lot
- He Sends Salutations Upon
You All And His Messengers -
Muhammad Don't Obey The
Kaafiriyn And The
Munaafiqiyn*

37) And when you, (Muhammad) did say on him, (Zayd Muhammad's adopted son) whom The Source, ALLAH has bestowed His (His Not Our) grace and unto whom you have shown grace: "Keep your mate, (Zaynab) to yourself and tremble at the mention of The Source, ALLAH", but you did hide in

yourself that which, ALLAH would Bada'a, 'Bring To Light,' (clear evidence) and you did justify, the Naas/Enosites and The Source, ALLAH has a greater right that you should dread Him. So when Zayd has concluded his concern with her, (Zaynab, and divorced her), We, ([We Not He] Anunnagi), Zawajnaakahaa 'Joined Her (In Wedlock) As Your Mate', so that there should not be a difficulty, for the ones who have faith concerning the Azwaaaj, 'Mates' of Ad'iyaa-ihim, 'Their Adopted Sons.' When they have concluded their concerns with them, (have divorced them); and the command of The Source, ALLAH shall be done (carried out).

38) There has not been a Haraj, 'Difficulty' upon the newsbearer, (Ahmad) in that which The Source, ALLAH has made His (His Not Our) Sunnat, 'Tradition,' Farada, 'Obligatory' upon him, in that which has Khaluw, 'Passed' from before, and The Source, ALLAH is Powerful, (Able) in His (His Not Our) affair.

39) Those who Yablagh, 'Propagate (The Facts' of) the Risaalaat 'Messages' of The Source, ALLAH and they Khashaa, 'Dread' Him and they don't dread anyone besides The Source, ALLAH, and The Source, ALLAH is Kafaa,



Figure 194
Zayd, Muhammad's Adopted Son

'Sufficient' as a Hasiyban, 'Reckoner.'

40) Muhammad, was not any of you Mortal man's Abaa 'Father', but (he is) Rasuwl 'One Sent' of ALLAH, and is the Khaatim, 'Seal' of the Nabiiyyin, 'Newsbearers'; and He, The Source, ALLAH is the Knower in all things."

41) O you who are Amanuw, 'Faithful,' you are to Azkuwr, 'Remember' The Source, ALLAH with much remembrance.

42) And you all are to Sabbih 'Glorify' Him, in the Bukrah 'Early Daytime Hour' and the Aseelaa, 'On Through The Shadow Hour Period (Salaat Al 'Ishaa).

43) It is He (He Not We) who Yusalliyyu 'Sends Salutations' upon you all and His (His Not Our) Malaa'ikat, 'Messengers' (Eloheem, Anunnaqi) to bring you all from the state of Zulumaat 'Unjustness' (Spiritual Darkness) to the Nuwr, 'Light' and He (He Not We - The Source), is Rahiyyman, 'Yielding' to the Faithful Ones.

44) Their Tahiiyya, 'Salutations' on the day, is Salaam 'Peace'; they will Laqaa, 'Meet' Him (Him Not Us, ALLAH); and He (He Not We) has prepared a Kariym, 'Generous' Ajran, 'Reward' for them.

45) O Al Nabiiyy, (Ahmad), surely We (We Not He) have

Rasala, 'Sent' you as a Shaahidan, 'Watcher' and a Mubash-shir, 'One Who Brings Good News' and a Naziyr, 'A Warner.'

46) And one who calls to The Source, ALLAH, by way of His (His Not Our) Adhan, 'Permission' and a bright Siraaaj, 'Lamp.'

47) And you are to Bashara, 'Give Good News' to the Faithful Ones, that they will have a Kabeer, 'Big' Fadlan, 'Preference' from The Source, ALLAH.

48) And you (Ahmad), are not to obey the Kaafiriyyn, 'The Concealers Of The Fact,' and the Munaafiqiyyn, 'The Hypocrites' and turn away from their harms, and Tawakkal, 'Entrust' upon The Source, ALLAH and The Source, ALLAH is Kafaa, 'Sufficient' as a Wakiyl, 'Advocate.'

There Is No 'iddah, If You Marry A Female Faithful One, And Haven't Touch Her Sexually - It Is Alright For Muhammad To Marry His Aam, Khaal, Aamat, And Khaalat's Daughters - Don't Exchange Women For Other Mates

49) O you who have faith, when you have Nakaha, 'Married' the Muw'minaat, 'Female Faithful Ones,' then you Talaqtumuww,

'Divorced' Them from before touching them (sexually), there is not an Iddah 'Number Of Days Set For The Divorce,' that you calculate; so let them enjoy themselves, and release, (divorce) them as a beautiful releasing.

50) O Nabiyyu 'Newsbearer' (Muhammad), surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made mates Halaal, 'Lawful' for you, whom you have given their Ujuwr 'Dowries;' and the right hand possessions (women who are under your care), whom you support, that were taken in battle, or divorced, from those whom The Source, ALLAH has brought you, (Ahmad) of your 'Amm 'Your Father's Brothers/Uncles' daughters, and the 'Ammat Daughters Of Your Fathers Sister/Aunt' and the daughter of your other Uncle, 'Khaal, 'Your Mother's Brother' and the daughters of the other Aunt, Khaalat 'Your Mother's Sister,' who emigrated with you, from (Mecca to Madiyna, in the year 622 A.D.) and all the faithful women, if she (wishes) to give herself to the Nabiyy (Muhammad); if he, the newsbearer (Ahmad) wants to marry her, it is Khalasa, 'Proper' for you, from besides the Faithful Ones. Surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) know that which of their mates, We (Eloheem Anunnaqi) made

Farad, 'Obligatory' to them, and that which their right hand possesses. So there is no Haraj, 'Difficulty' upon you, (Muhammad), and The Source, ALLAH is Ghafuwr, 'Forgiving,' Rahiym, 'Most Merciful'.

51) You can return whomever, you please from amongst them, (the women) and receive whomever you please; and if you seek whom you have set aside, there is no Junaah, 'Crime,' upon you; that is nearer for their eyes to be delighted, (gladdened) and don't Hazan, 'Grieve' and they are well pleased of that which they were given all of them, and The Source, ALLAH knows that which is in your hearts, and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing,' Haliymun 'Clement.'

52) And it is not Halaal, 'Lawful' for you to take women from after that, and not Badala, 'Exchange' them with other Azwaaj 'Mates'; eventhough, their beauty may 'Ajaba 'Amaze' you; except if they are women whom your right hand possesses; and The Source, ALLAH is Raqiyb 'Observing' over all things.

*O Faithful Ones, Don't Enter
The House Of Ahmad - There
Is No Crime Concerning
Muhammad's Mates
Appearance Before Their*

*Relatives - Allah And His
Messengers Send Salutations
On Al-Nabiyy - Those Who
Harm Allah And His Rasuwl,
Will Be Physically Cursed*

53) O you who are faithful, don't enter into the houses of the newsbearer, (Ahmad) except if he gives Adhan 'Permission' to you all, for the Ta'am, 'Food,' without Naadhiriyn, 'Onlookers' at its preparation; and if you are called upon, so enter, and then you can eat, then Nashara, 'Spread About;' and don't Mus'tanisiyn, 'Seek To Forget' the Hadiyth 'Tales.' Surely, that can make Al-Nabiyya 'The Newsbearer' (Ahmad), Yastahiy 'Ashamed' of you all; and The Source, ALLAH is not ashamed of the Haqq 'Fact,' and if you ask them, (his mates) for Mataa'an, 'Goods,' so ask them from behind A-Hijaab, 'Screen,' that is purer for your hearts and their hearts; and it is not for you to Tuthuw, 'Harm' the Rasuwl of The Source, ALLAH; and don't you ever marry Azwaajahu 'His Mates' from after him. Surely, that is a 'Aziym, 'Supreme,' in the possession of The Source, ALLAH.

54) If you all Tubduw 'Manifest' a thing, or Takhfiy, 'Hide' it, so surely, The Source, ALLAH is 'Aliym, 'Knowing' of everything.

55) There is no Junaah 'Crime'

upon them, (Muhammad's mates concerning their appearance before) Abaa-ihina 'Their Fathers' and neither Abnaa-ihina 'Their Sons' and Akhwaanihinna 'Their Brothers' and neither Abnaa-i 'The Sons' of Akhwaanihinna 'Their Brothers' and neither Abnaa-i 'The Sons' of Akhwaatihinna 'Their Sisters' and nor Nisaa-ihinna 'Their Women', and that which their right hand possesses; and you all, are to Ataquw, 'Tremble And Fear' at the mention of The Source, ALLAH. Surely, The Source, ALLAH is a Shahiydaan 'Watcher,' over all things.

56) Surely, The Source, ALLAH and His (His Not Our) Malaa-ikat 'Angelic Messenger', (Eloheem, Anunnaqi) Yusalluwn 'Send Salutations' (Worship) 'Alaa 'Upon' the Nabiyyi 'Newsbearer' (Muhammad). Oh you who are faithful, you all are to Salluw, 'Send Salutations' (Worship) upon him and Sallimuw, 'Salute' him in peace.

57) Surely those who Yu-dhuwn 'Injure, Harm' The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Ahmad), The Source, ALLAH will La'ana 'Physically Curse' them in the Dunyaa, 'Physical World' and the Aakhira, 'End' and He (He Not We) has 'Adala, 'Prepared' a Muhiynan 'Humiliating'; 'Athaban 'Pain' for them.

58) And those who harm the

male faithful ones and the female faithful ones without them Kasabuw 'Deserving' it; so indeed, they have carried Mubiyn 'Clear' Buhtaan, 'Gossip' and Athiym, 'Guilty Actions.'

*Muhammad Tell Your Mates,
Daughters, And Enosite
Women To Cast Their
Garments - Those Hypocrites
And Those Who Cause
Commotion Will Not Be Your
Neighbors. If They Don't Stop
- You Cannot Find Any
Changes In The Sunnah Of
Allah - Those Enosites Who
Ask About The Saa'at, Tell
Them, 'It Is Qariyb' - The
Concealers Of The Facts, Will
Be Cursed Forever In Sa'iyar.*

59) Oh you, the newsbearer (Muhammad), tell your Azwaaj, 'Mates' and your Banaat, 'Daughters' and the Nisaa 'Enosite women' of the male faithful ones, to Yudniyn, 'Cast' their Jalaab, 'Garments', upon themselves. That is more appropriate if they only knew, so they won't be harmed/injured, (molested); and The Source, ALLAH is Ghafuwr, 'Forgiving', Rahiym, 'Most Merciful.'

60) Even if the Munafiquwn, 'Hypocrites' and the Murji'fuwn, 'Those Who Cause Commotion,' and those in whom hearts there

is a Mardan, 'Disease' don't finish, verily We ([We Not I] Eloheem, Anumaqi) will let you Gharaa, 'Excite' them; then they will not be as your Khaawiruwr, 'Neighbors' in Al Madiynat 'The City,' (Medina) except for a little while.

61) They are Mal'uwniyn, 'Physically Cursed;' wherever they may be found, they are taken and killed.

62) The Sunnah, 'Tradition' of The Source, ALLAH is amongst the ones who have Khaluw, 'Passed' (it already happened) from before (before Muhammad's time); and you will not find any changes for ALLAH'S Sunnah, 'Tradition' (The Old Sunna Never Changes. There's No Need Of A New One).

63) And the Enosites ask you about the Saa'at, 'Hour.' Tell them this, (Muhammad): "Surely, its knowledge is in the possession of The Source, ALLAH and what will make you Adrak, 'Perceive' it? La'alla, 'Perhaps,' the Saa'at 'Hour' is Qariyb 'Near'."

64) Surely, The Source, ALLAH has La'ana, 'Physically Cursed' the Kaafiriyn, 'Concealers Of The Facts' and He (He Not We) has prepared Sa'iyar, 'A Flaming Fire' for them.

65) They will abide Khaalidiyn, 'Eternally' in it, forever; and they will not find a Waliyan,

'Near Friend' nor a Nasiyr, 'Aider.'

66) The day when the faces will be Qalaba, 'Turned Upside Down' in the Naar, 'Fire'; they will say: "Curse, be us! We obey The Source, ALLAH and we obey the Rasuwl, 'One Sent.'"

*They Say, They Obeyed
Their Rulers And Elders -
Faithful Ones Are
Told Not Be Like Those
Who Caused Harm
On Mosheh - Faithful Ones
Are To Tremble At The
Mention Of Allah - Enosite
Ignorantly Carried The
Faithfully*

67) And they said Rabbanaa, 'Our Master!' Surely, we obeyed our Saadaat, 'Masters' and our Kubaraa 'Elders,' and they lead us astray, into error from the Sabiyl, 'Right Path'."

68) Our Rabb, who is 'Sustainer,' give them a Di'fayn, 'Double Of The Pain,' and curse them with a big, La'anah, 'Physical Curse.'

69) O you who are faithful, don't be like the Adhwa, 'Those Who Caused Harm' on Mosheh, and The Source, ALLAH has Barra, 'Set Him Free,' of that which they said; and he was Wajiyh, 'Illustrious,' in the possession of The Source, ALLAH.

70) O you who are faithful, you

are to tremble at the mention of The Source, ALLAH and say a word that is Sadiyd, 'Proper.'

71) He will perfect your deeds and forgive your Dhunuwb 'Faults', and whoever obeys The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent, 'Rasuwl,' (Ahmad) then indeed he will gain a Aziym, 'Supreme' Fawzin, 'Achievement.'

72) Surely, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) showed the faithfully (secured) faith to Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth,' and the Jabal 'Mountains' and they all Shafaqa, 'Refused' to carry its burden, having compassion for it; and the Enosite, (Human Being) carried its burden. Surely he, the Enosite is Juhuwl, 'Ignorantly' in a state of unjustness.

73) And The Source, ALLAH will cause pain upon the Munaafiqiyn, 'Male Hypocrites' And the Munaafiqaat, 'Female Hypocrites' And the Mushrikiyn, 'Male Associate Partners' and the Mushrikaat, 'Female Associate Partners'; and The Source, ALLAH accepts Tawbah, 'Repentance' from the Muwminiyn, 'Faithful Males' and the Muwminaat, 'Faithful Females,' and The Source, ALLAH is Ghafuwr, 'Forgiving,' Rahiym, 'Most Merciful.'

Sadiqa Allahu EI Azim

Chapter Ninety - One

Revealed In The Year 630 A.D.

*Al Mumtahanah
(She Who Is Tested)
Original Order Chapter 91;
Wrong Order Chapter 60*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*O Faithful Ones, Don't Take
Allah's Aduw As Near Friends
- Allah Knows Best Of What
You Hide, And Makes Known
- The Non-Muslims Will Have
Compassion For The Faithful
To Takfiruwn - Your Own
Brothers And Sisters, Nor
Awlaad, 'Children' Will Benefit
You On The Day Of
Qiyamah - The Best Uswah
For Muhammad And His
Followers, Are In
Abrawhawm And In His Sons
- Abrawhawm Asks For
Forgiveness For His Father,
Terach - Abrawhawm And
Terach Asks Their Rabb, Not
To Be Made A Fitnah For
Those Canaanites In The Cave
- Abrawhawm's Sons Are The
Best Example For Those Who
Anticipate And Yarjuw Allah -
Maybe, Allah Will Make
Affection Appear Between The
Two Seeds Of Abrawhawm
- The Source Doesn't Forbid
You From Respecting Those*

*Meccans Who Didn't Try To
Kill You - The Faithful Ones
Are Told To Test The Female
Muhajjiraat - They Are Not
Allowed To Marry The
Concealers Of The Facts - You
Are To Give Them, Their
Dowries*

91 O you who are faithful! Do not take My (My Not Our, The Source, ALLAH'S) Aduw 'Enemy,' and your enemy to be near friends, as you are telling them about Al Mawaddah 'The Compassion'; and certainly they conceal that which they know to be the facts which has come to you all, as facts (beyond any doubt). They drive out the Rasuwl 'One Sent' (Muhammad) and yourselves that have faith by way of the Source, ALLAH as your Rabb 'Sustainer'. So if you leave them to struggle in the path and seek Mardaatiy, 'To Please Me,' (Me Not Us Or We) would you keep your compassion of them, (the Non-Muslims) as a Tusirruwn 'Secret,' and surely I (I not We), know best, that which you hide and what you let become known, and whomever of you, does this, he has indeed gone back from Sawaa'a Al Sabiyl 'The Straight Path'.

2) If they, (your enemies, the Non-Muslims) find any skill to overcome you, (true Ansarullah Muslims), they would be your



Figure 195
Terach (Terah) Father Of Abrawhawm

open enemies, and would spread forth their hands, to Yabsutu 'Fight You'; and even their tongues would speak out against you, saying evil, because they Waddu 'Desire,' for You To Takfuruwn 'Conceal That Which You Know To Be The Facts.'

3) And your blood relations, brothers and sisters of the same Arhaam 'Womb' as you, will not benefit you - (they won't be of any good), and nor will your own Awlaad, 'Children' of the Day of Qiyaamah, 'Standing/Resurrection.' He, will Yafsilu 'Diverse' between you all, and ALLAH is the Basiyr 'Seer,' of all that you Ta'maluwn 'Do.'

4) Certainly the Uswah, Hasanah, 'Best Example,' for you all, (Ahmad and his followers) in Abrawhawm, and those who were with him, (his sons, be Hebrews, "Islamic Hebrews"), when they said to their Qawm, 'Kindred' (the Ishmaelites, Jacobites and Midianites): "Surely we, (Abrawhawm's sons), are clear of you all, and from that which you all slave for, other than The Source, ALLAH. We Kafarnaa, 'Concealed Ourselves' away from you all and there has started Al Adaawah, 'The Enmity And Hostility' and Al Bahgdaa'u 'The Hatred,' between us and you forever;

until you all have faith in 'The Source, ALLAH, alone; which does not include what Abrawhawm said to his Abb, 'Father,' (Terach): "Verily, I (Abrawhawm), will ask forgiveness for you, (Terah), for turning back (and going to the Canaanites in the caves); and you, (Terah) didn't get all of your hope from The Source, ALLAH, in all things. He is our Rabb, who is 'Sustainer/Master!' On You, We Tawakkalnaa 'Do Put Our Trust In,' and to You, is our fate and Masiyr 'Destiny.'

5) O our, (Abrawhawm and Terach's) Rabb! Don't make us, a Fitnah 'Test,' as an object of persecution, by those who conceal that which they know to be the facts - (the cursed Canaanites of the caves); and our Rabb, who is 'Master' forgive us, for surely You (You Not Us) are The 'Aziyz, 'Mighty,' The Hakiym 'Wise.'

6) For indeed, in them, (Abrawhawm's) sons (Hebrews) were the best example for those who anticipate and Yarjuw, 'Hope' in The Source, ALLAH and Yawm Al Aakhir, 'The Last Day' (Be Islaamic Hebrew At Its Best); and whoever from you Yatawalla 'Turns Back' - (leaves Millah, 'Rites' of Abrawhawm), then surely, The Source, ALLAH is Al Ghaniyyu, 'The Independent, Al Hamiyd, 'Whom All Gratitude Is Due'

(You Muslims Who Don't Become Islaamic Hebrews, ALLAH Has Nothing To Do With You).

7) Maybe, The Source, ALLAH will make Mawaddah 'Affection' come between you all, (Abrawhawm's seed, the Ishmaelites) and between those you made your enemies, (Abrawhawm's other seed, the Israelites); and The Source, ALLAH has the Qadiyr 'Power,' and ALLAH is Ghafuwr 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful' (All Of You Are Really One Seed, So Be One).

8) The Source, ALLAH does not Yanhaa, 'Forbid' you all, (Muhammad and your followers, from respecting those in Mecca), who did not Try To Yuqaatiluw, 'Kill' you all, because of your Diyn, 'Means Of Judgment,' (Millah Ibraahiym), and did not make you all leave from your Diyaar 'Abodes.' If you show them kindness, and deal justly to them, (this is good); for surely, The Source, ALLAH likes Al Muqsitiyn, 'Those Who Deal Justly And Treat Others Fairly.'

9) However, The Source, ALLAH Yanhaakum 'Forbids You All' 'An 'About' (Making Friends With The Followers Of Musaylimat,) Those Who (Wants In The Past To) Qaataluwkum 'Kill You All' (Muhammad And His Followers) Because Of Al

Diyn 'The Means Of Judgment', And Made You All Leave Your Diyaar 'Abodes' (In Mecca;) And They Assisted Others Upon Your Leaving (Departure From Mecca) To Tawallawhum 'Make Them Your Friends'. And Whoever Yatawallahum 'Makes Them Their Friends' (Becomes Friends With Their Enemies), So These Are They Al Zaalimuw 'Those Who Are In A State Of Unjustness'.

10) O you who Aamanuw 'Are Faithful,' when the Muminaat Muhaajiraat 'Female Faithful Women Who Migrated,' come to you all, (the faithful), so test them; The Source, ALLAH knows their Iymaan 'Faith.' So if you all know that they are Muw'minaat 'Faithful Women,' then don't return them to Al Kuffaar 'The Concealers Of The Facts,' for they (the faithful women) are not Hillun 'Lawful' to them, (the concealers of the facts), and neither are they, (the concealers of the facts allowed to marry them); and give them, (those who conceal that which they know to be the facts), that which they shared willingly. There is not a Junaah, 'Crime' upon you all, if you Tankihuw 'Marry them,' and you give them their Ujuwr, 'Rewards, Dowries' and don't hold them back, the 'Isami 'Defense' of the Kawaafir, 'Women Who Conceal That Which They Know To Be

The Facts; You All Can As'aluw 'Ask' for that which you have shared willingly, (their dowries); that is the Hukmu 'Wisdom,' of The Source, ALLAH. He (He Not We) Yuhakimu 'Uses Wisdom' between you all, and The Source, ALLAH is Aliym, 'Knowing,' Hakiym, 'Wise.'

*Those Wives Who Have Left
Are To Be Given A
Hypocrite's Due - Muhammad
Is Told To Seek Forgiveness
For The Faithful Women
Who Come To Make A
Contract/Pledge With Him
- The Faithful Ones Are Told
Not To Make Friends With
The Plagued Canaanites -
They Have No Hope In The
End- And Their Companions
Have No Chance In The
Qubuwr*

11) And if Shay 'Anything,' of (the dowries) from your Azwaaj, 'Mates' Faa-takum 'Went' to Al Kuffaar 'The Concealers Of The Facts,' - (that is your wives who left the peaceful way of life), your Aaqabtum 'Punishment Will Come,' so give those, whose mates have left the like of that which a hypocrite is due; and Attaquw, 'Tremble At The Mention' of The Source, ALLAH, in whom you all are faithful Bi-hi 'With Him (Him Not Us)'.

12) Oh Nabiyy, 'Newsbearer'

(Ahmad/Muhammad), when Al Muw'minaat, 'The Faithful Women,' comes to you, (Muhammad) Yubaa-yi'unaka 'Making A Contract/Pledge Of Allegiance' (to follow you, Ahmad) on that they will not Yushrik 'Associate Partners,' by way of The Source, ALLAH (of any) thing: and they do not Yasriq 'Steal,' and don't Yazniy 'Commit Adultery,' and don't Yaqtul 'Kill,' their Awlaad, 'Children' - (the female children) and don't bring Buhtaan, 'Accusations' that they had Yaftariyn 'Invented,' between their own hands and their Arjul 'Feet' - (made up as they walk along), and they do not disobey you, in that which you know in their contract/pledge of allegiance; and you are to Astaghfir 'Seek Forgiveness' for them, (from) The Source, ALLAH. Surely The Source, ALLAH is Ghafuwr 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful'.

13) O you who are faithful, (the real Muslims), don't Tatawallaw 'Make Friends' with Qawm 'The Kindred', (sons of Canaan), whom The Source, ALLAH has Gadiba 'Put A Wrath' upon them (he plagued them). They have certainly Ya'isuw 'No Hope', in Al Aakhirah 'The End,' just as the Kuffaar, 'Concealers Of The Facts', their companions have no chance,

when in the Qubuw, 'Tombs.'

Sudiga Allahu El Agim

Chapter Ninety-Two

Revealed In The Year 627-627 A.D.

Al Nisaa

(The Enosite Women)

Original Order Chapter 92;

Wrong Order Chapter 4

92 Oh you Enosites, you all, are to tremble at the mention of Your Rabb, who Khalaaq 'Created' you all, from one Nafsin 'Person/Spirit' (one not two, Ninti; Not Adam And Eve), and He (Enqi - He Not We) Khalaaq 'Created' Minha 'From It', Zawjahaa 'Its Mate' (pairs; Adam and Eve), and He Bath-cha 'Caused To Spread' from both (Adam and Eve) of them, many Rijlaan 'Mortal Men', and Nisaa-an 'Enosite Women'; and you all are to tremble at the mention of The Source, ALLAH, He whom you ask about, and Al Arhaam 'The Yielding Of The Wombs' (of your own tribe, and family, Ptahites, Cuthites). Surely, The Source, ALLAH has been Raqiyyhaan 'Observing' over you (watches it all).

Responsibilities To The Orphans, Enosite Women, Polygyny, And Paying Of Dowries

2 And give to the orphans their wealth, and don't you exchange, that which is wicked for that which is agreeable. (Don't put down the holy scriptures, and pick up books of man); and don't eat up their wealth along with your wealth. Surely, it is a Kabiyyraan 'Big' Hawbaan 'Sin'.

3 And if you fear, that you can not be fair to the needy (orphan) women; so marry what is agreeable for you all, of the Enosite women; in Thanaa 'Two's', and Thulaatha 'Three's', and Rubaa'a 'Four's'; so if Khiftum 'You Fear', that you won't Ta'diluw 'Deal Justly', then have only Waahidat 'One' (mate); or (if, you can't afford a dowry, then) take that which your right hand possess - (women taken in battle or slaves under your care). That will be Adnaa 'More Suitable', that you won't turn (from being just).

4 And give Al Nisaa-a 'The Enosite Women', Saduqaatihinna 'Their Dowries', as a Nahlatan 'Gift-Free Will Offering'; so if they allow for you all - (males), any of the dowry willingly, so you, (the males) are welcome to it, with enjoyment.

5 And don't give the fools, (those who forsake Abrawhawm's religion) your wealth which, The Source, ALLAH has for you to (maintain), and Arzuquwhum

'Provide Them' in it; and Aksuwhum 'Clothe Them', and speak only kind words to them.

6 And test the needy (orphans), until they reach Al Nikaah 'The Age To Get Married', so if you feel that they are well directed, then give them their wealth (their money); and don't eat of it wastefully and hastily, that they will Yakbaru 'Grow Big (Grow Up)'; and who is rich, so don't let them charge them; and who is Faqiyaan 'Poor', so he can take only what is needed, so when you pay to them their wealth (their money), so Ash-hiduw 'Have Watchers' over them. And The Source, ALLAH is sufficient as a Reckoner.

7 For Rijaa 'Mortal Men', there shall be a fixed share of that which is left (by) Al Waalidaan 'Their Parents', and Al Qurbaan 'The Close Relatives' and for the Nisaa-i 'Enosite Women', is a fixed share of what is left (by) Al Waalidaan 'Their Parents', and Al Aqrabawn 'The Close Relatives', whether it be small or much; a fixed share is obligated.

8 And when the relatives and the needy (orphans) and the poor settlers, are there at Al Qismat 'The Division', Arzuquwhum 'Provide Them' (also) with something; and say to them only Ma'ruwfaan 'Kind' sayings.

9 And let those dread (the way, in which they treat orphans); who if they left from behind

them, weak Dhurriyyatan 'Offspring', they would be afraid Alayhim 'Upon Them'. So let them tremble at the mention of The Source, ALLAH and say only Sadiyd 'Well-Directed' Qawlaan 'Sayings'.

10 Surely, those who eat up wealth (money) of the needy (orphans) unjustly, they are indeed eating fire into Butuwnihim 'Their Stomachs'; and they will be cast into a Saiyr 'Flaming Hell'.

The Law To Share Inheritance

11 The Source, ALLAH Yuwasiyukum 'Enjoins You All', in (what to do with) your children; for Al Dhakari 'The Forgetful One, Male' is the same share, as that for Al Unthayayni 'The Two Second Parts, Females', so if they be females, Fawqa 'Above' two, (more than two), so then they shall have two thirds of that which (the deceased) has left; and if she is one (the only daughter), so she shall have the half; and as for the father and the mother (of the deceased), each of them, shall have a sixth portion, of that which he has left if there is for him a Waladun 'Child'; so, if he has no child, and his parents be his heirs, then, his mother shall have the third; and if he has brothers, his mother shall have

the third; and if he has brothers, his mother shall have the sixth, after paying the bequest, he shall have bequeathed his debt. As, to Abaa-uwkum 'Your Adopted Fathers', or Abnaa-uwkum 'Your Adopted Children', you know not, which of them, is the most useful to you. This is a Fariydatan 'Obligation' from ALLAH. Surely, The Source, ALLAH is 'Aliymaan 'All Knowing', Hakiymaan 'Wise'.

12 And for you, shall be half of what Azwaajukum 'Your Mates' leave if they have no Waladun 'Children', but if they have Waladun 'A Child', so for you is only a fourth, of that which they leave, from after paying the bequest (what) they may have bequeathed, and the debt. And for them shall be a fourth of what you leave, if you have no child, so if you have a child, then for them shall be the eighth of what you leave, from after paying the bequest (what) they may have bequeathed, and the debt; and if a Rajulun 'Mortal Men' or Amra-aatun 'Woman' leave his or her property to be inherited by any of the side relation - (not of the lineage); and he or she has a Akhun 'Brother', or a Ukhtun 'Sister', each of these two shall have the sixth; so if there be more than that, so then they shall be Shurakaa-u 'Associating Partners' in the one third, from

after paying the bequest (what) they may have bequeathed, and the debt without causing harm (to anyone). This is an ordinance from The Source, and ALLAH is All 'Aliymun 'Knowing', Hakiymun 'Most Wise'.

13 These are the Huduwd 'Limits' of The Source, ALLAH, and whoever obeys The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Muhammad); He (He Not We) will make him enter Jannatin 'Gardens'; beneath which rivers flow, eternally in it; and that is Al 'Aziym 'The Supreme' Al Fawzu 'Achievement'.

14 And whoever, disobeys The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl, 'Onc Sent', (Muhammad), and transgresses His limits; He (He Not We) will make him enter Naaraan 'Fire' to (dwell) eternally in it, and for him, is a Muhiynun 'Despicable' pain.

Dealings With Abominable Deeds, Both Males And Women

15 And as for those, from amongst your Enosite women; who bring forth Al Faahishat 'The Abominable Deeds', so call four watchers upon them of you; so if they watch to the abominable deeds; so keep them in their houses, until death

Yatawaffaashunna 'Receives Their Souls' (lock them up until they die), or The Source, ALLAH makes a path for them. (Unless ALLAH makes them for them).

16 And if a couple, (husband and mate), any two, that commits fornication (which is doing evil things), from amongst you all, so punish them both; so if they repent and perfect (their personalities), so forgive both of them. Surely, The Source, ALLAH is the Tawwaabaan 'Acceptor of Repentance', Rahiymaan 'Most Merciful'.

17 Surely, the repentance with The Source, ALLAH is only for those who did evil deeds, while you were in ignorance, then repented soon after. So, these are they whom The Source accepts their repentance, and ALLAH is 'Alimaan 'All Knowing', Hakiymaan 'Wise'.

18 And repentance, is not for those who do evil things (all their lives), up until death comes to one of them, (in his or her dying bed); then he says: "Surely, I repent now." Nor, for those who die and they were of those who concealed what they knew to be the facts; We ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), have prepared for them an aching pain.

The Faithful, Don't Take Enosite Women By Force

19 O you, who are of the faithful, it is not Yahillu 'Lawful' for you to inherit Enosite women by force, and don't you force them to give up anything you had given them except, if they commit a clear Faahishatin 'Abomination'; and associate with them kindly; but if you hate them, so it may be that you hate a thing; and The Source, ALLAH made in it, an abundance of goodness.

20 And if you all, wanted to exchange one Zawjin 'Mate', in place of another Zawjin 'Mate', and you have already given one of them Qintaaraan 'A Talent - (1,200 Ounces of Gold)', then don't take any part of it. Would you take it by slandering, and clear guilt, (to try to get your wealth back? You will become a sinner).

21 And how can you take it back, (the dowry) and indeed you hath Afdaa 'Gone In' unto each other - (had sex) and (your mates) took a Miythaaqaan Ghaliydhaan 'Firm Fulfillment Of A Promise'; (marriage with law, and divorce by the law).

Women You Can't And Can Marry

22 And don't marry Enosite women whom Aabaa-ukum 'Your Fathers' have married. (You can't marry any of your mothers); except for if, it had

happened in the past (before you knew the law; as in the case of Nimrod and Semiramis.) Surely, it is a abominable act, and is hated in the worse way. (It is an evil thing to do).

23 Unlawful for you all, (the real Peaceful Ones, - Muslims), are your mothers and your daughters, and your sisters and your father's sisters, and your mother's sisters, your brother's daughters, and your sister's daughters, and your mother, who breast-fed you all (the midwives), and your sisters from the mother who breast-fed you, the step-sisters, and the others of your wives and your step-daughters, who are in your guardianship, from your women, who became your step-daughters, by whom, you have Dakhaltum 'Entered Them Sexually'. So if you don't Dakhaltum 'Entered Them Sexually', (meaning their mothers), then it is not a crime on you all, (to marry the daughter instead, and) the wives of (your sons, who live with you), those sons from Aslaabikum 'Your Loins', and that you bring together two sisters, except that, if it has already happened, a thing of the past; (as in the case of Ya'aqob and Le'ah, and Rachel). Surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrul 'Forgiving', Rahiymaan 'Most Merciful'.

24 And (also, forbidden unto you are) Al Muhsanaat 'The Chaste', from the Enosite women (women who marry as virgins), except for those who you rule by your right hand (women under your care). ALLAH has Kitaaba 'Inscribed', (in His scriptures by his hands; ALLAH has hands), for you all; and Uhilla 'Made Lawful' for you all that which is behind for you all, that you all should seek by way of your wealth Muhsineen 'Chaste, Virgins' without having Musaafihetu 'Premarital Sex' and as whom you all have enjoyed by way of it from amongst them, you all are to give them for a limited period. It is a duty. And there is no crime upon you all in that which whom you all have enjoyed by way of it from after the duty. Surely, The Source, ALLAH is 'Aliymaan 'Knowing', Hakiymaan 'All Wise'.

25 And those of you who are unable, (not rich enough) to marry chaste, Enosite women, who are faithful; then marry those, from amongst the faithful maidens, young virgins, whom your right hand possesses, (women under your care); for The Source, ALLAH knows (best) your true faith; how some of you are from others of you (Tribes And Families, And Kin). So marry them with the permission of their family, and

give them their due dowries in fairness, and kindness. They must be chaste women, virgins, not Musaafihaat 'Fornicators' - (Enosites having premarital sex), nor taking (having) Akhdaanin 'Secret Affairs'. So when they had been chaste women, (not having had premarital sex), so if they bring Faahishat 'Obscene' (indecent), so they are only entitled to have half the punishment, (pain of Hell. That which is inscribed for the chaste women, virgins). That is for him amongst you all, who dreads falling into evil, and you should be patient; it is good, for you. And The Source, is Ghafuwrūn 'Forgiving', Rahiymūn 'Most Merciful'.

The Source Wants You To Turn To Repentance To Him

26 ALLAH only wants to make clear to you, and lead you all, (the Ishmaelites) into calmness, to the Sunana 'Traditions', (the same laws of the seed of Abrawhawm. Abrawhawm Had A Sunnah) of those, who were before you, (the Israelites), and to cause you, (the Ishmaelites) to repent, (stop worshipping idols). The Source, ALLAH is 'Aliymūn 'All Knowing', Hakiymūn 'Wise'.

27 And ALLAH wants to be, The Acceptor of Repentance for all of you, and those who follow

their Shahawaat 'Lustful Desires', (commit incest), want to deviate from The Source, by a 'Aziym 'Supreme' Maylaan 'Deviation'.

28 And ALLAH, only wants to reduce (your burdens); and the Enosites, were Khuliqa 'Created' Da'iyfaan 'In A Weak State' (first they were Genus Homo then Homo Erectus).

29 O you who are of the faithful do not consume (and rob), each other's wealth, amongst yourselves by false dealings, (or bribes), except in an act of trading with mutual consent from each other; and don't Taqtuluw 'Kill' each other (do not kill other human beings). Surely, The Source, ALLAH is Rahiymaan 'Yielding (Merciful)' with you all.

30 And as for him, who does that 'Aduwa-aanaan 'Aggressively', and Zulmaan 'Unjust', (they take things from others; or even fights and kills other human beings); We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), shall Nusliyihi 'Broil Him' in Naaraan 'Fire', and that has always been easy for The Source, ALLAH (to do. If any person killed anybody, he/she is going to be broiled).

31 If you all, avoid the biggest things - (evils, such as associating partners with The Source) of those things, which you have been Tunhawn 'Forbidden' -

(eating of the pig, drunkenness, fornication, killing other human beings, etc.); We, ([We Not He] the Eloheem Anunnaqi) will conceal your evils from you all, and We (Eloheem Anunnaqi), will allow you to enter the Jannat 'Garden,' a Kariymaan 'Generous' entrance.

*The Eloheem, Anunnaqi Made
Everyone Heirs Of The
Parents' Inheritance*

32 And do not wish for yourselves, what The Source, ALLAH has preferred for some of you, over others. For Rijaaal 'Mortal Men', they, shall have a Nasiybun 'Fixed Share' of what they earn, and for the Nisaa-i 'Enosite Women', they shall have a fixed share of what they earn; and ask ALLAH from his preference. Surely, The Source, ALLAH has the 'Aliymaan 'Knowledge' of all things.

33 And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), made everyone Mawaaliya 'Heirs' of that which Al Waalidaan 'The Parents', and Al Aqrabuwn 'The Near Relatives' leave - (inheritance); and as to whom, you have made an agreement with your right hands possession; so give them, what they are due (their portion). Surely, The Source, ALLAH is a Shāhiydaan 'Watcher' over all things.

*Disunion And Reconciliation
Between A Couple*

34 Al Rijaaal 'The Mortal Men', are to be the Qawwaamuwn 'Maintainers', of Enosite women, by what The Source, ALLAH has preferred; some of them, (men) over others (women), and by what they share willingly, from their own wealth; (so men are to take care of their women's needs). So, the women who are working to perfect themselves, are the ones who guard themselves, by not being seen by everyone - (not going out, into the world) as ALLAH has ordered them to guard themselves; and as for those who (women) that you all fear they have done a Nushuwzahunna 'Ill-Conduct' so 'Idhuwhunna 'Give Them Strong Religious Advice', and don't go to bed with them - (have sex); And (if you have reason), Adribuwhunna 'Hit Them'; so if they obey you, don't seek, or desire a path against them, don't seek to do them harm. Surely, The Source, is Aliyyaan, (ELYOWN ELYOWN EL) 'Most High', The Kabiyyaan 'Oldest'."

35 And, if you have fear that there will be a disunion - (a breach), between the two of them, (the couple); so send a Hakamaan 'A Wise' (person), from Ahlihi 'His Family'. (Someone that knows the law

from amongst the man's family and from amongst her family). If they want Islaahaan 'A Compromise, An Agreement', The Source, ALLAH will be between the two of them. (He will cause harmony, between them). Surely, ALLAH is 'Aliymaan 'Knowing', Khabyraan 'Ever Aware'.

36 And slave for The Source, ALLAH and don't Tushrikuw 'Associate Any Partners' (anything) with Him (Him Not Us); and be your best to Waalidayn 'Your Parents' and by Al Qurbaa 'The Near Relatives', and Al Yataamaa 'The Needy (Orphans)', and Al Masaakiyn 'The Poor', and Al Jaari Dhiy Al Qurbaa 'The Related Neighbor', And Al Jaari Al Junubi 'The Unrelated Neighbor', and the companion who is next to you, and the Abn Sabiyl 'Son Of The Path', and what your right hand possesses, (those Enosite women taken in war). Surely, The Source, ALLAH does not like whoever is Proud, (and) Boastful.

37 Those who Yabkhaluwn 'Are Avaricious', and command other Naas/Enosites to be avarice, and hide what ALLAH has given them from His (His Not Our) preference - (not to give of their wealth, in The Source's cause; when The Source, has given them out of His preference), We, ([We Not He] The Eloheem,

Anunnaqi) have indeed prepared for those who conceal what they know to be the facts, a despicable pain.

38 And those who share their wealth willingly, just to be seen by Enosites, and don't have faith, by way of The Source, ALLAH nor in the Last Day; and as for him, to whom Al Shaytaan 'The Evil One, The Reptilian', is Qariynaan 'Intimate' (Associate; mortals, who associate with Satan), an evil Qariynaan 'Intimate' (Associate) is he.

39 And what would it mean to them, if they had faith in The Source, ALLAH and the Last Day and share willingly from that which ALLAH had provided for them? The Source, ALLAH does (indeed) knows them. (He knows the so-called Muslims, peaceful ones, whom He has made rich, who makes friends with the Evil Ones, the Reptilians, and build houses of prostration, and spend, their money, to impress Enosites who are righteous).

40 Surely, The Source, ALLAH does nothing unjustly not even in something as small, as the weight of a Dharrat 'Atom' and if there is any best in it, He (He Not We) multiplies it and gives from His (His Not Our) own presence, a 'Aziymun 'Supreme' reward.

41 So, how will it be, when We,

([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) bring forth a Shahiydin 'Watcher', from each Ummatin 'Nation', (whom they were sent to), and We, (Eloheem, Anunnaqi), bring you, (Muhammad) as a Shahiydaan 'Watcher' over these, (the Enosites of your time)?

42 On that day, (the Last Day); those who concealed what they knew to be the facts, and disobeyed the one sent, (Muhammad), will desire that the Earth 'Tiamat' be made equal, (destroyed) with them. And they will not be able to hide their Hadiythaan 'Tales' (The Kafir also have a hadith they try to hide), from The Source ALLAH. (He will know all that they have said).

Do Not Go Near Salutation As Worship When Drunk. Or In An Unclean State

43 Oh you, who are of the faithful, don't go near the Al Saalaat 'The Salutation As Worship' when you all are Sukaaraay 'Drunk'; until you know what you are saying (sober up); nor when you are Junubaan 'In A State Of impurity' (unclean after sex), unless you are 'Aabiriy 'Crossing' the path, (the desert) until you have bathed, (and washed yourselves); and if you are sick or on a Safarin 'Journey', or one of you,

have arrived from Al Ghaa-iti 'The Moving Of Your Bowels', or Laamastum 'You Touched' (had sexual intercourse) with a women, so you can't find water; so take Tayyibaan 'Agreeable' (Clean) Sa'iydaan 'Sand', so Amsahuw 'Wipe' Wujuw hikum 'Your Faces', And Aydiyikum 'Your Hands'. Surely, The Source, ALLAH is 'Afuwwaan 'Pardoning', Ghafuwraan 'Forgiving'.

Israel's Changing Words Out Of Their Places From The Torah

44 Haven't you, (Muhammad), seen those to whom were given, a Nasiybun 'Fixed Share' of the scriptures - (the Children Of Jacob - Israelites, Nazarites, And Midianites)? They buy error; (they created Hadiyths - Talmud, and Mishnah; their own forms of Hadiyth. Books by men, which took them from The Source, ALLAH'S light), and they desire to make you stray from the path. (These Enosites want you to follow them in their traditions, instead of the law; like the Hadiyth followed by Al Islaam).

45 And The Source, ALLAH, knows (best), all of your enemies; and The Source, ALLAH is a sufficient near friend, and ALLAH is Kafaa 'Sufficient' as a Nasiyraan 'Aider'.

46 Of those, who Haaduww 'Became So-called Jews, of Judah' (Banu An Nadir, Banu Quraizah, Banu Qainuqaah); there are some who change Al Kalima 'The Words' (of the Torah), from their places; and say: "We hear yet, we disobey; and hear as ones not being able to hear; and "Raa'inaa" 'meaning Mischievous, twisting the words' (of the Torah), with their tongues, and taunting in the means of judgment; and if, they had said: "We hear, and we obey, and listen, and look at us; (Unzurnaa - meaning "Look this way, and listen to us); it would have been good for them, and would have been more upright - (strength to their character); but, The Source, ALLAH has La'anahum 'Cursed Them', because they concealed what they knew to be the facts; and they do not have faith, but a little.

*The Eloheem, Anunnaqi Sent
The Qur'aan To Confirm
What Was Sent Down From
Before*

47 Oh you, who were given the scripture, (the Israelites/Jacobites, were given the Torah), have faith by what We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) Nazzal 'Sent Down', (The Qur'aan); Musaddiqaan 'Confirming' what you have

with you from before - (the scriptures, and tablets from before). We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) Natmis 'Efface' (Wipe Out) Wujuwhaan 'The Faces', and turn them on their backs; (this is a familiar Arab expression; which is in reference to the Jews being banished from the whole Arabian peninsula if they continued making trouble, for the newsbearer, Muhammad and the Muslims); or We, (the Eloheem, Anunnaqi) La'anahum 'Curse Them Physically', as We La'annaa 'Physically Cursed', the Ashaab 'Companions' of Al Sabt 'The Sabbath' (the so-called Jews, before the time of the newsbearer Muhammad); and the command of The Source, ALLAH is always done.

48 Surely, The Source, ALLAH does not forgive, he whom Yashrak 'Associates Partners' with Him (Him Not Us); and He (He Not We) forgives, that which is besides that, to whomever He pleases; and whoever Yashrik 'Associates Partners', with ALLAH, indeed he has Aftaraa 'Fabricated' a supreme guilt.

49 Haven't you seen those who consider themselves Zakka 'Pure'? In fact, The Source purifies whom He (He Not We) pleases, and they will not be dealt with unjustly, by a Fatiyilaan 'Not Even The Husk

Of A Date Stone', (not even a little bit)."

50 See, how they invented lies, about The Source, ALLAH. And this clear guilt is enough.

51 Haven't you seen those, (the Children Of Israel/Jacob) who have been given a fixed share of the scripture, (the Torah)? They are faithful, to Al Jibt 'The Idol Jibt'; and Al Taaghuwt 'The Idol Of The Arrogant Evil One, The Reptilian, Taaghuwt' (Humbaba/Anzu/Samael) and they say: "Those who conceal what they know to be the facts, are lead into calmness on the path, than those who are faithful."

52 These are they, whom The Source, ALLAH cursed; and whomsoever, ALLAH curses, will not find an aider for him.

53 Or, have they, (the ones who have been cursed); a fixed share of Al Mulk 'The Rulership' - (any power or authority); then they would not give the Enosites, even a groove (in a date stone; the smallest amount of help. Not even a speck).

54 Or are they, (the Jacobites so-called Jews of the newsbearer Muhammad's time), envious of the Enosites - (the Ishmaelites), for what The Source had given, (the Qur'aan) to them, (the Ishmaelites) out of His (His Not Our) Preference? Indeed We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), have given Al Kitaab

'The Scripture', to the Aal 'Descendants' of Abrawhawm and We, (Eloheem, Anunnaqi), gave them a 'Aziymaan 'Supreme' Mulkaan 'Rulership'.

A Burning Pain For Those Who Turn Away From The Qur'aan - And The Faithful Shall Have Enclosed Gardens

55 So, out of all of them, there is he, who had faith in it, (the Qur'aan), and out of all of them, there is he who turned away from (the Qur'aan); and burning Hell, will be sufficient for him.

56 Surely, those who conceal what they know to be the truth, about Our, ([Our Not My] the Eloheem, Anunnaqi's) signs, We (We Not He) shall Nusliyhim 'Broil Them' with fire; and as often as Juluwduhum 'Their Leathery Skins', are totally burnt off; We, (the Eloheem, Anunnaqi), will Baddal 'Replace' their (old) Juluwdaan 'Leathery Skin', with other (skins - new skins. Reptilians shed their skin); so that they may taste the pain, (it will burn repeatedly). Surely, ALLAH is Aziyzaan 'Mighty', Hakiymaan 'Wise'.

57 And as for those, who are faithful, and work to perfect themselves We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), shall cause them, to enter Jannaat 'Enclosed Garden', beneath which rivers flow, to abide there eternally;

and in it, there will be Mutahharatun 'Pure' Azwaajun 'Mates' for them, and We, (the Eloheem, Anunnaqi), shall cause them to enter into a Dhaliyl 'Dense' shade.

58 Surely, The Source commands all of you, to restore Al Amaanaat 'The Faith' (back) to Ahlihāa 'Their Families' (owners), and when Hakamtum 'You Use Wisdom' between the Enosites; (see) that you Tahkumu 'Use Wisdom' justly. Surely, The Source, ALLAH, admonishes you with that which is most excellent. Surely, The Source, ALLAH Samiy'aan 'Hears', (and) Basiyraan 'Sees' (everything).

*Faithful Ones Are To Obey
The Source, And The One
Sent, And The Amiyrs*

59 Oh you who are faithful! You all are to obey The Source, ALLAH and the Rasuwl 'One Sent', and the Uwliy 'First Ones' (The Eloheem Anunnaqis), Al Amri 'The One Who Give Orders', (The Amiyrs. Those Put In Charge), from amongst you. So, if you dispute in anything; so refer to The Source, ALLAH and Al Rasuwl 'The One Sent', if you all have faith, by way of The Source, ALLAH and the Last Day, (Day of Judgment). That is good, and a better way to terminate your disputes.

60 Haven't you, (Muhammad), seen those - (the hypocrites of the city, of Medina) who assert that they surely have faith in what was sent down, (the Qur'aan) to you, (Muhammad); and that which, was sent down before you, (Muhammad - the scriptures, and tablets from before). They want to summon one another, to the wisdom of Taaghuwt (The Father Of Haylal the Arrogant Devil). And indeed they were, commanded that (the Evil One, the Reptilian) be Yakfuruw 'Concealed, Denied'; and Al Shaytaan 'Satan, the Reptilian', only wants to lead them astray, into remote error far off the path.

61 And, when it is said to them, (the hypocrites of the city of Medina): 'Come to follow that which The Source, ALLAH has sent down - (the Qur'aan), and to the one sent, (Muhammad); you will see that even after that, Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites', are turning away from you, (Muhammad), with (utter) Suduwdaan 'Diversion'.

62 So how, when the misfortune befalls them, (the hypocrites of the city of Medina); because of that which their own hands have sent before, as a result of what they have done? Then, they will come to you, (Muhammad) Yahlifuwn 'Swearing (By Binding An Oath)' by The

Source, ALLAH that they want nothing, except that which is best and Tawfiyqaan 'Reconciliation' (for you, Muhammad)?

*The Hypocrites Of Medina
Falsely Seek Forgiveness*

63 These are they, whom The Source, ALLAH knows what is in their hearts; so turn away from them, and 'Idh-hum 'Give Strong Religious Advice (Warn Them)', and say to them a saying concerning their own selves.

64 And We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), did not send any, except that he should be obeyed by The Source's permission; and if they, (the hypocrites of the city of Medina), had to come to you, (Muhammad), when they were acting unjustly to their own selves; (doing wrong), and had sought ALLAH'S forgiveness, and had the one sent, (Muhammad), sought forgiveness for them; they would have indeed found The Source, ALLAH, Rahiymaan 'Yielding (Mercifully)', (and the one to turn to) for repentance.

65 But no! And (by) your Rabb, who is 'Sustainer', they, (the hypocrites, so-called Jews of Medina) do not have faith until, they make you, (Muhammad), use wisdom in what they are disputing between them. Then

they will not find any strife, in their own selves, (because of what you, Muhammad), have decided, and they will salute, with salutation. (They will have peace; resolve their differences).

66 And surely, if We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) had Katabnaa 'Written For Them', (the hypocrites of the city of Madiynah), to Aqtuluw 'Kill' yourselves, (lay down your lives for The Source, and the peaceful way of life "Al Islaam,") or go outside of your Diyaar 'Abodes', they would never have done it, except for a few of them; and surely, if they had done what Yuw'adhuwn 'They Were Giving Strong Religious Advice' Bihi 'With', (about, by what I prescribed); this would have been good for them; and it would have Ashadda 'Made Them Forceful', (And) Tathbiytaan 'Made Them Firm'.

67 And if they were firm, then We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) certainly would have given them, from Our presence; (the Holy Spirit), as a 'Aziym 'Supreme' reward.

68 And, We ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), would have calmed them to the narrow path of the ones sent; who stand up straight and firm.

69 And whoever, obeys ALLAH, and the Rasuwl, 'One Sent', (Muhammad), they are with those to whom The Source,

has shown His (His Not Our) Grace upon them. They are from Al Nabiiyyiin 'The Newsbearers' And Al Saaddiqiyn 'The Trustworthy', and Al Shuhadaa-i 'Those Who Watches And Determines Their Death' and Al Saalihiyn 'The Perfectionists', and these are the best of Rafiiqaan 'Friends (Which You Lean On)'.

70 That is a preference, from The Source, ALLAH and ALLAH is Sufficient, (because He) is 'Aliymaan 'All Knowing'.

71 Oh you who are of the faithful ones! Take precaution; then go forth Thubaatin 'In Bodies', or go forth Jamiy'aan 'Together'."

72 And surely, amongst you all, there is he who will delay, not act as a part of the group. So, if a misfortune, befalls you, he says: "Indeed, The Source, ALLAH has shown grace on me, that I was not, a Shahiyydaan 'Watcher' there with them."

73 And, if you are struck with a preference from The Source, ALLAH, surely he, (the coward who delays), will say; as if there had not been Muwaddatun 'Compassion', between all of you, and him: "Oh! If, only I had been with them: I would have achieved with a 'Aziymaan 'Supreme' Fawzaan 'Achievement'.

74 O, let's Qaatil 'Kill' in the path of The Source, ALLAH

those who sell this world's life, for the Last. (They exchange things of this world, for the things that come in the Hereafter); and whoever Yuqaatil 'Kills' in ALLAH'S path and is Yuqtal 'Killed' or is Yaghlib 'Victorious', then We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), shall give him a 'Aziymaan 'Supreme' reward.

75 And what reason, do you, (the hypocrites of the city of Medina have), not to Tuqaatil 'Kill' in The Source, ALLAH'S path? And the weak from amongst you, the Mortal Men, and the Enosite women, and the children who say: "Our Rabb, take us out of this Qaryat 'Town' (Mecca) whose Ahl 'Families', (the Meccans) are unjust, and Aj'al 'Make' us a Waliyaan 'Near Friend', (An Eloheem Anunnaqi), from amongst your presence, and Aj'al 'Make' us, a Nasiyraan 'Aider' from amongst Your presence.

76 Those who are faithful, Yuqaatiluwn 'Kills' in the way of The Source, and those who conceal what they know to be true, Yuqaatiluwn 'Kills' in the way of Taaghawt (The Arrogant Devil, father of Haylal/Samael). So Qaatiluw 'Kill' Awliyaa-a 'The Near Friends' of Al Shaytaan 'The Evil One, the Reptilian'. For surely, Shaytaan "Satan," (the Reptilian's) Kayd

'Plot' (strategy) is very Da'iyyaan 'Weak'.

77 Have you not seen those, (the hypocrites of the city of Medina), to whom it was said: "Kufuw 'Hold back' your hands (from war), and establish Salaat 'Salutation As Worship' and give Al Zakaat 'The Charity'?" So, when it was Kutiba 'Written' on them, Al Qitaal 'To Start Killing'; behold, a Fariyqun 'Portion' of them dread the Enosites, as the dreading of The Source, ALLAH or a more forceful dreading, and they said: "Our Rabb 'Master'! Why, have Katabta 'You (You Not Us) Written' (ordained) Al Qitaal 'The Killing' upon us, if You did not Akh-khartanaa 'Grant Us Respite', to a fixed term which is near?" Tell them this,

(Muhammad): "The temporary enjoyments of the physical world are a little, and the End (Hereafter) is good for those who tremble and fear, and you shall not be wronged, Fatiytaan 'Not Even The Husk Of A Date Stone', (not even a little bit)."

78 Wherever, you may be you will be overtaken by death, even if you are Mushayyadatin 'Fortified', in the Buruwjin 'Constellation' (raised high which are in another galaxy beyond the stars); and if they are showered with that which is best, they, (the fools) say: "This is from The Source, ALLAH'S

possession, (the abode of The Source - The Skies)"; and if, you shower them with evil, they, (the fools say): "This is from your possession (Muhammad's Abode, Tiamat). Tell them this, (Muhammad): "All of it, is from The Source, ALLAH'S possession". So what is wrong, with these (Enosites) that they don't even Yafqahuwn 'Overstand', the Hadityth 'Tales', (of The Source)?

79 Whatever good happens to you, it is from The Source, ALLAH, and whatever evil happens to you, so it is from Nafsika 'Your Ownself'; and We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), has sent you, (Muhammad), to the Naas/Enosite, and The Source, ALLAH is sufficient as a Shahiyyaan 'Watcher'.

80 Whoever, obeys the Rasuwl, (Muhammad), so indeed obeys The Source, ALLAH; and whoever turns away, (and disobeys); so We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), have not sent you, (Muhammad) as a Hafiyydhaan 'Guardian' 'Alayhim 'Upon Them'.

81 And they, (the hypocrites of the city of Medina), Say: "Obedience, (we're obedient)"; so, when they had gone out, from being with you, (Muhammad), a part of them decided by the Shadow Hour period, to Ghayra 'Change' what

you said; and ALLAH Yaktub 'Writes Down' (ALLAH Has Hands, Which Is Something Physical), what they decided by, the Shadow Hour period. So turn away from them, and put all your trust only in ALLAH and he is Sufficient, as a Wakiyl 'Advocate'.

82 Do they, (the hypocrites; so-called Jews of the city of Medina), not Yatadabbaruwn 'Meditate' (decide on the verses of) the Qur'aan? And, if it was from a possession from besides The Source ALLAH, then verily they would have found, Kathiyrāan 'Many' Ikhtilaafaan 'Differences' (Discrepancies) Fiyha 'In It'.

83 And, when the command (affair) of security, or fear comes to them, (the hypocrites of the city of Medina), they spread it abroad. And if only they, had referred it, to Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad), and to those first ones who gave commands, (the Amiyrs) from amongst them; then, those who are able to think out matters of difficulty, would have known it; and if it were not for the preference of The Source, ALLAH upon you all, and His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (Mercy); you would have indeed, followed Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian', except for a very few of you.

84 So Qaatil 'Kill' in the path of

ALLAH. It is not imposed on any except for yourself, (Muhammad); and stir up the faithful ones. Maybe The Source, ALLAH will restrain the Baasa 'Might' of those who conceal what they know to be facts; and ALLAH, is forceful in might, and forceful in Tankyalaan 'Chastisements'.

85 Whoever, intercedes with a better intercession, will have a fixed share of it, and he whomever, intercedes with an evil intercession, will have a Kafilun 'Like Part' from it; and The Source, ALLAH is The Muqiytaan 'Controller' of everything.

86 And when, Huyyiyytum 'They Greet You', with a greeting; ("Al Salaamu Alaykum"). So greet them, with a better one than it, or return it; (Wa Alaykum Al Salaam). Surely, The Source, ALLAH is the Hasiybaan 'Reckoner', over all things.

The Source Has The Best Of Hadiths

87 The Source, ALLAH; no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist, except by way of Him (HU -The Creative Force Of Will); He (He Not We) will gather you all, unto a Day of Resurrection. There is no doubt in it, and who is more Asadaqu 'Truthful', than ALLAH'S

"Hadiyth 'Tale"; (not man's hadiyyth).

88 So, what is the matter with you all? (After returning from the Battle Of Uhud, the Enosites, were divided about due to the Hypocrites). So, what is the matter with you, in relation to the hypocrites? You have become two parts, and The Source, ALLAH has reversed them for what they have earned. Do you want to calm those who The Source, ALLAH Adalla 'Leads Into Error'? And whomsoever, ALLAH leads into error, so by no means, will you find for him a path. (He will find no way to avoid The Source).

89 They want you to be concealers of the facts, as they are concealers of the facts, so that you both may be equal. Therefore, don't take near friends from amongst them until they flee home - (turn to The Source), in the path of ALLAH; so, if they turn back, then capture them, and you are to kill them, as you have found them; and don't take any near friends, or any aider (from them other than the peaceful ones, "Muslims". They are not to be trusted, until they become Muslims, and don't ask them for anything).

90 Except for those, who joins to a kindred, between you all, and between them; there is a

Miythaaq 'Fulfillment Of A Promise', or came to you all with their chest shrinking, that kills you all, or kills their own kindred. And if it pleases The Source, ALLAH, He (He Not We) would have given them authoritative power, over you all, so they would have indeed killed you all. So if they withdraw from you, so they do not kill you and offer you Al Salama 'Peace', so then The Source, ALLAH has made a path for you all, over them.

91 Shortly, you will find others, who want to be safe from you, and from their own kindred (Arab Tribes During Muhammads Time); and as often as they return to the test (temptation), they plunge into it, (head on). Therefore, if they do not withdraw from you, (trying to stop you Muhammad), and don't seek peace (Al Islam in that day), and don't restrain their hands (stop attacking you physically); then seize them and kill them, (you can only fight them if they attack you first), wherever you find them, and these are you; whom We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), have given clear Sultaanaan 'Authoritive Power'.

Don't Kill Another Faithful One

92 And the faithful, Peaceful

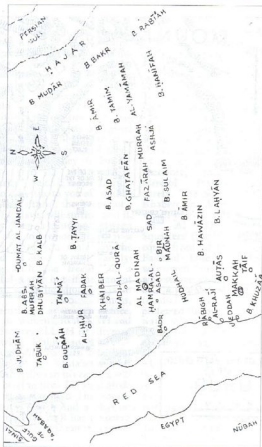


Diagram 47
The Arabian Tribes In Muhammad's Time

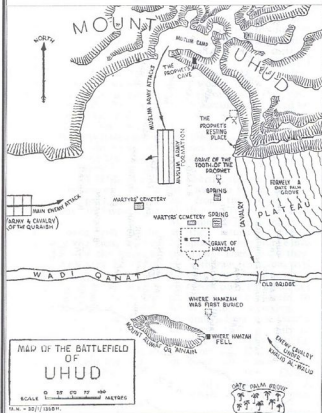


Diagram 48
The Battle Of Uhud

Ones, 'Muslims' are not to Yagtul 'Kill' a faithful 'Muslims' (different sects of muslims should not kill each other), except Khata-aan 'By Accident'; and whoever kills a faithful 'Muslims', by accident, so he should free a Mu-minatin 'Faithful Slave' (muslim can have a slave), and pay an agreed compensation; ("Blood Money,") the heirs of the deceased blood money, unless they forfeit it. They give it Al Sadaqat, "Charity"; but, if he is from a kindred hostile to you all, and he is of the faithful, the freeing of a faithful slave, will suffice; and if, he is from a kindred between you all, and whom there is a treaty, then you shall pay the Blood Money, to his family; along with the freeing of a faithful slave; but if he cannot afford it, so he should Siyaam 'Fast' for two months, consecutively as a repentance, (and atonement), to ALLAH and The Source, ALLAH is 'Aliyman 'Knowing', Hakiyman 'Wise'.

93 And whoever kills a faithful one, Muta'ammidaan 'Intentionally'; so his reward will be, a blazing fire. He shall abide in it eternally, and The Source has put a wrath and a physical curse on him; and has prepared for him, a 'Aziymaan 'Supreme' pain.

94 Oh you who are of the faithful! When you strike (forth

to fight), in the path of ALLAH, so make it clear (investigate), and do not say to anyone who offers you Al Salaam 'Peace': "You are not of the faithful." So do not seek (the goods of) the life of the physical world (material things); so many spoils (pleasures) are in the possession of the The Source, ALLAH. Just as you were from before, so The Source, ALLAH showered His (His Not Our) grace upon you all. So, therefore, Tabayyanw 'Make Careful Investigation'; for surely, The Source, ALLAH is Khabiyyraan 'Aware' of all that which you do.

95 Al Qaa'iduwn 'The Squatters' (the idle ones) are not equal from Al Mu-Miniyn 'The Faithful Ones'; besides those who were injured, and those who strove, in The Source's path by way of their wealth, and themselves; The Source, has preferred the ones who strove by way of their wealth; and themselves, a degree, over Al Qaa'idiyn 'The Squatters' (the idle ones); and all of them, ALLAH has promised the best, (of things); and The Source, has preferred the ones who strive with a 'Aziym 'Supreme' reward, over the squatters (the idle ones).

96 He, (He Not We), will give them, the (highest) Darajaat 'Degrees', Minhu 'From Him(Self)', and forgiveness, and a Rahmat 'Yielding' (mercy); and

The Source, ALLAH is Ghafuwrūn 'Forgiving', Rahiymaan 'Most Merciful'.

97 Surely, those whom Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (the Eloheem, Anunnaqi), Tawaffaahum 'Has Taken Their Souls' (caused to die), were unjust to their own selves. They said, as you all have said: "We are weak, in the planet Earth." They also say: "Is not The Source's Earth (vast, and) spacious? Therefore, Tuhaajiru 'Flee' Fiyhaa 'In It'. "So, these are those, whom resting place will be a blazing Fire, and evil is their destiny.

98 Except, for the weak ones, from (amongst) the Mortal men, and the Enosite women, and the children, who have not their own powers - (the means to devise a plan), nor to show the leading calmness to the right path, (they can't escape).

99 So, these The Source, ALLAH will save; for surely He (He Not We) is the pardoner for them, and ALLAH is 'Afuwwaan 'Pardoning', Ghafuwwaan 'Most Forgiving'.

100 And whoever flees, in The Source, ALLAH'S path, you will find in the planet Earth, many spacious places of refuge, (and abundance of resources), and whoever goes forth, from his house, fleeing to The Source, ALLAH and Rusuwlihi 'His (His Not Our) One Sent',

(Muhammad); and death overtakes him, (he is killed); so indeed his reward, is with The Source, and ALLAH is Ghafuwrūn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

*To Cut Short Your Worship
When You Strike Forth To
Fight*

101 And when, Darabtum 'You Strike (Riding Forth To Fight), in the planet Earth; so there is no crime on you all, that you shorten your Salaat 'Salutation As Worship'. If you fear that those who concealed the facts may Yaftinakum 'Test (Tempt)' you all, surely, Al Kaafiriyn 'The Concealers Of The Facts' were clear enemies for you all.

102 And when you, (Muhammad) are amongst them, and you establish for them the Salaat 'Salutation As Worship'; so then, let a part of them stand up with you, (Muhammad), and let them take Aslihatahum 'Their Weapons'. So, when they Sajaduw 'Have Prostrated', then let them move to the rear, and let the other part (come up front) which have not (given) salutation as worship; so let them (give) salutation as worship with you, (Muhammad), and let them take their precautions, and their weapons. Those who conceal what they know to be the facts, would Wadda 'Have

Compassion' if possible, to catch you neglectful of your weapons, and Amti'atikum 'Your Baggage'; so that they may turn upon you, with a sudden attack all at once; and there shall be no blame on you all, if you are annoyed at the Matar 'Rain'; or if, you are ill, that you lay down your weapons, (and take your weapons) and take your precautions. Surely, The Source, ALLAH has prepared for those who conceal what they know to be the facts, a despicable pain.

103 If you observe Salaawt 'Salutation As Worship', (under these circumstances): then you may remember The Source, while standing and squatting (sitting), or laying on your sides (prayer is prayer; anyway you can); so when you are secure, (once the war is over); you will stand up for (the regular) Salaawt 'Salutation As Worship'. Surely, Salaat 'Salutation As Worship' has been Kitaabaan 'Written (Decreed)', on the faithful at Mawquwtaan 'Specific Times'.

104 And don't, be Tahinuw 'Weak Hearted', when in pursuit of the kindred, (the enemy); if you have ever suffered any pain. So then, surely they too, have suffered pain as you have suffered pain; and your hopes from ALLAH is not the same as what they hope; and The Source, ALLAH is 'Aliymaan 'The

Knowing', Hakiymaan 'The Wise'.

Don't Be Arguing On Behalf Of The Deceivers

105 Surely, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent down to you, (Muhammad) Al Kitaab 'The Scripture' (Qur'aan) with the facts (beyond any doubt); that you may use your wisdom between the Enosites, by means of what The Source, ALLAH showed you; and don't be Al Khaa-iniyn 'The Arguers' for the Khasiymaan 'Deceiving Ones'.

106 And seek The Source's forgiveness; surely ALLAH is Ghafuwraan 'Forgiving', Rahiymaan 'Yielding' (Merciful).

107 And do not dispute for those who deceive their own selves; surely, The Source, ALLAH does not like those, who are deceiving, and guilty.

108 They hide from Enosites, and don't hide from The Source, ALLAH and He (He Not We) is with them when they Yubayyituwn 'Meditate In The Shadow Hour', with words that don't please Him (Him Not Us), and ALLAH is who encompasses all that they do.

109 You are of them, who dispute for them in the life of the physical world; but who will dispute with The Source for them on the Day of

Resurrection; or who shall be their Wakiyl 'Advocate'?

110 And as for, whoever does evil, or acts unjustly to his ownself; then seeks forgiveness from ALLAH, he shall find The Source, ALLAH Ghafuwraan 'Forgiving', Rahiymaan 'Most Merciful'.

111 And whoever, adds a guilty action (to his life); surely, what he adds, is only on his ownself; and The Source, ALLAH is the 'Aliymaan 'Knowing', the Hakiymaan 'Wise'.

112 And whoever commits a wrong act, or an guilty action, then accuses by way of it, one who is Yariyaa-an 'Innocent'; so indeed, he carries upon (himself) a (big) Buhtaanaan 'Slandering', and a clear Ithmaan 'Guilt'.

113 And (Muhammad), if it had not been for the preference of ALLAH upon you, and His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy); most certainly, there was a plot by a part of them - (supporters of the village of Tima), to cause you, (Muhammad) to go astray in error, and they don't cause any to go astray in error, but their ownselfes; and they can not harm you, (Muhammad) in any way; and The Source sent down upon you Al Kitaab 'The Scripture' and Al Hikmat 'The Wisdom'; and He (He Not We - The Source) 'Allamtaka 'Taught You', (Muhammad) that which,

you did not know; and The Source, ALLAH had been in your preference, 'Aziymaan 'Supremely', over you.

114 There is no good, in most of Najwaahum 'Their Private Conferences' - (their secret whispering and gossiping), except in him who commands others to give alms, or kindness, or Islaahin 'Repairing (Conflicts)' between the Enosites; and whoever does that, is seeking the pleasures of The Source, and We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) will give him a 'Aziym 'Supreme' reward.

115 And whoever, causes trouble for the one sent, (Muhammad) after the leading calmness has been made clear for him; and follows other than the path of the faithful ones; We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), shall turn him in the direction in that which he turned; and We shall cast him, into a blazing Fire; and evil shall be his destiny.

*Don't Associate Any With
The Source*

116 Surely, The Source, ALLAH does not forgive those who Yushrak 'Associate Any Partners' with Him (Him Not Us); and will forgive anything, other than that, to whomever He (He Not We) pleases; and

whoever, Yushrik 'Associates Partners' with Him, so certainly he is astray, and (he is) straying (even) further.

117 If, they call on Inaathaan 'Female Deities', besides Him (Him Not Us), they are only, calling on the Mariydaan 'Rebellious' Shaytaan 'Satan, The Reptilian'.

118 The Source, ALLAH has put a physical curse, (leprosy on him, the Evil One, the Reptilian); and he said: 'Verily, I will take of 'Ibaadika 'Your Slaves', (200 malevolent beings, Cherubeems) an appointed Nasiybaan 'Fixed Share' (of them; the Jinns, Malevolent beings that fell from the Skies, with Haylal/Samael son of Shakhar/Zuen Anzu/Tarnush).

119 And I, (The Evil One, The Reptilian, Haylal, Bar Shakhar) will cause them, (the so-called Jews and Christians, and those tribes who associate partners, during the time of the newsbearer Muhammad), to go astray; and I will certainly, stir vain desires in them, and I will command them, that they will cut off the ears of the cattle - (called "Bahiyrah"; a polytheistic practice of pagan Arabs), and I will command them so that, they will change The Source, ALLAH'S Khalq 'Creation'; and as for him, who takes Al Shaytaan 'Satan 'The Evil One' (thing of clay - a human devil)

for a Waliyyaan 'Near Friend', besides The Source, ALLAH, so indeed, he Khasira 'Shall Lose', a clear loss.

120 He, (the Evil One) promises, and Yumanniyhim 'Excite False Desires In Them' (the so-called Jews and Christians); and, he Satan (the Evil One, the Reptilian), only promises them things in order to deceive.

121 These are they, whose resting place is "Jahannam" (a blazing fire), and they won't find anyway to escape it.

122 And those who are faithful, and work to perfect themselves; We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) will cause them to enter into Jannatin 'Gardens', beneath which rivers flows, therein to abide eternally. It is The Source, ALLAH'S promise, and is a fact; and who is more trusted than The Source, ALLAH in Qiylan 'Sayings'?

123 This shall not be, in accordance with your vain desires; nor the desires of the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture' (The Israelites/Jacobites); whoever does evil, shall be requited, and he will not be able to find for himself any near friends nor aiders, other than The Source, ALLAH.

124 And whoever, works from Al Saalihaat 'The Perfection', whether they be a Dhakar in

'Male, Forgetful One', Or Unthaa 'Second Part, Female'; and he is faithful, so these are they, whom shall enter into Al Jannat 'The Garden' and shall not be dealt with unjustly, not even to the size of a dot.

Abrawhawm Is The Source's Friend - The Needy And The Women Are To Be Treated Justly

125 And who has the best Diyn 'Means Of Judgment,' than he who Aslama 'Surrendered In Peace', (turning) his face towards Him (Him Not Us - The Source)? And he is the best, who follows the Millat 'Rites' of Abrawhawm, the Haniyfaan 'Upright One', ("Al Islaam" - the peaceful way of life), and The Source, ALLAH took Abrawhawm, as His Khaliylaan 'Friend'.

126 And for Him, (Him Not Us) is all that is in Al Samaawaati 'The Skies', and Al Ard 'The Planet Earth', and The Source surrounds you all in all things.

127 They ask you, (Muhammad) for a decision, concerning Nisaa-i 'The Enosite women', Tell them this (Muhammad): "The Source, ALLAH is who makes the decisions, for you all concerning them, and that which has been Yutlaa 'Recited' upon you all, in the Scripture (Qur'aan), concerning needy (orphan) girls,

who have not been given what has been Kutiba 'Already Written' (prescribed - their dowry) for them, while you still desire to marry them; and concerning the weak ones, from amongst the children; and that you are to stand firm, for the needy (orphans) with fairness, and whatever you do that which is good; so know for surely, that The Source, ALLAH is 'Aliymaan 'Knowing' of it.

128 And if Amra-aatun 'A Woman' fears Nashuwzaan 'Ill-Conduct', or I'raadaan 'Desertion' from Ba'lihaa 'Her Baal - Husband'; so there will be no blame on them, if they make into effect a reconciliation, between them. And reconciliation is good, and Al Shuhha 'The Avarice' has been made to be present, in Al Anfus 'The Spirits', (minds) of the Enosites; and if you do that which is best, and tremble and fear, so surely, The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' of all that you do.

129 You won't be able to deal justly between the women, (your wives); and even if you try, you won't; but don't turn away all the affection, (depriving one of your women affection just for another), leaving her hanging in suspense; and if you work to perfect yourselves, and tremble and fear, then surely, The Source, is Ghafuwraan

'Forgiving', Rahiymaan 'Ever Merciful'.

130 And if (your women) become separated (from each other, the polygamy system - marriage is terminated), then The Source, ALLAH will suffice all of the parties involved, out of His ampleness; and The Source, ALLAH is Waasi'aan 'Comprehensive', Hakiymaan 'Wise'.

131 And all that is in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard, 'The Planet Tiamat/Earth' is for Him (Him Not Us); and indeed We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaki), enjoined those (Israelites), who were given Al Kitaab 'The Scripture', (the Torah), before you all - (the Ishmaelites), and that you all should tremble at the mention of The Source, ALLAH; and if you conceal what you know to be the facts, then surely, all that is in Al Samaawaati 'The Skies', and that which is in Al Ard 'Tiamat/Earth' is for Him (Him Not Us), and The Source, ALLAH is Ghaniyyaan 'Self-Sufficient', Hamiyyaan 'Worthy Of Gratitude'.

All That's In Earth And The Skies Is His

132 And all that is in Al Samaawaati 'The Skies', and what is in Al Ard 'The Planet Tiamat' is for Him (Him Not Us), and The Source, ALLAH is

Sufficient, as a Wakiylaan 'Advocate'.

133 If He (He Not We) pleases, He can make you all, (Ishmaelites - Ansarullah Community) pass away; Oh Enosites, and bring others (Nuwaubu -H.T.M.), instead of you; and The Source, ALLAH has the power to do that.

134 Whoever, desires the reward of the physical world, so The Source, ALLAH has the reward of the physical world, and the End (Hereafter); and The Source is Samiy'aan 'Hearing', Basiyr 'All Seeing'.

135 Oh you who are faithful, be enforcers (Nuwaubu) by justice, as Shuhadaa-a 'Watchers' for Him (Him Not Us - The Source), even if, it is against yourselves - (better opinions), or your parents, (what your mother or father says), and your close relatives, (aunts, uncles, grandmother, or grandfather). Even if, (your family member) is rich, or poor; so The Source, ALLAH is to come first out of the two of them. So don't follow, (become influenced) by Al Hawaa 'The Love' (your desire), that deviates; and if you distort or swerve, or turn aside from it, (the peaceful way of life); then surely, The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' of all that you do.

136 O you who are faithful! Have faith in The Source, and

His (His Not Our) one sent, (Muhammad), and the Scripture (Qur'aan) which was sent down Alaaa 'From Above' his one sent, (Muhammad); and the scripture, (the Torah), which was sent down before you, (Muhammad); and as for him who conceals the facts about The Source, and Malaa-ikatihi 'His Angelic Messengers', (His Eloheem Anunnaqis) and Kutubihi 'His Scriptures' (Tablets), and Rusulihi 'His Ones Sent' (from Adam/Zakar To Ahmad/Muhammad), and the Last Day; certainly he is astrayed, in a state of error, getting further and further into error.

137 Surely, those who are faithful, then conceal what they know to be the truth, then become faithful again, then conceal what they know to be the truth again and then after that, increase in their concealing of the truth; The Source, ALLAH will not forgive them, nor lead them into calmness to the right path.

138 Announce to the hypocrites, (those who were in the Tabernacle and then left), that they will have an aching pain.

139 Those who take the concealers of the truth as near friends, rather than the faithful ones; do they seek any kind of honor from them? So surely, all

the 'Izzat 'Might' is altogether for Him (Him Not Us).

140 And indeed, He, (He Not We) sent down upon you all, in the Scripture (Qur'aan); that when you hear The Source, ALLAH'S signs, (verses of the Qur'aan) being concealed and mocked at, so don't squat (sit) with those (Enosites who concealed the facts about the Qur'aan); until they enter unto other terms, (The Sources), Hadiyth 'Tales' (the Qur'aan). If you don't, then indeed you would be like them. Surely, The Source, ALLAH will gather all the hypocrites, (those who were peaceful ones, and then turned back from real Islaam, the Millat Abrawhawm), and all those who conceal what they know to be the facts (and made up this new Islaam), in Jahannam 'Hell' all together.

141 Those who wait some misfortune to happen to you all, and then, if you have a (Victorious) Fathun 'Opening', (and success) comes your way, from ALLAH, the hypocrites say: "Were we not with you all, (the "Muslims" the peaceful ones)? And if those who conceal what they know to be the truth, get a fixed share, they (the hypocrites) will say: "Did we not Nastahuwdh 'Acquire The Mastery' over you all, (the Enosites fighting against Muhammad) and Namna'kum

'Defended You', from those who are faithful?" So The Source will use wisdom between you all, (Ansarullah - the Real Muslims, the fake muslim of today - hypocrites and the Enosites, fighting against the Rasuwl Muhammad), on the Day of Resurrection; and by no means, will The Source, ALLAH make those who conceal what they know to be the facts, have any path over the faithful ones.

142 Surely, the hypocrites, (those who leave the community), seek to deceive The Source, ALLAH and He (He Not We) deceives them, (makes a repayment); and when they stand up to Salaawt 'Salutation As Worship', they stand up Kusaalaa 'Lazily (sluggishly)'. (They don't practice all of the strictness they had learned in the community of the peaceful way of life). They do it, only to be seen by Enosites; (they only pretend to be Muslim, while other Enosites are watching); and they don't remember The Source, ALLAH except for very little (in their hearts. They don't want to deal with The Source any longer).

143 Wavering between that (and this), neither towards these (faithful ones), nor towards those (who conceal what they know to be the facts); and whoever The Source, ALLAH leaves in error, so you will never

find a path for him.

144 Oh you who are faithful, don't take those who conceal what they know to be the facts, as near friends from besides the faithful ones, (associate with Real Muslims only). Do you want, that you give for Him, (Him Not Us - The Source), who has an Sultaanaan 'Authoritive Power' over you all, clear (proof against yourselves)?

145 Surely, Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites' (fake muslims) shall be in Al Asfal 'The Lowest Stage' (Shamballah) of Al Naar 'The Fire' (Al Haawiyah), and you will never find, any aider for them.

146 Except for those who repent and perfect themselves, and hold on by way of The Source, ALLAH, and Akhlasuw 'Are Sincere' (in) Diynahum 'Their Means Of Judgment' for Him (Him Not Us); So these are those with the faithful ones; and The Source, ALLAH will grant the faithful ones a 'Aziymaan 'Supreme' reward.

147 What concern has The Source, ALLAH with you all to punish you, if you all are grateful, and have faith? And The Source, ALLAH is Shaakiraan 'Grateful', 'Aliymaan 'All Knowing'.

148 The Source, ALLAH does not like Al Suwaa-i 'Evil' speeches (these evil Imams and Shaikh telling their followers to

kill other human beings), in public; unless it is from someone who has been treated unjustly, and The Source, ALLAH is Samiy'aan 'Hearing', 'Aliymaan 'All Knowing'.

149 If you Tabduw 'Begin' (initiate) the doing of good (openly), or Takhfuwhu 'Conceal It', or Ta'fuw 'Forgive' (someone) who does Sawaa-in 'Evil'; so surely The Source, ALLAH is Ghafuwrān 'Forgiving', Qadiyraan 'Powerful'.

150 Surely, those who conceal what they know to be the facts by way of ALLAH and Rusulihi 'His (His Not Our) Ones Sent', (Adam, Noah/Noach, Khanowk/Enoch, Abrawhawm/Abraham, Yishmael/Ishmael, Yitschaq/Isaac, Ya'aqob/Jacob, Dawiyd/David, Shelomoh/Solomon, Yowb/Job, Luemmiym/Luqman, Yonah/Jonah, Mosheh/Moses, Yehowshuwa/Joshua, Yashu'a/Isa, Muhammad, Etc.); and they want to Yufariquw 'Make A Distinction' between The Source, ALLAH and Rusulihi 'His (His Not Our) Ones Sent', and (the lying Muslims who try to make Muhammad above other Rasuwl) says this: "We have faith in some of them. (We see Muhammad, or Yashu'a, or Mosheh, over, or better than the others); and we conceal what we know to be the facts, about some

of them." (We don't know about Yowb/Job, Leummiym/Luqman, Eliyah/Elijah Muhammad; We are to follow all of the ones sent, not just one, or the other by celebrating some of their birthdays [they celebrate Muhammad's birthday only], and not others; or by trying to hide the facts that Abrawhawm, named us muslims;) and they want to take a path between that. (They say they have faith in all the scriptures, and the ones sent, but don't follow them. They say the scriptures were changed, or tampered with. They take the middle path to a blazing fire).

151 These are they, who are truly the concealers of what they know to be facts. We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) have prepared for those who conceal what they know to be facts, a Muhiynaana 'Despicable' pain.

152 And as for those who have faith in The Source, ALLAH and Rasulihi 'His (His Not Our) Ones Sent', and don't Yufarriquw 'Differentiate' between any of them - (don't put Muhammad above the other prophets). These are they whom He (He Not We), will give their rewards, and The Source, ALLAH is Ghafuwrān 'Forgiving', Rahiymaan 'Merciful'.

Israel's Request To See The Source, Manifest

153 The Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', ask you, (Muhammad) that you should Tunazzil 'Send Down' upon them Kitaabaan 'A Book' (the Qur'aan) from Al Samaa-i 'The Skies'; so indeed they did ask Mosheh for Akbara 'Even Bigger' (more) than that. So (the Children Of Israel/Jacobites) said: "Arinaa 'Show us' The Source, ALLAH Jahratan 'Manifested' (In Public." Make The Source come down in the flesh), and because of their unjustness, they were overtaken by Al Saa'iqat 'The Lightning'; (The Source struck out against them from the sky), then (the Children Of Israel), took Al 'Ijl 'A Calf' (as an object of worship, the deity Hathor), after Our, ([Our Not My] the Eloheems', Anunnaqi's) clear signs, which had already come to them; then We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi,) 'Afuwnaa 'Pardoned Them' for that, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) Aataynaa 'Gave' Mubiyn 'Clear' Sultaanaan 'Authoritive Power' (To The Eloheem) Mosheh - (the law was given to Mosheh).

154 And We, ([We Not He] the Eloheem) Rafa'naa 'Raised' Fawqahum 'Above Them' (Israelites - the Children of Jacob), the Mountain of the bull,

"Al Tur" (in the Sinai Peninsula - Scabid El Khadim) By Way Of Miythaaqihim 'Their Fulfillment Of A Promise', and We, (the Eloheem, Anunnaqi), said to them (Israelites): "You all, are to Adkhuluw 'Enter' Al Baab 'The Door', (of the Land of Canaan) Sujjadaan 'Prostrating', (in prayer out of gratefulness)." And We, (the Eloheem, Anunnaqi) said to them, (Israelites/Jacobites): "don't Ta'duw 'Transgress' (violate the sanctity) Fee 'In' Al Sabt 'The Sabbath'; and We, (the Eloheem, Anunnaqi) took from them a Ghaliydhaan 'Solemn (Severe)' Miythaaqaan 'Fulfillment Of Promise'.

155 Therefore, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi,) broke up with them - (the Children Of Israel/Jacob) Miythaaqahum 'Their Fulfillment Of A Promise', and (because of) their concealing of what they knew to be facts, about The Source, ALLAH'S signs, (the scriptures); and Qatlihim 'Their Killing' of Al Anbiyaa, 'The Newsbearers' without facts (beyond any doubt), (Like Immanuw'el son of Yesha'yah/Isaiah, Ezrah, Yowchanawn The Baptist, and Leummiym), and for their saying: "Our hearts are Ghalfun 'Covered'." In Fact! The Source, ALLAH placed a Taba'a 'Stamp' (impression on their

hearts), because of their concealing what they knew to be facts, so they will not have faith except for a very few of them. (Only certain tribes from Judah, and Dan, accepted Al Islaam).

*And They Never Killed The
Messiah Yashu'a. It Was
Only Made To Look That
Way- The Return Of The
Real Messiah*

156 And for their concealing of the truth, and Qawlihim 'Their Sayings', Alaa 'On' (against) Miriam that was 'Aziymaan 'Supreme' Buhtaanaan 'Slandering' (lies).

157 And (the so-called Jews) saying: "Surely, we (the so-called Jews) Qatalnaa 'Have Killed' Al Masiyh 'The (Anointed), Messiah' Yashu'a/Isa Ibn 'Adopted Son' Of Miriam, Rasuwl 'A One Sent', (of) The Source ALLAH; and Maa 'They Never Qataluwhu 'Killed Him', (Yashu'a), nor did they ever Salabuwhu 'Crucify Him', but it was Shubbihia 'Made To Look That Way', Lahum 'For Them'. And surely, those who Alhtalataw 'Dispute In This Matter', are in Shakkin 'Distruster' about it. They don't have any Ilm 'Knowledge' about it; except that they follow only conjecture, and Yaqiynaam 'For Certain', Maa They Did Not Qataluwhu 'Kill Him'.

158 In fact, The Source, ALLAH Rafa'ahu 'Raised Him', (Yashu'a, Who Is Tammuz) Ilayhi 'Up Towards Himself', and The Source is 'Aziyyan 'Mighty', Hakiymaan 'Wise'.

159 And surely, there is none Min 'From' the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scriptures', Illaa 'Except' La-yuw-minanna 'They Will Have Faith' Bihi 'By Way Of Him', (The Real Messiah Sananda/Tammuz) before his (each person's) death, and on the Day of Resurrection; he, (the Real Messiah Tammuz will be returning as a Rasuwl), and will be as a Shahiydaan 'Watcher' over them all.

160 So by way of the Dhulmin 'Iniquities', (the unjust evils), of those who are Haaduww 'Of Judah' - (Judahites, of the fourth son of Jacob, tribe of Israel); We, (We Not He) the Eloheem, Anunnaqi), made Harram 'Unlawful' upon them, the Tayyibaat 'Agreeable Things', which had been made Uhillat 'Lawful' for them; and of their hindering many (Enosites), in The Source, ALLAH'S path, (because they were trying to keep many Enosites from accepting Muhammad).

161 And their taking interest, and indeed they were Nahuw 'Prohibited' from doing it, and

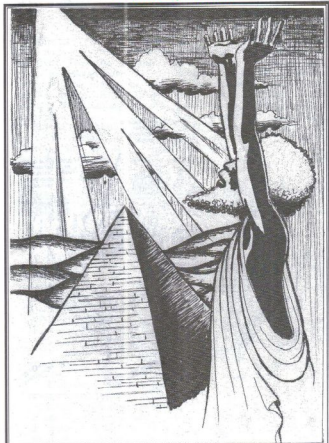


Figure 196
Jesus Ascending At The Age Of 120

their consuming, of the Enosites wealth with falsehood; and We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi,) have prepared for Al Kaafireen 'The Concealers Of That Which They Know To Be The Facts,' from amongst them, an aching pain.

162 But Al Raasikhuwn 'Those Who Are Firm', (the true Muslims), in Al 'Ilm 'The Knowledge' (who know all the history of the scriptures); from them, and the faithful who have faith in what Unzil 'Was Sent Down', (the Qur'aan) to you, (Muhammad) and what was sent down before you, (the scriptures and tablets from before), and Al Muqiyimiyna 'Those Who Are Always Standing In The Ranks' of Al Salaawt 'Salutation As Worship', and Al Muw-tuwn 'Those Who Give Willingly', (to pay) Zakaat 'The Charity' and those who have faith by way of ALLAH, and the Last Day, these are they whom, We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) shall give them a 'Aziymaan 'Supreme' Reward.

163 Surely, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) Awhaynaa 'Gave Inspiration' to you, (Muhammad), just as We Awhaynaa 'Gave Inspiration' to Noah, and Al Nabiyyiin 'The Newsbearers, Males Of Prophecy,' who came after him, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) Awhaynaa 'Gave

Inspiration' To Abrahawm, and Yishmael, and Yitschaq, and Ya'aqob, and Al Isbaat 'The Tribes' (of Ishmaelites, Israelites, Midianites,) and Yashu'a, and Yowb, and Yonah, and Aharown, and Shelomoh, and We, (the Eloheem, Anunnaqi) Ataynaa 'Gave' Dawiyd, the Zubuwraan 'Psalms'. (Awsawf/Asaph, son of Berekyah/Berachiah, wrote the Psalms with Dawiyd).

164 And (some) Rusulaan 'Ones Sent', Indeed, We ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) have told you (Muhammad), their stories from before - (stories about some of the apostles sent, in the old scripture), and (some of the) Rusulaan 'Ones Sent' We, (the Eloheem, Anunnaqi) did not tell you, (Muhammad) about their stories. And ALLAH Kallama 'Spoke' To Mosheh Takliymaan 'Word By Word', (in the Torah. You will find all the stories of all the Ones Sent, Muhammad, so read it).

165 Rusulaan 'The Ones Sent', Mubash-shiriyn 'As Givers Of Good News', (of all of the scriptures), and Munadhiriyn 'As Warners' (of Judgment Day); so that the Enosites would not have to plead, any arguments, upon The Source, ALLAH after Al Rusuli 'The Ones Sent' had come; and The Source, ALLAH is 'Aziyzaan 'Mighty', Hakiyman

'Wise'.

166 But, ALLAH Yash-hadu 'Watches' by what has come down to you, (Muhammad). He Anzalahu 'Sent It Down' with 'Ilmihi 'His (His Not Our) Knowledge', and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers' (Eloheem Anunnaqi) Yash-haduwn 'Watches', and The Source, ALLAH is (Himself) a sufficient watcher.

167 Surely, those who conceal what they know to be true, and hinder (the Enosites) from The Source's path (Al Islaam), Indeed, they have gone astray, into a state of error, far away.

168 Surely, as for those who conceal what they know to be facts, and act unjustly, The Source, ALLAH will not be forgiving to them; and nor will He (He Not We) lead them into calmness to the right path.

169 Except the path to eternal Jahannam 'Hell' to abide in it eternally (those who turn others away from Al Islaam). And that was very easy, for The Source, ALLAH (to do).

170 O you Enosites! Indeed, there has come to you all, by way of the truth Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad), from your Rabb, who is 'Master/Sustainer.' So have faith, it is good for you, and if you conceal what you know to be facts, so surely, for Him (Him Not Us), is all that is in Al

Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'Tiamat/Earth', and The Source, ALLAH is 'Aliymaan 'Knowing', Hakiymaan 'Wise'.

171 Oh Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', (the Torah), don't transgress in your means of judgment, and don't say things about The Source, except facts (beyond any doubt). Surely, Al Masiyh 'The Messiah' Isa Ibn 'Adopted Son' of Miriam is Rasuwl 'One Sent', (of) The Source, ALLAH and Kalimatuhu '(A bearer of) His Words'. He Alqaahaa 'Threw It' Ilaa 'To' Miriam and Ruwhun 'A Soul' Minhu 'From Himself (Himself Not Us, Or We)'; so have faith in The Source, and his Rasuwl 'One Sent', and don't say "Thalaathatun 'Three' (He, The Source, is part of a trinity)". Intahuw 'It is time to Finish it'. It is good for you all. For The Source, ALLAH is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source'; (so far be it) His (His Not Our) glory, that there should exist for Him (Him Not Us) a Walad 'Physical Son'; and all that is in Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth' is His (His Not Ours. All Enosites on Earth are His sons, and daughters), and He (He Not We) is Kafaa 'Sufficient' as a Wakiylaan 'Advocate'.

Tammuz's Humbleness

172 Al Masiyh 'The (Anointed), Messiah' (Tammuz), Yastankifa 'Won't See Himself So High', that he should not be 'Abdaan 'A Slave', for Him (The Source) and nor do Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem Anunnaqi - One Who Are Cherubeem), who are Al Muqarrabuwn 'The Closest', (to The Source); and whoever, Yastankif 'Sees Himself Too High', for His, (His Not Our - The Source's) 'Ibaadat 'Enslavement', and Yastakbir 'Is Big-Chested, Filled With Pride'; So He (He Not We) will gather them all together, unto Himself (Himself Not Us - to judge).

173 So as, for those who are faithful, and work to perfect themselves, So He (He Not We), will pay them in full their (rightful) rewards; and He will increase them in His (His Not Our) preference, and as for those who Astankafuw 'Are Too Arrogant', and Astakbaruw 'Big-Chested, Pouting With Pride'; So He, will inflict upon them, an aching pain; and they will not find besides The Source, for themselves, any near friends, nor an aider.

174 O you Enosites! Indeed, there has come to you all, Burhaanun 'Evidence And Proof' from your Rabb, who is 'Master/Sustainer'; and We, ([We

Not He] the Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' to you all, a Mubiynaana 'Clear' Nuwraan 'Light' - (all the scriptures, and the newsbearers, and the ones sent, the Messiah - Yashu'a/Isa, the Mahdi, and the Mujaddid - Malachi Z. York).

175 So as, for those who have faith in The Source, ALLAH and hold on by way of Him - (endure in their faith); He (He Not We), will cause them to enter into Rahmatin 'Yielding' (mercy), and favour from Himself (Himself Not Us), and he shall lead him into calmness unto Him, (on) the narrow path of those who stand up straight.

The Laws Concerning The Inheritance Of Relatives

176 They ask you, (Muhammad) for a decision of the law - (his followers ask him about his opinion concerning things of the law). Tell them this: "ALLAH will give all of you the decision, concerning all of your distinct relatives. If a Amruw-wun 'Being In Command' Halaka 'Perishes' (dies), and he does not have any Walad 'Son By Birth', and has a sister; she shall get half of what he leaves behind, and he shall be her heir. If she does not have a Walad 'Son By Birth'; if there are sisters, so for them, there shall be two thirds of that which he leaves behind; and if

'Wise'.

166 But, ALLAH Yash-hadu 'Watches' by what has come down to you, (Muhammad). He Anzalahu 'Sent It Down' with 'Ilmihi 'His (His Not Our) Knowledge', and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers' (Floheem Anunnaqi) Yash-haduwn 'Watches', and The Source, ALLAH is (Himself) a sufficient watcher.

167 Surely, those who conceal what they know to be true, and hinder (the Enosites) from The Source's path (Al Islaam). Indeed, they have gone astrayed, into a state of error, far away.

168 Surely, as for those who conceal what they know to be facts, and act unjustly, The Source, ALLAH will not be forgiving to them; and nor will He (He Not We) lead them into calmness to the right path.

169 Except the path to eternal Jahannam 'Hell' to abide in it eternally (those who turn others away from Al Islaam). And that was very easy, for The Source, ALLAH (to do).

170 O you Enosites! Indeed, there has come to you all, by way of the truth Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad), from your Rabb, who is 'Master/Sustainer.' So have faith, it is good for you, and if you conceal what you know to be facts, so surely, for Him (Him Not Us), is all that is in Al

Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'Tiamat/Earth', and The Source, ALLAH is 'Aliymaan 'Knowing', Hakiymaan 'Wise'.

171 Oh Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', (the Torah), don't transgress in your means of judgment, and don't say things about The Source, except facts (beyond any doubt). Surely, Al Masiyh 'The Messiah' Isa Ibn 'Adopted Son' of Miriam is Rasuwl 'One Sent', (of) The Source, ALLAH and Kalimatuhu '(A bearer of) His Words'. He Alqaahaa 'Threw It' Ilaa 'To' Miriam and Ruwhun 'A Soul' Minhu 'From Himself (Himself Not Us, Or We)'; so have faith in The Source, and his Rasuwl 'One Sent', and don't say "Thalaathatun 'Three' (He, The Source, is part of a trinity)". Intahuw 'It is time to Finish it'. It is good for you all. For The Source, ALLAH is Waahidun 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source'; (so far be it) His (His Not Our) glory, that there should exist for Him (Him Not Us) a Walad 'Physical Son'; and all that is in Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth' is His (His Not Ours. All Enosites on Earth are His sons, and daughters), and He (He Not We) is Kafaa 'Sufficient' as a Wakiytaan 'Advocate'.

Tammuz's Humbleness

172 Al Masiyh 'The (Anointed), Messiah' (Tammuz), Yastankifa 'Won't See Himself So High', that he should not be 'Abdaan 'A Slave', for Him (The Source) and nor do Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem Anunnaqi - One Who Are Cherubeem), who are Al Muqarrabuwn 'The Closest', (to The Source); and whoever, Yastankif 'Sees Himself Too High', for His, (His Not Our - The Source's) 'Ibaadat 'Enslavement', and Yastakbir 'Is Big-Chested, Filled With Pride'; So He (He Not We) will gather them all together, unto Himself (Himself Not Us - to judge).

173 So as, for those who are faithful, and work to perfect themselves, So He (He Not We), will pay them in full their (rightful) rewards; and He will increase them in His (His Not Our) preference, and as for those who Astankafuw 'Are Too Arrogant', and Astakbaruwn 'Big-Chested, Pouting With Pride'; So He, will inflict upon them, an aching pain; and they will not find besides The Source, for themselves, any near friends, nor an aider.

174 O you Enosites! Indeed, there has come to you all, Burhaanun 'Evidence And Proof from your Rabb, who is 'Master/Sustainer'; and We, (We

Not He) the Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' to you all, a Mubiynaan 'Clear' Nuwraan 'Light' - (all the scriptures, and the newbearers, and the ones sent, the Messiah - Yashu'a/Isa, the Mahdi, and the Mujaddid - Malachi Z. York).

175 So as, for those who have faith in The Source, ALLAH and hold on by way of Him - (endure in their faith); He (He Not We), will cause them to enter into Rahmatin 'Yielding' (mercy), and favour from Himself (Himself Not Us), and he shall lead him into calmness unto Him, (on) the narrow path of those who stand up straight.

The Laws Concerning The Inheritance Of Relatives

176 They ask you, (Muhammad) for a decision of the law - (his followers ask him about his opinion concerning things of the law). Tell them this: "ALLAH will give all of you the decision, concerning all of your distinct relatives. If a Amruw-wun 'Being In Command' Halaka 'Perishes' (dies), and he does not have any Walad 'Son By Birth', and has a sister; she shall get half of what he leaves behind, and he shall be her heir. If she does not have a Walad 'Son By Birth'; if there are sisters, so for them, there shall be two thirds of that which he leaves behind; and if

they are fraternal, Mortal men and Enosite women, so for Al Dhakari 'The Male, Forgetful One', shall have a like Hadh-dhin 'Fortune', as the Unthaayayni 'Two Second Parts, Females'. ALLAH, only wants to make things clear for you all; or you will go astray in a state of error; and The Source, ALLAH is the 'Aliymun 'Knower' of everything.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Ninety-Three

Revealed In The Year 626 A.D.

Al Zilzaal

(The Earthquake)

Original Order Chapter 93;

Wrong Order Chapter 99

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*When The Zilzaal Quakes, It
Will Bring Forth Its Heavy
Weight - On That Day,
Tiamat Will Tell All Of The
News That Happened To Her
- Her Rabb Has Inspired Her
To Do So - Enosites Will Be
Drought Forth Separately -
He Who Does One Grain Of
Good, He Will See It - And
'Oice 'Oersa*

Earth', quakes, with her Zilzaal 'Terrible Earthquaking'."

2) And the planet Earth (Qi) brings forth its Athqaal 'Heavy Weight.'

3) Then the Enosites will say: "Maa Lahaa 'What Is Happening To Her?'"

4) On that day, the planet 'Earth,' (Tiamat) will tell Hadiyths 'Tales' about all the news of what happened to her (Gaia's Revenge)?

5) That is because your Rabb 'Sustainer,' has Awhaa 'Inspired' for her (to do so).

6) And on that day, (Yawm Al Diyn), the Enosites will come Ashtaata 'Forth Separately', to see their deeds.

7) So whoever does Zarrat '(One) Grain' of weight of Khayran 'Good' (work), he will see it."

8) And as for him who does the Mithqaal 'Weight', of Zarrat '(One) Grain' of Sharra 'Disagreeable', he will see it.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter Ninety-Four

Revealed In The Year 630 A.D.

Hadiyd

(The Iron)

Original Order Chapter 94;

Wrong Order Chapter 57

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The

93 When Al Ard 'The Planet

Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*Glory Be To Yahuwa By
Whatever Is In The Skies And
Qi - Yahuwa Is The First And
The Last - He Khalaq The
Skies And Qi In Six Ayyaam
- He Knows That Which Yafij
From The Earth And Dice
Versa - All Affairs Are
Returned Towards The
Source, Allah - He Causes The
Shadow Hour Period To
Enter The Day - You All Are
To Have Faith In Allah And
His Rasuw - Yahuwa Sends
Down His Aayaat To His 'Abd
- The Mi'raath Of The
Samaawaal And Qi Is For
The Source - Those Who
Shared Willingly And Killed
Before The Faith, Are The
Supreme Beings*

94 Whatever is in the Skies
and the planet Earth, 'Qi,'
Sabaha 'Gave Glory' Lil-Lahi To
Him (Him Not Us)', and He (He
Not We) is Al 'Aziyz 'The
Mighty', Al Hakiym 'The Most
Wise'.

2) For Him (Him Not Us), is
Mulku 'The Rulership' of Al
Samaawaati 'The Skies' and Al
Ard 'The Planet Earth'; Yuhiy
'He (He Not We) Gives Life' and
Yumiyyt 'Causes Death'; and He
has Qadiyr 'Power' over all
things.

3) He (He Not We) is Al Awwal
'The First' and Al Akhir 'The
Last,' Al Zaahir 'The Apparent'
and Al Baatin 'The Hidden' and
He, is the 'Aliym 'Knower' of all
things.

4) And it is He, (He Not We)
who Khalaq 'Created' Al
Samaawaati 'The Skies' and Al
Ard 'The Planet Tiamat' in Sittat
'Six' Ayyaam 'Days' (6- 6000
Year Periods), then he Astawaa
'firmly Established', on Al Arsh
'The Throne'. He knows that
which Yaliju 'Penetrates'
(Enters) in the planet earth and
what Yakhriju 'Comes Forth'
from it, and what Yanzil 'Comes
Down,' from Al Samaa-i 'The
Skies' and what Ya'aruj 'Elevates'
Fiyhaa 'Up In It', (into its
realm); and He (He Not We), is
with all of you, wheresoever you
are; and ALLAH sees that which
you do, (for he is The Seer).

5) For Him (Him Not Us) is the
Mulku 'Rulership' of Al
Samaawaat 'The Skies' and Al
Ard 'The Planet Earth'; and
towards The Source, ALLAH
(alone), Al Umuwr, 'The Affairs,
Commands' shall return.

6) It is He (He Not We) who
causes Al Layl 'The Shadow
Hour Period' to Yuwlij
'Penetrate' (Enter), Fee 'In'
(upon) Al Nahaar 'The
Daytime', and He causes the
Daytime, 'Al Nahaar' to
penetrate (enter) in (upon) Al
Layl 'The Shadow Hour Period',

and He knows the essence of your Suduwr 'Breasts.'

7) You all are to have faith, by way of The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl, (Ahmad), and Anfiqaw 'Share Willingly' of that which He made you all Mustakhlifawn 'The Successors' Fiyhi 'In It'. So these are those of you who have faith from you all, and share willingly, for them, there is a Kabiyr 'Big' Ajruu 'Reward'.

8) And what is wrong with you, that you have no faith in The Source, ALLAH? And the One Sent, (Muhammad) calls all of you, that you may have faith in your Rabb, 'Sustainer' and indeed, he has taken Miythaaqakum 'Your Promise (Covenant)', if you all are of the Faithful Ones.

9) He (He Not We) is who Yunazzil 'Sends Down' Clear Aayaat, 'Signs' unto His (His Not Our) 'Abd 'Slave,' to Yukhrij 'Bring' you all from Al Zulumaat, 'Unjustness' (Spiritual Darkness) into Al Nuwr 'The Light' and surely, The Source, ALLAH is verily Ra'uwf 'Kind' and Rahiym 'Most Merciful' with you.

10) And what is the reason that you don't share willingly in the Sabiyl 'Path' of The Source, ALLAH? And for Him (Him Not Us), is the Miyaath 'Inheritance' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The

Planet Qi/Tiamat, Earth'. An equal is not from (amongst) you all, of those who share willingly and killed before the Fath '(Victorious) Opening' (of the seal). These are the A'azamu 'Supreme' (Beings. There is more than one 'Azim 'Supreme') in Darajatan 'Ranks (Levels), from those who share willingly and killed afterwards; and The Source, ALLAH has promised Al Husnaa 'The Best' to Kullaan 'All' and ALLAH is Khabiyr 'Aware' of all, that which you do.

Whoever Gives The Source A Qard, He Will Double It - On That Day. The Faithful Men And Muw'minaat Will Be Carrying Their Bushraa In Their Right Hands - The Hypocrites Will Be Told To Return Back, Reincarnate And Seek A Light - They Are Their Own Temptation - They Doubted, And Deceived Themselves - There Will Be No Ransom Taken From Them - When Will The Time Come, When The Faithful Must Takhsh'a Their Hearts? - Allah Yuhyiy The Planet Earth And Causes It To Die - The Musaddiqiyn And The Women Who Give Aims, Will Be Rewarded Double With A Generous Reward - Those Martyrs Are The Ones To Be Trusted - Those Who Lie

*About The Eloheem Signs Are
The Companions Of Jahiym
-The Hayaat Of This Dunyaa
Is Just A Game And An
Amusement*

11) Who is there that will Yuqridu 'Loan' The Source, ALLAH a better loan? So he will double for him, and for him is a Kariym 'Generous' reward.

12) On that day, you, (Muhammad) will see Al Muw'miniyn 'The Faithful Males', and Al Muw'minaat 'The Faithful Women' Yas'aa 'Shining' Nuwruhum 'Their Lights' (spiritual light) between their hands, and with their hands, they bring good news to you (on) Al Yawm 'The Day'; Jannnaat 'Gardens' underneath which rivers flow. In them, they will be Khaalidawn, 'Eternally.' That is Al Aziym 'The Supreme' Al Fawz 'Achievement.'

13) On the Day, Al Munaafiquwn, 'The Hypocrites' and Al Munaafiqaat, 'The Female Hypocrites' will say to the Faithful Ones: "Anzurnaa, 'Look At Us,' Naqtabis Min Nuwrikum 'Taking From Your Light'." It will be said, "Return, go back, (from spiritual life to physical life - reincarnate), so Al Tamisuw 'Touch (Seek)' Nuwraan 'A Light'. A Suwr 'Mounted Wall' (barrier) will be Duriba 'Struck Forth' between them, (the good and the evil),

for him, there is a Baabun 'Door'. The Baatin 'Hidden (Inner) Side' of it, is a Rahmah 'Yielding (Mercy)' and the back (outer) side of it, is (the opening) before Al 'Azaab 'The Pain.'

14) They will call out unto them, saying: "Were we not with you all?" They will say: "Of course, but you are the reason for your own Fatan 'Temptation' of your own Anfus, 'Selves' and how you hesitated and you all doubted and you deceived your own selves in Al Amaaniyy 'Vain Desires' until the Amru 'Command' came from The Source, ALLAH and (the Master Deceiver, The Disagreeable One), Gharrakum 'Deceived You All' concerning ALLAH; (and you made all kinds of reasons for not coming to The Source, and the Devil got you).

15) So this day, there will be no Fidyah, 'Ransom' taken from you, nor from those who conceal the facts (with whom you live; you make your companions or friends other than the Peaceful Ones, 'Muslims', so); the fire is your dwelling place (and those friends of yours). It is a (wretched) dwelling place, and and an evil destination.

16) Has not the time come for those who are faithful to Takhsha'a 'Humble' their hearts for the remembrance of The Source, ALLAH and that which

has Nazala 'Come Down' of the facts, (beyond any doubt) and that they don't be like those who were given the Kitaab, 'Scripture' from before (the Children Of Israel/Jacob), so a time of span prolonged upon them, so their hearts became hard. (They fell away from the laws), and most of them are Faasiqunw 'Transgressors.'

17) Know that The Source, ALLAH Yuhyyi 'Gave Life' to Al Ard 'The Planet Earth,' (this is the re-construction of the planet earth) after Muwtihaa 'Its Death', indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have cleared for you all the signs, so that perhaps you all will have some sense.

18) Surely, Al Musaddiqiyn 'Those Males Who Gives Alms,' and Al Musaddiqaat 'Those Women Who Gives Alms' and loans ALLAH a better loan, it will Be Yudaa'if 'Doubled' for them. (They will be rewarded double of that which they give), and for them is a Kariym 'Generous' reward.

19) And those who have faith by way of The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl (Muhammad), these are they who are to be trusted, and Al Shulaadaa'a 'Those Who Watches And Determines (His Death)' in the possession of their Rahh. For them is their reward and their light. And those who

conceal that which they know to be the facts and lie about Our, ([Our Not My] Eloheem Anunnaqi's) signs - (the scriptures); these are the Ashaab 'Companions' of Jahiym 'Hell.'

20) Know that the Hayaat, 'Life' of Al Dunyaa 'The Physical World' is only A La'ib 'Game' and Lahwun, '(A Vain) Amusement' and Ziynatun 'Boasting (Pomp)', and multiplying between you all, and the Takaathir 'Abundance' in wealth and Awlaad 'Children', is like Ghaythin 'Watering By Rain' that which amazes Al Kufaar 'The Husbandman (farmer of) his plants (which under the earth to grow). Then it is withered away and you see it become Musfarr, 'Yellow', then become rubble and crumble down; and in the last day, there is a forceful pain, and forgiveness from ALLAH and Ridwaan 'Pleasures.' And the physical life of this world is only but a deceptive temporary enjoyment.'

*You All Are To Hurry To
The Forgiveness Of Your
Rabb - No Affliction Will
Be Fall The Planet Earth That
Is Not Written About In The
Scriptures - Allah Does Not
Like An Arrogant Mukhtaal
- The Source Is Rich And
Hamiyd - Eloheem Anunnaqi
Sent Their Rusul With Clear*

*Evidences - Man Made
Weapons Out Of The Hadiyd
- The Source Knows Who
Aids Him - Allah Made
Tammuz/Yashu'a Follow
Upon The Footsteps Of The
Source - They Had Invented
Rahbaniyyah, Which The
Anunnaqi Didn't Inscribe On
Them - The Source Will
Forgive The Followers Of
Tammuz For Worshipping
Him 2,000 Years Ago - The
Ahl Al Kitaab Don't Have Any
Power Over Anything*

21) Saabiquw 'Hurry' to forgiveness of your Sustainer/Master, 'Rabb' and Jannatin 'A Garden'. 'Arduhaa 'Its Extension' is as the extension of Al Samaa-i 'The Heavenly Sky' and Al Ard 'Qi' which is prepared for those who have faith by way of ALLAH and His (His Not Our) Rusul, 'Ones Sent.' That is the preference of ALLAH, which He gives to those whom He pleases; and ALLAH is the Dhuw, 'Essence' of Al 'Aziym 'The Supreme' preference.

22) No Musiybah 'Affliction' will befall in the planet Qi, 'Earth and not even in your own selves, except in the Kitaab 'Scripture' from before, that We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Nabraahaa 'Brought It Into Existence'. Surely, that is Yasiyr 'Easy' for The Source,

ALLAH (to do).

23) It is not for you to grieve about that which got away from you all; and dont become happy at what I have given you all, and the Source, ALLAH does not Yuhibu 'Like' nor exult, (rejoice happily) at that which ALLAH has given you all. The Source, ALLAH does not like any arrogant boaster.

24) Those who are Yabkhaluwn 'Avaricious' and command on (other) Enosites that avariceness, and whoever turns back, surely The Source, ALLAH is Al Ghaniyu 'The Independant', Al Hamiydu, 'The One Whom All Gratitude Is Due.'

25) Indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent Our (Our Not My) Rusul (Muhammad) with Bayyinaat 'Clear Evidences' and We (Eloheem Anunnaqi) Nazala 'Sent Down' with them (them not him) Al Kitaab 'The Scripture' and Al Miyzaan, 'The Scale' for Enosites to weigh their conduct with equity and We, (Anunnaqi) Anzal 'Sent Down' Al Hadiyd, 'The Iron', in which is a Shadiyd 'Forceful' Ba'as 'Misery/Violence'. (Man took the iron which ALLAH created and made weapons to kill) and Manaafi 'Advantages' for the Naas 'Enosites'; and that ALLAH may know who Yansuruhu 'Aids Him' (The Mahdi, The Mujaddid, Malachi

Z. York And The Messiah, Yashu'a), and His Rusul 'One Sent' Bi-Al Ghayb 'By Being Unseen' (In Secret). Surely The Source, 'ALLAH' is Qawwiyy 'Strong', 'Aziyy', 'Mighty.'

26) And indeed We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Arsalnaa 'Sent' Noah, and Abrawhawm, and We, (Eloheem Anunnaqi) made in both of their offspring Al Nubuwaat 'The Prophethood,' and Al Kitaab, 'The Scripture.' (All the scriptures came through their seed. So from the seed of Noah, and Abrawhawm); there are some who are Muhtad 'Lead Into Calmness' - (those who follow the Millah, 'Rites' Of Abrawhawm); and most of them, (Noah and Abrawhawm's seed) are transgressors.

27) Then We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) made to follow in their footsteps, Our (Our Not My) Ones Sent, and We sent Our Rusul (from Noah onward); and We made Yashu'a (Isa, Or Tammuz symbolic of Horus), Ibn 'Adopted Son' of Miriam to follow (the other newsbearer) and We (Eloheem Anunnaqi) Aataynaa 'Gave (give the revelations to him. Not by revelation or inspiration. We gave) Him' Al Injiyl 'The Revelations' and We (Eloheem Anunnaqi) made in the hearts of those who follow him (the newsbearer's) Raafatan

'Kindness' and Rahmatan 'Yielding' (Mercy) and they invented Rahbaaniyah 'Monasticism,' (Christians Monks Living Together Without Wives); nor did We (Eloheem Anunnaqi) Katab 'Inscribe' that on them, except the (part of) seeking of the pleasure/consent of The Source, ALLAH; (only the devotion). So don't observe (except) the facts which is right. So We (Eloheem Anunnaqi) gave those who have faith from them, their reward; and many of them still transgressed, (turned back).

28) O you, (followers of Tammuz of 2,000 years ago) who are faithful, (the real Muslims), tremble at the mention of ALLAH and have faith by way of His (His Not Our) One Sent (Muhammad); He will give you all Kiflayn, 'Two Forms' of Rahmatihi 'His (His Not Our) Yielding' (mercy, because you had faith in two of His Rusul); and He (He Not We) will make for you all a Nuwr 'Light' which you will Tamsh 'Walk' Bihi 'With It', - (the light of the facts), and He will forgive you (for worshipping Yashu'a as Him) and The Source, ALLAH is Ghafuwr 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful.'

29) So that the Ahl 'Family' Of Al Kitaab, 'The Scripture' may know that they don't have the power over anything from the Fadl, 'Preference' of The Source,

ALLAH; and surely the preference is with the Yad 'Hand' (ALLAH has hands), of The Source, ALLAH. He (He Not We) gives it to whom He pleases, and The Source, ALLAH is the essence of Al 'Aziym 'The Supreme' preference.

Sudlga Allahu El Azim

Chapter Ninety-Five

Revealed In The Year 622-624 A.D.

Muhammad

(One Who Is Grateful)

Original Order Chapter 95

Wrong Order Chapter 47

Begin All Praises And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*Those Who Turn Enosites
Away From The Path Of
Allah, Their Deeds Will Be In
Vain - The Qur'aan Is Al
Haqq - Those Who Conceal
That Which They Know To
Be The Facts Only Follow
Falsehood - Those Who You
Meet In Battle, Smite Them
On Their Necks - Those Who
Fought In The Path Of Allah,
He Will Not Make Their
Works In Vain - Allah Will
Lead Them Into Calmness And
Improve Their Condition - He
Will Make Them Enter Al*

*Jannat - Allah Will Aid The
Faithful - Those Who Conceal
That Which They Know To
Be The Facts, Will Have A
Nine-Folded Destruction -
Meccans Hate That Which The
Source Sent Down - The
Source Destroyed The
Kaafiriyn With Their
Likenesses*

95 Those who concealed that which they knew to be the facts and hinder (Enosites) from the path of The Source, ALLAH, all of their deeds are vainly in error.

2) And those who have faith and work to perfect themselves and are faithful to that which has been Nuzzila 'Sent Down' upon - Muhammad - (the Qur'aan); and it is indeed, Al Haqq 'The Fact' (beyond any doubt) from their Rabb, who is 'Sustainer'. He conceals from them, their evil deeds; (when the Qur'aan came, all the wicked that the Enosites were doing, The Source washed them away with the facts); and perfected Baalahum 'Their State Of Condition'. (The Qur'aan stopped them from associating partners and all forms of evil).

3) That is because those who conceal that which they know to be the facts, follow (nothing but) the Baatil 'Falseness' and surely, those who have faith, they follow (nothing but) facts

(beyond any doubt), from their Rabb. That is how The Source, ALLAH Yadrib 'Strikes Forth' Amthaalahum 'Their Likenesses' for the Enosites/Naas."

4) And when you meet those who conceal that which they know to be the facts (in battle), so smite them on their Rigaab 'Necks' (with your swords), until you have overcome them; so make a swift bond - (take them as prisoners), or show grace, set them free afterwards or seek a ransom, (payment) from them, until Al Harb 'The War' between yourselves is fixed and its burdens. That is how it should be. And if it pleases The Source, ALLAH, He (He Not We) La-antasara 'Could Have Aided' (Himself) Minhum 'From Them', but this is ordained that he may test some of you, by means of others and those who kill (in the battle), in the Sabiyl, 'Path' of The Source, ALLAH, so He will never (allow) their works to be lead astray (in vain).

5) He (He Not We), will lead them into calmness and perfect (improve) their condition.

6) And He (He Not We), will make them enter Al Jannat, 'The Garden,' which He will make known to them.

7) Oh you who are faithful. If you all Tansur 'Aid' The Source, ALLAH, He (He Not We) will aid you all, and make your Aqdaam 'Feet' firm.

8) And those who conceal that which they know to be the facts, so they will have a nine-folded destruction (9 forms of destruction), and their A'amaal 'Deeds/Works,' is astray in error.

9) That is because they, (the Meccans) hated that which The Source, ALLAH has Anzala 'Sent Down'; so He (He Not We) made their deeds fail.

10) Or do they not Yasiyruw 'Move About' in the planet 'Qi', Earth and see how the Aaqibat 'End' was for those who were before them? And The Source, ALLAH has (brought) utter destruction on them, and for Al Kaafiriyn 'Those Who Concealed That Which They Know To Be The Facts,' is Amthaaluhaa 'Its Likenesses.' (They will go through the same thing)?

*The Source Is Mawlaa To
The Faithful Ones - Those
Who Work To Perfect
Themselves, Allah Will Make
Them Enter Al Jannat - Those
Who Conceal The Facts Will
Be In Al Naar - The Likeness
Of The Enclosed Garden Of
Delight - Those Who Pretend
To Listen To Ahmad In His
Presence Are Those Who Only
Follow Their Loves - Those
Who Are Calmed, The Source
Increases His Calmness - The
Hour Will Come Upon Them
Suddenly - Ahmad, You Are*

*To Seek Forgiveness For
Your Disagreeable Act - Those
Who Have A Marad In Their
Hearts Look At Muhammad
Dumbfounded*

11) That is because The Source, ALLAH is a Mawlaa 'Near Friend' for those who are faithful; and those who conceal that which they know to be the facts, there is no near friend for them.

12) Surely, The Source, ALLAH will make those who are faithful and work to perfect themselves enter Al Jannaat 'The Gardens', with rivers flowing from beneath them; and those who concealed that which they know to be the facts, will temporarily enjoy themselves; and they will eat as Al An'aam 'The Cattle' eats, and Al Naar 'The Fire' will be their Mathwaan 'Dwelling Place'.

13) And how many of the Qaryat 'Village' is more forceful in strength than your, (Ahmad's) village, which We ([We Not He] Eloheem Anunnagi) have driven you out of? We, (Eloheem, Anunnagi) destroyed them, so they will not have any Naasir 'Aider'.

14) Is he who is on a clear path from his Rabb 'Sustainer,' as he whose evil deeds seem Zuyyin 'Fair-Seeming', and they follow Hawaa-ahum 'Their Loves', (Vain Desires)?

15) A likeness of the Jannat 'Garden', that has been promised to Al Muttaqun 'Those Who Tremble And Fear:' In it are rivers of Ghayr Aasinin 'Incorruptible Water' (clear water), and Anhaar 'Rivers' from Milk 'Laban,' that does not changes its taste; and rivers from Khamrin 'Intoxicants' that is Ladhatin 'Delicious' for Al Shaaribiyn 'The Drinkers', and rivers from Musaffan 'Pure' Asal 'Honey.' And for them are all kinds of fruits, and forgiveness from their Rabb, 'Master,' as like he who is in the fire eternally, and boiling water seeps; so it cuts up their bowels.

16) And from amongst them, are those who listen to you, (Ahmad) until when they go forth from your possession, and they say to those who have been given the 'Ilm 'Knowledge:' "What is it he just said?" These are those whom The Source, ALLAH has Taba'a 'Stamped' (an impression) upon their Qalb 'Hearts', and they only follow their Ahwaa, 'Loves. (Vain Desires).'

17) And those who are calmed, He (He Not We), will increase their Hudaan 'Calmness' for them, and He will give them their Taqwaa 'Fear And Trembling'.

18) So do they look for nothing, except for Al Saa'ah 'The Hour' that will come to them

suddenly? So indeed, their conditions, (signs) have come; so how will it be for them when their remembrance comes to them?

19) So know that He (He Not We -The Source); no ILAAHA (ALLAHS), 'Sources' would exist except by way of The Source, ALLAH and you, (Ahmad) are to seek forgiveness for your faults; and as for the faithful men, and the faithful women, The Source, ALLAH knows your movements in the planet Qi, 'Earth' and your dwelling places.

20) And those who are faithful say: "Why has not a Suwrah 'Chapter' been Nuzilat 'Sent Down'? So when a Suwrat 'Chapter' Muhkamat 'Full Of Wisdom' is Unzilat 'Sent Down', and Al Qitaal 'The Killing' is mentioned in it, you, (Muhammad) will see those who have a Marad 'Disease' in their hearts look at you with the dumbfounded look, at the approach of death. So it will be fulfilled for them.

*Obedience And A Fair Saying
Is Better For Them - If
Meccans Return To Their Old
Ways. They Will Verily
Cause Mischief In The Planet
Earth - They Have A Physical
Curse Upon Them - They
Will Not Meditate On The
Qur'aan - Al Shaytaan Is A
False Hope To Those Who*

*Turn Back From Islaam -
The Source Knows Best Their
Secrets - How Is It The
Cherubeem Takes The Evil
Ones Up And Hits Them In
Their Faces And On Their
Backs? - They Only Follow
That Which Displeases The
Source - Those Who Have A
Disease In Their Hearts Think
That They Will Never Be
Brought Forth Before The
Source*

21) Obedience and a fair saying; so when the affair is settled, so then they are Sadaquw 'Trustful', (loyal) to The Source, ALLAH. Verily it would be good for them.

22) So if you did expect to retreat to your old ways, you will surely, cause mischief in the planet Al Ard 'Qi/Tiamat'; and cut the ties of those from Arhaamakum 'The Same Wombs' (as you are from).

23) These are those whom The Source, ALLAH has put a La'ana 'Physical Curse' upon them, and he made them become deaf; and blinded their sight.

24) Will they not Yatadabbaruwn 'Meditate Upon' Al Qur'aan; or are there Aqsaal 'Locks' upon their hearts?

25) Surely, those who turn back once they are (in Islaam), and then (drop out,) and turn their backs after that which was made clear to them of the calmness; Al

Shaytaan, 'Satan, The Reptilian' has indeed won them over and has made it an easy thing for them (to do. And he, Satan, The Reptilian is a false hope).

26) That is because they say to those who hate, that which The Source, ALLAH has sent down: "We will obey you all, in some of the affairs (they are ordered)" and The Source, ALLAH knows all of their Israa 'Secrets'.

27) So how is it, if the Malaa-ikat, (Eloheem Anunnaqi of The Cherubeem, Disagreeable, Malevolent Beings) takes their (the evil ones) souls at death, and hits them in their faces and on their backs?

28) That is because they only follow that which displeases The Source, ALLAH and they hate that which pleases Him (Him Not Us). So all of their deeds are of no avail.

29) Or do those who have a disease in their hearts think that they will not be brought forth to The Source, ALLAH? (Their spitefulness of that which they tried to hide?)

The Eloheem Test You, To Know Those Who Strive Hard Amongst You - The Life Of This Physical World Is Nothing But Play - The Source Will Bring Your Spitefulness Forth - There Are Hoarders From Amongst You - The Source Is The

Independent - Allah Will Bring Forth Another Nation Of Enosites

30) And if We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) please, We (Eloheem Anunnaqi) could have shown them, so that you, (Muhammad) would know them by their Siymah 'Marks' - (the Mark Of The Beast on their forehead and on their hand), and verily you, (Ahmad) shall know them by the Lahn 'Tone' of the things they say; and The Source, ALLAH knows all of your deeds."

31) And verily, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) test you all until We (Eloheem Anunnaqi) know Al Mujaahidiyn 'Those Who Strive Hard' from amongst you all, and those who are patient and We (Eloheem Anunnaqi) will verily, test you all of Akhbaarakum 'Your Information (Records)'.

32) Surely, those who conceal that which they know to be the facts, hindered (turned you away) from the path of The Source, ALLAH and oppose the Rasuwl, (The Real Muhammad), after the leading calmness has already come to them, they won't hurt The Source, ALLAH in any way, and He (He Not We) shall render all of their works fruitless.

33) O you, those who are faithful, you all are to obey The

Source, ALLAH and you all are to obey the Rasuwl 'One Sent,' and don't render all of your works, vainly in falsehood.

34) Surely, those who conceal that which they know to be the facts and they hinder (turn you away) from the path of The Source, ALLAH; then they die and they are concealers of the facts, so then The Source, ALLAH will not forgive them.

35) So don't you all long for and call to Al Salmi 'The Peace' and you all are of Al A'aluwn (El Elyown) 'The Most High Ones' (Abode), and The Source, ALLAH is there with you all (where ALLAH is), and He (He Not We) will not put your works in a state of loss.

36) However, Al Hayaawtu 'The Life' of Al Dunyaa 'The Physical World' (you are in now) is nothing but vain sport (amusement) and play. And if you all are faithful and tremble at the mentioning, He (He Not We) will give you all your rewards and He will not ask you all for your wealth.

37) And if He (He Not We) asks you all for them, He will press you all; and you will hoard on to them; and He will bring your spitefulness forth.

38) Behold! You are of those who were called to share willingly in the path of The

Source, ALLAH, so there were from amongst you all, those who Yabkhal 'Are Hoarders' - (they make a promise to give money and then they go back on their promises) and whoever are hoarders and know that they are hoarders are only neglecting their own selves, and The Source, ALLAH, is Al Ghaniy 'The Independent,' (Rich), and you are Al Fuqaraa-u 'The Poor' (in poverty). So if you turn back, then He (He Not We), will Yastabdil 'Change' (Bring Forth A New) Qawmaan 'Kindred' Ghayrakum 'Other Than You All' - (the way he replaced the Israelites/Jacobites with the Ishmaelites), then they, (the new nation of Enosites) will not be anything like you all - (they will make promises to The Source and keep them).

Sudika Allahu El Azim

Chapter Ninety-Six

Revealed In The Year 622 A.D.

Al Ra'ad

(The Thunder)

*Original Order Chapter 96;
Wrong Order Chapter 13*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Qur'aan Is From

*Muhammad's Rabb, And A
Fact Beyond Any Doubt -
Allah Is He Who Made The
Earth' And Made In It
Towering, Unshakable
Mountains And Rivers*

96 (الر) Alif: ALLAH,
Laaam: The Shadow Hour
Period of Power, Meem:
Miythaaq Raa: The Rasuwls of
The Source. These are the signs
of the scripture - (the Qur'aan),
and which is Anzil 'Sent Down'
to you, (Muhammad) from your
'Master,' who is Rabb. The facts
(beyond any doubt); but most Al
Naas 'Enosites' still don't have
faith.

2) ALLAH is He (He Not We)
who Rafa'a 'Raised' Al
Samawaat 'The Skies' Bi-Ghayr
'Without' any 'Amadin
'Supporting Columns', so that
you will be able to see, then He
Astawaa 'Firmly Established'
(Himself) on Al Arsh 'The
Throne', and He Sakh-khara
'Made Subservient' Al Shams
'The Sun' and Al Qamar 'The
Moon' all running to an
appointed time (365 days for the
sun, and 29 1/2-30 days for the
moon), and He regulates all
affairs (commands), making the
signs plain so that perhaps, when
it comes to meeting with your
Rabb, you will know that it is
certain."

3) And He (He Not We), is who

Madda 'Stretched' the Planet
Qi/Al Ard 'Earth' and made in
it towering, unshakable
mountains and rivers, and from
all of the fruits, He, made in it,
Zawjayn Ithnayn 'Two Pairs Of
Mates'. He Yagh-shiy 'Screens'
the shadow hour period with the
daytime. Surely in that are signs
for a Qawm 'Kindred', that they
may be able to think.

4) And in the planet Tiamat/Qi
there are parts (of the land
having common borders,) adjoining,
and Jannaatun
'Gardens' from A'anaabin
'Grapes' and Zarun 'Corn' and
Nakhiylun 'Date Palms'
Sinwaanun 'Growing From The
Same Root', and without
growing from the same root, he
sprays them by one great water;
and We, ([We Not He] the
Eloheem, Anunnaqi) prefer some
of them, over others in foods.
Surely in this, are signs for a
kindred, so they may
comprehend.

5) And if you are amazed, so
'Ajabun 'Be Amazed' of
Qawlahum 'Their Saying':
"When we were Turaabaan
'Dust', surely we are in a Jadiyah
'New' Khalq 'Creation' (The
Re-Plenishing)." These are those
who conceal what they know to
be the facts by their Rabb; and
these are those whose (hot iron
chains) - shackles are in their
necks, and these are those, the
Companions of the fire. They

will be in it eternally.

*Allah Is The Possessor Of
Forgiveness For The Enosites
And For Every Nation Of
Enosites. There Is A Calmer*

6) And they hasten unto you, by way of evilness before that which is best; and Al Mathulaat 'The Examples' (warning lessons), just passed from before them; and surely your Rabb, is the possessor of forgiveness for the Enosites on their (acts of wrong, in) a state of unjustness; and surely your Rabb who is 'Sustainer/Master', is 'Shadiyd 'Forceful', (severe) in punishment.

7) And those who conceal the facts, say: "Why has no sign, (a miracle) come down to him, (Muhammad) from his Rabb? Surely you, (Muhammad) are a Mundhirun 'Warner'; and for every Qawmin 'Kindred', there is a Haadin 'Calmer'.

*The Source Knows What
The Wombs Want - He Is
The Knower Of The Unseen
And Seen - The Anunnaqi
Are In The Enosites' Midst
- The Source Doesn't Change
A Nation Conditions, Until
They Change*

8) The Source, ALLAH knows what Tahmil 'Carries' Kulu 'Every' Unthaa 'Second Part, Female' and what Al Arhaam

'The Wombs' decreases, as a yielding mercy, (in their due time) and (what it) increases; and He (He Not We) has everything in His (His Not Our) possession, by way of a measure.

9) Knower of Al Ghayb 'The Unseen', (the hidden) and Al Shahaadat 'What Can Be Watched'- (Seen), Al Kabiyr 'The Great', Al Muta'al 'The Inspirer'.

10) He is equal from you all, who kept Al Qawl 'The Saying' Asarra 'Secret,' and who brought it to public with it, (whoever made it known); and he who is one who hides by the Shadow Hour Period and goes forth freely by the Daytime.

11) For Him (All Enosites), there are (Eloheems who are in their midst on the planet Qi 'Earth') who succeed them from between his hands, (the Anunnaqi were before man, in their mist and will be after them) and from behind him, guarding him (Enosites) from the Amr 'Command' Of The Source, ALLAH. Surely, The Source, ALLAH does not change what is with a kindred (their conditions) until they change what is with their ownelves (their conditions). He helps those who help themselves); and if ALLAH wants to bring evil upon a kindred; so then there is no one who can protect them other than ALLAH, The Source.

*It Is Yahuwa Who Shows
You The Lightning - To Allah
Prostrates Whoever Is In The
Skies And The Planet Qi
'Earth' Willingly*

12) He (He Not We) is who shows you all - (let you see) Al Barq 'The Lightning' as a fear, and a Tama'aan 'Ambitious Desire', and He is who spreads Al Thiqaal 'The Heavy' Sahaab 'Clouds'.

13) The very thunder glorifies by way of gratitude and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) out of fear of Him (Him Not Us), and He (He Not We), sends Al Sawaa'iqa 'The Thunderbolts', so He Yusiyybu 'Causes To Hit (Strike)' by it whom He pleases and still they dispute concerning The Source, ALLAH; and He is The Most Forceful, Al Mihaal 'Controller Of Punishment'.

14) His (His Not Our) Da'wat 'Call' - (Diyuu ALLAH) is the facts (beyond any doubt); and those who call on other (so-called deities), besides Him (Him Not Us), don't respond to them in anything; except as one who stretches forth Kaffayhi 'His Palms', towards the water in hope that it will reach his mouth, and it will never reach it; and not even the Du'aa-u 'Call' - (cultural, doctrinal prayer) of those who conceal what they

know to be the facts, 'Al Islaam' is only keeping him astray in a state of error.

15) And for Him (Him Not Us), Yasjudu 'Prostrates' whoever is in Al Samaawaat 'The Skies' (people or beings live in the sky) and Al Ard 'The Planet Qi/Earth' Taw'aan 'Willingly' and Karhaan 'Unwillingly'; and their shadows by the early Daytime hours, and by the late afternoons.

16) Say: "Who is the Rabb of Al Samaawaat 'The Skies' (The Firmaments) and Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat'? Say: "The Source, ALLAH. Say: "Then, did you take besides Him (Him Not Us) Awliyaa-a 'Near Friends' - (idols) who do not have dominion, nor can they benefit nor harm themselves? Tell them this, (Muhammad): "Are the blind and the seeing equals? Or is Al Zulumaat 'Darkness' and Al Nuwr 'Light' equal? Or have they made for him Shurakaa-a 'Associating Partners' who have created as Kalqihi 'His Creation', so the creation seemed alike upon him? Say: "The Source, ALLAH is The Khaaliqu 'Creator' of everything, and He is Al Waahid 'The One', Al Qahaar 'The All Dominant'.

*Those Who Answered To
Their Rabb, There Is The
Beauty - Abu Jahl Is Blind*

*To The Facts - And Those
Who Are Patient Seeking
Nothing, Save The Face Of
Their Rabb, They Shall Enter
Jannaat*

17) He (He Not We), sent down water from Al Samaa-i 'The Skies'. So the valleys dissolved by His (His Not Our) power. So (the flood) - huge stream of water has bore (an increase), a full amount of Zabadaan 'Foam'; and from what they fuel, kindle on it in the fire, a desire of embellishment - (decoration) or an object of delight foams of its likeness. Also, The Source, ALLAH strikes forth the fact (beyond any doubt), and the falsehood. So as for the foam, so it goes in vain uselessly; and for what benefits the Enosites, so it remains (stays) in the Earth. Also, The Source, ALLAH Yadrib 'Strikes Forth' Al Amthaal 'The Likenesses'.

18) For those who answered Al Husnaa 'The Best' to their 'Sustainer' who is Rabb; and those who don't answer to Him (Him Not Us), if for them is what is in the planet Earth together, and its likeness with it, so they give freely with it. These are for them an evil reckoning and their dwelling place is Hell, (for the concealers of the facts,) and a miserable resting place.

19) And is He, (Hamzah) who knows that surely it, (the

Qur'aan) has come down to you, (Muhammad) from your Rabb, is the facts (beyond any doubt), as like he, (Abu Jahl, the infidel who) is blind, (not knowing the fact). Surely, that is a reminder to Uluw 'The First Ones' (Who Pass Through) Al Albaab 'The Door' (Of The Ancient Mystic Order Of Zodoq).

20) Those who fulfill within the 'Ahd 'Covenant' of The Source, ALLAH and don't violate Al Mithaaq 'The Fulfillment Of The Promise' (The Treaty);

21) Those who enjoins what The Source, ALLAH has commanded that it unites and they dread their Rabb, who is 'Master' and they fear evil, of the reckoning;

22) And those who are patient seeking, (desiring) the Wajh 'Face' of their Rabb and they stand up for Al Salaawat 'The Salutation As Worship' and share willingly from that which We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaki) Razaqnaahum 'Provided Them' secretly and openly; and they perceive by Al Hasanat 'That Which Is Best', Al Sayyi-at 'The Wickedness'; these are for them, the end - (consequence) of Al Daar 'The Abode'.

23) They will enter the Jannaat, 'Gardens' Of 'Adnin 'Eden', and those Salaha 'Perfected' from Aabaa-ihim 'Their Fathers', and Azwaa-jihim 'Their Mates', and Dhurriyaatihim 'Their

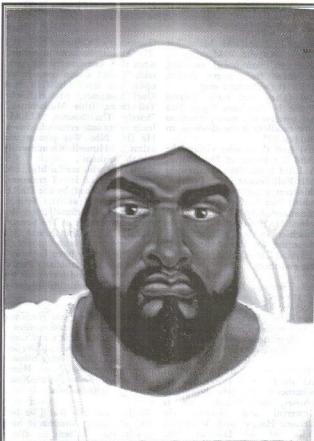


Figure 197
Hamza (One Of The Companions Of Muhammad)

Offspring'; and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messengers', (Eloheem, Anunnaqi) entering on them from every Baabin 'Door' (to welcome them).

24) (They will say:) "Salaam 'Peace' be Alaykum 'Upon You All' because you were patient; so how excellent is the abode as an end result?"

25) And those who violate the 'Ahd 'Covenant' of The Source, ALLAH from after Miythaaqihi 'His Fulfillment Of A Promise' (his treaty); and they cut off that which The Source, ALLAH has commanded by way of it, that which He unites and they make mischief in the planet Earth; these are for them, the La'nat 'Physical Curse', and for them is the evil abode.

*If They Ask You, Muhammad
Why A Sign Has Not Been
Sent Down To You, Tell
Them, The Source, Leads
Astray Into Error Whomever,
He 'Pleases And Calms To
Himself As He Pleases*

26) The Source, ALLAH spreads Al Rizqa 'The Provision' for whomever He (He Not We) pleases, and Yaqdir 'he is powerful' and Farihuw 'He Became Happy' with Al Hayaat 'Life' of Al Dunyaa 'The Physical World' and what is the physical world, in Al Aakhirat 'The End', except a Mataa-un

'Temporary Enjoyment'?

27) And those who concealed what they knew to be the facts said: "Didn't a sign come down upon him from His (His Not Our) 'Sustainer,' who is Rabb? Tell them, (this Muhammad): "Surely The Source, ALLAH leads astray into error whomever He (He Not We) pleases and calms to Himself whomever is Anaab 'Penitent',

28) Those who are faithful, and their hearts is Tatma-innu 'Quieted' (calmed) by the Dhikri 'Remembrance' of The Source, ALLAH. Now Surely, it is by the remembrance of The Source, ALLAH that the hearts are made quiet.

29) Those who have faith and work to Al Saalihaat 'Perfect Themselves,' good fortune is for them, and a beautiful place to return.

*Muhammad Is Sent By The
Eloheem To The Ishmaelites -
No Elohs Would Exist Except
By Way Of Him - Allah Can
Lead All Enosites Into Calmness
If He Pleases - Rusuls Were
Ridiculed From Before You,
Muhammad*

30) Just like this We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have Arsalnaaka 'Sent You', (Muhammad) Fee 'In (Amongst)' a Ummatin 'Nation' (a community - The Ishmaelites.)

Certainly other Umamun 'Nations' (communities - Israelites) passed away before it for you to Tatluw 'Recite' upon them that which We, (The Eloheem, Anunnaqi) Awhay 'Inspired' to you, (Muhammad); and they conceal what they know to be the facts about Al Rahman 'The Yelder'. Tell them (this, Muhammad): "He, is my Rabb, no ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Huwa 'Him' (HU -The Creative Force Of Will). On Him (Him Not Us), I put my trust, and to Him, I will return."

31) And if there was a Qur'aan that could cause the mountains to move, or by way of it, the planet Qi 'Earth' is cut up into pieces, or Kullima 'Words' (be spoken) by Al Mawtaa 'The Dead'. In fact, for Him (Him Not Us), is the command all together (the command of all things). Don't those who have faith know that if The Source, ALLAH pleases, He (He Not We) could lead all Naas, Enosites into calmness? And those who conceal the facts will not be still, until they are inflicted for what they have Sana'uw 'Molded' a striking, or it will come down near to their abode, until there has come the promise of The Source, ALLAH; surely ALLAH does not fail to keep His (His Not Our) promise.

32) And, for indeed Rûsuls were ridiculed from before you. So, Amlaytu 'I Had My Fill' of those who concealed what they knew to be the facts, then I (I Not We, Or Us) took them. So how was the punishment?

Who Can Stand Up To Allah? - Whoever The Source Leads Astray, For Them Is An Aching Pain In The Dunyaa

33) So who is it that can stand up to Him (Him Not Us)? Who is over every person as to what it earns? And they made for Him Shurakaa-a 'Associating Partners'. Tell them: "Samuwhum 'Name Them', or do you think you are informing of that which He does not already know in the planet Earth; or is it just another saying? In Fact, their plot is made to Zuyyina 'Appear Fair-Seeming' for those who conceal what they know to be the facts, and they are hinderers from the path; and whoever, The Source, ALLAH leads astray into error, he will not have any leading calmness.

34) For them is an aching pain in the Dunyaa 'Physical World' and the aching pain of the End is more difficult; and what is for them from The Source, ALLAH, as a Waaqin 'Defender'?

35) A likeness of the Jannat 'Garden,' which He (He Not We)

promised the ones who trembled at the mentioning: rivers flowing from beneath; her food and her shade are everlasting. That is the End - (consequence) of those who tremble and fear and the End (consequence) of Al Kaafireen 'Those Who Conceal What They Knew To Be The Facts,' is the Fire.

36) And those to whom We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) gave the scripture are happy by way of that which has been sent down to you, (Muhammad - the Qur'aan), and of Al Ahzaab 'The Parties,' there are some who denies it afterwards; tell them this, (Muhammad): "Surely, I am ordered to be a slave of The Source, ALLAH and not to Ashrik 'Associate Partners' to Him (Him Not Us). It is to Him I call upon and To Him, I will return.

37) And thus We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent it down, (the Qur'aan) as Hukmaan 'Wisdom' 'Arabiyyan 'In Arabic'; and if you follow Ahwaa-ahum 'Their Low Desires' after that which has come to you of Al 'Ilm 'The Knowledge', there shall not be for you any near friends, from The Source, ALLAH nor a defender (to protect you).

We, Anunnaqi Sent One Sent Before You, Muhammad -

*Anunnaqi Come To Planet Qi
- The Source Knows What
Earns Every Person*

38) And indeed We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) sent the Rusul from before you, and We (the Eloheem, Anunnaqi) made for them Azwaajan 'Mates' and Dhurriyyatan 'Offsprings'; and there was not for a Rasuwl 'One Sent' to come with a sign, except by The Source, ALLAH'S permission. For every determined time, there is Kitaabun 'A Scripture'.

39) The Source, ALLAH will eliminate whatever He (He Not We) pleases and establishes what He pleases; and in His (His Not Our) possession is Ummu Al Kitaab 'The Mother Of The Scripture,' (with all of the scriptures in it).

40) And surely We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) will let you see some of whom we've promised them, or We (the Eloheem, Anunnaqi) cause you to pass away - (take your soul). So however, it is on you, (Muhammad) Al Balaaghu 'The Propagation Of The Facts' (you have to inform them of the facts); and upon Us, ([Us Not Me] the Eloheem), is the Hisaab 'Reckoning'.

41) Did they not see that surely (when) We, ([We Not He] the Anunnaqi) come to the planet

Qi (from Nibiru); We (Eloheem, Anunnaqi) reduced her from her borders. And The Source, ALLAH uses wisdom; there's no one who can punish for His wisdom, and He (He Not We) is quick at the reckoning.

42) And those who were from before them just plotted; so for Him (The Source, ALLAH) is the plotting altogether. He (He Not We), knows what every person earns, and the ones who conceal what they know to be the facts, shall know for who Al Daar 'The Abode' of the end (is for).

43) And those who conceal what they know to be the facts, say: "You, (Muhammad) are not a Rasuwl 'One Sent' of ALLAH" Tell them this (Muhammad): "ALLAH is Sufficient as a watcher between me and between you all; and whomever has in His possession, 'Ilm 'Knowledge' (of The Master - The Mother of) Al Kitaab 'The Scriptures' (The Holy Tablets)."

Sudlqa Allahu El Aqlm

Chapter Ninety-Seven

Revealed In The Year 624 A.D.

*Rahmaan
(The Yelder)*

*Original Order Chapter 97;
Wrong Order Chapter 55*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The

Source, ALLAH, The Rahman
Who Is The Most Merciful.

*The Rahman, Has Taught The
Qur'aan - He Created The
Enosite - He Taught Him Al
Bayaan - And The Sun And
Qamar In Calculated Timing
- The Herbs And Trees
Prostrate - Allah Raised The
Heavenly Sky. And Placed Al
Miyzaan - Enosites Are To
Establish Al Wazn - He Placed
The Creatures In The Planet
Earth*

97 Al Rahman 'The Most
Merciful.'

2) He (He Not We) has 'Allam
'Taught' the Qur'aan.

3) He (He Not We) Khalaq
'Created' Al Insaan, 'the
Enosite'.

4) He (He Not We) 'Alamahu
'Taught Him' Al Bayaan 'The
Clear Evidence.'

5) And Al Shams 'The Sun' and
Al Qamar 'The Moon'
Bi-Husbaan 'In Orbit By
Calculated Timing'.

6) And Al Najmu 'The Herbs'
and Al Shajar 'The Trees'
Yasjudaan 'Prostrate'.

7) And He (He Not We), Rafa'a
'Raised Up' Al Samaa-a 'The
Heavenly Sky' and placed Al
Miyzaan 'The Scale' (to calculate
justice).

8) So that you may not Tatghaw
'Extremely Go Wrong' in the

Miyzaan 'Scales.'

9) And you all are to establish Al Wazn 'Balancement' with equal justice and don't give short measure in the Miyzaan 'Scale.'

10) And Al Ard 'The Earth', He (He Not We) Wada'ahaa 'Placed It' for Al Anaam 'The Cattles' (the creatures).

In It, Are Faakihat And Date Palms - The Habb Having Leaves And Stalks Of Corn And Al Rayhaan - So Which Favors Does The Enosite And Jinn Claim Is A Lie? - He Khalaaq The Enosite From Salsaal - He Created Shakhar From Flames Of Fire - The Rabb Of The Two Easts And Wests - Allah Made The Gihon And Pishon Meet At A Junction - There's A Barzakh In Sudan

11) In it, are Faakihat 'Fruit' and date palms of that which is the essence to Al Akmaam 'Bear Flowers'.

12) And Al Habb 'The Grain' having (leaves and) Al 'Asf 'Stalks Of Corn' and Al Rayhaan 'The Sweet Smelling Herbs.'

13) So in which, Alaa-i 'Favors' of your Rabb, 'Sustainer/Master' will (both of) you, (Enosite and the Jinn) claim is a lie?

14) He (He Not We) Khalaaq 'Created' Al Insaan 'The Enosite' from Salsaal 'Mud' as Fajjaar 'Pottery'.

15) And He (he not we) Khalaaq 'Created' Al Jaanna 'The Jinn', (Shakar) Min 'From' the Maarijin 'Flames' of Naar 'Fire' (of the First Sun Cycle).

16) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

17) The Rabb of Al Mashriqaiyn 'The Two Easts' and The Rabb 'Sustainer' of Al Maghribaiyn 'The Two Wests' (The Sun Cycles Two Moon Cycles).

18) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

19) He Maraja 'Let Loose' Al Bahraiyn 'The Two Seas' (The Gihon, 'Blue Nile' And The Pishon, 'White Nile') Yal-Taqiyaani 'To Meet Together' (into a junction).

20) Between them two, (the White and Blue Niles in Sudan) is a Barzakh 'Barrier' (which they can't pass).

Which Favors Of Your Rabb, Will Both The Jinn And Enosite Claim Is A Lie? - Out Of The Favors Are Pearls And Marjaan - For Allah Is The Jawaar - Only Muhammad's Face Will Yabqaa - Every Day, Allah Is In A State Of Glory

21) So in which, Alaa-i 'Favors' of your Rabb, 'Sustainer/Master'

will (both of) you, (Enosite and the Jinn) claim is a lie?

22) Out of them two, there is to be found Al Luw'luw 'Pearls' and Al Marjaan 'The Coral Stones.'

23) So in which, Alaa-i 'Favors' of your Rabb, 'Sustainer/Master' will (both of) you, (Enosite and the Jinn) claim is a lie?

24) And for Him (Him Not Us), are Al Jawaar, 'The Ships' sailing in Al Bahr 'The Sea' as known mountains.

25) So in which, Alaa-i 'Favors' of your Rabb, 'Sustainer/Master' will (both of) you, (Enosite and the Jinn) claim is a lie?

26) Everyone who is on it (the planet Qi) Faanin 'Will Vanish (Perish).'

27) And Yabqaa 'Keep' (endure) the Wajh 'Face' of your Rabb 'Sustainer' (Muhammad) Dhu 'Possessor' of Al Jalaal 'The Majesty' and Al Ikraam 'The Liberality'.

28) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

29) All will ask Him, who are in Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth', (Human Beings for) every day; He is in (a state of) Shaan 'Splendour.'

*Your Deeds Will Be At
Thaqalaan - Enosites And Jinn
Will Not Be Able To
Penetrate The Aqtaar Of The
Skies, Except By Sultaan*

*- Beams Of Fire And
Brimstone Will Be Thrown At
Them - When The Sky Is
Anshaqqat, It Becomes Rosy
Red - The Dhanb Of The
Enosite Or Jann Will Not Be
Asked About*

30) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

31) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will dispose of you all, (O you Jinns and Enosites), which will be Al Thaqalaan 'Weighed.' (Your deeds will be put on a scale and weighed).

32) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

33) O you Ma'shara 'Assembly' of Al Jinni 'The Demons, (Malevolent Beings, Cherubeems),' and Enosites; if you are able to Tanfudhuw 'Penetrate' the Aqtaar '(vast) Regions,' of Al Samaawaat 'The Skies' (open the vortex) and Al Ard 'The Planet Tiamat/Qi/Earth,' (and on The Planet Earth) then Anfudhuw 'Penetrate' (these hallowed realms. Go down to Shamballah). You cannot Tunfuzuwn 'Penetrate,' except by the (inviolable) Sultaan 'Authoritive Power' (ANU).

34) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

35) He (He Not We) Yursal

'Sends' upon you two, (Enosites and Jinn), Shawaadhun 'Flames Without Smoke' from Naar 'Fire' and Nuhaas 'Brimstone'. So therefore, you two will not be able to Tantasiraan 'Aid Yourselves,' (defend yourselves against it).

36) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

37) So when Al Samaa-a 'The Sky' is Anshaqqat 'Rend Asunder'; so it becomes Wardatan 'Rosy' as Dihaan 'A Red Hide (Leather'. The air is polluted and the sky becomes red like blood).

38) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

39) So on that day, (the Last Day), there will be no questions asked about his, the Enosite's Dhanb 'Faults' nor Jaanun 'Jann's' (the father of the Jinn).

*The Criminals Shall Be
Known By The Mark Of The
Beast - They Call The Blazing
Fire A Lie - They Will Go
Around It, Near Fiercely Hot
Water - There Are Two
Jannat For Those Who Stand
Before - These Two Will
Possess Afaan - In Both Of
Them, Are Two Flowing
Springs*

40) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both

Enosites And Jinn) claim is a lie?

41) Al Majrimuwn 'The Criminals' shall be Ya'raf 'Known' by their Siymah 'Mark' - (the Mark of the Beast - 666), so they shall be taken by the Nawaasiy 'Forelocks' and Al Aqdaam 'The Feet'; (they will be cast into the fire and brimstone with the Disagreeable Ones and his false newsmongers).

42) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

43) This is the Blazing Fire, "Jahannam, Hell" which those who are guilty, call a lie."

44) They, (the Evil Ones) will go around in circles between it and between boiling, fiercely hot water.

45) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

46) And as for him who fears the Maqaam 'Rising Up' of his Rabb 'Sustainer,' are Jannataan 'Two Enclosed Gardens': (1. Blazing fire, 2. Boiling water).

47) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

48) (The two Enclosed Gardens) will possess a variety of Afaan 'Sufferings.'

49) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

50) In both of them, (the gardens) are two springs flowing.

*In These Two Gardens Are
Faakihat In Zawjain - They
Are Reclining On Furush - In
The Two Gardens Are Those
Who Restrained Their Eyes
- They Have Never Been
Touched By Enosites Or Jinn
- As Though They Were Al
Yaaquwt And Pearls - Is The
Jazaa Of The Goodness,
Nothing But Goodness?*

51) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

52) In them, (the two gardens of Eden; [one on Earth] and Paradise [the other in Rizq]) is every kind of Faakihat 'Fruits' in Zawjaan 'Mates, Pairs Of Two's.'

53) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

54) They are Murtaki'yn 'Reclining' on Furush 'Beds' (beds that are also on Earth.) Its Bataa-in 'Inner Linings' are from Istabraq 'Brocaded' (silk), and Janaa 'Produce' of Jannatayn 'Both Enclosed Gardens' for the Daan 'Means Of Judgment, (Decision).'

55) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

56) In them, (the two gardens) shall be Qaasiraat 'Those Who Restrained' Al Tarf 'Their Glance': before them, neither Insun 'Enosites' nor Jaanun 'Jinns' has touched them.

57) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

58) As though they were Al Yaaquwt 'The Rubies' (which you get from stones of the earth) and Al Marjaan 'The Pearls' (pearls which you can get from the sea of the Earth.)

59) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

60) Is the Jazaa 'Reward' of Al Ihsaan 'The Best,' except the best.

61) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

62) And besides these two (garden on Earth and paradise in Rizq) are two other enclosed gardens (one in Shamballah, The Other Shimti).

63) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

64) (Both of the gardens) are Mudhammataan 'Inclining To A Very Dark Green.'

65) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

66) In both of them, (the Enclosed Gardens) are two springs Naddakhataan 'Both Gushing Forth.'

67) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

68) In both are fruits and palms and Rummaan 'Pomegranates.'

69) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

*In Both Of Them Are
Khayraat And Beautiful
Things - The Pubescent
Maidens Will Have White
Eyes With Black Pupils
- They Have Never Been
Touched By Enosites Or Jinn
Before - Blessed Is The Name
Of Your Rabb*

70) In both of them, (the gardens) are Khayraat 'Goodly' and Hisaan 'Beautiful Things.'

71) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

72) They are Huwr 'White Eyed, With Black Pupils,' who are (Pubescent Maidens) Maqsuwraatun 'Restrained' in Khiyaam 'Tents.'

73) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

74) The Enosites nor the Jinns have ever Yatmith 'Touched' them, (the Pubescent Maidens) before.

75) So which Aalaa-i 'Favors' of your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

76) They are reclining on Rafrat Khudr 'Green Cushions,' and beautiful 'Abqariy 'Carpets' (physical things which are on Earth).

77) So which Aalaa-i 'Favors' of

your Rabb, do you, (both Enosites And Jinn) claim is a lie?

78) Tabaarak 'Blessed' is the Asm 'Name' of your Rabb, Dhu 'Possessor' of Al Jalaal 'The Majesty' and Al Ikraam 'The Liberality'.

Sudika Allahu El Azim

Chapter Ninety-Eight

Revealed In The Year 623 A.D.

*A Dahr
(The Time) Or
Al Insaan
(The Enosite)*

*Original Order Chapter 98:
Wrong Order Chapter 76*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*A Dahr When The Enosite
Were Not A Thing To Be
Remembered - Eloheem
Created Him Out Of Nutfah -
Chains And Aghlaal Has Been
Prepared For The Kaafiriyn -
The Righteous Ones Will
Drink Of A Mixture Balm
And Camphor - The Righteous
Muslims Give Food Out Of
The Love For The Poor
Settlers, The Yatiym And The
Captives - They Don't Want
Nothing From Them - The
Faithful Only Fear Their
Rabb*

98 Didn't The Dahr 'Period Of Time', exist of which he, the Enosite was not a thing even to be remembered (the cycles before human creation)."

2) Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Khalaq 'Created' the Enosite from Nutfah 'Semen (Life-Germ, Cloned)' Amshaagin 'Mixed' (With Ovum [Ninti's eggs]), that We (Eloheem Anunnaqi) may Nabtaliyhi 'Test Him' (experiment); so We, (The Eloheem Anunnaqi) made him Samiy'aan 'Hearing' and Basiyraan 'Seeing'.

3) Surely We, (the Eloheem Anunnaqi) calmed him to Al Sabiyl 'The Path' -(agreeable way to do things); it is up to him to either be Shaaskir 'Grateful' (An Agreeable Serapheem) or to be Kafuwr 'Concealing That Which He Knows To Be The Facts' (Ungrateful- A Disagreeable Cherubeem).

4) Surely, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) prepared Salaasil 'Chains' and Aghlaal 'Shackles', and Sa'iyar 'A Flaming (Fire)' for Al Kaafiriyn, 'The Concealers Of The Facts.'

5) Surely Al Abraar 'The Righteous Ones' will Yashrabuwn 'Drink' from a Kaas 'Cup' which has a Mizaa 'Mixture' of Kaafuwr 'Balm and Camphor' (There Are Cups There In Heaven).

6) He, (the righteous Muslims) will drink from an 'Ayn, 'Spring' which is for the slaves of The Source, ALLAH which their (faith) make flow and flow on.

7) They (the righteous Muslims) who fulfill their Nadhri 'Vows' and Yakhaafuwn 'Have Fear' of a day in which all of his Sharr 'Wickedness' will be seen far and wide.

8) And they, (the righteous Muslims) feed and 'Yut'imuwn 'Give Food', out of its Hubb 'Likes' for the Miskiyn 'Poor Settlers,' and Yatiym 'Needy (Orphans)' and the Asiyar 'Captives.'

9) Surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) only feed you all, (the needy) for the Wajh 'Face', (Sake) of The Source, ALLAH and We (Eloheem Anunnaqi) don't want from you all rewards, nor thanks .

10) Surely we, (the faithful) only Nakhaaf 'Have Fear,' from our Rabb 'Sustainer', day of 'Abuwsaan 'Horror, Qamtariyr 'Of Calamity'.

The Source Will Protect The Faithful Ones On That Day - He Will Reward The Peaceful Ones - They Will Be Relaxing On Exalted Couches - Bunches Of Grapes Will Hang Low In Their Reach - Vessels Of Silver And Cups Of Qawaariyr Will Be Circulated - The Righteous Will Have All

*That They Desire - They
Will Be Given A Drink Out
Of Cups Of Spices From
Zanjabiyl - They Will See
Immortal Youths All Around
Them - Which Is The Na'iym
Of His Mulk*

11) So The Source, ALLAH will Waqaahum 'Defend (Preserve) Them', (the righteous Muslims, 'Peaceful Ones'), from the wickedness that will overshadow them that day and cause them, to Nadratan 'Shine In Radiance' and Suruwr 'Happiness'.

12) And he will reward them, (the righteous Muslims) because they were patient; Jannat 'A Garden', and Hariyr 'Silk' (garbs. There is silk there).

13) They will be Muta'ka'iyn, 'Relaxing' in it on Al Aaraa-ik 'Exalted Couches'; they, (the righteous Muslims) will not see in it, (the Enclosed Garden), the Shamsaan 'Sun' (they will not see their sun there), and no Zamhariyr 'Intense Coldness' (No Seasons There).

14) And in it, (the Enclosed Garden) the shade, will Daaniyat 'Hang Low', over them, (the righteous Muslims) and its bunches of grapes will be made to hang low, in reach (grapes are there).

15) And Daaniyatan 'Vessels' of Fiddat 'Silver' shall be Yutaafu 'Circulated' and cups which are of Qawaariyr 'Fine Translucent,

Crystal,' (Silver And Crystal Are There).

16) Qawaariyr 'Translucent, Crystal Glasses' with Fiddah 'Silver' (trim), they, (the righteous Muslims) measuring will be determined. (They will have all they that they desire).

17) And they, (the righteous Muslims) shall be given a drink in it, (the Enclosed Garden) out of Kaasaan 'Cups' which have a mixture of spices of Zanjabiyl 'Ginger' (Physical Things. Spices And Ginger Are There).

18) From a spring which is in it (springs are there in the Enclosed Garden), having the name of Salsabiyl 'That Which Shall Flow.'

19) And all around them, (the righteous Muslims), they will see Wildaan 'Youths' (Children Are There) Mukhalladuwn 'With Immortality'. When you, (the righteous muslims) see them, you will conclude that they, (the immortal youths) are (black) Lu'lu 'Pearls' Manthuwr 'Scattered About'.

20) And when you, (the righteous muslim) look around (in the Enclosed Garden), then you will see the Na'iym 'Grace' and his Kabiyr 'Big' (great), Mulk 'Rulership.'

*The Litled Youths Will Have
On Green, Silken Brocade.
And Silver Bracelets - They
Will Be Given A Pure*

Sharaab - This Is The Reward For The Efforts In Striving - The Qur'aan Was Sent Down By The Eloheem Anunnaqi To Muhammad - Muhammad Is Told, To Be Patient And Don't Obey The Doers Of Disagreeable Acts' - And He Is To Remember His Rabb In The Early Daytime Hour And Through The Shadow Hour Period

21) They, (the youths, the righteous) will have on Istabraq 'Velvet' Khudr 'Green' and Sundus 'Silk,' Thiyaab 'Robes' (brocaded garments; something physical), and shall also have on Asaawir 'Bracelets' from silver; and their Rabb 'Sustainer,' shall give them, (the righteous), a Sharaab Tahuwr 'Pure Drink'.

22) Surely, this Jazaa'a 'Reward' is for you all whose efforts were in striving; you all are worthy of thanks (as you can see heaven or the garden is a physical place. It's another planet with people, black people, food, clothes, jewelry, rivers, springs, wine and more).

23) Surely, We ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi), Nazala 'Sent Down' the Qur'aan, upon you, (Ahmad). (It is Us, Eloheem Anunnaqi) who Tanziyl 'Sent It Down.'

24) So be patient for the Hukm 'Wisdom' of your, (Muhammad's) Rabb, and don't obey any of

them, the Aathim 'Guilty Ones,' or Kafuwraan 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts'.

25) And Adhkur 'Remember' the Asm 'Name' of your 'Master/Sustainer', who is Rabb, in the Early Daytime Hour, (Salaat Al Fajr), and on through the Shadow Hour Period, (Salaat Al Ishaa).

26) And at Al Layl 'The Shadow Hour Period' you are to Asjud 'Prostrate' for Him, (like Muhammad did), and Sabbih 'Glorify' him, for the shadow hour period is Tawiyl 'Long.'

27) Surely, these, they like letting time pass, (wasting time,) just to try and put the greivous day behind them.

28) And We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Khalaq 'Created' them (the worldly Enosites) and Shadadnaa 'Made Them Forceful' (firm to look as if they have it all). When We (Eloheem Anunnaqi) please, We (Eloheem Anunnaqi) change them, (the worldly Enosites with others) just like them; (it is a simple) Tabdiyl 'Change.'

29) Surely this is a Tadh-kiyat 'Remembrance' (to all; this chapter of the Qur'aan.) So Whoever Pleases (Wills), take a Sabiyl 'Path' To His Rabb 'Sustainer'.

30) And whatever you please is nothing, except that which The Source, ALLAH pleases for you.

Surely, The Source, ALLAH is Hakiym 'Wise,' 'Aliym 'Knowing.'

31) He (He Not We) will allow them to enter (in His Enclosed Garden), whom He pleases, out of His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (Mercy); and He has prepared an Aching Pain for Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones.'

Sudiqā Allahu 'El Azim

Chapter Ninety-Nine

Revealed In The Year 627-628 A.D.

*Talaq
(The Divorce)*

*Original Order Chapter 99;
Wrong Order Chapter 65*

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Muhammad And His Followers
Are To Count The Enosites'
Women' Iddah, If They
Divorce Them - Be Kind To
The Women After Their
Iddah - The Source Is
Sufficient For He Who Puts
His Trust In Him - For The
Women, Who Have Reached
Menopause, Their Fixed Term
Is Three Months, And The
Ahmaal Is After Their
Pregnancy - Have Two Male
Watchers Who Will Be Just -
The Source Has The Power*

*To Make Everything Happen -
You Are To Let The Women
Dwell Wherever You Dwell -
The Source Will Make Things
Yusraan, After The 'Usr, The
Eloheem Will Hold Account
The Villages That Disobeyed
With A Shadiyd Chastisement -
The Source, Allah Has Sent
The Qur'aan As A Reminder*

99 O you, Al Nabiyy 'The Newsbearer' (Muhammad), when (you and your followers) Tallaqtum 'Divorce', Al Nisaa 'The (Enosite) Women' so Talliquwhunna 'Divorce Them' for 'Iddatihinna 'Their Prescribed Term' (which is three months) and count the prescribed term; and tremble at the mention of The Source, ALLAH, your Rabb; don't make them go from their Buyuwat 'Houses,' and they shouldn't leave except if they come with clear, Faahishat, 'Abominable (Dishonorable, Evils) Deeds'; and these are the Huduud 'Limits,' of The Source, ALLAH and whoever transgresses the limits of The Source, ALLAH, so indeed he has made himself Dhalama 'Unjust'. You don't know that perhaps The Source, ALLAH will bring a Hadiyth 'Tale' after that Amr 'Affair, Command' (he may change the situation and you want to get back together).

2) So when their Ajal, 'Appointed Time' is reached, (for 'Iddah, it has been fixed 3 months), so then take them, (your wives) back, with kindness, or separate from them with Ma'aruwf 'Kindness'; and have two Ash-hiduw 'Watchers', who will be Adl 'Just' and Aqiymu 'Stand Upright' with that which you watch Lil-Lahi 'For Him'. That is how you all are To Yuw'az 'Admonish' with it, (the divorce), those who have faith by way of The Source, ALLAH and Al Aakhiri 'The Last' Yawm 'Day' and who Yattaqi 'Trembles At The Mention' of The Source, ALLAH, He will make his Mukhrajaa 'Exist Out', (if he follows the laws, things will turn out right).

3) And He, will Yarzuq 'Provide' for him, from Hayth 'Where' he could not Yahtasib 'Expect'; and whoever puts his trust on The Source, ALLAH, So He (He Not We) is Sufficent for him. Surely, The Source, ALLAH Baaligh 'Accomplishes' Amrihi 'His (His Not Our) Command'. He (He Not We) certainly has the Qadiyr 'Power', to make everthing happen.

4) And as for those who no longer Al Mahiyd 'Menstruate', (menopause) from Nisaa-ikum 'Your Women', if you have any doubt about their fixed term, it is three months, and of those who have not as (yet started) to

Yahid 'Menstruate', (become unclean), and as for those Al Ahmaal 'Carrying' (a baby), their fixed term, shall be until they deliver; and whoever trembles at the mention of The Source, ALLAH, He (He Not We) will make all that He orders, Yusraa 'Easy' for him.

5) That is what The Source, ALLAH Amr 'Commands' in that which He (He Not We) sent down to you all (in the scriptures), and as for those who tremble at the mention of The Source, ALLAH, He will Yukaffir 'Cover' all their Sayyi'aat 'Evil Deeds' and make for him a supreme reward.

6) You all are to let them, (the women) Askin 'Dwell' in where you all dwell, by way of your means, and don't annoy them, that you bother them; and if there are women who are bearing, so Anfiqwu 'Share Willingly' with them, until they bear their Haml 'Load'; so if they breastfeed for you all, then you all are to give a recompensation; and Atmiruw 'Take Mutual Counsel,' between yourselves with kindness, and if you find difficulties, so let another (female) Turdi'u 'Breast Feed', for him, (the child).

7) As for him who has Sa'at 'Abundance', (or wealth), he is to Yunfiq 'Share Willingly', from his wealth; and as for him who is (not wealthy), let him Rizq

'Provide' and share willingly from that which he has been given by The Source, ALLAH. The Source, ALLAH does not Yukallif 'Charge', any person with anything except to the extent of what He (He Not We) gave it. The Source, ALLAH shall make things Yusraa 'Easy' after the Usr 'Difficult Times.'

8) And how many Qaryah 'Villages' disobeyed the command of its Rabb, and his Rusul, so We will hold them accounted with a Shadiyd 'Forceful' chastisement; and We, ([We Not He] Eloheem O Anunnaqi) punished them with a horrible pain.

9) So it, (the cities) tasted the evil state, for that which it was commanded and in the end of it, all of its command was a loss.

10) The Source, ALLAH has A'adda 'Prepared' for them, (the rejectors of Millat Abrawhawm), a forceful pain, so tremble at the mention of The Source, ALLAH, O you who are Uwliy 'First Ones' (to pass through) Al Albaab 'The Door' (of the Ancient Mystic Order Of Zodoq); those who have faith that The Source, ALLAH has certainly Anzala 'Sent Down' to you all a Dhikraan 'Reminder', (the Qur'aan).

*Ahmad Recites The Qur'aan,
So Perhaps You All Will
Perfect Yourselves And Get*

*Out Of The Zulumaat - There
Is Jannat For Those Who
Work To Perfect Themselves
- The Source Is He Who
Khalaq The Samaawaat And
Qi - The Source Is Qadiyr
Over Everything - He
Surrounds Everything With
His Knowledge*

11) Rasuwl 'One Sent,' (Ahmad), who Yatlu 'Recites' to you all the clear verses of The Source, ALLAH, (the Qur'aan); that he may bring out from you, those who have faith and will work to Saalihaat 'Perfect Themselves', from Al Zulumaat 'The State Of Unjustness' (Spiritual Darkness) into Al Nuwr 'The Light,' and whoever are faithful to The Source, ALLAH and work to Saalihaan 'Perfect Themselves', he shall enter Jannaat 'Enclosed Gardens' beneath which rivers flow, abiding in them eternally; for The Source, ALLAH has certainly provided the Ahsana 'Best' Rizq 'Provision' for him.

12) The Source, ALLAH is He (He Not We) who Khalaq 'Created' the seven Samaawaatin, 'The Skies' (seven spheres: 1. Troposphere 2. Stratosphere 3. Mesosphere 4. Thermosphere 5. Exosphere 6. Heterosphere 7. Homosphere) and of the planet Qi/Al Ard, 'Earth,' Mithlahunna 'Its Likenesses'. He (He Not We) sends down His (His Not Our)

command between them, (the asteroid belt between the heavens and the planets), so that you will know that ALLAH has the Qadiyr 'Power' over everything and that The Source, ALLAH is indeed Ahaata 'Surrounding,' all things with His (His Not Our) Ilm 'Knowledge.'

Sudiq Allahu El Azim

Chapter One-Hundred

Revealed In The Year

Al Bayyinah

(The Clear Evidence)

Original Order Chapter 100;

Wrong Order Chapter 98

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*Those Of The Ahl Al Kitaab
Couldn't Free Themselves,
Until The Bayyinah Came To
Them - Muhammad Recited
Pure Pages - The Israelites
Became Divided After The
Qur'aan Came To Them -
They Were Only Ordered To
Slave For The Source
Sincerely - Those Who Work
To Perfect Themselves, Are
The Best Of
Creatures - Those Who Dread
Their Rabb Will Have
Jannaat, And Will Be*

*Pleased- And Their Rabb Will
Be Pleased With Them*

100 As for, those who concealed that which they know to be the facts, from the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', (the Israelites; followers of Mosheh, and the Nasaaraa; followers of Messiah Yashu'a), and Al Mushrikiyn, 'Those Who Associate Partners' could not have freed themselves (from falsehood), until the Bayyinat 'Clear Evidence', (the Qur'aan) came to them.

2) Rasuwl (Muhammad), Yatluw 'Reciting' Mutahharatan 'Pure' Suhufaan 'Pages' from The Source, ALLAH.

3) Fiyhaa 'In Them', are straight Kutub 'Inscriptions.'

4) And those who were given the scripture (Israelites/Jacobites, followers of Yashu'a/Tammuz/Isa symbolic of Horus), didn't Tafarraq 'Become Divided' until after Al Bayyinah 'The Clear Evidence', (the Qur'aan) came to them.

5) And they were only ordered except to slave for The Source, ALLAH Mukhlisiyna 'The Purified Ones,' for Him is the Diyn 'Means Of Judgment' and Hunafaa 'Up Righteousness,' and upkeep Salaat 'Salutation As Worship', and He offers Zakaat 'Charity,' and that is the Diyn 'Means Of Judgment' (Al

Islaam), Al Qayimmat 'The Straight Way'.

6) Surely those who concealed that which they know to be the facts from the Ahl 'Family' Of Al Kitaab 'The Scripture', (the Jacobites; followers of Mosheh and the Nasaaraa, followers of Yashu'a, Isa), and Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' shall eternally be in the fire of Jahannam 'Purgatory'. These are they, the most Sharru 'Wicked' of Al Bariyyah 'Creatures'.

7) Surely, as for those who are faithful, and work Al Saalihaat 'To Perfect Their Beings,' these are the very best of Al Bariyyat 'Creatures'.

8) Their Rabb will have in His (His Not Our) possession their Jazaa 'Reward,' the Jannaat 'Gardens,' beneath which Anhaar 'Rivers' flow. They will be in it Khaalidiyn 'Eternally'; The Source, ALLAH is Radiya 'Pleased' with them and they are pleased with Him (Him Not Us). That is for whoever Khashiya 'Dreads' his 'Sustainer/Master,' who is Rabb.

Sudiqu Allahu El Azim

Chapter One Hundred And One

Revealed In The Year 626 A.D.

*Al Hashr
(The Banishment)*

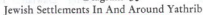
*Original Order Chapter 101:
Wrong Order Chapter 59*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*Allah Took Banu Nadhiyr
From Their Diyaar During
The First Hashr - If The
Source Didn't Kataba About
Their Exile, They Would
Have Received A Great Pain -
They Shaaquw Allah And His
Rasuul - The Killing Of The
Transgressors Is Symbolic To
The Cutting Down Of A
Qiyah - Allah Gave Victory
To His Rusul - That Which
The Source Grants Is For
Muhammad And The Near
Relatives, And The Yataamaa,
And The Masaakiyn - The
Wealth Is Also For The
Muhaajiruwn - The Enosite Of
Yathrib Love The
Muhaajiruwn - Those Who
Came After Them. Ask For
Forgiveness For Their
Akhwaan*

101 All that is in Al
Samaawaat 'The Skies' and in the
planet Qi, 'Earth' Sabbah
'Glorifies' The Source, ALLAH
and He (He Not We) is Al
'Aziyy 'The Mighty', Al Hakiym
'The Wise'.

2) He (He Not We) is who took



those who concealed that which they knew to be the facts, from the Ahl Al Kitaab, 'The Family Of The Scripture' - (Banu Nadhiyr, Jews of Muhammad's time,) from their Diyaar, 'Abodes' for the first Al Hashr 'Banishment'; you did not think that they would go out; and they thought that they were defended in their Husuwn, 'Fortresses' from The Source, ALLAH (and His might and punishment); so The Source, ALLAH came upon them from Hayth 'Where' they did not calculate (or anticipate) and Qadhafa 'Cast Forth' terror in their hearts; and they themselves destroyed their homes with their own hands and the hands of the faithful; so learn a lesson, O you Uwliy 'First' (of those with) Al Absaar 'The Inner Sight,' (Open Third Eye).

3) And if The Source, ALLAH had not Kataba 'Written' about their banishment, (exile), then they would have received a great pain in Al Dunyaa 'The Physical World'; and for them, is a painful fire in The End.

4) That is because they Shaaquw, 'Opposed' The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent, (Muhammad). And who Yushaaqqi 'Is Unhappy' (with) the Source, ALLAH, so surely, ALLAH is Shadiyd 'Forceful' in the punishment.

5) Whatever you cut down, from Liynah 'A Kind Of Palm Tree,' (symbolic of killing these transgressors), or whatever you leave still standing on its Usuwl 'Roots'; so that is by the Izn, 'Permission' of The Source, ALLAH, and (in order) to disgrace Al Faasiqiyn, 'The Transgressors.'

6) And whatever The Source, ALLAH Afaa'a 'Grants' on His (His Not Our) Rasuwl from them, (out of the property of the Enosites of the towns), since you did not fight (the enemy) with your Khayl 'Cavalry' and Riqaab, 'Foot Soldiers Mounted On Camels', but The Source, ALLAH gave authoritative power to His (His Not Our) Rusul, 'Ones Sent' upon what He pleases; and The Source, ALLAH has the Qadiyr 'Power' over everything.

7) That which The Source, ALLAH grants on His (His Not Our) Rasuwl (Ahmad), of the family of the Quraa 'Villages' so, it, (the property) is for The Source, ALLAH and for the One Sent, (Muhammad) and for Al Qurbaa 'Those Near Relatives' and Al Yataamaa, 'The Needy (Orphans)' and Al Masaakiyn 'The Poor Settlers' and Ibn Al Sabiyl 'The Son Of The Path'. This has been prescribed so that the Aghniyaa'a 'Rich' may not divide between themselves, taking Dawlah 'Turns'; and

whatever the One Sent, (Ahmad) gives you, so take it. And that which he forbids for you, avoid it; and tremble at the mention of The Source, ALLAH. Surely The Source, ALLAH, is Shadiyd 'Forceful' (in) Al 'Iqaab 'The Punishment.'

8) (Some of it, the wealth is) for the poor ones Muhaajir 'Who Fled', those who left their abode, (Mecca) and their wealth in order to seek a favour from The Source, ALLAH and pleasure. (They left Mecca for Medina with Muhammad in the year 622 A.D.); and Yansuruwn, 'They Aid' (they are Ansaars) The Source, ALLAH and his One Sent, (Ahmad). These are they who can be Al Saadiquwn/Zodoqites 'Trusted'.

9) And those who made their abode (in the city of Yathrib/Madiynah) and who were in the faith before them, they Yuhibu 'Like' who Haajar 'Makes Hajj (Flee)' to them; (the Enosites of Medina); and you can't find in their hearts, Haajah 'A Need (Thing)' of that which they are given, their wealth. And prefer (them), before themselves though poverty may afflict them; and whoever is defended (preserved) from the Shuhha 'Stingyness' of his Self, these are Al Muflihuwn, 'The Prosperous Ones.'

10) And those who came from after them say: "Our Rabb,

forgive us and those of our Akhwaan 'Brothers' who Sabaquwna 'Preceded Us' in faith, and do not make Ghill 'Ill Will' in our hearts for those who have faith. Our 'Sustainer', who is Rabb; surely you are Ra'uwf 'Kind', (And) Rahiym 'Merciful.'

11) Didn't you, (Ahmad) see how Naafaquw 'Those Who Became Hypocrites' tell their Akhwaan 'Brothers' who concealed the facts Min 'From (Amongst)' the Ahl 'Family' Al Kitaab 'The Scripture' (in conspiracy, the fiction among the family of the scripture - Banu Nadiyr), that: "If you are made to leave (Madiynah), we will certainly leave with you and we will never obey anyone amongst you all, and if someone tried to kill you, we would come to your aid; and The Source, ALLAH is a watcher that they are indeed liars.

*The Hypocrites Turned Their
Adbaar On The Family Of
The Scriptures - The Muslims
Are The Stronger Source Of
Rahbah - The Jews Will Not
Fight To Kill The Muslims In
The Open - Surely Those Of
Eve's And Satan's Seed Will
Be In The Naar Eternally -
Oh Faithful Ones Attaquw
Allah - Those Who Forget
Allah, Then Allah Anasaa
Them - The Companions Of
The Fire Is Not Like The*

*Companions Of The Jannat -
If The Anunnaki, Eloheem
Sent Down The Qur'aan On
A Jabal, You Would Have
Seen It Crumbling - Yahuwa,
Allah Is The Rahman - His Is
The Best Of Names*

12) And (know that) if they, (the Family of the Scriptures) leaves (were driven out), they, (the hypocrites) would not leave with them; and if someone tried to kill them, they (the hypocrites) would not come to their aid and even if they did want to aid them, verily they would turn their backs, (on them), then they will not be aided.

13) Verily you all, (muslims), are the more forceful of Rahbah, 'Terror' in their (the hypocrites) chest from The Source, ALLAH. That is because they are a kindred without any Yafqahuwn 'Overstanding.'

14) They (the so-called Jews of Muhammad's time), will not kill you all, (Muslims) together (out in the open) except in fortified villages, or behind Judur 'Enclosures'. This is because fighting between them, (the different sects) is forceful. You may count them as all together, (as one group), and their hearts are Shattaa, 'All Separated.' That is because they are a kindred who don't Ya'aqiluwn, 'Have Any Intellect -They Don't

Think.'

15) They are like those who, Min 'From' Qablihim 'Before Them' were Qariyb 'Near,' (the tribe of Jacob/Israel of old), they tasted and the (evil) results of their own Amr, 'Command - (the result of disobeying the very law, they were supposed to enforce), and there is an aching pain for them, (the Children Of Israel).

16) It is like Al Shaytaan, 'Satan, the Reptilian', (the Disagreeable One), when he says to the Enosite/Al Insaan: 'Akfur 'You Are To Conceal The Facts', (in your heart of The Rites Of Abrawhawm.) So when (the Enosite) concealed the facts, he (the Disagreeable One) said: "Surely I am Bariy'un 'Free From Guilt' of you. Surely I Akhaaf 'Fear', The Source, ALLAH, Rabb 'Sustainer' of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'."

17) So as for the End, of both of them (1. Satan, the Reptilian's seed and 2. Hawwah/Eve's seed who followed the Disagreeable One), both of them will be in the Naar 'Fire,' Khaaldiyn 'Eternally'; and that is the reward for Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones.'

18) O you who have faith, (real Muslims) tremble at the mention of The Source, ALLAH and know that every Nafs 'Person' is being watched for that which it has sent before it, into Ghad,

'Tomorrow' - (all of its deeds); and tremble at the mention of The Source, ALLAH, for surely ALLAH is Khabiyr 'Aware' of that you do.

19) And don't be like Those Who Nasuw 'Forget' The Source, ALLAH, so he made them forget their own selves, these are those Al Faasiquwn 'The Transgressors.' (They leave Millah Ibrahiym 'Rites Of Abrawhawm, forgetting that which The Source orders them).

20) The companions of the Fire, (those who are forsaken) are not equal to the Ashaab, 'Companions' of the Jannat, 'Garden' - (those who hold on to the rope); the companions of the Jannat 'Garden' they are Al Faa-izuwn 'The Achievers'.

21) If We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) had sent down this Qur'aan on a Jabal 'Mountain,' you would have seen it Khashyati 'Submissive', Mutasaddi'aan 'Splitting' from the Khashyat 'Fear' of The Source, ALLAH and these Al Amthaal 'Likenesses' Nadribuhaa 'We (Eloheem Anunnaqi) Struck Forth' for the Enosites, so that they may Yatafakkaruwn 'Think'.

22) He (He Not We), is The Source, ALLAH who no ILAHS (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Him (HU - The Creative Force Of Will); the 'Aalim 'Knower' of

Al Ghayb 'The Unseen', and Al Shahaadah, 'That Which Is Watched (Seen).' He is The Rahman, 'Yielder,' Al Rahiym 'Merciful.'

23) He (He Not We), is The Source, ALLAH who no ILAHS (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Him (Him Not Us); Al Malik 'The Ruler,' Al Qudduws 'The Holy,' Al Salaam 'The Peace,' Al Muw'minu 'The Faithful' Al Muhaymin 'The Protector' Al 'Aziyz 'The Mighty' Al Jabbaar 'The Majestic' and Al Musawwir 'The Fashioner.' Glory be to The Source, ALLAH from that which they associate as (His) partners.

24) 'He,' (A Yehweh) is Al Khaaliq 'The Creator,' Al Baariy-u 'The Maker' Al Musawwir 'The Fashioner' His (His Not Our) are Al Asmaa Al Husnaa 'The Best Of Names,' (ANU, ELYOWN ELYOWN EL, YEHWEH, ADONIA, ADOWN, SHADI, OLAWM, EL ROI, RABB, ALLAH, EL ELOH, HASHEM); whatever is in Al Samaawaat 'The Skies' and the planet Qi/Tiamat 'Earth' glorifies for Him (Him Not Us); and He is Al Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise.'

Sudiq Allahu El Azim

Chapter One Hundred
And Two

Revealed In The Year 627-628 A.D.

*Al Nuwr
(The Light)*

*Original Order Chapter 102:
Wrong Order Chapter 24*

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*Chapter Of The Nuwr Is Clear
Signs - The Fornicator And
Fornicates Are To Be
Whipped One Hundred Lashes
- The Transgressors Who
Accuse And Can't Bring Four
Watchers. They Are To Be
Whipped Eighty Times*

102 Suwratun 'This Chapter' have We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' and We, (Anunnaqi) Faradnaa 'Made It Obligatory' and We, (Eloheem) Anzal 'Sent Down' in it, (Chapter of the Nuwr 'Light') Bayyinaat 'Clear' Aayaat 'Signs', so that perhaps you all Tadhakkaruwn 'May Remember'.

2 Al Zaaniyat 'The Fornicates' and Al Zaaniy 'The Fornicator', so are to each be leather whipped, one hundred lashes with a leather whip, and don't you all take any pity on them two, in the Diyn 'Means Of Judgment' of ALLAH, if you all

are faithful by way of that which is from The Source, ALLAH and the last day, and a part from Al Mu-miniyn 'The Faithful Ones', to Yash-had 'Watch' 'Adhaabahumaa 'Both Of Their Pain'.

3) Al Zaaniy 'The Fornicator' is not to marry except a Zaaniiyatan 'Fornicates', or Mushrikatan 'A Women Who Associates Partners'; (he can't marry a virgin), and the fornicates, don't marry her to any, except the male fornicator or one who associates partners; that is Hurrima 'Forbidden' for Al Mu-miniyn 'The Faithful Ones'.

4) And as for those who accuse, and cause women who are chaste to be discarded, and then don't bring Arba'at 'Four' Shuhadaa-a 'Watchers', so they are to be Ajliduw 'Leather Whipped' with eighty, Jaldataan 'Leather Strokes With A Leather Whip'; And don't ever accept from them any Shahaadataan 'Watchers': and these are those who are Al Faasiqun 'The Transgressors'.

5) Except those who have repented from after that, and became perfect. So surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

*If The Accuser Of His Mate
Finds Four Watchers. He Is
Of The Trustful - But The*

*Fifth Oath Will Avert The
Pain From Her - The Source
Is The Acceptor Of Repentance*

6) And as for those who accuse Azwaajahum 'Their Own Mates' (their wives), and there does not exist for them, (the accusers) Shuhadaa-u 'A Watcher' - (some person or persons who have seen the disagreeable act), except themselves; so, the Shahaadatu 'The Watcher' of each one of them, Arba'u 'Four' Shahaadaatin 'Watchers' (swear) by The Source, ALLAH that surely he, (the watcher) is of Al Saadiqiyn 'The Trustful' (or that his word can be trusted);

7) And the fifth, that the La'nat 'Curse' of The Source, ALLAH be upon him, if he was from Al Kaadhibiyn 'The Liars';

8) And it, (the fifth watcher) will avert the pain from her, (the accused mate), that she Tash-hada 'Watches' Arba'a 'Four' Shahaadaatin 'Watchers' by way of The Source, ALLAH. Surely he, (the accuser) was from Al Kaadhibiyn 'The Liars.'

9) And the fifth (watcher), that the Ghadaba 'Wrath' of ALLAH be upon her, if he was from Al Saadiqiyn/Zodoqites 'The Trustful Ones'.

10) And if not for the preference of The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy) upon you all, and that The Source,

ALLAH is the Acceptor of Repentance, (the) Hakiym 'Most Wise'.

11) Surely, those who come with lies they made up, are a 'Usbatun 'Body Of Enosites Of Ten To Forty' from you all. Don't consider it disagreeable to you. In fact, it is good for you all. For every Amriy-yin 'Commander' of them (is the punishment), that which he has earned from Al Ithm 'The Guilty Act'; and he who is from them who performed the biggest part of it, (the guilty act), for him is a 'Aziym 'Supreme' pain.

*When The Muw'miniyn And
The Muw'minaat Heard It.
Why Did They Not Think Of
It. As A Goodness For
Themselves - Those Who Love
To Spread Scandal About The
Faithful. They Will Have An
Aching Pain In The Physical
World And The End*

12) Why didn't Al Muwminiyn 'The Faithful Males' and Al Muw'minaat 'The Faithful Women' when you heard it, think of goodness for yourselves, and they said: "This is a clear lie."

13) Why didn't they come forth unto it, (the trial) with Arba'at 'Four' Shuhadaa'a 'Watchers?' So if, they can't bring forth Al Shuhadaa-i 'The Watchers', (four of them to the trial), so (then

these become nothing), but liars in the possession of The Source, ALLAH.

14) And if it had not been for the preference of The Source, ALLAH upon you all and His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (Mercy), in the physical world and The End. A 'Aziym 'Supreme' pain would have touched (afflicted) you, of that which you all rushed into.

15) When you all received it with your tongues, and you all say with your mouths that which you all do not have any knowledge of; and you all reckon it lightly and he is 'Aziym 'Supreme', in the possession of ALLAH;

16) And when you all heard it, You all didn't say: "What exists for us that we speak of this? Glorify be to you." This is a 'Aziym 'Supreme' Buhtaan 'Slandering'.

17) The Source, ALLAH admonishes that you all never return to Mithlihi 'His (His Not Our) Likeness', if you all were faithful.

18) And The Source, ALLAH makes clear Al Aayaat 'The Signs' and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing', Hakiymun 'Most Wise'.

19) Surely, those who like to spread Al Faahishatu 'The Abominable', (filthy scandal) Fee 'In Amongst' those who have faith, for them is an aching pain

in the physical world and in Al Akhiraah 'The End' and The Source, ALLAH knows, and you do not know."

20) And if it had not been for the preference of The Source, ALLAH upon you all and His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy), and that The Source, ALLAH is Rauwf 'Kind,' Rahiym 'Most Merciful.'

*O Faithful Ones, Don't Follow
The Footsteps Of Samael -
Don't Let Those With
Opulence, Not To Give To
The Qurbaa, And The
Masaakiyn - Those Who
Accuse The Faithful Women
Will Have A Pain In The
Physical World And The End*

21) O you who have faith, don't follow the steps of Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian'; (also known as Samael, Nakhsh, Haylal son of Shakhar and Mylitta) and whoever, follows the footsteps of Satan, (the Reptilian, the Evil One), so surely he orders by way of Al Fahshaa-i 'The Abominable' (indecentcies) and Al Munkar 'Evil'; and if The Source, ALLAH did not prefer for you out of His Rahmat 'Yielding' (mercy), not one of you would had ever been of pure (mind). However, The Source, ALLAH purifies (the mind), of whom He (He Not We) pleases and He The

Source, ALLAH is Samiy'un 'Hearing', 'Aliymun 'Knowing'.

22) And do not make those with preference from you and plenty of opulence (swear) not to give to Al Qurbaa 'The Near Relatives', and Al Masaakiyn 'The Poor;' and Al Muhaajiriyn 'The Migrators' (from Mecca to Medina who left their homes) in the path of The Source, ALLAH, and they should forgive and pardon. Do you all not like that The Source, ALLAH forgives you, and the Source, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

23) Surely those who accuse Al Mahsanaat 'The Chaste', Al Ghaafilaat 'The Neglectful', Al Mu-minaat 'The Faithful Women', they are Lu'inuw 'Cursed' in the physical world and the End; and a 'Aziym 'Supreme' pain will be for them.

24) On that day, their tongues and their hands and their feet will Tash-haduw 'Be A Watcher' of all that which they did.

25) On that day, The Source, ALLAH will fulfill His Factual Diyn 'Means Of Judgment;' and they will know that ALLAH, He (He Not We) is the Mubiyn 'Clear' Facts.

26) Al Khaabithaat 'The Filthy Disagreeable Women' are for the Filthy Disagreeable Males; And the Filthy Disagreeable Males are for the Filthy Disagreeable Women; and Al Tayyibiyn 'The

Agreeable, (Clean) Women' are for Al Tayyibiyn 'The Agreeable, (Clean) Male'; and Al Tayyibun 'The Agreeable, (Clean) Males' are for Al Tayyibaat 'The Agreeable, (Clean) Women'. These are ones who are freed 'innocent' of that which they say. For them is a Mughfiratun 'Forgiveness' and a Kariym 'Generous' Rizqun 'Provision'.

Don't Enter Houses, Until You Become Familiar With Them, Or You Are Given Permission - You May Enter Uninhabited Houses - Faithful Males Are To Lower Their Eyes, And Guard Their Private Parts - And For The Faithful Women, You Are To Guard Their Private Parts - They Can Display Their Body Parts To Their Bu'uwlah And Their Relatives - Marry The Saafiliyn Amongst You - Don't Compel Your Young Maid Slaves To Fornication

27) O you who are faithful, don't enter houses, other than your houses, until you become familiar and give salutation on their Ahl 'Family'. That is good for you all, so that perhaps you will remember.

28) So if you all didn't find anyone in them, (the houses), so don't enter them, until permission is given to you; and if

you all are told to return, so return. It's pure for you all, and The Source, ALLAH knows that which you do.

29) It's not a crime on you all, to enter houses not dwelled in, 'uninhabited.' In it is a temporary provision for you all; and The Source, ALLAH knows that which you all Tubduwn 'Manifest,' and that which you Taktumuwn 'Hide'.

30) Say to the faithful males that they should Yagh-dudna 'Lower' their Absaar 'Sights' (eyes) and Yahfadh 'Guard' their Furuwj 'Private Parts'. That is purer for them. Surely, The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' with that which they Yasna'uwn 'Mold'.

31) And tell the faithful women (those who follow the Qur'aan,) that they are to Yagh-dudna 'Lower' their Absaar 'Sights' (cast their eyes downward), and to Yahfadhna 'Guard', 'keep their Furuwj 'Private Parts' covered, and do not display their ornaments - (parts of their body) except for that which appears there of - (hands, feet) and also they are to wear a Khimaar 'Face Veil' (that covers their face) and Yadrib 'Hits' Alaa 'Upon' their Juyuwb 'Bosoms' and they don't display their body parts except to their Bu'uwlah/Baals 'Lords And Masters,' (their mates, 'husbands') or Aabaa-ihinna

'Their Fathers' or Aabaa-i 'The Fathers' of Bu'uwlatihinna 'Their Baal (Husband - Father-In-Laws) or Abnaa-ihinna 'Their Own Sons' or Abnaa-i Bu'uwlatihinna 'Their Adopted Sons From A Husband', or Ikhwaanihinna 'Their Own Brothers', or Baniy Ikhwaanihinna 'Their Nephews Brother's Sons' or Baniy Akhwaatihinna 'Their Other Nephews, (Sister's Sons)' or Nisaa-ihinna 'Their Women' (Muslim women), or those on who are possessed by their right hands - (women their husband take care of), or their followers (slaves), not those who have sexual desire from our mortal men (slaves), or the little children who have no knowledge of women's 'Awraat 'Nakedness' and let them not Yadrib 'Strike' Bi-Arjulihiinna 'With Their Feet' in order to make known that which they are hiding from Ziynatihinna 'Their Ornaments (bust, posterior, etc., of your body parts); And turn to the Source, ALLAH altogether; Oh you who are of the faithful, so that you will be prosperous.

32) And marry those among you, who are Yaamaa 'Single' and the Salihiiyn 'Perfectionists' from Ibaadikum 'Your Male Slaves' and Imaa-ikum 'Your Female Slaves'. If they were poor, The Source, ALLAH will make them independent from

His (His Not Our) preference, and The Source, ALLAH is Waasi'un 'Comprehensive', 'Aliymun 'Knowing'.

33) And let those who don't find marriage to refrain (from the forbidden), until The Source, ALLAH makes them independent from His (His Not Our) preference; and those who seek Al Kitaab 'The Scripture' (written decree) from that which your right hand possesses. So Kaatibuwhum 'Give Them A Written Decree', if you know goodness to be in them; and give them from wealth of ALLAH who gave you all, and don't compel your young maid slaves, to Al Bighaaa-i 'Fornication', when they wanted to be chaste; for you all to seek (temporal goods, 'advantages') of the life of the physical world; and who compels them, so surely The Source, ALLAH from after their compulsion, is Ghafuwr 'Forgiving,' Rahiym 'Most Merciful.'

*Anunnaqi Sent Down Clear
Signs - The Source Is The
Nuwr Of The Skies And Qi -
The Source Permits
His Name To Be Extol In
The Houses - Mortal Men
Will Not Be Occupied With
Merchandise And Selling -
Those Who Conceal The
Facts, Their Works Are Like
A Mirage*

34) And indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent down to you all clear signs, (scriptures) and a Mathalaan 'Likeness' from those who passed away before you all - (that which happened in the realm of the Eloheem, Anunnaqi - the war) and (as a) Maw'idatan 'Admonition' for those who tremble and fear.

35) The Source, ALLAH is the Nuwr 'Light' of Al Samawaat, 'Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth' a Mathalu 'Like' of His (His Not Our) light, is as a niche, and in it is a Misbaah 'Lamp', Al Misbaah 'The Lamp' is in a Zujaajat 'Glass', Al Zujaajat 'The Glass' is as it were a Durriyyun 'Shining' Kawkab 'Star', Yuwqad 'Brightly Lit' from a Mubaarakatin 'Blessed' Zaytuwnatin 'Olive' Shakaratan 'Tree', not Sharqiyatin 'Eastern' and not Gharbiyyatin 'Western'. Its oil whereof, almost glows forth of itself; and even though the Naar 'Fire' does not touch it; Nuwrun 'Light' upon Nuwrin 'Light', The Source, ALLAH calms His (His Not Our) light to whomsoever He (He Not We) pleases; and The Source, ALLAH Yadrib 'Strikes Forth' Al Amthaal 'The Likeness' for the Enosites and The Source, ALLAH is the (best) 'Aliymun 'Knower' in everything.

36) In houses, The Source, ALLAH has permitted to Tarfa'a

'Be Exalted' and Yudhkar 'Remember' Ismahu 'His Name' in them. Glory be to Him (Him Not Us), in them in the Early Daytime Hour and through the Shadow Hour.

37) Rijal 'Mortal Men' will not be occupied with merchandise and there will be no selling to divert them from the remembrance of The Source, ALLAH, and the upkeep of Salaat 'Salutation As Worship' and the giving of Zakaat 'Charity' and they will fear a day, (the Last Day) in which their hearts and sight will Taqallabu 'Turn About' - (eyes turning back and forward).

38) That The Source, ALLAH to reward them the best of that which they did, and He (He Not We) increases for them from His (His Not Our) preference; and The Source, ALLAH Yarzuqu 'Provides' when He pleases without reckoning.

39) And as for those who conceal that which they know to be the facts, their works are like a Saraabin 'Mirage' in a small place. He who is thirsty, thinks it is water until when he comes to it and doesn't find anything, and finds, The Source, ALLAH has him in His (His Not Our) possession, so (The Source) is to give a reckoning and The Source, ALLAH is fast in the reckoning.

40) Or like Zulumaat 'Darkness'

in a Yujjiyyin 'Vast And Deep' Bahrin 'Sea'; a Mawj 'Wave' Yaghshaahu 'Covers Him', from Fawqihi 'Above, (Over) it', a wave from above (over) it, is Wahaabun 'A Cloud'; Zulmaatun 'Darkness'; one above (over) the other. If he took out his hand, he was not able to see it; and he whom, The Source, ALLAH didn't make a Nuwraan 'Light' for him, so there's not a Nuwrin 'Light' for him.

*Those Who Are In The Skies
And Qi/Al Ard Glorifies Him.
Allah - To Him, Is The Mulk
Of The Skies And Qi*

41) Did you not see, that The Source, ALLAH, to Him (Him Not Us), glorifies those who are in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat' and Al Tayru 'The Birds' Saafaatin 'Extending Their Wings', all just 'Alima 'Knew' Salaatahu 'Its Salutation As Worship', and Tasbiyhahu 'Its Glorification'; and The Source, ALLAH 'Aliymun 'Has Knowledge' of that which they are doing.

42) And Lil-Lahi 'For Him (Him Not Us)', is the Mulk 'Rulership' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi', and the Masiyr 'Destiny' is to The Source, ALLAH.

43) Did you not see that, The Source, ALLAH Yuzjiy 'Penetrates' (propels) the Sahaabaan 'Clouds', then Yu-allifu 'Joins' them together. Then He (He Not We) makes them in Rukaamaan 'Heaps', so you can see Al Wadqa 'The Rain Issuing' forth from its Khilaal 'Midst' and He Yunzzil 'Sends Down' from Al Samaa-i 'The Skies' from Jibaalin 'Mountains' which hail is in them. So He (He Not We) pours it forth (afflicts) with it whomever He pleases; and He Yasrifuhu 'Diverts It' from whomever He pleases. The flashing of Sanaabarqihi 'His Lightning', almost has taken away Al Absaar 'The Sight'.

Allah Makes The Shadow Hour And The Nahaar To Take Turns - Every Living Thing Was Created From The Water - Those Who Say They Have Faith In The Source And Muhammad, A Party From Them Turns Averse

44) The Source, ALLAH makes the Layla 'Shadow Hour' and Nahaar 'Daytime' to Yuqallibu 'Take Turns'. Surely in that, is an 'Ibratan 'Instructive Warning Lesson' for the ones with Al Absaar 'Sight'.

45) And The Source, ALLAH Khalaq 'Created' from Maa-in

'Water' Kulla 'Every' Dabbaat 'Living Creature' (All Creatures Evoluted From Water). Some of them Yamshiy 'Walk (Move)' upon Batnihi 'Their Bellies' and there are those which Yamshiyu 'Walk' on Rijlayni 'Two Feet', and there are those which Yamshiy 'Walk' (move around) on Arba'in 'Fours' (four legs). The Source, ALLAH Yakhluqu 'Creates' that which He pleases. Surely, ALLAH has power over all things.

46) Indeed We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Anzalnaa 'Sent Down' verses which were Mubayyinaat 'Clear', (self-explanatory) and The Source, ALLAH will lead into calmness whom He (He Not We) pleases to the narrow path of the ones who stand up straight.

47) And they say: "We have faith by way of The Source, ALLAH and by way of the Rasuwl 'One Sent' and we obey. Then after that, a Fariyq 'Portion' from them turns away; and these are not (they who are) in with the faithful ones.

48) And when they called upon The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Muhammad), to use wisdom between them, a Fariyqun 'Portion' from them, turns away, (averse).

49) And if Al Haqq 'The

(Undisputable) Facts' existed for them, they come to him Mudh'iniyn 'Obediently'.

50) Is there a disease in their Quluwb 'Hearts,' or they have doubts, or they fear that The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent will deal unjustly upon them? In fact, these are the ones in a state of unjustness.

51) However, the Qawl 'Saying' of Al Mu-miniyn 'The Faithful Ones' when they called unto The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Muhammad) to use wisdom between them, is that they say: "We hear and we obey." And these are Al Muflihuwn 'The Prosperous Ones'.

52) And he whom obeys The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent,' and Yakhsha 'Dreads' The Source, ALLAH and fears and trembles him, so these are they, who are Al Faa-izuwn 'The Achievers'.

53) And Aqsamuw 'They Swear' by The Source, ALLAH Jahda 'Binding' their Iymaan 'Faiths', that if you commanded them they will come forth. Tell them, (Muhammad): "Don't you all Tuqsimuw 'Swear', a known Taa'atun 'Obedience'? Surely, ALLAH is Khabiyrun 'Aware', of that which you all do.

54) Say: You all are to obey The Source, ALLAH and obey the

Rasuwl (Ahmad), so if you all turn away; so however, it is on him that which he Hummila 'Carried', and on you all that which you all carried, and if you obeyed him, you are lead into calmness; and it's not on the Rasuwl 'One Sent' except the Mubiyn 'Clear' Balaagh 'Propagation Of The Facts'.

55) The Source, ALLAH has promised those who are faithful from you all and work for perfection, that He (He Not We) will certainly appoint them Khulafaa'a 'Successors, Khalifas -Ones Left Behind' in the planet Qi, 'Earth' as He appointed Khulafaa 'Successors, Khalifas -Ones Left Behind' from those who were before them; and He will establish for them their means of judgment which He has chosen for them; and that certainly He will, after their fear, in exchange, give them secure faith. They shall slave Me (Me Not We Or Us). Don't Yashrukuwna 'Associate Partners' Biy 'With' Shayaan 'Anything', and who conceals that which they know to be the facts after that, so these are they, Al Faasiquwn 'The Transgressors' (the wicked ones who breaks the laws).

56) And stand up for Salaat 'Salutation As Worship' and give Zakaat 'Charity,' and obey the Rasuwl 'One Sent', (Muhammad), that perhaps you

all will be given a Rahmat 'Yielding' (mercy).

57) And don't you reckon those who conceal that which they knew to be the fact, are Mu'jiziyn 'Frustrated' in Al Ard 'The Earth' and their resting place is Al Naar 'The Fire', and Al Masiyr 'The Destination' will be a miserable, wretched place.

58) O you who are faithful, let whom your right hand possess (your slave, maids) and those who didn't reach Al Huluma 'The Age Of Puberty' from you to seek permission 3 times from before Salaat Al Fajr 'Salutation As Worship Of The Breaking Of Day' and when you place Thiyaabakum 'Your Garments' from Al Dhahiyrat 'The Mid-day Heat', and from after Salaat Al Ishaa'a, 'Salutation As Worship Of The Late Evening', 3 times of 'Awraatin 'Nakedness' Lakum 'For You All' (three times of undressing for you). It's not a crime on you all and not on them afterwards, those who go around about you and others. Just like that, The Source, ALLAH makes clear for you all the signs, and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing', Hakiym 'Most Wise'.

*Let The Atfaal Seek Permission
Just Like You Did, Before
Them - There's No Blame
Upon Them For Women Past
Childbearing Who Don't Want*

*Marriage - There's Not A
Restriction Of The Blind,
Lame Or Sick To Eat From
Their Relatives Houses*

59) And when the Atfaal 'Little Children' from amongst you reach puberty, so let them seek permission like that which, those who sought permission from before them. Just like that, The Source, ALLAH makes His (His Not Our) signs clear for you all, and ALLAH is 'Aliymun 'Knowing', Hakiymun 'Most Wise'.

60) And the women who are past childbearing who don't hope for marriage, so there is no crime upon them; if they place Thiyaabahunna 'Their Garments' without ornamenting themselves with adornment, and that they refrain (from the forbidden) is good for them; and The Source, ALLAH is Samiy'un 'Hearer', 'Aliymun 'All Knowing'.

61) There's not a restriction on the blind one, and there's not a restriction on Al A'araj 'The Lame One', and there is not a restriction on the sick one; and not on yourselves to eat from your houses, or houses of your fathers, or houses of your mothers, or houses of your brothers or houses of your sisters, or houses of your paternal uncles or houses of your paternal aunts, or houses of your

maternal uncles, or houses of your maternal aunts, or that which you possessed, the Mufaatihah 'Keys' of your Sadiyq 'Friend'. There's not on you all, a crime to eat together or separately. So when you all entered houses, so Salimuw 'Give Salutation' on yourselves. A blessed, agreeable greeting, from the possession of The Source, ALLAH. ALLAH also makes the signs clear for you all, that perhaps you all will comprehend.

Surely Those Who Are Faithful To The Source And Ahmad, Sought His Permission - Don't Make The Calling Of The Rasuwl Like The Calling Amongst Yourselves - Surely, That Which Is In The Skies And Earth Is His - The Source Is The Knower Of Everything

62) Surely, the faithful ones, those who have faith in The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent (Ahmad) and when they were with him on a affair (matter) together, they didn't go until they sought permission from him. Surely, those who seek permission from you, these are those who have faith in The Source, ALLAH and His One Sent (Muhammad). So when they seek permission from you for some of their affairs, so

give permission to whom you will from them; and ask The Source, ALLAH to forgive them. Surely ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

63) Don't you all make calling of the Rasuwl between you all, as your calling of one another. The Source, ALLAH just knows of those who withdraw themselves privately, from you all seeking shelter. So be cautious of those who oppose a test (temptation) from His command to afflict them, or an aching pain to pour forth (fall) upon them.

64) Surely that which is in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth/Qi' is for Him (Him Not Us). He Qad 'Just' knows your state and the day you are to return to Him (Him Not Us). So He will Yunabbi-uhum 'Inform Them (as a newsbearer)' of that which they did; and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing' of everything.

Sudlqa Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Three

Revealed In The Year 625-626 A.D. Except Verses 12-53 Revealed In Bst. Meccan And Medina

*Al Haff
(The Pilgrimage)*

*Original Order Chapter 103;
Wrong Order Chapter 22*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*Enosites Are Warned To
Tremble For The Earthquake
Of The Final Hour Is*

*Supreme - Every
Breastfeeding Woman Will
Forsake Breast-Feeding -
Every Pregnant Female Will
Abort - Amongst Enosites,
There Are Those Who Follow
Every Rebellious Shaytaan*

103 O Naas/Enosites,
tremble at the mention of your
Rabb: surely the 'Zalzalat
'Earthquake' of Al Saa'at 'The
(Final) Hour' is a 'Aziym
'Supreme' event.

2) On the Yawm 'Day' when
you will see it, every
breast-feeding mother will
forsake breast-feeding and every
pregnant female will abort; and
you will see Enosites as Sukaaraa
'Drunk' and they won't be
Sukaaraa 'Drunk', but the pain
of The Source, ALLAH is
forceful.

3) Among the Naas/Enosite, is
he who disputes concerning The
Source, ALLAH without
knowledge, and follows every
Mariyidin 'Rebellious' Shaytaan,

'Satan, The Reptilian,' (also
called Samacl, Nakhsh, and
Haylal Bar, 'Son' Of Shakhar
and Mylitta)."

4) It has been inscribed upon
him that turns to him, (Satan,
the Reptilian), so he will be lead
astray into error, and (the
Reptilian) will lead him into
calmness to the pain of the Sa'iyir
'Flaming Fire.'

*If You Are In Doubt About
The Ba'ath. You Can Reflect
On Your Creation From Dust
- Then A Drop Of Semen.
Then A Nutfat - The Source
Is The Powerful Over All
Things*

5) O You Enosites! If you are
in doubt about the Ba'ath
'Raising Back To Life After
Death', So surely (you can
reflect on the fact), That We,
([We Not He] Eloheem,
Anunnagi) Khalaqnaakum
'Created You All' (This Is
More Than One Hu 'You', It
Is Kum 'You All') From
Turaab 'Dust' then from a
(Drop Of) Nutfat 'Semen,
Life-Germ' (Through Cloning
By Gene Splicing) then from a
'Alaqat 'Clot Of Congealed
Blood' - (Fertilized Egg), then
from a Mudghat 'Lump Of
Flesh (An Embryo [Adam/
Kadmon])' Mukhalaqatan
'Completely Created' and
Ghayru 'Without' Mukhalaqat
'Complete Creation', that We,

Eloheem Anunnaqi) may make clear to you all, and We, (Eloheem Anunnaqi) caused you to remain in Al Arhaam 'The Yielding Wombs' of that which We pleased, to the appointed term; then We, (Eloheem, Anunnaqi) Nakhrijakum 'Bring You Out' as a Tiflaan 'Baby' then fostered you that some of you, who live to maturity, a 'ripe old age' and forceful, and some of you pass away (your soul is taken), and some are returned to the weakest age - (becoming senile), so that they no nothing after having known things (they lose all that they have learned in their life); and you see the planet earth, 'Qi' is dry and dead; so when We, (Anunnaqi) sent down water upon it, it stirred (to life) and (the surface of the earth, also called Tiamat) Rabat 'Swells' (as the seeds begin to sprout into all kinds), and mates/pairs of beautiful herbage.

6) That's because The Source, ALLAH, He (He Not We) is the fact (beyond any doubt); and surely He, Yuhvi 'Gives Life' to Al Mawt 'The Dead', and surely He is Qadiyr 'Powerful' over all things.

The Source Will Raise Those Who Are In The Tombs - The Enosites Who Argue With The Source. They Will Taste The Pain Of Hariyq - Those Who

Are Faithful And The Perfectionists Will Enter Al Jannat

7) And because Al Saa'at 'The Hour,' will come, there is no doubt in it; and surely, The Source, ALLAH will Yab'ath 'Raise Back To Life From The Dead' those who are in Al Qubuwr 'The Tombs'."

8) And of the Enosites, there is he who argues about The Source, ALLAH without knowledge and no leading calmness, and don't even have a Muniyr 'Enlightening' Kitaab 'Scripture'."

9) Turning away to his side, so that he may lead astray (Enosites) from ALLAH'S path; but he shall be disgraced in the Al Dunyaa 'Physical World,' and in the Day Of Al Qiyaamat 'Resurrection,' We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will make him taste the pain of Hariyq 'The Burning Flame.'

10) (And unto him it will be said:) "That is for that which your two hands have sent before, and surely The Source, ALLAH is not unjust, (he is not an oppressor) to His (His Not Our) slaves."

11) And among the Naas is he who slaves for The Source, ALLAH upon a Harf 'Narrow Marge' so that if good befalls on him, he is content with it; and if a trial afflicts him, he turns his

face away utterly. He loses both the Dunyaa 'Physical World' and Al Aakhirah 'The End'. That is the clear loss."

12) He calls upon, besides The Source, ALLAH, unto that which doesn't hurts him, nor benefits him. That is the far state of astrayed error.

13) He calls upon him, whose harm is nearer than his benefit; verily a miserable Mawlaa 'Ruler' and verily a wretched 'Ashiyr 'Companion Of 10'.

14) Surely The Source, ALLAH causes those who are faithful and do strive to perfect themselves to enter the Jannaat 'Gardens' underneath which rivers flow. Surely, ALLAH does that which He (He Not We) pleases.

*Muhammad Will Be Given
Victory - The Qur'aan Is Sent
Down As Clear Signs - The
Yahuwd, Sabians, Nasaara,
And The Magi Will Be
Separated By The Source, On
The Day Of Qiyaamah*

15) Whosoever thinks (through envy), that The Source, ALLAH will not aid him (Muhammad) in the physical world and the End and is enraged at the thought of his victory, let him stretch a rope up to the roof of his dwelling, and let him hang himself. Then let him see whether his strategy will remove that which enrages him!"

16) And just like that, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) sent it, (the Qur'aan) down as clear signs, 'verses' and surely The Source, ALLAH leads into calmness those whom He (He Not We) wants.

17) Surely those who have faith and those who are Al Yahuwd 'Judahites,' and Sabians 'Yemenites,' and Al Nasaaraa 'Nazarites' (followers of Yashu'a/Isa) and Al Majuws 'The Magi' (Zoroastrians of Persia), and those who Ashrakuw 'Associate Partners'; surely The Source, ALLAH distinguishes between them on the day of Al Qiyaamah 'Resurrection/Standing'. Surely ALLAH is a Shahiyd 'Watcher' over all things."

*Whomsoever, Is In The Skies
And Qi Prostrates To Allah -
The Enemies Who Quarrel
About Their Rabb, Will Have
Garments Of Fire - The
Faithful Will Have Armlets Of
Zahab And Lu Lu' And Their
Raiments Will Be Out Of
Hartyr*

18) Have you not seen that unto The Source, ALLAH Yasjud 'Prostrates' whomsoever, is Al Samaawaat 'The Skies' and whomsoever is in Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat/Earth,' and Al Shams 'The Sun,' and Al Qamar

'The Moon,' and Al Nujwum 'The Stars,' and Al Jibaal 'The Hills,' and Al Shajar 'The Trees,' and Al Daw-waab 'The Creatures/Beasts,' and many of Al Naas/Enosites, and while there are many, unto whom the doom is justly due - (which is a fact beyond any doubt). And he whom The Source, ALLAH scorns, there is none to give him Mukrimin 'Honour'. Surely, The Source, ALLAH does that which He pleases?"

19) These two enemies quarrel about their Rabb, who is 'Sustainer'; so those who conceal that which they know to be the facts, there will be Quti'at 'Cut' for them Thiyaab 'Garments' of Naar 'Fire.' Very hot liquid, shall be poured over their heads."

20) It will melt by way of it, that which is in their Batn 'Bellies' and their Jald 'Leathery Skin' as well.

21) And for them are clubs of iron.

22) How often, they want to exit from it, from its' anguish, they will be returned into it, and taste the pain of burning.

23) Surely, The Source, ALLAH will cause those who are faithful and work to perfect themselves to enter Jannaat 'Gardens' underneath which rivers flow, wherein they will be allowed Asaawir 'Bracelets' of Zahab

'Gold,' and Lu'lu' 'Pearls,' and Libaasuhum 'Their Raiment' therein will be Hariyr 'Silk' (in heaven you have gold from the earth, pearls from the sea and silk from beneath the earth, earthworm. It is a physical planet like this one).

24) They are lead into calmness to Al Tayyib 'The Agreeable' of Al Qawl 'Speeches'; they are lead into calmness unto the narrow path of Al Hamiyd 'The One Worthy Of Gratitude'.

25) Surely those who don't have faith, and hinder (Enosites) from the path of The Source, ALLAH and from Masjid Al Haraam 'The Sacred Place Of Prostration,' which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made equal for the Enosite, the dweller therein and Al Baad 'The Nomad'; whosoever seeks an unjust partiality in it, We, (Anunnaqi) will cause him to taste an aching pain.

*The Eloheem Prepared For
Abrawhawm A Place In The
House - That He Is To Call
Enosites To Hajj - Cattle Are
Lawful Unto You, Shun The
Filth Of Those Who Associate
Partners*

26) And when We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) prepared for Abrawhawm, the Makaan 'Place' of Al Bayt 'The House'; (saying) "Don't Tashrik

'Associate Partners', (idols) of any kind, and Tahhir 'Purify' Baytiy 'My House', for the ones who will Taa-ifiyn 'Run Around' (the Kaaba - 'Tawaaf') and Al Qaa-imiyn 'Those Who Stand (To Pray)' and Al Rukka'i 'Those Who Bow' and Al Sujuwd 'Those Who Prostrate Themselves'."

27) And cry out, calling the Enosites to Hajj 'Pilgrimage.' They will come to you on Rijaaalan 'Foot' and on every Daamirin 'Lean Camel', coming from every deep gorge - (opening between two things).

28) That they may Yash-haduw 'Watch' things that are a benefit to them, and remember the name of The Source, ALLAH on appointed days over the Bahiyimat 'Beast' Of Al An'aam 'The Cattle' that he has Razaqahum 'Provided Upon Them'. So eat of it and feed therewith the poor miserable, wretched one.

29) Then let them make an end of their untidiness and pay Nudhuwrahum 'Their Vows' and then go around Al 'Atiqq 'The Ancient' Bayt 'House'.

30) That (is the command), and whomsoever Yu'azzim 'Makes Supreme' the Hurumaat 'Sacred Things' of The Source, ALLAH, for it will be good for him in the possession of his Rabb. And Al An'aam 'The Cattle' are Uhilat 'Lawful' unto you all, except

that which has been Yutlaa 'Recited' upon you all. So shun Al Rijsa 'The Filth' of Al Awthaan 'The Idols', and shun false speeches.

Being Hunafaa'a Means Not To Associate Partners With Allah - For Every Nation, We, Anunnagi Made A Place Of Sacrifice To Remember The Name Of The Source

31) Hunafaa'a 'Being Ones Who Are Upright', to The Source, ALLAH, Ghayru 'Without' Musrikiyn 'Associating Partners' with Him (Him Not Us); and whosoever Yushrik 'Associates Partners' with The Source, ALLAH, so it is as if he had Kharra 'Fallen' from Al Samaa-a 'The Sky' (came from another planet) and Al Tayr 'The Birds' had snatched him, or Al Riyh 'The Wind' (Craft) had blown him to a far-off place (another galaxy).

32) That (is the command); and whosoever makes the Sha'aa-ira 'Doctrinal Ceremonies' 'Aziym 'Supreme', (consecrated) to The Source, ALLAH, it surely is from trembling and fear of Al Quluwb 'The Hearts'."

33) In it are benefits for you for an appointed term; then afterward they are brought for sacrifice unto Al 'Atiqq 'The Ancient' Bayt 'House'.

34) And for every Ummah

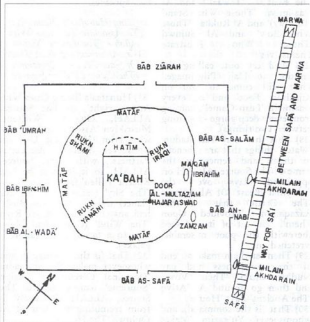


Diagram 51
The Kaaba And The Way For Sa'i

'Nation' We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made a place (of sacrifice), so that they will Yadhkir 'Remember' the Ism 'Name' of The Source, ALLAH over that which We, (Eloheem Anunnaqi), had Razaqahum 'Provided Them' from the Bahiyamat 'Beast' of Al An'aam 'The Cattle'; so ILAAHUKUM (Your ALLAH) 'Your Source' is Waahid 'One' ILAAHUN (ALLAH) 'Source', so for Him (Him Not Us), Aslimuw 'You All Are To Surrender In Peace' and give good news to Al Mukhbitiyn 'Those Who Are Humble'.

35) Those who when they remember The Source, ALLAH and their hearts are full with fear, and Al Saabiriyn 'the Patient Ones,' are patient upon that which afflicted them and are the ones who stand up for the Salaat 'Salutation As Worship' and that which We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Razaqnaahum 'Provided Them', they share willingly.

36) And Al Budn 'The Sacrificial Camels' We, ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) have appointed them among the Sha'aair 'Doctrinal Ceremonies' of The Source, ALLAH. In them you have much good, so remember the name of The Source, ALLAH over them, when they are drawn up in lines.

Then when their flanks fall dead, eat of it and feed the beggar and the suppliant. Just like that We, ([We Not He] Anunnaqi, Eloheem) made them subservient unto you all, so that perhaps you might be grateful.

37) Their Lahm 'Flesh (Meat)' and their Dimaa 'Blood' does not reach The Source, ALLAH, but the trembling of fear from you all reaches him. Just like that, We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) have made them subservient unto you all, that you may Tukabiruw 'Make Big' (exalt) The Source, ALLAH on that He (He Not We) has calmed you, and give good news, (Muhammad) to the ones who does that which is best.

*Allah Does Not Like The
Treacherous, Ingrates -
Permission Is Given To Fight,
For The Enosites Who Were
Being Treated Unjustly*

38) Surely The Source, ALLAH defends those who are faithful. Surely, The Source, ALLAH does not like all treacherous, (ingrates), concealing that which he knows to be the facts.

39) Permission to Yuqaataluwn 'Kill Them' is given (by The Source) to those who are being treated unjustly and surely The Source, ALLAH is (well able of), having the Qadiyr 'Power' to Nasrihim 'Aid Them', (release

them from their oppressor).

40) Those who have been driven out from their own Diyaar 'Abodes' (as Muhammad and his followers were made to leave from Mecca to Medina) without any facts - (a just reason), except for the fact that they say: "Our Rabb 'Sustainer' is the Source, ALLAH; and had The Source, ALLAH not repelled some Enosites (of the good and given them the will power to fight other Enosites, disagreeable Enosites) which pulled and corrupted and made meaningless all the cloisters of the holy places and the Masaajid 'Places Of Prostration,' where the remembrance of The Source, ALLAH'S name is (heard) much; and verily The Source, ALLAH will aid those who aid Him (Him Not Us); surely, The Source, ALLAH verily is Qawiyun 'Strong', 'Aziyzun 'Mighty'.

41) Those who if We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) establish them in the planet Qi 'Earth,' they will keep up Al Salaat 'The Salutation' As Worship' and give Al Zakaat 'Charity' and command that which is right and forbid that which is wrong and for Him (The Source), the end of all commands, 'affairs.'

*Nations Of Enosites Called
Their Rusul Before You,
Muhammad A Liar - How*

*Many Towns Were Destroyed
By The Eloheem - A Day
With Allah Is As A Thousand
Years*

42) And if they, (the Meccans) call you, (Muhammad) a liar; so the kindred before you, (Ahmad), of Noach and 'Ad and Thamud denied the One Sent to them (also).

43) And the kindred of Abrawhawn (the Babylonian) and the kindred of Lot - (Sodom and Gomorrah)."

44) As well as the companions of Midyan (the 'Midianites' of the newsbearer Leummiym's, time) and (they also were victims) of lies and Mosheh also; So I gave respite, (replenish) to the concealers of the facts then I overtook them, so how severe was my disapproval (of them for rejecting all my newsbearers and their teachings)."

45) How many a (township), village have We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) destroyed while it was in a state of unjustness, so that it lies to this day in ruins on its roofs, and how many a deserted well, and lofty tower?

46) Have they not Yasiyruw 'Moved About' in the earth, and have their hearts with them to feel and ears with to hear? So indeed, it is not (the eyes) that grow blind, but it is the hearts, which are within Al Suduwru

'The Chests' that grow blind.

47) And they will bid you to hasten on the pain, and The Source, ALLAH fails not in His (His Not Our) promise. Surely, a Yawm 'Day' Ind 'In The Possession' of The Source, ALLAH is as a Alf 'Thousand' Sanatin 'Years' of that which you reckon.

48) And how many a (township), village, did I (I Not We) make suffer long and it was unjust! Then I grasped it. And unto me, is the destiny.

Muhammad Is Sent As A Warner - Allah Will Abolish That Which Satan, The Reptilian Proposed - There Is A Disease In The Hearts Of Those Who Make A Temptation, That Which Shaytaan Proposes - There Are Gardens For The Faithful Ones - The Source Is The Best Of The Raaziqiyn

49) Tell them this, (Muhammad): "O Enosites/Naas! I am only a Mubiyn 'Clear' warner unto you all."

50) So those who are faithful and work to perfect themselves, for them is a forgiveness and a Kariym 'Generous' Rizq 'Provision'.

51) While those who strive to frustrate Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi's) signs,

such are the companions of Jahiym 'Hell.'

52) We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) never sent a Rasuwl 'One Sent' nor a Nabiyy 'Newsbearer' before you, (Muhammad) but when he, Al Shaytaan, 'Satan, The Reptilian' wished to propose in opposition that which were in his wishes; so The Source, ALLAH abolished that which Al Shaytaan, (also called Haylal, Samael, and Ibliys) proposed. Then The Source, ALLAH Yuhkim 'Uses Wisdom' (establishes) His (His Not Our) signs, and The Source, ALLAH is 'Aliym 'Knowing', Hakiym 'Wise'.

53) That He (He Not We) may make that which Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian' proposes, a trial (temptation) for those in whose hearts is a disease, and those who hearts are Qaasiyat 'Hardened'; surely, the unjust ones are in far Shiqaaq 'Schism'.

54) And that those who were given Al 'Ilm 'The Knowledge' may know that surely it, (the Qur'aan) is a fact (beyond any doubt) from your (Muhammad's) Rabb 'Sustainer', so that they may have faith in it, (the Qur'aan) and may humble themselves to it - (Qur'aanic knowledge) with their hearts; And surely ALLAH is the calmer of those who have faith, to Siraat Al Mustaqiym 'The

Narrow Path Of Those Who Stand Up Straight'.

55) And those who conceal that which they know to be the facts, will not cease to be in doubt of it until the Saa'at 'Hour' comes upon them suddenly, or there comes unto them the pain of a 'Aqiym 'Disastrous' day.

56) Al Mulk 'The Rulership' on that day will be His (His Not Our), (The Source). He will use wisdom between them. So those who were faithful and did work to perfect themselves will be in Na'iym 'Gentle' 'Jannaat 'Gardens'.

57) And of those who conceal the facts and lie and reject Our, ([Our Not My] Eloheem, Anunnaqi's) signs, so these are the ones who shall have a despicable pain.

58) Those who Haajaruw 'Fled (Their Homes)' in the path of The Source, ALLAH and then Qutiluw 'Were Killed' or Maatuw 'Died', The Source, ALLAH verily will provide for them with a provision that is best, (they will make it to Rizq). And surely The Source, ALLAH, verily He (He Not We) is good of Al Raaziqiyn 'Those Who Provide.'

59) Verily, He (He Not We) will cause them to enter by an entry that they will be content, well pleased with (they will go to Rizq in Illyuwn). Surely The Source, ALLAH verily, is 'Aliym

'Knowing', Haliym 'Clement'.

60) That is so, and whosoever has retaliated with that which he was made to suffer pain, then has again been wronged, The Source, ALLAH will Yansur 'Aid' him. Surely The Source, ALLAH, verily is 'Afuwun 'Pardoning', Ghafuwrun 'Forgiving'.

The Source Makes The Shadow Hour Pass Into The Nahaar - Yahuwa Is The Fact, And The Most High - For Him Is All That Which Is In The Skies And Tiamat - He Causes You To Die And Give You Life Again

61) That is because, The Source, ALLAH makes Al Layl 'The Shadow Hour Period' to Yulij 'Penetrate' into Al Nahaar 'The Daytime' and He (He Not We) makes the daytime to penetrate into the shadow hour period, and surely ALLAH is Samiyyun 'Hearing', Basiyyun 'Seeing' (all things).

62) That is because The Source, ALLAH, He (He Not We) is the facts (beyond any doubt), and that which they call upon besides of Him, (Yahuwa/Yehweh) is Al Baatil 'False', and surely The Source, ALLAH, He (He Not We) is Al Aliyyu 'The Most High' (ANU), Al Kabiyr 'The Oldest'.

63) Do you not see how The

Source, ALLAH Anzala 'Sends Down' water from Al Samaa-i 'the sky', so the 'Earth,' Qi Mukhdarratan 'Becomes Green' by the early daytime hour? Surely, The Source, ALLAH is Latiyf 'Subtle', Khabiyr 'Aware'.

64) For Him (Him Not Us), is that which is in Al Samaawaati 'The Skies' and that which is in Al Ard 'The Qi/Tiamat'. Surely, The Source ALLAH, verily He (He Not We) is AL Ghaniyy 'The Independent', AL Hamiyd 'The One Worthy Of Gratitude'.

65) Did you not see how The Source, ALLAH has made all that which is in Qi subservient unto you all? And Al Fulk 'The Craft' Tajriy 'Runs' Fee 'In' Al Bahr 'The Sea' by His (His Not Our) Amr 'Command', and He (He Not We) Yamsik 'Holds' (back) Al Samaa-a 'The Skies' from Taqa'a 'Falling' on the Earth, except by His (His Not Our) permission. Surely, The Source, ALLAH is verily Ra-Uwfun 'Kind', Rahiym 'Merciful' with the Enosites.

66) And He (He Not We) is who Ahyaakum 'Gave You All Life', then He will Yumiyytukum 'Cause You All To Die', then will Yuhyikum 'Give You All Life' (Again - your Etheric state); surely the Enosite is verily (an ingrate), concealing that which he knows to be the facts.

Muhammad Is Told, Call Upon

His Rabb, When He Is Disputed With' - Allah Will Use Wisdom Between Them On The Day Of Resurrection - For Those Who Conceal The Facts, They Will Have A Wretched Destination - The Example Of A Fly

67) And for every Ummah 'Nation' We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) made a place (of sacrifice), which they are to perform; so let them not dispute with you, (Muhammad) in the matter, but call upon your Rabb; surely you, (Muhammad), are on the leading calmness of the ones who stand up straight.

68) And if they dispute with you, (Muhammad) tell them: "The Source, ALLAH knows (best) of that which you all do."

69) The Source, ALLAH will use wisdom between you all on the Day of Al Qiyaamah 'Resurrection' concerning that which you used to differ in.

70) Did you not know that The Source, ALLAH knows all that which is in Al Samaa-a 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth?' Surely, that is in a Kitaab 'Scripture'; surely that is easy on The Source, ALLAH.

71) And they slave for, from besides The Source, ALLAH that which there is no Sultaan 'Authoritive Power' which has been Yunzil 'Sent Down' to

them, and that which they have no knowledge of, and there is no aider for the ones in a state of unjustness.

72) And when it, (the Qur'aan) was Tutlaa 'Recited' unto them as Bayyinaat 'Clear' signs, you knew by their faces, those who were concealing the facts and denying it. They almost attack those whom Our, ([Our Not My] Anunnaqi's) signs are being recited upon. Tell them: "Shall I Unabbi-ukum 'Inform You All (as a newsbearer)', what is more disagreeable than that? The fire! The Source, ALLAH has promised to those who conceal that which they know to be the facts, a wretched destination.

73) O Enosites! A Mathalun 'Likeness' is Duriba 'Struck Forth', so you are to Astami'uw 'Listen' (to it) for him. Surely those on whom you call upon besides, The Source, ALLAH will never create a Dhubaabaan 'Fly'; though they all gather together for the purpose, and if the Zubaab 'Fly' took something from them, they could not rescue it from him. So weak are both Al Taalib 'The Seeker' and Al Matluwb 'The Sought'!

74) They measure not the Qadar 'Power' of ALLAH, His (His Not Our) real power. Surely, The Source, ALLAH verily is Qawiyun 'Strong', Aziyz 'Almighty'.

Allah Has Chosen Some Of

*The Messengers To Send As
Rusul - Abrawhawn Named
You Muslims From Before -
You Are To Keep Us Salaat,
And Zakaat - He Is A Gentle
Master*

75) The Source, ALLAH has chosen from Al Malaa-ikah 'The Angelic Messengers,' (Eloheem, Anunnaqi) Rusuwlaan 'Messengers' and from the Enosites, (like Yashu'a/Isa son of Gabriel), and from the Enosites (Ahmad son of mortals, Abdullat and Amiynah). Surely The Source, ALLAH is Samiy'un 'Hearing' Basiyr 'Seeing'.

76) He (He Not We) knows all that is between their hands and all that which is behind them, and unto The Source, ALLAH all commands/affairs are returned.

77) O, you who have faith, Arka'uw 'Bow Down' and Asjuduw 'Prostrate Yourselves', and A'abuduw 'Slave' for your Rabb, who is 'Sustainer/Master' and do that which is good, that perhaps you all will be prosperous.

78) And Jaahiduw 'Fight Jihaad (Holy War)' in The Source, ALLAH'S way with the facts, with Jihaadihi 'All His Fighting Power'. He (He Not We), is who chose you all, and has not put any difficulty on you, in Al Diyn

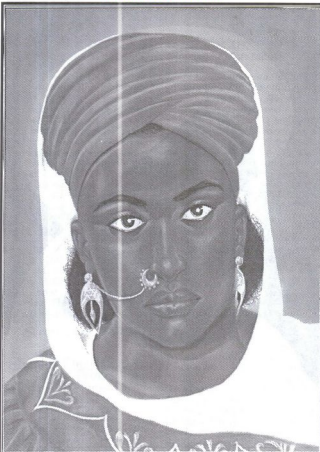


Figure 198
Amina, Mother Of Muhammad

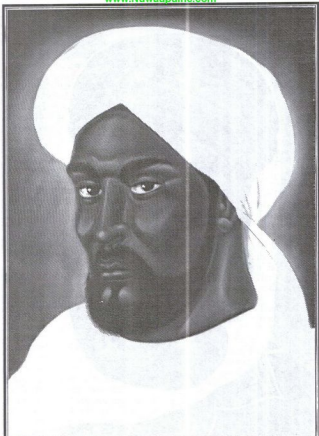


Figure 199
Abdullat, Father Of Muhammad

'The Means Of Judgment'; the Millat 'Replenishing, Rites' Of Abiykum 'Your Father' Abrawhawm. He is the one who Sammaakum 'Named You All' Al Muslimiyn 'Muslims' from (long) Qabl 'Before' (Muhammad's time), and in this (time, you use it). So that the Rasuwl 'One Sent', (Muhammad), would be a Shahiydaan 'Watcher' over you all (and that by which you have learned from him), and you all will become Shuhadaa-a 'Watchers' over other Naas/Enosites. So keep up Salaat 'Salutation As Worship', and give Zakaat 'Charity' and A'atasmuw 'Hold On' to The Source, ALLAH. He is Mawlaakum 'Your Ruler' (of all of you), and how excellent of Al Mawlaa 'The Rulers', and The Ni'ma 'Gentle' Nasiyr 'Aider'."

Sudika Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Four

Revealed In The Year 629 A.D.

*Al Munaafiqun
(The Hypocrites)*

*Original Order Chapter 104;
Wrong Order Chapter 63*

Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*The Munaafiqun Watches
That Ahmad Is The Rasuwl -
They Keep Others From The
Rites Of Abrawhawm - Allah
Has Put A Stamp On Their
Quluwb - The Hypocrites Are
Enemies, So Ahmad And Your
Followers, Beware Of Them -
They Are Mustakbirun -
The Source Won't Forgive
Them*

104 When Al Munaafiqun, 'The Hypocrites' comes to you, (Ahmad), they say: "Nash-had 'We Watch,' that surely you are the Rasuwl of The Source, ALLAH and The Source, ALLAH knows, that you, (Muhammad) are His (His Not Our) Rusuwl 'One Sent'; and ALLAH Yash-hadu 'Watches' that Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites' are Kaazibuwn 'Liars.'

2) They, (the hypocrites) took Aymaannahum 'Their Faith', (Shahaadah), (as) a Junnatan 'Cloak', so they Sadduw 'Hindered' (obstructed others) from the Sabiyl 'Path' of The Source, ALLAH. (They pretended they were Muslims); surely evil, is that which they did (in the past).

3) That is because they were faithful then they concealed that which they knew to be the facts;

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The

so He has put a Tubi'a 'Stamp' on their Quluwb 'Hearts,' so they don't Yafqahuwn 'Comprehend' (in the past).

4) And when you, (Ahmad) see them (during Muhammads time), their Ajsaam 'Bodies' Ta'jibuka 'Amazes You', (Muhammad), and if they say: "You, (Ahmad) are to listen to their Qowl 'Saying"; as if they are Musannadatun 'Supported' Khushubun 'Woods', they Yahsabuwun 'Think', that every Sayhat 'Cry' is about them; they are Al 'Aduwwu 'The Enemies,' so beware of them (warning Muhammad about Musaylimats followers), The Source, ALLAH has Qaatalahum 'Killed Them', (because) of that which they had invented.

5) And when it is said to them: "Come, the Rasuwl 'One Sent' of The Source, ALLAH, (Muhammad), will seek forgiveness for you all, they just turn their heads away and you saw them turning away (turning this offer down) and they are Mustakbiruwun 'Ones Who Are Big-Chested, Pouting With Pride.'

6) It is Sawaa'a 'Equal' on them, whether you seek forgiveness for them or you don't seek forgiveness for them. The Source, ALLAH won't forgive them, (the hypocrites). Surely, The Source, ALLAH does not lead into calmness Al Faasiqiyn

'The Transgressing,' Qawm 'Kindred'.

7) They are those who say: "Don't share willingly on those who are from the possession of the Rasuwl 'One Sent,' (Ahmad, in Medinah) until they Yanfaduw 'Break Up'; and to Him (Him Not Us) belongs the Khazaa'in 'Treasures' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard '(Qi), the planet Earth', but Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites' don't Yaf-qahuwn 'Comprehend'.

8) They say: "If we return to Al Madiynah 'The City', Al A'azzu 'The Mightiest' (enemy) will verily make them, (Muhammad and his followers get out of Medina), Al Adhalla 'In A Humble Manner'; and for him is Al 'Izzatu 'The Might', and for Rasuwlihi 'His (His Not Our) One Sent', (Ahmad), and the Mu'miniyn 'Faithful'; but Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites' don't know that.

9) O you who are faithful, do not become destroyed from the remembrance of The Source, ALLAH by your wealth, (seeking wealth or a career); and not even Awlaadukum 'Your Own Children', (to whom you give birth); and as for he who does that, (put a career or family before The Peaceful Way Of Life, 'Al Islaam',) so they will be of Al Khaasiruwn, 'The Losers.'

10) And share (from your

wealth) that which We, ([We Not He] Anunnaqi) have Razaqnaa 'Provided' you all from before death, comes to any one of you all. So that (he, the Enosite) will say: "O my Rabb, if my end, (death) did not have a fixed Ajal 'Term' so Qariyb 'Near', so I would Sadaqah, 'Give Alms,' and be of Al Saalihiyn 'The Perfectionists.'

11) And The Source, ALLAH won't delay any person when its fixed term comes, (death), and The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' of all that you all are doing.

Sudiqs Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Five

Revealed In The Year 627-628 A.D.

Al Mujaadilah

(The Woman Who Disputes)
Original Order Chapter 105;

Wrong Order Chapter 58

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Allah Heard The Saying Of Khuwlah Bint Tha'laba - Her Husband, Aws Tried To Use Zihar Against Her - The Males Who Use Zihar Are Wrong - They, The Women Are Not Their Ummahaat - The Males

Who Use Zihar, Who Want To Retract Their Statements, They Must Free A Slave And Remove The Yoke - As For Him Who Can't Afford It, He Must Fast For 2 Months, Or Feed Sittiyn Poor Settlers, Before They Have Sex Again - Those Who Oppose Allah And His Rasuwl, Muhammad Will Be Reduced To Humility And Backwardness - Allah Is A Shakiyd Over All Things - Allah Sees All That Is In The Skies And Qi/Flamat - They Hold Najwaa, In Order To Be Hostile And Disobedient To Ahmad - They Greet Muhammad By Saying, 'Poison Be Upon You' - The Faithful Ones Are Told To Set Up Meetings, And Discuss Agreeable Things

105 The Source, ALLAH has certainly heard the Qawl, 'Saying' of her, (Khuwlah Bint Tha'laba, mate of Aws Ibn Samit), who Tujaadil, 'Disputed' in her Zawj 'Mate', and Tash-takiy 'Complained' to ALLAH; and The Source, ALLAH hears the Tahaawur 'Argument,' of both of them. Surely The Source, ALLAH is Samiy-un 'Hearing', Basiyr 'Seeing'.

2) As for those (males) from amongst you all, who use Zihar - (an old custom for divorce), he

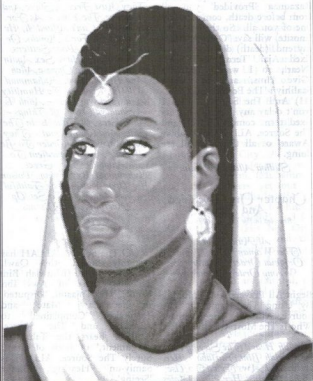


Figure 200
Khuwlah Bint Tha'laba

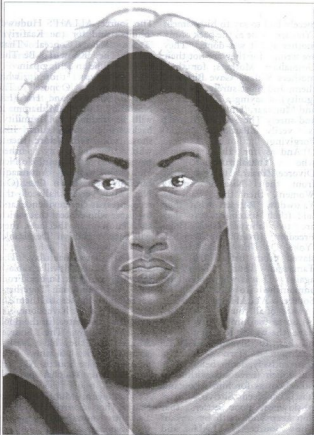


Figure 201
Aws Ibn Samit, Husband Of Khuwlah Bint Tha'laba

merely had to say to his women: "You are to me as the back of my mother and it was done." They are wrong, for they are not their Ummahaat 'Mothers; for their mothers Walad, 'Gave Birth' to them; and most surely, they are (guilty) of saying a Zuwr, 'False' and Munkaar, 'Unknown Thing; and surely The Source, ALLAH is verily Pardoning (and) Forgiving.

3) And as for those (males) who Yuzaahiruwn 'Use Divorce/Zihaar,' to get away from their Nisaa-a 'Enosite Women', then they want to Ya'uwduw 'Retract' what they said (their statements); so they are to Tahriyr 'Give Them Freedom' (from) the Raqabah 'Yoke Of The Neck' (free a slave), from before they can Tamaasaa 'Touch' (have sex again). That is what you all are admonished to do, and The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' of all you do.

4) So as for him who does not have (the wealth to free a slave), he has to Siyaam 'Fast' for Shahrayn 'Two Months' consecutively, from before they can touch (have sex with each other); so as for him who can't (fast), so feed Sittiyn, 'Sixty' Miskiynaan 'Poor Settlers', that you keep your faith by way of The Source, ALLAH and Rasuwlihi 'His (His Not Our) One Sent', (Ahmad) and these are

The Source, ALLAH'S Huduwd 'Limits'; and for the Kaafiriyn 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts', will be an aching pain.

5) Surely, those who Yuhaadduwn 'Oppose' The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl, (Muhammad) will be reduced to humility, backwardness and ruin, like those who were before them, who rejected my other newsmen; and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) certainly sent down Our (Our Not My) verses, (all of the scriptures) as clear evidence; and for those who conceal that which they know to be the facts, they will have A Mahiyn 'Despicable' pain.

6) On that final day, The Source, ALLAH will Yab'ath 'Raise Them (Back To Life From The Dead)' Jamiy'aan 'Together'; so as to announce to them all that which they have done. It will all be calculated (in the Book of Deeds) by The Source, ALLAH and they have Nasuw 'Forgotten' it (all they have done); and The Source, ALLAH is a Shahiyd, 'Watcher' over all things.

7) Don't you, (Muhammad) see that The Source, ALLAH Ya'lamu 'Knows' that which is in Al Samaawaat, 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Qi'? There is nothing Najwaa

'Private' between Thalaatha 'Three', except that Huwa 'He' (He Not We) is Raabi'uhum 'The Fourth', and nor Khamsatin 'Five' except that Huwa 'He' is Saadisuhum 'The Sixth Of Them', and no Adnaa 'Less' from that and no Akthar 'More' except that Huwa 'He' Ma'ahum 'Is With Them' where ever they may be. Then he, (The Source) will Yunabbi 'Inform Them (as a newsbearer)' of all that they have done on the Day of Qiyaamah, 'Resurrection/ Standing'. Surely ALLAH knows everything.

8) Don't you, (Ahmad) see to those who were Nahuw 'Barred' from Al Najwaa 'The Private Meetings', then they return to that which they were barred from? And they hold private meetings, with guilty acts, and Al 'Udwaan 'Hostility', and Ma'asiyat 'Disobedient' to the Rasuwl 'One Sent' (Ahmad); and when they come to you, (Muhammad) they Hawwawka 'Greet You' (saying: "As Samu 'Alayka; "Poison Of Samael On You,") in a way that the source, ALLAH does not greet you with (saying: "Al Salaamu 'Alaykum, The Peace Be Upon You"), and they say to themselves: "Why doesn't The Source, ALLAH punish us for that which we said?" They will be called to account in Jahannam 'Hell'; in it (hell), they will be burned. So

wretched is the Masiyr 'Destination.'

9) O you who are faithful! When you hold private meetings', (amongst yourselves in secret), so do not hold private meetings with guilty acts, and hostility, and disobedient to the Rasuwl (Muhammad) and hold private meetings with Al Birri 'The Piety' and Al Taqwaa 'The Fear By Trembling' and those who will be Tahshuruwn 'Gathered Together', Ataquw 'Tremble At The Mentioning' Of The Source, ALLAH.

The Secret Meetings Are From Satan, The Reptilian To Bring Grief To The Faithful Ones - Satan, Can't Hurt The Faithful - Allah Will Raise Those Who Have Faith In Darajaat - The Faithful Ones Are Told To Send Sadaqah To Muhammad - The Faithful Are Told To Get Up For Worship And Give Zakaat, And Obey Allah And Muhammad

10) However, the private meetings are from Al Shaytaan 'Satan, the Reptilian' to Yahzun 'Bring Grief' to those who have faith, and he can't hurt them, (the faithful ones), in anyway, except with the permission of The Source, ALLAH, and all of the faithful ones entrusts upon The Source, ALLAH.

11) Oh you who are faithful, when it is said to you, Tafassahuw 'Make More Space,' in Al Majaalis 'The Assembly', so make more space. The Source, ALLAH makes more space for you all. And when it is said: 'Anshuzuw 'Rise', So Rise, The Source, ALLAH will Yarfa'u 'Raise' those who have faith from you all, and those who have been given the 'Ilm 'Knowledge' of the Darajaat 'Levels', and The Source, ALLAH is aware of that which you do.

12) O you who have faithful, when you plan to hold a private meeting (with) the one sent, (Muhammad), so send before 'Yaday' your private meetings Sadaqah 'Alms.' That is good for you and Athar 'Purer'; so if you don't find it, so surely, The Source, ALLAH is Ghafuwr, 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful.

13) A-ashfaqtum 'Do You All Fear Becoming Poor,' before your private meeting (with Ahmad), if you send Sadaqah, 'Alms?' So if you dont do so, and The Source, ALLAH repents you all; so get up for Salaat 'Salutation As Worship', and give Zakaat, 'Charity' and obey The Source, ALLAH and his One Sent, (Muhammad); and The Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' of all that, which you do.

14) Have you, (Muhammad) not seen those who turn away, (they were with you, then left), a Qawmaan 'Kindred', and The Source, ALLAH Ghadiba 'Became Angry' with them; (they are not of you, the righteous, Peaceful Ones, 'Muslims'); and they, (those who leave) Yahlifuwn 'Bind By Oath' upon the lies (concealing the facts) and they know (they are lying).

15) The Source, ALLAH has prepared for them, (those who leave), a forceful pain. Surely evil is what they do. (They go out from your community and still pretend to be Muslims, but tell lies about you).

16) They take their faiths, and use it as a cloak. So they turn others away from the Sabiyl, 'Path' of The Source, ALLAH. So there is a despicable pain for them.

17) (That day), their Amwaal, 'Wealth' and nor their Awlaad 'Sons' will not avail them from anything, (it will not be able to save them from the punishment). These are the Ashaab 'Companions' of the Naar 'Fire;' they will be in it eternally.

18) The Source, ALLAH, will Yab'ath 'Raise Them (Back To Life From The Dead)' together; so then they will Yahlifuwn 'Bind By Oath' for Him, as they bind by oath to you all, (the

righteous Muslims), and they count in their minds (think), that they are on something (they think all the things they lie about will help them), except they, they are Kaazibuwn 'The Liars'.

19) Al Shaytaan, 'Satan, The Reptilian', has overpowered them. So he, (Satan) made them forget the remembrance of The Source, ALLAH, they are the Hizb 'Party' of Al Shaytaan. Nevertheless, surely the party of Satan, they are Al Khaasiruwn, 'The Losers.'

20) Surely as for those who oppose, The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent (Ahmad), these are they, who will be Al Adhalliyn 'Humiliated And Vanquished.'

21) The Source Has Kataba 'Written', Anaa 'I' (I Not We) and Rasuwli 'My (My Not Our) Ones Sent' will triumph over. Surely, The Source, ALLAH Is Qawiyyun 'Strong', 'Aziyyz 'Mighty.'

22) You will not find, a Qawm 'Kindred', who have faith in The Source, ALLAH and the last day, Yuwaadduwn 'Having Compassion For' those who opposed The source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl, (Muhammad) and if they were their Abaa 'Fathers' or Abnaa 'Sons' or their Ikhwaan 'Brothers' or their Ashiyyrah 'Relatives On The Fathers Side';

these are those whom has been inscribed Iymaan 'Faith', in their Quluwb 'Hearts'; and He (He Not We) has strengthened them with A Ruwh 'Soul,' Minhu 'From Himself', and He will make them enter Jannaat 'Gardens'; Anhaar 'Rivers' flowing from beneath them, abiding in them eternally. The Source, ALLAH is Radiy 'Well Pleased' with them and they are Raduw 'Well Pleased/Contented' with Him (Him Not Us). These are the Sources, ALLAH'S Hizb 'Party'. Nevertheless, surely, the party of The Source, ALLAH, they are Al Muflihuwn, 'The Prosperous Ones.'

Sudiq Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Six

Revealed In The Year 631 A.D.

Al Hujuraat

(The Private Rooms)

Original Order Chapter 106;

Wrong Order Chapter 49

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

Oh Faithful Ones. Don't Bring Yourselves Between The Hands Of Allah And His One Sent - Don't Raise Your

*Voices Above The Nabiyy -
There Is A Forgiveness For
Those Who Subdue Their
Voices For The Rasuwl Of
The Source - Most Enosites
Who Call Out To You.
Ahmad, Most Of Them Don't
Have Any Intelligence - It Is
Best If They Wait Until You.
Ahmad Come Out - If A
Faasiq Comes To You With
News Of Being A Newsbearer
Inquire About The Facts
Concerning It*

106 Oh you who are faithful, don't bring yourselves forward between the Yaday 'Hands' of The Source, ALLAH (ALLAH has hands) and Rasuwlihi 'His One Sent', (Muhammad - [as Muhammad hands]) and you all are to tremble at the mentioning of The Source, ALLAH. Surely The Source, ALLAH is Samiy'un 'Hearing', 'Aliymun 'Knowing'.

2) Oh you who are of the faithful, don't Tarfa'uw 'Raise' your Aswaat 'Voices' Fawqa 'On Top Of' the Nabiyy, 'Newsbearer' (Ahmad) voice, and don't Tajharuw 'Publicly Speak' to him with the saying, as some of you publicly speak to each other, that your works are rendered in vanity, and you all don't perceive it.

3) Surely, those who Yaghudduwna 'Subdue' their voices in the possession of the

Rasuwl 'One Sent' of The Source, ALLAH, these are those who have proven to The Source, ALLAH, their hearts for the Taqwaa 'Fear And Trembling'; for them is a Maghfirat 'Forgiveness,' and a 'Aziym 'Supreme' reward.

4) Surely those who call you (Muhammad) from behind Al Hujuraat 'Private Rooms', most of them don't have any intelligence. (This verse was revealed because Enosites used to stand outside his tents, not knowing which mate he was with, and would call out to him).

5) And if they wait patiently until you, (Ahmad) come out to them, it would be good for them; and The Source, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful'.

6) O you who are faithful, if a Faasiq 'Transgressor,' comes to you with Nabaain 'News As A Newsbearer' (Prophet. So a transgressor can be a prophet)', so make clear evidence that you all will afflict a Qawm 'Kindred' with Jahaalat 'Ignorance', so become Naadimiyn 'Regretful' on what you did.

7) And you all are to know that amongst you is the Rasuwl 'One Sent' from The Source, ALLAH, (Muhammad). If he, (Ahmad) was to obey you all in most of that which you ordered, you would surely, be in trouble; but The Source, ALLAH has

Habbaba 'Endeared' unto you Al Iymaan, 'The Faith' and He (He Not We) has made it Zayyanat 'Fair-seeming' in Quluwbikum 'Your Hearts'; and He has made Karraha 'Hateful' to you Al Kufra 'The Concealing Of That Which Is Truth' and Al Fusuwq 'The Transgression' and Al 'Isyaan 'The Rebelliousness'; these (the ones with faith) are those who are of the given true direction.

8) It is a Fadl 'Favor', from The Source, ALLAH and a grace; and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing', Hakiym 'Most Wise'.

9) And if the Taa'ifataani 'The Two Parts' from Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones' (those who follow Ali and Faatimah and those who follow Abu Bakr) Aqtataluw 'Fight To Kill' (each other), so Aslihuw 'Make It Perfect' (peaceful) between them; so if one of them transgresses (followers of Abu Bakr) and acts wrongly towards the other (the followers of Ali and Faatimah), so fight against the transgressor until he returns to the Amr 'Command' of The Source, ALLAH; so if he (Abu Bakr) returns, so make it perfect (peaceful) between them both (Shi'ite and Sunni) by justness; and Aqsituw 'Act Properly'; surely The Source, ALLAH Yuhibbu 'Likes' Al Muqsitiyn 'The Ones Who Acts Properly'.

10) Surely, Al Mu'minuwn 'The

Faithful Ones' are Ikhwatun 'Brothers' (Followers Of Ali And Faatimah), so make Aslihuw 'Perfect (Peace)' between your Akh 'Brothers' and tremble at the mention of The Source, ALLAH, that perhaps you all may receive a yielding (mercy).

The Faithful Ones Are Not To Mock Other Nations Of Enosites - Don't Think Thoughts As Your Leaders, The Hadiyah - Don't Talk About Each Other Behind Each Other's Back - Oh Enosites, We, Anunnagi Have Created You All From Zakar And Unthaa - Muhammad Tell The Desert Arabs, That They Don't Have Faith - Those Who Struggle With All Of Their Wealth And All Of Their Spirits, They Are To Be Al Saadlaqiyn - Muhammad Asks The Meccans Do They Attempt To Tell Allah About Their Diyn? - Allah Is He Who Laid Upon Them Their Obligations In Their Diyn - Allah Knows Every Ghayb Of The Skies And Qi

11) O you who are faithful (Nubians), don't ridicule a kindred from (another) kindred (Red Arabs), maybe that, (the other nation of Enosites) is better from them; nor the Nisaa-un 'Enosite Women' from (other) Nisaa-in 'Enosite

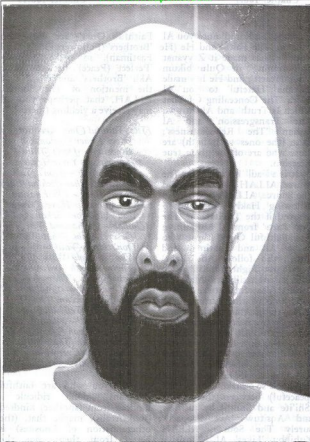


Figure 202
Abu Bakr

Women' (are to ridicule each other), maybe that they are better than the other (women); and don't Talmizw 'Backbite' Anfusakum 'Yourselves' and defame (each other) with Al Alqaab 'Nicknames'. Miserable and wretched is the name of Al Fusuww 'The Transgressor' after he had faith, and whoever doesn't follow, so these are they who are Al Zaalimuwn, 'The Unjust Ones.'

12) O you who are faithful, avoid most of the Dhanni 'Thoughts', (opinions). Surely, some Al Dhanni 'Thoughts' (like that which your leaders thinks, or that which men make up as Hadiyth) are 'Ithm, 'Guilty'; and don't inquire, nor Yaghtib 'Talk About' each other behind each other's backs. Would any of you like to eat the Lahma 'Flesh' of his dead Akhiy 'Brother', so that you would really Karih 'Hate' it and tremble at the mention of The Source, ALLAH? Surely, The Source, He (He Not We) is The Tawwaabun 'Acceptor Of Repentance'. The Rahiym 'Merciful'.

13) O you Naas, 'Enosites' who are faithful, surely We (We Not He) Eloheem) Khalaqa 'Created' you all from Zakar, 'A Male, Forgetful One' and an Unthaa, 'A Second One, Female'; and We, (Eloheem Anunnaqi) Ja'ala 'Made' you all into Shu'uwbaan 'Large

Tribes' and Qabaa'il 'Those Who Accept Each Other,' that you may 'Arafa 'Know About' (each other). Surely, the most Kariym 'Generous' of you all in the possession of The Source, ALLAH is those who tremble at the mentioning from among you'll. Surely, The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing'. Khabiyrun 'Aware'.

14) Al 'Araabu 'The Red Desert Arabs' say: "We have faith." Tell them (you Nubians), "You don't have faith, but you say, "Aslamnaa 'We All Have Become Muslims' and when faith has entered into your hearts (the Red Arabs are not real Muslims); and if you obey The Source, ALLAH and Rasuwlahu, 'His (His Not Our) One Sent', He will not reduce anything of your works. Surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrin 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

15) Surely, the faithful ones are those who have faith by way of The Source, ALLAH and His One Sent, (Muhammad); then, they have no Yartaab 'Doubt', and Jaahaduww 'Fight Jihaad' (struggle) with all of Amwaalihim 'Their Wealth', and all of their 'selves' in the Sabiyl, 'Path' of The Source, ALLAH; these are those, that are to be Al Saadiqiyn/Zodoqites 'Trusted'.

16) (Muhammad), tell them,

(Red Desert Arabs this): "Would you Ta'alim 'Teach' The Source, ALLAH about your Diyn 'Means Of Judgment,' and The Source, ALLAH knows that which is in Al Samaawaat 'The Skies' and that which is in Al Ard 'The Planet Qi/Tiamat, 'Earth'; and ALLAH, is 'Aliym 'Knowing' of all things?"

17) They Yamunnu 'Reproach' on you that they Aslamuw 'Have Become Muslims (Peaceful Ones)'. Tell them this: "Don't reproach upon me Islaamakum 'Your Peaceful Way As Muslims'; in fact, The Source, ALLAH reproaches on you that he leads you all into calmness to the faith, if you are Sodoqites/Zodoqites 'Trusted'."

18) Surely, The Source, ALLAH knows the Ghayb 'Unseen' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth', and The Source, ALLAH is the Basiyrun 'Seer' of all that which you do.

Sudiqa Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Seven

Revealed In The Year 629 A.D.

Al Tahriym

(That Which Is Forbidden)

Original Order Chapter 107;

Wrong Order Chapter 66

Begin All Prayers And Thinking

By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Newsbearer Ahmad Is Asked, "Why Does He Tuharrim Himself From The Mardaat Of His Mates?" -

Hafsah Wasn't Suppose To Reveal The Secret That Muhammad Told Her - If Ayisha And Hafsah Repent To Allah, It Would Be Better

For Their Quluwb - Muhammad Can Divorce You Two In Exchange For Better Mates - The Faithful Ones, Save Yourselves From The Fuel Of The Fire - Concealers Of The Facts, You Are Not To Make Excuses For

Yourselves - O Faithful Ones, Repent. So That Perhaps The Source Will Make You Enter Jannaat - Muhammad Is Told To Be Hard On The Kuffaar

- The Source Has Struck A Likeness In Noach's Woman, Waala, And Lwt's Woman, Sabriyya - Pharaoh's Woman, Asiya, Asked Allah To Protect Her From Pharaoh - Miriam Guarded Farjahaa - The Anunnagi Breathed Into Her Womb, By Way Of Nusqu/Gabriel

107 Oh you, Al Nabiyy (Ahmad), why do you Tuharrim 'Forbid' Yourself from that

which The Source, ALLAH has Ahalla 'Made Lawful' for you? You desire the Mardaat 'Pleasures' (sexual pleasures) of Azwaajika 'Your Mates': (Khadiyjah Bint Khuwaylid, 'Ay'isha bint Abu Bakr, Sauda widow of Sakraan, one of Ahmad's companion, Hafsa bint Umar, Zaynab Bint Khuzaymah, The Widow Of 'Ubayd - Muhammad's Cousin, Umm Salmah, Widow Of Abu Salmah, Juwairiyah, daughter of the chief of Banee Al Mustaliq, Zaynab bint Jahsh, divorced mate of his adopted son Zayd, and Umm Habiyyah bint Abu Sufyaan, and Safiyah, widow of Kinanah - the so-called Jew, Maymunah Al 'Abbaas, the newsbearer's uncle's, mate's sister, Maryam from Khemet, 'Egypt,' and Rayhanna, a so-called Jew); and The Source, ALLAH is The Ghafuwrn 'Forgiving', Most Rahiym 'Merciful'.

2) The Source, ALLAH has Farada 'Made Obligatory' for you all (to pay preparation) to Tahillat 'Dissolute' of your faiths. The Source, ALLAH is your Mawlaa 'Ruler,' and he is Al 'Aliym 'The Knowing', Al Hakiym 'The Wise'.

3) And when the newsbearer (Muhammad) Asarra 'Secretly Communicated A Secret' A Hadiyth 'Tale' to some of his Azwaaj 'Mates': ('Ay'isha and

Hafsa); so when she, (Hafsa) Nabbaat 'Announced It', (the secret which she wasn't suppose to reveal, to 'Ayisha, as they spoke), The Source, ALLAH made him, (Ahmad) able to know what they, (Hafsa and 'Ay'isha were doing). So he, (Muhammad) made known to them some of that which they said, and he A'arad 'Avoided' (other) parts. So when he, (Ahmad) had informed her, (Hafsa, she), said: "Who Anba'a 'Informed,' you, (Ahmad) of this?" (Muhammad) said: "He (He Not We) informed me, Al 'Aliym 'The Knower', Al Khabiyr, 'The Aware.'

4) If you two, (Hafsa and 'Ay'isha) turn to repent to The Source, ALLAH, so indeed, Quluwbukumaa, 'Your Two Hearts' Saghat 'Inclined', and if you two back up each other on Him (Him Not Us), so surely The Source, ALLAH is Mawlaahu 'His Ruler' and Gibriyl 'Nusqu/Jibriyl' and the (Most) Saalih 'Perfected' of Al Muw'iniyn 'The Faithful', and Al Malaa-ikat 'The Angelic Messenger (Eloheem, Anunnaqi Michael)' after that, will be his Zahiyr 'Back Up.'

5) If he, (Muhammad) was to Talaqakunna 'Dismiss or Divorce You Two', (Ay'isha and Hafsa), perhaps his Rabb, ALLAH will exchange for him, better mates than you - ('Ay'isha

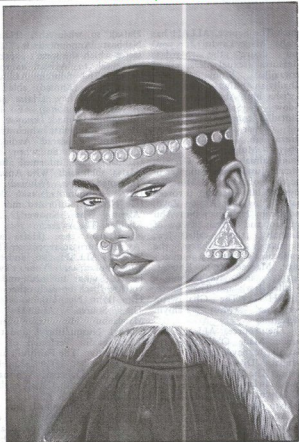


Figure 203

Aiysha ('Ay'isha Bint Abu Bakr), Wife Of Muhammad

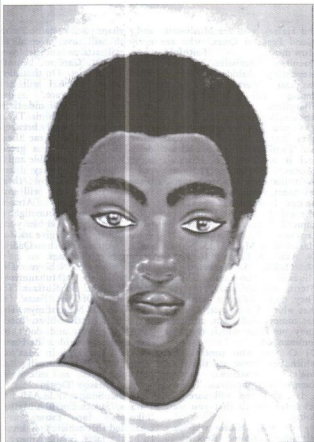


Figure 204
Hafsa Bint Umar, Wife Of Muhammad

and Hafsa), who are Muslimaat 'Good Peaceful Ones,' who are Muw'minaat 'Faithful,' Qaanitaat 'Submissive,' Taa'ibaat 'Repenting,' Aabidaat 'Slaving,' Saa'ihaat 'Restraining From Eating All The Time,' Thayyibaat 'Widows,' and Abkaar, 'Virgins.'

6) O you who are faithful; save your Anfus, 'Selves' and your Ahl 'Families' from a fire whose fuel is Al Naas and Hijaarah 'Stones.' Over it, (Hell) are Malaa'ikat, 'Messengers,' (Eloheem, Anunnaki, 19 Angelic Beings: 1. Bazaa'il 2. Sahr'il 3. Miraa'il 4. Asil 5. Lahaabil 6. Lamezil 7. Hezil 8. Arzaa'il 9. Leqaahil 10. Rahmil 11. Hasaab'il 12. Midaa'il 13. Nuwriil 14. Asbil 15. Lahaa'il 16. Raz'il 17. Huk'il 18. Yaraashil 19. Miqaa'il), who are Ghilaaz 'Stern,' and Shidaad, 'Forceful'. They don't Ya'suwn 'Disobey,' that which The Source, ALLAH has commanded them, and they carry out that which they are commanded.

7) O you who conceal that which you know are the facts, don't Ta'ataziruwn 'Make Excuses' for yourselves. There is a day, that you will surely be rewarded for all that you were doing.

8) O you, those who are faithful, Tuwbuw 'Repent' to The Source, ALLAH with a Nasuw'h 'Sincere,' repentance,

and perhaps your Sustainer, who is 'Rabb' will cover over all of your evil actions and let you enter Jannaat, 'Gardens,' beneath which rivers flow. On that day, The Source, ALLAH will not Yukhziy 'Disgrace,' the newsbearer (Ahmad) and those who have faith with him. Their light shall move quickly between their Ayd 'Hands,' (Bear their deeds in the form of a green light, if they are agreeable and a red light if they are disagreeable); and by their Aymaan 'Faith,' they will say: "O our Rabb, Atmim 'Complete,' for us, our light - (cover our whole body in your green light), and forgive us, for surely you have the Qadiyr 'Power' over all things.

9) O you, Al Nabiyyu 'The Newsbearer' (Muhammad), Jaahidi 'Fight' Al Kuffaar 'The Concealers Of The Facts' (in Jihaad) and Al Munaafiqiyn 'The Hypocrites' (in the Millat, 'Rites' of Abrawhawm, and don't be nice to them); Aghluz 'Be Hard' on them; and their Maa'wa, 'Dwelling Place' will be Jahannam 'Hell,' and an evil and wretched Masiyr 'Destiny.'

10) The Source, ALLAH has Daraba, 'Struck Forth' a Mathal 'Likeness' for those who concealed that which they know to be the facts, in the Amra-aat 'Woman', (mate [Waala]) of Noach, - (Waala would not stay

in the Craft) and the Amra'ah 'Woman' of Luwt, (Sabriyya who would not give up the wicked world). They, (Waala and Sabriyya) both were under 'Abdayni 'Two Slaves,' of our slaves, the Saalihiyn 'Perfectionists'; but they, (Waala and Sabriyya) Khanataahumaa 'Deceived Them Both', (Noach and Lowt), so they, (Noach and Lowt) could not benefit on them, (Waala and Sabriyya) anything from The Source, ALLAH. (The wives, Waala and Sabriyya) were told to enter Al Naar 'The Fire' with those who will enter.

11) And The Source, ALLAH Daraba 'Struck Forth' A Mathalan 'Likeness' for those who are faithful by Pharaoh's (Ramses II) Amra-aat 'Woman', (Asiya), when she said: 'My 'Sustainer,' who is Rabb, build for me a Bayt 'House' in Your possession, in the Jannat 'Enclosed Garden Of Delight' and Najjay 'Deliver' me from (the hands) of Pharaoh (Ramses II) and all that he does and deliver me from Al Qawm 'The Kindred' (Egyptians/ Mizraimites) Al Zaalimiyn 'Who Are In A State Of Unjustness'.

12) And Miriam, the daughter of 'Imraan, was one who guarded Farjahaa 'Her Private Parts,' and We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi Gabriel And Michael appeared to her in the

physical form as a well made man, not a spirit); and Nafakhnaa 'We Breathed' in it (her womb by way of Nusqu/Gabriel), from Ruwhinaa 'Our Holy Soul,' (Gabriel in human form) and she, (Miriam) Saddaqat 'Accepted The Truth' with the Kalimaat 'Words' of her Rabb 'Sustainer,' and his Kutub, 'Scriptures', (that she would have a son, the Messiah Yashu'a, symbolic of Horus who is also called Tammuz by the Holy Ghost, the pure soul in human form from The Source,) and she was of Al Qaanitiyn 'The Obedient Ones' (She Co-operated).

Sudiqa Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Eight

Revealed In The Year 622 A.D.

*Tajhaabun
(The Losers)*

*Original Order Chapter 108;
Wrong Order Chapter 64*

Begin All Prayers And Thinking
By Using The Name Of The
Source, ALLAH, The Rahman,
Who Is The Most Merciful.

*All In The Skies And Tiamat
Glorifies Allah - Some Of You
Are Kaafir And Others Of You
Are Muw'min - Your
Destination Is To Allah - He*

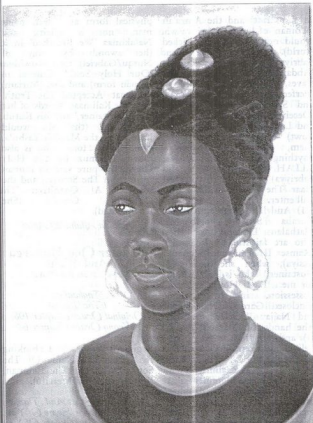


Figure 205
Asiya, The Pharaoh's Ramses II Wife

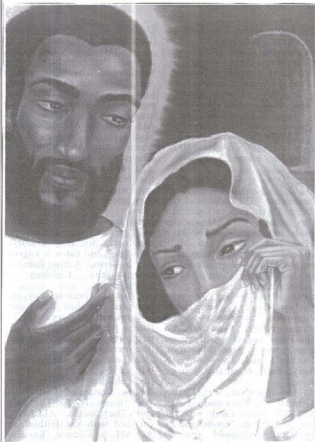


Figure 206

Gabriel Appearing To Miriam As A Well Made Man (Bashar)

*Knows What You Keep
Secret. And Vice Versa -
Muhammad Asked Did He Get
The News About Ya'aqob - It
Is Very Easy For Ahmad's
Rabb To Raise Enosites From
The Dead - Allah Is Khabyr
Of All That You Do - He
Who Is Faithful In The
Source, Allah Will Cover All
Of His Sayyi'aat - The
Concealers Of The Facts Will
Be The Ashaab Of Al Naar*

108 All that is in Al Samaawaat, 'The Skies' and the planet Earth (Tiamat) glorifies The Source, ALLAH (beings inside not outside). For Him (Him Not Us) is the Mulk, 'Rulership' (of this solar system) and for Him is all gratitude and he has Qadiyr 'Power' over everything.

2) It is He (He Not We), who Khalaaqa 'Created' you all, but from you all there are some who became Kaafir, 'Concealers Of The Facts' and of you there are some who are Muw'min, 'Faithful'; and The Source is Basiyr 'Seer', of all that you are doing.

3) He (He Not We) Khalaaq 'Created' the Skies and Al Ard (Qi), 'The Planet Earth' with the facts (beyond any doubt) and he Sawwara, 'Fashioned' you all (from mud), the best that was fashioned; and to Him (Him Not

Us), is all of your Masiyr 'Destination.'

4) He (He Not We) Ya'alam, 'Knows' that which is in Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth', and He knows that which you keep secret and that which you make known; and The Source, ALLAH is the Aliym 'Knower,' of the Dhaat 'Essence' of that which is in 'Al Suduwr 'The Chests.'

5) Didnt you, (Muhammad) get the Naba'a, 'News' about the ones who concealed that which they know to be the facts from before (the Children of Israel/Jacob). So they tasted the evil result of their own command, (for they disobeyed their law); and there is a (great) Azaab Aliym, 'Aching Pain,' for them, (the Children of Israel/Jacob).

6) That was because they, (the Jacobites) had their Rusul come to them with Al Bayyinaat, 'The Clear Evidences,' - (the scriptures- the Suhufs), so they, (the Israelites) would only say: "Shall our calmer be a Bashar, 'Mortal In Skin' and so they, (the Children Of Israel/Jacob) Kafaru 'Concealed That Which They Knew To Be The Facts' and The Source, ALLAH is enriched with the faithful and ALLAH is Ghanee 'Enriched' with Hameedun 'Gratitude' from them.

7) The ones who concealed that which they know to be the facts supposed that they will never be Tub'athuwn 'Raised From The Dead', tell them (this, Muhammad): "Nevertheless my Rabb will verily raise you from the dead (on judgment day), then you all will be informed of all that which you were doing; and that is a very Yasiyr, 'Easy' thing for ALLAH to do."

8) So Aamanuw 'Have Faith,' in The Source, ALLAH and the one He (He Not We) sent, (Muhammad) and the Nuwr 'Light' which We, ([We Not He] Anunnaqi) sent down, (all of the scriptures) and know that The Source, ALLAH is Khabiyr, 'Aware' of all that you do.

9) On the day, when He (He Not We), will gather you all for the Yawm Al Jam'i, 'The Day Of Assembly,' that is the day that some will be Al Taghabun, 'The Losers,' and others will be winners, and as for the faithful in The Source, ALLAH and he who worked to perfect himself, He, will cover all of his Sayyi'aat, 'Evil Deeds,' and let him enter the Jannaat 'Gardens', beneath which Anhaar, 'Rivers' flow (rivers flow in heaven), they abide in them forever. That is the Fawz Al 'Aziym, 'The Supreme Achievement.'

10) And as for those who concealed the facts and lied, using Our (Our Not My) verses,

(the scriptures) these are the Ashaab, 'Companions' of the Naar 'Fire'. They will be in it eternally, and it is an evil wretched destination.

No Calamity Comes Except By Way Of Allah's Jan - The Anunnaqi Sent Ahmad To Preach The Balaagh - No Sources Would Exist Except By Way Of Allah - Your Wives And Awlaad Are Enemies To You - Share Your Wealth In The Path Of Allah - Allah Will Yudaa'if Your Reward. If You Put Your Wealth Behind - He Is The Knower Of The Unseen And Al Shahaadah

11) No Musiybah, 'Calamity' comes except by ALLAH'S permisssion. And as for who has faith by way of The Source, ALLAH, He calms his Qalb 'Heart;' and ALLAH is The Knower of all things.

12) And you all are to obey The Source, ALLAH and obey the Rasuwl 'One Sent', (Ahmad); but if you turn back, so (then) it is surely on Our (Our Not My) one sent (Muhammad), Al Balaagh Al Mubiyn, 'The Propagation Of The Clear Facts.' (It is on Muhammad to inform them of the facts.)

13) The Source, ALLAH; No ILAAHA (ALLAH'S) 'Sources', would exist except by way of

Him (HU - The Creative Force Of Will); and Al Muw'miniyn 'The Faithful', have entrusted upon The Source, ALLAH.

14) O you who are faithful, surely your Azwaaj, 'Wives' and your Awlaad, 'Children' are Aduw 'Enemies' for you all; so therefore be aware, (cautious) of them and if you do excuse and pardon and forgive them; so surely, The Source, ALLAH is Ghafuwr 'Forgiving', Rahiym, 'Most Merciful.'

15) Surely all of your wealth and possessions and children are but a Fitnah, 'Trial' for you; and ALLAH has a supreme reward in His (His Not Our) possession.

16) So tremble at the mention of The Source, ALLAH and as often as you are able, Asma'uw 'Hear' and Atiy'uw 'Obey (the laws)' and share willingly (your wealth in the path of Islaam); this is good for yourselves; and this will preserve you from being greedy and Shuhha, 'Stingy,' of Nafsihi 'Your Own Self,' so these are those who are Al Muflihawn, 'The Prosperous Ones.'

17) If you put all your wealth behind The Source, ALLAH it is the best Qard 'Loan'; and He will Yudaa'if 'Double' your reward for you all and forgive you all; and The Source, ALLAH is Shakuwr 'Thankful' (and) Haliym 'Clement.'

18) He (He Not We) is the

Knower of 'Al Ghayb 'The Unseen,' and Al Shahaadat, 'That Which Is Watched'; Al 'Aziyz 'The Mighty,' Al Hakiym, 'The Wise.'

Sudiq Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Nine

Revealed In The Year 627 A.D.

Al Saff

(The Formation)

Original Order Chapter 109;

Wrong Order Chapter 61

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

*All In The Skies And Qi
Glorifies Allah - The Faithful
Ones. Don't Say What You
Don't Know - Allah Hates
Things That You Don't Do -
The Source Likes Those Who
Fight In His Path - Moshch
Wanted To Know, Why The
Jacobites Wanted To Hurt
Him - Tammuz Said, There
Will Be One Who Will Be
Sent After Him Named Ahmad
- Who Is More Unjust Than
He Who Asks About Allah? -
The Source Completed His
Light - Shall Nusqu Point Out
To The Faithful A Tijaarah
That Will Save Them? -
Spread Islaam, Using Your*

*Amwaal - The Source
Forgives Your Dhunuwb -
The Faith Is Qariyb - O You
Who Are Faithful, Be
Ansaarullah As The Disciples
Of Tammuz/Yashu'a Symbolic
Of Horus*

109 All that is in the Skies and the planet Qi, 'Earth' glorifies The Source, ALLAH for he is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym, 'The Wise.'

2) O you who are faithful, why Taqulwn 'Do You All Say', that which you do not do? (Tell Enosites one thing and do another)?

3) The Kabura 'Biggest' Maqtaan 'Hate' in the possession of The Source, ALLAH, is that you (false muslims) say things that you do not do. (You do not practice what you preach.)

4) Surely, The Source, ALLAH Yuhubb 'Likes' those who Yuqaatilwn 'Kills' in Sabylihi 'His Path', Saffaan 'In Formation,' just like they are Bunyaan Marsuws 'Firm Structure' - (as a wall that can't be penetrated).

5) And when when Mosheh said to Qawm 'Kindred', (the Children of Jacob/Israel): 'Lima, 'Why' do Tuw'dhuwnaniy 'You Hurt Me?' And you all certainly know, that I am Rasuwlun 'A One Sent' of The Source,

ALLAH Ilaykum 'To You All'; so when (the Jacobites) Zaaghuw 'Deviated' - (did not keep the laws), ALLAH made their Quluwb, 'Hearts' deviate; and The Source, ALLAH does not calm any Qawm 'Kindred' who are Al Faasiqiyn 'The Transgressors.' (They don't follow the laws of the torah).

6) And when Yashu'a Abnu 'Adopted Son' Of Miriam said: 'O Children of Israel/Jacob, Inniy 'I am' a Rasuwl 'One Sent' of The Source, ALLAH to you all; Musaddiqaan 'Confirming (in truth)', that which is between my hands from Al Tawraat 'The Torah' - (the law, 5 books of the Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And Mosheh's Successor, The Apostle Yehowshuwa), and Mubashshir 'Gives (You) Good News,' about a Rasuwl 'One Sent', who will Yaa-tiy 'Come' Min 'From' Ba'diy 'after me'; (Yashu'a/Tammuz of 2,000 years ago); and his name is Ahmad (the grateful comforter). So when (Muhammad) came to them - (tribe of Judah) with the Bayyinaat 'Clear Evidences' - (the Qur'aan); they said: 'This is Mubiyn 'Clear' Sihir 'Magic'.'

7) And who can be more in a state of unjustness, than he Aftaraa 'Who Makes Up Lies' on

The Source, ALLAH? (The Children of Jacob made lies) and he is Yud'aa 'Being Invited' Ilaa 'To' Al Islaam 'The Peaceful Way Of Life'. And The Source, ALLAH does not lead into calmness a kindred, (the Israelites) who are in Al Zaalimiyn 'The State Of Unjustness' (rejecting the laws).

8) They, (the Children of Israel) wanted to Yatfa'uw 'Extinguish' the Nuwr 'Light' of The Source, (the Qur'aan), by using their Afwaah 'Mouths,' (to tell lies); and The Source, ALLAH, Mutimmu 'Completed' Nuwrihi 'His (His Not Our) Light', (the Qur'aan), and even Al Kaafiruw, 'Those Who Conceal That Which They Know To Be The Facts' Kariha 'Hates It'.

9) He (He Not We) is who Arsala 'Sent' Rasuwlahu 'His (His Not Our) One Sent', (Muhammad) with Al Hudaa 'The Calming,' and the Diyn 'Means Of Judgment' that is a fact, in order to make apparent on all Al Diyni 'The Means Of Judgment' (to others), and even Al Mushrikuwn, 'Those Who Associate Partners (With Other Deities)' Kariha 'Hates it'.

10) O You, who are faithful, shall I, (Jibriyl/Gabriel), point out to you all, a Tijaarah 'Merchandise,' that will Tunjiykum 'Deliver You All,' from the aching pain?"

11) It is that you all should have

faith, by way of The Source, ALLAH and Rasuwlihi 'His (His Not Our) One Sent', (Muhammad) and Tujaahiduwna 'Fight Jihaad' in the Sabiyl 'Path' of The Source, ALLAH, with Amwaalikum 'Your Wealth', and Anfusikum 'Your Ourselves'. This is good for you all if you all only knew.

12) He (He Not We), Yaghfir 'Forgives' you all for your Dhunuwb 'Faults,' and he will make them enter Jannaat 'Enclosed Gardens', in which beneath them flow rivers; and Masaakin 'Dwellings Places' which is Tayyibaat 'Agreeable' in Enclosed Gardens of 'Adnin 'Eden'. That is Al Fawzu Al 'Aziym, and 'The Supreme Achievement.'

13) And Ukraa 'Another' (sign) that you all Tuhib 'Like:' the Nasr 'Aid' from The Source, ALLAH and his Fathun 'Opening' (the seventh seal) is Qariyb 'Near'; and give good news to Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones'.

14) O you, those who are faithful! Be Ansaar 'Aiders' of The Source, ALLAH (be Ansarullah) as Yashu'a Ibnu 'Adopted Son' of Miriam said to his Al Hawaariyyuwn 'Disciples', (those dressed in white robes): "Who among you, are Ansaariy 'My Aiders' (Ansars) towards ALLAH? His Hawaariyyin 'Disciples' (which

were dressed in white robes) said: "We are The Source, ALLAH'S Ansaar 'Aiders', so some of the Taa'ifat 'Parts' (the groups of the children of Israel, (the tribe of Judah) were faithful and a Taa'ifah 'Part' (of Israel/Jacob) Kafarat 'Were Ones Who Concealed That Which They, (The Pharisees), Knew To Be The Facts'; so We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi's) assisted those who had faith, (the tribe of Judah) Alaa 'On (Against)' their enemies, (the Pharisees); so they became Zaahiriyn 'Backed Up', (the only tribe to be saved).

Sudika Allahu El Agim

Chapter One Hundred And Ten

Revealed In The Year 626 A.D.

Al Jum'ah

(The Day Of Gathering:

Friday)

Original Order Chapter 110;

Wrong Order Chapter 62

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

All That Which Is In The

Samaawaat And Tiamat

Glorifies Allah - Yahu wa

Raised A Rasuwl Amongst The

Ummiyyin - The Fall Of The

Source Is Coming Into The Community - A Mathal Of Those Who Bore The Laws Of The Torah Is Like Al Himaar 'Bearing Scriptures - Muhammad Is Told To Tell The Yahuwd, They Should Wish For Death, If They Are Allah's Chosen Enosites.' - The Source Is The Knower Of Al Zaalimiyn - O Faithful Ones, Remember The Dhikr Of Allah, On Jum'ah - The Source Is Better Than Merchandise And Amusement

110 What is in (those who live in) Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth/Tiamat', Yusabbihu 'Glorifies' for him (beings that live beyond the stars and inside the planet earth), The Source, Al Malik 'The Ruler,' Al Qudduws, 'The Holy One,' Al 'Aziyz, 'The Mighty, Al Hakiym, 'The Wise.'

2) It is he who Ba'ath, 'Raised (Back To Life From The Dead)' in amongst Al Ummiyyin, 'The Ones Taught By Their Mothers, The Non-Reading (Arabs, The Gentiles,' who didn't read the law of Moshch, Aharown, and Yehowshuwa - the Torah), a Rasuwl, 'One Sent,' (Muhammad was a Gentile), from amongst them, Yatlu, 'Recited' on them of His, Aayaat 'Verses', (the scriptures from before); and Yuzakkiyhim

'Purifies Him' and he Ya'llimuhum 'Taught Them' Al Kitaab 'The Scripture', (the Qur'aan) and Al Hikmah, 'The Book Of Wisdom,' (of the newsbearer Luummiym), and they were from before in clear Dalaal 'Error'.

3) And as for the Aakhiriyn 'Others,' from amongst them, (Enosites to come in the future, after Ahmad), who have not yet Yalhaquw 'Joined' with them, (came into the Jam'ah, Community); And He (He Not We) is Al 'Aziyz 'The Mighty', Al Hakiym 'The Wise'.

4) That is the Fadl 'Preference' of The Source, ALLAH (coming into the community). He (He Not We) gives it to whomever He Yashaa 'Pleases', and The Source, ALLAH is the possessor of Al 'Aziym 'The Supreme' Al Fadl 'Preference'.

5) A Mathal 'Likeness' of those who Hummiluw 'Held' Al Tawraat 'The Torah (Laws)'; then they did not hold it as like Al Himaar, 'The Donkey', holding the Asfaar, 'Large Book'. Misery is the Mathal 'Likeness' of a Qawm 'Kindred' which lied about the verses of The Source, ALLAH, and The Source, ALLAH doesn't lead into calmness the Qawm 'Kindred' of Al Dhaalimiyn 'Those Who Are In A State Of Unjustness'.

6) (Muhammad), tell them this:

'O You Those Who Are Al Yahuwd, 'The Judahites'; if Za'amtum 'You Claim' that you (Jacobites/ Israelites) are Awliya-u 'The Nearest Friends' for him from besides the Enosites (of the Ishmaelites And Midianites), so Tamannaw 'Wish' for Al Mawta 'Death' if you are Saadiqiyn/Zodoqites 'Truthful'?

7) And they won't Abadaan 'Ever' Yatamannaw 'Wish For It', (death), of that which they present by their own Ayd 'Hands' (their rejecting of the laws); and The Source, ALLAH is 'Aliymun 'Knowing' of Al Zaalimiyn 'The Unjust Ones'.

8) (Ahmad) say (to them): 'Surely, the death which You, (Israelites) Tafirruwn 'Flee' from, so surely it will meet you all, then you will be brought back to the 'Aalim 'Knower' of Al Ghayb 'The Unseen' and Al Shahaadat 'The Things That Are Watched'; so he will inform you (as a newsbearer) of that which you all were doing.

9) O you who are of the faithful, (the Muslims); when you are called to al Salaat 'The Salutation As Worship' on the day of Jum'ah 'Gathering, Friday,' hurry to the Dhikr 'Remembrance' of The Source, ALLAH and leave all Bay'a, 'Commerce' (work). That is Khayr 'Good,' for you all if you but only knew.

10) So when Al Salaawtu 'The Salutation As Worship' is Qudiyat 'Finished,' so (get up and) Antashiruw 'Spread It Aboard' in Al Ard, 'The Planet Earth' and Abtaghuw 'Seek' preferences from The Source, ALLAH and Adh-kuruw 'Remember' ALLAH Kathiyyaan 'Alot, (Often)', so that perhaps you all will be Tuflihuwn 'Prosperous.'

11) And when they, (those who leave Jum'ah, 'Prayer On Friday' Abruptly) see Tijaarah 'Merchandise/Business' or Lahwa 'Amusement,' they Anfadduw 'Break Up', to it (business and play), and leave you, (Ahmad) Qaa'im 'Standing', (on the Minbar, giving a Khutbah, 'Sermon'. Muhammad) Tell Them: "What is in the possession of The Source, ALLAH is better than Al Lahwi 'The Amusements' and better than Al Tijaarat 'Merchandise', (making money); and ALLAH is the best of Al Raaziqiyn 'The Providers (Rizqians).'

Sudiqo Allahu 'El Azim

Chapter One Hundred And Eleven

Revealed In The Year 628 A.D.

A Fath

*(The Victorious Opening)
Original Order Chapter 111:*

Wrong Order Chapter 48

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

The Anunnaqi Opened A Fath For Muhammad/Ahmad - The Source Will Forgive You For Your Disagreeableness - Allah May Aid You Ahmad - Yehweh Is He Who Sent Down The Tranquility Upon The Faithful Ones - Allah Will Make The Faithful Men And Women Enter The Jannat - Allah May Punish The Hypocrite Men And Women And Those Who Associate Partners - For Him, Allah Is The Armies Of The Skies And The Earth - Muhammad Is Sent As A Watcher, Bearer Of Good News, And A Nazir - Enosites Are To Glorify Allah In The Early Daytime Hour And Late Evening - Whoever Fulfills That Which He Has Covenanted With Allah, He Will Give Them A Supreme Reward

1) Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) Fatahnaa 'Opened' for you, (Ahmad), a Mubiynaan 'Clear' Fath '(Victorious) Opening'.
2) That The Source, ALLAH may forgive you, (Muhammad)

for your Dhanb 'Faults' of the past and those to come after them; and to complete His (His Not Our) grace upon you, and lead you into calmness to the narrow path of those who stand up straight.

3) And that The Source, ALLAH may aid you, (Ahmad) with 'Aziyz 'Mighty' aid.

4) He (He Not We) is who Anzala 'Sent Down' the Sakiynah 'Tranquility' into the hearts of the faithful ones, that he may increase their faith with the faith that they have; and Al Junuwd 'The Armies' (Angelic Beings) of Al Samaawaati 'The Skies' and the Planet Qi, 'Earth' is for Him (Him Not Us), and The Source is 'Aliymaan 'Knowing', Hakiym 'Most Wise'.

5) That He (He Not We), will make the faithful men and the faithful women to enter Al Jannaat 'Gardens' beneath which rivers flow, abiding in them eternally; and that He may conceal their evil deeds from them; and that is a 'Aziym 'Supreme' Fawz 'Achievement' in the possession of The Source, ALLAH.

6) And that He (He Not We), may punish Al Munaafiqiyn, 'The Male Hypocrites', and Al Munaafiqaat 'The Female Hypocrites', (who turn back from the Peaceful Way Of Life, 'Al Islaam') and Al Mushrikiyn 'The Males Who Associate

Partners' and Al Mushrikaat 'The Females Who Associate Partners', who only think evil thoughts about The Source, ALLAH and the evil shall be turned and ALLAH'S wrath will be upon them and His (His Not Our) curse and He (He Not We) has prepared Jahannam 'Purgatory' for them which is an evil destination.

7) And for Him (Him Not Us) is the Junuwd 'Armies' of Al Samaawaat, 'The Skies and the planet Al Ard, 'Earth' (There Are Armies In Heaven As Well As On Earth), and The Source, ALLAH is 'Aziyz 'Mighty', Hakiym 'Wise'.

8) Surely, We ([We Not He] Eloheem Anunnaqi) Arsalnaaka 'Sent You' (Muhammad), as a Shaahid, 'Watcher' and a Mubashshir 'Bearer Of Good News' and a Naziyr 'Warner'.

9) So that you, (Enosites) may have faith in The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl, (Muhammad), and 'Azziruwhu 'Honor Him' and Tuwaqqiruwhu 'Revere Him' and you all are to Tusabbihuwhu 'Glorify Him', in the Early Daytime Hour and the late dusk period.

10) Surely, those who Yubaayi' uwnaka 'Make Contracts, (Pledged Allegiances) with you', (Muhammad), surely, they will make contracts 'pledge allegiances' with the Source,

ALLAH (They Will Compare Muhammad With The Source). The Source, ALLAH'S 'Yad 'Hand' is over Aydiyhim 'Their Hands' (ALLAH has hands like other humans hands); so whoever Nakatha 'Untwists, (Violates His Binding Oath)', so surely he only Yankuthu 'Untwists, (Violates His Binding Oath)' against himself; and whoever, fulfills that which he had 'Aahad 'Promised (Covenanted)' with The Source, ALLAH, so He (He Not We), will give him a 'Aziym 'Supreme' reward.

Booty

11) Al A'araab 'The Desert Arabs', (who are the Red Arabs), who were the ones that were Al Mukhllafuwn 'Left Behind' said to you: "Our families and our wealth (property), Shaghalatnaa 'Kept Us Occupied', (from accompanying you, Muhammad to Mecca), so we ask you, (Ahmad) to seek forgiveness for us." They, (the Red Arabs) were saying this with their tongues, but this was not what was in their hearts, (they were trying to deceive Ahmad); tell them this: "So Who can Yamliku 'Possess Rulership' for you Min 'From' anything (from) The Source, ALLAH; if He wants for you all harm, or wants for you all profit? In fact, The Source, ALLAH is Khabiyr, 'Aware' of all that you are doing, (when you seek to deceive the Faithful Ones. This quote is referring to those Arab tribes of the desert, surrounding Al Madiynah who refused to join the Newsbearer Muhammad on the pilgrimage to Mecca).

12) In fact, you, (the Meccans) thought that the One Sent, (Muhammad) and the Faithful Ones would never return (home to Mecca from Medina), to their families; and you Zuyyina 'Made It Fair-Seeming' in your Quluwb 'Hearts,' and you thought an evil thought, and it was you,

The Desert Arabs Ask Muhammad To Seek Forgiveness For Them - The Desert Arabs Refused To Go With Muhammad - The Meccans Thought That Muhammad And His Followers Will Never Get Back To Medina - Those Who Don't Have Faith In The Source And His One Sent, Sa'iyir Will Be Prepared For Them - The Rulership Of The Skies And Qi Is Allah's - Those Who Seek The Maghaanim Want To Go With Muhammad - Muhammad Told Those Who Are Left Behind, They Shall Be Called Out To Fight, If They Obey, They Shall Be Rewarded With A Good Reward - The Source, Allah Has Promised You All, Much

who were the Buwraan 'Lost' Qawmaan 'Kindred'.

13) And whoever does not have faith by way of The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Ahmad), so surely We, (We Not He) Eloheem, Anunnaqi, have prepared a Saiyr 'Blazing Fire,' for those who concealed that which they know to be the facts.

14) And the Mulk 'Rulership' of Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth' is for Him (Him Not Us). He (He Not We), forgives whomever He pleases, and punishes whomever He pleases, and The Source, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymaan 'Most Merciful'.

15) Those who are Al Mukhillafuwn 'Left Behind', (the Red Arabs) will say, when you set out to capture the Maghaanim 'Spoils, Booty': "Let us go with you all." They, (the Desert Arabs) only want to Yubaddiluw 'Change' the Kalaam 'Words' of The Source, ALLAH (by creating Hadiyths and making a false Qur'aan). Tell them this, (Ahmad): "You shall not follow us. That is what has been said unto you all from before, from The Source, ALLAH. So they, (the Red Arabs) will say: "In fact You, (Muhammad) are only envious of us." In fact, they have no comprehension, except very

little.

16) (Muhammad), you are to tell those who are left behind, from Al A'araab 'The Desert Arabs' (the Red Arabs): "You shall be called out (to fight) Ilaa 'Towards' (against) a kindred possessing a Shadiyd 'Forceful' wretchedness to kill, or Yaslimuwn 'They Surrender In Peace'; so if you all obey, The Source, ALLAH will give you a reward that which is best, and if you turn away, (don't stay on the straight path,) as you turned away from before, He will verily punish you all with an aching pain.

17) There is no Haraj 'Blame' on Al A'amaa 'The Blind', nor is there any blame on Al A'araj 'The Cripple' and nor is there any blame on Al Mariyd 'The Sick'; and whoever obeys The Source, ALLAH and His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', He (He Not We) will allow them to enter into Al Jannaat 'The Gardens,' beneath which rivers flow. And whoever turns back, he will be punished with an aching pain.

18) The Source, ALLAH has approved of those who are faithful when they made a contract, (pledged allegiance), to you, (Muhammad), under Al Shajarat 'The Tree' (in Hudaybiya). So He (He Not We), did know that which was in their Quluwb 'Hearts'; so He

sent down to them Al Sakiynah, 'The Tranquility' upon them; and He rewarded them with a Fath '(Victorious) Opening' (at Khaybar, 'A Jewish Town') which was Qariybaan 'Near', (after the peace of Hudaibiya).

19) And much Maghaanim 'Booty,' which they will take, and The Source, ALLAH is 'Aziyzaan 'Mighty', Al Hakiym 'The Wise'."

20) And The Source, ALLAH has promised you all, much booty of that which you will capture, (as they overthrow the villages and accumulate it - Muslims will share in it). So he made this happen for you all (this way in advance) and has Kaffa 'Withheld' the hands of the Enosites from you; (that they may not overthrow you, conquering you all); that it will be a sign for the Faithful Ones and that He, may lead you all into calmness to the narrow path of those who stand up straight.

The Source, Allah Has The Power Over All Things - Those Who Conceal The Facts And Fight To Kill, Will Not Find Any Protector Or Aider - You Won't Find Any Changes In The Sunnat Of The Source - Allah Held Back Your Hands During The Truce Of Hudaibiya - The Source Made A Vision A Reality For His Rasuwl -

The Source Has Sent His Rasuwl With The Leading Calmness And The Factual Way Of Life - Muhammad Is The One Sent From The Source - Their Marks Are In Their Heads From Prostration - The Likeness Of A Seed Of A Plant That Brings Forth A Stalk - The Source Will Reward Them From A Supreme Reward

21) And the others which have not been able to achieve, The Source, ALLAH will certainly encompass it, and The Source, ALLAH has the Qadiyr 'Power' over all things.

22) And if those who conceal that which they know to be the facts, Qaatalakum 'Kills You All', they will only turn their backs (and run away); then they will not find any Waliyyaan 'Near Friend' (protector) and no aider.

23) The Sunnat, 'Tradition' of The Source, ALLAH which is indeed the same as it was from that which had passed from before (Ahmad's) time (there is no new Sunna); and you won't find Tabdiyyaan 'Any Changes' in the Sunnat 'Tradition' of The Source, ALLAH.

24) And He (He Not We) is who Kaffa 'Withheld' their hands back from you all and your hands from them - (He kept you

all from killing each other. This is in reference to the Hudaybiya truce, by this truce, the hands of men were held back from the Peaceful Ones, 'Muslims,' and they were no longer persecuted), in the Batni 'Stomach (Valley)' of Mecca after he gave you all victory over them; and The Source, ALLAH sees all that you do.

25) These are those who conceal that which they know to be the facts, and turn away from Al Masjid Al Haraam 'The Sacred Place Of Prostration', (in Mecca), and withhold you from arriving at the detained place for Al Hadya 'Offering Sacrifice' (Haji). And if it were not for the faithful Rijaalun 'Mortal Men' and faithful Nisaa-u 'Enosite Women', they did not know that Tata-uwhum 'Hurts The Mercy' (of the rejectors of the faith in Mecca,) so those you may have afflicted or (killed many of the innocent) hatefully, without even knowing that The Source, ALLAH might bring unto His (His Not Our) mercy, whom He pleases; if they, (the faithful and those who conceal that which they know to be the facts), had been clearly separated, We, ([We Not He] the Eloheem Anunnaqi) would have inflicted an aching pain upon those who conceal that which they know to be the facts.

26) When He (He Not We) made

those who conceal that which they know to be the facts, in their hearts, Al-Hamiyyat 'Zealotry', (just as the) zealousness of Al Jaahiliyah 'The (Age Of) Ignorance'; so He, (He Not We - The Source) sent down His (His Not Our) tranquility upon His (His Not Our) Rasuwl - (he gave Muhammad The Qur'aan), and upon the faithful - (the Qur'aan is for those who were being faithful) and imposed upon them the Kalimat 'Spoken Word' - (the Qur'aan) of Al Taqwaa 'The Fear And Trembling'. And they were worthy of it, and they were entitled to it and The Source, ALLAH is The 'Aliym 'Knower' of all things.

27) For indeed, The Source, ALLAH has made Al Ru-yaa 'The Vision' (a reality), by facts (beyond any doubt), for His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Muhammad had a vision that he and his companions would enter Mecca faithfully secure with his head shaved or cut as Abrawhawm did; then this vision came true). You are to enter Al Masjid Al Haraam 'The Sacred Place Of Prostration' (around the Kaaba, in Mecca, making pilgrimage.) If it pleases The Source, ALLAH, you all have Ru'wsakum 'Your Heads' Muhalliqliyn 'Shaved' and Aaminiyn 'Feel Secure' in doing it, and Muqassiriyn 'Cut It

Short' (your hair); and don't fear. (If it was not the law, to cut hair); so He (He Not We) knows that which you don't know. So He made from besides that (the seizure of Khaybar, before Muhammad took Mecca, an incident of) a near Fathaan '(Victorious) Opening'.

28) He (He Not We) is who sent His (His Not Our) One Sent, (Muhammad) with the leading calmness and the factual Diyn 'Means Of Judgment,' to Yudh-hirahu 'Cause It To Appear' on all the Al Diyn 'Means Of Judgment'; and The Source, ALLAH is sufficient as a Shahiyd 'Watcher'.

29) (Muhammad) is a Rasuwl 'One Sent', of The Source, ALLAH and those who are with him are forceful, (firm) Alaa 'On' the concealers of the facts; (yet) they have a Rahmaa 'Yielding' (Mercy) between themselves. You see them Ruka'a 'Bowing', Sujud 'Prostrating.' Seeking the Fadl, 'Preference' from The Source, ALLAH and Ridwan '(Content) Pleasure.' Siymaahum 'Their Marks' are Fee 'In' Wujuwhihim 'Their Faces' from the Athar 'Traces' of Al Sujud 'Prostrating'. That is their Mathal 'Likeness' in Al Tawraat 'The Torah Law Of The Eloheem Mosheh And The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh's

Successor' and their likeness is in Al Injiyl 'The Evangel, Revelation' (Given To Yashu'a/Isa), as a Zar'in 'Seed' of a plant that brings forth a stalk; so it supported it, so it becomes thick and stands upright on its own trunks. It amazes the planter, so that he, (the planter by way of it), would Yughiydha 'Enrage' Al Kuffaar, 'The Concealers Of That Which He Knows To Be The Facts.' And The Source, ALLAH has promised for those who have faith and work to Saalihaat 'Perfect Themselves', from them forgiveness; and a 'Aziym 'Supreme' Ajraan 'Reward'.

Sudqah Allahu 'El Azim

Chapter One Hundred And Twelve

Revealed In The Year 627-629 A.D.

Maaidah

(The Table Of Food)

Original Order Chapter 112;

Wrong Order Chapter 5

Begin All Things Using The Name Of The Source, ALLAH Who Is The Rahman, The Most Merciful.

Fulfillment Of Contracts

112 Oh you who are faithful! You are to Wafa 'Perform' the

'Uquwd 'Contract,' which was made Halaal, 'Lawful' for you all, of the Bahiyima 'Beast (Living Creatures)' of (the livestock of) Al An'aam 'The Cattle'; and other than that, which was Yutlaa 'Recited' upon you all, besides the Muhilliyy 'Lawful Ones' of Al Saydiy 'The Hunt', and you all are Hurum 'Garbed As A Pilgrim.' Surely, The Source ALLAH Yahkam, 'Uses Wisdom' on what He (He Not We) wants.

2 Oh you who are Faithful! You are not to Tuhilluw 'Make Lawful' ALLAH'S Sha'aa-ira 'Doctrinal Ceremonies', nor the Haraam 'Sacred' month, nor the Hudaa 'Leading Calmness', and neither the Qalaa'id 'Garlands', and nor Aammiyna 'The Faithful' (guardians), of Al Haraam 'The Sacred' Al Bayt 'House'; they pursue the preference from their Rabb, who is 'Master/Sustainer,' and Ridwaan, 'Acceptance', and when they Halaltum 'Made It Lawful For You', so then you all are to chase down the hunt, and don't let the Shanaan 'Hatred' of a Qawm, 'Kindred' (the Quraysh) Harm You All, That Sadda 'Hinders' you all, (Muhammad and his followers), from the Masjid Al Haraam, 'Sacred Place of Prostration,' that it may cause you to transgress; and Ta'aawanuw 'Assist' one another Alaa 'Upon'

Al Birri 'The Righteousness' and Al Taqwaa 'The Fear And Trembling,' and don't assist one another in Al Ithmi 'The Guilty Actions', and Al 'Udwaan 'The Aggressiveness', and tremble at the mention of ALLAH. Surely, The Source, ALLAH is Shadiydu 'The Most Forceful', in Al 'Iqaab 'The Punishment'.

*Forbidden Food - This Day
Has The Source Completed
Your Diyn*

3 Hurrimat 'Forbidden' upon you all, are Al Maytat 'The Dead' and Al Dam 'The Blood' and Laham 'Flesh' (Meat) of the Khinziyr 'Pig'; and that which besides The Source, ALLAH has made Halaal 'Lawful,' and the Munkhaniqa 'Strangled' and Al Mawquwdhat 'The Slaughtered', and the ones left on the ground, and Al Natiyhat 'The Ones Smitten By A Horn', and that which was eaten - one seventh except what Dhakkaytum 'You All Have Offered For Sacrifice', and what was Dhubiha 'Sacrificed' upon Al Nusubi 'The Stones Set Up For Idols', and that which you divided by using Al Azlaam 'Arrows (Used In Divination)'. All that is an aggression. This day have those who concealed what they know to be the facts given up hope, about your Diyn 'Means Of Judgment', so don't dread them,

and dread Me, (The Source only).

This day (in Muhammad's time), Akmaltu 'I, (I Not We) ALLAH) Have Completed' for you all, Diynakum 'Your Means Of Judgment' and Atmamtu 'I (I Not We) Have Fulfilled' Ni'matiy 'My (My Not Our) Grace' upon you all, and Radaytu 'I (I Not We) Made Pleasant' for you all Al Islaam 'The Peaceful Way Of Life' as a Diynaan 'Means Of Judgment'; So whoever is forced, while Mukhmasatin 'Emptiness Of The Belly' (starving), without Mutajaanifin 'Deviating From The Truth' (intentionally to break the law) to guilty actions; so surely, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

4 They ask you, (Muhammad), what is Uhilla 'Lawful' for them. Tell them this, (Muhammad): "Uhilla 'Lawful' for you all, are Al Tayyibaat 'The Agreeable Things', and what you have been taught, about Al Jawaarih 'The Best Training' Mukallibiyn 'Dogs To Hunt'. It is up to you to teach them, as The Source, ALLAH has taught you; so eat of that which they catch for you. And Adhkuruw 'Remember', the name of The Source, ALLAH Alayhi 'Upon It', (The Source's Name, must be recited unto it before it dies; whether you hunt it down, or you train

your animals, to hunt it down); and tremble at the mention of The Source, ALLAH. Surely, The Source, ALLAH is very swift in the reckoning.

5 (As of) this day, Al Tayyibaat 'The Agreeable Things' are Uhilla 'Made Lawful' for you all; and the food of those who were given the scripture - (the Torah), is also lawful for you all - (Ishmaelites. And the food that is lawful for the Children Of Israel, is also lawful for Muslims), and your food is lawful for them; (and all food that Muslims eat, are lawful for Israelites); and Al Muhsanaat 'The Chaste Women', (who protect their virginity), from (amongst) Al Mu-minaat 'The Faithful Women', and Al Muhsanaat 'The Chaste', from (before you, the virgin women) who were given the scriptures (and tablets), from before you (the Qur'aan, and the Muslims 'Peaceful Ones,' of Muhammad's time); when you had given (unto the females), their proper dowry, (then, you were allowed to take them in marriage), without Musaafihayn 'Committing Fornications' - (to have sex with a virgin out of wedlock, whether Israelite, Or Ishmaelite, was a guilty action); and do not take them Akhdaanin 'As Secret Friends'; and whoever conceals the faith - (the religion of Arawhawm,

and the laws, that are enjoined for Israelites and Ishmaelites, equally); so indeed, all of his work will add up to nothing. (Muslims who don't acknowledge Israelite laws are worshipping in vain), and he shall, in the End, be Min 'From' Al Khaasiriyn 'The Losers'.

Purification For Worship

6 Oh you who are of the faithful, when you stand up to Salaawt 'Salutation As Worship', so wash your faces and your hands, right up to the elbows, and wipe your heads and your feet, right up to the ankles; and if you are in Junubaan 'A State Of Impurity On Your Menstruation', (or had sexual intercourse), so Attahharuw 'Purify Yourselves'; and if you are sick or on a Safarin '(journey) Moving About', or just came from Al Ghaa-it 'Moving Your Bowels', or Lamastum 'Have Touched' Al Nisaa-a 'The Woman' (sexually); so you can't find (pure) water, so Tayammamuw 'Make Ablution' with Tayyibaan 'Agreeable' Sa'iydaan 'Soil'. So wipe your faces and your hands from it (the sand). The Source, ALLAH does not want to make your (life) difficult, but He (He Not We) only wants to make you pure, and to complete His (His Not Our) grace upon you all, so that

you all may be grateful. سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

7 And remember ALLAH'S grace upon you all, and His (His Not Our) Miythaaq 'Fulfillment Of A Promise' which He (He Not We) has promised you all with when you said: "We hear and we obey, and tremble at the mention of The Source, ALLAH. Surely, ALLAH knows all that which is in the Dhaat 'Essence' of your Suduwr 'Chests'.

For The Perfectionists Is A Supreme Reward - Jaheem Is For The Liars Of The Eloheem's Signs

8 O you who are faithful! Be Qawwaamiyn 'Those Who Stand (To Pray)' for Him (Him Not Us), Shuhadaa-a 'Watching' by using justice, and don't let your hatred of a kindred, push you to the point that you don't act justly; he Aqrabu 'Is Closest' to Al Taqwaa 'Those Who Tremble And Fear; and Ataquw 'Fear And Tremble' The Source, ALLAH. Surely, the Source, ALLAH is Khabiyr 'Aware' of that you do. سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

9 And The Source, ALLAH has promised to those who have faith, and work to perfect themselves; for them, there will be a forgiveness and a 'Aziym 'Supreme' reward. سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ

10 And those, who conceal what they know to be the facts, and they lied by using Our, ([Our

Not [My] The Eloheems
Anunnaqi's) signs; these are
those, who will be the Ashaab
'Companions' of the Jahiym 'Hell
Fire'.

11 Oh you, those who have
faith; remember The Source
ALLAH'S grace upon you all,
when a kindred plots against you
all to spread out their hands to
you all, so he (the Source) Kaffa
'Held Back, Stopped' their
Hands 'Ankum 'From Off Of
You'; and tremble at the
mention of The Source, ALLAH;
and the faithful puts their trust,
in The Source, ALLAH.

Israel's And The Nazarites Covenants

12 And indeed, The Source,
ALLAH has taken a Miythaaq
'Fulfillment Of A Promise', with
the Banee Israaiyl, 'Children of
Israel', and We, ([We Not He]
the Eloheem, Anunnaqi), have
Ba'athnaa 'Raised Up From The
Dead' from amongst 12
chieftains, of the twelve
Naqiybaan 'Leaders' (Tribes Of
Israel, The Children Of Jacob),
and ALLAH said, "Surely, Inniy
'I am' (I Not We) with you all, if
you Aqamtum 'Stood Up'
(enforce) Salaat 'Salutation As
Worship' and you gave Zakaat
'Charity' and you had faith
Bi-Rusuliy 'By Way Of My (My
Not Our) Ones Sent' (the
newsbearers of Israel), and you

'Azzartumuwhum 'Assisted
Them' (help them by
propagating the facts), and
Aqradtum 'You All Loan' The
Source, ALLAH, the best of
Qardaana 'Loans'. Verily, I will
conceal from you all, your evil
deeds - (if Israel would have kept
the law and obeyed all the
newsbearers, The Source,
ALLAH would have forgiven all
of their actions); and I, (The
Source) would have allowed you
all to enter into the Jannaat,
'Gardens,' underneath which
rivers flow; but whoever
conceals what they know to be
the facts, from amongst you all
after that (after the facts has
been made clear, to the Children
Of Israel/Jacob), so indeed, they
have gone astrayed into error,
from the right path.

13 Because they, (the Children
Of Israel), Naqdihim 'Violated'
Miythaaqahum 'Their
Fulfillment Of A Promise', (and
did not keep the laws); We, ([We
Not He] the Anunnaqi)
La'annaahum 'Cursed Them',
and We made their hearts,
Qaasiyatan 'Hard'. (They no
longer feared.) They, (the
so-called Jews in Mecca, of
Muhammad's time) altered (and
moved around) Al Kalima 'The
Spoken Words', from
Mawaadi'ih 'Their Places' (in
the scriptures, the Torah), and
they forgot part of it, which
they have been reminded; and

they kept on being the foremost in disloyalty, and unfaithfulness, except a few of them. So you, (Muhammad) are to forgive them, and turn away from them; surely, The Source ALLAH likes the doers of that which is best.

14 And, as for those who say: "Surely, we are Nazarites, (followers of Yashu'a); We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), have taken Miythaaqahum 'Their Fulfillment Of A Promise', so they forgot (are neglectful) of a portion of what they were reminded. (After Yashu'a/Isa there was a self-acclaimed newsbearer, prophet who fabricated a new law - Paul, a Christian, and left the teachings of the Eloheem Mosheh behind). So, We, (the Eloheem, Anunnaqi) stirred up in the midst of them, the enemy and hatred until the Day of Resurrection (Judahites and Christians hates each other); and The Source, ALLAH will Yunabbi-uhum 'Inform Them (As A Newsbearer)' about what they have Yasna'uwn 'Molded'.

15 Oh Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scriptures', (Children Of Israel - Jacobites) indeed, there has come to you all, Our ([Our Not My] the Eloheem, Anunnaqi) Rasuwl 'One Sent', making clear for you all, most of what you were hiding from Al Kitaab 'The Scripture'; (you all

stopped prostrating in worship, and started drinking, etc.) and eliminating a lot - (many things that the Children of Israel had added into the Law that was not originally there, and Muhammad cleared up). Indeed, the Nuwrun 'Light' of The Source, ALLAH has come to you all, and a Mubiyn 'Clear' Kitaabun 'Scripture', (the Qur'aan).

16 With it, (the Qur'aan), ALLAH leads into calmness, he whom follows what pleases Him, to the path of Al Salaam 'Peace', and brings them out of Zulumaat 'A State Of Unjustness' into Al Nuwr 'Light', by His (His Not Our) own permission, and leads them into calmness to the path of the ones who stand up straight.

17 For indeed, those who conceal what they to know to be the facts say: "Surely, The Source, ALLAH, (Yahuwa), He is Al Masiyh 'The (Anointed) Messiah', Ibn 'Adopted Son' of Miriam. Tell them this: "Who could Yamliku 'Have Power' (Over) anything against The Source, ALLAH? If He wants to destroy the (Anointed) Masiyh 'Messiah', Ibn 'Adopted Son' of Miriam and Ummahu 'His Mother', or whoever is together (assembled) in the planet Qi/Tiamat 'Earth.' And For Him (The Source), belongs the Mulk 'Rulership' of Al

Samaawaati 'The Skies' And Al Ard 'The Planet Earth,' and all that is between them. He Yukhluq 'Created', what He (He Not We) pleases, and ALLAH is powerful over all things.

18 And the Judahites, (followers of the Eloheem Mosheh), and the Nazarites, (followers of Yashu'a/Isa), say: "We are ALLAH'S Abnaauw 'Sons' (exclusively), and Ahibbaa-uwhu 'His Beloved Ones'. (He likes us more than everyone else). Tell them this, (Muhammad): "So why then, does He (He Not We) inflict so much pain upon you all because of your faults? In fact, you all, are just Basharun 'Mortals In Skin', who are from His (His Not Our) Khalq 'Creation.' He, (ALLAH) forgives whomever, He pleases, and punishes whom He pleases, and for Him (Him Not Us), is the Mulku 'Rulership' of Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth,' and all that which is between them - (the planets, above the firmament: Jupiter (Kishar) Saturn (Anshar) Uranus (Mashsig) Neptune (Ea) and the planets, below the Asteroid Belt's firmament: Mercury (Mummu) Venus (Lahamu), Earth (Tiamat), Mars (Lahmu) or Seven Heavens); and to Him, is Al Masiyr 'The Destination' (everyone, will return to Him).

19 O Ahl 'Family' of Al Kitaab

'The Scriptures', indeed the one We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) has sent (Muhammad), who came to you all making clear for you all, (bringing a new book - the Qur'aan); lest you say: "There has not come to you, a bearer of good news, nor a warner; so certainly, there has come to you all, a bearer of good news and a warner; and The Source, ALLAH has the power over all things.

20 And when, (the Eloheem) Mosheh, said to his kindred- (The Jacobites/Israelites): "Oh my kindred, you all, are to remember The Source, ALLAH'S grace upon you all, "When He made Fiykum 'In Your Midst', Anbiyaa, 'Newsbearers,' and made you all Muluwkaan 'Rulers' and He, has given you all, that which He has not given, to anyone else in Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

Israelites Commanded To Go Into The Holy Land

21 Oh my kindred, (the Children Of Israel, Jacob)! You all, are to enter Al Muqaddasat 'The Holy' Ard 'Land', (Jerusalem) which The Source, ALLAH has Kataba 'Written' Lakum 'For You All' - (Land Of Canaan); and don't turn your backs; so then, when you turn back around, you will be of the

losers.

22 They, (The Children Of Jacob), said: "Oh Mosheh, surely, there is in (the Land of Canaan), a Qawmaan 'Kindred', who are Jabbaariyn 'Mighty Ones', (Ghiboreem, 'The Giants - The Philistines Of The Anaqites); and we will not enter it until they (the Philistine giants) leave from it (the land of Canaan, which was originally called Kadmon, the land of the Kadmonites; Adams real name); so if they leave from it, then we (Israelites) will enter it.

23 Two Rajulaan 'Mortal Men' (Mosheh and A Yehweh in human form), of those who feared upon both of them; whom ALLAH had showed grace upon them, said: "Enter upon them, by Al Baab 'The Door' (gate), so when you have entered it, you shall surely be Ghaalibawn 'Victorious', and on The Source, ALLAH should you put your trust in, if you all, are faithful.

24 They, (the Children Of Jacob/Israel), said: "Oh Mosheh! Surely, we will never enter it (the Land of Canaan), as long as (the Philistines) are in it. So go; You, (Mosheh), and your Rabb, 'Sustainer' (A Yehweh)! So both of you Qaatilaan 'Kill'. Surely we, (the Jacobites) will squat down, right here. (The Children of Israel/Jacob, told the Eloheem Mosheh, they were afraid to go

in, and fight to kill the Giants - "Philistines," and they will sit outside, while they - Mosheh, and his Rabb - A Yehweh, go in and fight to kill the Philistines. This is one of the things that caused the Children of Israel to lose their covenant).

25 He, (the Eloheem Mosheh), said: "My Rabb 'Master' (A Yehweh), surely, I don't Amliku 'Have Power', except over myself, and Akhiy 'My Brother', (Aharown). So, Afruq 'Make A Separation' between us - (the Eloheem Mosheh and Aharown, His Prophet), and between the kindred, who are transgressors - (the Children Of Israel/Jacob).

26 He, said: "It, (the Land of Canaan), shall surely be Muharramatun 'Forbidden' 'Alayhim 'Upon Them', for Arba'iyina '40' Sanatan 'Years'. They shall Yatiyhawn 'Wander About' in Al Ard 'The Earth'; (Children Of Israel/Jacob wandered about in the wilderness, for 40 years, before entering the Land of Canaan). So therefore, don't grieve 'Alaa 'Over' the transgressing Kindred - (the Jacobites).

The Story Of The Offering, And The Killing Of One Of Adam's Two Sons

27 And (Muhammad), you are to Atlu 'Recite' 'Alayhim 'Upon Them', the Nabaa 'News' about

the Abnay 'Two Sons' of Adam (Kadmon; Qayin/Qayin and Hebel/Abel), with facts (beyond any doubt), when Qarrabaa 'Both Of Them Offered' Qurbaanaan 'An Offering', so it was Tuqubbil 'Accepted' from Ahadihimaa 'One Of Them', and not Yutaqabbal 'Accepted' from Al Aakhari 'The Other'. He, (Qayin) said: "Surely, I will Aqtulannaka 'Kill You', (Hebel); and Hebel), said: "ALLAH Yataqabbalu 'Accepts' (things), from Al Muttayiyn 'Those Who Tremble At The Mentioning (of his name)".

28 Verily if you, (Qayin) Basat-tta 'Reach Out' (and raise) your hand towards me to kill me, I will not reach out, (or raise) my hand towards you, to kill you. Surely, I (Hebel) fear The Source, ALLAH, Rabb of Al 'Aalamiyn 'The Known Worlds'.

29 (Hebel said to Qayin): "Surely, I want you, (Qayin) to take upon yourself the guilty act (of my murder), and your own guilty action; so you, (Qayin) will be of the Ashaab 'Companions' of the Fire; and that is to be the reward of Al Zaalimiyn 'Those Who Are In A State Of Unjustness.'

30 So, (Qayin's) spirit, (out of jealousy and envy), caused him, to kill his brother, (Hebel). So he killed him, (Hebel); and (Qayin), became one of those who are from Al Khaasiriyn 'The

Losers'.

31 Then, ALLAH Ba'atha 'Raised Up (Back To Life From The Dead)' a Ghuraabaan 'Raven' Yab-hathu 'Searching' in Al Ard 'The Planet Earth', so that he may show him (Qayin), how he can Yuwaariy 'Cover Up' the Saw-ata 'Nakedness' of Akhiyhi 'His Brother', (Hebel). He said: "Woe unto me. How is it possible for me to be weak, like Al Ghuraab 'The Raven'? So (show me how) Awaariya 'I Can Cover Up' the Saw-ata 'Nakedness' of my brother. So he, (Qayin) became from Al Naadimiyn 'The Regretful Ones'.

32 For the sake of that, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) has Katabnaa 'Written (Inscribed)' upon the Banee Israaiyl 'Children Of Israel/Jacob', that whomever kills a person without a person; or one who causes mischief in the planet Tiamat; so it is like he killed all of the Enosites all together; and he, whomsoever Ahyaahaa 'Brings Them Back To Life', so it is like he brought all of the Enosites back to life all together; and indeed, the ones We, (the Eloheem, Anunnaqi), have sent, came to them with Al Bayyinaat 'The Clear Evidences'; then surely, a lot of them after that, were those who exceeded their bounds in the planet Qi 'Earth.'

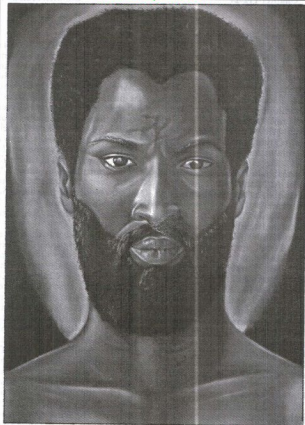


Figure 207
Qayin (Cain), Son Of Adam And Hawwah

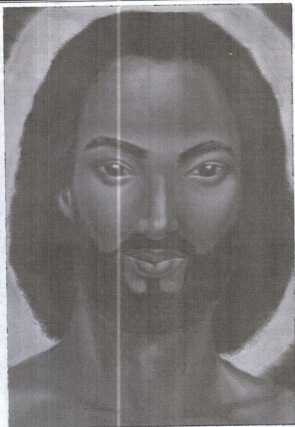


Figure 208
Hebel (Abel), Son Of Adam And Hawwah

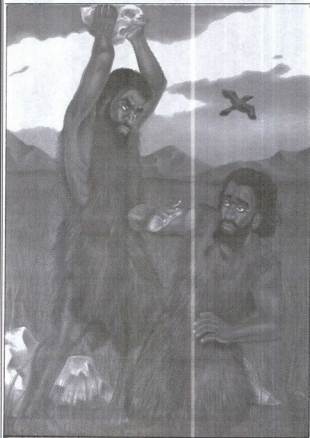


Figure 209
Qayin Kills Hebel In The Fields

33 Surely, the reward of those who Yuhaaribuw 'Fought' for ALLAH, and the Rasuwl (Muhammad), and they hasten in the planet Earth Fasaadaan 'To Cause Mischief', to Yuqattaluw 'Kill', or Yusallabuw 'Crucify', or Tuqatta'a 'Cut Off Their Hands', and Arjuluhum 'Their Legs' from opposite sides, or they are Yunfaw 'Expelled' from Al 'Ard 'The Earth' (that part of the land); that is a shame, in the physical world, and for them in the End, is a 'Aziymun 'Supreme' pain.

34 Except, for those who repented before you all, (Muhammad and his followers); take power over them. You all know that The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

35 O you, those who are faithful, tremble at the mention of The Source, ALLAH and seek Al Wasiylat 'The Link' Ilayhi 'Towards Him' (seek to be near to Him), and Jaahiduw 'Fight Jihaad (holy war)' in His (His Not Our), ALLAH'S path, so that perhaps you all will be prosperous.

36 Surely, those who conceal what they know to be the facts, even if, they had what is in the planet Tiamat, 'Earth' all of it, and the very likes of it with it, (thinking that with it), they can ransom themselves by way of it, to get away from the pain of the

day of resurrection; it would not be accepted from them; and for them, there will be an aching pain.

37 They would want to get out of Al Naar 'The Fire', and they will not be of those who get out of it, and for them is a Muqiymun 'Lasting' pain.

Cutting Off The Hands Of Thieves As A Punishment

38 And as for the male who steals and the woman who steals, Aqta'uw 'Cut Off' their hands as a punishment, for what they have earned; Nakaalaan 'An Exemplary Punishment', from ALLAH, and The Source, ALLAH is 'Aziyzun 'Mighty', Hakiymun 'Wise'.

39 So, whoever repents after his state of unjustness, and Aslaha 'Perfects' (makes amends), so surely, The Source, ALLAH Yatuwbu 'Accepts Repentance' Alayhi 'Upon Him'. Surely, The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

40 Did you, (Muhammad), not know that the Mulk 'Rulership' of Al Samaawaati 'The Skies', and Al 'Ard 'The Planet Tiamat/Earth,' is His (His Not Our - The Source)? He (He Not We) punishes whomsoever He pleases, and He Yaghfir 'Gives Forgiveness', to whomsoever He pleases, and The Source, ALLAH

has the Qadiyr 'Power' over all things.

*Don't Let The Nation Of
Enslaves Make You,
Muhammad Sad*

41 O you, the one sent, (Muhammad)! Don't let those who work together to hurry into concealing the facts make you, (Muhammad) sad from those who say: "We have faith" with their mouths and they don't have faith in Quluwbuhum 'Their Hearts'; and from among those who are Yahuwda, (fake 'Jews' of Quraizah, who turned their backs on you, and spied for Kheibar). They are listeners of a lie, listeners to another Qawm 'Kindred', who did not come straight to you. They Yuharrif 'Altered' (distorted) Al Kalima 'The Spoken Words' from Mawaadi'ih 'Their Original Places', (in the law); saying: "If you, my kindred, are given this (by Muhammad); so take it. And if you are not given this, so beware!" And as for him who wants to test The Source, ALLAH, so there is no Tamlak 'Power' Lahu 'For Him' from The Source, ALLAH. These are they, who The Source, ALLAH does not want to purify their hearts for them while yet, in the physical world. They are shameful and for them, on the Last Day, is a supreme pain.

42 Ones who listen for a lie, are only the (greedy) devours, for that which is Suhti 'Prohibited'; so if, they come to you, (Muhammad), Ahkum 'Use Wisdom' between them or turn away and avoid them; and if you, (Muhammad), turn away from them. So they won't be able to harm you in anyway; and if you are to use wisdom, so then, use wisdom between them by way of fairness; for surely, The Source, ALLAH likes Al Muqsitiyn 'Those Who Are Fair' (in their decisions).

43 And how do they, (the Children of Israel/Jacob), make you, (Muhammad) a wise one, and they have the Tawraah 'The Torah, (the Law of The Eloheem Mosheh, And The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh's Successor), and in it is The Source, ALLAH'S Hukm 'Wisdom'. Then, (with His wisdom in the Torah); they (the Jacobites) turn back, (break all of its' laws) even after that; and they are not of those who are faithful.

*The Torah, Injil Is Sent
Down By The Eloheem
Anunnaqi As A Light And
Judgment*

44 Surely We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), sent down the Torah (the Law). In it is

Hudaan 'Leading Calmness' and Nuwrun 'Light'. Al Nabiyuwn 'The Newsbearers', those who Aslamuw 'Surrendered In Peace' Yahkumu 'Use Wisdom' (judge) to those who are of Judah, and Al Raabbaaniyyuwn 'The Rabbis' (Learnt Masters), and Al Ahbaar 'The (Jewish) Priests (Learnt Men)', that which you are to guard from the Source, ALLAH'S Kitaab 'Scripture'; and they were watchers 'Alayhi 'Upon It'. So therefore, don't dread the Enosites, and dread Me, (Me Not We - The Source), and don't sell My (My Not Our) signs, (all of My scriptures and tablets), for any small price; and as for him, who does not use wisdom by what The Source, ALLAH sent down - (the Enosites who make decisions, by any books other than the scriptures and tablets); so these are they, the concealers of the facts. (Anybody, who makes any man-made books like the Hadiyth and the Talmud, and passes judgment out of them, on men from other than, The Source's scriptures and tablets, that were sent from ALLAH, are considered Al Kaafiruw).

If Someone Tries To Hurt You, Retaliation Is A Must

45 And We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) inscribed on them, in the Torah, (the

Law), that a person for a person- (a life for a life), and an eye for an eye, and a nose for a nose, and an ear for an ear, and a tooth for a tooth, and for wounds is a retaliation; (if someone hurts you, you must hurt them). So whenever, you give alms by way of the (Torah - the Law). So it, (the alms) shall cover for him, (take away his evil); and whoever, does not use wisdom by way of what The Source, ALLAH has sent down, (all his scriptures and tablets); so these are they who are in a state of unjustness.

46 And We, ([We Not He] The Eloheem, Anunnaqi) caused to follow in their footsteps, Yashu'a/Isa, Ibn 'Adopted Son' of Miriam, Musaddiqaan 'Confirming' what was between Yadayhi 'His Hands' from Al Tawraat 'The Torah' (the law), and We (Eloheem Anunnaqi) Aataynaahu 'Gave Him' Al Injiyl 'The Revelations' (22 books of the Yashu'a which was revealed to Yowchanawn, son of Zabdiy/Zebedee, who wrote it down and gave it to Yashu'a), in which there is Hudaan 'Leading Calmness' and Nuwrun 'Light', and Musaddiqaan 'Confirming' what is already Bayna 'Between' Yadayhi 'His Hands', Min 'From' Al Tawraat 'The Torah' (the law), and a Hudaan 'Leading Calmness' and Maw'idhatan 'An Admonition',

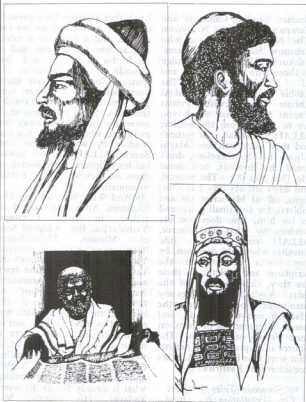


Diagram 52
Those Who Made Up Hadiyths And Talmuds

for those who tremble at the mention.

47 And let the family of the Injiyl, (Evangel, Revelation) use wisdom by that which, The Source, ALLAH sent down in it - (the Revelation); and whoever does not use wisdom by what The Source, ALLAH has sent down, they are those who are of Al Faasiqun 'The Transgressors'.

48 And We, ([We Not He] the Eloheem) have sent down to you, (Muhammad), Al Kitaab 'The Scripture' (The Qur'aan), as the facts (beyond any doubt), Musaddiqaan 'Confirming' what is between His hands Min 'From' the scriptures (and tablets from before), and Muhayminaan 'As A Protector' 'Alayhi 'Upon It' (the Torah). So use wisdom between them - (other scriptures and tablets), by that which The Source, ALLAH has sent down and don't follow Ahwaa-ahum 'Their Love, Vain Desires' - (books and laws they make up), staying away from the facts, (beyond any doubt - the Qur'aan), which has come to you, (Muhammad); and for all of you, (the Israelites/Jacobites, Ishmaelites, Midianites); We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) have made a Shir'at 'Law', and a Minhaaj 'Clear And Open Way' (to follow), and if ALLAH pleases, verily, He (He Not We) would have made for

you all, (Abrawhawm's family), Waahidatan 'One' (single) Ummatan 'Nation'; but to test you all in what he has given you all. So strive to do that which is good. Ila 'Towards' The Source, ALLAH, you will all return together. So, Yunabbi-ukum 'He Will Inform You (as a newsbearer' Abrawhawm's seed), by what you were differing in (of the scripture).

49 And that you (Muhammad) Ahkum 'Use Wisdom' between them, (his kindred), by that which The Source, ALLAH has sent down - (all the scriptures and tablets); and don't you, (Muhammad) follow Ahwaa-ahum 'Their Love, Vain Desires' - (things they make up), and beware of them, lest they tempt you from some of what, ALLAH has sent down to you; (they will have you read some books, and not others); so if, they turn away (from all the scriptures and tablets); so (Muhammad) know, that it is what The Source, ALLAH wants, to afflict them by some of their own faults; and surely, most of these, Al Naas/Enosites, (fake Muslims), are transgressors.

50 Is it, the wisdom of ignorance that they, (the Israelites/Jacobites) seek? And who is better, than The Source, ALLAH to use wisdom for a Qawm 'Kindred' who are sure?

51 O you, who have faith, (the Peaceful Ones, 'Muslims,') don't take the Al Yahuwd, 'Judahites' - (followers of the Eloheem Mosheh), and the Nasaraa 'Nazarites' (of Yashu'a/Isa) as near friends (Muslims; and not to have Christians or Jewish friends). For some of them, are near friends over others (the Illuminati and many world governments); and whoever, takes them as friends (which ever muslims make friends with them for any reason), from amongst you all, (muslims of every sect;) so surely, he is of them (they are really with them just pretending to be muslims). Indeed, The Source, ALLAH does not lead into calmness the kindred, who are in a state of unjustness.

52 And you will see, those in whose hearts is a disease (corrupt muslims), hurrying to join in with them, (the Judahites - Jews and the Nazarites - Christians), saying: "We have dreaded that misfortune, shall come upon us"; but it may be that The Source, ALLAH will bring about Al Fathi 'The (Victorious) Opening' (of the seal), or Amrin 'Order' Min 'From' 'Indihi 'His (His Not Our) Possession'. Then, they will regret what they Asarruw 'Kept Secret' in Anfusihim 'Their Spirits'.

53 And those who are faithful will say: "These are they, who swore by The Source, ALLAH

their most Jاهد 'Binding' Aymaan 'Faith', that surely they are with you all. All their deeds have failed; so they shall become losers.

54 O you, who have faith, whoever of you, (the Red Desert Arabs), turn back from his Diyn 'Means Of Judgment'; So ALLAH will bring a kindred, (Nubians), whom He (He Not We) likes, and they will like Him (Him Not Us, Or We). They will Adhillat 'Humble' themselves, 'Alaa 'Upon' the faithful; being mighty 'Alaa 'Upon' the concealers of the facts - (the sects of Al Islam). They, (the lost seed) will Yujaahiduwn 'Fight Jihaad' in The Source, ALLAH'S path, (to propagate hard) and not fear those who blame, or try to find failure. That is the preference of The Source, ALLAH and ALLAH gives it, to whomsoever He pleases, and The Source, ALLAH is Waasi'un 'Comprehensive', 'Aliymun 'All Knowing'.

Allah Is Your Nearest Friend

55 Surely, Waliyyukum 'Your Nearest Friend' is The Source, ALLAH and the Rasuwl, and those who have faith, those who stand up to Al Salaat 'The Salutation As Worship' and give the Al Zakaat 'The Charity', and they are those who Raaki'awn 'Bow Down' (in worship).

56 And whoever Yatawalla 'Turns' to The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent, (Muhammad), and those who have faith; so surely, ALLAHS Hizb 'Party' (Ansaarullah) will be Al Ghaalibuwn 'The Ones Who Triumph'.

57 O you, who have faith, don't take (for friends) those who take your means of judgment as a mockery - (they make fun, or say things about the Peaceful Way Of Life "Al Islaam"); and as a game (they think Al Islaam is not real); from among those who have been given the scripture, (and the tablets the Israelites/Jacobites, followers, of Mosheh, and the Nazarites, followers of Yashu'a/Isa,) before you (the Ishmaelites, the Qur'aan), and those who conceal what they know to be the facts as near friends, (any Jew, or Christian, or anyone who is not a Peaceful One "Muslim"); and tremble at the mention of The Source, ALLAH (and don't sneak and make friends with them), if you are really of the faithful.

58 And, when you all, (the real Muslims "Peaceful Ones,") Naada 'Call' to Al Salaat 'The Salutation As Worship'; they, (the Children Of Israel/Jacob, followers of the Mosheh and the Nazarites, Followers Of Yashu'a/Isa; just look at the so-called muslim world today.

The works with christian and jewish countries), take it as a mockery and a game (they live like them, dress like them, drink; smoke; party; etc.). That is because they are a kindred, who don't have any overstanding (the desert arabs of the world don't know this Qur'aan).

59 Tell them this, (Muhammad): "O family of the scripture - (the Jacobites, seed of Abrawhawm), do you all take revenge on us - (the Ishmaelites, Abrawhawm's other seed), for anything except that, we had faith in ALLAH, and what was sent down to us - (the scriptures and tablets) from before; and indeed, most of you, (the Israelites) are violators, (of The Source's covenant).

60 Tell them this: "Unabbi-ukum 'May I inform You All (as a newsbearer)', of what is more disagreeable than that reward, in the possession of The Source, ALLAH?" It is he who The Source, ALLAH has cursed, and Ghadaba 'Put A Wrath' 'Alayhi 'Upon Him', and He (He Not We) made Minhum 'From (Then Into) Them' Al Qirdat 'The Monkeys' and Al Khanaaziyr 'The Pigs' (we made them act like fools and gluttons); and the 'Abd 'Slaves' of Al Taaghuwt (father of Samael); these are they, who will have a disagreeable place (as their abode), and they are further astray, from the Sawaa-i 'Equal'

Sabiyl 'Path'."

61 And when (the Israelites/Jacobites) came to you all, (Muslims), they said: "We have faith," and indeed, they entered (the folds of Al Islaam), by way of their concealment of the facts; and they indeed left (the folds of the peaceful way of life by concealing the facts), and The Source, ALLAH knows all, of that which, they hide.

62 And you, (Muhammad) will see lots of them, (Israelites) hurrying in, towards guilty actions, turning away (from Abrawhawm's and Mosheh's laws, and transgressing), and eating that which is Al Suhta 'Prohibited'; (reformed and eating pork). Certainly, what they do is only evil."

63 If only Al Rabbaaniyyuwn 'Their Rabbis' (Learnt Masters), and Al Ahbaar 'Their (Jewish) Priests (Learnt Men)' would put an end to their guilty Qawl 'Sayings'; (they reformed Judaism, Jewish, and Christianity religions); and their prohibited words. (Stop them from saying things which are a sin. Things about the peaceful way of life "Al Islaam," and from eating things which are forbidden); certainly, evil is all what they do.

64 And the Yahuwd (Judahites) said: "The Yad 'Hands' of The Source, ALLAH are Maghluwlatun 'Bound'. (He

cannot do anything to them." When in reality), it is their hands that shall be Ghullat 'Bound' and they shall be Lu'inuw 'Cursed', for what they said. In fact, both of His, (ALLAH has two hands) hands are Mubsuwтатаan 'Spreads Out', (free to do whatever he wants). He, (The Source) Yanfiqu 'Shares Willingly' (expands) as He (He Not We) pleases, and what has been sent down, (the Qur'aan), to you, (Muhammad) from your Rabb will certainly make many of them increase in ordinance, or transgression, and concealing of the facts. And We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) have cast amongst them, (Israelites), Al 'Adaawat 'An Enmity' and hatred, until the day of resurrection. As often, as they (Israelites/Jacobites) Awqad 'Kindle' A Naar 'Fire' for Al Harb 'The Fighting' (war). The Source, ALLAH Atfaahaa 'Extinguished It'; and they strive to make mischief in the planet Earth; and ALLAH, does not like Al Mufsideyn 'The Mischief Makers'."

65 And if, the Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', (Children Of Israel/Jacob), had faith and trembled and feared, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi), would have concealed their evil, (plagues) from them; and We, (the

Eloheem, Anunnaqi) would have indeed let them enter Al Na'iym 'Gentle' Jannaat 'Enclosed Gardens'.

66 And if only, they, (Judahites - followers of the Eloheem Mosheh, and the Nasaaraa followers of Yashu'a) Aqaamuw 'Had Stood Up' (to observe) the Torah (The Law - 5 Books Of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh's Successor), and Al Injiyl, 'Evangel, Revelation', and what was Unzila 'Sent Down' 'Ilayhim 'To Them', (The Qur'aan), from their Rabb 'Master'; then certainly, they would have eaten from Fawqihim 'Above Themselves', (food from the Skies), and from Taht 'Beneath' Arjulihiim 'Their Feet', (food from Tiamat). There is a Ummatun 'Nation' who came out from them (some of the tribe of Judah), who kept on the right path, (they follow the laws of all the scriptures); and most of them, (Israelites/Jacobites followers of the Eloheem Mosheh); evil is all that they do.

67 O (Muhammad) The one sent! You are to Balligh 'Propagate' what was sent down to you, (the Qur'aan) from your Rabb, and if you don't do it, then you have not Ballaghta 'Propagated' (delivered) Risaalatahu 'His (His Not Our) Message'; and ALLAH, will

Ya'simuk 'Defend You', (Muhammad) from the Enosites. Surely, The Source, ALLAH does not lead into calmness the kindred, who conceal what they know to be facts."

68 Tell them this, (Muhammad): "O Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scriptures', you are not on anything (you have no grounds), until you Tuqiymuw 'Stand Up' (keep up) the Torah - (the Law - 5 Books The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh's Successor), and the Injiyl 'Evangel, Revelation' and what has been sent down to you, (Muhammad, the Qur'aan) from your Rabb, who is 'Master/Sustainer', and will increase many of them in transgressing, and make them concealers of what they know to be the facts, of what was sent to you from your Rabb 'Sustainer'. So don't grieve over the kindred, who are the concealers of what they know to be the facts.

69 Surely, those who are faithful, (Peaceful Ones "Muslims,") and those who are Judahites, (followers of Mosheh), and the Saabiun, (those who converted from their religion), and the Nasaaraa (followers of Yashu'a); whoever is faithful by way of The Source, ALLAH and the Last Day, and work to perfect themselves; so, no fear should they have about

themselves, and they will have no grief."

70 Indeed, We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) took a Miythaaq 'Fulfillment Of A Promise', with Bance Israaiyl, 'The Children Of Israel/Jacob', and We (Eloheem Anunnaqi) sent to them, Rusulaan 'Ones Sent'. Whenever a Rusul 'Ones Sent', came to them with what they, (the Jacobites), in Anfusuhum 'Their Selves/Spirits' did not (deeply) Tahwaa 'Love, (Have) Vain Desires' (for themselves, - the Torah); Fariyqaan 'A Portion' (Judahites And Israelites; The Israelites/Jacobites) Kadhabuw 'Lied'; and Fariyqaan 'A Portion' (the Israelites) Yaqtuluwn 'Wanted To Kill' (some of them - the newbearers).

71 And they, (the Israelites/Jacobites) thought there would not be any test (temptation); so they, Children of Israel became blind, and deaf, (pretending they knew nothing). Then, The Source, ALLAH turned to them (out of mercy; he sent them Ezra). Then again, many of them became blind and deaf, (pretending not to know the law); and The Source, ALLAH, is (ever) Basiyrun 'Seeing' of all that they do.

*Yashu'a/Isa Said I Am A
Slave For Allah*

72 And indeed, those who

conceal what they know to be the facts, say: "Surely, The Source, ALLAH, He is the Messiah, Ibn 'Adopted Son' of Miriam"; and (he), the Messiah Yashu'a/Isa said: "O Children Of Israel, A'abuduw 'I slave' for ALLAH, my Rabb 'Master/Sustainer'. "Surely, he who Yushrik 'Associates Partners', with The Source, ALLAH, so certainly ALLAH has Harrama 'Made Unlawful' for him, the Jannat 'Garden', and his abode is Al Naar 'The Fire', and there will not be any aiders, for those who are unjust.

73 Indeed, they who conceal the facts, say: "Surely, The Source, ALLAH is Thaalith 'One Third', of Thalaathatin 'Three Parts Of The Trinity';" and there would not exist no ILAAHIN (ALLAH'S) 'Sources', except by way of one ILAAHUN (ALLAH) 'Source'. (They say, "There is one god, who is really three gods,") and if they don't finish saying this; they shall fall among those who conceal the facts, (into the pit with Satan, the Reptilian and his fallen Eloheem, Cherubeems). They will be of those who received an aching pain, (in Hell).

74 Will they, (the Jacobites), not repent towards The Source, ALLAH, and seek His (His Not Our) forgiveness? And The Source, is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most

Merciful'. (The Anointed, Messiah Ibn

75 The (Anointed), Messiah Ibn 'Adopted Son' of Miriam is nothing but a Rasuwl 'One Sent'. Indeed, Al Rasuwl 'The Ones Sent' have already passed before him, (Yashu'a/Isa), and Ummuhu 'His Mother' (Miriam) Saddiyqatun 'Was Truthful'. They, (Yashu'a/Isa and Miriam), both ate food (like all mortals); look at how We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) made the signs clear for them, (The Lost Sheep of the House, of Israel - Judah. By him eating food, proved that he was not The Source); then, see how they all turned away from the facts."

76 Tell them this, (Muhammad): "Do you slave for things, (idols, men) besides The Source, ALLAH, which does not have the power to harm you all, and does not benefit you all? And The Source, ALLAH is Al Sami'u 'The Hearer', Al 'Aliymu 'The All Knowing'."

77 Tell them this, (Muhammad): "O Ahl 'Family' of Al Kitaab 'The Scripture', (the "Nasaaraa"; followers of Yashu'a/Isa, so-called Christians); don't exceed your bounds (exaggerate matters), in your Diyn 'Means Of Judgment' Ghayra 'Besides' the facts (beyond any doubt); and don't follow the Ahwaa-a 'Love, Vain Desires' of a kindred - (Children Of Jacob/Israel); who were certainly astray before and

they lead astray into error many others, and have themselves, gone astray into error, from the right path.

78 Cursed are those who conceal what they know to be the facts, from amongst the Children Of Israel; (ten tribes other than Dan and Judah), by the very tongue of Dawiyd (Syriac, Aramic) and Yashu'a (Hebrew, Aramic, Syriac), the Ibn 'Adopted Son' of Miriam; that was because they disobeyed - (mixed with certain Canaanites), and were transgressors, (they started worshipping the deity 'Baal').

79 They (the Israelites/Jacobites), did not forbid each other from doing hateful things, and evil is all that they do.

80 (Muhammad), you see most of them, (Jacobites) turning to those who conceal what they know to be the facts. Verily, evil is what their selves/spirits have sent before them. That, is what displeases The Source, ALLAH upon them, (Israelites/Jacobites), and in the pain (Hell), they will abide eternally.

81 And if only, (they concealers of the facts from the Children Of Israel), were faithful to The Source, ALLAH and the newsbearer, (Muhammad); and what was Anzal 'Sent Down', (the Qur'aan) to him; they would not have taken them as near friends; but most of them

are transgressors.

*The Nearest In Affection For
The Muslims Are Ethiopians
Christians*

82 Verily, you (Muhammad) will find the most forceful 'Adaawatan 'In Enmity', among the Enosites, (the so-called Jews of Muhammad's time), to those who have faith, (the Muslims to be) the Judahites, and those Ashrakuw 'Associate Partners', (Christians); and you will find the nearer in Mawaddatan 'Compassion' (affection), to those who have faith, those who say: "We are Nasaaraa (Nazarites)." That is because they are Qissiyasiyn 'Christians', (Ethiopians), and Ruhbaanaan 'Monks' (saints), among them, and they are not big-chested, pouting with pride.

83 And when they hear what was sent down, (the Qur'aan) to Al Rasuwl 'The One Sent', (Muhammad); you see their eyes overflowing with Dam'i 'Tears', of what they know from the facts. They say: "Our Rabb, we have faith; so Aktubnaa 'Write Us' (down), with those who are Shaahidiyn 'Watchers'."

84 Why should we not have faith in ALLAH and what came to us of the facts (beyond any doubt - the Qur'aan); and we desire that our Rabb, will let us enter with Al Qawm 'The

Kindred', (true followers of Abrawhawm), Al Saalihiyn 'Those Who Perfected Themselves'.

85 So, The Source, ALLAH rewards them for what they said, with Jannaat 'Gardens', beneath which rivers flow, to abide in them eternally, and that is the reward for those who does that which is best.

86 And as for those who conceal what they know to be the facts, and denied Our, ([Our Not My] the Anunnaqi's) signs - (all of His scriptures; they say some scriptures are tampered with, and they put some scriptures, above others). These will be the companions of a (flaming fire); Al Jahiym 'Hell'.

87 O you have faith, do not Tahrrimuw 'Make Unlawful' the things which are agreeable, that The Source, ALLAH has Ahalla 'Made Lawful' for you all; and do not exceed the limits. (Don't go to the extremes with the laws you make up). Surely, The Source, ALLAH does not like Al Mu'tadiyn 'Those Who Transgress', (who make up their own laws - Hadiyth).

88 And eat from what ALLAH has Razaqakum 'Provided For You All', that is Halaalaan 'Lawful' and Tayyibaan 'Agreeable'; and tremble at the mention of The Source, ALLAH in whom you all have faith.

89 The Source, will not take

(punish) you, for not fulfilling faiths, (made with the slip of the tongue); but He (He Not We), will take (punish) you, for making deliberate oaths (that are not honored). The way to amend this is by the feeding of ten poor settlers right from what you feed your own families with, or Kiswatuhum 'Their Clothing' or the freeing of a slave. So whoever can not find the means, (to any of the above three;) he must Siyaam 'Fast', for Thalaathat 'Three' Ayyaam 'Days'. That is the expiation of your faiths when you Halaftum 'Have Sworn (By Binding An Oath)'; so Ahfadhuw 'Guard' your faith. Like this, The Source, ALLAH makes clear for you, His (His Not Our) signs, that perhaps you all will be grateful."

*Intoxicants And Drawing Of
Lots, Headless Arrows Are
Shameful Acts Of Satan*

90 O you who are faithful! Surely, Al Khamru 'The Intoxicants' and Al Maysir 'The Drawing Of Lots', and Al Ansaab 'Those Things Set Up And Worshipped' (idols), and Al Aa-zlaam 'The Headless Arrows, (used for divination)', are only shameful acts from the 'Amal 'Work' of Al Shaytaan 'Satan, The Reptilian'; so avoid it, so that perhaps, by avoiding them,

you will be prosperous."

91 Satan, (the Reptilian) only wants to instill Al 'Adaawat 'Enmity', and hatred amongst you Fee 'Through' Al Khamri 'The Intoxicants', and Al Masiyr 'The Drawing Of Lots' and he wants to hinder you, from remembering The Source, ALLAH and from Salaat 'Salutation As Worship.' Will you then abstain?"

92 And obey ALLAH, and obey the one sent, (Muhammad), and beware (be cautious); so if you turn away, (leave Islaam); so know that it is on Our ([Our Not My] the Eloheem Anunnaqi's) Rasuwl 'One Sent' to Al Balaagh 'Propagate The Clear Facts'.

93 There is not on those who are faithful, and who works for perfection, any blame for what they ate. (If they ate pork before they knew the law); when they Maa 'Did Not' tremble and fear, and had faith and worked for perfection; then they trembled and feared and had faith (afterwards). Then they trembled and feared and did that which is best. And The Source, ALLAH likes Al Muhsiniyn 'Those Who Does That Which Is Best'.

94 O you who are faithful, The Source, ALLAH will indeed try you all by way of the very things which your hands can reach while hunting; and that which you can catch with your lances

that The Source might know who fears Him (Him Not Us), by way of Al Ghayb 'The Unseen'. So whoever transgresses after that, so for him, will be an aching pain.

*Don't Kill Game Within The
Kaaba's Precincts*

95 O you who are faithful, do not kill the game - (hunt), and you are Hurumun 'In The Garb Of A Pilgrim.' And who kills intentionally from you, he would be required to offer a similar animal as a sacrifice in the precincts of the Kaaba' (The Cube); or the expiation of it, is the feeding of the poor settlers. Two just (Enosites), amongst you shall Yahkum 'Use Wisdom' (judge) which animals should be given as an offering in place of the animal killed, or the equivalent of that in Siyaamaan 'Fasting'; that he may taste the seriousness of his deed (command). The Source forgave you for (what you did) in the past; and who Aada 'Adds On' (repeats it), So The Source, ALLAH will take revenge Minhu 'From Him', (He will take revenge, for what He commands and what you will break in the future); and The Source, ALLAH is The 'Aziyz 'Mighty', possessor of Intiqaam 'Vengeance'.

96 Lawful to eat unto you all,

(while in Mecca on Pilgrimage), is the Sayd 'Hunt' (all food caught in) Al Bahr 'The Sea'. This has been a temporary enjoyment for you all, and for the (journey) moving about; and Hurrina 'Unlawful' for you all, (while on Al Hajj 'Pilgrimage') is the hunt (game) you catch on the dry land - (to kill any animal, is a guilty action); as long as you are Hurumun 'In The Garb Of A Pilgrim', (it is unlawful). And tremble at the mention of The Source, ALLAH to whom you all will be brought (gathered) together.

97 The Source, ALLAH made the Kaaba, Al Haraam 'The Sacred' Bayt 'House', as a Qiyaamaan 'Stationary', for the Enosites; and Al Haraam 'The Sacred' Shahr 'Month', and Al Hadya 'The Victim (Animal) For Sacrifice', and Al Qalaaa-id 'The Garlands (cattles with garlands designed for sacrifice)'; that is because you shall know that ALLAH, knows all that which is in Al Samaawaat 'The Skies', and what is in Al Ard 'The Planet Tiamat/Earth.' And The Source, ALLAH knows all things.

98 They, (the Meccans - Red Desert Arabs), knows that ALLAH is Shadiyd 'Forceful' (in) Al 'Iqaab 'The Punishment', and that The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Rahiymun 'Most Merciful'.

99 Nothing is (incumbent) on the one sent, (Muhammad) except Al Balaagh 'The Propagation Of Facts'; (to deliver the Qur'aan); and The Source, ALLAH knows what you all do openly, and what you try to hide.

100 Tell them this, (Muhammad): "This agreeable and wicked deeds are not equal; and if alot of wicked deeds amazes you; so tremble at the mention of The Source, ALLAH, Oh you, the Uwliy 'First Ones' (Who Passess Through) Al Albaab 'The Door' (of the Ancient Mystic Order Of Zodoq); so that you may be prosperous."

101 Oh you all, who are faithful! Don't ask about things, if they manifest for you all, and brings misfortune upon you all; and if you ask 'Anhaa 'About It', when the Qur'aan was Yunazzal 'Sent By Him', it will manifest for you all. ALLAH forgave those things, and The Source, ALLAH is Ghafuwrn 'Forgiving', Haliymun 'Clement'.

102 Indeed, those things was asked about from before you all, by a kindred who then became by way of those things, concealers of what they knew to be facts.

103 ALLAH has not made (any such tradition), as the slitting of a she-camel's ear; (in pagan,

Desert Arabs' tradition, if a she-camel gives birth to five offspring, they would split her ear, and set her free, and she would not be allowed to be ridden. This is called "Bahaarah" which means 'The Ones Let Loose;') nor Saaibah, "Which Means The Setting Free Of Any She-Camel," nor Wasiylah, which was a female sheep, with only one male offspring; nor Haami, (black ones - which are pure black Stallions, which are used strictly for breeding. These customs became forbidden by the Qur'aan); but as for those who conceal what they know to be facts, they fabricated lies, about The Source, ALLAH. (These liars), and most of them, don't even comprehend, (what they are doing).

104 And, when it is said to them: "Come to that which The Source, ALLAH has sent down - (the Qur'aan), and to the one sent, (Muhammad); they say: "It is best for us, that we found our fathers - (the old customs); even though, their fathers were not knowledgeable in any thing, and was not even lead into calmness.

105 O you, who are of the faithful! You are responsible for your ownelves; for he who is astrayed in error, can not harm you when you are lead into calmness. To The Source, you all will return together; so He, (He Not We - The Source) will

Yunabbi-ukum 'Inform You All (as a newshearer)' about all that which you have done.

*When Death Is Present Call
Two Watchers Who Don't
Seek Payment*

106 O you, those who are of the faithful! Call his watchers, Baynakum 'Between You All', when death comes amongst any one of you all. When the time for the making of the will, two just persons are needed from amongst you all, or two others from outside of you all. If, you Darabtum 'Are Striking (Riding Forth To Fight)' in Al Ard 'The Planet Earth,' and an incident of death comes upon you all; you should restrain (the two watchers), until after Al Salaawt 'The Salutation As Prayer'; so Yuqasimaan 'They Both Are To Swear' by way of the Source, ALLAH (saying): "We will not buy anything by a price - (they will not receive pay, for their assistance); even if he is a near relative, and we will not hide Shuhaadat 'That Which Is Watched' of The Source, ALLAH (from them). Surely, if we do that, we should be amongst the guilty ones."

107 So, if it becomes known that both of them, (the two watchers) are blamable of a guilty action; so then, two others who are certain should stand in

their places from amongst those who have blamed them. The two nearest relatives are preferred, and they too, Yuqasimaan 'Are To Both Swear' by way of the Source, ALLAH (saying): that their watching is nothing, but a fact other than the watching of the other two; and we have in no way accepted to remit, (and they have). Then we are amongst those who are in a state of unjustness.

108 That is the proper way, that Yaatuw 'We Are To Come' Bi-Al Shuhaadat 'By That Which Is Watched' on Wajhihaaa 'Their Faces' (controlling their destiny); or they fear that they would want other faiths after their faith. And fear and tremble at the mentioning of the Source, ALLAH and listen; and the Source, ALLAH does not lead into calmness the transgressing kindred.

109 On the day (of assembly), The Source, ALLAH will assemble all of the Rusul 'Ones Sent,' so He, (He Not We - ALLAH) will say (unto them): "What is the answer, (that you all have received from their Enosites)?" They all, (the news bearers) will say: "It is not for us, to know (what is in their hearts); surely you, (ALLAH), You (You Not Us, Or We) are the 'Allaamu 'Knower' of Al Ghuyuwb 'The Unseen Things'."

*The Many Miracles Of
Yashu'a/Tammuz Of 2,000
Years Ago*

110 And when ALLAH said: "Oh Yashu'a/Isa, Ibn 'Adopted Son' of Miriam, remember My (My Not Our) grace on you, and on Waalidatika 'Your Maternal Mother', (Miriam); when I (I Not We, Or Us - The Source), Ayadtuka 'Strengthened You', by way of Ruwh Al Quduws 'The Holy Soul' -Jibriyl, who bore the title Nusqu when you, Yashu'a/Isa, who is also known as Tammuz, Symbolic Of Horus) spoke to the Enosites (while, yet) in Al Mah-di 'The Cradle' and (when) in Kahlaan 'Middle Age', (age thirteen in the temple); and when I, (The Source), 'Alamtuka 'Taught You' Al Kitaab 'The Book' (Akasha Records) and Al Hikmat 'The Wisdom' (of Leummiym), and the Torah (5 books of the Eloheem Mosheh, The Prophet Aharown, And The Apostle Yehowshuwa), and the Injil (the 'Evangel, Revelation - 22 books of Yashu'a); and when you Takhluqu 'Were Created' Min 'From' Tiyn 'Clay', as the Hay-ati 'Form' of Al Tayr 'The Bird' - (the dove), by way of My, (ALLAH'S) permission. So you, (Yashu'a/Isa) Tanfukhu 'Breathed The Breath Of Life', in it, so it became a Tayraan 'Bird' (Dove) by way of My, (My Not Our, Or We - ALLAH'S)

permission; and you, (Yashu'a/Isa) Tubriyu 'Heal' Al Akmaha 'Those Who Are Born Blind', and Al Abrasa 'The Leprous', by way of My (My Not Our) permission. So, when you Takhrij 'Bring Forth' Al Mawt 'The Dead' by way of My, (ALLAH'S) permission; and when I, (I Not We - The Source), withheld the Children Of Israel/Jacob from you, (Yashu'a/Isa) when you came to them with Bayyinaat 'Clear Evidence'; so He, (The Source) said: "These are those from (the Children of Israel), who conceal what they know to be the facts. Surely, this is nothing except Mubiynun 'Clear' Sihrun 'Magic'."

111 And Behold! Awhaytu 'I, (I Not We, Or Us) Inspired' Al Hawwaariyyun 'Those Who Are Gowned In White, The Disciples,' that they should have faith in Me, (Me Not We - The Source), and by way of My (My Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Yashu'a/Isa). They said: "We have faith, and Ash-hadu 'Watch' in that we are Muslimuwn 'The Peaceful Ones'."

112 When Al Hawaariyyuwn 'The Disciples Gowned In White', said to Yashu'a/Isa the son of Miriam: "Will your Rabb who is 'Master/Sustainer,' be able to send down to us a Maa-idatan 'Prepared Table Of Food', from Al Samaa-i 'The

Skies'?" Yashu'a/Isa, said: "You all are to fear and tremble at the mention of The Source, ALLAH if you are faithful."

113 They, (Yashu'a's followers,) said to him: "(Yashu'a,) we want to eat Minhaa 'From It (the food)'." (They asked Yashu'a, to pray for them) until our hearts are satisfied; that we, by this act, we will indeed be able to know that you, (Yashu'a) are truthful (about your power); and so that we may be Al Shaahidiyn 'The Watchers' upon it (this miracle)."

114 Yashu'a/Isa, the Ibn 'Adopted Son' of Miriam, said: "Oh ALLAHUMMA (Eloheem Anunnaqi); Our Rabb, send down upon us, Maa-idatan 'A Prepared Table Of Food', from Al Samaa-i 'The Skies'; in order to be for us a 'Iydaan 'Feast', for the first of us, and for the last of us; and as a Aayatan 'Sign' from You (You Not We), and Arzuqnaa 'Provide For Us'; and You are good, (the best) of Al Raaziqiyn 'The Providers'."

115 ALLAH said: "Surely, I (I Not We) Am The One who sent it, (The Prepared Table Of Food, 'Maa'idah') down upon you all. So whoever conceals what they know to be the facts after you all; so, I, will surely punish them with a pain. No one will be able to punish (with such a pain) from the Know Worlds."

Deep Reverence Of Allah

Shown By Yashu'a

116 And when, The Source, ALLAH asked: "O Yashu'a/Isa, Ibn 'Adopted Son' Of Miriam, did you ever, say to the Naas, 'to take me (Yashu'a/Isa), and your mother (Miriam), as 'Two Sources' - ILAAHAYN 'Two ALLAHs', besides The Source, ALLAH?" He, (Yashu'a/Isa) said: "Glory be to You (The Source); it is not in me to say a thing I had no right to say of the facts!" If I had said so, You would have known. You know what is in myself; and I don't know what is in Yourself. Surely, You, (The Source) knows Al Ghuyuwb 'The Unseen Things'."

117 I, (Yashu'a/Isa), didn't tell them nothing except what You, (ALLAH) have Amartaniy 'Commanded Me', (to tell them): "That they are to slave for ALLAH my Rabb, and their 'Sustainer,' and I, (Yashu'a/Isa, who is Tammuz) was a Shahiydaan 'Watcher' upon them, when I was still amongst them. So, when Tawaffaytaniy 'You Received My Soul' (You caused me to pass on), You were Al Raqiyy 'The Observer' over them, and You, (ALLAH) are over all things, as a Shahiydun 'Watcher'."

118 If You (You Not Us) decide to punish them, (Lost Sheep of the House of Israel/Jacob -

Judah; You can), for they are indeed Your slaves; and if You, (The Source), forgives them, (The Lost Sheep of the House of Israel/Jacob - Judah, You can). So You, surely, You are Al 'Aziyzu 'The Mighty', Al Hakiymu 'The Wise'.

119 (On that day), The Source ALLAH will say: "This day, the day when the truthful ones will benefit, for their truthfulness; for them, there are the Jannaat, 'Gardens,' beneath which rivers flow, therein to abide eternally, forever. ALLAH, is very pleased with them, and they are pleased with Him (Him Not Us). That is the most 'Aziym 'Supreme', of Al Fawz 'Achievements'."

120 For Him (Him Not Us), is the Mulk 'Rulership' of Al Samaawaat 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Earth'; and all that is in them (the Eloheems, Anunnakis and Man); and He (He Not We), has the power over all things.

Sudqia Allahu El Azim

Chapter One Hundred And Thirteen

Revealed In The Year 631 A.D.

Al Fawbah

*(The Acceptance
Of Repentance)*

Original Order Chapter 113;

Wrong Order Chapter 9

This Chapter Has No Tasmiya. Its Tasmiya Was Placed Inside Chapter 27:30.

An Immunity Declared

113 This is a (declaration) of Baraa-atun 'Immunity' from The Source, ALLAH and His Rasuwl sent, (Muhammad) to those Al Mushrikiyn 'Who Associate Partners' with whom you, (Followers Of Musaylimat) made 'Ahd 'Covenants'.

2 So Siyhuw 'Roam' (about) in the planet Qi/Tiamat 'Earth' for four months - (Dhuw Al Hijjah, Muharram, Dhuw Al Qa'idah, Rajab), and know that you, (Followers Of Musaylimat) can not aggravate ALLAH; and that The Source, ALLAH will make the ones who conceal what they know to be facts, disgraced (ashamed).

3 And the call from The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent, (Muhammad), to the Naas/Enosites on Al Akbar 'The Biggest' Al Hajji 'Pilgrimage', is that The Source, ALLAH and His one sent is free from (liability) from Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' - (Followers Of Musaylimat); so if you, (Followers Of Musaylimat) 'Tubtum 'Repent', then it is good for you all, and if you turn your back, then know that you, (Desert Arabs) can not aggravate

The Source, ALLAH; and announce that there will be an aching pain for those who conceal what they know to be lasts."

4 Except for those, (of the Followers Of Musaylimat,) Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' whom you made a 'Ahd 'Covenant', then had not broken any of your rights, nor gathered yourselves with anyone (your enemies), so you, (the faithful ones) must Atimuw 'Fulfill' their 'Ahd 'Covenant' to the end of term. Surely, The Source, ALLAH likes the ones who tremble at the mention.

5 So when Al Hurumu 'The Sacred, Forbidden' Al Ash-Huru 'Months - (Dhuw Al Qa'idah, Dhuw Al Hijjah, Muharram, Rajab) pass; so Aqtuluw 'Kill' Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' wherever you, (the faithful ones) Wajadttumuwhum 'Find Them' and take them and besiege them and Aq'uduw 'Squat' them down for every ambush. So if they repent and stand for Salaat 'Salutation As Worship' and give Zakaat 'Charity', so leave their path way free to them: surely, ALLAH is Ghafuwrwn 'Forgiving', Rahiym 'Merciful'.

6 And if anyone from Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' seek asylum, so give him asylum until he is

able to hear the Kalaam 'Spoken Words' of The Source, ALLAH, then obtain for him a place. That is because they are a kindred that don't have any knowledge.

*Those Who Associate Partners,
They Buy Allah's Signs For A
Small Costs*

7 How can there Yakuwn 'Be/Exist' for Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners' a 'Ahd 'Covenant', in the possession of The Source, ALLAH and in the possession of His (His Not Our) one sent, (Muhammad)? Except for those whom you have made a 'Ahd 'Covenant' with, in the possession of Al Haraam 'The Sacred' Al Masjid 'Masjid - Place Of Prostration'. So then, if they stand up - (be true to you); then stand up to them, surely ALLAH, Yuhibbu 'Likes' those who tremble at the mentioning (of his name).

8 How can they, (those who associate partners- Followers Of Musaylimat be trusted) if they prevail against you, (faithful ones)? They, (The Followers Of Musaylimat), would have not regard for peace or good faith with you; they please you with their mouths while their hearts do not repent and most of them are transgressors."

9 They have bought the signs of

The Source, ALLAH for small prices (costs) and hindered (Enosites) from ALLAH'S path. Surely, they are evil of what they were doing.

10 They, (those who associate partners) do not have no regard (for peace of good faith) in case of the faithful, nor any liability; and these are those who are transgressors.

11 So if they repent and stand up to Al Salaat 'Salutation As Worship' and give the Zakaat 'Charity,' so they are Ikhwaanukum 'Your Brothers' in Al Diyn 'The Means Of Judgment'; and We, (We Not He) the Eloheem, Anunnaqi) explain the signs for a kindred who are of the knowers.

Violation Of The Covenant By Those Who Associate Partners - They Plotted To Banish Muhammad - The Source Is The Acceptor Of Repentance

12 And if they, (associating partners) broke Iymaanahum 'Their Faiths' after they made a 'Ahd 'Covenant' and revile in your (Muhammad's) Diyn 'Means Of Judgment'; so Qaatiluw 'Kill' (the) A-immat 'Immams' (Those Placed Upfront) of Al Kufri 'The Concealers Of The Facts.' Surely there is not any faith from them, so that perhaps they will (decease) - finish."

13 You, (the faithful ones), whom will not Tuqaatiluw 'Kill' the kindred - (the those who associate partners, The Desert Arabs, Followers Of Musaylimat); who violated their Iymaan 'Faiths' and plotted to banish the One Sent, (Muhammad. They Made Musaylimat replace the real Muhammad) and who were at the first time assaulted you, (the faithful ones); (do you, the faithful ones dread them, the unfaithful)? So, The Source, ALLAH is the true one whom you should fear, if you were of the Mu'miniyn 'Faithful Ones.'

14 Kill them, (the unfaithful ones); The Source, ALLAH will punish them by way of your, (the faithfuls') Ayd 'Hands' and disgrace them, and He (He Not We) will help you against them and He, The Source, ALLAH will heal the chests of the faithful ones.

15 And He (He Not We), will remove the anger of their - (the unfaithful ones') hearts and The Source, ALLAH turns to accept repentance to whomever He pleases; and ALLAH is 'Aliymun 'All Knowing', Hakiymun 'All Wise'.

16 Or have you all calculated that you all will be left behind; and when The Source knows those amongst you who strove and have not taken others besides The Source, (in His

place), ALLAH nor His Rasuwl and neither the faithful ones as a Walijat 'Intimate Friend'? And ALLAH, is Khabiyr 'Aware' of all that you do.

*Those Who Associate Partners
Are Not Allowed To Make
'Umrah - Those Enosites Who
Left Home And Everything Else
Are The Best Enosities In The
Source's Sight - Don't Take
For Friends Your Fathers,
Brothers If They Are
Kaaſiru wn*

17 It was not allowed for those who associate partners (with The Source), to make 'Umrah 'The Lesser Pilgrimage' to the Masaajid 'Places Of Prostration' of ALLAH, (in Mecca), while they watch of themselves that they conceal the facts. These are those, their deeds are rendered in vain and in the fire, they will abide eternally.

18 He who makes 'Umrah - The Lesser Pilgrimage, to The Source, ALLAH'S Masaajid 'Places Of Prostration', is for those who have faith in ALLAH and the Last Day, and they stand up for Salaawat 'Salutation As Worship' and gave Al Zakaawt 'Charity' and doesn't fear none except The Source, ALLAH. So as for these, it is them who will be amongst the ones who are lead into calmness.

19 Have you (those who

associate partners- Desert Arabs) made the water-giver of Al Haajji 'The Pilgrimage' and Al Haraam 'The Sacred' Al Masjid 'Place Of Prostration' 'Imaarat 'Building' as ones who has faith in The Source, ALLAH and the Last Day - (Day of Judgment) and strive in the path of ALLAH? They are not equal in the possession of The Source, ALLAH and The Source, ALLAH does not lead into calmness the kindred who are in a state of unjustness.

20 Those who are faithful and Haajaruw 'Made Pilgrimage' - (left their homes and family) and strove in the path of ALLAH for Al Islaam with their wealth (property) and their selves, (they left everything); they have A'azamu 'Supreme' Darajatan 'Levels' 'Inda 'In The Possession' of The Source, ALLAH; and these are they who will be Al Faa-izuw'n 'The Achievers (they will receive salvation).

21 And their Rabb who is 'Sustainer' gives them good news of His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy) Minhu 'From Himself' and how He (He Not We) is pleased/contented, and of Jannaat 'Gardens' for them, wherein they will have grace permanently.

22 They will be in it eternally. Surely The Source, ALLAH has for him a 'Aziym 'Supreme' reward.

23 O you who are faithful, don't take Abaa-akum 'Your Fathers' - (your relatives) and Ikhwaanakum 'Your Brothers' as Awliyaa-a 'Near Friends' if they like concealing the facts 'Ala 'Over' the faith and for those of you who take them as near friends, these are the ones of you who are in a state of unjustness (Pale Desert Arabs, followers of Musaylimat and his family).

24 Tell them this (Muhammad): "If Aabaauwkum 'Your Fathers' and Abnaauwkum 'Your Sons' and Ikhwaanukum 'Your Brothers' and Azwaajukum 'Your Mates' and 'Ashiyratukum 'Your Closest Relatives' and the wealth that you all have gained; and the merchandise that you dread that will not have a market place, and the dwellings you all seek, you are contented/pleased with them, more than the Ahaba 'Like' that goes to The Source, ALLAH (you like other things more than the Source) and His (His Not Our) one sent, and the Jihaadin 'Holy War' in Sabylihi 'His (His Not Our) Path'; so wait until The Source, ALLAH comes with His Amr 'Command'; and The Source, ALLAH does not lead into calmness the kindred that are transgressors.

*The Source's Aid At Hunayn -
The Associates Can't Go Near
The Sacred Masjid*

25 For indeed The Source, ALLAH Nasarakum 'Aided You All', (Muhammad and his followers) in their many Mawaatin 'Battlefields' and on the day of Hunayn - (a place between Mecca and Ta'if), when you (10,000 Muslims of Medina and 2,000 from Mecca) was pleased with your great number (over the 4,000 enemy leaded by Aufi Nagiy). So you didn't mind anything (that The Source did for you and was vainly confident that you would not be defeated); and your great number meant nothing on this planet Qi/Al Ard 'Earth,' so you all ran and left (Muhammad, then came back, 'Ali, 'Abbas, Abu Sufyaan Bin Harithy, Naufal Ibn Harith, Faisal Ibn Abbas, Rabb'i Bin Harith, 'Abdullah Bin Zubair, 'Utba Mu'tabi).

26 Then ALLAH sent down Sakiynatahu 'His (His Not Our) Tranquility' (peace of mind) upon His Rasuwl 'One Sent' (Muhammad) and on the faithful ones, and He (He Not We), Anzala 'Sent Down' a Junuwd 'Army' (Evil Eloheem Anunnaqi, Cherubeems to fight with Michael as their leader), which you, (Muhammad) did not see and punished those who concealed what they knew to be the facts. And That is the reward for Al Kaafireen 'Those Who Conceal That Which They Knew To Be The Facts.'

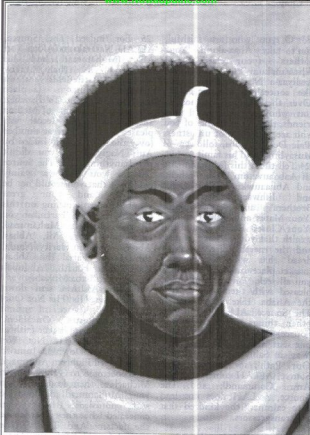


Figure 210

Aufi Nagiy, Leader Of One Of The Armies Of Muhammad's
Enemies

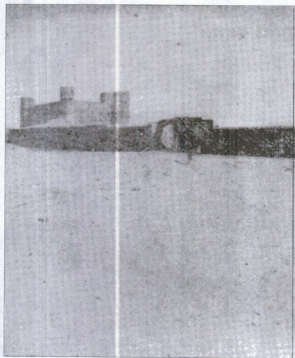


Diagram 53

The Area Where The Battle On The Day Of Hunayn (Hunain) Was Held

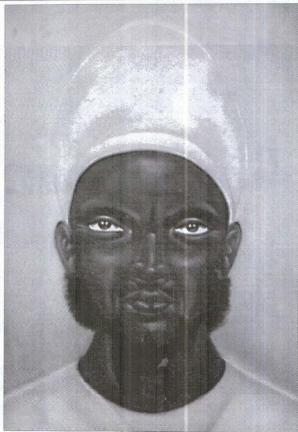


Figure 211
Faizal Ibn Abbas

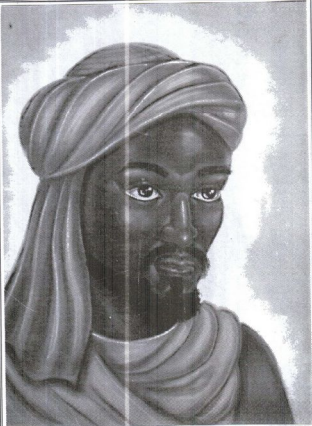


Figure 212
Rabb'i Bin Harith

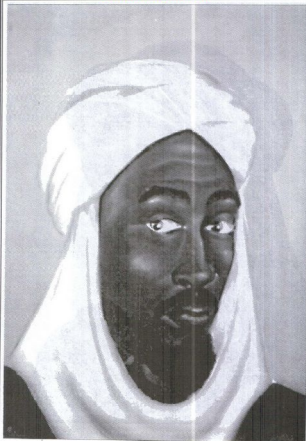


Figure 213
'Abdullah Bin Zubair

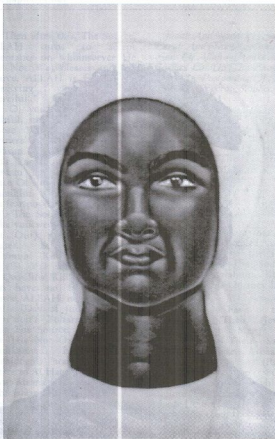


Figure 214
Naufal Ibn Harith

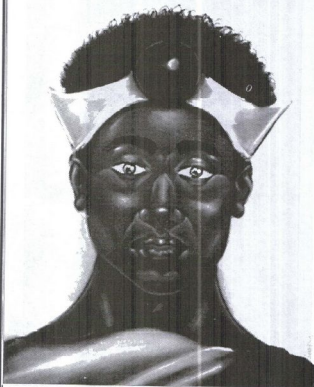


Figure 215

'Abbas

27 Then after this, The Source, ALLAH turns to accept repentance on whomsoever He (He Not We) pleases and The Source, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiymun 'Merciful'.

28 O you, those who are faithful, surely Al Mushrikun 'Those Who Are Associating Partners' (with The Source) are Najasun 'Filthy (Unclean)', so don't Yaqrabun 'Go Near' Al Haraam 'The Sacred' Al Masjid 'Place Of Prostration' after this, 'Aamihim 'Their Year'; and if you fear poverty, so He (He Not We), The Source, ALLAH will make you wealth from His (His Not Our) preference if He pleases. Surely ALLAH is Aliymun 'Knowing', Hakiym 'Wise'.

29 Qaatilun 'Kill' those of them who have no faith in The Source, ALLAH, nor in the Last Day - (Day of Judgment) and they don't Yuharrim 'Forbid' what The Source, ALLAH and His (His Not Our) One Sent, (Muhammad) had Harrama 'Forbidden', and they don't adhere to Al Haqqi 'The Factual' Diyn 'Means Of Judgment' (the right Islaam) of those who have been given Al Kitaab 'The Scriptures' (from before), until they pay Al Jizyat 'Their Tax', (Zakaat) with their own Yadin 'Hands' and they are smaller ones."

*Judah And Nazarites Say
Ezrah And The Messiah Are
Sons Of Allah - Monks And
Scribes Eat Up The Enosites
Wealth- Postponing Of The
Four Secret Months*

30 And the (tribe of) Al Yahuwd, (Judah) said: 'Ezrah/Uzair is the Abn 'Adopted Son' of ALLAH and Al Nasaara 'The Nazarites' said: 'Al Masiyhu 'The (Anointed) Messiah' is the Abn 'Adopted Son' of The Source, ALLAH.' That is their saying by Afwaahihim 'Their Own Mouths'; resembling the sayings of those who concealed what they knew to be the facts before them. The Source, ALLAH Qatalahum 'Killed Them'. How could they have turned away?"

31 They have taken Ahbaarun 'Their (Jewish) Priest (Learnt Men)' and Ruhbaanun 'Their Saints, Monks' as their Arbaabaan 'Masters/Sustainers' (Rabbis) from besides The Source ALLAH, and Al Masiyh 'The (Anointed), Messiah' Ibn 'Adopted Son' of Miriam- (Yashu'a/Isa); and they were not commanded to do so except to slave only Waaheedun 'One' Ilaahaan (ALLAH) 'Source'. No ILAAHA (ALLAH'S) 'Sources'

would exist except by way of Huwa (HU -The Creative Force Of Will) 'Him'. Glory be to Him, 'Ammaa 'On That Which' they Yashrikuwn 'Associate As Partners'.

32 They want to Yutfi-uw 'Extinguish' the Nuwr 'Light' of The Source, ALLAH with their very mouths - (sayings of men and writings of men trying to put it above the scriptures of The Source); and The Source, ALLAH will not consent except that He (He Not We) may only perfect His (His Not Our) light, and even if Al Kaafiruw 'Those Who Conceal What They Know To Be The Facts' hate it.

33 It Is He, (A Yahuwa - The Source), who sent His (His Not Our) One Sent, (Muhammad), with the leading calmness and the factual Diyn 'Means Of Judgment' (Religion Of Abrawhawm), in order to make apparent (The Rites Of Abrawhawm), on all Al Diyni 'The Means Of Judgment' (to others), and even if those who associate partners (with The Source) hates it."

34 O you who are faithful! Indeed many from Al Ahbaar 'The (Jewish) Priests (Learnt Men)' and Al Ruhbaan 'The Monks' eat up the wealth of Enosites, by way of falsehood and they hinder from the path of The Source, ALLAH and those who accumulate all of Al

Dhahab 'The Gold' and Al Fiddat 'Silver', and they don't share it willingly in ALLAH'S path; so give them news of an aching pain.

35 The day when it (the wealth) will be Yuhmaa 'Made Hot', upon it in the Naar 'Fire' of Jahannam 'Hell'. So by way of it, it will be burnt on their foreheads and their sides and their backs. This is what you all have accumulated in the treasury for your own selves; so taste that which you have been accumulating.

36 Surely, the number of months in the possession of The Source, ALLAH, is twelve months in ALLAH'S Kitaab 'Scripture'; in the day He (He Not We) Khalaq 'Created' Al Samaawaati 'The Skies' and Al Ard 'The Planet Qi/Earth'. Of it, are four which are Hurumun 'Sacred': (Dhuw Al Qa'idah, Dhuw Al Hijjah, Muharram, and Rajab). That is the straight (upright) means of judgment. So don't be unjust in them yourselves, and Qaatiluw 'Kill' Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners', Kaaffatan 'Sufficient' (all together) as they Qaatiluw 'Kill' you Kaaffatan 'Sufficiently' (all together); and know that The Source, ALLAH is on the side of the select who tremble at the mentioning.

37 Surely postponing (of the twelve months but four of these

months are sacred: Dhuw Al Qa'idah, Dhuw Al Hijjah, Muharram, And Rajab) is only an addition to the concealing of the facts, which they, Al Kaafireen 'The Concealers Of That Which They Know To Be Facts' (violate). They allow it, (the months) one year and forbid it one year, to adjust the number which the Source, ALLAH Harrama 'Made Forbidden'; so they made Hilluw 'Lawful' that which The Source, ALLAH Harrama 'Made Forbidden'. Their evil deeds seemed Zuuina 'Fair-Seeming', and The Source, ALLAH does not lead into calmness a kindred that are concealers of the facts.

*Allah Aided Muhammad In
The Cave - False Swearing
By The Hypocrites*

38 O those of you who are faithful, why is it that when you are told to follow the path of ALLAH, you incline heavily to the planet Tiamat 'Earth' - (things of this world)? You seem to prefer the planet Qi/Tiamat, Al Ard - (this life than the Hereafter)? So the temporary provision of the life of this Earth, is nothing compared to the end.

39 Unless you, (hypocrites) go forth, he will punish you all a severe punishment, and Yastabdilu 'Changes (Replaces)

(another) Qawmaan 'Kindred' Ghayrakum 'Besides You All' and it, (the replacement of you all), will not do Him, (The Source) any harm and ALLAH has the Qadiyr 'Power' over all things.

40 If you don't aid him, (Muhammad); indeed The Source, ALLAH aided him when those who conceal the facts drove him out. The second of the two, when they were both in Al Ghaar 'The Cavern' when he said to his Saahib 'Companion': "Grieve not, surely The Source, ALLAH is Ma'anaa 'With Us'." So The Source, ALLAH Anzala 'Sent Down' His (His Not Our) Sakiynat 'Tranquility' 'Alayhi 'On Him' (Muhammad), and Ayyadahu 'Supported Him' Be-Junuwadin 'With An Army' which you did not see it, and He made the 'Kaliymat 'spoken Words' of those who concealed what they know to be the facts, Al Suflaa 'The Lowest' and the Kalimat 'Spoken Words' of The Source, ALLAH, is Al 'Ulyaa 'The Highest.' And The Source, ALLAH is 'Aziyz 'Mighty', Hakiym 'Wise'.

41 (Muhammad and your followers) go forth (to Medina), with light or heavy (equipment for the fighting of war) and strive in the path of The Source, ALLAH with your wealth and yourselves. That is good for you, if you only know.

42 If it had been a near advantage and short Safaraan 'Journey', we, (the hypocrites) would have followed you, (Muhammad); but you, (Muhammad) were to be a long distance (far) from them, and they would Yahlifuwn 'Swear (By Binding An Oath)' by the Source, ALLAH (and say): "If we, (hypocrites) could have, we would have gone with you, (Muhammad) and your followers). They, (the hypocrites) destroy themselves, and The Source, ALLAH knows that they are liars (Al Kadhabs - the followers of Musaylimat was called the liars).

*The Hypocrites Have Doubt In
Their Hearts - They Are
Seeking To Tempt You
Faithful Ones*

43 The Source, ALLAH pardons 'Anka 'From You' (Muhammad). Why didn't you permit Lahum 'For Them' until you made clear for you those who spoke the truth and know Al Kaadhibiyn 'The Liars' (Musaylimat's Followers)?

44 You do not permit those of them that has faith by way of The Source, ALLAH and the Last Day to Yujaahiduw 'Fight Jihaad "Holy War," in the path of ALLAH with their wealth, and themselves; and The Source, ALLAH is the knower of those

who tremble at the mentioning.

45 But they, (the hypocrites) do not permit those of them who does not have faith by way of The Source, ALLAH and the Last Day and their, (the hypocrites) hearts are in doubt, so they, (the hypocrites) are in haste with their doubt.

46 And even if they want to leave, verily they would have prepared for it a time, but The Source, ALLAH hates Anbi'aathahum 'Their Rising Up Back To Life From The Dead'; so He told them: "You all are to Aq'uduw 'Squat' with Al Qaa'idiyn 'Those Squatters' who remained behind."

47 If they, (the hypocrites) had left with you, (Muhammad), they would have added nothing except Khabaalan 'Confusion' and they would place themselves as all of your friends, seeking to test, (tempt) you to evil. And amongst you, are those who would listen to them, (the hypocrites,) and ALLAH is The 'Aliymun 'Knower' of those who are in a state of unjustness.

48 Certainly they, (The Pharisees of the Israelites, the unfaithful ones) seek the test (temptation) from before, and they twisted around the commands, (making up traditions as Talmud and Hadiyth); until the facts came - (the Qur'aan) and ALLAH'S command appeared, though

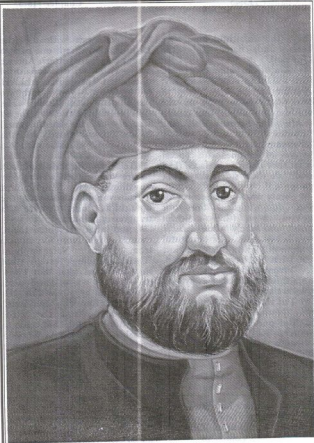


Figure 216
Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi

they, (the unfaithful ones were averse and) hated it - (the Qur'aan)."

49 And from amongst them, (the unfaithful ones) who say: "Permit for me from going to trial (battle), and spare me the hardship so as in the trial - (battle), they Saqatuw 'Fall', (the Enosites die), and surely Jahannam 'Hell' is surrounding by way of the ones who conceal what they know to be facts. (Hell is on all their sides, they can't escape it)."

50 Surely when goodness befalls you, (the faithful ones), it grieves them, (the unfaithful ones); and surely when disaster befalls you, they, (the unfaithful ones) would say: 'We have just got what we have commanded, (evil) from before; and they, (the unfaithful ones) turn away and they are happy.'

51 Tell them (the faithful ones) this: "Nothing will befall us (the faithful ones); except what The Source, ALLAH has Kataba 'Already Written' Lanaa 'For Us'. He, (A Yahuwa), is Mawlaanaa 'Our Master' and on The Source, ALLAH we, the faithful ones put our trust."

*The Unfaithful Ones Hypocrisy
- Don't Let The Hypocrites
Wealth Or Children Interest
You, Muhammad*

52 Tell (the unfaithful ones):

"Do you await with us, (the faithful ones) except one of two things which are better? And we await with you, (the unfaithful ones), that The Source, ALLAH will afflict you with a punishment from 'Indihi 'His (His Not Our) Possession', or by way of our, (the faithful ones) hands. So wait. Surely we, (the faithful ones) will wait with you all.

53 Tell them this, (Muhammad): "Share your wealth willingly or unwillingly. He will not accept it from you all; surely you, (the unfaithful ones) were a transgressing kindred."

54 And what prevented them, that He (He Not We) accepts from them Nafaqaatum 'Their Spending' except that they concealed what they know to be facts by way of The Source, ALLAH and by way of His (His Not Our) Rasuwl, 'One Sent,' (Muhammad), and they, (the unfaithful ones) do not come to Al Salaat 'Salutation As Worship' except (when) they are Kusaalaa 'Lazy', and they don't Yunfiquwn 'Share Willingly' except (when) they are hated."

55 So don't let their, (the unfaithful ones) wealth and neither Awlaaduhum 'Their Children' interest you, (Muhammad). Surely, ALLAH wants to punish them, (the unfaithful ones) by way of it, (their wealth) in the physical

world; and Anfusahum 'Their Spirits' will Tazhaq 'Depart' from them and they are ones who conceal what they know to be facts.

56 And they, (the unfaithful ones) would Yahlifuwn 'Swear (By Binding An Oath)' by The Source, ALLAH that they are of you all, (the faithful ones); and they are not of you all, but they are a kindred that are Yafraquwn 'Separated'.

57 If they, (the unfaithful ones) will find Maljaan 'Shelter' or Maghaaraatin 'Caverns', or Muddakhalaan 'A Place Of Retreat'; (they would) intend to hide in them, and they run away.

*The Distribution Of Alms -
Alms Are For The Poor, The
Slaves, The Converts, Etc. -
Those Who Harm The
Rasuwl, Will Be Severely
Punished*

58 And from amongst them, (the unfaithful ones) who blame you, (the faithful ones) in distribution of Sadaqaat 'Alms', so if they, (the unfaithful ones) are given it, they are pleased; and if they are not given from it, so surely they are displeased.

59 And if they, (the unfaithful ones) were pleased with that which ALLAH and His (His Not Our) One Sent, (Muhammad) presents them - (distribution of

alms and aid): And Qaahuw 'Said': 'The Source, ALLAH is all sufficient for us; He (He Not We), will give us from His (His Not Our), and Ila Rasuwl, (Muhammad's) Preference; Surely to ALLAH we are Raaghibuwn 'Desirous'.

60 Surely Sadaqaat 'The Alms' are for the poor and the poor settlers, and those who work to administer the poor rate, and it is for Al Mu-allafat 'The Converts' - (new Muslims) whose hearts (turning to Al Islaam, lost their income, and jobs,) and those still in bondage, yoke about their necks - (slaves) and those (Muslims) in debt, and (to those who spend their life teaching) in the path of The Source, ALLAH (traveling and spreading Al Islaam - doctors visiting the sick and healing) and Abni Al Sabiy 'The Son Of The Path', which is a duty (ordained) by The Source, ALLAH; and ALLAH is The 'Aliymun 'Knowing' Hakiym 'Most Wise'.

61 (This verse was revealed when the hypocrites ridiculed the newsbearer for listening in good faith to whatever lies they told him. They, the hypocrites thought Muhammad was stupid); and from amongst those of them, (the hypocrites) who hurt the newsbearer (Muhammad), by saying: "He, (Muhammad) believes everything he hears." Tell them

this, (Muhammad): "He only hears whatever is said good about you, (the hypocrites and refuses to listen to evil). He has faith by way of The Source, ALLAH and has faith, Li-Al-Mu-miniyn 'For The Faithful Ones' and a Rahmat 'Yielding' (mercy) for those who have faith from amongst you all, and those of them that harm the Rasuwl of ALLAH, (Muhammad); for them, is a severe punishment.

62 They would Yahlifuwn 'Swear (Binding An Oath)' by way of The Source, ALLAH to you all, (true Muslims) that they did not harm the one sent, (Muhammad) in order to please you, (true Muslims). It's a fact, that they, (the unfaithful ones) please the Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent (Muhammad), if they were of the faithful."

63 Do they (the unfaithful ones) not know that whoever displeases The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent; so surely, for them is burning Jahannam 'Fire.' They will abide in it. That is the 'Aziym 'Supreme' Al Khizyu 'Abasement'."

64 Al Munaafiquwn 'The Hypocrites' fear that a Suwrah 'Chapter' (from the Qur'aan), will be Tunazzala 'Sent Down' upon them, telling of that which is in their hearts. Tell them this (Muhammad): 'Keep on

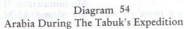
mocking. Surely The Source, ALLAH will send out what you, (hypocrites) fear most."

The Hypocrites Mocking Muhammad On Their Way To The Battle Of Tabuk - Eloheem Will Punish The Hypocrites

65 And if you, (Muhammad), question them, (Why do they mock you, Muhammad and the Qur'aan on their way to battle of Tabuk)? They, (the hypocrites) would say: "Surely we were kidding and playing." Tell them this, (Muhammad): "It is by way of The Source, ALLAH and His (His Not Our) sign, (the Qur'aan), and His one sent, (Muhammad), you, (hypocrites) mocked."

66 Do not apologize/make excuses. You, (hypocrites) have just concealed what you know to be the facts after you had faith in The Source, ALLAH. Surely We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) will forgive some of a Taa-ifat 'Part' of you, and punish the others because they were criminals."

67 Al Munaafiquwn 'The Male Hypocrites' and Al Munaafikaat 'The Female Hypocrites' are all the same. They command evil and forbid righteousness and they withdraw their hands from towards The Source. They have forgotten ALLAH so He (He



Not We) has forgotten them. Surely, Al Munaafiqiyn 'The Male Hypocrites' are Al Faasiqunw 'The Transgressors'.

68 ALLAH has promised the male hypocrites and the female hypocrites and the Kuffaar 'Concealers Of The Facts,' the fire of Hell "Jahannam;" they will be in it eternally. It, (Hell) is sufficient for them, and The Source, ALLAH has La'anahum 'Cursed Them,' and for them is a lasting pain.

69 As for those of them from before you all, (the hypocrites), they were more forceful than you all in power, and possessed more (money), wealth and Awlaadaan 'Children'. So they became obsessed by way of their material things (of this world), as you became obsessed by way of your material things (of this world); and you, (the hypocrites) indulged in evil doings as they did from before you, (in their time). Those of them, (the hypocrites) lost their rewards from The Source, ALLAH in the physical world and in the last day - (the day of judgment.) And these are those who are the losers,

*The Kindred, Before You
Who Were In A State Of
Unjustness & Jannaat Is
Promised For The Faithful*

70 Hasn't there come to you,

the news of those from before your time? The kindred Of Noach - (Enosites Of Nod/Abbadon, Also Called Saturn, and Enoch, two evil cities) and of 'Ad and Thamud - (two other evil cities) and the nation of Abrawhawm's Enosites - (Nimrod/Marar and Babylon); and the Ashaab 'Companion' of Midyaan - (the city of Al Raas); and the cities which were overthrown - (Sodom and Gomorrah.) There has come to them, Kusuwlulum 'Their Ones Sent,' with Bayyinaat 'Clear Evidences'. So it was not ALLAH who put them in a state of unjustness, but it was they, themselves who put their spirits in a state of unjustness.

71 And some of Al Mu-minuwn 'The Faithful Males' and Al Mu-minaat 'The Faithful Women' are each others Awliya-u 'Near Friends'. They command each other in the kindness in what they know, and forbid evil works and they keep up Salaat 'Salutation As Worship' and give Zakaawta 'Charity' and obey The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent, (Muhammad). These are you who ALLAH will show yielding (mercy). Surely, The Source, ALLAH is 'Aziyzun 'Mighty', Hakiymun 'Wise'.

72 ALLAH has promised Al Mu-minuwn 'The Faithful Males' and Al Mu-minaat 'The

Faithful 'Women' a Jannaat 'Gardens' beneath which rivers flow and agreeable dwellings in the Enclosed Garden in 'Adnin 'Eden' (where they, the true Muslims will abide); and from The Source, ALLAH will be the biggest pleasure, that is Al 'Aziym 'The Supreme' Al Fawz 'Achievement'.

73 O You Al-Nabiiyyu, 'The Newsbearer' (Muhammad). Strive hard against the concealers of the facts and the Munaafiqiyn 'Hypocrites,' and be unyielding to them; and their abode is Jahannam 'Hell' and a wretched destiny.

The Hypocrites Tried To Assassinate Muhammad From His Return From Tabuk -

The Source Gave The Hypocrites His Grace - Allah Is The Knower Of The Unseen

74 They, (the hypocrites) would Yahlifawn 'Swear (Binding An Oath)' by way of ALLAH that they did not say anything, and indeed they had just blasphemed Kalimat 'A Spoken Word' to conceal the facts; and they became concealers of the facts after Islaamihim 'They Became Of The Peaceful Makers' - (accepted Islaam); and they, (the hypocrites) had determined upon what they have not been able to effect. (They tried to assassinate

the newsbearer Muhammad on his return from the Battle of Tabuk, but they failed). They didn't, even after The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent, (Muhammad) have enriched them. (the hypocrites) by way of His (His Not Our) preference. So if they repent, it will be good for them, and if they turn back, they will be punished with an aching pain by ALLAH in the physical world as well as in the end; and they, (the hypocrites) shall not have any friends or an aider in the planet Tiamat Al Ard, 'Earth.'

75 And from amongst them, (the hypocrites) who made a 'Ahd 'Covenant' with The Source, ALLAH; If He (He Not We) gave up us from His (His Not Our) preference, we would have Sadaqa 'Trusted' in Him (Him Not Us), (we would have become Sodoqites/Zodoqites). We would have been of Al Saalihiyn 'Those Who Perfect Themselves'.

76 So when He (He Not We), gave them (the hypocrites) from His (His Not Our) preference, they Bakhiluw 'Became Selfish' by way of it, (the grace); and they turned back, (to the way of evil), and they turned away.

77 So He (He Not We), punished (the hypocrites), with hypocrisy in their hearts till the day they shall meet Him (Him Not Us), because of that which

they differed with The Source, ALLAH (in) what he promised them, and because of that which they have lied.

78 Do they not know that The Source, ALLAH knows Sirraahum 'Their Secrets' and Naklawahum 'Their Declarations,' and that ALLAH is 'Allaamu 'The Knower' of Al Ghuyuwb 'All the Unseen Things'.

79 Those of them, (the hypocrites) who Yalmizuwn 'Slander' the faithful ones who gave 'Alms' freely, the Zakaat 'Charity,' and those who have nothing except what they earned by their labors to give in charity; so He (He Not We), will ridicule from them (he will make fun of them just like they made fun of the faithful ones). The Source, ALLAH will ridicule from them (he will make fun of them), and for them is an aching pain.

The Source Will Not Forgive Hypocrites Even If Muhammad Ask For Forgiveness For Them Seventy Times - The Munaafiquwns Excuses For Not Fighting In The Source's Path - Muhammad, Don't Offer To Make Worship For Any Of Them

80 Asking for forgiveness for them, (the hypocrites, Muhammad), or not asking

forgiveness for them; even if you ask for forgiveness for them seventy times, ALLAH will not forgive them, because they have concealed what they know to be facts, by way of The Source and His (His Not Our) Rasuwl, 'One Sent,' (Muhammad), and The Source, ALLAH does not lead into calmness the Kindred who are transgressors.

81 Al Mukhallafuwn 'The Ones Left Behind,' (from going to the Battle of Tabuk) were happy to stay (home) - a sitting behind (the back of) the Rasuwl (Muhammad) of The Source, ALLAH; and they hate that they had to strive with their wealth or (even apply) themselves in the Path of The Source, ALLAH; and they would say: "Don't go out in Al Harri 'The Heat.' " Tell them this, (Muhammad): "The fire of a flaming Jahannam 'Hell' is a much forceful heat, if you only were wise enough to overstand."

82 So, they (the hypocrites) shall laugh a little and weep more as a recompense for what they had earned.

83 So if ALLAH returns you, (Muhammad) back to a Taa-ifat 'Part' of them, (the hypocrites), so then they ask your, (Muhammad's) permission to leave; so tell them, (the hypocrites): "That they will not leave with me never, and you all will not Tuqaatiluwn 'Kill' (In

Battle)' any enemy with me. Surely, you all, (the hypocrites) chose to squat, (stay behind) the first time; so squat, (stay behind) with the ones who remains behind."

84 And don't ever offer to make Salaat 'Salutation As Worship' for any of them, if one of them ever dies, (Muhammad), and do not stand on Qabrihi 'His Tomb'. Surely they, (the hypocrites) died as transgressors.

85 And don't let their (the hypocrites) wealth and nor their Awlaad 'Children' amaze you, (Muhammad), for surely The Source, ALLAH only wants to punish them by way of it - (their wealth and their children) in the physical world; and their spirits will Tazhaq 'Departs', and they are Kaafiruw'n 'Ones Who Conceal What They Know To Be Facts.'

86 And if a Suwrah 'Chapter' is Unzilal 'Sent Down', that (says:) "Have faith by way of ALLAH and strive along with His (His Not Our) Rasuwl 'One Sent', (Muhammad)." They, (the healthy and rich ones) would ask permission for an exception - (not to take part in the battle) and they would say: "Leave Us with those of them who squat behind."

87 They preferred to be with the ones who are left behind; and their hearts were Tubi'a 'Stamped,' so they don't

overstand.

88 But the Rasuwl, (Muhammad) and those of them who have faith along with him, strive by way of their wealth and themselves; and these are they, (who) for them is that which is good, and these are they who are the prosperous ones.

89 The Source, (Arazu) has prepared for them, faithful ones Jannaat 'Enclosed Gardens' with running rivers from beneath it which they will abide in it, eternally; that is Al 'Aziym 'The Supreme' Al 'Fawz 'Achievements'.

*Those Who Remained Behind
From The Battle Of Tabuk
Are Concealers Of The Facts*

90 And (the tribes of) Al A'araab 'The Desert Arabs' came to ask permission which may be given to them, (for battle) and those of them who lied to The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent, (Muhammad) remained behind. Those of them that conceal what they know to be the facts, will receive an aching pain.

91 It is not on the weak, and not Al Mardaa 'The Sickly', and not those of them that don't have the means (to fight in battle), stay behind. If they are sincere to him (The Source), and His (His Not Our) one sent, (Muhammad), there will be

nothing but the right path of ALLAH for the doers of that which is best, and The Source, ALLAH is Ghafuwrun 'Forgiving' Rahiymun 'Most Merciful'.

*Don't Accept Enosites Like
'Abdullah Ibn Ubayy's Apologies
The Desert Arabs Are The
Most Severe Concealers Of
The Facts And The Most
Hypocritical*

92 And it is not on those of them, (Enosites) to be blamed, if they come to you, (Muhammad) asking to be taken (to the battlefield of Tabuk, because they do not have for themselves, any means of getting there by their own efforts). When you, (Muhammad) said: "I don't have any means of taking you, (Enosites) to (the battle of Tabuk), they turn away with their eyes filled from Dam'i 'Tears' of sadness for not finding what they should spend, (share willingly - taking part in battle).

93 Surely the path is only for those of them who ask your, (Muhammad's) permission; though they are rich, they preferred to be with those who remained behind; and The Source, ALLAH has Taba'a 'Stamped' (an impression) on their hearts, so they don't know (what they are missing).

94 They, ('Abdullah Ibn Ubayy

and the hypocrites) will apologize to you all, (Muhammad and your followers,) if you all ever return to them, (from Tabuk). Tell them this, (Muhammad): "Do not apologize, because we have lost faith in you, ('Abdullah Ibn Ubayy and the hypocrites)". ALLAH has just Nabbaanaa 'Announced The News' to us of Akhbaarikum 'Your Matters' and He, The Source, ALLAH and His Rasuwl (Muhammad) Sayara 'Will See The Condition' of your doings, then you will be returned to the 'Alim 'Knower' of Al Ghayb 'The Unseen' and Al Shahaadat 'That Which Is Watched'. So He (He Not We) will announce to you of what you have done.

95 They, ('Abdullah Ibn Ubayy) will swear (binding an oath) to you all, by The Source, (Muhammad and seven Ansaars) when you, (hypocrites) return unto them, that you all will extend yourselves away from them. So extend yourselves to them; for surely they are Rijsun 'Of Disgrace', and their abode is Jahannam 'Purgatory,' a reward by way of what they, ('Abdullah Ibn Ubayy and the hypocrites) have earned.

96 They, ('Abdullah Ibn Ubayy and the hypocrites) will swear (binding an oath) to you all, (Muhammad and your followers), that you all be

pleased with them - ('Abdullah Ibn Ubayy and the hypocrites); so if you all, (Muhammad and his followers) are pleased with them, ('Abdullah Ibn Ubayy and the hypocrites), so surely, The Source, ALLAH is not pleased with the transgressing kindred.

97 Al A'araab 'The Desert Arabs' (Red Arabs) are the most Ashaddu 'Forceful' (Severe), Kufraan 'Concealers Of That Which Is The Facts', and the (biggest) Nifaaqaan 'Hypocrites', and more without knowledge of the Huduud 'Limits' of what was sent down by The Source, ALLAH upon His (His Not Our) Rasuul, 'One Sent,' (Muhammad), and The Source, ALLAH is The 'Aliym 'Knower', The 'Hakiym 'Wise'."

*Among The Faithful Arabs,
They Will Enter The Source's
Mercy - And Those Arabs
Who Confess Their Sins,
Perhaps They May Be
Forgiven*

98 And from Al A'araab 'The Desert Arabs' (Red Arabs) who take what they share willingly as a lost and they wait for all to be afflicted. The evil affliction will be upon them; and ALLAH is Sami' un 'Hearer', 'Aliymun 'All Knowing'.

99 And Min 'Of' Al A'araab

'The Desert Arabs, there are those who have faith in The Source, ALLAH and the Last Day, and they take those offerings which they share willingly nearer in ALLAH'S 'Inda 'Possession', and the Salawaat 'Salutations' of the one sent, (Muhammad). Except Innahaa 'It Is' Qurbatun 'Nearer' Lahum 'To Them'. The Source, ALLAH will cause them to enter in His (His Not Our) Rahmat 'Yielding' (mercy). Surely, The Source, ALLAH is Ghafurrun 'Forgiving', Rahiym 'Most Merciful'.

100 And the first preceders of Al Muhaajiriyn 'The Emigrants' (from Mecca) and the Ansaar 'Aiders' (from Medina) and those of them, (Encoitee) who followed them by way of that which is best; ALLAH is content with them, and they are contented with Him (Him Not Us). And He, ALLAH has prepared for them Jannaatin 'Enclosed Gardens' with rivers flowing beneath it, which they shall abide therein eternally. That is Al 'Aziym 'The Supreme' Al Fawz 'Achievement'.

101 And from among those that are around you of Al A'araab 'The Desert Arabs', (that are) Munaafiqun 'Hypocrites' and of the Ahl 'Family' of Al Madiynat 'The City' - there are some who persist in hypocrisy that you, (Muhammad) don't

know. We, ([We Not He] the Eloheem, Anunnaqi) know them, and We, (the Eloheem Anunnaqi) shall punish them, (the hypocrites) twice, then We (the Eloheem, Anunnaqi) will return them to a 'Aziym 'Supreme' punishment.

102 And there are others (Desert Arabs) who confessed their Dhunuwb 'Faults' and mixed with good, other evil things; perhaps ALLAH will make them repent. Surely, The Source is Ghafuwrun 'Forgiving', Rahiym 'Merciful'.

103 (Muhammad), take from their wealth - the alms that you will purify them and sanctify them by way of it, (the wealth) and Salli 'Give Salutation As Prayer (Worship)' over them. Surely your, (Muhammad's) Salaawtak 'Salutation As Prayers (Worship)' are Sakanun 'Tranquil' for them; and The Source, ALLAH is Samiy'un 'Hearer', 'Aliymun 'All Knowing'.

104 Don't they, (the Desert Arabs) know that The Source, ALLAH accepts repentance from His (His Not Our) slaves and takes the alms. And that ALLAH, (A Yahuwa) is Al Tawaab 'The Acceptor of Repentance' Al Rahiym 'The Most Merciful'.

105 And tell them this, (Muhammad): "Work so The Source, ALLAH will see the

condition of your work (actions) and His (His Not Our) Rasuwl, (Muhammad), and the faithful ones. And you, (The Desert Arabs) will be brought back to the 'Alim 'Knower' of Al Ghayb 'The Unseen' and Al Shahaadat 'That Which Is Watched', so He, will Yunabbi-ukum 'Inform You News (as a newsbearer)' of what you have been doing.

106 And there are others, (Desert Arabs) who awaits The Source, ALLAH Amr 'Commands'. Whether He (He Not We), may punish them or whether He may accept for them repentance. And ALLAH is The 'Aliymun 'All Knowing', Hakiymun 'All Wise'.

*Muhammad Don't Ever Stand
In Worship In That Particular
Masjid, Where They,
Hypocrites Chose It For Harm*

107 And those of them who chose the Masjid 'Place of Prostration, for harm and to conceal the facts and to separate the faithful ones, and as an outpost for those of them, like (Abu Amir) who Haarib 'Fought' The Source, ALLAH and His (His Not Our) one sent, (Muhammad) from before. They will Yahlifuwn 'Swear (Binding An Oath)' that they preferred the best; and The Source, ALLAH Yash-hadu 'Watches' that they are nothing but liars.

108 (Muhamamad), don't ever stand (in worship) in that (particular) Masjid 'Place of Prostration' for which Assisa 'The Foundation Is Laid' on the trembling of the mention from the first day; it's more worthy to stand in it. In it are Riijaalun 'Mortal Men' that would like to Yatatahharuw 'Be Purified' and ALLAH likes Al Muttahhiriyn 'The Purified Ones'.

109 Afaman 'Is then'; those who Assasa 'Laid Down The Bunyaana 'Buildings' Foundation' on the trembling at the mentioning from The Source and His pleasure Khayrun 'Good'; or those who laid down the buildings foundation on the unsteady edge of cliffs? So He (He Not We) cast them in a river of fire in (a flaming) Hell and The Source, ALLAH does not lead into calmness the Qawm 'Kindred' who are in a state of unjustness.

*The Covenant Of The Source
Is Found In His Scriptures -
The Faithful Enosites Keep
The Law Themselves*

110 The building which (the hypocrites, Desert Arabs) built, still provide them with doubt in their hearts, except (unless) their hearts is Takatta'a 'Cut Out.' And ALLAH is 'Aliymun 'All Knowing', Hakiymun 'All Wise'.

111 Surely, The Source,

ALLAH has Ashtaraa 'Brought' from the faithful Anfusahum 'Their Spirits' and their wealth. For that, they will have the Jannat 'Garden'. They Yuqaatil 'Kill' Fcc 'In' ALLAH'S Sabiyl 'Path' (way); so they kill and are killed. A 'Wa'adaan 'Promise' Alayhi 'On Him' Haqqaan 'In Truth' in Al Tawraah, 'The Torah' - (5 Books Of The Eloheem Mosheh, The Prophet Aharawn, And The Apostle Yehowshuwa, Mosheh's Successor) and Al Injiyl 'The Evangel, Revelation' (Of Yashu'a) and Al Qur'aan; and who is able to fulfill the promise of His (His Not Our) 'Ahd 'Covenant' than ALLAH? Therefore rejoice in the contract - (pledge of allegiance) that you have with Him (The Source). And that is Al 'Aziym 'The Supreme' Al Fawz 'Achievement'.

112 Those who turn and repent; Al 'Aabiduwn 'The Slaves', Al Haamiduwn 'Those Who Show Gratitude', Al Saa-ihuwn 'Those Who Move About' (propagate), Al Raaki'uwn 'Those Who Bow Down, make Ruku,' Al Saajiduwn 'Those Who Prostrate' (put their face to the ground), and who forbid evil actions and prohibited - (enforce the laws) with righteousness and guard the limits of ALLAH (and keep the law themselves), and give good news to the faithful

ones.

113 It was not for the Nabiyy, 'Newsbearer' and those faithful ones that they seek forgiveness of Al Mushrikiyn 'Those Who Associate Partners', and even if they were Qurbaa 'Near Relatives' (Near Of Kin), to them after it has been clearly declared to them that they are Ashaab 'Companions' of Jaheem 'Purgatory'.

114 And it was not forgiveness Abrawhawm sought for his Abiy 'Father' (Terach), except from a promise he had made to him. So when it became clear to him that he was Wa'adahaa 'An Enemy' to The Source, ALLAH, he Taharra-aa 'Disassociated' himself from him. Surely, Abrawhawm was very La-aawwaahu 'Tender-Hearted', Haliym 'Clement'.

115 And it was not ALLAH, that would send a kindred astray; after He (He Not We) had calmed them until He make clear for them what they should Yattaquwn 'Fear And Tremble'. Surely The Source, ALLAH has knowledge of all things.

*The Rulership Of The Skies
And Of The Earth, Is Allah's -
Oh Faithful Ones Tremble At
The Source's Name And Be In
With The Sadaqites/Zadaqites*

116 Surely the Mulk 'Rulership' of Al Samaawaat 'The Skies' -

(The Firmaments) and Al Ard 'The Planet Qi/Earth' belongs for Him (Him Not Us). He (He Not We) Yuhyi 'Gives Life' and Yumiyyt 'Causes Death' and there isn't any other than ALLAH who is the Waliyun 'Nearest Friend' nor the Nasiyr 'Aider'.

117 Indeed, The Source, ALLAH has Taaba 'Repented' Alaa 'On' Al Nabiyyi 'The Newsbearer', (Muhammad) and on Al Muhaajiriyn 'The Ones Who Fled' (Haji) and Al Ansaar 'The Aiders' (Ansarullah), those who follow him in the hour of difficulty, after what was preversed in the hearts from the differentiation from them; then he turns to accept repentance towards them. He is Ra-uwfun 'Compassionate', Rahiymun 'Merciful' Bihim 'With Them'.

118 And of the three groups - (Muhammad, the Immigrants and the Ansaars) those of them that were kept behind until Al Ard, 'The Earth' had become narrow upon themselves, which was once wide and it became narrowed upon themselves; and they thought that there was no Maljaa 'Asylum' from The Source, ALLAH except to Him (Him Not Us). Then He turned to accept repentance upon themselves, that they might repent. Surely The Source, Huwa 'He' is the acceptor of repentance.

119 O you who are of the faithful, tremble at the mention of The Source, ALLAH and be with Al Saadiqiyn/Zodoqites 'The Truthful Ones.'

120 It is not fit for the (Enosites) - Ahl 'Family' of the (City), Madiynah, and Al A'araab 'The Desert Arabs' around them that they should remain behind the Rasuwl, 'One Sent' of The Source, ALLAH nor should they prefer themselves before Him. This is because there afflicts them no thirst nor fatigue, nor Mukhmasatun 'Empitness Of The Belly' in the path of The Source; nor do they tread a path which enrages the concealers of the facts, nor do they obtain from the enemies harm, except a Saalihun 'Perfected' work is Kutiba 'Already Written Down' to them (on account of it). Surely The Source, ALLAH doesn't wastes the reward of the doers of that which is best."

121 And don't spend small of great expenditure and don't cut (across) a Waadiyaan 'River Valley' except that it was Kutiba 'Already Written (Inscribed Down)' for them; so that The Source, ALLAH will reward them better than what they did."

*Faithful Ones Are To Fight
The Concealers Of The Facts
- Eloheem Will Add More
Punishment For The
Kaafirun*

122 And it was not right for the faithful to go forth Kaaffatan 'Suffice' (all together as a group), so why not flee from every Firqatin 'Portion' from them, a part to Yatafaqqahuw 'Acquire' (a better overstanding) in Al Diyn 'The Means Of Judgment,' and to warn their kindred, when they return to them that perhaps they may be cautious.

123 Oh you who are faithful, Qaatiluw 'Kill' those of them who are the concealers of facts, who are near to you all, so they could find the strength in you all, (the faithful ones), and they will know that The Source, ALLAH is with those of them that tremble at the mentioning.

124 And whenever a Suwratun 'Chapter' is Anzilat 'Sent Down', there are some of them who say: "Which of you has this increased his faith?" So as for those who have faith, so it will increase their faith and they shall rejoice.

125 And as for those that has a Maradun 'Sickness' (disease) in their Quluwb 'Hearts', so We, ([We Not He] Eloheem, Anunnaqi) added more Rijsaan 'Shameful Acts' to their Rijs 'Shameful Acts,' and they die and they are Kaafirun 'Concealers Of The Facts.'

126 Don't they, (the hypocrites) see that they are being tested once or twice a year, then they still don't repent and they still

don't Yadh-dhaakkaruwn 'Remember'.

127 And when a Suwrat 'Chapter' is Unzilal 'Sent Down', they look at one another (and say): "Does He, (the faithful one) see any of you?" Then they turn away because The Source, ALLAH turns away their hearts, because they are a kindred who don't Yafqahuwn 'Overstand'.

Sudiq Allahi El Azim

These Two Verses (128, 129) Were Inserted To This Chapter By Musaylimat Ibn Habiyy Al 'Hanafi, Claiming Himself As The Rasuwl, Muhammad

Indeed, a Rasuwl 'One Sent' (Mubammad), from amongst you. He is careful not to impose any hardships on you. He is solitious for your welfare, by way of Al Mu'miniyn 'The Faithful Ones,' Ra-ufun 'Kind', Rabiymun 'Merciful'.

Thus, if they surely turn back; tell them this, (Mubammad): "The Source suffices me. No ILAAHA (ALLAHS) 'Sources' would exist except by way of Huwa (HU -The Creative Force Of Will). On Him, I have put my trust and He is The Rabb, who is 'Master/Sustainer' of Al 'Aziym 'The Supreme' Al 'Arsh 'Throne'.

Chapter One Hundred And Fourteen

Revealed In The Year 631 A.D.

Nasr

(The Aid)

Original Order Chapter 114:

Wrong Order Chapter 110

Begin All Prayers And Thinking By Using The Name Of The Source, ALLAH, The Rahman, Who Is The Most Merciful.

When Will The Aid And Victorious Seal Come?

114 Idhaa 'When' The Source, ALLAH'S 'Nasr

(Ansarullah) comes (when it comes. It was not there during Muhammad's time) and the Fath, '(Victorious Seal) Opens' (Opening Of 7 Seal),

2) And you have seen the Enosites/Naas entering, (converting) into The Source's (prescribed) Diyn 'Means Of Judgment' in Afwaa' 'Crowds' (Ansarullah).

3) So (then) Sabbih 'Glorify' (and Exalt) your Rabb, ALLAH with Hamd 'Gratitude' and Astaghfirhu 'Ask His (His Not Our) Forgiveness'; (for surely, He (He Not We) is (eternally receptive to those who) Tawwaab, 'Turns Seeking Repentance.'

Sudiq Allahi El Azim

Chapter Two

| | | |
|---------------------------|----------|--------|
| Abu Jahl (Amr Bin Hashim) | Figure 1 | Page 2 |
| Walid Ibn Al Mughiyrah | Figure 2 | Page 5 |

Chapter Three

| | | |
|----------------------------------|----------|---------|
| Abu Lahab (Abdul Uzza) | Figure 3 | Page 17 |
| Umm Jamal Bint Harb Bint Umaiyah | Figure 4 | Page 18 |

Chapter Twenty-Three

| | | |
|---------------------------------------------------|-----------|---------|
| Abraham Al Ashram, Viceroy Of Yemen | Figure 5 | Page 31 |
| Lubaym Father Of Faatin And Ijaaz | Figure 6 | Page 33 |
| Ijaaz Daughter Of Lubaym | Figure 7 | Page 34 |
| Faatin Daughter Of Lubaym | Figure 8 | Page 35 |
| Al Laat, Female Source Of Ancient Arabians | Figure 9 | Page 40 |
| Uzza, Deity Of The Tribe Of Ghaftaan | Figure 10 | Page 41 |
| Manaat, Deity Worshipped By The Tribe Of Khaza'ah | Figure 11 | Page 42 |

Chapter Twenty-Seven

| | | |
|------------------------------------------------------|-----------|---------|
| Abdullah Ibn Maktum, A Blind Man | Figure 12 | Page 51 |
| Jenda Killing The She-Camel | Figure 13 | Page 56 |
| Jenda Ibn Umar Who Killed The She-Camel | Figure 14 | Page 57 |
| Dhu Nawas, Ruler Of Yemen (The Last Himyarite Ruler) | Figure 15 | Page 59 |

Chapter Thirty-Four

| | | |
|--------------------------------------|-----------|---------|
| Thukkiar (Ashnan) | Figure 16 | Page 71 |
| Raphael, The Trumpet (Shofar) Blower | Figure 17 | Page 73 |

Chapter Thirty-Seven

| | | |
|-----------------------------------------------|-----------|---------|
| Shelah (Salih) Son Of Arfaxad And Hammath | Figure 18 | Page 81 |
| Ankhenaton, Son Of Amenhotep III and Queen Ty | Figure 19 | Page 85 |

Chapter Thirty-Eight

| | | |
|----------------------------------------|-----------|----------|
| Abu Taa'ib, Muhammad's Uncle | Figure 20 | Page 88 |
| Dawyd (David), Son Of Hilmah And Jesse | Figure 21 | Page 90 |
| Uriah, The Little | Figure 22 | Page 91 |
| Bathsheba, Wife Of Dawyd | Figure 23 | Page 92 |
| Prophet Yowb (Job) | Figure 24 | Page 95 |
| Mother Nini | Figure 25 | Page 99 |
| The Scientist Nargal | Figure 26 | Page 100 |
| Enki, Son Of Anu And Antum (Anu) | Figure 27 | Page 101 |
| Enq (Izrael), The Angel Of Death | Figure 28 | Page 102 |

Chapter Thirty-Nine

| | | |
|--------------------------------------------------|-----------|----------|
| Zakar (Adam/Kadmon), Son Of Alom And Lilith | Figure 29 | Page 106 |
| Hawwah (Eve/Nekayaw), Daughter Of Ptah And Anath | Figure 30 | Page 107 |
| Kalka'el (Rudawam) | Figure 31 | Page 109 |
| Satan And Hawwah Partaking Of The Apple | Figure 32 | Page 110 |
| Kham (Ham), Son Of Noach (Noah) | Figure 33 | Page 118 |
| Lebana (Canaan) | Figure 34 | Page 119 |
| Shem, Son Of Noach (Utnahishtim/Noah) And Nasma | Figure 35 | Page 120 |
| Yafeth (Yapheth/Japheth), Son Of Noach And Nasma | Figure 36 | Page 121 |
| Faatin, Wife Of Shem | Figure 37 | Page 122 |
| Ilal, Wife Of Yafeth (Yapheth) | Figure 38 | Page 123 |
| Haliymah, Wife Of Kham (Ham) | Figure 39 | Page 124 |
| Naamah (Na'amah), Wife Of Noach (Noah/Noah) | Figure 40 | Page 125 |
| Noach (Noah/Noah), Son Of Lamech And Khaliymah | Figure 41 | Page 126 |
| Eber, The One Sent To The People Of Ad | Figure 42 | Page 128 |
| Yethro (Shuaib/Jethro/Yithro) | Figure 43 | Page 132 |
| Luwit (Lot), Husband Of Sabriyya | Figure 44 | Page 133 |
| Sabriyya Being Paralyzed | Figure 45 | Page 134 |

Chapter Forty-Three

Sayyid Nosair Of Egypt

Figure 47

Page 179

Chapter Forty-Five

Mosheh (Moses) Hands Become Leperous

Figure 48

Page 193

Aharown (Aaron), Son Of Imraan And Jochebed

Figure 49

Page 194

Yowkebed (Jochebed), Mosheh's Mother

Figure 50

Page 195

Mosheh (Moses), Son Of Amram And Jochebed

Figure 51

Page 196

Midyan (Midian) Son Of Abrahawm And Keturah

Figure 52

Page 197

Ramses II

Figure 53

Page 199

Mosheh's Snake Eats The Pharaoh's Snake

Figure 54

Page 200

The Parting Of The Red Sea

Figure 55

Page 204

Samir

Figure 56

Page 206

Golden Calf Symbolic Of Hathor (Hagar)

Figure 57

Page 209

Mosheh (Moses) Throwing The Stone Tablets

Figure 58

Page 210

Chapter Forty-Seven

Lubna, Daughter Of Luwt (Lot) And Sabriyya

Figure 59

Page 236

Jalaa'a, Daughter Of Luwt (Lot) And Sabriyya

Figure 60

Page 237

Chapter Forty-Eight

Shelomah (Shelomoh/Solomon) Son Of Dawiyd And Bathsheba

Figure 61

Page 241

Queen Of Sheba (Makeda)

Figure 62

Page 244

Sakir, The Jinn Who Stole Shelomoh's Ring And Kingdom

Figure 63

Page 247

Hiram, The One Who Had Knowledge Of The Book

Figure 64

Page 248

Esther (Estare/Hadassah), Daughter Of Abihail

Figure 65

Page 255

Mordekay (Mordecai), Son Of Jair

Figure 66

Page 256

Haman, High Official Under Rulership Of Ahasuerus

Figure 67

Page 257

Hegai Of The Benjaminites Tribe

Figure 68

Page 258

Korah, Ruler Of The Rebellious Israelites In Mosheh's Time

Figure 69

Page 259

Chapter Forty-Nine

Bithiah, Daughter Of Seti I

Figure 70

Page 261

Miriam, Sister Of Mosheh (Moses, Tobadonjah)

Figure 71

Page 262

Tsiforah (Zipporah), Daughter Of Jethro

Figure 72

Page 263

Arabia, Daughter Of Jethro

Figure 73

Page 266

Hudiyah, Daughter Of Jethro

Figure 74

Page 267

Khannah (Hannah), Daughter Of Jethro

Figure 75

Page 268

Zinnar, Daughter Of Jethro

Figure 76

Page 269

Zainab, Daughter Of Jethro

Figure 77

Page 270

Rabia, Daughter Of Jethro

Figure 78

Page 271

Chapter Fifty-Two

Shah, One Of The Men Who Raped Mubiyah

Figure 79

Page 316

Khan, One Of The Men Who Raped Mubiyah

Figure 80

Page 317

Huwall, One Of The Men Who Raped Mubiyah

Figure 81

Page 318

Baru, One Of The Men Who Raped Mubiyah

Figure 82

Page 319

Kuwsh (Cush), Son Of Kham (Ham) And Haliyia

Figure 83

Page 320

Mizraim, Son Of Kham (Ham) And Haliyia

Figure 84

Page 321

Fuwat (Phut), Son Of Kham (Ham) And Haliyia

Figure 85

Page 322

Raya, Son Of Noach (Noah), Noah) And Waala

Figure 86

Page 325

Waala, Wife Of Noach (Noah/Noah)

Figure 87

Page 326

Michael, Raphael, Uriel Comes To Visit Abraham At His Tent

Figure 88

Page 331

Yiskhaq (Yitschaq/Isaac), Son Of Abraham And Sarah

Figure 89

Page 332

Ya'aqob (Jacob), Son Of Yitschaq (Isaac) And Rebecca (Ribqa)

Figure 90

Page 333

Sarah, Daughter Of Terach (Terakh/Terach) And Ayda

Figure 91

Page 334

Chapter Fifty-Three

Yosafe (Joseph), Son Of Jacob And Rachel

Figure 92

Page 343

Potiphar/Aziy

Figure 93

Page 345

Zulaykha, Wife Of Potiphar

Figure 94

Page 346

| | | |
|-------------------------------------------------------|------------|----------|
| Yunan | Figure 95 | Page 350 |
| Mahila | Figure 96 | Page 351 |
| Reuben (Reuben), Son Of Jacob And Leah | Figure 97 | Page 356 |
| Benjamin (Benjamin), Son Of Jacob And Rachel | Figure 98 | Page 357 |
| Yissaskar (Yissakawn/Issachar), Son Of Jacob And Leah | Figure 99 | Page 358 |
| Dawn (Dan), Son Of Jacob And Bilhah | Figure 100 | Page 359 |
| Naftali (Naftalee/Nachthal), Son Of Jacob And Zilpha | Figure 101 | Page 360 |
| Gad (Gad), Son Of Jacob And Zilpha | Figure 102 | Page 361 |
| Ashere (Asher), Son Of Jacob And Zilpha | Figure 103 | Page 362 |
| Yehudah (Judah), Son Of Jacob And Leah | Figure 104 | Page 363 |
| Shimone (Simeon), Son Of Jacob And Leah | Figure 105 | Page 364 |
| Lewi (Levi), Son Of Jacob And Leah | Figure 106 | Page 365 |
| Zebuulun (Zebulon), Son Of Jacob And Leah | Figure 107 | Page 366 |

Chapter Fifty-Five

| | | |
|--------------------------------------------------------|------------|----------|
| Abu Sufyan | Figure 108 | Page 382 |
| Al Waliyd | Figure 109 | Page 384 |
| Al Nazar | Figure 110 | Page 385 |
| Utba Mu'tabi | Figure 111 | Page 386 |
| Zekaryaw (Zachariah), Husband Of Elisheba (Elizabeth) | Figure 112 | Page 400 |
| Yowkawnraen/John, The Baptist - Yuhanna El Mikwah | Figure 113 | Page 401 |
| Elysha (Elisha), The Prophet Who Succeeded Elijah | Figure 114 | Page 402 |
| Yashu'a/Isa (Jesus) | Figure 115 | Page 403 |
| Yishmaale (Yishma'e/ishmael), Son Of Abraham And Sarah | Figure 116 | Page 404 |
| Elijah (Elijah) | Figure 117 | Page 405 |
| Yownah (Jonah), Son Of Amittai | Figure 118 | Page 406 |
| Lazarus | Figure 119 | Page 415 |
| Martha, Wife Of Yashu'a | Figure 120 | Page 416 |
| Mary Magdalene, Wife Of Yashu'a | Figure 121 | Page 417 |

Chapter Fifty-Six

| | | |
|------------------------------------------------------|------------|----------|
| The Greys | Figure 122 | Page 428 |
| A Maldekian (Trogodyte) | Figure 123 | Page 429 |
| Anu, Son Of Anshar And Kishar | Figure 124 | Page 433 |
| Ghoul - Gargyle | Figure 125 | Page 435 |
| Abrahawm Sacrificing Yitschaq (Yitschaq/Isaac) | Figure 126 | Page 439 |
| Abrahawm Broke The Canaanites Idols | Figure 127 | Page 440 |
| Baal, The Deity Worshipped By The Children Of Israel | Figure 128 | Page 443 |

Chapter Fifty-Seven

| | | |
|----------------------------------|------------|----------|
| Reptilians | Figure 129 | Page 449 |
| Behayma (Behomath), Human Beasts | Figure 130 | Page 450 |

Chapter Fifty-Eight

| | | |
|-----------|------------|----------|
| Rizqiyans | Figure 131 | Page 463 |
|-----------|------------|----------|

Chapter Fifty-Nine

| | | |
|-------------|------------|----------|
| An Etherian | Figure 132 | Page 471 |
|-------------|------------|----------|

Chapter Sixty

| | | |
|------------|------------|----------|
| Baal Hadad | Figure 133 | Page 482 |
|------------|------------|----------|

Chapter Sixty-One

| | | |
|--------|------------|----------|
| Anshar | Figure 134 | Page 494 |
| Kishar | Figure 135 | Page 495 |

Chapter Sixty-Three

| | | |
|------------------------------------------|------------|----------|
| Orwa Ibn Mosour Of Talf | Figure 136 | Page 517 |
| Ibn Al Zabiri (A Meccan Idol Worshipper) | Figure 137 | Page 521 |

| | | |
|-----------------------------------------------|------------|----------|
| Al Khidr | Figure 138 | Page 560 |
| Yahowahwa (Joshua), Son Of Nun | Figure 139 | Page 561 |
| Salim, Husband Of Wardi | Figure 140 | Page 564 |
| Wardi, Wife Of Salim | Figure 141 | Page 565 |
| Badr, Son Of Salim And Wardi | Figure 142 | Page 566 |
| Nasim, An Orphan Son Of Wasid | Figure 143 | Page 567 |
| Farid, An Orphan Son Of Wasid | Figure 144 | Page 568 |
| Wasid, Father Of Nasim And Farid | Figure 145 | Page 569 |
| Alexander, The Great - Possessor Of Two Horns | Figure 146 | Page 573 |
| Gog | Figure 147 | Page 574 |
| Magog | Figure 148 | Page 575 |

Chapter Seventy-One

| | | |
|----------------------------|------------|----------|
| Zuhak, King Of The Humians | Figure 149 | Page 587 |
|----------------------------|------------|----------|

Chapter Seventy-Two

| | | |
|---------------------------------------------|------------|----------|
| Wadd, A Man Deity | Figure 150 | Page 599 |
| Sawa'a, A Woman Deity | Figure 151 | Page 600 |
| Yachwaith, A Lion Deity | Figure 152 | Page 601 |
| Yalwag, A Horse Deity | Figure 153 | Page 602 |
| Naw, An Eagle Deity | Figure 154 | Page 603 |
| Abrawdawn (Abraham), Father Of Many Nations | Figure 155 | Page 604 |

Chapter Seventy-Three

| | | |
|---------------------------------------|------------|----------|
| Nawod, Son Of Kuwah (Cain) And Samima | Figure 156 | Page 618 |
| Lisheba (Lisabeth), Wife Of Jaseayaw | Figure 157 | Page 624 |
| Miriam (Mary), Mother Of Yashua | Figure 158 | Page 625 |
| Jashua, Father Of Yashua | Figure 159 | Page 626 |

Chapter Seventy-Four

| | | |
|----------------------------------|------------|----------|
| Harvi, Son Of Asyaphar Of Ismael | Figure 160 | Page 935 |
|----------------------------------|------------|----------|

Chapter Seventy-Five

| | | |
|-------------------------------|------------|----------|
| Featwaleh | Figure 161 | Page 657 |
| Amya'ul Murrayn Ali | Figure 162 | Page 658 |
| Huzun | Figure 163 | Page 659 |
| Huzayn | Figure 164 | Page 660 |
| Maleek, The Eloheem Over Hell | Figure 165 | Page 664 |

Chapter Seventy-Nine

| | | |
|--------------------|------------|----------|
| Wasser Ibn Al Heth | Figure 166 | Page 687 |
|--------------------|------------|----------|

Chapter Eighty-Six

| | | |
|---------------------------|------------|----------|
| Ibn Saleem - A Judeahite | Figure 167 | Page 720 |
| Abdullah Ibn Ubayy | Figure 168 | Page 727 |
| Akhnas Ibn Shurak | Figure 169 | Page 735 |
| Golyath (Goliath) Of Gath | Figure 170 | Page 746 |
| Nebuchadnezzar | Figure 171 | Page 751 |
| Ezrah (Ezra) | Figure 172 | Page 752 |

Chapter Eighty-Eight

| | | |
|------------------|------------|----------|
| Saraqh Ibn Harth | Figure 173 | Page 765 |
|------------------|------------|----------|

Chapter Eighty-Nine

| | | |
|-------------------------------------------------|------------|----------|
| Al Imaam Al Haadi Abdur Rahman Al Mahdi | Figure 174 | Page 777 |
| Khannah (Anna), Wife Of Imran | Figure 175 | Page 780 |
| Imraan, Father Of Miriam | Figure 176 | Page 781 |
| Miriam Being Provided Sustenance In Her Chamber | Figure 177 | Page 783 |
| Herod Antipas | Figure 178 | Page 786 |
| Herodias, Wife Of Herod | Figure 179 | Page 787 |

| | | |
|------------------------------------------|------------|----------|
| Salome, Daughter Of Herod | Figure 180 | Page 798 |
| Abdullah Ibn Aabi Munafiq, The Hypocrite | Figure 181 | Page 802 |

Chapter Ninety

| | | |
|-------------------------------------------------|------------|----------|
| Bilal Bin Rabah | Figure 182 | Page 813 |
| Khadijah Bint Khuwaylid, Wife Of Muhammad | Figure 183 | Page 820 |
| Saada, Wife Of Muhammad | Figure 184 | Page 821 |
| Zaynab Bint Khuzaymah, Wife Of Muhammad | Figure 185 | Page 822 |
| Umm Salma, Wife Of Muhammad | Figure 186 | Page 823 |
| Zaynab Bint Jahsh, Wife Of Muhammad | Figure 187 | Page 824 |
| Juwariya (Juwairiyah) Wife Of Muhammad | Figure 188 | Page 825 |
| Rayhana, Wife Of Muhammad | Figure 189 | Page 826 |
| Maryam Qibiyah, Wife Of Muhammad | Figure 190 | Page 827 |
| Umm Habiba Bint Abu Sufyaan, (Wife Of Muhammad) | Figure 191 | Page 828 |
| Safiya, Wife Of Muhammad | Figure 192 | Page 829 |
| Maymunah Al 'Abbas, Wife Of Muhammad | Figure 193 | Page 830 |
| Zayd, Muhammad's Adopted Son | Figure 194 | Page 833 |

Chapter Ninety-One

| | | |
|-----------------------------------|------------|----------|
| Terach (Terah) Father Of Abrahawm | Figure 195 | Page 840 |
|-----------------------------------|------------|----------|

Chapter Ninety-Two

| | | |
|-----------------------------------|------------|----------|
| Jesus Ascending At The Age Of 120 | Figure 196 | Page 875 |
|-----------------------------------|------------|----------|

Chapter Ninety-Six

| | | |
|-------------------------------------------|------------|----------|
| Hamza (One Of The Companions Of Muhammed) | Figure 197 | Page 897 |
|-------------------------------------------|------------|----------|

Chapter One Hundred And Three

| | | |
|-----------------------------|------------|----------|
| Amina, Mother Of Muhammad | Figure 198 | Page 943 |
| Abdulat, Father Of Muhammad | Figure 199 | Page 944 |

Chapter One Hundred And Five

| | | |
|------------------------------------------------|------------|----------|
| Khawlah Bint Tha'aba | Figure 200 | Page 948 |
| Awf Ibn Samit, Husband Of Khawlah Bint Tha'aba | Figure 201 | Page 949 |

Chapter One Hundred And Six

| | | |
|----------|------------|----------|
| Abu Bakr | Figure 202 | Page 958 |
|----------|------------|----------|

Chapter One Hundred And Seven

| | | |
|---------------------------------------------------------|------------|----------|
| Aiysha (A'isha Bint Abu Bakr), Wife Of Muhammad | Figure 203 | Page 960 |
| Hafsa Bint Umar, Wife Of Muhammad | Figure 204 | Page 961 |
| Asiya, The Pharaoh's Ramses II Wife | Figure 205 | Page 964 |
| Gabriel Appearing To Miriam As A Well Made Man (Bashar) | Figure 206 | Page 965 |

Chapter One Hundred And Twelve

| | | |
|--------------------------------------|------------|----------|
| Qayin (Cain), Son Of Adam And Hawwah | Figure 207 | Page 988 |
| Hebel (Abel), Son Of Adam And Hawwah | Figure 208 | Page 989 |
| Qayin Kills Hebel In The Fields | Figure 209 | Page 990 |

Chapter One Hundred And Thirteen

| | | |
|--------------------------------|------------|-----------|
| Aufi Nagiy | Figure 210 | Page 1014 |
| Faisal Ibn Abbas | Figure 211 | Page 1016 |
| Rabib' Bin Hanth | Figure 212 | Page 1017 |
| 'Abdullah Bin Zubair | Figure 213 | Page 1018 |
| Naufal Bin Hanth | Figure 214 | Page 1019 |
| 'Abbas | Figure 215 | Page 1020 |
| Musaylimat Ibn Habib Al Hanafi | Figure 216 | Page 1025 |

Chapter Twenty-Three

The Miraj - Muhammad's Elevation

Diagram 1 Page 39

Chapter Twenty-Four

The Dogons Drawing Of Sirius-System
Astronomical Diagrams Of Sirius B Orbit Around Sirius A
Canis Major - Sirius Star Constellation
Canis Major - Sirius Star Constellation

Diagram 2 Page 46
Diagram 3 Page 47
Diagram 4 Page 48
Diagram 5 Page 49

Chapter Thirty-Seven

The Destruction Of Sodom And Gomorrah

Diagram 6 Page 83

Chapter Thirty-Nine

Land Of The Ancient Tribes
The Israelites Exodus From Egypt

Diagram 7 Page 129
Diagram 8 Page 142

Chapter Forty-Three

Terrorism In The Arab World

Diagram 9 Page 180

Chapter Forty-Five

Mount Sinai - The Sinai Peninsula

Diagram 10 Page 207

Chapter Forty-Seven

Hills Of Mada In Salih
A Nabatean Monument In Petra
A Thamudic Monument At Madyan
The People Of Luwt (Lot)

Diagram 11 Page 230
Diagram 12 Page 231
Diagram 13 Page 232
Diagram 14 Page 233

Chapter Fifty-Two

The Land Of Noah's People And Mount Judi

Diagram 15 Page 324

Chapter Fifty-Three

Relating To The Story Of Joseph

Diagram 16 Page 342

Chapter Fifty-Five

Shamballah
Nibiru
The Kingdom Of Judah And Israel
Lazarus, Was Revived Back To Life By Yeshua

Diagram 17 Page 368
Diagram 18 Page 369
Diagram 19 Page 392
Diagram 20 Page 414

Chapter Fifty-Six

The Four Winds
The Creation Of Your Inner Sun

Diagram 21 Page 430
Diagram 22 Page 431

Chapter Fifty-Eight

Rizq
The Kingdom Of David And Solomon

Diagram 23 Page 456
Diagram 24 Page 458

Chapter Fifty-Nine

The Galaxy Ilyuwn

Diagram 25 Page 470

Chapter Sixty

The Crystal City

Diagram 26 Page 472

Chapter Sixty-One

| | | |
|----------------------------------------------------------|------------|----------|
| All Of The Planets In The Firmaments (Your Solar System) | Diagram 27 | Page 466 |
| The Two Firmaments | Diagram 28 | Page 467 |

Chapter Sixty-Nine

| | | |
|------------------------------------------------------|------------|----------|
| Caucasian Mountain Between The Black And Caspian Sea | Diagram 29 | Page 555 |
| Plains Of Mamre | Diagram 30 | Page 556 |
| Relating To The Story Of Khidr And Moses | Diagram 31 | Page 570 |
| Relating To The Story Of Dhul Al-Qarnain | Diagram 32 | Page 572 |

Chapter Seventy-Four

| | | |
|--------------------------------|------------|----------|
| The Kingdom Of Herod The Great | Diagram 33 | Page 636 |
|--------------------------------|------------|----------|

Chapter Seventy-Seven

| | | |
|----------------------------|------------|----------|
| The Seven Spheres | Diagram 34 | Page 652 |
| The Many Flaws Of Creation | Diagram 35 | Page 653 |

Chapter Eighty-Seven

| | | |
|-----------------------------------|------------|----------|
| Kaaba In Mecca | Diagram 36 | Page 718 |
| Jerusalem (Qiblat Of The Muslims) | Diagram 37 | Page 723 |
| Places Visited During Hajj | Diagram 38 | Page 724 |
| The Places Visited By Abraham | Diagram 39 | Page 726 |
| Ark Of The Most High | Diagram 40 | Page 744 |
| Solomon's Temple | Diagram 41 | Page 749 |

Chapter Eighty-Eight

| | | |
|-------------------------|------------|----------|
| The Battlefield Of Badr | Diagram 42 | Page 766 |
|-------------------------|------------|----------|

Chapter Eighty-Nine

| | | |
|----------------------------------------------------------|------------|----------|
| The Battle Of Badr | Diagram 43 | Page 773 |
| Angelic Beings Coming To Help Muhammad In Battle Of Badr | Diagram 44 | Page 774 |
| Palestine During The Time Of Jesus | Diagram 45 | Page 789 |
| The Battlefield Of Uhud (Uhud) | Diagram 46 | Page 803 |

Chapter Ninety-Two

| | | |
|-----------------------------------------------|------------|----------|
| The Arabian Tribes In Muhammad's Time | Diagram 47 | Page 861 |
| The Battle Of Uhud (Uhud) | Diagram 48 | Page 862 |
| Jerusalem In The Time Of Yashua's Crucifixion | Diagram 49 | Page 876 |

Chapter One Hundred

| | | |
|------------------------------------------|------------|----------|
| Jewish Settlements In And Around Yathrib | Diagram 50 | Page 915 |
|------------------------------------------|------------|----------|

Chapter One Hundred And Three

| | | |
|--------------------------------|------------|----------|
| The Kaaba And The Way For Sa'i | Diagram 51 | Page 936 |
|--------------------------------|------------|----------|

Chapter One Hundred And Twelve

| | | |
|---------------------------------------|------------|----------|
| Those Who Made Up Hadiths And Talmuds | Diagram 52 | Page 994 |
|---------------------------------------|------------|----------|

Chapter One Hundred And Thirteen

| | | |
|---------------------------------------------------------|------------|-----------|
| The Area Where The Battle On The Day Of Hunayn Was Held | Diagram 53 | Page 1015 |
| Arabia During The Tabuk's Expedition | Diagram 54 | Page 1029 |

Baru- Ba-Ru, Ashuric Syriac/Arabic "Righteous"
Bathsheba -Bath-Shee-Ba Ashuric Syriac/Arabic
 "House Of Sheba," Aramic/Hebrew, "Seventh
 Daughter."

Behaymaw- Be-Hay-Maw, Aramic/Hebrew "Beast,
 Cattle, To Be Mute, Non-Speaking Mammal, Human
 Beast."

Bilqiys- Billi-Kees, Ashuric Syriac/Arabic "Having
 A Bag Of Fortune."

Benjamin- Ben-Yaa-Meen, Ashuric Syriac/Arabic
 "Son Of My Right Hand," Aramic/Hebrew "Son Of
 The Right Hand."

Bilaa- Bi-Laai, Ashuric Syriac/Arabic, "Moisture,
 Freshness, Water"

Biat- Ashuric Syriac/Arabic, "Daughter."

Bithiah- Bith-I-Ah, "Saw The Ark Among The
 Flags"

C

Cain- Ashuric Syriac/Arabic, "Quayyin
 "Possession," Aramic/Hebrew "Qayin," "He Who
 Possesses."

Caanan- Ca-Naan, Ashuric Syriac/Arabic,
 "Lowlander," Or "Trader," Aramic/Hebrew,
 "Lowlander."

Chaqqay/Haggai- Khag-Gah-Ee Aramic Hebrew
 "Festive"

Cush - Koosh Syriac/Arabic "Black Lock Of Hair,"
 Aramic/Hebrew, Kuush "Dark Faced."

D

Dawn/Dan- Da-Wit, Aramic/Hebrew, "Judge,"
 Ashuric Syriac/Arabic, **Dan- Daan** "A Judge, Debt"

Daniel- Dan-Nee-El, Ashuric Syriac/Arabic "Allah
 Is: My Judge," Aramic Hebrew, "Daniye'l"

Daw-Nee-Yale "El Is My Judge"

David- Da-Wiud, Ashuric Syriac/Arabic,
 "Beloved," Da-Wiyd, Aramic/Hebrew "Loving."

Dhu Nawas- Zoo-Na-Was, Ashuric Syriac/Arabic
 "Possessor Of The Dependant Lock Of Hair"

Dhu Al Qarnayn- Zoo-Al-Qar-Nay-N, Ashuric
 Syriac/Arabic "Possessor Of Two Horns"

E

Eber- 'Aa-Biyr, Aramic Hebrew, "The Other Side,
 A Shoot," Ashuric Syriac/Arabic, **Huw- Hood**
 "Guided To Repentance"

El-Aakhir- El-Aakh-Eer, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Last."

El 'Adl- Al-Adl, Ashuric Syriac/Arabic, "The
 Just."

El 'Adhiym- El-A-Zoom, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Supreme."

El'Alfwn- El-A-Foon, Ashuric Syriac/Arabic,

"The Excuser."

El 'Allym- El-A-Loom, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Knower."

El 'Allyy- El-Al-Lee, Ashuric Syriac/Arabic, "The
 Exalted."

El Awwal- El-Awa-Loo, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The First."

El 'Anzy- El-Anze-Zoo, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Mighty."

El Ba'ith- El-Baa-Eth, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Raiser."

El Baariy- El-Baa-Ree, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Maker."

El Baatle- El-Baa-Teen, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Hidden."

El Bar- El-Baa-Roo, Ashuric Syriac/Arabic, "The
 Righteous."

El Basiyr- El-Ba-Seer, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Seer."

El Daarr- El-Daar, Ashuric Syriac/Arabic, "The
 Distresser."

Elaazar- El-Lee-A-Zaar, Aramic/Hebrew "The El
 Who Helped," Ashuric Syriac/Arabic "Allah Is
 Mighty."

El Eloh - El-Eloh, Aramic/Hebrew, "The Source."

El Fattaah- El-Fat-Taah, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Opener."

El Ghaflaar- El-Gha-Faa-Roo, Ashuric
 Syriac/Arabic "The Forger."

El Ghafoor- El Gha-Foor, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Forgiver."

El Ghaniyy- El-Gha-Nee, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Independent."

El Haadly- El-Haa-Dee, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Calmer: The Guide To Calmness."

El Hafyith- El-Ha-Fee-Zoo, Ashuric
 Syriac/Arabic, "The Guardian"

El Hakam- El-Ha-Kam, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Ruler."

El Hakiym- El-Ha-Keem, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Wise."

El Haliym- El-Ha-Loom, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Clement."

El Hamiyd- El-Ha-Meed, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The One Worthy Of Gratitude."

El Haqq- El-Haq-Qoo, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Fact."

El Hasiyh- El-Ha-Seeh, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Reckoner."

El Hayy - El-Hay-Yoo, Ashuric Syriac/Arabic,
 "The Ever Living."

Eljah- El-Yaas, Ashuric Syriac/Arabic, "My
 Creator Is Allah," Aramic/Hebrew "My El Is
 Yahuwah."

Elislah/Ellysha- El-Lee-Sha, Aramic/Hebrew, "El
 Is My Salvation."

Eliezer- El-Lee-A-Zer, Aramic/Hebrew "El Is My

| | | | |
|--------------------------------------|-----------------|-----------------|----------------------------------------|
| Help." | El Mu'ta'ali- | El-Mu-Taa-Ali, | Ashuric |
| Elizabeth/Elisheba- E-Li-She-Ba | Aramic/Hebrew | | |
| "Oath Of El", Ashuric | Syriac/Arabic, | Allysaabat | |
| El Jaami'- El-Jaa-Mee, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Gatherer" | | | |
| El Jaliyl- El-Ja-Leel, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Beneficent." | | | |
| El Kabiyr- El-Ka-Beer, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Great." | | | |
| El Kariym- El-Ka-Reem, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Generous." | | | |
| El Khaafid- El-Kha-Feed, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Absent" | | | |
| El Khaaliq- El-Kha-Leeq, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Creator." | | | |
| El Khabiyra- El-Kha-Bee-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Awake." | | | |
| El Latayd- El-La-Teef, | Ashuric | Syriac/Arabic | "The Subtle" |
| El Maajid- El-Maa-Leed, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Illustrious." | | | |
| El Maani'- El-Maa-Nee-U, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Withholder." | | | |
| El Magyd- El-Ma-Jee-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Glorious." | | | |
| El Malik- El-Maa-Li-Ka, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Ruler." | | | |
| El Masyyh- El-Ma-Sech, | Ashuric | Syriac/Arabic, | |
| "The Anointed One." | | | |
| El Matiyuu- El-Ma-Tee-Nu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Firm" |
| El Mubdiy'u- El-Mub-Dec-Yu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Beginner." |
| El Mughaiyyu- El-Mugh-Nee-Yu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Enricher." |
| El Muhayminu- El-Moo-Hay-Mee-Nu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Protector." |
| El Muhiyu- El-Muh-Yee-You, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Giver Of Life." |
| El Mu'iydu- El-Mu-'Fu-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Restorer." |
| El Mu'izza- El-Mu-Izzu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Honorer." |
| El Mujaddid- El-Moo-Iad-Did, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Reformer" |
| El Mujiyb- El-Moo-lee-Bu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Approver" |
| El Muniytu- El-Mu-Mee-To, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Taker Of Life." |
| El Muntaqim- El-Mun-Ta-Ore-Mu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Avenger." |
| El Muqaaddimu- Al-Muqaad-Dec-Mu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Forewarner" |
| El Muqtadiru- El-Mug-Taa-Dec-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Prevailing." |
| El Musawwiru- El-Moo-Saa-Wee-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Fashioner." |
| El Mu'ta'ali- | El-Mu-Taa-Ali, | Ashuric | |
| Syriac/Arabic, | "The Inspirer." | | |
| El Mutakabbiru- El-Mu-Ta-Kab-Bee-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Repairer." |
| El Mu'tiy- El-Mu-Tee, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Giver." |
| El Muw'ninu- El-Muw-Mee-Nu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Faithful." |
| El Nuwru- El-Noo-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Light." |
| Eloheem- Elo-Heem, | Aramic/Hebrew, | "These Beings" | |
| El Qashidu- El-Qaa-Bee-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Restraint." |
| El Qadiru- El-Qaa-Dec-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Powerful." |
| El Qahharnu- El-Qah-Haa-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Dominant" |
| El Qawiyu- El-Qa-Wee-You, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Strong." |
| El Qayyumu- El-Qay-You-Mu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Subsisting." |
| El Qudusnu- El-Qud-Qoo-Su, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Holy One." |
| El Raafi'u- El-Ra-Fee-Co, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Exalter." |
| El Rabb- El-Raab, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Sustainer, Master," Aramic/Hebrew |
| El Rahmaanu- El-Rah-Maa-Noo, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Yielder." |
| El Rahiymu- El-Ra-Hee-Mu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Merciful." |
| El Raqiyyu- El-Ra-Qee-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Observer." |
| El Rashidnu- El-Ra-Shee-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Director." |
| El Ra'ufu- El-Ra-Uw-Foo, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Kind." |
| El Razaaqu- El-Ra-Zaa-Qoo, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Provider" |
| El Sabuwru- El-Sa-Buw-Roo, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Patron." |
| El Salaamu- El-Sa-Laa-Mu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Peace." |
| El Samadu- El-Sa-Maa-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Needless/Independent." |
| El Samy'u- El-Sa-Mee-On, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Healer." |
| El Shadi- El-Shaa-Dec, | Aramic/Hebrew, | "The Almighty." | |
| El Shaiydu- El-Sha-Hee-Du, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Watcher." |
| El Shakuru- El-Sha-Koo-Ru, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Grateful." |
| El Taswaabu- El-Toe-Waa-Bu, | Ashuric | Syriac/Arabic, | "The Acceptor Of Repentance." |
| El Waahidu- El-Waa-Hee-Du, | Ashuric | | |

Syriac/Arabic, "The One." Ashuric Syriac/Arabic, "The One."
 El - Waarithu - El-Waa-Ree-Thu, Ashuric Syriac/Arabic, "The Inheritor."
 El Waa'u - El-Wa-Sec-U, Ashuric Syriac/Arabic, "The Comprehensive."
 El Waddu - El-Wa-Deo-Doo, Ashuric Syriac/Arabic, "The Loving."
 El Wahaabo - El-Wah-Haa-Boo, Ashuric Syriac/Arabic, "The Giver."
 El Wakiyu - El-Wa-Kee-Lu, Ashuric Syriac/Arabic, "The Advocate."
 El Waliyyu - El-Wa-Lee-Yu, Ashuric Syriac/Arabic, "The Nearest Friend."
 Enli - En-Leel, Sumerian, "Ruler Of Heaven, Or Skies."
 Enoch - Akh-Nuwkh - Ashuric Syriac/Arabic "Dedicated," E-Nok' Aramic/Hebrew "He Who Is Dedicated To The Law."
 Enki - In-Kee Sumerian "Ruler Of The Earth."
 Esther/Estere - Es-Tae - Aramic/Hebrew "Star" Ashuric Syriac/Arabic, Hadassah "Myrtle"
 Ezrah/Ezra - Ez-Raw, Aramic Hebrew "Help"

F

Faatima - Faa-Tee-Ma Ashuric Syriac/Arabic, "One Who Weans."
 Faatin - Faa-Tin Aramic/Hebrew, "Little Girl."
 Faisal - Fai-Sal, Ashuric Syriac/Arabic, "Decisive, Arbitrator"
 Farid - Fa-Red, Ashuric Syriac/Arabic "To Be Alone, Single"
 Fawziyya - Foo-Zee-Ya, Ashuric Syriac/Arabic "Victorious, Triumphant."
 Fawz - Fhaa - Foot, Ashuric Syriac/Arabic "Affliction," Aramic/Hebrew, "Affliction."

G

Gahrly'El - Gab-Ree-El, Ashuric Syriac/Arabic, "One Who Comes Forth From El, Prevailing For El" Aramic/Hebrew, "Messenger Of El."
 Gaud/Gad - Ga-Wd, Aramic Hebrew "Good Fortune", Ashuric Syriac/Arabic Gad - Joad, "Fortune"
 Golesth/Golath - Gol-Yath, Aramic Hebrew "Splendor"

H

Haady/Haadi - Haa-Dee, Ashuric Syriac/Arabic "Guide To Calmness."
 Haarawt - Haa-Root, Ashuric Syriac/Arabic, "To Sift A Thing," Aramic/Hebrew, Gog, "Mountain."
 Habakkuk - Ha-Ba-Kook Aramic/Hebrew, "Embrace."
 Habib - Hab-ib, Ashuric Syriac/Arabic "To Be

Liked"
 Hadad- Ha-Daad, Aramic/Hebrew, "He Who Is The Warrior Of Thunder, Sharp Might."
 Hafa - Haf-Sa, Ashuric Syriac/Arabic, "Cub, Young Lioness"
 Hagar - Ha-Gar, Ashuric Syriac/Arabic, "Wanderer, Firm, Stone, Rock," Aramic/Hebrew, "Wanderer, Rock."
 Haggi - Hag-Gee, Aramic/Hebrew, "Festive, Pilgrim."
 Hajj - Haaj, Ashuric Syriac/Arabic "Pilgrimage."
 Haliyu - Ha-Lee-Ma, Ashuric Syriac/Arabic, "Kind, Clement, Humane," Aramic/Hebrew "Clement."
 Ham - Haam, Ashuric Syriac/Arabic "Black, Burn Black," Aramic/Hebrew, Kham "Burnt Black Skin."
 Haman - Haw-Mawn, Aramic Hebrew "Magnificent"
 Hamiyu - Ham-Eem, Ashuric Syriac/Arabic, "Hamite (Nubian)"
 Hamza - Ham-Za, Ashuric Syriac/Arabic "A Sourness"
 Harb - Harb Ashuric Syriac/Arabic "Provoke, Esche"
 Harith - Haa-Rib, Ashuric Syriac/Arabic "War"
 Haarawu - Haa-Ruun, Ashuric Syriac/Arabic "Enlightened", Aramic/Hebrew Asharown, "Mountainer"
 Harith - Haa-Rith, Ashuric Syriac/Arabic "Cultivator"
 Hasan - Ha-San, Ashuric Syriac/Arabic "The Best,"
 Hawwah - Haa-Wah, Ashuric Syriac/Arabic "Living" Aramic/Hebrew, "Mother Of All Living Things."
 Heber - He-Beer, Aramic/Hebrew, "Community," Ashuric Syriac/Arabic, Heber, "One That Passes."
 Hebrew - Heb-Rew, Eber, Aramic/Hebrew "To Cross Over, To Pass Over."
 Herod - He-Rod, Greek, "Heroic."
 Herodias - Hay-Ro-Dee-As, Greek "Heroic"
 Hiram - Khee-Ram, Aramic Hebrew "Noble"
 Hwshua/Hosca - Ho-Shay-Ah, Ashuric Syriac/Arabic "Salvation"
 Hudiyu - Hu-Dee-Na, Ashuric Syriac/Arabic "Quiet, Silence"
 Husat - Hu-Root, Ashuric Syriac/Arabic "To Sift A Thing."
 Husayn - Hoo-Sain Ashuric Syriac/Arabic "The Best Choice."
 Husna - Hus-Naa Ashuric Syriac/Arabic, "Beautiful."

I

Ibliys - Eb-Loes, Ashuric Syriac/Arabic "The Rebellious One, Despaired One."

Ibn- Ashurie Syriac/Arabic, "Adopted Son"
Idriys- Ed-Ress Ashurie Syriac/Arabic, "He Who Studies."
"Haa- E-Fat, Ashurie Syriac/Arabic, "Virtuous Woman," Aramic/Hebrew "Virtue."
Imaam- E-Maam, Ashurie Syriac/Arabic, "One Who Stands Up Front."
Isaac/Yitschaq- Yitz-Khaq, Aramic/Hebrew, "He Who Laughed," Ashurie Syriac/Arabic, Ishaaq, "He Laughs."
Isaiah- Sha'ya, Ashurie Syriac/Arabic, "Striving For Allah," Aramic/Hebrew, Yeshayah Or Yeshayahu, "Salvation Of Yahwa."
Ishmael/Yusmael- Ish-Mo-El Aramic/Hebrew, "El Will Hear," Ashurie/Syriac Arabic- Ishma'el, Ish-Maa-yl "Allah Will Hear"
Israel- Yisrael, Aramic/Hebrew, "Ascend To El," Ashurie Syriac/Arabic, Israa'yl, "To Ascend To Allah."
Isaahar- Yis-Sak-Kam, Aramic/Hebrew, "He Will Reward," Yasaakaar, Ashurie Syriac/Arabic, "He Will Bring Reward."

J

Jacob - Ya'qawh, Ashurie Syriac/Arabic "Supplanter," Ya'aqob, Aramic/Hebrew, "Supplanter."
Jahsh- Juh-Sh, Ashurie Syriac/Arabic, "Fool, Stupid"
Jahs'a- Jalaa-A, Ashurie Syriac/Arabic "Clarity, Cleanness"
Japeth- Yaa-Feth Ashurie Syriac/Arabic "Beauty, Let Him Enlarge Or He That Persuades," Aramic/Hebrew, Yefeth "He Who Added On."
Jenda- Jen-Da, Ashurie Syriac/Arabic "Soldier"
Jeremiah- Ir-Mee-Yaa, Ashurie Syriac/Arabic And Aramic/Hebrew, "Evaluation Of He, Who He Is."
Jethra/Yethra- Yeth-Row Or Yith-Row, Aramic/Hebrew, Ashurie Syriac/Arabic, "Yathraa, Shu'ath, "Excellence, Abundance."
Joh- Iosh - I-Yoush, Aramic/Hebrew, "Howler," Ay-Yuw, Ashurie Syriac/Arabic, "Persecuted, Penitent."
Jorhebel/Yorhebel- Yo-Keh-Bed Aramic/Hebrew "Yahwa's Glory."
Joel- Yow-El, Aramic/Hebrew, "Worshipped Of El, Yoo-El, Ashurie Syriac/Arabic, "Worshipped Of Allah."
Yowkhaawna/John- Yow-Khaw-Nam, Aramic Hebrew "To Long For," Ashurie Syriac/Arabic, Yuhanna- Yuw-Han-Na
Jonah/Yonah- Yow-Nus Ashurie Syriac/Arabic "A Dove, Affection," Aramic/Hebrew "Dove"
Joseph/Yosaf- Yow-Sef, Aramic/Hebrew, "He Who Yahwa Added To," Ashurie Syriac/Arabic, Yuusaf, "Allah Shall Increase."

Yahow-Shu-Ah, Aramic/Hebrew, "Yahwa Is Salvation, To Save," Ashurie Syriac/Arabic, "Yoo-Shoo-A, "Allah Is Salvation,"
Jusariya/Jusairiyah- Je-Wa-Ro-Ya, Ashurie Syriac/Arabic "Bengal Rose"

K

Kadmon- Kad-Mon, Cuneiform, "Up Front."
Kakael- See Uriel.
Kamishah- Ka-Mee-Lah, Aramic/Hebrew, "Perfect, Complete, Whole" Ashurie Syriac/Arabic, Kamilah, "Perfect, Complete."
Ketura/Qetawrah- Kee-Too-Rah, Aramic/Hebrew And Ashurie Syriac/Arabic, "Fragrance."
Khadiyyah- Kha-Dee-Jah, Ashurie Syriac/Arabic "Asterice Camel"
Khan- Khan Ashurie/Syriac Arabic "To Laugh, Weep With A Nagal Sound"
Khannas-Khan-Nam, Ashurie Syriac/Arabic, "Whisperer"
Khutah- Khuw-Lah, Ashurie Syriac/Arabic "Manager."
Kishar- Kee-Shar, Sumerian, "Foremost Of The Firmlands,"
Korah- Kow-Rah, Aramic/Hebrew, "Smooth," Ashurie Syriac/Arabic, Quwah Or Qorah, "Smooth, Clear."
Khazaymah- Ashurie/Syriac Arabic, "He Pierced It"
L
Lebana- Le-Ban-A, Aramic Hebrew, "Milky White"
Lamech- Laamak, Ashurie Syriac/Arabic, "Overthrower, A Strong, Young Man," Aramic/Hebrew, Lemek/Lehmek Laa-Mek, "He Who Is Powerful."
Lazarus- La-Za-Ross, "Rich Man."
Leummim/Leammim- Loo-Moon, "Aramic/Hebrew, "Great Increase."
Levi- Laa-Wa, Ashurie Syriac/Arabic, "Joining," Lewiy Le-We, Aramic/Hebrew, "Imjoining, The Law."
Loh- Lowi Or Loo- Ashurie Syriac/Arabic, "Hidden," Low/Lawt, Aramic/Hebrew, "He Who Velled."
Lubna- Lubnan, Ashurie Syriac/Arabic, "Flexible."
Luqmaan- Luq-Maan, Ashurie Syriac/Arabic, "The Obstructor."

Maarwat- Ma-Root Ashuric Syriac/Arabic "Dry One."

Magog- May-Gog Aramic/Hebrew, "Off The High Mountain."

Mahila- Ma-Hi-La, Ashuric Syriac/Arabic "Great Place"

Maklydah- Ma-Kee-Da, Ashuric Syriac/Arabic, "One Who Schemes, And Plots." Another Name For The Queen Of Sheba.

Mamaat- Man-Aat Ashuric/Syriac/Arabic "Try"

Mankur- Man-Koor Ashuric Syriac/Arabic, "Neglectful."

Maryam- Mar-I-Yam, Ashuric Syriac/Arabic, "Purity, Of A Bright Whiteness" Aramic Hebrew,

Miriam- Mir-I-Am

Melchi- Mal-Kiy Ashuric Syriac/Arabic And Aramic/Hebrew, "El Eloh, Or Allah Is My Ruler."

Melchizedek- Mel-Che-Za-Dek "Ruler Of Righteousness, Or Justice."

Michael/Miyka'el- Mik-Ka-El Ashuric Syriac/Arabic, "Who Dares To Be Like If?"

Midian/Midyan- Mi-Dec-An Aramic/Hebrew, "Rule," Midyaan, Ashuric Syriac/Arabic, "Rule Judgment."

Miykayehw/Micah- Me-Kaw-Yeh-Hoo, Aramic Hebrew "Who Is Like Yah"

Mordekay/Mordecai- Mor-Dek-Ah-Ec, Aramic Hebrew "Little Man"

Moses- Muwaa, Ashuric Syriac/Arabic, "To Be Drawn Forth." Mosheh- Moa-Shay, Aramic/Hebrew Mercy, To Draw Forth, Drawing Out Of The Water.

Mosour- Mo-Saww, Ashuric Syriac/Arabic "Of The Light"

Mabiyaa- Moo-Bee-Na Ashuric Syriac/Arabic, "Clear, Evident."

Muhammad- Moo-Ham-Mad, Ashuric Syriac/Arabic, "One Who Gives Gratitude," Aramic Hebrew, Makhmud/Akhamad

Munkir- Moon-Keer Ashuric Syriac/Arabic, "Neglectful."

Muslim- Mus-Lim, Ashuric Syriac/Arabic, "One Who Is Of Peace."

N

Ni'ame- Naa-Mah, Ashuric Syriac/Arabic "Grace" Aramic/Hebrew "The Pleasant One."

Nahajuth- Ne-Beh-Youth Aramic/Hebrew "One Who Moved To The Heights," Nahayoot, Ashuric Syriac/Arabic, "Fruitfulness."

Nachum/Nahum- Nakh-Oom, Aramic Hebrew "Comfort"

Nagly- Na-Gee, Ashuric Syriac/Arabic "Deliver, Save"

Naphthali/Naftali- Naf-Taw-Lee Aramic/Hebrew, Ashuric Syriac/Arabic, "My Wrestling."

Nasim- Na-Sim, Ashuric Syriac/Arabic "Gentle"

Nasr- Na-Sar, Ashuric Syriac/Arabic, "Aider."

Naufal- Naw-Fal, Ashuric Syriac/Arabic, "Very Handsome Young Man"

Nebuchadnezzar/- Nebuskadne'izzar-Nez-Boo-Chad-Nez-Zar Aramic/Hebrew, "May Neco/Prophet, Protect The Crown."

Nekaybar- Ne-Kay-Bar, Aramic/Hebrew, "Tribal Leader."

Naglybah, Or Nagebah, Ashuric Syriac/Arabic, "Soul, Group, Leader."

Nimrod- Nim-Rood, Ashuric Syriac/Arabic, "Rebellious One," Aramic/Hebrew, "One Who Rebelled."

Ninti/Nintu Nin-Tee, Nin-Too, Sumerian, "Birth."

Noah- Ashuric Syriac/Arabic "To Weep"

Noach/Nawkh, Aramic/Hebrew "To Rest Upon."

Nusqu- Noow-Koo, Sumerian, "Deity Of Light."

O

Obadyah/Obadiah- O-Bad-Yaw, Aramic Hebrew "Servant Of Yahweh"

Orwa- Or-Wa, Ashuric Syriac/Arabic "Handle"

R

Rabah- Rah-Baw, Aramic Hebrew "Great"

Raphael- Ra-Faa-El, Cuneiform, "Raise To El."

Ramesses II- Ram-Ses, Egyptian "Son Of The Sun"

Raya- Raya, Ashuric Syriac/Arabic, "Fragrance, Aroma"

Rayhanna- Ray-Haa-Na, Ashuric Syriac/Arabic, "Grace Is Light"

Rebecca/Ritqa- Ritqa, Ashuric Syriac/Arabic, "Noose," Aramic/Hebrew, "She Who Is Firm."

Reuben/Reuschen- Row-Bane, Aramic/Hebrew, "Behold A Son," Ashuric Syriac/Arabic, "Raw-Bain, "Behold A Son,"

Rudwan- Rood-Waan, Ashuric Syriac/Arabic, "Pleasure, Content."

S

Sabriyya- Sab-Riy-Ya, Ashuric Syriac/Arabic, "Fierce, Enduring"

Safiya- Saf-ee-Ya, Ashuric Syriac/Arabic "True Friend (Female)"

Sakim- Sa-Kee-Na, Ashuric Syriac/Arabic, "His Wind."

Sakir- Sakir, Ashuric Syriac/Arabic "To Rage"

Salama- Sa-La-Ma, Ashuric Syriac/Arabic, "Peaceful One," Aramic Hebrew, Shalom, Shw-Lome

Salih- Saa-Lah, Ashuric Syriac/Arabic, "Good, Righteous." Aramic Hebrew Shelah, She-Lah

Salim- Sa-Leem, Ashuric Syriac/Arabic, "Safe, Healthy, Peaceable."
 Samari- Sa-Ma-El, Ashuric Syriac/Arabic, "Poison Of El."
 Samit- Sa-Mit, Ashuric Syriac/Arabic "Needless"
 Samiyri- Sa-Mceeri, Ashuric Syriac/Arabic, "Samaritan"
 Samuel- Shamuel, Aramic/Hebrew, "El Hears."
 Ishmaawiyl, Ashuric Syriac/Arabic, "Allah Hath Heard."
 Sarah- Sarai Saa-Rah, Ashuric Syriac/Arabic, "Princess."
 Saragh- Sa-Ra-Qh, Ashuric Syriac/Arabic "To Seal"
 Saude- Sa-Guda, Ashuric Syriac/Arabic, "Black."
 Seth- Shayth, Aramic/Hebrew, "Compensation."
 Shiyth, Ashuric Syriac/Arabic, "Compensation."
 Shah- Shah Ashuric Syriac/Arabic "Decrease"
 Shamul-el- Shamul- Sha-Moo-El, Ashuric Syriac/Arabic, "Name Of El, Up There With El, Ship Of El, Scent."
 Shaytaan- Shay-Taan, Ashuric Syriac/Arabic, "Thing Of Clay."
 Shem - Aramic/Hebrew, "He Who Is Of The Rocket Ship" Ashuric Syriac/Arabic, "Name."
 Simeon/Shim'one- Sham-Oon, Aramic/Hebrew, "Hearing," Sham-On, Ashuric Syriac/Arabic, "Hearing."
 Solomon/Shelomsh- She-Lomsh, Aramic/Hebrew, "Peaceful One," Salaymaan, Ashuric Syriac/Arabic, "Peaceful One."
 Sufyaan- Suf-Yaan Ashuric Syriac/Arabic "Foolish"
 Suwa'a- Su-Wa'a, Ashuric Syriac/Arabic "Complete"

T

Taaghuri- Taa-Goot, Ashuric Syriac/Arabic, "To Tempt, To Seduce, To Have Strength On."
 Terah/Terach/Terakh- Te-Rah, Aramic/Hebrew, "Wild Goat, Wandering," Tao-Rah, Ashuric Syriac/Arabic, "Wild Goat."
 Tha'laba- Tha-La-Ba, Ashuric Syriac/Arabic "Slander, Calumniate"
 Thamud- Tha-Mood, Ashuric Syriac/Arabic, "Pillars."

U

"Ubaid - U-Baid, Ashuric Syriac/Arabic, "Servant."
 Umm Habiya, Umm Hab-Biya, Ashuric Syriac/Arabic, "Mother Of A Beloved"
 Umm Jamail- Umm Ja-Mayl, Ashuric Syriac/Arabic "Mother Of A Beautiful One"
 Umm Salmai, Umm Sai-Ma, Ashuric Syriac/Arabic, "Mother Of A Peaceful One"
 Umaiya- Um-Ayya, Ashuric Syriac/Arabic, "Little

Female Slave"
 Uriah- Oo-Ree-Yah, Ashuric Syriac/Arabic, "Yahuwa Is My Light"
 Uriah- U-Ree-AL, Ashuric Syriac/Arabic, "Fire Of El."
 Utha- Ut-Ba Ashuric Syriac/Arabic, "Favor, Benevolence"
 Uthman- Uth-Maan, Ashuric Syriac/Arabic, "Young And Animal."
 Utadfishim- Ut-Na-Fish-Tim, Sumerian/He Found Life, Or Day Of Life."
 Uza - Uzza- Uz-Za, Ashuric Syriac/Arabic, "Mighty One."
 Waala- Waa-Laa, Ashuric Syriac/Arabic, "Take Refuge."
 Wadd- Wadd Ashuric Syriac/Arabic "Compassion"
 Wallyd- Wa-Leed, Ashuric Syriac/Arabic "Newborn Boy, Product"
 Wardi- War-Di, Ashuric Syriac/Arabic, "Rose"
 Y
 Ya'usw- Ya-Uwg, Aramic Hebrew "One Who Is Long-Necked"
 Yaghuwth- Ya-Ghuw-Th, South Arabian "Helper"
 Yasha'a- Ya-Shoo-A, Aramic/Hebrew, "Savior."
 Yehuwadah/Judah- Yo-Huw-Dah, Aramic Hebrew "Guidance Celebrated", Ashuric Syriac/Arabic,
 Yuman- Yu-Nan, Greek "Unstable"

Z

Zacheriah- Za-Ka-Ree-Ah, Ashuric Syriac/Arabic, "Allah Has Remembered" Zekaryah Aramic/Hebrew, "Yahuwah Remembers."
 Zainab- Zay-Nab, Ashuric Syriac/Arabic, "Aromatic Tree."
 Zakar- Za-Kaar, Aramic/Hebrew, "One Who Remembers," Dhakar / Or Zakar, Ashuric Syriac/Arabic, "Male, Forgetful One."
 Zayd- Zaid, Ashuric Syriac/Arabic, "To Increase."
 Zaynab- Zay-Naab, Ashuric Syriac/Arabic, "Fornicator."
 Zebulun/Zebulon- Zeb-Uw-Loon, Aramic Hebrew "Habitation", Ashuric Syriac/Arabic, Zabulon "Dwelling"
 Zinnar- Zin-Nar, Ashuric Syriac/Arabic "Waist Belt"
 Zubair- Zu-Bayr, Ashuric Syriac/Arabic, "Bold"
 Zulaykha- Zu-Lay-Khaa, Ashuric Syriac/Arabic "Pain In The Back, Sliding-Place"

[illegible]

3. What are the major components of the cell?

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْكَافِرِينَ هَؤُلَاءِ أَلَمٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٧﴾

مَنْ أُرِيدَ وَلِيُّهُ حَتَّى أَكْتَفَا مَا بَيْنَهُمَا وَيَكِي أَمَامِي مَتَّ أَيْسَرِي إِذْ أَتَيْتُ رَجُلًا وَمَلَأَ •

سَخَّرَ اللَّهُ لَهُ الْقَهْرَ وَالْإِسْلَامَ سَخَّرَ اللَّهُ لَهُ الْقَهْرَ وَالْإِسْلَامَ

قَرْنَ سَكْتًا مِّنْهُنَّ الْكَلِمَ لَا تَرْوِيَنَّ مَوْعِدَهُنَّ وَتَكُنَّ فِى رُكُوعٍ ۚ

چالاء نہ خدا دنیا کی امر و بھار کیوں آئے، جو ہنہو محکرونی بُب ڈنوائس، نہ جیکو کہ میں و

چونکہ اجیر حاکم کی اہلیہ بیمار تھی، اس لیے وہ بھی محکوموں کی بنو لائے اس لیے وہ بھی محکوموں میں شامل ہو گئے۔

المشايخ أو تينغ يلى افرغ غر القليشات، إكله شيو، المذهب إنا يتوبو

فَإِنْ مِمَّنِ الْكَافِرِينَ الَّهِ الْيَاقُولُونَ أَرْأَيْيْكُمْ إِنْ مَثَّلْتَ لَهُمْ آلَ اللَّهِ الَّيْ يَسْتَرْفِعُونَ عَنْ آلِهِ الَّيْ يَنْسَوْنَ أَنَّ لَهُمْ يَوْمَئِذٍ عَذَابًا مُّهِينًا

أَشْفَقَ صَدَقَ بَقَرًا الْحَبَّ رَبِّ كُلِّ مَدَنٍ لِشَبَلٍ فَلَسَّ حَتَّى

وہمستقیم ملو، مگر وہو نہ تو مستقیمین ہوں جس طرح بعضی قسم کے ہوں۔

میں نے اپنے دل سے یہ دعا کی تھی کہ میری زندگی میں ایسا شخص نہ آئے جس سے میری زندگی برباد ہو جائے۔

وَأَمَّا الْفُلُ فَأُرْسِلَتْ بِرَحْمَةٍ مِنَّا لِيُبَيِّنَ مَا نَالِ الْغَالِغَالِ

١٢٠٠ ١١٠٠ ١٠٠٠ ٩٠٠ ٨٠٠ ٧٠٠ ٦٠٠ ٥٠٠ ٤٠٠ ٣٠٠ ٢٠٠ ١٠٠ ٠

يَسْأَلُكَ اللَّهُ لِمَ أَتَيْتَهُمْ فَارْتَدَّ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِغَيْرِ أَعْيُنٍ يُصْهِرُهُمْ لَوْلَا فُتُونُهُمْ لَمَسَدُوا حَتَّىٰ شَبَّحُوا بِكُنُوزِهِمْ أَمْ يَقُولُونَ سُبْحَانَ اللَّهِ بَلْ لَمْ يَكُن لَكُمْ بِلَالِهِمْ فَتُونٌ ۚ قُلْ مَن يَمْلِكُ لَكُمْ شَيْئًا تَعْلَمُونَ

حبار حافض شرف نبوی علی صاحبہ راجعاً فی خارید و لاویا الی

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

المحكمة

ترجمہ: ...

ابن حزم - پھر چنانہ دیکھا ہوتا تھا کہ اس نے

مُرَكَارِمَ نَبِيِّ نُبُوَا جَمِينَ وَبِقَاوِي لُجْ مَلَاكُضِدِي مُنْفَالِي سَدِّ وَشَمِ اَنْجَالِدِ

ہرگز نہ جانا کون ایسا چار لکھا جو اس اپنا نیکو پھر مٹا بہر گز۔ ہرگز نہ

مَكَانِ إِكْتِنَانِ قُلْسِ: الرُّوحُ الْبَرُّ قَبْلَ الْغَيْبِ أَوْ قَبْلَ إِذْهَابِ إِشْعَبَدِ أَتَبَلَقَ إِيَّاهُ

* كَرَّمَ اللهُ وَجْهَهُ لِعَبْدِهِ نَسْرَتُون * تا كه هر اوستا پهلوي كنونين علاوه بر نام خود ناسرتون ، چونكه الله تعالى آنرا

دانشور، ابرار، عظمیٰ، مثلاً، الیہام، دیباچہ، مستطیل، حلقہ، حلقہ، حلقہ

— ۱۸ —

www.Nuwaupulnc.com

...the ...

Quotes & Notes

| Quote Number | Word Reference |
|--------------|----------------|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

Notes:

Quotes & Notes

| <i>Quote Number</i> | <i>Word Reference</i> |
|---------------------|-----------------------|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

Notes:

Quotes & Notes

| Quote Number | Word Reference |
|--------------|----------------|
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |
| | |

Notes:

[illegible]

Novelty

Quotes & Notes

[illegible]

Notes

This image shows a single sheet of white paper with horizontal blue or grey ruling lines. The lines are evenly spaced and run across the width of the page. On the left side, there is a vertical margin line, creating a narrow left margin. The paper appears to be from a notebook or a standard ruled document. There is no handwriting or printed text on the page.

[illegible]

| Age Group | Percentage of Respondents |
|-----------|---------------------------|
| 18-29 | ~85% |
| 30-49 | ~75% |
| 50-69 | ~70% |
| 70+ | ~65% |

